हिन्दी-समिति-ग्रन्थमाला – २९

सूक्तिसागर

युग-युग के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों की अमरवाणी का
अनुपम सन्दर्भ-ग्रन्थ

संग्रहकर्ता
रमाशंकर गुप्त, बी० ए०, सी० एल० एस-सी०

प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग
उत्तर प्रदेश

प्रकाशकीय

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार एव समृद्धि के लिए उत्तर प्रदेश प्रशासन ने जो योजना परिचालित की है, उसका प्रमुख अग हिन्दी के उत्तमोत्तम ग्रन्थो के रचयिताओ को पुरस्कृत करने के अतिरिक्त स्वय भी विविध विषयो के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ, मौलिक तथा अनूदित, प्रकाशित कर हिन्दी वाङ्मय के उन अगो की पूर्ति करना है जिनमे उपयोगी एव प्रामाणिक पुस्तको की नितान्त कमी अथवा अभाव-सा रहा है। ग्रन्थ-प्रकाशन का यह कार्य "हिन्दी समिति" के तत्त्वावधान में सुचारु रूप से चल रहा है और हमारे लिए यह अत्यन्त प्रसन्नता एव गौरव की वस्तु है कि राष्ट्रभाषा की उन्नति के इस पुनीत कार्य में हमें इस अल्पकाल मे ही अनेक विद्वानो एव विशेषज्ञो का सहयोग प्राप्त हो गया है। इससे हमें आशा होती है कि देश में, विशेषकर हिन्दी भाषाभाषी जनता में, हमारे इस प्रयास का सर्वत्र स्वागत होगा और हम योजना की सम्पूर्ति मे अधिकाधिक सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

हमारा यह नवीन प्रकाशन हिन्दी-समिति-ग्रन्थमाला का २९वाँ ग्रन्थ है। इसके लेखक श्री रमाशकर गुप्त प्रयाग विश्वविद्यालय के ग्रेजुएट हैं जिनके मन में विद्यार्थी-जीवन मे ही हिन्दी के प्रति विशेष अभिरुचि रही है। आप अत्यन्त परिश्रमी तथा अध्ययनशील रहे हैं। आज से लगभग दस वर्ष पूर्व आपने हिन्दी, सस्कृत, अग्रेजी आदि के विविध ग्रन्थो मे सूक्तियो का सग्रह करना आरम्भ कर दिया था, जो आज "सूक्ति सागर" के रूप में पाठको के सामने प्रस्तुत है। इसमें लेखक ने भारत के ही नही, यूरोप, अमेरिका, चीन आदि के भी विद्वानो, कवियो, विचारको एव दार्शनिको की चुनी हुई सूक्तियो का समावेश किया है, क्योकि आपकी यह धारणा रही है, जो ठीक ही है, कि महान् विचार सार्वभौम तथा शाश्वत होते हैं और वे भौगोलिक अथवा जाति-पाँति की सीमाओ मे बाँधे नही जा सकते।

साहित्य में सूक्तियो का अपना विशेष महत्त्व होता है, क्योकि उनमे जीवन के व्यापक अनुभवो का निचोड, ज्ञान का सार और नीति-वचनो का उपदेशामृत बड़े मनोरम ढग से सन्निविष्ट रहता है। वे हमारा मार्ग-दर्शन ही नही करती वरन् निराशा और विपत्ति के समय उनसे हमे बडी प्रेरणा एव बल मिलता है। सग्रह कैसा बन

पड़ा है, इसका आभास इसी से मिल जाता है कि अनेक विद्वानो ने मुक्त कण्ठ से इसकी प्रशसा की है। हमे आशा है कि हिन्दी प्रेमियो के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी और बहुमूल्य प्रमाणित होगा।

भगवतीशरण सिंह
सचिव, हिन्दी-समिति

भूमिका

श्री रमाशकर गुप्त द्वारा सकलित 'सूक्तिसागर' ग्रन्थ की पाण्डुलिपि मैंने देखी। श्री गुप्त जी ने विभिन्न देशों के नये और पुराने मनीषियो की सूक्तियो का वहुत सुन्दर सग्रह किया है। सूक्तिया वडे परिश्रम से चुनी गयी हैं। महापुरुषो की वाणियो में अद्भुत शक्ति होती है। कठिनाई के समय और कर्त्तव्य-गत द्वन्द्व उपस्थित होने पर ये सूक्तिया प्रकाश और प्रेरणा देती हैं। ससार की समृद्ध भाषाओ में इस प्रकार की सूक्तियों का वडा मान है। सस्कृत साहित्य में तो सुभाषितो का सग्रह वहुत ही समृद्ध है। दीर्घ काल से विपम परिस्थितियों को सुलझानेवाली सूक्तियो को वहुमान देकर हमारे पूर्वजो ने साहित्य के इस अग का महत्त्व स्वीकार किया है।

ससार में व्यवहार-कुशल होने एव सुख पूर्वक निर्वाह के लिए नीति का जानना अति आवश्यक है। सूक्तियो में नीति के वचन थोडे शब्दो में गागर में सागर की भाँति वडी सुन्दरता से व्यक्त होते हैं। इनमें उपदेश देने की छटा निराली होती है। सूक्तियों की आवश्यकता प्राय विद्यार्थियो, उपदेशको, वक्ताओ, साहित्यकारो एव राजनीतिज्ञों को वरावर पडा करती है। भावो को सजा-सँवार कर सजीव वनाने एव वक्तृत्व कला को चमकाने में ये वडी सहायक होती हैं।

मुझे गुप्त जी के सग्रह को देखकर वडी प्रसन्नता हुई। 'सूक्तिसागर' वास्तव में यथा नाम तथा गुण के अनुसार सूक्तिसागर ही है। इस सग्रह की कुछ विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं। सूक्तियो के सग्रह अनेक देशी और विदेशी भाषाओ के महापुरुषो की रचनाओ से किये गये हैं। लेखक ने विदेशी भाषाओ के लब्धप्रतिष्ठ लेखको की रचनाएँ अधिकतर अग्रेजी के माध्यम से ही पढी हैं। अग्रेजी समृद्ध भाषा है। आज लगभग आधी दुनिया में इसी का वोलवाला है। इसमें प्राय ससार के सभी समृद्ध साहित्यो के निर्माता मनीषियो की प्रमुख-प्रमुख रचनाओ का उत्तम अनुवाद हो चुका है। गुप्त जी ने फ्रेन्च, जर्मन, रूसी, चीनी आदि विदेशी भाषाओ की सूक्तिया उन्ही अग्रेजी में अनूदित पुस्तको के माध्यम से ही सगृहीत की है, मूल लेखक की मूल भाषाओ से नही। सस्कृत भाषा में तो सूक्तियो का भाण्डार है। गुप्त जी ने सस्कृत के महान् कवियो, लेखको, जैसे वाल्मीकि, वेदव्यास, कालिदास, भर्तृहरि, चाणक्य, माघ,

भारवि आदि की रचनाओं से अधिक सूक्तिया सग्रह की हैं। अग्रेजी, फारसी की चुनी हुई सूक्तियो और सस्कृत भापा की मूक्तियो का मूल देकर इनका हिन्दी अनुवाद भी दे दिया गया है, जिससे इस सग्रह का मूल्य वहुत वढ गया है।

इस सग्रह की एक विशेपता यह भी है कि गुप्त जी ने आवुनिक लेखको, साहित्य-कारो, महापुरुपो, राजनीतिज्ञो और सतो की रचनाओ का मथन करके उनकी मूक्तियो को भी सग्रह किया है। विश्व-कवि रवीन्द्र, राप्ट्र-पिता महात्मा गाधी और सत विनोवा की सूक्तियाँ तो अधिक विस्तार से दी गयी हैं। हिन्दी साहित्य के आवुनिक युग के महारथी प्रसाद, प्रेमचन्द, रामचन्द्र शुक्ल आदि की सूक्तियो को भी यथा स्थान देख कर वड़ी प्रसन्नता होती है।

सग्रह के अन्त मे लेखको की एक विस्तृत और पूर्ण अनुक्रमणिका भी जोड़ दी गयी है, जिससे पुस्तक की उपादेयता में कई गुनी वृद्धि हुई है। इस सग्रह की कितनी ही सूक्तिया तो इतनी प्रेरणादायक हैं कि उन्हे अमूल्य सम्पत्ति कहा जा सकता है। पुस्तक छात्रो के लिए तो लाभदायक और उपयोगी है ही, पुस्तकालयो के लिए भी संग्रहणीय है। नि सन्देह 'सूक्तिसागर' नये साहित्य के निर्माण में सहायक होगा। मेरा विश्वास है कि हिन्दी-भापी जनता इस सुन्दर ग्रन्थ का उचित स्वागत करेगी।

हजारीप्रसाद द्विवेदी

परिचय

सूक्तिया साहित्य-गगन में देदीप्यमान उज्ज्वल नक्षत्र के समान हैं। इनकी आभा देश और काल की सकुचित सीमा पार करके सर्वदा एक समान और एक रस रहने वाली है। मानव जीवन के विविध क्षेत्रो में सहस्रो वर्षो की अनुभूतियो ने इनको अमरता प्रदान की है और करोडो कण्ठो से निकलने के कारण इनमें माधुर्य और कोमलता का यथेष्ट परिपाक हुआ है। ये सूक्तियाँ यदि न हो तो साहित्य में रस की कोई स्थिति ही न रहे और कविता, कहानी, उपन्यास, निवन्ध और वक्तृता की कला विकल हो जाय। दस-बीस वाक्यो को ही नही, पूरे पृष्ठ एव सन्दर्भ को भी सजीव बनाने की इनमे अद्भुत क्षमता होती है और वक्तृत्व कला को चमकाने में तो ये अपनी अद्वितीय स्थिति रखती हैं। बहुधा लेखको, कवियो एव साहित्यकारो के समान ही इनकी आवश्यकता सामाजिक कार्य करनेवालो को एव राजनीतिज्ञो को भी हुआ करती है तथा महापुरुषो, उपदेशको एव कथावाचको के समान ही गृहस्थी के विभिन्न झझट में रहनेवाले लोगो को भी इनकी आवश्यकता पडती है। मानव जीवन का ऐसा कोई कोना बचा हुआ नहीं है, जिस पर अमर सूक्तियो के कण अमृत के समान शीतलता एव प्रेरणा प्रदान करने की शक्ति न रखते हो और ससार की ऐसी कोई जटिल समस्या नही है जिसको बात-की-बात में सुलझाने की सूझ इनसे न मिलती हो।

अनेक प्राचीन साहित्यकारो के सम्बन्ध मे ऐसी अनेक किवदन्तिया प्रसिद्ध है कि उनकी किसी एक सूक्ति से ही बडे-बडे अनर्थ एव दुर्घटनाए रुक गयी हैं और निविड अन्धकार में भी पथ का प्रदर्शन हुआ है। यही नही, केवल एक सूक्ति को ही लाखो सुवर्ण मुद्राओ में क्रय करने की मनोहर किवदन्तिया भी पायी जाती हैं और उनके द्वारा क्रय करनेवाले का सर्वविध कल्याण भी सुना जाता है। तात्पर्य यह है कि ये सूक्तिया अमूल्य रत्न हैं और इनकी आवश्यकता प्रत्येक सहृदय को सर्वदा पडा करती है।

सूक्तियो मे शिक्षा एव सदुपदेश की जितनी अमोघ शक्ति रहती है उतनी ही आत्म-मन्थन एव अनुभूतियो को झकृत करने की भी इनमें क्षमता होती है। सद्-ग्रन्थो के सैकडो पृष्ठ अथवा किसी सदुपदेशक के घटे दो घटे के मनोहर व्याख्यान भी उतना प्रभाव नही डालते जितना गभीर प्रभाव किसी एक सूक्ति का हमारे हृदय पर

पडता है। इसका कारण यह है कि सूक्तियों का प्रभाव सीधे हृदय पर पडता है। कर्णकुहरो में पडते ही ये विद्युत्तरगो की भाँति समूचे शरीर और अन्तरात्मा को विमुग्ध कर लेती हैं। मानस की गहराई में व्याप्त आनद की लहरों को उद्वेलित बना देती है और कियत्क्षणो के लिए ऐसा ज्ञात होने लगता है कि हृदय को ब्रह्मानन्द का साक्षात्कार हो रहा है और अकस्मात् बहुत दिनो तक सजोकर रखने योग्य कोई बहुमूल्य मणि मिल गयी है। ऐसी अद्‌भुत एव विचित्र शक्ति से भरी हुई इन सूक्तियों पर आदिम काल से सहृदयो की लोलुप दृष्टि रही है। और अधिक से अधिक इन बहुमूल्य रत्नो की माला से अपने कण्ठ को अलकृत करने की इच्छा भी सदा से पायी जाती है।

साहित्य का आनन्द ससार में सर्वोपरि माना जाता है। उसकी सज्ञा ब्रह्मानन्द सहोदर ही है। किन्तु सत्य तो यह है कि यदि ये सूक्तियाँ न हो तो साहित्य के उस अमन्द आनन्द को आत्मसात् करना सुगम नहीं होता। बहुत बार तो ऐसा भी होता है कि कठिन सन्दर्भों एव जटिल शब्द-समूहो को भी ये सूक्तियाँ अत्यन्त प्रसाद गुणयुक्त कर देती हैं और अपनी मोहिनी प्रभा से अन्धकाराच्छन्न वातावरण को प्रभासित कर देती हैं। एक ओर इनमें गभीर घाव करने की यदि अटूट सामर्थ्य रहती है तो दूसरी ओर वज्र के समान क्रूर-कठोर एव मरुस्थल के समान नीरस हृदय को भी सरस, स्निग्ध एव रसाप्लुत करने की इनमें अपार क्षमता रहती है। इनमें वे पोषक तत्त्व रहते हैं जो निर्बलो में भी अपार बल भर देते हैं और निराशा से थके हुए चरणो में पवन की गति डाल देते हैं। नीरस एव बकवादी भी सूक्तियो की चमक से चमत्कृत हो उठता है और गर्वीले से गर्वीले स्वभाववाला भी इनकी अमृतस्यन्दिनी धारा में नहाकर अपने ताप-सन्ताप को दूर कर देता है। दु ख एव वेदना के असह्य भारो को क्षण भर में ही दूर कर देने की तो इनमें वह करामात है जिसका अनुभव भुक्तभोगी ही कर सकता है। तात्पर्य यह है कि विधाता की इस मानव सृष्टि में ये सूक्तियाँ कल्पतरु के समान हैं। इनकी सुविस्तृत सघन छाया में जीवन-पथ की थकान को ही दूर करने की शक्ति नही है, प्रत्युत भविष्य की दुर्गम यात्रा को सुखपूर्वक समाप्त करने का इनमें अक्षय तथा दैवी सम्बल भी रहता है। किंबहुना मानव कर्तव्यो की ऐसी कोई अज्ञात दिशा अथवा अँधेरी गली नहीं है जिनमें इन सूक्तियो की किरणों का शुभ्र प्रकाश न पडता हो। सुख-दु ख, सम्पत्ति-विपत्ति, अनुराग-विराग, सज्जन-दुर्जन, योग-भोग, एवं प्रशंसा-निन्दा से भरे इस द्वन्द्वात्मक जगत् में इन सूक्तियों की गति सर्वत्र है। ब्रह्म की भाँति ये सर्वव्यापी बन गयी है और इनके कारण अनादि काल से मानव जीवन को सब प्रकार से सुख-सन्तोष और सबल मिलता आया है।

किन्तु इन सूक्तियो का आनन्द उठाने की पात्रता भी सहृदयो में ही रहती है। सस्कृत साहित्य में इनके अपूर्व सग्रह पाये जाते हैं। और सत्य तो यह है कि उनकी तुलना मे विश्व का सुविशाल वाड्मय अव भी वहुत कुछ रिक्त ही मिलेगा। सूक्तियो एव सुभापितो के जैसे विशाल भाण्डार सस्कृत-साहित्य में पाये जाते हैं वैसे अन्यत्र दुर्लभ हैं। इधर हिन्दी में भी इस प्रकार के दो चार प्रकाशन देखने में आये है, किन्तु उन्हें उतना महत्त्व नहीं प्राप्त हुआ। उसका मुख्य कारण यही रहा है कि इनके सग्रह-कारो ने पाश्चात्य विदेशी साहित्य एव हिन्दी की पुस्तको से ही उनका सग्रह किया है। सस्कृत के रससिद्ध कवीश्वरो की अमरवाणी को देखने का एव उनसे लाभ उठाने का कष्ट उन्होंने नहीं उठाया है। यदि किसी ने किया भी है तो वह वहुत ही अल्प मात्रा में है।

गुप्त जी के इस 'सूक्तिसागर' का हमने साद्यन्त अवलोकन किया है। मै यह कहने की स्थिति में हूँ कि यह हिन्दी में अपने ढग की अद्वितीय पुस्तक है। इसमें न केवल सस्कृत, फारसी, उर्दू, हिन्दी, वगला, गुजराती, मराठी आदि भारतीय भाषाओ के विद्वानो एव लेखको की सूक्तिया ही सगृहीत हैं वरन् इसमें विदेशी विद्वानो, लेखको, महापुरुपो एव राजनीतिज्ञो की भी सूक्तिया हैं। देववाणी सस्कृत में सूक्तियो का अक्षय भाण्डार है, गुप्त जी ने उनमें से चुनकर प्राय अति सरस, सरल तथा गेय पदावली की सूक्तियाँ ली हैं, उनका मूल भी जहाँ तक सम्भव था, उन्होंने दे दिया है। इसी प्रकार अग्रेजी सूक्तियो का भी मूल पाठ देने की उन्होने चेष्टा की है। उनके इस महान् परिश्रम का सदुपयोग छात्र, वक्ता, विद्वान् एव लेखक—सभी कर सकते हैं।

मैं यह तो नही कह सकता कि जिन-जिन विपयो पर सूक्तियो का सग्रह गुप्त जी ने किया है, उन पर ऐसी सूक्तियो का मिलना कठिन है, जो इसमें नही सगृहीत की गयी हैं, किन्तु मैं यह कह सकता हू कि इतने विभिन्न विषयो पर सूक्तियो के सग्रह का जो श्रमसाध्य कार्य गुप्त जी ने उठाया था, उसका दायित्व उन्होंने वडे मनोयोग, निष्ठा और तत्परता से पूरा किया है। यह पुस्तक उनके प्राय दस वर्षो के परिश्रम का फल हैं। मधु के सचय की भाँति उन्होंने न जाने कितने ग्रन्थो एव पत्र-पत्रिकाओ को छाना है। आधुनिक लेखको, कवियो एव कथाकारो की कृतियो का भी उन्होंने भलीभाँति परिशीलन किया है। हिन्दी में एकाध सूक्तियो की पुस्तकें अभी कुछ दिनो पूर्व प्रकाशित हुई हैं, किन्तु उनमें आधुनिक लेखको एव महापुरुपो के विचारो का सग्रह प्राय नही के वरावर है। इस दृष्टि से गुप्त जी का यह सग्रह अनुपम है। जहाँ तक हो सका है, उन्होंने अपने अगाध परिश्रम और प्रतिभा के इस प्रासाद को सर्वाङ्ग सुन्दर वनाने की चेष्टा की है। यद्यपि कुछ ऐसे शब्द आपको मिल जायगे, जिनके पर्यायवाची प्रत्येक

शब्द पर सूक्तियों का संकलन इस पुस्तक में अलग-अलग किया गया है, किन्तु ऐसा करने का कारण यह था कि गुप्त जी ने मूल शब्द को ही ध्यान में रखा है। उदाहरण के लिए रमणीयता, सुन्दरता, सौन्दर्य आदि शब्दों की सूक्तियाँ इसलिए पृथक्-पृथक् उपनिबद्ध हैं कि उनके नीचे दी गयी सूक्तियों में उन्ही-उन्ही शब्दों का प्रयोग हुआ है।

एक विशेषता इसकी यह भी है कि इसमें विषयों की अनुक्रमणिका के साथ-साथ लेखकों की सूची भी दे दी गयी है और उनकी सूक्तियों के सन्दर्भ भी बता दिये गये हैं। इससे पाठकों एवं जिज्ञासुओं को विशेष सुविधा मिलेगी—ऐसी आशा है।

हमें परम प्रसन्नता है कि श्री रमाशंकर गुप्त जी ने अपने इस संग्रह को सब प्रकार से उपादेय तथा अपूर्व बनाया है। श्री गुप्त जी बड़ी लगन के व्यक्ति हैं। ज्ञान के प्रति उनमें अविचल निष्ठा है। अपने इस दीर्घ प्रयत्न में उन्होंने जो धैर्य और सुरुचि दिखायी है वह सब प्रकार से प्रशंसा के योग्य है। मुझे आशा है कि हिन्दी-जगत् उनकी इस उज्ज्वल निधि से विशेष लाभ उठायेगा। हम उनकी इस परिश्रम एवं खोजपूर्ण रचना का हृदय से स्वागत करते हैं।

रामप्रताप त्रिपाठी, शास्त्री

निवेदन

मानव-जीवन अथाह सागर की भाँति रहस्यमय है और सदा से ही उसकी उलझनो को सुलझाना सुगम नही रहा है। समय समय पर विश्व के महान् विद्वानो, सतो, महापुरुपो तथा जन-नायको ने जीवन-सागर की अतल गहराई में पैठ कर और उसका मथन कर जिन रत्नो का सचयन किया है वे अमूल्य है और उनके द्वारा मानव-जीवन का उचित पथ-प्रदर्शन होता आया है। जीवन-पारखी उन्ही महापुरुपो के अनुभवो का साराश हमको उनकी साहित्यिक रचनाओ एव सूक्तियो से प्राप्त होता है जिन्हें वे इस नश्वर जगत् में अपनी अमरता के प्रतीक के रूप में छोड जाते है। महापुरुपो के इन्ही विचारो एव सूक्तियो का सहारा लेकर हम मानव-जीवन की गूढ समस्याओ को पूर्णत नही तो अशत हल करने का प्रयत्न कर सकते है।

इन सूक्तियो में ससार के अनुभव है, जीवन के वहुमूल्य सिद्धान्त है। इनमें शाश्वतिक सत्य, उद्‌बुद्ध चिन्तन और गभीर अनुशीलन की ज्योति अन्तर्हित रहती है। इनमें युगो युगो की मानव चेतना तथा अनुभूतियाँ ही नही है, तर्क है, युक्तियाँ है, निर्देशन है तथा इन सवसे वढकर अटूट विश्वास और गहरी निष्ठा है, जिससे वे हमारा पथ-प्रदर्शन करती है। इन सूक्तियो का हमारे नित्यप्रति की जीवनचर्या से लगाव रहता है और इनको हम अपने ही जीवन की निधि मान लेते है। अपने जीवन की ममस्याओ को सुलझाने का सफल सुझाव इन सूक्तियो द्वारा हम सदैव प्राप्त कर सकते है और हमारे लिए वे सभी स्थितियो में माननीय एव आदरणीय है। ये सूक्तियाँ यह भी सिद्ध करती है कि मानव-हृदय सभी देशो में एव सभी युगो में एक सा रहा है और समान अनुभव मनुष्यो के मस्तिष्क में समान विचार प्रसूत करते है।

भारत में जैसे वेद, उपनिपद्, रामायण, महाभारत, पुराणो तथा धर्मशास्त्र का, सस्कृत के कालिदास, माघ, भारवि आदि अमर कवियो का, तथा कवीर, तुलसी, गाधी, रवीन्द्र और प्रेमचन्द की सूक्तियो एव विचारो का वडा आदर है उसी प्रकार यूनान में सुकरात, प्लेटो और अरस्तू के, चीन में कन्फ्यूशस के, जर्मनी में शोपेनहावर और गेटे के, रूस में टालस्टाय तथा लेनिन के, इँग्लैंड में शेक्सपियर और मिल्टन के और अमेरिका में एमर्सन तथा लिंकन के विचार वडे प्रसिद्ध है।

विद्यार्थी-जीवन से ही सूक्तियो के पीछे मैं दीवाना रहा हूँ एव अच्छी पुस्तको का अध्ययन मेरा प्रिय व्यसन रहा है। मेरी आदत रही है कि जहाँ कही भी उनमें कोई सुन्दर सूक्ति मिली उसको अपनी नोटबुक में लिख लिया। धीरे-धीरे ऐसी सूक्तियो की सख्या में वृद्धि होती गयी और अब तक के मेरे परिश्रम का परिणाम सूक्ति-सागर के रूप में आपके सामने है।

अग्रेजी में इस प्रकार के एक से एक अच्छे ग्रन्थ एव विचार-कोप है परन्तु उनके सपादक सम्भवत. भारतीय विद्वानो के विचारो से अनभिज्ञ होने के कारण उनकी सूक्तियो को अपने सग्रहो में स्थान न दे सके। उनको कदाचित् यह ज्ञान ही नही कि भारत आदि काल से विश्व का आध्यात्मिक गुरु रहा है और अपनी गिरी से गिरी दशा में भी उसने सारे विश्व को अध्यात्म, दर्शन एव सात्विक जीवन की शिक्षा दी है और उसके ग्रन्थो में इतने ऊँचे विचार है जहाँ पहुँच कर पाश्चात्य प्रतिभा, फ्रेंच दार्श-निक विक्टर कजिन्स के शब्दो में, भारत के तत्त्वज्ञान के आगे घुटने टेक देती है।

सस्कृत साहित्य तो सूक्तियो का अक्षय भडार है। इसमें उत्तम सूक्ति-कोप भी है किन्तु राष्ट्र भापा हिन्दी में इस प्रकार के किसी अच्छे सूक्ति-कोप का अभाव देख कर मुझे खेद हुआ। मैंने अपने पास उपलब्ध सामग्री को ही सकलित करने का निश्चय किया। सूक्ति-सागर उसी निश्चय का फल है। मैं चाहता तो पाश्चात्य सग्रह कर्ताओ की भाँति सूक्ति-सागर में केवल भारतीय विद्वानो के ही विचार सग्रह करता, किन्तु अनुभव के क्षेत्र में काले-गोरे का यह भेद-भाव मुझे अच्छा नही लगा, क्योकि महान् विचार सार्वभौम तथा शाश्वत होते है और वे भौगोलिक अथवा जाति-पाँति की सीमाओ में बाँधे नही जा सकते।

अस्तु, यह सूक्ति-सागर भिन्न भिन्न देशो के विद्वानो के विचारो एव सूक्तियो का सग्रह है। इसमें जहाँ एक ओर वाल्मीकि, वेदव्यास, गौतम बुद्ध, कालिदास, शकरा-चार्य, भर्तृहरि, चाणक्य, तुलसी, कबीर, रहीम, रामकृष्ण परमहस, रामतीर्थ, विवेका-नन्द, तिलक, गाधी, रवीन्द्र और प्रेमचन्द के चुने हुए विचार है वहाँ दूसरी ओर कन-फ्यूशस, सुकरात, प्लेटो , अरस्तू, वर्जिल, गेटे, बेकन, बर्क, शेक्सपियर, टालस्टाय, लेनिन, एमर्सन, लिंकन आदि विदेशी विद्वानो की सर्वमान्य सूक्तियाँ भी दी गयी है। सकलित सूक्तियो में प्राच्य बुद्धिमत्ता तथा अध्यात्मवाद के चमत्कार के साथ-साथ पाठकों को पाश्चात्य व्यावहारिकता एवं भौतिकवाद की आभा भी दृष्टिगोचर होगी।

साहित्य-मर्मज्ञ पद्मभूपण डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी डी० लिट्० अध्यक्ष हिन्दी विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रति मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ जिन्होने सूक्ति-सागर की भूमिका लिख कर इसे गौरवान्वित किया।

हिन्दी के उन अन्य विद्वानो का भी मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ जिन्होने अपना अमूल्य समय देकर सूक्ति-सागर की पाडुलिपि देखने और अपनी सम्मति लिखने की कृपा की है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के सहायक मत्री, सस्कृत और हिन्दी के प्रकाड विद्वान्, सुविख्यात लेखक एव सूक्ति-पारखी श्री रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री का मैं हृदय से आभारी हूँ जिन्होने अपने व्यस्त दैनिक जीवन से पर्याप्त समय निकाल कर सूक्ति-सागर के प्रत्येक पृष्ठ को पढा और अनेकानेक सुझाव दिये तथा 'परिचय' लिखने की कृपा की। उनकी सहृदयता और उदारता को मैं कभी भूल नही सकता।

इसी सिलसिले में मैं अपने अनुज डा० केदारनाथ एम० डी० (रीडर इन मेडिसिन मेडिकल कालेज लखनऊ) के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ तथा अपनी सहधर्मिणी के छोटे भाई श्री वीरेन्द्र कुमार एम० एस-सी० को भी आशीर्वाद दिये विना नही रह सकता जिन्होने सग्रह तैयार करने में पूर्ण सहयोग दिया है।

अत में मैं उन समस्त सतो, महात्माओ, ऋषियो एव साहित्यकारो के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिनकी अमूल्य रचनाओ से मैंने सूक्तियाँ सग्रह कर सूक्ति-सागर को अलकृत और सुसज्जित किया है।

एक प्रार्थना अपने विज्ञ पाठको से है। पुस्तक में जो अपूर्णता और त्रुटि उन्हें खटके उसे वे सग्रहकर्त्ता को सूचित करने का कष्ट करें जिससे अगले सस्करण में उनसे लाभ उठाया जा सके।

विनीत
रमाशकर गुप्त
(सग्रहकर्त्ता)

बी/३ राधा विल्डिग
चौक, लखनऊ

विषय-सूची

ह

अंतःकरण

सता हि सदेहपदेपु वस्तुपु प्रमाणमन्त करणप्रवृत्तय. ।

सन्देह की स्थिति में सज्जनो के अत करण की प्रवृत्ति ही प्रमाण होती है।

—कालिदास (अभिज्ञान शाकुन्तलम्)

The foundation of true joy is in the conscience

सच्चे आनन्द का आधार हमारे अत करण में ही है। —सेनेका

जिस प्रकार दीपक दूसरी वस्तुओ को प्रकाशित करता है और अपने स्वरूप को भी प्रकाशित करता है, उसी प्रकार अत करण दूसरी वस्तुओ का भी प्रत्यक्ष करता है और अपना भी प्रत्यक्ष करता है। —डा० सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)

Man's conscience is the oracle of God

मानव का अत करण ही ईश्वर की वाणी है। —बायरन

In matters of conscience, the law of majority has no place

अत करण के मामले में बहुमत के नियम को कोई स्थान नहीं है।

—महात्मा गाधी

The torture of a bad conscience is the hell of a living soul

पापी अत करण की यत्रणा जीवित मनुष्य के लिए नरक है। —काल्विन

निर्मल अत करण को जिस समय जो प्रतीत हो वही सत्य है। उस पर दृढ रहने से शुद्ध सत्य की प्राप्ति हो जाती है। —महात्मा गाधी

दयाशील अत करण प्रत्यक्ष स्वर्ग है। —स्वामी विवेकानन्द

Conscience is the voice of the soul as the passions are the voice of the body No wonder they often contradict each other

अत करण आत्मा की वाणी है, जैसे कि वासनाए शरीर की। इसमें आश्चर्य ही क्या यदि वे एक दूसरे का खडन करती है। —रूसो

ज्ञाताज्ञात पाप ही अंत.करण की मलिनता है। जब तक अतःकरण मलरहित, पापरहित नही होगा, तब तक वास्तविक दृष्टि—दिव्य-दृष्टि—का उदय नही होगा।

—स्वामी शंकराचार्य

Conscience, though ever so small a worm while we live, grows suddenly into a serpent on our death-bed.

अंत.करण यद्यपि, जब तक हम जीवित रहते हैं, एक तुच्छ कीड़े के रूप में रहता है, तथापि वही मृत्यु-शय्या पर अकस्मात् सर्प का रूप धारण कर लेता है।

— जेरोल्ड

There is no witness so terrible—no accuser so powerful as conscience which dwells within us.

कोई साक्षी इतना विकट और कोई अभियोक्ता इतना शक्तिशाली नही है, जितना कि अपना ही अंतःकरण।

— सोफोक्लीज़्

वही मनुष्य ईश्वर के दर्शन कर सकता है, जिसका अंत.करण निर्मल और पवित्र है।

— स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)

अंतःकरण जब प्रेमानुभूति से आप्लुत हो जाता है, तभी जीवन की गति सरल हो जाती है।

— अज्ञात

Cowardice asks, Is it safe ? Expediency asks, Is it politic ? Vanity asks, Is it popular ? but Conscience asks, Is it right ?

कायरता पूछती है—क्या यह भयरहित है ? औचित्य पूछता है—क्या यह व्यावहारिक है ? अहंकार पूछता है-—क्या यह लोकप्रिय है ? परन्तु अत.करण पूछता है—क्या यह न्यायोचित है ?

— पुन्शान

Conscience is a coward, and those faults it has not strength to prevent, it seldom has justice to accuse.

अंतःकरण डरपोक होता है, और जिन दोषो को रोकने की उसमें शक्ति नहीं होती, उन्हें अपराधी ठहराने की उसमें प्रायः न्यायबुद्धि भी नहीं होती।

—गोल्डस्मिथ (विकार आफ वेकफील्ड)

Conscience does make cowards of us all.

अंत.करण हम सब को कायर बना देता है।

—शेक्सपियर (हैम्लेट)

The soft whispers of the God in man.

ईश्वर का मानव से कोमल सलाप ही अत करण है। —यंग

मनुष्य के अन्दर ईश्वर की उपस्थिति को अत.करण कहते हैं।

—स्वेडन वोर्ग

केवल निष्काम कर्मयोग के साधन से भी अत करण की शुद्धि होकर अपने आप ही परमात्मा के स्वरूप का यथार्थ ज्ञान हो जाता है। —अज्ञात

जैसे नेत्रो में जरा भी कण पड जाने से कोई वस्तु ठीक-ठीक नही दीख पडती, ऐसे ही अत करण में थोडी भी वासना रहने से आत्मा के दर्शन नहीं हो पाते।

—स्वामी भजनानन्द

जैसे कपडे को साफ करने के लिए साबुन, सोडा, रेह तथा रीठा आदि अनेक वस्तुएँ हैं, इसी प्रकार अन्त करण को शुद्ध करने के लिए कर्म, भक्ति, ज्ञान, जप, तप, प्राणायाम व सत्सग आदि अनेक साधन हैं। —अज्ञात

मनुष्य का अन्त करण उसके आकार, सकेत, गति, चेहरे की बनावट, बोलचाल तथा आँख और मुख के विकारो से मालूम पड जाता है। —पचतन्त्र

जैसे शीशे में अपना चेहरा तभी दिखलाई पडता है जब कि शीशा साफ व स्थिर हो, इसी प्रकार शुद्ध अन्त.करण में ही भगवान् के दर्शन होते हैं।

—स्वामी भजनानन्द

अन्त करण को 'मैं, मेरा' ये भावनाएँ बहुत तकलीफ देती हैं। इनके निकल जाने से अन्त.करण को उसी प्रकार सुख होता है जैसे काँटा निकल जाने से शरीर को।

—अज्ञात

मैले शीशे में सूर्य की किरणो का प्रतिबिम्ब नही पड़ता। उसी प्रकार जिनका अन्त.करण मलिन और अपवित्र है उनके हृदय में ईश्वर के प्रकाश का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ सकता। —रामकृष्ण परमहंस

Conscience is the chamber of justice.

अत.करण न्याय का कक्ष है। —एद्रायन

अंत

सर्वे क्षयान्ता निचयाः पतनान्ताः समुच्छ्रयाः।
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तं च जीवितम्॥

सभी संग्रहों का अन्त क्षय है, बहुत ऊँचे चढ़ने का अन्त नीचे गिरना है। संयोग का अन्त वियोग है और जीवन का अन्त मरण है। —वाल्मीकि रामायण

अंधकार

It is always darkest just before the day dawneth.
प्रभात होने से पूर्व घोर अंधकार होता है। —फुलर

तमसो मा ज्योतिर्गमय। —मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।

आरोह तमसो ज्योतिः। —अंधकार (अविद्या) से निकलकर प्रकाश (ज्ञान) की ओर बढो। —वेद

अंधा

को वा महान्धो, मदनातुरो यः।
बड़ा भारी अंधा कौन है, जो काम-वश व्याकुल है। —स्वामी शंकराचार्य

Darkness travels towards light, but blindness towards death.
अंधकार प्रकाश की ओर चलता है, परन्तु अंधापन मृत्यु की ओर।
—रवीन्द्र

कंजूस आदमी अंधा होता है, क्योंकि वह धन के सिवाय और किसी सम्पत्ति को नहीं देखता। फिजूलखर्ची करनेवाला अंधा होता है क्योंकि वह आज को ही देखता है, कल को नही देखता। रिझानेवाली नारी अंधी होती है क्योंकि वह बुढापे की झुर्रियाँ नही देखती। विद्वान् अंधा होता है क्योंकि वह अपने अज्ञान को नहीं देखता।
—विक्टर ह्यूगो

न पश्यन्ति च जन्मान्धाः कामान्धो नैव पश्यति।
मदोन्मत्ता न पश्यन्ति अर्थी दोषं न पश्यति॥

जन्म से अंधे नहीं देखते, काम से जो अंधा हो रहा है उसको सूझता नहीं, मदोन्मत्त किसी को देखते नही, स्वार्थी मनुष्य दोषों को नहीं देखता। —चाणक्य

अंधा वह नही है जिसकी आँखें फूट गयी हैं, वरन् वह है जो अपने दोष छिपाता है।

—एक संत

अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्।
सर्वस्य लोचन शास्त्र यस्य नास्त्यन्ध एव स ॥

शास्त्रो द्वारा नाना प्रकार के संशयो का निराकरण और परोक्ष विषयो का ज्ञान होता है। इसलिए शास्त्र सभी के नेत्ररूप है। इसी लिए कहा जाता है कि जिसे शास्त्रो का ज्ञान नही वह एक प्रकार से अंधा है। —हितोपदेश

अकर्म में कर्म

एक स्थिति ऐसी होती है जब मनुष्य को विचार प्रकट करने की आवश्यकता नही रहती। उसके विचार ही कर्म बन जाते हैं, वह संकल्प से कर्म कर लेता है। ऐसी स्थिति जब आती है तब मनुष्य अकर्म मे कर्म देखता है, अर्थात् अकर्म से कर्म होता है। —महात्मा गांधी

अकर्मण्य

पुरुषार्थी मनुष्य सर्वत्र भाग्य के अनुसार प्रतिष्ठा पाता है, परन्तु जो अकर्मण्य है, वह सम्मान से भ्रष्ट होकर घाव पर नमक छिडकने के समान असह्य दु ख भोगता है।

—वेदव्यास (महाभारत, अनु०)

अकर्मण्यता

Nature knows no pause in her progress and development, and attaches her curse on all in action.

प्रकृति अपनी उन्नति और विकास में रुकना नही जानती और अपना अभिशाप प्रत्येक अकर्मण्यता पर लगाती है। —गेटे

Inactivity is death. — अकर्मण्यता मृत्यु है। —मुसोलिनी

अकृतज्ञ

अकृतज्ञ मानव से एक कृतज्ञ कुत्ता बेहतर है। —शेख सादी

Ingratitude is treason to mankind.

अकृतज्ञता मानवता के प्रति विश्वासघात है।   —टामसन

Not to return one good office for another is inhuman; but to return evil for good is diabolical.

नेकी का वदला न देना क्रूरता है और उसका वदी में जवाब देना पिशाचता है।
—सेनेका

अकृतज्ञता ही मनुष्यत्व का विष है।   —सर पी० सिडनी

Brutes leave ingratitude to man.

पशुओं ने अकृतज्ञता मानव के लिए छोड़ दी है।   —कोल्टन

अकेला

The strongest man of the world is the one who stands most alone.

संसार में सवसे शक्तिशाली मनुष्य वही है जो अकेला (आत्म-निर्भर) रहता है।
—इब्सन

They walk with speed who walk alone.

जो अकेले चलते हैं वे तेजी से वढ़ते हैं।   —नेपोलियन

एकेनापि हि शूरेण पदाक्रान्तं महीतलम्।
क्रियते भास्करेणेव स्फारस्फुरिततेजसा॥

जिस प्रकार सूर्य अकेला ही अपनी किरणो से समस्त संसार को प्रकाशमान कर देता है, उसी प्रकार एक ही वीर अपनी शूरता और पराक्रम-साहस से सारी पृथ्वी को अपने पैरो तले कर लेता है।   —भर्तृहरि

अज्ञान

Ignorance is the night of the mind but a night without moon or star.

अज्ञान मन की रात्रि है, लेकिन वह रात्रि जिसमें न तो चाँद है और न तारे।
—कनफ्यूशस

बार-बार शरीर धारण करना जीव के अज्ञान का परिणाम है।

—डा० सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)

अज्ञान हठधर्म की जननी है। —पोप

अज्ञान की अवस्था में सर्वस्व खो जाने पर भी वेदना सोयी रहती है।

—अज्ञात

आरभन्तेऽल्पमेवाज्ञा काम व्यग्रा भवन्ति च।
महारम्भा कृतधियस्तिष्ठन्ति च निराकुला ॥

अज्ञानी मनुष्य थोडा ही आरभ करते हैं और बहुत व्याकुल होते हैं, परन्तु ज्ञानी बडा कार्य आरम्भ करने पर भी नही घबराते।

—हितोपदेश

अशिक्षित रहने से पैदा न होना अच्छा है, क्योंकि अज्ञान विपत्तियों का मूल है।

—प्लेटो

To be proud of learning is the greatest ignorance

अपनी विद्वत्ता पर अभिमान करना सबसे बडा अज्ञान है। —जेरेमी टेलर

To be ignorant is not the special prerogative of man ; to know that he is ignorant is his special privilege.

अज्ञानी होना मनुष्य का असाधारण अधिकार नही है, वरन् अपने को अज्ञानी जानना ही उसका विशेष अधिकार है। —डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

There are times when ignorance is bliss, indeed

कभी-कभी ऐसा भी समय आता है जब अज्ञानता ही सुखद होती है।

—डिकेन्स

अज्ञान के समान दूसरा वैरी नही है। —चाणक्य

There is no darkness but ignorance.

अज्ञान ही अधकार है। —शेक्सपियर (ट्वेल्फ्थ नाइट)

Where ignorance is bliss
'Tis folly to be wise.

जहाँ अज्ञानता परम सुख हो वहाँ ज्ञानी होना मूर्खता है। —ग्रे

अज्ञान को ज्ञान ही मिटा सकता है। —स्वामी शंकराचार्य

Ignorance is the mother of fear
अज्ञान भय की जननी है। —एच० होम

अज्ञानी

हितहू की कहिये नही, जो नर होय अबोध।
ज्यो नकटे को आरसी, होत दिखाये क्रोध॥ —वृन्द

निपट अबुध समझै कहा, बुधजन-वचन-विलास।
कबहू भेक न जानई, अमल कमल की बास॥ —अज्ञात

रूपयौवनसंपन्ना विशालकुलसंभवाः।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः॥

(सुन्दर, तरुण और बड़े कुल में उत्पन्न भी विद्याहीन (अज्ञानी) मनुष्य ऐसे नही शोभा पाते जैसे बिना गन्ध वाला पलाश का फूल।) —चाणक्य

अति

अतिरूपेण वै सीता अतिगर्वेण रावणः।
अतिदानाद्बलिर्बद्धो ह्यति सर्वत्र वर्जयेत्॥ —चाणक्य

अति सुन्दरता के कारण सीता हरी गयी, अति गर्व से रावण मारा गया, अति दान के कारण बलि को बँधना पड़ा, अति को सब जगह छोड़ देना चाहिए।

Excess generally causes reaction, and produces a change in the opposite direction, whether it be in the season, or in individual or in government.

प्राय: अति से प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है और विपरीत दिशा में परिवर्तन होता है, चाहे यह ऋतु, व्यक्ति या शासन में हो।

—प्लेटो

There can be no excess to love, to knowledge, to beauty, when these attributes are considered in the purest sense.

प्रेम में, ज्ञान में और सौन्दर्य में कभी अति नही होती, जब ये गुण पूर्ण शुद्ध अर्थ में समझे जायँ। —एमर्सन

अति संघरषन जौं कर कोई।
अनल प्रगट चंदन तें होई॥ —तुलसी (मानस, उत्तर)

अधिक हर्ष और अधिक उन्नति के बाद ही अधिक दुःख और पतन की बारी आती है। —जयशंकर प्रसाद

अतिथि

'अतिथि देव' का अर्थ है समाज-देवता।
समाज अव्यक्त है अतिथि व्यक्त है। अतिथि समाज की व्यक्त मूर्ति है।
—विनोबा

अकर्मण्य, बहुत खानेवाले, क्रूर, देश-काल का ज्ञान न रखनेवाले और निन्दित वेश धारण करनेवाले मनुष्य को कभी अपने घर में न ठहरने दे। —विदुर

The first day, a guest, the second, a burden, the third, a pest.
पहले दिन अतिथि, दूसरे दिन बोझ और तीसरे दिन कंटक है। —लेबोला

अतिथि समाज का एक प्रतिनिधि है। अतिथि के रूप में समाज हमसे सेवा माँग रहा है; हमारी यह भावना होनी चाहिए। —विनोबा

अतिथि-सत्कार

अतिथि-सत्कार से मनुष्य देवत्व को प्राप्त होता है। —मार्कण्डेय

जो मनुष्य योग्य अतिथि का प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करता है, उसके घर में निवास करने से लक्ष्मी को आह्लाद होता है। —संत तिरुवल्लुवर

पुष्प सूंघने से मुरझा जाता है, मगर अतिथि का दिल तोड़ने के लिए एक निगाह ही काफी है। —संत तिरुवल्लुवर

किसी को भी भूख-प्यास अगर न लगती तो हमें अतिथि-सत्कार का मौका नहीं मिलता। —विनोबा

True friendship's laws are by this rule express'd, welcome the coming, speed the parting guest.
सच्ची मित्रता के नियम इस क्रम से सूचित होते हैं—आनेवाले का स्वागत करना, जानेवाले को शीघ्रता से विदा करना। —पोप

यदि कुछ न हो तो प्रेमपूर्वक बोलकर ही अतिथि का सत्कार करना चाहिए।
—हितोपदेश

अतिथि-सत्कार मनुष्य का परम कर्तव्य है। —बाइबिल

रहिमन तब लगि ठहरिए, दान-मान सनमान।
घटत मान देखिय जबहिं, तुरतहिं करिय पयान॥ —रहीम

प्रेम रीति से जो मिलै, तासों मिलिए धाय।
अंतर राखे जो मिलै, तासों मिलै बलाय॥ —कबीर

आवत ही हर्षे नहीं, नयनन नहीं सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइए, कंचन बरसे मेह॥ —तुलसी

An honest, hearty welcome to a guest works miracles with the fare, and is capable of turning the coarsest food to nectar and ambrosia.

अतिथि के साथ सच्चे और हार्दिक स्वागत में वह शक्ति है कि जो साधारण से साधारण भोजन को अमृत और देवताओं का भोजन बना देती है। —हायोनी

अति भोजन

बहुत खानेवाले मनुष्य का कभी आदर नहीं होता। —सादी

Their kitchen is their shrine, the cook their priest, the table their altar, and their belly their God.

उन (पेटू मनुष्यों) की पाकशाला उनका तीर्थ-स्थान, रसोइया उनका पुरोहित, मेज उनकी वेदी और पेट उनका ईश्वर है। —बक

अतीत की स्मृति

The music of the far-away summer flatters around the autumn seeking its former nest.

ग्रीष्मकाल का संगीत, शरत्काल के आसपास, अपने पुराने निवास की खोज में फड़फड़ा रहा है। —रवीन्द्र

I desire no future that will break the ties of the past
मैं ऐसे भविष्य को नही चाहती, जो अतीत से मेरा सम्बन्ध छुड़ा दे।

—जार्ज इलियट

अतीत चाहे दुःखद ही क्यो न हो, उसकी स्मृतियाँ मधुर होती है। —प्रेमचन्द

Study the past if you would divine the future
भविष्य का अनुमान लगाने के लिए अतीत का अध्ययन करो। —कनफ्यूशस

अतृप्त

पक्षी चाहता है—'मैं बादल होता'।
बादल चाहता है—'मैं पक्षी होता'। —रवीन्द्र

धनेषु जीवितव्येषु स्त्रीषु चाहारकर्मसु।
अतृप्ता प्राणिन सर्वे याता यास्यन्ति यान्ति च ॥ —चाणक्य

धन, जीवन, स्त्री और भोजन के विषय में सब प्राणी अतृप्त होकर गये, जाते हैं और जायँगे।

The desire of the moth for the star
Of the night for the morrow,
The devotion to something afar
From the sphere of our sorrow

पतिंगे की नक्षत्र के लिए इच्छा, रात्रि की दिवस के प्रति और अपने [illegible] अज्ञात सुख की कामना—यही तो जीवन की चिर-अतृप्त इच्छा है। —[illegible]

अत्याचार

Cruelty and fear shake hands together
अत्याचार और भय परस्पर हाथ मिलाते है। —[illegible]

अत्याचार-परायण राज-सत्ता जब अपनी शक्ति [illegible] की मात्रा बढ़ाती जाती है, तब उसकी गति को रोकना अनिवार्य हो जाता है। [illegible] अवस्था में छल, बल और कौशल से काम लिये बिना काम नहीं [illegible]।

—[illegible]

अनाचार और अत्याचार को चुपचाप सिर झुकाकर वे ही सहन करते हैं जिनमें नैतिकता और चरित्र का अभाव हुआ करता है। —अज्ञात

Man's inhumanity to man
Makes countless thousands mourn !

मानव का मानव के प्रति अत्याचार असंख्य मनुष्यो को दुःख में डाल देता है।
—रावर्ट वर्न्स

अत्याचार जव निरंकुश होकर नग्न ताण्डव करने लगता है, तव वलिवेदी पर चढ़ने को तैयार होने के सिवा और कोई भी उपाय नही रह जाता। —अज्ञात

All cruelty springs from hard-heartedness and weakness
समस्त अत्याचार क्रूरता एवं दुर्वलताओ से उत्पन्न होते हैं। —सेनेका

अत्याचारी

Kings will be tyrants from policy, when subjects are rebels from principle.

जव प्रजा सिद्धान्त के लिए विद्रोह करती है तव राजा अपनी नीति से अत्याचारी हो जाता है। —वर्क

वद अस्तर तरज़ मरदुमाज़ार नेस्त।
कि रोज़े मुसीवत कसरा भार नेस्त॥

अत्याचारी से वढ़कर अभागा आदमी और कोई नही है, क्योकि विपत्ति के समय उसका कोई मित्र नही होता। —सादी (गुलिस्ताँ)

अन्यायी और अत्याचारी की करतूतें मनुष्यता के नाम खुली चुनौती हैं, जिसे वीर पुरुषो को स्वीकार करना ही चाहिए। —अज्ञात

Rebellion to tyrants is obedience to God
अत्याचारी के प्रति विद्रोह करना ईश्वर की आज्ञा मानना है। —फ्रैंकलिन

जो अत्याचारी है उसका सोना जागने से अच्छा है, सच तो यह है कि उसके जीवन से उसका मरण ही अच्छा है। —सादी (गुलिस्ताँ)

That sovereign is a tyrant who knows no law but his own caprice

वह शासक अत्याचारी है जो अपनी इच्छा के अतिरिक्त कोई नियम नहीं जानता। —वाल्टेयर

अधर्म

अधर्म की सेना का सेनापति झूठ है, जहाँ झूठ पहुँच जाता है वहाँ अधर्म राज्य की विजय-दुन्दुभी अवश्य बजती है। —सुदर्शन (पुष्पलता)

अधर्म साम्राज्य-लोलुपता की तरह बर्बर और स्वार्थमय है। —रस्किन

The most complete injustice is to seem just, when not so

अपने को न्यायी दिखलाना, जब कि ऐसा न हो, सबसे बड़ा अधर्म है।
—प्लेटो (रिपब्लिक)

जो अधर्म करते हैं चाहे उन्हें उसका फल तत्काल न मिले पर धीरे-धीरे वह उनकी जड़ काट डालता है। —वेदव्यास (महा० शा० प०)

अधर्म पर स्थापित राज्य कभी नहीं टिकता। —सेनेका

जैसे बुढ़ापा सुन्दर रूप-रंग का नाश कर देता है उसी प्रकार अधर्म से धर्म का नाश हो जाता है। —स्वामी [illegible]

अधिकार

अधिकार-सुख कितना मादक और सारहीन है। —जयशंकर प्रसाद

Power corrupts, absolute power absolutely

अधिकार भ्रष्ट करता है, पूर्ण अधिकार पूर्ण रूप से। —लार्ड एक्टन

Power, like a desolating pestilence
Pollutes whatever it touches

अधिकार विनाशकारी प्लेग के सदृश है। वह जिसे छूता है उसे ही नष्ट कर देता है। —शेली

संसार में सबसे बड़े अधिकार सेवा और त्याग से मिलते हैं। —प्रेमचन्द

अधिकारमद पीत्वा को न मुह्यात् पुनश्चिरम् ।

अधिकाररूपी मदिरा का पान कर कौन है जो चिरकाल तक उन्मत्त नही बना रहता । —शुक्राचार्य (शुक्रनीति)

अपनत्व की अनुभूति ही तो अधिकारों की जननी है। —अज्ञात

नहर यह सोचना पसन्द करती है कि नदियाँ केवल उसे जल देने के लिए हैं। —रवीन्द्र

अधिकारों की भी सीमा होती है और शासन का समय। सीमा लाँघने के बाद अधिकार अधिकार न रहकर तानाशाही बन जाता है, समय लाँघने के बाद शासन अत्याचार की भयानकता बन जाता है। —अज्ञात

अध्ययन

Studies serve for delight, for ornament and for ability.

अध्ययन आनंद का, अलकरण का और योग्यता का काम करता है। —बेकन

Read not to contradict and confute, nor to believe and take for granted, nor to find talk and discourse, but to weigh and consider.

अध्ययन खंडन और असत्य सिद्ध करने के लिए न करो, न विश्वास करके मान लेने के लिए करो, न बातचीत और विवाद करने के लिए करो, बल्कि मनन और परिशीलन के लिए करो। —बेकन

There are more men ennobled by study than by nature.

प्रकृति की अपेक्षा अध्ययन से अधिक मनुष्य श्रेष्ठ बने है। —सिसरो

मनुष्य-मात्र में बुद्धिगत ऐसा कोई दोष नही है जिसका प्रतिकार उचित अभ्यास के द्वारा न हो सकता हो। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए जैसे अनेक प्रकार के व्यायाम हैं वैसे ही मानसिक रुकावटो को दूर करने के लिए अनेक प्रकार के अध्ययन हैं। —बेकन

जितना ही हम अध्ययन करते हैं, उतना ही हमको अपने अज्ञान का आभास होता जाता है। —शेली

Crafty men condemn studies, simple men admire them, and wise men use them

धूर्त मनुष्य अध्ययन का तिरस्कार करते है, सरल मनुष्य उनकी प्रशंसा करते है और ज्ञानी पुरुष उसका उपयोग करते है। —बेकन

सद्ग्रन्थ इस लोक के चिन्तामणि है। उनके अध्ययन से सब कुचिन्ताएँ मिट जाती है। संशय-पिशाच भाग जाते है और मन में सद्भाव जाग्रत होकर परम शान्ति प्राप्त होती है। —स्वामी शिवानन्द

अध्यापक

अध्यापक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते है। वे संस्कारो की जड़ो में खाद देते है और अपने श्रम से उन्हें सींच-सींच कर महाप्राण शक्तियां बनाते है।

—महर्षि अरविन्द

अध्यापक-जीवन का एक बड़ा भारी अभिशाप यह है कि आप को ऐसी सैकड़ों बातो को पढना-पढाना होगा जिन्हे आप न तो हृदय से स्वीकार करते है और न शागिर्द के लिए हितकर मानते है। यहाँ आदमी को आपा खोकर ही सफलता मिलती है।

—डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी

अध्यापक के सामने बड़े से बड़े व्यक्ति ने सिर झुकाया है। सांसारिक ऐश्वर्य एवं प्रभुता उसके महत्त्व के आगे तुच्छ है और शक्तिशाली उसके आगे हमेशा श्रद्धावनत हुए है। —डा० अमरनाथ झा

लब्धास्पदोऽस्मीति विवादभीरोन्तितिक्षमाणस्य परेण निन्दाम्।
यस्यागम केवलजीविकाया त ज्ञानपण्य वणिज वदन्ति॥

जो अध्यापक नौकरी पा लेने पर शास्त्रार्थ से भागता है, दूसरो से [illegible] पर भी चुप रह जाता है और केवल पेट पालने के लिए विद्या पढाता है, ऐसा व्यक्ति पडित नही वरन् ज्ञान बेचनेवाला बनिया कहलाता है। —कालिदास

अनर्थ

यौवन धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्॥ —पञ्चतन्त्र

यौवन, धनसम्पत्ति, प्रभुता और अविवेक—इनमें से एक-एक भी अनर्थ का कारण होता है, फिर जहाँ ये चारों मौजूद हो उसके लिए क्या कहना।

अनाथ

अनाथ बच्चों का हृदय उस चित्र की भाँति होता है जिस पर एक बहुत ही साधारण परदा पडा हुआ हो। पवन का साधारण झकोरा भी उसे हटा देता है।

—प्रेमचन्द (मानसरोवर)

अनादर

सुनु प्रभु बहुत अवज्ञा किये, उपजै क्रोध ज्ञानिहुँ के हिये ॥

—तुलसी (मानस, उत्तर)

It is better not to live at all than to live disgraced

अनादरपूर्वक जीने से बिलकुल न जीना ही अच्छा है। —सोफोक्लीज

गुरुजनो का अनादर ही उनका वध कहलाता है।

—भगवान कृष्ण (महाभारत)

अनासक्ति

कर्मफल और इंद्रिय-विषयों में मन न लगाकर कार्य करना ही अनासक्ति है।

—अरविन्द

अनासक्ति की कसौटी यह है कि फिर उस वस्तु के अभाव में हम कष्ट का अनुभव न करें। —हरिभाऊ उपाध्याय

अनिमंत्रित

जदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा। जाइय बिनु बोलेहु न सँदेहा ॥
तदपि विरोध मान जहँ कोई। तहाँ गये कल्यान न होई ॥

—तुलसी (मानस, बाल)

अनुकरण

अभी तक अनुकरण करके कोई भी व्यक्ति महान् नही हो पाया है।

—सैमुअल जानसन

Man is an imitative creature, and whoever is foremost leads the herd.

मनुष्य अनुकरण करनेवाला प्राणी है और जो सबसे आगे बढ़ जाता है वही समूह का नेतृत्व करता है। —शिलर

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन ।
स यत्प्रमाण कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ —भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

सज्जन पुरुष जो कुछ आचरण करते हैं, उसी का अनुकरण दूसरे लोग करते हैं। वे जिसे प्रमाण बनाते हैं, उसी का साधारण लोग अनुसरण करते हैं।

It is by imitation, far more than by precept, that we learn everything

उपदेश की अपेक्षा कहीं अधिक हम अनुकरण करके ही सब कुछ सीखते हैं। —बर्क

अनुकरण पूर्ण निष्कपट चापलूसी है। —कोल्टन

यदि तुम भलाई का अनुकरण परिश्रम के साथ करो तो परिश्रम समाप्त हो जाता है और भलाई बनी रहती है, यदि तुम बुराई का अनुकरण सुख के साथ करो तो सुख चला जाता है और बुराई बनी रहती है। —सिसरो

एकस्य कर्म सवीक्ष्य करोत्यन्योऽपि गर्हितम् ।
गतानुगतिको लोको न लोक पारमार्थिक ॥ —[illegible]

ससार में भेडियाधसान है। एक का अनुकरण करके दूसरा भी [illegible] करने लगता है। लेकिन परमार्थ के काम का कोई भी अनुकरण नहीं करता।

अधानुकरण से आत्मविश्वास के बजाय आत्म-[illegible] होता है। —[illegible]

अनुग्रह

Obligation is thraldom, and thraldom is hateful

अनुग्रह दासता है और दासता घृणास्पद है। —[illegible]

मनुष्य न केवल अपनी सेवाओं पर ही अपितु अपने लिए [illegible] है। —[illegible]

किसी के अनुग्रह की याचना करना अपनी आजादी बेचना है।

—महात्मा गांधी

अनुचित

विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम।

अपने हाथ से लगाये हुए विषवृक्ष को भी अपने ही हाथ से काटना ठीक नही।

—कालिदास

जो लरिका कछु अनुचित करही। गुरु पितु मातु मोद मन भरही।

—तुलसी (मानस, बाल)

अनुभव

ठोकर लगे और दर्द हो तभी मैं सीख पाता हूं। —महात्मा गांधी

Experience is a jewel, and it had need be so, for it is often purchased at an infinite rate.

अनुभव एक रत्न है और इसे ऐसा होना भी चाहिए, क्योंकि प्रायः यह अधिक मूल्य में खरीदा जाता है। —शेक्सपियर

Experience takes dreadfully high school-wages, but it teaches like no other.

अनुभव-प्राप्ति के लिए अत्यन्त अधिक मूल्य चुकाना पड़ता है, परन्तु उससे जो शिक्षा मिलती है वह अन्य किसी साधन द्वारा नही मिल सकती। —कारलाइल

आतम अनुभव ज्ञान की, जो कोई पूछै बात।
सो गूंगा गुड़ खाइ कै, कहै कौन मुख स्वाद॥ —कबीर

व्यथा और वेदना की पाठशाला में जो पाठ सीखे जाते हैं, वे पुस्तको तथा विश्वविद्यालयों में नही मिलते। —अज्ञात

बिना ठोकर खाये आदमी की आँख नही खुलती। —प्रेमचन्द

कष्ट सहने पर ही अनुभव होता है। —महात्मा गांधी

Experience convinces me that permanent good can never be the outcome of untruth and violence.

अनुभव हमें विश्वास दिलाता है कि असत्य और हिंसा का परिणाम स्थायी अच्छाई कभी नही हो सकती। —महात्मा गांधी

दूसरों के अनुभव जान लेना भी एक अनुभव है। —[illegible]

स्वयं अपने को लेकर मैं तो प्रति दिन यही अनुभव करता हूँ कि मेरे भीतर और बाहरी जीवन के निर्माण में कितने अगणित व्यक्तियों के श्रम और कृपा का हाथ रहा है और इस अनुभूति से उद्दीप्त मेरा अंतःकरण कितना छटपटाता है कि मैं कम से कम इतना तो इस दुनिया को दे सकूँ जितना कि मैंने उससे अभी तक लिया है।

—आइन्स्टाइन

अनुभूति

जीवन की गहराई की अनुभूति के कुछ क्षण ही होते हैं, वर्ष नहीं।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

ज्यों गूंगे के सैन को, गूंगा ही पहिचान।
त्यों ज्ञानी के सुक्ख को ज्ञानी होय सो जान॥ —कबीर

अनुभूति अपनी सीमा में जितनी सबल है उतनी बुद्धि नहीं। हमारे स्वयं जलने की हलकी अनुभूति भी दूसरे के राख हो जाने के ज्ञान से अधिक स्थायी रहती है।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

कागद लिखै सो कागदी की व्योहारी जीव।
आतम दृष्टि कहा लिखै जित देखै तित पीव॥ —कबीर

(दे० 'अनुभव')

अनुराग

अनुराग, यौवन, रूप या धन से नहीं उत्पन्न होता। अनुराग अनुराग से उत्पन्न होता है। —प्रेमचन्द ([illegible])

रहिमन प्रीति सराहिए, मिले होत रंग दून।
ज्यों हरदी जरदी तजै, तजै सफेदी चून॥ —रहीम

अनुराग स्फूर्ति का भंडार है। —प्रेमचन्द ([illegible])

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़ति छोह॥ —रहीम

The affections are like lightning; you cannot tell where they will strike, till they have fallen.

अनुराग विद्युत की भाँति होता है—आप नहीं कह सकते कि वह कहाँ टकरायेगा जब तक वह कहीं (किसी पर) गिर न जाय। —लैकोरडेयर

अनुराग का बुद्धि, अनुभव या तर्क से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह तो युवावस्था की दुनियाँ में मस्त बहती हुई बयार है। —अज्ञात

We live in this world when we love it.

संसार में हमारा जन्म तभी तक सार्थक है, जब तक संसार से हम अनुराग रखते हैं। —रवीन्द्र (स्ट्रे बर्ड्स)

अन्न

अन्नं वै प्राणाः। (अन्न ही हमारे प्राण हैं।) —वेद

दीपो भक्षयते ध्वान्तं कज्जलं च प्रसूयते।
यदन्नं भक्ष्यते नित्यं जायते तादृशी प्रजा।।

दीपक अंधकार को खाता है और काजल को जन्म देता है। प्राणी नित्य जैसा अन्न खाता है उसकी वैसी ही सन्तति होती है। —चाणक्य

कलावन्नगताः प्राणाः।

कलियुग में प्राण अन्न के ही अधीन हैं। —अज्ञात

अन्न पर स्वत्व है भूखों का, और धन पर स्वत्व है देशवासियों का। प्रकृति ने उन्हें भूखों के लिए रख छोड़ा है। वह उनकी थाती है। —जयशंकर प्रसाद

अंधे, लूले और लँगड़े भी जो काम कर सकें वह काम उनसे लेकर उन्हें रोटी देनी चाहिए। इससे श्रम की पूजा होती है और अन्न की भी। —विनोबा

जो पुरुष हितकारी भोजन करता है उसके लिए वह अन्न अमृत रूप हो जाता है। —वेदव्यास (महा० शा० प०)

जैसा अनजल खाइए तैसा ही मन होय।
जैसा पानी पीजिये तैसी बानी सोय।। —कबीर

अन्न, बल से श्रेष्ठ है। राष्ट्र में अन्न नही होगा तो बल कहां से आवेगा। पहले अन्न का प्रवन्ध होगा, तब ज्ञान, दान का प्रवन्ध हो सकेगा। —उपनिषद्

अधर्मी राजा का अन्न खानेवाले विद्वानो की भी बुद्धि मारी जाती है।
—वेदव्यास (महाभारत)

अन्नदाता

जिसके पेट में भूख है और जो उस भूख को मिटाना चाहता है, उसका तो पेट ही परमेश्वर है। जो आदमी उसे रोटी का साधन देगा, वही उसका अन्नदाता होगा।
—महात्मा गांधी

अन्याय

अन्याय सहकर बैठ रहना,
यह महा दुष्कर्म है।
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी
दण्ड देना धर्म है। —मैथिलीशरण गुप्त

He who commits injustice is ever made more wretched than he who suffers it

अन्याय सहनेवाले की अपेक्षा अन्याय करनेवाला अधिक दुखी होता है।
—प्लेटो

अन्याय को मिटाइए, पर अपने को मिटाकर नही। —प्रेमचन्द

अन्याय के आगे माथा टेक देने का परिणाम उतना ही भयानक होता है जितना कि स्वयं अन्याय करने का। —[illegible]

अन्याय के सामने जो छाती खोलकर खडा हो जाय वही सच्चा वीर है।
—प्रेमचन्द

अन्याय के विरुद्ध लड़ते रहना एक बडी ही सम्मानपूर्ण [illegible] है। —[illegible]

अन्याय में सहयोग देना अन्याय करने के ही समान है। —प्रेमचन्द

अन्याय को सह जाने में ही यदि कोई महत्त्व होता तो [illegible] हुई गाय ससार में सबसे अधिक महत्त्वशालिनी होती। —[illegible]

यदि राज-शक्ति के केन्द्र में ही अन्याय होगा, तब तो समग्र राष्ट्र अन्यायों का क्रीड़ा-स्थल हो जायगा। —जयशंकर प्रसाद

No one will dare maintain that it is better to do injustice than to bear it.

अन्याय सहने से अन्याय करना ज्यादा अच्छा है। इस सिद्धान्त को स्वीकार करने का साहस कोई नही कर सकता। —अरस्तू

अन्वेषक

The investigator should have a robust faith, yet not believe.

अन्वेपक में दृढ़ निष्ठा होनी चाहिए, विश्वास नही। —क्लाड बर्नर्ड

अपकीर्ति

संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते।

सम्मानित पुरुष के लिए अकीर्ति मरण से भी बुरी है। —गीता

No one can disgrace us but ourselves.

अपनी अपकीर्ति के जिम्मेदार हम स्वयं है। —जे० जी० हालैंड

Disgrace is not in the punishment, but in the crime.

अपकीर्ति दंड में नही, अपितु अपराध में है। —एलफिरी

मृत्युश्च को वापयशः स्वकीयम्।

मृत्यु क्या है? अपनी अपकीर्ति। —स्वामी शंकराचार्य

Disgrace is immortal and living even when one thinks it dead.

अपकीर्ति अमर है और जब कोई उसे मृतक समझता है तब भी वह जीवित रहती है। —प्लूटस

अपमान

वरं प्राणपरित्यागो मानभङ्गेन जीवनात्।
प्राणत्यागे क्षणं दु:खं मानभङ्गे दिने दिने।। —चाणक्य

मा जीवन् यः परावज्ञादु.खदग्धोऽपि जीवति।
तस्याजननिरेवास्तु जननीक्लेशकारिणः ।। —माघ (शिशुपालवध)

जो मनुष्य शत्रु के अपमान से प्राप्त दु ख से दग्ध होकर भी गर्हित जीवन विताते हुए अपने प्राणो को धारण करता है, उस माता को क्लेश देनेवाले (गर्भ धारण और प्रसवादि के दुःखों को देनेवाले) की उत्पत्ति मत हो (तभी ठीक)।

The dust receives insult and in return offers her flowers.
धूल स्वयं अपमान सहन कर लेती है, और बदले में वह पुष्पो का उपहार देती है।
—रवीन्द्र

मातरं पितरं विप्रमाचार्यं चावमन्य वै।
स पश्यति फलं तस्य प्रेतराजवशं गतः। —वाल्मीकि (रा०, उत्तर)

जो माता, पिता, ब्राह्मण और आचार्य का अपमान करता है, वह यमराज के वश में पड़कर उस पाप का फल भोगता है।

अपमानपूर्वक हजार वर्ष जीने की अपेक्षा सम्मान के साथ एक घडी भर जीना अच्छा है। —एमर्सन

अपमान के घूंट पी-पीकर जिसने अपना पेट भरा है उसके मन वचन और कर्म से सदा आसुरी तत्त्व ही निकलते रहेंगे। —अज्ञात

(दे० "अनादर")

अपराध

अपराध की सहस्र जिह्वाएं हैं, जो अग्नि-शिखा की भाँति चंचल हो सकती हैं।
—अज्ञात

Guiltiness will speak though tongues were out of use.
जिह्वा के विना भी अपराध बोलेगा। —शेक्सपियर

जहाँ धर्म, ईश्वर और सतो की निन्दा होती है, वहाँ वैठकर उसे सुनना भी अपराध है। —श्री चक्रः

The mind of guilt is full of scorpions.
अपराधी मन विच्छुओ से भरा होता है। —शेक्सपियर

अभिमान नरक का मूल है। —महाभारत (आदिपर्व)

Pride that dines in vanity, sups on contempt.

अभिमान जो अहंकारपूर्वक प्रातः जलपान करता है उसको सायकाल का भोजन तिरस्कार से मिलता है। —फ्रैंकलिन

अभियान

नीतिरापदि यद्गम्यः परस्तन्मानिनो ह्रियै।
विधुर्विधुन्तुदस्येव पूर्णस्तस्योत्सवाय सः।

शत्रु पर आपत्तिकाल में अभियान करना चाहिए, यह जो नीति है, वह मानी पुरुष के लिए लज्जाजनक है। राहु के लिए पूर्णिमा के चन्द्रमा की भाँति सुस्थिर शत्रु (अभियान के लिए) आनन्ददायक होता है। —माघ (शिशुपाल वध)

अभिलाषा

हमारी हार्दिक अभिलाषाए हमारे उत्पादक अन्तर्बल को उत्तेजित करती है।
—स्वेट् मार्डेन (दिव्य जीवन)

अभिलाषा तभी फलोत्पादक होती है जब वह दृढ निश्चय में परिणित कर दी जाती है। —स्वेट् मार्डेन

जिस अभिलाषा में शक्ति नही उसकी पूर्ति असम्भव है। —अज्ञात

जिसकी हम चाह करते है, जिसकी सिद्धि के लिए सम्पूर्ण अन्त करण से अभिलाषा करते हैं उसकी हमें अवश्य ही प्राप्ति होगी।

—स्वेट् मार्डन

(दे० "इच्छा")

अभ्यास

मनुष्य-मात्र में बुद्धिगत ऐसा कोई दोप नही है जिसका प्रतिकार उचित अभ्यास के द्वारा न हो सकता हो। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए जैसे अनेक प्रकार के व्यायाम है वैसे ही मानसिक रुकावटो को दूर करने के लिए अनेक प्रकार के अध्ययन हैं। —बेकन

करत करत अभ्यास के, जडमति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर होत निसान ॥ —वृन्द

अमृत

जो आदमी हमेशा अमृत ही अमृत पीता है उसको अमृत उतना मीठा नहीं लगता जितना कि जहर का प्याला पीने के बाद अमृत की दो बूंदें। —महात्मा गांधी

अवगुण

हर ऐब की सुल्ताँ बेपसन्द दहुनरस्त।
यदि राजा किसी अवगुण को पसन्द करे तो वह गुण हो जाता है।
—सादी

गुण भी इस जगत में दुर्जनो के अपवाद से अवगुण समझे जाते हैं। —अज्ञात

Drink is more a disease than a vice
मदिरा पान करना अवगुण की अपेक्षा बीमारी अधिक है।
—महात्मा गांधी

The road to vices is not only smooth but steep
अवगुण का मार्ग चिकना ही नहीं, अपितु ढालू है। —सेनेका

अवतार

यदा यदा हि धर्मस्य [illegible]निर्भवति [illegible]।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मान [illegible]॥
परित्राणाय साधूना विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म सस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है [illegible] करता हू। साधुओ की रक्षा के लिए, पापियो के नाश के लिए [illegible] लिए मै युग-युग मे अवतार लेता हूँ। —[illegible] ([illegible])

हरि व्यापक सर्वत्र समाना। प्रेम ते प्रगट होहि मैं [illegible]॥
—[illegible] ([illegible])

अवतार, तात्पर्य है शरीरधारी पुरुष विशेष। जीवमात्र ईश्वर का अवतार है, परन्तु लौकिक भाषा में सबको हम अवतार नही कहते। जो पुरुष अपने युग में सबसे श्रेष्ठ धर्मवान है उसी को भावी प्रजा अवतार-रूप से पूजती है।

—महात्मा गांधी

जब-जब युग का परिवर्तन होता है, तब-तब मैं प्रजा की भलाई के लिए भिन्न भिन्न योनियों में प्रतिष्ठित होकर, धर्म-मर्यादा की स्थापना करता हूँ। जब जिस योनि में अवतार लेता हूं उस समय उसी की भाँति सारे आचार-विचार का पालन करता हू।

—वेदव्यास (म० आ० प०)

अवतारी पुरुष देश के प्राण हैं, वे समाज में चेतना उत्पन्न करते है और अपने पवित्र आचरण तथा उपयोगी उपदेशो से देश का कल्याण-साधन करते हैं।

—अज्ञात

मोक्ष-प्राप्ति के समीप पहुंची हुई आत्मा अवतार रूप है। —महात्मा गांधी

अवसर

The secret of success in life, is for a man to be ready for his opportunity when it comes.

मनुष्य के लिए जीवन में सफलता का रहस्य हर आनेवाले अवसर के लिए तैयार रहना है। —डिजरायली

Chance fights on the side of prudent.
अवसर बुद्धिमान के पक्ष में लड़ता है। —यूरीपेंडीज

Do not suppose opportunity will knock twice at your door
ऐसा न सोचो कि अवसर तुम्हारा द्वार दोबारा खटखटाएगा। —शैम्फोर्ट

Chnce nevr helps those who do not help themselves.
अवसर उनकी सहायता कभी नही करता जो अपनी सहायता नहीं करते।

—सफोक्लीज

नीकी पै फीकी लगै, बिन अवसर की बात।
जैसे बरनत युद्ध में, रस शृंगार न सुहात।। —वृन्द

अवसर कौड़ी जो चुकै, वहुरि दिये का लाख।
दुइज न चंदा देखिए, उदौ कहा भरि पाख।।

—तुलसी (दोहावली)

There is a tide in the affairs of men, which taken at the flood, leads on to fortune

मनुष्य के सारे व्यवहारो में ज्वार-भाटा का-सा चढाव-उतार होता है। यदि मनुष्य वाढ को पकडे तो भाग्य की ड्योढी पर पहुच जाय। —शेक्सपियर

फीकी पै नीकी लगै, कहिए समय विचारि।
सब को मन हर्पित करे, ज्यौं विवाह में गारि।। —वृन्द

लाभ समय को पालिवो हानि समय की चूक।
सदा विचारहिं चारुमति सुदिन कुदिन दिन दूक।।

—तुलसी (दोहावली)

A word spoken in season, at the right moment, is the matter of ages

समय और उचित अवसर पर वोला गया एक शब्द युगो की वात है।

—कार्लाइल

तृपित वारि विनु जो तनु त्यागा। मुएँ करइ का सुधा तड़ागा।
का वरषा जव कृषी सुखाने। समय चुके पुनि का पछिताने।।

—तुलसी (मानस-बाल०)

अविवेक

मज्जन्त्यविचेतस.।
अविचारशील मनुष्य दु ख को प्राप्त होते हैं। —ऋग्वेद

अविश्वास

To trust is a virtue It is weakness that begets distrust

विश्वास करना एक गुण है। अविश्वास दुर्वलता की जननी है।

—महात्मा गांधी

अविश्वास से अर्थ की प्राप्ति नही हो सकती, और जो हो भी सकती है तो जो विश्वास-पात्र नही है उससे कुछ लेने को जी ही नही चाहता। अविश्वास के कारण सदा भय लगा रहता है और भय से जीवित मनुष्य मृतक के समान हो जाता है।

—वेदव्यास (महा०)

एक वार अविश्वस्त ठहराये गये का कभी विश्वास न करो। —पंचतंत्र

What loneliness is more lonely than distrust.
अविश्वास से वढ़कर एकाकीपन कोई दूसरा नही है। —जार्ज इलिएट

अशान्ति

अशान्ति के विना शान्ति नही मिलती। लेकिन अशान्ति हमारी अपनी हो। हमारे मन का जव खूव मन्थन हो जायगा, जव हम दु:ख की अग्नि में खूव तप जायेंगे, तभी हम सच्ची शान्ति पा सकेंगे। —महात्मा गांधी

असंतोष

असंतोष अपने ऊपर अविश्वास का फल है, यह कमजोर इच्छा का रूप है।

—एमर्सन

काल्पनिक किलों में रहने से अधिक सुख और संतोष मिलता है, परन्तु असंतोषी मनुष्यों के वनाये महलो में सुख नही है। —एमर्सन

असन्तुष्ट मनुष्य संसार में अधिक दिनो तक जीवित नही रहते।

—शेक्सपियर

असंतोषी से आनन्द दूर रहता है। —अज्ञात

असफलता

जितनी वार हमारा पतन हो उतनी वार उठने में गौरव है।

—महात्मा गांधी

They never fail who die in a great cause.
वे कभी असफल नहीं होते जिनकी मृत्यु महान् उद्देश्य के लिए होती है।

—बायरन

असफलता के विचार से सफलता का उत्पन्न होना उतना ही असम्भव है जितना बबूल के पेड से गुलाब के फूल का निकलना। —स्वेट मार्डेन

असंभव

Asks the Possible of the Impossible, "Where is your dwelling place?"

"In the dreams of the impotent", comes the answer

सभव, असभव से पूछता है—"तुम्हारा निवास-स्थान कहा है?"
उत्तर मिला—"निर्बल के स्वप्न में।" —रवीन्द्र

Impossible is a word only to be found in the dictionary of fools
"असभव" एक शब्द है जो केवल मूर्खों के शब्द-कोष में पाया जाता है।

—नैपोलियन

To the timid and hesitating everything is impossible because it seems so

कायरो और सशयशील व्यक्तियो के लिए प्रत्येक वस्तु असम्भव है, क्योंकि वे ऐसी ही प्रतीत होती हैं। —[illegible]

काके शौच द्यूतकारे च सत्य
सर्पे क्षान्ति स्त्रीषु कामोपशान्ति।
क्लीबे धैर्यं मद्यपे तत्त्वचिन्ता
भूपे मत्य येन दृष्ट श्रुत वा॥

कौवे में पवित्रता, जुआरी में सत्यवादिता, सर्प में क्षमा, स्त्रियों में [illegible], कायर में धैर्य, शराबी में तत्व का विचार और राजा में [illegible] होना किसने देखा या सुना है। —[illegible]

अस्पृश्यता

अस्पृश्यता एक ऐसा सर्प है जिसके सहस्र मुख हैं और जिसके प्रत्येक [illegible] दात दिखाई पडते हैं। यह इतनी विस्तृत है कि [illegible] परिभाषा [illegible]। यह इतनी जबरदस्त है कि इसे अपना अस्तित्व [illegible] करने के लिए [illegible] स्मृतिकारो की आवश्यकता नहीं पड़ती। —[illegible]

शरीर किसी का हो स्पष्टत. गन्दगी की गठरी है, और आत्मा तो सर्वत्र एक और अत्यन्त शुद्ध है। ऐसी स्थिति में अस्पृश्यता किसकी और किसके लिए?

—विनोबा

अस्पृश्यता हिन्दू जाति पर कलंक है। —महात्मा गांधी

जिस प्रकार एक रत्ती संखिया से लोटा भर दूध बिगड़ जाता है उसी प्रकार अस्पृश्यता से हिन्दू धर्म चौपट हो रहा है। —महात्मा गांधी

अस्पृश्यता की खोज करने के लिए पास का अपना हृदय छोड़ कर योगशास्त्र तक दौड़ने की क्या जरूरत है। —विनोबा

अहंकार

Pride is at the bottom of all great mistakes.

अहंकार समस्त महान् गलतियों की तह में होता है। —रस्किन

अहं की भावना रखना एक अक्षम्य अपराध है। —अज्ञात

अहंकार नशे का मुख्य रूप है। —प्रेमचन्द्र

धनी को अपने धन का मद रहता है, घमंड रहता है, परन्तु गरीब के झोपडे में क्रोध और अहंकार के लिए स्थान नही रहता। —प्रेमचन्द

घोड़े और हाथी के लिए व्ययसाध्य चारा चाहिए, किन्तु अहंभाव के लिए किसी रसद की आवश्यकता नही होती। —रवीन्द्र

निरहंकारिता से सेवा की कीमत बढ़ती है और अहंकार से घटती है।

—विनोबा

Pride, like the magnet, constantly points to one object, self; but unlike the magnet, it has no attractive pole, but at all points repels.

अहंकार चुम्बक की भाँति सदा एक ही वस्तु का निर्देश करता है—स्व का; परन्तु चुम्बक की भाँति वह अपनी ओर आकृष्ट नहीं करता, बल्कि अपने से दूर हटा देता है। —कोल्टन

माया तजी तो क्या भया, मान तजा नहि जाय।
जेहि मानै मुनिवर ठगे, मान सबन को खाय॥ —कबीर

The infinitely little have a pride infinitely great
मनुष्य जितना छोटा होता है, उसका अहकार उतना ही बड़ा होता है।
—वाल्टेयर

अहकारी

The proud are ever most provoked by pride
अहकारपूर्ण व्यक्ति अहकार से बहुत उत्तेजित हो उठता है। —कूपर

The conceited man relates only his own great deeds and [illegible] the evil ones of others
अहकारी मनुष्य केवल अपने ही महान् कार्यों का वर्णन करता है [illegible] केवल कुकर्मों का। —[illegible]

A proud man is seldom a grateful man for he never [illegible] gets as much as he deserves
अहकारी मनुष्य में कृतज्ञता बहुत कम होती है, क्योंकि वह नहीं [illegible] मैं जितना पाने योग्य हूँ उतना मुझे कभी प्राप्त नहीं होता।
—[illegible]

अहिंसा

अहिंसा सत्य का प्राण है। उसके बिना मनुष्य पशु है। —[illegible]

मनुष्य क्रोध को प्रेम से, पाप को सदाचार से [illegible] सत्य से जीत सकेगा। —[illegible]

अहिंसा में ही सत्येश्वर के दर्शन करते [illegible] ता है। —[illegible]

मनसा, वाचा, कर्मणा कभी किसी को किसी [illegible] क्षमा से, विरोध को अनुरोध से, घृणा को दया से, [illegible] हिंसा की प्रतिपक्ष भावना से जीतो। —[illegible]

मैं तो शुरू से यह मानता आया हूँ कि अहिंसा ही धर्म है, वही जिन्दगी का एक रास्ता है। —महात्मा गांधी

जीव-मात्र की अहिंसा स्वर्ग को देनेवाली है। —स्वामी शंकराचार्य

जिस भाँति भौरा फूलो की रक्षा करता हुआ मधु को ग्रहण करता है, उसी प्रकार मनुष्य को हिंसा न करते हुए अर्थो को ग्रहण करना चाहिए। —विदुर

जो तुम्हारे बायें गाल पर मारे उसकी ओर दाहिना गाल भी फेर दो।
—महात्मा ईसा

हममें दया, प्रेम, त्याग ये सब प्रवृत्तियाँ मौजूद हैं। इन प्रवृत्तियो को विकसित करके अपने सत्य को और मानवता के सत्य को एकरूप कर देना—यही अहिंसा है। —अज्ञात

अनेकों को जो एक रखती है, भेदो में से अभेद को ढूंढती है, वही अहिंसा है।
—विनोबा

अहिंसा का अर्थ है ईश्वर पर भरोसा रखना। —महात्मा गांधी

जब कोई व्यक्ति अहिंसा की कसौटी पर खरा उतर जाता है तो दूसरे व्यक्ति स्वयं ही उसके पास आकर वैरभाव भूल जाते हैं। —पतंजलि

अहिंसा का मार्ग तलवार की धार पर चलने-जैसा है, जरा-सी गफलत हुई कि नीचे गिरे। घोर अन्याय करनेवाले पर भी गुस्सा न करे, बल्कि उससे प्रेम करे, उसका भला चाहे और करे। लेकिन प्रेम करते हुए भी अन्याय के वश में न हो। अन्याय का विरोध करे और वैसा करने पर वह जो कष्ट दे उसे धैर्य के साथ और अन्यायी के लिए दिल में द्वेष रखे बिना सह ले। —महात्मा गांधी

अपने शत्रु से प्रेम करो, जो तुम्हें सताये उसके लिए प्रार्थना करो, जिससे तुम अपने दैवी पिता के बेटे कहला सको। —महात्मा ईसा

यदि सत्य नही तो अहिंसा की भी रक्षा नही हो सकती। —विनोबा

मानवो के व्यवहार में ही अहिंसा की कसौटी होती है। —महात्मा गांधी

अहिंसा प्रचण्ड शस्त्र है। उसमें परम पुरुषार्थ है, वह भीरु से दूर भागती है। वह वीर पुरुष की शोभा है, उसका सर्वस्व है, वह शुष्क, नीरस, जड पदार्थ नही है। वह चेतन है। वह आत्मा का विशेष गुण है। —महात्मा गांधी

आँसू

नारी का अश्रु-जल अपनी एक-एक बूंद में एक-एक बाढ़ लिये रहता है।

—जयशंकर प्रसाद (जनमेजय का नागयज्ञ)

स्त्री—तूने अपने अथाह अश्रुओं से संसार के हृदय को उसी प्रकार घेर रखा है जिस प्रकार समुद्र पृथ्वी को घेरे हुए है।

—रवीन्द्र

स्त्रियों के आँसू पुरुषों की क्रोधाग्नि भड़काने में तेल का काम देते हैं।

—प्रेमचन्द

Beauty's tears are lovelier than her smiles.
सौन्दर्य के आंसू उसकी मुस्कुराहट की अपेक्षा अधिक प्यारे होते हैं। —कैम्पबेल

Love is loveliest when embalmed in tears.
अश्रुपूर्ण प्रेम अत्यन्त लुभावना होता है। —वाल्टर स्काट

आँख के आँसू अमूल्य वस्तु हैं। प्रेम के, कृतज्ञता के, आनन्द के, दुःख के और पश्चात्ताप के आसुओं से ही तो जीवन का बाग़ पनपता है।

—साने गुरु (आस्तीक)

जो घनीभूत पीड़ा थी
मस्तक में स्मृति सी छायी।
दुर्दिन में आँसू बन कर
वह आज बरसने आयी॥

—जयशंकर प्रसाद (आँसू)

दुखियारों को हमदर्दी के आँसू भी कम प्यारे नहीं होते। —प्रेमचन्द

नेह न नैननि को कछू, उपजी बड़ी बलाय;
नीर भरे नितप्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाय। —बिहारी

मेरे छोटे जीवन में देना न तृप्ति का कण भर,
रहने दो प्यासी आँखें भरती आँसू के सागर। —महादेवी वर्मा

आँख का आँसू ढलकता देखकर,
जी तड़प करके हमारा रह गया।

क्या गया मोती किसी का है बिखर,
या हुआ पैदा रतन कोई नया। —'हरिऔध'

या जिगर पर जो फफोला था पड़ा,
फूट करके वह अचानक बह गया।
हाय! था अरमान जो इतना बड़ा,
आज वह कुछ बूंद बनकर रह गया। —'हरिऔध'

आकर्षण

जिन वस्तुओं में आकर्षण नहीं रहता वे उपेक्षित रहती है।

यदि पुरुष के जीवन-विकास में स्त्री का आकर्षण विनाशकारी होता तो प्रकृति यह आकर्षण पैदा ही क्यों करती। —यशपाल

आकांक्षा

सांसारिक आकांक्षा मनुष्य को बाँधती और घसीटती है।
—स्वामी रामतीर्थ

हमारी आकांक्षा, जीवन-रूपी भाप को, इन्द्र-धनुष का रंग दे देती है।
—रवीन्द्र

जीवन में आकांक्षाएँ होती है तो अपना सम्मान और आत्माभिमान भी होता है।
—अज्ञात

Renunciation of objects, without renunciation of desires is short-lived, however hard you may try

इन्द्रिय-विषयों का त्याग बिना कामना-त्याग क्षणिक होता है, चाहे हम कैसा ही प्रयास क्यों न करें। —महात्मा गांधी

जो प्रकाश में अदृश्य रहता है और जिसका अंधकार में ही अनुभव होता है—उसी के लिए मेरी आकांक्षा है। —रवीन्द्र

आक्षेप

जब तक हम स्वयं निरपराध न हों तब तक दूसरों पर कोई आक्षेप सफलता के साथ नहीं कर सकते। —सरदार पटेल

आग

अग्नि देवताओं का मुख है, अग्नि में डाली गयी सोमरस की आहुतियाँ देवताओं को पहुँच जाती हैं। —अज्ञात

आचरण

Man is worse than an animal when he is an animal.

मनुष्य जिस समय पशु-तुल्य आचरण करता है उस समय वह पशुओं से भी नीचे गिर जाता है। —रवीन्द्र

Behavior is a mirror in which every one displays his image.

आचरण एक दर्पण के सदृश है जिसमें हर मनुष्य अपना प्रतिबिम्ब दिखाता है। —गेटे

आचरण और सत्यता के लिए आर्य-जाति चिरकाल से प्रसिद्ध है। —मेगस्थेनीज़

A beautiful behaviour is better than a beautiful form, it gives a higher pleasure than statues and pictures, it is the finest of fine art.

सुन्दर आचरण, सुन्दर शरीर से अच्छा है, मूर्ति और चित्र की अपेक्षा यह उच्च-कोटि का आनंद देता है। यह कलाओं में सुन्दरतम कला है। —एमर्सन

आचरण भाव का प्रकट रूप है। —अज्ञात

जिसने ज्ञान को आचरण में उतार लिया उसने ईश्वर को ही मूर्तिमान् कर लिया। —विनोबा

शास्त्र पढ़कर भी लोग मूर्ख होते हैं, किन्तु जो उसके अनुसार आचरण करता है वस्तुतः वही विद्वान् है। रोगियों के लिए भली-भाँति सोचकर निश्चित की हुई औषधि नाम उच्चारण करने मात्र से (बिना खिलाये) किसी को नीरोग नहीं कर सकती। —हितोपदेश

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥

श्रेष्ठ पुरुष जो-जो करता है अन्य पुरुष भी उसके अनुसार व्यवहार करते हैं। वह जो आदर्श स्थापित कर देता है, लोग उसके अनुसार चलते हैं।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

कुलीनमकुलीन वा वीर पुरुषमानिनम्।
चारित्र्यमेव व्याख्याति शुचिं वा यदि वाशुचिम् ॥

मनुष्य का आचरण ही यह बतलाता है कि वह कुलीन है या अकुलीन, वीर है या कायर, अथवा पवित्र है या अपवित्र। —वाल्मीकि (रा०)

आचार

आचारादायुर्वर्धते कीर्तिश्च

आचार से आयु बढती है, और कीर्ति भी। —कौटिल्य

विचार का चिराग बुझ जाने से आचार अधा हो जाता है। —संत विनोबा

आचार परमो धर्म

आचार ही परम धर्म है। अज्ञात

आज

न कश्चिदपि जानाति कि कस्य श्वो भविष्यति।
अत श्व करणीयानि कुर्यादद्यैव बुद्धिमान् ॥

यह कोई नही जानता है कि कल किसको क्या होगा। अत बुद्धिमान् को कल जो करना हो सो आज ही कर लेना चाहिए। —अज्ञात

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पल में परलय होयगा, बहुरि करोगे कब्ब ॥ —कबीर

आजादी

तुम मुझको खून दो मैं तुम्हें आजादी दूगा। —सुभाषचन्द्र बोस

Freedom of speech, freedom of religion, freedom from want andfreedom from fear

विचारो की स्वतत्रता, धार्मिक स्वतत्रता, अभावो से स्वतत्रता और भय से स्वतत्रता (ये चार प्रत्येक व्यक्ति को मिलनी चाहिए)। —[illegible]

We gain freedom when we have paid the full price for our right to live

हम आजादी पाते है जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते है। —[illegible]

The road to freedom is not strewn with roses. It is a path covered with thorns, but at the end of it, there is the full-blown rose of liberty, awaiting the tired pilgrim.

आज़ादी का मार्ग फूलों की सेज नही है। इस पथ पर काँटे बिछे है, लेकिन इसके अत में आज़ादी का पूर्ण विकसित फूल, आनेवाले थके यात्री की प्रतीक्षा करता है।
—सुभाषचन्द्र बोस

No amount of political freedom will satisfy the hungry masses.

कितनी ही राजनीतिक स्वतंत्रता हो वह भूखी जनता को संतुष्ट नही कर सकती।
—लेनिन

आज्ञा-पालन

अनुचित उचित विचार तजि, जे पालहिं पितु-बैन।
ते भाजन सुख सुजस के, बसहिं अमरपति-ऐन॥
—तुलसी (मानस-अयो०)

Wicked men obey from fear; good men from love.

दुष्ट स्वभाव के मनुष्य भय से आज्ञा-पालन करते है, और अच्छे स्वभाववाले प्रेम से।
—अरस्तू

Let them obey, that know not how to rule.

जो मनुष्य शासन करना नही जानते, वे आज्ञापालन करना सीखें। —शेक्सपियर

आत्म-अनुभव

अपनी आत्मा पर अपने आप को एकाग्र करो, तुरन्त ही उसी क्षण आत्मानुभव की प्राप्ति होगी।
—स्वामी रामतीर्थ

आत्म-कथा

It is a hard and nice subject for a man to write of himself: it grates his own heart to say anything of disparagement, and the reader's ears to hear anything of praise for him

—*Abraham Cowley* (Quoted by J. Nehru in his Autobiography)

किसी मनुष्य के लिए अपनी आत्म-कथा लिखना एक कठिन तथा नाजुक विषय है। यदि वह अपनी निन्दा करे तो उसके दिल में चोट-सी लगती है और यदि वह अपनी प्रशंसा करे तो पाठको के कानों में उसकी बातें खटकती हैं। —अब्राहम काउले

प्रत्येक आत्मकथा पीड़ा का इतिहास है क्योंकि प्रत्येक जीवन महान् और छोटे दुर्भाग्य का क्रमिक विकसित रूप है। —शोपेनहार

अपने विषय में कुछ कहना प्राय बहुत कठिन हो जाता है क्योंकि अपने दोष देखना अपने आपको अप्रिय लगता है और उनको अनदेखा करना औरो को।

—महादेवी वर्मा (यात्रा)

आत्म-गौरव

मानवजीवन का मन्थन करने पर जो अमृत निकलता है उसका नाम आत्म-गौरव है। —अज्ञात

आत्मगौरव नष्ट करके जीना मृत्यु से भी बुरा है। —भर्तृहरि

आध्यात्मिक महत्वाकाक्षा की, आत्मगौरव की भूख शारीरिक भूख की अपेक्षा कईगुनी तीव्र, आवश्यक एव महत्त्वपूर्ण है। —अज्ञात

बेईमानी का आचरण करके जिस प्रकार मनुष्य अपना स्वाभिमान खो देता है, उसी प्रकार अत्याचारी के आगे नाक रगडने से भी आत्मगौरव नष्ट होता है।

—अज्ञात

आत्म-ज्ञान

आत्मज्ञान पर ज्ञानम्

आत्मज्ञान सबसे बडा ज्ञान है। —वेदव्यास (महा० शा०)

वेद से उत्पन्न आत्मज्ञान ससार का हरनेवाला है और मोक्ष का कारण कहा गया है। —स्वामी शकराचार्य

जिसने अपने को समझ लिया वह दूसरो को समझाने नही जायगा।

—धम्मपद

जिस अवस्था में इसके लिए सब कुछ आत्मा ही हो जाता है, उस समय किसके द्वारा किसको देखे, किसके द्वारा किसको सूँघे, किसके द्वारा किसको सुने तथा किसके द्वारा किसको जाने। —बृहदारण्यक उपनिषद्

तमेव विद्वान् न विभाय मृत्यो

उस आत्मा को ही जान लेने पर मनुष्य मृत्यु से नही डरता। —ऋग्वेद

आत्मज्ञान का सम्पादन करना और आत्मकेन्द्र में स्थिर रहना मनुष्य-मात्र का सबसे पहला और प्रधान कर्तव्य है। —स्वामी रामतीर्थ

हमें अपनी आत्मा का ज्ञान चरित्र से ही मिल सकता है। —महात्मा गांधी

केवल आत्मज्ञान ही ऐसा है जो हमें सब जरूरतो से परे कर सकता है।
—स्वामी रामतीर्थ

जैसे स्वप्न में काटे गये सिर का दु.ख बिना जागे दूर नही होता, इसी प्रकार इस ससार का दु.ख बिना आत्मज्ञान हुए दूर नही होता। —स्वामी भजनानन्द

संसार स्वप्न की तरह है। जिस प्रकार जागने पर स्वप्न झूठा प्रतीत होता है, उसी प्रकार आत्मा का ज्ञान होने पर यह संसार मिथ्या मालूम होता है।
—याज्ञवल्क्य

आत्म-तत्त्व

आत्मतत्त्व को प्राप्त करना अखिल विश्व का स्वामी बनना है।
—स्वामी रामतीर्थ

आत्म-दर्शन

पीड़ा से दृष्टि मिलती है। इसलिए आत्मपीड़न ही आत्मदर्शन का माध्यम है।
—अज्ञेय

मनुष्यजीवन का उद्देश्य आत्म-दर्शन है और उसकी सिद्धि का मुख्य एव एकमात्र उपाय पारमार्थिक भाव से जीवमात्र की सेवा करना है। —महात्मा गांधी

आत्म-दर्शन अपने को ईश्वर के हाथो सौंप देने पर शून्य ध्यान द्वारा हो जाता है।
—अज्ञात

आत्म-निर्भरता

The basis of all progress is self-reliance.
समस्त उन्नति का आधार आत्मनिर्भरता है। —सी० हस्क्रेज

आत्म-प्रशंसा

आत्मप्रशंसा ओछेपन का चिह्न है। —महात्मा गांधी

जिन्हें कही से प्रशसा नही मिलती वे आत्मप्रशसा करते है। —अज्ञात

आत्म-वल

आवेग और क्रोध को वश में कर लेने पर शक्ति वढती है और आवेग को आत्म-वल के रूप में परिवर्तित कर दिया जा सकता है। —महात्मा गाधी

जो मनुष्य लोगो के व्यवहार से ऊब कर क्षण प्रतिक्षण अपने मन वदलते रहते है वे दुर्वल है—उनमें आत्म-वल नही। —सुभाषचन्द्र वोस

आत्मवल की सफलता का सवसे वडा प्रमाण तो यही है कि इतने युद्धो के वावजूद दुनिया अभी कायम है। —महात्मा गांधी (हिन्द-स्वराज्य)

आत्म-रक्षा

आपदर्थे धन रक्षेद् दारान् रक्षेद्धनैरपि।
आत्मान सतत रक्षेद्, दारैरपि धनैरपि॥ —चाणक्य

आपत्ति के लिए धन की रक्षा करनी चाहिए, धन से स्त्री की रक्षा करनी चाहिए, किन्तु धन और स्त्री दोनो से सदा अपनी रक्षा करना चाहिए।

आत्म-विजय

जिसने अपनेको वश में कर लिया है, उसकी जीत को देवता भी हार में नही वदल सकते। —भगवान् वुद्ध

आत्म-विजय अनेक आत्मोत्सर्गो से भी श्रेष्ठतर है। —स्वामी शिवानन्द

आत्म-विश्वास

आत्म-विश्वास में वह शक्ति है जो सहस्र विपत्तियो का सामना कर उन पर विजय प्राप्त कर सकती है। —स्वेट मार्डेन

सर्वप्रथम आत्म-विश्वास करना सीखो। —स्वामी विवेकानन्द

अपने ऊपर विश्वास रखो, यह विश्वास ही वह अटूट तार है जिससे सारे हृदय स्पन्दित होता है। —[illegible]

Self-trust is the first secret of success.
आत्मविश्वास सफलता का मुख्य रहस्य है। —एमर्सन

Remember, you are the most necessary man on earth.
यह आत्मविश्वास रखो कि तुम पृथ्वी के सबसे आवश्यक मनुष्य हो।
—मैक्सिम गोर्की

The way to develop Self-confidence is to do the thing you fear to do and get a record of successful experiences behind you.
आत्मविश्वास बढ़ाने की रीति यह है कि तुम वह काम करो जिसे तुम करते हुए डरते हो। इस प्रकार ज्यों-ज्यो तुम्हें सफलता मिलती जायगी तुम्हारा आत्मविश्वास बढ़ता जायगा। —डेल कारनेगी

आत्म-विश्वास सरीखा दूसरा मित्र नहीं। आत्म-विश्वास ही भावी उन्नति की प्रथम सीढ़ी है। —स्वामी विवेकानन्द

हमारी मानसिक शक्तियाँ हमारे आत्मविश्वास और धैर्य पर अवलम्बित रहती हैं।
—स्वेट मार्डेन

जब मनुष्य स्वयं आत्म-विश्वास खो बैठता है तो उसके पतन का सिरा खोजने से भी नहीं मिलता। —अज्ञात

जो मनुष्य आत्मविश्वास से सुरक्षित है वह उन चिन्ताओं, आशंकाओं से मुक्त रहता है, जिनसे दूसरे आदमी दबे रहते हैं। —अज्ञात

जिस मनुष्य में आत्म-विश्वास नहीं है वह शक्तिमान् होकर भी कायर है और पण्डित होकर भी मूर्ख है। —अज्ञात

आत्म-विश्वास की कमी ही हमारी बहुत-सी असफलताओं का कारण होती है, शक्ति के विश्वास में ही शक्ति है। वे सबसे कमज़ोर हैं, चाहे वे कितने ही शक्तिशाली क्यों न हो, जिन्हें अपने आप तथा अपनी शक्ति पर विश्वास नहीं है। —वो वी

आत्मविश्वास के द्वारा दुर्गम पथ भी सुगम हो जाता है। —अज्ञात

आत्मविश्वास की मात्रा हममें जितनी अधिक होगी उतना ही हमारा सम्बन्ध अनन्त जीवन और अनन्त शक्ति के साथ गहरा होता जावेगा। —स्वेट मार्डेन

Self-trust is the essence of heroism.
आत्मविश्वास पराक्रम का सार है। —एमर्सन

Self-reverence, Self-knowledge, Self-control, these three alone lead life to Sovereign power

आत्मविश्वास, आत्मज्ञान और आत्मसयम केवल यही तीन जीवन को परम शक्ति-सम्पन्न बना देते हैं। —टेनीसन

आत्म-सम्मान

हमें सबसे पहले आत्म-सम्मान की रक्षा करनी चाहिए। हम कायर और दब्बू हो गये हैं, अपमान और हानि चुपके से सह लेते है। ऐसे प्राणियों को तो स्वर्ग में भी सुख नही प्राप्त हो सकता। —प्रेमचन्द

जिस प्रकार दूसरो के अधिकार की प्रतिष्ठा करना मनुष्य का कर्तव्य है, उसी प्रकार से अपना मान धारण रखना भी उसका कर्तव्य है। —स्पेन्सर

बिना अपनी स्वीकृति के कोई मनुष्य आत्मसम्मान नही गँवाता।

—महात्मा गाधी

आत्म-सम्मान करना सफलता की सीढी पर पग रखना है। —अज्ञात

आत्म-हत्या

आत्म-हत्या करना कायरता है। —नेपोलियन

Against self-slaughter, there is a prohibition so divine that cravens my weak hand

आत्महत्या के विरुद्ध एक दिव्य निषेध है जो हमारे कमजोर हाथों को डरा देता है। —शेक्सपियर

युवा पुरुष के लिए असफल प्रेम पर अपना जीवन बलिदान करना आत्म-हत्या करना है।

आत्म-हीनता

मृत्यु दुखदायी मानी जाती है, परन्तु वह जीवन में एक बार ही दुख देती है, [illegible] आत्महीनता ऐसी मृत्यु है जो पल-पल पर आती है और [illegible] शान्ति को जलाती रहती है। —[illegible]

पाप, अनीति और अत्याचार के सम्मुख सिर झुकाना अपनी आत्मा का अपमान और हनन करना है।

—अज्ञात

आत्मा

मत्वा धीरो न शोचति —कठोपनिषद्

आत्मा को जानकर बुद्धिमान मनुष्य शोक नही करता।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैन दहति पावक:।
न चैन क्लेदयन्त्यापो न शोपयति मारुत.॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

इस आत्मा को शस्त्र काट नही सकते, अग्नि जला नही सकती, जल इसे भिगो नही सकता और पवन इसे सुखा नही सकता।

आत्मैवेद सर्वम्।

आत्मा ही यह सब है। —छान्दोग्य उपनिषद्

अयमात्मा ब्रह्म।

यह आत्मा ही ब्रह्म है। —बृहदा० उपनिषद्

मै तो आत्मा की अमरता पर विश्वास करता हूँ। जीवन के सागर में हम सब बिन्दु-मात्र हैं और जीवन की वास्तविकता ही सत्य है, आत्मा है, परमात्मा है।

—महात्मा गांधी

हमारी आत्मा अमर है। —सुकरात

आत्मा को रथ में बैठा हुआ योद्धा जान, शरीर को रथ जान, बुद्धि को सारथि जान और मन को लगाम जान। —कठोपनिषद्

आत्मा एक चेतन तत्त्व है, जो अपने रहने के लिए उपयुक्त शरीर का आश्रय लेता है और एक देह से दूसरी देह में जाता है। भौतिक शरीर आत्मा को धारण करने के लिए विवश होता है। —गेटे

आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत्, नान्यत्किञ्चन मिषत्। स ऐक्षत लोकान्नु सृजा इति। —ऐतरेय ब्राह्मण

यह सारा जगत पूर्व में आत्मा ही था, अन्य कोई तत्त्व नही था, उस आत्मा ने अपनी इच्छा से लोक का सर्जन किया।

न जायते म्रियते वा विपश्चि-
न्नाय कुतश्चिन्न वभूव कश्चित्।
अजो नित्य. शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

नित्य चैतन्यरूप आत्मा न उत्पन्न होता है न मरता है, न यह किसी से हुआ है और न इससे कोई हुआ है—अर्थात् इसका कारण या कार्य नही है। यह अजन्मा है, नित्य है, शाश्वत है और पुराण है, शरीर के मारे जाने पर भी यह मरता नही है।

—कठोपनिषद्

घटावभासको भानुर्घटनाशे न नश्यति।
देहावभासक साक्षी देहनाशे न नश्यति॥

जैसे घडे का प्रकाशक सूर्य, घडे के नाश हो जाने पर नष्ट नहीं होता, वैसे ही देह का प्रकाशक आत्मा देह के नष्ट होने पर नष्ट नही होता। —आत्म प्रवोध उप०

जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश अलग-अलग घरो मे जाकर भिन्न नही हो जाता, उसी प्रकार ईश्वर की महान् आत्मा पृथक्-पृथक् जीवो मे प्रविष्ट होकर विभिन्न नही होती। —प्रेमचन्द

जितनी प्रिय वस्तुएँ है उनमें आत्मा ही प्रधान है और भगवान् हरि ही उन सबके आत्मारूप में स्थित है, अत उनसे वढकर प्रिय वस्तु और कौन हो सकती है।

—नारद मुनि

अहमिन्द्रो न पराजिग्ये।
मै आत्मा हूँ, मुझे कोई हरा नही सकता। —ऋग्वेद

आत्मा वह अक्षय और अमर तत्त्व है जो अपनी चिरन्तनता के कारण जन्म और मृत्यु की सीमा से परे है। —प० सूर्यकान्त त्रिपाठी

य आत्मापहतपाप्मा विजरो विमृत्युर्विशोको विजिघत्सोऽपिपास सत्यकाम सत्यसकल्प सोऽन्वेष्टव्य स विजिज्ञासितव्य। —छान्दोग्योपनिषद्

जो आत्मा पापरहित, जरारहित, मृत्युरहित, शोकरहित, क्षुधारहित, प्यास रहित, सत्यकाम, सत्यसकल्प है उसे खोजना चाहिए, उसे जानने की इच्छा करनी चाहिए। —प्रेमचन्द

जिसकी आत्मा पवित्र हो वही ऊँचा है।

आत्मा आध्यात्मिक भवन पर बहुत ऊँची चढ़ जाती है।

—स्वेट मार्डेन (दिव्य जी०)

आदत

उपभोक्तुं न जानाति श्रिय प्राप्यापि मानवः।
आकण्ठ जलमग्नोऽपि श्वा लिहत्येव जिह्वया ।।

मनुष्य सम्पत्ति प्राप्त हो जाने पर भी उसका उपभोग नही जानता अर्थात् जैसी आदत रहती है उसी के अनुसार खर्च करता है। जैसे गर्दन भर पानी में डूबा हुआ भी कुत्ता जीभ से चाटकर ही पानी पीता है। —अज्ञात

नीम गुड़ के साथ खाने पर भी अपनी कड़ुवाहट नही छोड़ती, इसी तरह नीच सज्जनो के संग रहकर भी अपनी आदत से बाज नही आता। —अज्ञात

आदर्श

ऊँचा आदर्श क्षुद्र स्वार्थो और मूढ-ग्राहो को भुलावा देता है।

—सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)

Great objects form great minds.

महान् आदर्श महान् मस्तिष्क का निर्माण करते है। —इमर्सन

Ideals are the world's masters.

आदर्श विश्व के पथ-प्रदर्शक होते है। —जे० जी० हालैण्ड

विचार या भाव ही मनुष्य को उत्तेजित करते है, आदर्श ही लोगो को मृत्यु तक का सामना करने को तैयार करते हैं। —स्वामी विवेकानन्द

जो आदर्श हमने सच्चे अन्तःकरण से बनाया है, मन, वचन और काया एक करके जिस आदर्श की सृष्टि की है, वह अवश्य ही हमारे सामने सत्य के रूप में प्रकट होगा।

—स्वेट मार्डेन

आनन्द

आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्—आनन्दाद् ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते—आनन्देन जातानि जीवन्ति—आनन्दं प्रयन्त्यभि संविशन्तीति। —उपनिषद्

आनन्द ही ब्रह्म है, यह जान, आनन्द से ही सब प्राणी उत्पन्न होते हैं, उत्पन्न होने पर आनन्द से ही जीवित रहते हैं और मृत्यु से आनन्द में ही समा जाते हैं।

जो वस्तु आनन्द नही प्रदान कर सकती, वह सुन्दर नहीं हो सकती, और जो सुन्दर नही हो सकती वह सत्य भी नही हो सकती। जहा आनद है वहीं सत्य है।

—प्रेमचन्द

सुख-दु ख देनेवाली बाहरी चीज़ो पर आनन्द का आधार नही है। आनन्द सुख से भिन्न वस्तु है। मुझे धन मिले और मैं उसमें सुख मानू यह मोह है। मैं भिखारी होऊँ, खाने का दु ख हो, फिर भी मेरे इस चोरी या किन्हीं दूसरे प्रलोभनो में न पड़ने में जो बात मौजूद है वह मुझे आनन्द देती है। —महात्मा गांधी

विज्ञानमानन्द ब्रह्म।

विज्ञान और आनन्द ब्रह्म ही है। —बृहदारण्यक उपनिषद्

दीपक जैसे घर को जगमगा देता है, आनद उसी तरह जीवन को उज्ज्वलता से भर देता है। आनन्द की अनुभूति जीवन की समस्त जडता मिटा देती है। आनन्द हमारे लिए वह पारस है जिसके छूने से जीवन की प्रत्येक वस्तु सोना बन जाती है।

—अज्ञात

आनन्द का स्रोत अपने अदर है और उसे अपने अन्दर से ही ढूंढ निकालना होगा।

—अज्ञात

नित्य हँसमुख रहो, मुख को कभी मलिन न करो, यह निश्चय कर लो कि शोक ने तुम्हारे लिए जगत् में जन्म ही नहीं लिया है। आनन्द-स्वरूप में सिवा हँसने के चिन्ता को स्थान ही कहाँ है। —अज्ञात

आनन्द ही एक ऐसी वस्तु है, जो आपके पास न होने पर भी आप दूसरो को बिना किसी असुविधा के दे सकते हैं। —कारमेन सिल्वा

पुरुष और प्रकृति के मिलन पर ही सृष्टि प्रारम्भ होती है। संगीत पुरुष है और नृत्य प्रकृति है। इन दोनो के मिलाप पर ही आनन्द की सृष्टि होती है।

All who would win joy, must share it, happiness was born a twin.

उन सभी लोगो को जो आनन्द चाहते हैं, आनन्द बांटना चाहिए क्योंकि आनन्द जुडवा पैदा हुआ था। —बायरन

एन्थोनी ने प्रेम में, ब्रूटस ने कीर्ति में और सीज़र ने साम्राज्य-शासन के विस्तार में आनन्द ढूढ़ा। प्रथम को अपमान, द्वितीय को घृणा और तृतीय को कृतघ्नता मिली एवं प्रत्येक नष्ट हो गया। संसार की सभी वस्तुएँ जब अनुभव के तराजू पर तोली गयी तो सबकी सब निकम्मी निकली अर्थात् सबके सब निस्सार प्रतीत हुए। केवल आत्मज्ञान ही हृदय को आनन्द देने वाला निकला। —स्वामी रामतीर्थ

जीवन का आनन्द गौरव के साथ, सम्मान के साथ, स्वाभिमान के साथ जीन में है। —अज्ञात

सुख या आनन्द कर्म के रूप में रहता है। —स्वामी रामतीर्थ

सुख और आनद ऐसे इत्र है, जिन्हें जितना अधिक दूसरो पर छिड़केंगे उतनी ही सुगंध आपके भीतर समायेगी। —एमर्सन

आपत्ति

पाच रूप पांडव भए, रथ-वाहक नलराज।
दुरदिन परै 'रहीम' कहि, बड़ेन किये घटि काज॥ —रहीम

दुनिया के जितने बडे आदमी हुए है—धनिक हों, राजनीतिज्ञ हों, कलाकार हो—कठोर अनुभव और विपदाओं से गुज़रे बिना उनकी उन्नति नही हुई है। शिल्पकार की हथौड़ी के प्रहार सहे बिना देवता की मूर्ति बनती ही नही। —अज्ञात

Gold is tried by fire, brave men by adversity.
अग्नि सोने को परखती है, आपत्ति वीर पुरुष को। —सेनेका

बिपति बराबर सुख नही, जो थोरे दिन होय। —रहीम

कसें कनकु मनि पारिखि पाये।
पुरुष परखियहि समय सुभाये॥ —तुलसी (मा०-आ०)

हम तकलीफ में बहुत जल्द झुँझला उठते हैं। गर्म पानी को उबालने के लिए तेज आच की आवश्यकता नही, हलकी सी आच ही काफी है। —सुदर्शन

धीरज धर्म मित्र अरु नारी।
आपति काल परखिये चारी॥ —तुलसी (मानस)

सदा सर्वदा सहज मंगल साधन करते हुए भी जो आपत्ति आ पड़े तो उसे ईश्वर की इच्छा ही समझकर संतोष करना चाहिए। —अज्ञात

To overcome difficulties is to experience the full delight of existence.

आपत्तियों पर विजय पाना ही जीवन के आनन्द की पराकाष्ठा का अनुभव करना है। —शोपेनहार

आपत्तियाँ हमें आत्मज्ञान कराती हैं, वे हमें दिखा देती हैं कि हम किस मिट्टी के बने हैं। —जवाहरलाल नेहरू

मनुष्य आपत्तियों का लक्ष्य बनने के लिए ही जन्मा है, अतएव बुद्धिमान् मनुष्य को आपत्ति से घबराना नहीं चाहिए। [illegible]

आपत्तियाँ मनुष्यता की कसौटी हैं, बिना इनमें खरा उतरे कोई सफल नहीं हो सकता। —अज्ञात

एक आपत्ति अनेक आपत्तियों की जननी होती है। —अज्ञात

आपत्ति 'मनुष्य' बनाती है और सम्पत्ति 'राक्षस'। विक्टर ह्यूगो

आभूषण

आभूषण से स्त्रियाँ नहीं सजतीं, वह सजती हैं अपने गुणों से, अपने रूप से, अपने मन की निर्मलता से, अपने स्वभाव की पवित्रता से। —[illegible]

लज्जा और विनय ही भारत की देवियों का आभूषण है। —प्रेमचंद

सुन्दर आकृतिवालों के लिए आभूषण की आवश्यकता नहीं है। —कालिदास

वाणी ही मनुष्य का एक ऐसा आभूषण है जो अन्य भूषणों के समान [illegible] नहीं। —भर्तृहरि

नारी का सतीत्व ही उसका आभूषण है। —[illegible]

नम्रता और मीठे वचन ही मनुष्य के आभूषण होते हैं। शेष सब नाममात्र के भूषण हैं। —सन्त तिरुवल्लुवर

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो
ज्ञानस्योपशमः कुलस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्यय.
अक्रोधस्तपसः क्षमा वलवता धर्मस्य निर्व्याजिता
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम् ।।

ऐश्वर्य का भूषण सज्जनता, शूरता का वाक्संयम, ज्ञान का शान्ति, कुल का विनय, धन का सुपात्र के लिए व्यय, तपस्वी का भूषण क्रोध न करना, वलवान् का क्षमा, धर्म का निश्छलता और सव गुणो का आभूषण केवल शील है। —भर्तृहरि

आय

अपार धनशाली कुवेर भी यदि आय से अधिक व्यय करे तो कंगाल हो जाता है।
—चाणक्य

ऊपरी आय वहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास वुझती है। —प्रेमचन्द

आयु

अहोरात्राणि गच्छन्ति सर्वेषां प्राणिनामिह।
आयूंषि क्षपयन्त्याशु ग्रीष्मे जलमिवांशवः ।। —वाल्मीकि-रा०, अयोध्या०

दिन रात लगातार वीत रहे हैं और संसार में सभी प्राणियों की आयु का तीव्र गति से नाश कर रहे हैं—ठीक उसी तरह, जैसे सूर्य की किरणें गर्मी में शीघ्रतापूर्वक जल को सुखाती रहती हैं।

Youth is blunder, manhood a struggle; old age a regret.

जवानी वड़ी भूल है, मनुष्यत्व संघर्ष है, वुढ़ापा पश्चात्ताप है। —डिजराइल

At 20 years of age the will reigns; at 30 the wit, at 40 the judgement.

वीस वर्ष की आयु में संकल्प शासन करता है, तीस वर्ष में वुद्धि, चालीस वर्ष में विवेक। —फ्रैंकलिन

आरत

आरत काह न करइ कुकरमू। —तुलसी

आरत कहहिं विचार न काऊ
सूझ जुआरिहिं आपन दाऊँ। —तुलसी

रहत न आरत के चित चेतू। —तुलसी

आरम्भ

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः प्रारभ्यमुत्तमजना न परित्यजन्ति ।।

—भर्तृहरि

नीच लोग विघ्न के भय से कोई कार्य आरम्भ नही करते, मध्यम श्रेणी के लोग कार्य को आरम्भ करके विघ्न पडने पर बीच में ही छोड देते हैं, किन्तु उत्तम लोग बारम्बार विघ्न पडने पर भी आरम्भ किये हुए काम को बीच में नही छोडते।

The beginning is the most important part of the work
किसी कार्य का आरम्भ उसका सबसे महत्त्वपूर्ण अंग होता है। —प्लेटो

Well-begun is half-done.
यदि आरभ अच्छा हुआ तो समझिए कि आधा काम पूरा हो गया।

What you can do, or dream you can, begin it. boldness has genius, power and magic in it, only engage and then the mind grows muled, begin and then the work will be completed

जिस काम को तुम कर सकते हो या कल्पना करते हो कि तुम कर सकोगे, उसे आरम्भ करो, साहस में प्रतिभा, शक्ति और जादू है। सिर्फ काम में जुट जाओ, मस्तिष्क में वेग आ जायगा। आरम्भ करो, कार्य समाप्त होगा। —गेटे

आराम

आराम हराम है। —[illegible]

बहुत ज्यादा आराम स्वय दर्द बन जाता है। —[illegible]

Most of our comforts grow up between crises [illegible]
हमारे बहुत से आराम की उत्पत्ति विपत्ति के समय होती है। —[illegible]

आराम उनके प्रति विश्वासघात है जो इस संसार से चले गये [illegible] स्वतन्त्रता का दीप सदा प्रज्वलित रखने के लिए हमें दे गये हैं। [illegible] विश्वासघात है जिसे हमने अपनाया है और जिसे प्राप्त करने [illegible] यह उन लाखों के प्रति विश्वासघात है [illegible]

—[illegible]

आलस्य

आलस्य वह राजरोग है जिसका रोगी कभी नहीं सँभलता।

—प्रेमचन्द (मानसरोवर)

आलस्य आपके लिए मृत्यु है और केवल उद्योग ही आपका जीवन है।

—स्वामी रामतीर्थ

भूत्यै जागरणम् अभूत्यै स्वप्नम्। —यजुर्वेद

जागना (ज्ञान) ऐश्वर्यप्रद है। सोना (आलस्य) दरिद्रता का मूल है।

उच्चकुलरूपी दीपक, आलस्यरूपी मैल लगने पर प्रकाश में घटकर बुझ जायगा। —संत तिरुवल्लुवर

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न सुप्ताय स्पृहयन्ति। —ऋग्वेद

देवता यज्ञकर्ता, पुरुषार्थी तथा भक्त को चाहते हैं, आलसी से प्रेम नहीं करते।

आलसियों की तरह जीने से समय और जीवन पवित्र नहीं किये जा सकते।

—रस्किन

आलस्य को अपना एकमात्र शत्रु समझनेवाला कर्तव्य-परायण व्यक्ति ही वर्तमान परिस्थिति का सदुपयोग करते हुए उसे अपने अनुकूल बना लेता है।

—अज्ञात

दुनिया में आलस्य बढ़ाने-सरीखा दूसरा भयंकर पाप नहीं है। —विनोबा

In idleness alone there is perpetual despair.

आलस्य में ही सान्ततिक निराशा रहती है। —कार्लाइल

आलस्य दरिद्रता की कुंजी और सारे अवगुणों की जड़ है। —स्परजन

आलस्य जीवित मनुष्य को दफना देता है। —जैरेमी टेरल

Idleness is only the refuge of weak minds, and the holiday of fools.

आलस्य दुर्बल मनवालों का एकमात्र शरण है, और मूर्खों का अवकाश दिवस।

—चेस्टरफील्ड

आलस्य स्त्रीसेवा सरोगता जन्मभूमिवात्सल्यम्।

[illegible] ॥ —हितोपदेश

Don't complain about the snow on your neighbour's roof, when your own door-step is unclean.

जब आपके अपने द्वार की सीढियाँ मैली हैं तो अपने पड़ोसी की छत पर पडी हुई गन्दगी का उलाहना मत दीजिए। —कनफ्यूशियस

Criticism is futile because it puts a man on the defensive and usually makes him strive to justify himself. Criticism is dangerous, because it wounds a man's precious pride, hurts his sense of importance and arouses his resentment.

आलोचना व्यर्थ होती है, क्योंकि इससे दोषी प्राय: अपने को निर्दोष सिद्ध करने का प्रयत्न करने लगता है। आलोचना भयावह भी है, क्योंकि वह मनुष्य के बहुमूल्य गर्व पर घाव करती है, उसकी महत्ता के भाव को पीड़ा पहुँचाती है और उसके क्रोध को भड़काती है। —डेल कारनेगी

दूसरों में दोष न निकालना, दूसरों को उतना उन दोषों से नही बचाता, जितना अपने को बचाता है। —स्वामी रामतीर्थ

आलोचना वृक्ष की शाखा से प्राय: फूल और कीड़े—दोनों को एक साथ ही पृथक कर देती हैं। —रिश्टर

Judge not, that ye be not judged.

किसी की आलोचना मत करो, जिससे तुम्हारी भी कोई आलोचना न करे। —लिंकन

स्वयं भगवान् भी मनुष्य के कर्मो का विचार उसकी मृत्यु के पहले नहीं करते। —डा० जानसन

Criticism is a dangerous spark—spark that is liable to cause an explosion in the powder magazine of pride,—an explosion that sometimes hastens death.

आलोचना एक भयानक चिनगारी है—ऐसी चिनगारी है जो अहंकाररूपी बारूद के गोदाम में विस्फोट उत्पन्न कर सकती है और वह विस्फोट कभी कभी मृत्यु को शीघ्र ले आता है। —डेल कारनेगी

कभी कभी आलोचना अपने मित्र को भी शत्रु के शिविर में भेज देती है। —अज्ञात

आवश्यकता

I hold that to need nothing is divine, and the less a man needs the nearer does he approach divinity.

मेरा विश्वास है कि कोई भी आवश्यकता न होना दिव्य है, और जिस मनुष्य की जितनी कम आवश्यकता होती है उतना ही वह ईश्वर के निकट होता है।

—सुकरात

There is no virtue like necessity
आवश्यकता के सदृश कोई सद्गुण नहीं। —शेक्सपियर

Necessity is the mother of invention
आवश्यकता आविष्कार की जननी है। —[illegible]

आवश्यकता ही ससार के व्यवहारो की दलाल है। —[illegible]

Necessity is the argument of tyrants, it is the creed of slaves
आवश्यकता अत्याचारियों का तर्क है, यह पराधीनो का [illegible] है।

—विलियम पिट

Necessity is often the spur to genius.
आवश्यकता बहुधा प्रतिभा को प्रोत्साहित करती है। —[illegible]

आवश्यकता तर्क के सम्मुख नही झुकती। —[illegible]

आवश्यकता कायर को भी वीर बना देती है। —[illegible]

आवश्यकता कभी मुनाफे का सौदा नहीं करती। —[illegible]

Necessity hath no law.
आवश्यकता के लिए कोई नियम (कानून) नहीं है। —[illegible]

It is necessity and not pleasure that compels
यह आवश्यकता है, आनन्द नहीं, जो हमें बाध्य करती है। —[illegible]

The mother of useful arts is necessity [illegible]
luxury

आवश्यकता उपयोगी कलाओं की जननी है, [illegible]

—[illegible]

आवागमन

यदि मनुष्य आवागमन के चक्कर से छूटना चाहता है तो उसे इच्छाओ का दमन करना होगा। परन्तु इन्द्रियो पर कावू पाना वहुत वड़ी तपस्या है। —अज्ञात

जन्म और मृत्यु ससार के दो निर्विवाद सत्य हैं। आवागमन की समस्या इन्ही दो सत्यो का स्पर्श करती है। —अज्ञात

जीवन तो मृत्यु और पुनर्जन्म की परम्परा की कहानी है। हमें पुनर्जन्म पाने के लिए पहले मरना होगा। रोम्यां रोलां

आवागमन संसार का सहज धर्म है, इससे परमात्मा को भी अवकाश नही है। —अज्ञात

आवेश

आवेश और क्रोध को वश में कर लेने से शक्ति वढती है और आवेश को आत्म-वल के रूप में परिवर्तित कर दिया जा सकता है। —महात्मा गांधी

आवेश के प्रभाव से वुद्धि विपरीत हो जाती है। —अज्ञात

आवेश वुद्धि, वल, शक्ति, क्षमता—सवका दिवाला निकाल देता है। —अज्ञात

आश्चर्य

Wonder is the first cause of philosophy
आश्चर्य दर्शन का प्रथम कारण है। —अरस्तू

Wonder is the daughter of ignorance.
आश्चर्य अज्ञानता की वेटी है। ——जान फ्लेरियो

Wonder is the basis of worship.
आश्चर्य आराधना का आधार है। —कार्लाइल

अहन्यहनि भूतानि गच्छन्ति यमसादनम्।
शेषा जीवितुमिच्छन्ति किमाश्चर्यमतः परम्॥ —वेदव्यास (महा०)

प्रतिदिन जीव मृत्यु के मुख में जा रहे हैं, पर वचे हुए लोग अमर रहना चाहते हैं, इससे वढ़कर आश्चर्य क्या होगा।

आश्चर्य ज्ञान का मूल है। —वेकन

Wonder is involuntary praise.
आश्चर्य अनैच्छिक प्रशसा है। —यंग

All wonder is the effect of novelty or ignorance
सम्पूर्ण आश्चर्य कुतूहलत्व या अज्ञानता का परिणाम है। —जानसन

आशा

ससार में ऐसा कोई नही हुआ है जो मनुष्य की आशा का पेट भर सके। पुरुष की आशा समुद्र के समान है, वह कभी भरती ही नही।

—वेदव्यास (महाभारत)

आशा अमर है, उसकी आराधना कभी निष्फल नही होती। —महात्मा गाधी

निरर्थक आशा से बँधा मानव अपना हृदय सुखा डालता है और आशा की कड़ी टूटते ही वह झट से विदा हो जाता है। —रवीन्द्र

आशा और आत्म-विश्वास ही वे वस्तुएँ है जो हमारी शक्तियो को जाग्रत करती है और हमारी उत्पादनशक्ति को दुगना तिगुना बढा देती है।

—स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)

Hope is good breakfast, but it is a bad supper
आशा उत्तम जलपान है किन्तु यह रात्रि का निकृष्ट भोजन है। —बेकन

आशा वुद्धि को धोखा दे जाती है। —अज्ञात

निराशाओ के सघन अधकार में जो नन्ही नन्ही आशाओ की धुधली किरणें खोयी सी रहती है, उनका भी जीवन में कम महत्त्व नही होता। —अज्ञात

आशा नाम नदी मनोरथ जला तृष्णातरगाकुला
रागग्राहवती वितर्कविहगा धैर्यद्रुमध्वसिनी।
मोहावर्त्तसुदुस्तराऽतिगहना प्रोत्तुगचिन्तातटी,
तस्या' पारगता विशुद्धमनसो नन्दन्ति योगीश्वरा ॥ —भर्तृहरि (वैराग्य०)

आशा एक नदी है, उसमें इच्छारूपी जल है, तृष्णा उस नदी की तरगें है, आसक्ति उसके मगर है, तर्क-वितर्क उसके पक्षी है, मोहरूपी भँवरो के कारण वह सुकुमार तथा गहरी है, चिन्ता ही उसके ऊँचे ऊँचे किनारे है, धैर्यरूपी वृक्षो को नष्ट करने वाली है, जो शुद्धचित्त योगीश्वर उसके पार चले जाते है, वे बडा आनन्द उपभोग करते है।

आशाया ये दासास्ते दासा सर्वलोकस्य।
आशा येषां दासी तेषां दासायते लोकः॥ —अज्ञात

जो लोग आशा के दास हैं उन्हें सब लोगों का दास बनना पड़ता है और आशा जिनकी दासी है उनके सब लोग दास हो जाते हैं।

आशा नाम मनुष्याणां काचिदाश्चर्यश्रृंखला।
यया बद्धाः प्रधावन्ति मुक्तास्तिष्ठन्ति पंगुवत्॥ —अज्ञात

मनुष्यों की आशा ऐसी आश्चर्ययुक्त जंजीर है जिससे बँधे हुए लोग दौड़ते है तथा रहित होने पर पंगु के समान खड़े रहते है।

जहाँ कोई आशा नही है, वहां कोई प्रयत्न नही हो सकता। — जानसन

आशाएँ विष की गाँठ हैं। संसार इन्ही इच्छाओं और आशाओ का दूसरा नाम है। जिसने इन्हें नैराश्य-नद में प्रवाहित कर दिया, उसे संसार में समझना भ्रम है।
— प्रेमचन्द

Hope is brightest when it dawns from fears.
आशा जब भय से उत्पन्न होती है, उज्ज्वलतम होती है। — वाल्टर स्काट

आशा ही जीवन है और जीवन ही आशा है। —अज्ञात

In all things it is better to hope than to despair.
प्रत्येक वस्तु के सम्बन्ध में निराश होने की अपेक्षा आशावान होना बेहतर है।
— गेटे

अस्माके सत्वाशिष., सत्या नः संत्वाशिषः॥ — यजुर्वेद
हम आशावादी बनें, हमारी आशाएँ सफल हों।

आशा की भी कितनी सख्त जान है, वह मरते-मरते भी उठ कर खड़ी हो जाती है।
— अज्ञात

आशा अन्तिम श्वास तक साथ नही छोडती। — सुदर्शन

("जब लग स्वाँसा, तब लग आसा"—कहावत)

व्यर्थ आशा केवल मूर्खों को ही प्रसन्न करती है। बुद्धिमान जन ऐसी आशा नही करते। — 'जीवन का सद्व्यवहार' से

आशावाद

मानवस्योन्नति. सर्वा साफल्य जीवनस्य च।
चारितार्थ्यं तथा सृष्टेराशावादे प्रतिष्ठितम् ।।

—अज्ञात

मनुष्य को सब उन्नति, जीवन की सफलता और सृष्टि की चरितार्थता आशावाद में ही प्रतिष्ठित है।

आशावाद प्राणियो के लिए अमृत है। जैसे सूर्य से वनस्पतियो को जीवन प्राप्त होता है वैसे ही आशावाद से मनुष्यो में जीवनशक्ति का सचार होता है।

—स्वेट मार्डेन

आश्रय

किसी का सहारा लिये बिना कोई ऊंचे नही चढ सकता, अतः सब को किसी प्रधान आश्रय का सहारा लेना चाहिए। —वेदव्यास (महाभारत)

आसक्ति

फूल चुनकर इकट्ठा करने के लिए मत ठहरो। आगे बढे चलो, तुम्हारे पथ में फूल निरतर खिलते रहेंगे। —रवीन्द्र

आसक्ति ही मनुष्य को नीच और दुर्बल बनानेवाली है। —स्वामी रामतीर्थ

यदि तुमने आसक्ति का राक्षस नष्ट कर दिया तो इच्छित वस्तुएं तुम्हारी पूजा करने लगेंगी। —स्वामी रामतीर्थ

आह

दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय।
मुई खाल की सास सो, सार भसम ह्वै जाय ।।

—कबीर

कमजोर गरीब की दु खभरी आह अभिमान को चूर्ण करने में समर्थ होती है।
—अज्ञात

जहाँ तक हो किसी के मन को मत दुखाओ। याद रखो, गरीब की आह से ससार उलट-पलट हो सकता है। —सादी

इच्छा

समस्त भय और चिन्ता इच्छाओ का परिणाम है।   —स्वामी रामतीर्थ

The thirst of desire is never filled, nor fully satisfied.

इच्छा की प्यास कभी नही बुझती, न पूर्ण-रूप से सन्तुष्ट होती है।   —सिसरो

जीने की इच्छा ही सब दुःखों की जननी है, मरने की तैयारी ही सब सुखो की जननी है।   —स्वामी रामतीर्थ

जैसी हमारी इच्छाएँ होती है, जैसे हमारे हार्दिक भाव होते है, ठीक उन्ही की झलक हमारे मुखमंडल पर दिखाई देने लगती है।   —स्वेट मार्डेन

किसी काम को करने के पहले आप उस काम को करने की दृढ़ इच्छा मन में कर ले और सारी मानसिक शक्तियों को उस ओर झुका दें जिससे आपको बहुत अधिक सफलता प्राप्त हो।   —स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)

इच्छाओ के सामने आते ही सभी प्रतिज्ञाएँ ताक पर धरी रह जाती है।

—अज्ञात

पूर्ण सत्य की प्राप्ति के लिए तुम्हें सांसारिक इच्छाओ से छुटकारा पाना होगा।
—स्वामी रामतीर्थ

जब तक इच्छा का लवलेश भी विद्यमान है, ईश्वर का दर्शन नही हो सकता, इसलिए अपनी छोटी छोटी इच्छाओ और सम्यक् विचार एवं विवेक द्वारा बड़ी बड़ी इच्छाओ का त्याग कर दो।   —स्वामी रामकृष्ण

इच्छाओ को त्यागने वाले यतियो का गुण गाना उतना ही असम्भव है, जितना कि संसार में अब तक मरे हुओ की गिनती करना।   —संत तिरुवल्लुवर

In moderating, not in satisfying desires, lies peace.

इच्छाओ को शांत करने से नही, अपितु उन्हें परिमित करने से शान्ति प्राप्त होती है।   —हेबर

पवित्र और दृढ़ इच्छा सर्वशक्तिमान् है।   —स्वामी विवेकानन्द

यदि हमारी इच्छा-शक्ति क्षुद्र और कमजोर होगी तो हमारी मानसिक शक्तियो का कार्य भी वैसा ही होगा।   —स्वेट मार्डेन

इच्छा ही घोड़ा बन सकती तो प्रत्येक मनुष्य घुड़सवार हो जाता।

—शेक्सपियर

The desire of the moth for the star
Of the night for the morrow
The devotion to something after
From the sphere of our sorrow.

पतिंगे की नक्षत्र के लिए इच्छा, रात्रि की दिवस की चाह और अपने दु ख से एक अज्ञात सुख की कामना—यही तो जीवन की चिर-अतृप्त इच्छाएँ हैं। —शेली

इज्जत

प्रत्येक मनुष्य को अपना जीवन प्रिय होता है, परन्तु महान् पुरुष को अपनी इज्जत जीवन से कही अधिक मूल्यवान् और प्रिय होती है। —शेक्सपियर

दरिद्रता से जीवन बितानेवाला, ससार की नजर से गिरा हुआ मनुष्य भी यदि धर्म के पथ से नही डिगता तो वही सच्चा इज्जतदार है। —अज्ञात

Better to die ten thousand deaths than wound my honour.
इज्जत को चोट पहुँचाने की अपेक्षा दस हजार वार मृत्यु उत्तम है। —एडिसन

जो अपनी इज्जत करते है, उनकी सब इज्जत करेंगे ही। —वेकन्स फील्ड

इतिहास

इतिहास की पुनरावृत्ति हुआ ही करती है। —अज्ञात

इतिहास स्वदेशाभिमान सिखाने का साधन है। —महात्मा गांधी

मनुष्य के जीवन का इतिहास प्राय. अपने सगो से नही परायो से वनता है। —अज्ञात

History is little more than the register of the crimes, follies and misfortunes of mankind.
इतिहास मानव के अपराधो, मूर्खताओ, अभाग्यो के रजिस्टर के सिवाय और कुछ नही है। —गिवन

जो देखी हिस्टरी इस वात पर कामिल यकी आया।
उसे जीना नही आया जिसे मरना नही आया॥ —अकवर

इतिहास पढने से मनुष्य वुद्धिमान् वनता है। —वेकन

Biography is the only true history.
जीवनियाँ ही केवल सच्चा इतिहास हैं। —कार्लाइल

वृत्तं यत्नेन संरक्षेत् वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणः वृत्ततस्तु हतो हतः॥

—वेदव्यास (महाभारत)

इतिहास की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। धन तो आता और जाता है। धन से हीन होने पर कोई नष्ट नहीं होता किन्तु इतिहास और अपना प्राचीन गौरव नष्ट कर देने पर विनाश निश्चित है।

इतिहास राजनीति की पाठशाला है। —प्रोफेसर शेली

इतिहास के अनुभवों से हम सबक नहीं लेते, इसी से इतिहास की पुनरावृत्ति होती है। —विनोबा

इन्द्रियाँ

वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता। —भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

अपनी इन्द्रियां जिसके वश में हैं उसकी बुद्धि स्थिर है। वही विद्वान् और पण्डित है।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥

—श्रीकृष्ण (गीता)

कछुआ जैसे सब ओर से अंग समेट लेता है वैसे ही जब पुरुष इन्द्रियों को उनके विषयों से समेट लेता है तब उसकी बुद्धि स्थिर हुई कही जाती है।

कुरंगमातंगपतंगभृंगमीना हताः पंचभिरेव पंच।
एकः प्रमादी स कथं न हन्यते यस्सेवते पंचभिरेव पंच॥

—अज्ञात

हिरण गाने से, हाथी हस्तिनी से, पतंग दीपक से, भ्रमर गंध से, और मछलियाँ जीभ के स्वाद से मोहित होकर अपने प्राण खो देती हैं। फिर जिन्हें पाँच इन्द्रियाँ हैं और जो सभी विषयों की आसक्ति में फंसते हैं तो उनको मृत्यु क्यों छोड़ेगी?

इन्द्रिय-दमन

इन्द्रिय-दमन का अभ्यास भविष्य जीवन को बहुत शान्त और सहनशील बना देता है। —अज्ञात

इन्द्रिय-संयम

इन्द्रिय-सयम और मन शुद्धि ऐसी दवा है कि इनसे शारीरिक स्वास्थ्य तो मिलता ही है, पारमार्थिक स्वास्थ की भी प्राप्ति होती है। —अज्ञात

जिसने इन्द्रियो को अपने वश में कर लिया है, उसको स्त्री तृण-तुल्य जान पडती है। —चाणक्य

ईमानदारी

मनुष्य की प्रतिष्ठा ईमानदारी पर ही निर्भर है। —अज्ञात

Honesty is the best policy.
ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है। —फ्रैंकलिन

ईमानदारी, वचन का पालन और उदारता—ये तीन ऐसे गुण है जो स्वाभिमान के साथ अनिवार्य रूप से रहते है। —अज्ञात

No legacy is so rich as honesty
कोई उत्तरदान, ईमानदारी के सदृश बहुमूल्य नही है। —शेक्सपियर

ईमानदार मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट कृति है। —पोप

जिस देश के बुद्धिजीवी लोग अपनी बुद्धि का प्रयोग ईमानदारी के साथ करना छोड़ देते है, वह देश सब प्रकार से दीन-हीन और नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। —अज्ञात

जो मनुष्य स्वाभिमानी होगा वह अवश्य ही ईमानदार होगा। —अज्ञात

ईश-कीर्तन

प्रभुकीर्तन और कथा मखमल का बिछौना है, उस पर नींद न आयेगी तो और कहाँ आयेगी? नाच-रग कांटो की कँटीली और नुकीली जमीन है, उस पर नींद कहाँ? —स्वामी दयानन्द

ईश-कृपा

मूक होइ वाचाल, पंगु चढ़ै गिरिवर गहन।
जासु कृपा सो दयाल, द्रवौ सकल कलिमल-दहन ।।　　—तुलसी

जिसकी पीठ पर परमेश्वर का हाथ हो उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं। भगवान जो चाहे कर दे उसका हाथ कौन पकड़ सकता है?　　—अज्ञात

जा पर कृपा राम कै होई। ता पर कृपा करहिं सब कोई ।।
—तुलसी (मानस बाल०)

जो अपना चित्त मुझमें लगा देते हैं वह मेरी कृपा से संसार के समस्त दु:खों से पार हो जाते हैं।　　—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेही, राम कृपा करि चितवहिं जेही ।।
—तुलसी (मानस बाल०)

सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रय:।
मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ।।
—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

मेरा आश्रय ग्रहण करनेवाला सदा सब कर्म करता हुआ भी मेरी कृपा से शाश्वत, अव्यय पद को पाता है।

बिनु विश्वास भगति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न राम।
रामकृपा बिनु सपनेहुँ, जीव न लह विश्राम ।।
—तुलसी (मानस-उत्तर)

पतितोऽप्यातिदुर्गतोऽपि सन्नकृतज्ञो निखिलागसां पदम्।
भवदीय इतीरयंस्त्वया दयनीयस्त्रपयैव केवलम् ।।

अत्यन्त पतित, दुर्गत, अकृतज्ञ और निखिल अपराधों का स्थान तो मैं हूं, फिर भी मैं आपका हूँ, यही लज्जा रखने के लिए आपकी दया मुझ पर होनी चाहिए।
—अज्ञात

ईश-चर्चा

जिन्हें दोनों वक्त भूखे रहना पड़ता है उनसे मैं ईश्वर की चर्चा कैसे करूँ? उनके सामने तो परमात्मा दाल रोटी के ही रूप में प्रकट हो सकते हैं।
—महात्मा गांधी

ईश-चिन्तन

जिस प्रकार औषधि शरीर के सब रोगो को दूर कर देती है, उसी प्रकार ईश-चिन्तन से मन के क्लेश दूर होते हैं। —प्रेमचन्द

ईश-चिन्तन से करोडो पाप इस तरह नष्ट हो जाते है, जैसे आग की एक चिनगारी घास के ढेर को जला देती है। —अज्ञात

धन, दारा अरु सुतन में, रहत लगाये चित्त।
क्यो रहीम खोजत नही, गाढे दिन को मित्त ॥ —रहीम

सच्चे भक्तो का एकमात्र बल भगवान का भरोसा ही है। वे पूर्ण निर्भयता के साथ भगवान के होकर अपना जीवन केवल भगवान के चिन्तन में ही लगाया करते है। —अज्ञात

अनन्याश्चिन्तयन्तो मा ये जना पर्युपासते।
तेषा नित्याभियुक्ताना योगक्षेम वहाम्यहम् ॥ —(गीता)

जो अनन्य भक्त मेरा चिन्तन करते हुए मेरी उपासना करते है उन नित्य मुझमें रत रहनेवालो के योग-क्षेम का भार मै उठाता हू।

ईश-तुल्य

नारि नयन सर जाहि न लागा। घोर क्रोध-तम निसि जो जागा ॥
लोभ-पास जेहि गर न बँधाया। सो नर तुम्ह समान रघुराया ॥
—तुलसी (मानस, किष्किधा)

जिसके चित्त में कभी क्रोध नही आता, और जिसके हृदय में सर्वदा परमेश्वर विराजमान रहता है, वह भक्त ईश्वरतुल्य है। —रैदास

ईश-दर्शन

मेरे प्रभु! तुम्हारे वियोग के क्षण मुझे शत्रुओ के वाणो की भांति लगते है। तुम्हारे हाथ कब उन वाणो को मेरे शरीर से दूर करेंगे? —अज्ञात

ईश-दर्शन और उसमें वास्तविक प्रवेश केवल अनत भक्ति से ही सम्भव है।
—गीता

ईश-प्रिय

अमीर जो गरीबो के समान नम्र है और गरीव जो कि अमीरो के समान उदार है वही ईश्वर के प्रिय-पात्र होते है। —सादी

ईश-पूजा

ईश्वर की पूजा करना अन्तर्निहित आत्मा की उपासना ही है।

—स्वामी विवेकानंद

जो अपने पेट का गुलाम है वह ईश्वर की पूजा कभी नही कर सकता।

—सादी

लोकसेवा हमारी मूर्तिपूजा है। —विनोवा

मनुष्य ही परमात्मा का सर्वोच्च साक्षात् मन्दिर है। इसलिए साक्षात् देवता की पूजा करो। —स्वामी विवेकानंद

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धि विन्दति मानवः।

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

अपने-अपने कर्मो के द्वारा इस ईश्वर की पूजा करने से मनुष्य सिद्धि को प्राप्त होता है।

ईश-प्राप्ति

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्।
अन्तःशरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः।।

—महर्षि अंगिरा

यह शरीर के भीतर ही (हृदय में विराजमान) प्रकाशस्वरूप (और) परम विशुद्ध परमात्मा निस्सदेह सत्य-भाषण, तप, (और) ब्रह्मचर्यपूर्वक यथार्थ ज्ञान से ही सदा प्राप्त होनेवाला है, जिसे सब प्रकार के दोषों से रहित हुए यत्नशील साधक ही देख पाते हैं।

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्त गच्छन्ति नामरूपे विहाय।
तथा विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम्।।

—महर्षि अंगिरा

जिस प्रकार वहती हुई नदियाँ नाम-रूप को छोडकर समुद्र में विलीन हो जाती हैं, वैसे ही ज्ञानी महात्मा नाम-रूप से रहित होकर उत्तम मे उत्तम दिव्य परम पुरुप परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्त सङ्गवर्जित ।
निर्वैर सर्वभूतेपु य स मामेति पाण्डव ।।

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

हे पाण्डव! जो सव कर्म मुझे सर्मापित करता है, मुझ में परायण रहता है, मेरा भक्त वनता है, आसक्ति का त्याग करता है और प्राणी-मात्र में द्वेष रहित होकर रहता है, वह मुझे पाता है।

सूधे मन सूधे वचन, सूधी सव करतूति।
तुलसी सूधी सकल विधि, रघुवरप्रेम प्रसूति ।। —तुलसी

ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्त पर्युपासते।
सर्वत्रगमचिन्त्य च कूटस्थमचल ध्रुवम् ।।
सनियम्येन्द्रियग्राम सर्वत्र समवुद्धय.।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रता ।। —गीता

सव इन्द्रियो को वश में रखकर, सर्वत्र समत्व का पालन करके जो दृढ, अचल, और अचित्य, सर्वव्यापी, अवर्णनीय, अविनाशी स्वरूप की उपासना करते हैं वे सव प्राणियो के हित में लगे हुए मुझे ही पाते हैं।

'भोले भाव मिलें रघुराई' —गुरु नानक

निर्मल मन जन सो मोहि पावा । मोहि कपट छल छिद्र न भावा ।।

—भगवान श्रीरामचन्द्र (रामचरितमानस)

सम शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयो ।
शीतोष्ण सुखदु खेपु सम. सङ्गविवर्जित ।।

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

शत्रु-मित्र, मान-अपमान, शीत-उष्ण, सुख-दु ख आदि में जो समतावान् है और आसक्ति से रहित है वही पुरुप परमात्मा को प्राप्त कर सकता है।

ईश-प्रेम

ईश-प्रेम के द्वारा जीवन का वास्तविक अर्थ सिद्ध होता है।—स्वामी शिवानन्द

जहाँ एविरादर न मानद बकस।
दिल अन्दर जहाँ आफिरी वन्दोवस ॥ —सादी (गुलिस्तां)

भाई! यह संसार किमी के साथ नही जाता। इसलिए इसके साथ दिल मत लगाओ—लगाओ इसके वनाने वाले के साथ। उसके साथ सम्वन्व जोड़ने से तुम्हारा भला होगा।

भगवत-प्रेम विना इन्द्र के जैसा ऐश्वर्य भी व्यर्थ है। —नरोत्तमदास

ईश्वरीय-प्रेम अविनस्वर तथा अपरिवर्त्तनगील है। इसकी पवित्र ज्योति कभी भी लुप्त नही होती। —स्वामी शिवानन्द

ईश-भक्ति

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं,
यगश्चारुचित्रं वनं मेरुतुल्यम्।
मनश्चेन्न लग्नं हरेरङ्घ्रिमध्ये,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ —अज्ञात

सुन्दर शरीर, सुन्दरी भार्या, यश, सच्चरित्रता, अपार धन आदि सब कुछ रहते हुए भी यदि भगवान् के चरणों में मन नही लगा तो इन पदार्थों के रहने का कोई फल नहीं।

भक्ति ईश्वर तक पहुँचने का सुखद, सुचिक्कण राज-पथ है।
—स्वामी शिवानन्द

हृदय के अंतरतम से ईश्वर के प्रति सतत एवं अनन्य प्रेम करना ही भक्ति है।
—स्वामी शिवानन्द

ईश-रक्षक

जाको राखै साइयाँ मार न सकिहै कोय।
वार न वांका करि सकै जो जग वैरी होय ॥ —कवीर

सीम कि चाँपि सकै कोउ तासू। वड़ रखवार रमापति जासू ॥
—तुलसी (मानस वाल०)

अरक्षित तिष्ठति दैवरक्षित सुरक्षित दैवहत विनश्यति ।
जीवत्यनाथोऽपि वने विसर्जित कृतप्रयत्नोऽपि गृहे न जीवति ।। —पञ्चतन्त्र ८ भाग

दैव से रक्षा किया हुआ, विना रक्षा के भी बच जाता है, और अच्छी तरह रक्षा किया हुआ भी, दैव का मारा हुआ नही बचता, जैसे माता-पिता द्वारा वन में छोडा गया अनाथ भी जीवित रहता है किन्तु घर में अनेक उपाय करने पर भी नही जीता ।

पीसनेवाली चक्की में भी वे अन्न के दाने जो कील से सटे रहते है सकुशल रहते है, उसी प्रकार जो भगवान के नाम तथा उनके पादपद्मो से आसक्त होते है वे ससार की विपत्तियो से पीडित नही होते । —स्वामी शिवानन्द

ईश्वर

ईश्वर सर्वभूताना हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ।। —गीता

हे अर्जुन ! ईश्वर सबके हृदय में निवास करता है । वह माया से सब जीवो को वैसे ही नचाता है जैसे सूत्रधार कठपुतलियो को मच पर घुमाता है ।

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता,
पश्यत्यचक्षु स श्रृणोत्यकर्ण ।
स वेत्ति वेद्य न च तस्यास्ति वेत्ता
तमाहुरग्र्य पुरुष महान्तम् ।।
—श्वेताश्वतर उ०

विना हाथ पकडनेवाला है, विना पैर तेज दौड़नेवाला है, विना आंख के देखता है, विना कान के सुनता है, वह जानने योग्य को जानता है, उसका जाननेवाला नही है । उसको आदि, महान् पुरुष कहते है ।

जिस प्रकार अक्षरो में 'अ' है, उसी प्रकार जगत् में ईश्वर है ।
—सत तिरुवल्लुवर

ईश्वर न काबा में है, न काशी में है । वह तो घर घर में व्याप्त है—हर दिल में मौजूद है । —महात्मा गांधी

God is like a circle whose centre is everywhere but circumference nowhere

ईश्वर एक वृत्त है, जिसका केन्द्र तो सर्वत्र है, किन्तु वृत्तरेखा कही नहीं ।
—सैंट आगस्टन

जहन में जो घिर गया लाइन्तहा क्योंकर हुआ।
जो समझ में आ गया फिर वो खुदा क्यो कर हुआ। —अकबर

न संदृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुपा पश्यति कश्चनैनम्।
ज्ञान प्रसादेन विशुद्धसत्त्वस्ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः ।।
—श्वेता० उ०

ईश्वर को आँखो से कोई देख नहीं सकता, किन्तु हममें से हर एक मन को पवित्र करके विमल बुद्धि से ईश्वर को देख सकता है।

समस्त विश्व ईश्वर से पूर्ण है। —स्वामी विवेकानन्द

व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी। सत चेतन घन आनंद राशी।।
आदि-अन्त कोउ जासु न पावा। मति-अनुमान निगम यश गावा।।
बिनु पद चलै सुनै बिनु काना। कर-बिनु कर्म करै विधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु वानी वक्ता बड़ योगी।।
तनु बिनु परस नयन बिनु देखा। ग्रहै घ्रान बिनु बास अशेषा।।
अस सब भाँति अलौकिक करणी। महिमा तासु जाइ किमि बरणी।।
—तुलसी (मानस-बाल०)

एको विश्वस्य भुवनस्य राजा। —ऋग्वेद

वह सब लोकों का एकमात्र स्वामी है।

जिस तरह पानी को कोई जल, कोई आब, कोई वाटर कहते हैं, उसी तरह एक ही सच्चिदानन्द परमेश्वर को कोई अल्लाह, कोई हरि, कोई गॉड पुकारते हैं।
—रामकृष्ण परमहंस

God grows weary of great kingdoms but never of little flowers.

ईश्वर बडे बड़े साम्राज्यों से विमुख हो जाता है, परन्तु छोटे-छोटे पुष्पो से कभी खिन्न नहीं होता। —रवीन्द्र

प्रत्येक मनुष्य मानवता की सेवा करके ईश्वर के दर्शन कर सकता है, क्योंकि न ईश्वर स्वर्ग में है, न पाताल में है, बल्कि प्रत्येक के हृदय में है। —महात्मा गांधी

तस्मिन् ह तस्युर्भुवनानि विश्वा। ऋग्वेद

उस परमात्मा में ही सम्पूर्ण लोक स्थित हैं।

ईश्वर का दाहिना हाथ कोमल है, परन्तु बाया हाथ बहुत कठोर है।—रवीन्द्र

Nature is too thin a screen, the glory of the omnipresent God bursts through everywhere.

प्रकृति बहुत महीन पर्दा है; सर्वव्यापी ईश्वर का प्रताप सब तरफ से फूट पडता है। —एमर्सन

मै ईश्वर से डरता हूँ, ईश्वर के बाद मुख्यत उससे डरता हूँ, जो ईश्वर से नही डरता। —सादी

A foe to god was never a true friend to man

ईश्वर का शत्रु कभी मानव का सच्चा मित्र नही हुआ। —यग

एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति। —ऋग्वेद

उस एक प्रभु को विद्वान् लोग अनेक नामो से पुकारते है।

ईश्वर सत्य है और प्रकाश उसकी छाया है। —प्लेटो

If God did not exist it would be necessary to invent him.

यदि ईश्वर का अस्तित्व न होता तो उसके आविष्कार की आवश्यकता होती। —वाल्टेयर

जिधर भी जाओ, जिधर भी देखो,
उसी का प्रकाश दिखाई देता है। —गुरु नानक

ईश-विमुख

मित्र करै शत रिपु की करनी। ताकहँ विबुधनदी वैतरनी॥
सब जग तेहि अनलहु ते ताता। जो रघुवीर विमुख सुनु भ्राता॥
तुलसी (मानस—अरण्यकाण्ड)

विंध्य न ईंधन पाइए, सागर जुरै न नीर।
परै उपास कुवेर घर, जो विपच्छ रघुवीर॥
राम दूरि माया बढति, घटति जानि मन माँह।
भूरि होति रवि दूरि लखि, सिर पर पगतर छाँह॥
बरषा को गोबर भयो, को चह को करै प्रीति।
तुलसी तू अनुभवहि अब, राम विमुख की रीति॥ —तुलसी

हर सू दवद आँकस जे दरे खेश बरआनद।
वाँरा कि वख्वानद बदरे कस न दवानद। —सादी

ईश्वर जिसको अपने द्वार से भगा देते हैं वह घर-घर टुकड़े माँगता फिरता है परन्तु जिसे वह अपने पास वुला लेते है उसे किसी के द्वार पर जाने की जरूरत नही रहती।

ईश-शरण

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेक शरण व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुचः।। —गीता

सम्पूर्ण धर्मो को त्याग कर केवल मेरी शरण में आ। किसी वात का शोक मत कर। मैं तुझे सम्पूर्ण पापो से मुक्त कर दूँगा।

मनुष्य को जव कभी प्रयत्न करते हुए भी आशा की झलक दिखाई नही देती तो वह अपने आपको दैव के हाथो छोड़ देता है। तैराक के हाथ-पैर थक जाते हैं तो वह तैरने का यत्न भी त्याग देता है। —अज्ञात

जव मनुष्य दु.ख-वेदना के मार्मिक आघात से विकल होकर परमात्मा की शरण लेता है तव परमात्मा की गहराई में मनुष्य को परमात्मा की प्रेरणा व निर्देश प्राप्त होता है। —अज्ञात

ईर्ष्या

वह ईर्ष्या ही क्या जिसमें डंक न हो, विष न हो। —प्रेमचन्द

पर सुख-संपति देखि सुनि, जरहिं जे जड़ विनु आगि।
तुलसी तिन के भाग ते, चलै भलाई भागि।। —तुलसी

ईर्ष्या वह काली नागिन है जो समस्त पृथ्वीमंडल में ज़हरीली फुफकारें छोड़ रही है। यह गलतफहमियो की एक गर्म हवा है जो शरीर के अन्दर "लू" की तरह चलती है और मानसिक शक्तियो को झुलसाकर राख वना देती है। —अज्ञात

ईर्ष्यायुक्त मनुष्य के हृदय में सदा जलन और दुःख वने रहते है। उसका मुख सदा विष उगला करता है और पड़ोसी की विजय और भाग्य उसे दु.खी करते रहते है। —'जीवन का सद्व्यवहार' से

ईर्ष्यालु मनुष्य स्वय ही ईर्ष्याग्नि में जला करता है। उसे और जलाना व्यर्थ है। —सादी

ईर्ष्या करनेवाले का सबसे बड़ा शत्रु उसकी ईर्ष्या ही है। दूसरे शत्रु उसका अहित करने से रह भी जाय, परन्तु ईर्ष्या उसे हानि पहुचाकर ही रहती है।

—संत तिरुवल्लुवर

ईश्वरार्पण

मेरा मुझमें कुछ नही जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते क्या लागत है मोर॥ —कबीर

चित्तशुद्धि के अन्य साधनो को अगर मै सोडा या साबुन की उपमा दूं तो ईश्वरार्पण को जल की उपमा दूगा। सोडा साबुन जल के बिना काम नही देते, लेकिन बिना सोडा साबुन के भी शुद्ध जल से धोने का काम हो जाता है। —विनोबा

जब अहकार का विनाश होता है, निजत्व का ह्रास होता है, जब तुम अपने सर्वस्व को ईश्वरार्पण करते हो, तब भक्ति स्वत प्रकट होती है।

—स्वामी शिवानन्द

उत्साह

उत्साहो बलवानार्य नास्त्युत्साहात्पर बलम्।
सोत्साहस्य हि लोकेषु न किंचिदपि दुर्लभम्॥

—वाल्मीकि (रा० कि०)

उत्साह ही बलवान् होता है, उत्साह से बढकर दूसरा कोई बल नही है। उत्साही पुरुष के लिए ससार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नही है।

बिना उत्साह के कभी किसी महान ध्येय की प्राप्ति नही हुई। —एमर्सन

हताश न होना ही सफलता का मूल है और यही परम सुख है। उत्साह ही मनुष्य को सर्वदा सब प्रकार के कर्मों में प्रवृत्त करनेवाला है और जीव जो कुछ कर्म करता है, उसे उत्साह ही सफल बनाता है। —वाल्मीकि (रा० सु०)

Every production of genius must be the production of enthusiasm

प्रतिभावान् की प्रत्येक कृति उत्साह की कृति होनी चाहिए।

—डिजरायली

विश्व के इतिहास में प्रत्येक महान् और महत्वपूर्ण आन्दोलन उत्साह की सफलता है।
—एमर्सन

उत्साही

उत्साहवन्तः पुरुषा नावसीदन्ति कर्मसु। —वाल्मीकि

उत्साही मनुष्य कठिन से कठिन काम आ पड़ने पर भी हिम्मत नही हारते।

उत्तम

न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्।
—कालिदास (शकुन्तला)

चंचल चमकवाली विजली पृथ्वी तल से थोड़े ही निकला करती है। (उत्तम वस्तु की उत्पत्ति ऊँचे स्थान से ही होती है)।

उत्तम पुरुषो की गति फूल के गुच्छे के सदृश है, या तो वे लोगो के सिर पर ही विराजते है या वन में ही सूखकर समाप्त हो जाते है। —भर्तृहरि

उत्तमा स्वयमाख्याता पितुः ख्याता. च मध्यमाः।
अधमा मातुलात्ख्याता. श्वशुरख्याताधमाधमाः॥ —अज्ञात

उत्तम पुरुष वह है जो अपना नाम स्वयं पैदा करता है, मध्यम पुरुष अपने पिता के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त करता है, अधम पुरुष वह है जो अपने मामा के नाम से ख्याति प्राप्त करता है, पर वह पुरुष अधम से अधम है जो ससुर के नाम पर प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

उत्तरदायित्व

अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान वहुधा हमारे संकुचित व्यवहारो का सुधारक होता है। जव हम राह भूलकर भटकने लगते है तव यही ज्ञान हमारा विश्वसनीय पथ-प्रदर्शक वन जाता है। —प्रेमचन्द

Responsibility educates.
उत्तरदायित्व से शिक्षा मिलती है। —वेण्डेल फिलिप

Responsibility walks hand in hand with capacity and power.
उत्तरदायित्व, योग्यता और शक्ति के साथ साथ चलता है।
—जे० जी० हालैण्ड

Responsibility is a great power developer. Where there is responsibility there is growth

उत्तरदायित्व से महान् बल प्राप्त होता है। जहा कहीं उत्तरदायित्व होता है वही विकास होता है। —अज्ञात

उत्तेजना

प्राय स्व महिमान क्षोभात् प्रतिपद्यते हि जन.। —कालिदास

प्राय उत्तेजना होने पर मनुष्य अपना महत्त्व प्रदर्शित करता है।

Emotion turning back on itself, and not leading on to thought or action is the element of madness

ऐसी उत्तेजना उन्माद का मूल है जो स्वय की ओर मुड जाती है और जिनका परिणाम कोई विचार या कर्म नही होता। —जे० स्टॅलिंग

उदारता

उदार मनवाले विभिन्न धर्मो में सत्य देखते है, सकीर्ण मनवाले केवल अन्तर देखते है। —एक चीनी कहावत

A great mind will neither give an affront, nor bear it.

महान् व्यक्ति न किसी का अपमान करता है और न उसको सहता है। —होम

A brave man knows no malice, but forgets, in peace, the injuries of war, and gives his direst foe a friend's embrace

एक वीर पुरुष किसी से द्वेष नही करता, युद्ध की क्षति को शाति में भूल जाता है और अपने भयकर शत्रु का भी मित्र की भाँति आलिंगन करता है। —काउपर

Generosity is the accompaniment of high birth, pity and gratitude are its attendants

उदारता उच्च वश से आती है, दया और कृतज्ञता उसके सहायक है।—कारनेल

अय निज परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरिताना तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥ —हितोपदेश

'यह मेरा है यह दूसरे का' ऐसा सकीर्ण हृदयवाले समझते हैं। उदार चित्तवाले तो सारी दुनिया को कुटुम्ब सा समझते हैं।

उद्यम

उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथै.।
न हि सुप्तस्य सिहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा.॥ —पंचतन्त्र

कार्य मनोरथ से नही उद्यम से सिद्ध होते है । जैसे सोते हुए सिंह के मुह में मृग अपने आप नही चले जाते।

विश्राम में भी उद्यम की गति है।
शांत समुद्र की तरगें गति हीन नही है। —रवीन्द्र

उद्यम ही सफलता की कुंजी है। विना उद्यम किये थाली की रोटी भी अपने मुंह में नही जाती। —अज्ञात

अगर तूने स्वर्ग और नरक नही देखा है तो समझ ले कि उद्यम स्वर्ग है और आलस्य नरक है। —अज्ञात

उद्यमी

नात्युच्चशिखरो मेरु. नातिनीच रसातलम्।
व्यवसायद्वितीयानां नाप्यपारो महोदधि.॥

व्यवसायी मनुष्य के लिए सुमेरु पहाड़ की चोटी भी वहुत ऊँची नही है और उसके लिए रसातल भी अधिक नीचा नही है और वह (उद्यमी) समुद्र को भी अथाह नहीं समझता। —अज्ञात

उद्योग

उद्योगी मनुष्य की सहायता करने के लिए प्रकृति वाध्य है। —स्वामी रामतीर्थ

उद्योगिनं पुरुषसिहमुपैति लक्ष्मी-
र्दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या,
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोष. ? —भर्तृहरि

उद्योगी पुरुष-सिह लक्ष्मी का उपार्जन करता है, परन्तु कायर मनुष्य भाग्य के भरोसे वैठा रहता है। भाग्य को ठोकर मारकर उद्योगी पुरुष अपने कार्य में दृढ़ता से निमग्न हो जाता है और यदि फिर भी उसे सफलता नहीं मिलती, तो यह भाग्य का नहीं वरन् अपनी कार्य-पद्धति का दोष है।

कलि शयानो भवति सजिहानस्तु द्वापर ।
उत्तिष्ठस्त्रेता भवति कृत सम्पद्यते चरन् ॥
—एतरेय ब्राह्मण

पडे सोते रहना ही कलियुग है, ऊँघते रहना ही द्वापर है, उठ बैठना त्रेता है और चल पडना ही सतयुग है। (अत चलते रहो, चलते रहो।)

वर्तमानेन सतुष्टम् तथाप्युन्नत्यभीप्सया।
समुद्योग परस्तिष्ठेत् फल न्यस्य परात्मनि ॥ —अज्ञात

मनुष्य को वर्तमान मे सतुष्ट रहते हुए भी उन्नति की इच्छा से उद्योग में तत्पर होना चाहिए। साथ ही उस उद्योग के फल को परमात्मा पर छोड देना चाहिए।

समुद्योगपरैर्भाव्य जीवने मानवै. सदा।
परमुद्योगसीमाया धीमान् ध्यान न विस्मरेत् ॥ —अज्ञात

मनुष्यो को जीवन में उद्योग अवश्य करना चाहिए। परन्तु बुद्धिमान् मनुष्य को यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि फल के विषय में उद्योग की अपनी सीमा भी होती है।

जहाँ उद्योग नही वहाँ सुख नही। जिस देश मे उद्योग गया उस देश को भारी घुन लगा। —विनोबा

स्वावलम्बन और सहयोगात्मक उद्योग; दोनो नागरिक जीवन की कुजी है।
—सरदार पटेल

जिस घर मे उद्योग की तालीम नही उस घर के लडके जल्दी ही घर का नाश कर देंगे। —विनोबा

मांगना एक लज्जास्पद कार्य है। अपने उद्योग से कोई वस्तु प्राप्त करना ही सच्चे मनुष्य का कर्तव्य है। —महात्मा गाधी

पहले अपनी परीक्षा करो, फिर ईश्वर को पुकारो, क्योंकि ईश्वर उद्योगी की ही सहायता करता है। —एमर्सन

उद्धार

उद्धार वही कर सकते है जो उद्धार के अभिमान को हृदय में आने नहीं देते।
—दयान

अगर ससार में तीन करोड़ ईसा, मुहम्मद, वुद्ध या राम जन्म लें तो भी तुम्हारा उद्धार नही हो सकता, जब तक तुम स्वय अपने अज्ञान को दूर करने के लिए कटिवद्ध नही होते, तव तक तुम्हारा कोई उद्धार नही कर सकता, इसलिए दूसरो का भरोसा मत करो। —स्वामी रामतीर्थ

उधार (दे० 'ऋण')

उधार माँगना भीख माँगने से अविक अच्छा नही है। —लेसिंग

Neither a borrower nor a lender be; for loan oft loses both itself and friend

न उधार लो और न उधार दो क्योकि उवार प्राय. स्वय को और मित्र दोनो को खो देता है। —शेक्सपियर

उधार देना ही पाप करना है। —रस्किन

उन्नति

वही उन्नति कर सकता है जो स्वयं अपने को उपदेश देता है। —स्वामी रामतीर्थ

स्त्री की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्भर है। —अरस्तू

Progress—the onward stride of God

उन्नति आगे की ओर ईश्वर की लम्बी डग है। —विक्टर ह्यूगो

Intercourse is the soul of progress.

मेलमिलाप उन्नति की आत्मा है। —वक्सटन

Nature knows no pause in progress and development and attaches her curse on all inaction.

प्रकृति अपनी उन्नति और विकास में रुकना नही जानती और अपना अभिशाप प्रत्येक अकर्मण्यता पर लगाती है। —गेटे

सभी वस्तुएँ जो मानव से सम्बन्वित है यदि उन्नति नही करती तो उनका ह्रास होने लगता है। —गिवन

He only is advancing in life whose heart is getting softer, whose blood warmer, whose brain quicker, whose spirit is entering into living peace.

केवल वही जीवन में उन्नति कर रहा है जिसका हृदय कोमल, रुधिर उष्ण मस्तिष्क तीक्ष्ण होता जाता है, एवं जिसके मन को शान्ति मिलती जाती है।

—रस्किन

तस्मादुन्नतिकामेन मानवेनेह जन्मनि।
आत्मनो भावसंशुद्ध्यै सर्वदैव प्रयत्यताम्॥ —अज्ञात

इस जन्म में जो मनुष्य उन्नति करना चाहता है उनको अपने भावो की शुद्धि के लिए बराबर प्रयत्नशील रहना चाहिए।

जन्म-जन्मान्तरस्यैतद् विज्ञा आहु प्रयोजनम्।
अनुभूतिविशेषैर्यदुत्तरोत्तरमुन्नति॥ —अज्ञात

विज्ञजनो का कथन है कि जन्म-जन्मान्तर का प्रयोजन यही है कि विभिन्न अनुभव द्वारा उत्तरोत्तर उन्नति की जाय।

उन्माद

जो प्रेम असहिष्णु हो, जो दूसरो के मनोभावो का जरा भी विचार न करे, जो मिथ्या कलंक आरोपण करने में संकोच न करे, वह उन्माद है प्रेम नही।

—प्रेमचन्द

O Judgment, thou art fled to brutish beasts,
And men have lost their reason.

अरे न्याय! क्या तू भी जानवरो के हृदय मे चला गया और मनुष्यो मे ज्ञान नही रह गया। —शेक्सपियर

Insanity destroys reason, but not wit.
उन्माद ज्ञान का नाश करता है, परन्तु बुद्धि का नहीं। —इमन

ज्ञान का उन्माद मदिरा के उन्माद से भयंकर है। क्योंकि ज्ञानोन्मादी अपने साथ दूसरो को भी हानि पहुँचाते है जब कि मदिरोन्मादी केवल अपनी ही हानि

उपकार

यो रहीम सुख होत है, उपकारी के अंग।
बाँटन वारे के लगै, ज्यों मेंहदी के रंग॥ —रहीम

अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं
शमयति परितापं छायया संश्रितानाम्। —कालिदास (मेघदूत)

वृक्ष अपने सिर पर गर्मी सहन करता है, परन्तु अपनी छाया से दूसरो की गर्मी से रक्षा करता है।

पर-उपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसंपति पाइ। —तुलसी (मानस-अरण्य)

Men resemble the gods in nothing so much as in doing good to their fellow creatures.

मनुष्य मानव के साथ केवल भलाई करके ही अपने को देवतुल्य बनाते हैं।
—सिसरो

रहिमन पर उपकार के, करत न पारैं बीच।
मांस दियो शिवि भूप ने, दीन्ह्यो हाड़ दधीच॥ —रहीम

न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किम्पुनर्यस्तथोच्चैः।
—कालिदास (मेघदूत)

अपने ऊपर उपकार करनेवाला मित्र यदि दैवयोग से अपने घर आ जाय तो नीचात्मा भी भक्तिभाव-पूर्वक उसका आदर करते है, उससे विमुख नहीं होते—उच्चात्माओं का तो कहना ही क्या है।

उपकुर्यान्निराकांक्षी यः स साधुरितीर्यते।
साकांक्षमुपकुर्याद्यः साधुत्वे तस्य को गुणः॥

जो निष्काम भाव से किसी का उपकार करता है, वही साधु कहलाता है, जो किसी वस्तु की इच्छा से उपकार करता है, उसकी साधुता में कौन गुण है? वह निरर्थक है। —अज्ञात

जो मनुष्य दूसरे का उपकार करता है वह अपना भी उपकार न केवल परिणाम में अपितु उसी कर्म में करता है, क्योंकि अच्छा कर्म करने का भाव ही स्वयं उचित पुरस्कार है। —सेनेका

सद्भावार्द्रं फलति न चिरेणोपकारो महत्सु।

—कालिदास

सज्जनो के ऊपर किये गये सद्भावसूचक उपकार का फल मिलते कुछ भी देर नहीं लगती।

दूसरो का उपकार करना मानो एक प्रकार से अपना ही कल्याण करना है।

—अज्ञात

He who wants to do good knocks at the gate, he who loves finds the gate open.

जो दूसरो पर उपकार जताने का इच्छुक है, वह द्वार खटखटाता है। जिसके हृदय में प्रेम है उसके लिए द्वार खुले हैं। —रवीन्द्र

मनुष्यजीवन की सफलता इसी में है कि वह उपकारी के उपकार को कभी न भूले। उसके उपकार से भी बढ़कर उसका उपकार कर दे।

—वेदव्यास (महा० आदि०)

उपकर्त्रारिणा सन्धिर्न मित्रेणापकारिणा।
उपकारापकारौ हि लक्ष्य लक्षणमेतयो ॥ —माघ

उपकार करनेवाले शत्रु से मेल करना चाहिए, अपकार करनेवाले मित्र से नहीं, क्योकि इन दोनो के उपकार और अपकार यही दो लक्षण जानने चाहिए, अर्थात् उपकार करे सो मित्र और अपकार करे सो शत्रु।

महान पुरुष जो उपकार करते हैं, उसका बदला नहीं चाहते। भला ससार जल बरसानेवाले बादलो का बदला किस तरह चुका सकता है?

—संत तिरुवल्लुवर

उपदेश

उपदेश चाहे जिसको नही देना चाहिए, समझ बूझ कर देना चाहिए। —अज्ञात

मर्द बायद कि गीरद अन्दर गोश
गर नाविश्तास्त पन्द बर दीवार। —सादी

मनुष्य को चाहिए कि यदि दीवार पर भी उपदेश लिखा हुआ मिले तो उसे ग्रहण करे।

Give every man thine ear, but few thy voice.

प्रत्येक का उपदेश सुनो, परन्तु अपना उपदेश कुछ ही व्यक्तियो को दो।

—शेक्सपियर

धर्म का उपदेश सुनने से कोई धर्मात्मा नही हो जाता, किन्तु उपदेशानुसार व्यवहार करने से मनुष्य धर्मात्मा हो सकता है। —अज्ञात

Admonish your friends privately but praise them openly.

अपने मित्रो को एकान्त में बुरा भला कहो परन्तु उनकी प्रशसा सबके सम्मुख करो। साइरस

परोपदेशवेलाया शिष्टा. सर्वे भवन्ति वै।
विस्मरन्तीह शिष्टत्वं स्वकार्ये समुपस्थिते ।। अज्ञात

दूसरे को उपदेश देने के समय सभी सज्जन हो जाते है, किन्तु जब स्वय वैसा आचरण करने का अवसर आ पड़ता है तो सज्जनता भूल जाते है।

पर उपदेश कुशल बहुतेरे । जे आचरहिं ते नर न घनेरे ।।

—तुलसी (मानस)

None preaches better than the ant, and she says nothing.

चीटी से अच्छा कोई उपदेश नही देता, और वह मौन रहती है।—फ्रेन्कलिन

उपद्रव

निर्विवेकतया बाल्यं, कोपोन्मादेन यौवनम्।
वृद्धत्वं विकलत्वेन, सदा सोपद्रव नृणाम्।। —अज्ञात

बचपन में अविवेकिता, जवानी में क्रोध-उन्माद और बुढापे में विकलता—इस प्रकार मनुष्य के पीछे सर्वदा एक न एक उपद्रव लगा रहता है।

उपनिवेशवाद

उपनिवेशवाद बीते युग की वस्तु है। —वाल्टर पी

उपनिषद्

उपनिषदें हमारी युग युग की सबसे मूल्यवान् धरोहर हैं। — रविशंकर शुक्ल

In the whole world there is no study so elevating as that of the Upanisads It has been the solace of my life It will be the solace of my death.

सम्पूर्ण विश्व मे उपनिषदो के समान जीवन को ऊँचा उठाने वाला कोई दूसरा अध्ययन का विषय नही है। इनसे मेरे जीवन को शान्ति मिली है, इन्ही से मुझे मृत्यु में भी शान्ति मिलेगी। —शोपेनहार

शोपेनहार के इन शब्दो के लिए यदि किसी समर्थन की आवश्यकता हो तो अपने जीवन भर के अध्ययन के आधार पर मैं प्रसन्नतापूर्वक उनका समर्थन करूँगा।

— मैक्समूलर

उपनिषदें सनातन दार्शनिक ज्ञान के मूल स्रोत है। वे केवल प्रखरतम बुद्धि का ही परिणाम नही हैं, अपितु प्राचीन ऋषियो की अनुभूति के फल हैं।

—पं० गोविन्दवल्लभ पन्त

यह सिद्धान्त ऐसे हैं जो एक प्रकार से अपौरुषेय ही हैं। यह जिनके मस्तिष्क की उपज हैं उन्हें निरे मनुष्य कहना कठिन है। — शोपेनहार

उपनिषद् वेद का ज्ञान-काण्ड है। यह चिरप्रदीप्त वह ज्ञानदीपक है, जो सृष्टि के आदि से प्रकाश देता चला आ रहा है और प्रलय-पर्यन्त पूर्ववत् प्रकाशित रहेगा। इसके प्रकाश में वह अमरत्व है, जिसने सनातन धर्म के मूल का सिंचन किया है। यह जगत्-कल्याणकारी भारत की अपनी निधि है। — स्वामी ब्रह्मानन्द

उपनिषदो के भीतर जो दार्शनिक कल्पना है वह भारत में तो अद्वितीय है ही, सम्भवत सम्पूर्ण विश्व में अतुलनीय है। — पाल डायसन

मानवीय चिन्तन के इतिहास में पहले-पहल बृहदारण्यक उपनिषद् में ही ब्रह्म अथवा पूर्ण तत्त्व को ग्रहण करके उसकी यथार्थ व्यञ्जना की गयी है। — मैकडानेल

व्यक्तिगत रूप से मैं उपनिषदो को मानवचेतना का सर्वोच्च फल मानती हूँ।

—डा० एनी बेसेन्ट

Even the loftiest philosophy of the Europeans appears in comparison with the abundant light of oriental idealism like a feeble Promethsan spark in full flood of the heavenly glory of the noonday sun—faltering and feeble and ever ready to be extinguished.

(उपनिषदो में वर्णित) पूर्वीय अध्यात्मवाद के प्रचुर प्रकाशपुज की तुलना में यूरोपवासियो का उच्चतम तत्त्वज्ञान ऐसा ही लगता है, जैसे मध्याह्न-सूर्य के व्योम-व्यापी प्रताप की पूर्ण प्रखरता में टिमटिमाती हुई अनलशिखा की कोई आदि किरण, जिसकी अस्थिर और निस्तेज ज्योति ऐसी हो रही हो मानो अव वुझी कि तव वुझी।

—फ्रेडरिक शेलिंग

उपनिषदो में वे सिद्धान्त स्पष्ट रूप से दिये हुए है, जिनके आधार पर कोई भी विचारशील मनुष्य अपने लिए कर्तव्य का निश्चय कर सकता है। इस पथ पर चलने-वाला अपने लिए तो नि:श्रेयस का द्वार खोल ही लेगा, उसके तप:पूत व्यक्तित्व के प्रकाश में मानवसमाज भी अभ्युदय-पथ पर आरूढ़ हो सकेगा। —डा० सम्पूर्णानन्द

उपन्यास

Novels are sweet. All people with healthy literary appetites love them.

उपन्यास मिठाइयाँ हैं। साहित्य के भूखे स्त्री-पुरुष इनकी चाह में रहते हैं।

—थैकेरे

Novels do not force their readers to sin, but only instruct them how to sin.

उपन्यास अपने पाठक को पाप करने को वाध्य नही करते, लेकिन केवल वताते है कि पाप कैसे किया जाता है। —जमीरसन

उपवास

अग्नि आहार को पचाती है और उपवास दोषों को पचाता है अर्थात् नष्ट करता है। —आयुर्वेद

उपवास शुद्धि का एक जवरदस्त सावन है और मानवसमाज में उपवास के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान अवश्य होना चाहिए। —महात्मा गांधी

सच्चे उपवास का अर्थ है कि हम अपनी व्यक्तिगत स्वार्थ-पूर्ण इच्छाओं और क्रिया-कलापों से मुक्त हो जायँ। —स्वामी रामतीर्थ

उपवास सत्याग्रह के शस्त्रागार में महान् शक्तिशाली अस्त्र है। इसको हर कोई नही चला सकता। केवल शारीरिक योग्यता इसके लिए कोई योग्यता नही। यदि ईश्वर में जीती-जागती श्रद्धा न हो तो दूसरी योग्यताएँ बिलकुल निरुपयोगी है।

—महात्मा गांधी

उपवास शब्द का अर्थ है दुर्गुणो एव दोषो से बचकर आत्मा अथवा गुणो के साथ वास अर्थात् निवास। अनुभव से देखा जा सकता है कि पाप अथवा कलुषित भावनाओ से मुक्त होकर चित्तवृत्तियो को आत्मा अथवा सद्गुणो में सन्निविष्ट करने की प्रेरणा उपवास के समय सर्वाधिक होती है। अज्ञात

त्यागश्च सनतिश्चैव शश्यते तप उत्तमम्।
सदोपवासी च भवेद् ब्रह्मचारी सदा भवेत्॥ —महाभा०

श्रेष्ठ पुरुषो के मत में त्याग और विनय ही उत्तम तप है। इनका पालन करने वाला मनुष्य नित्य उपवासी और सदा ब्रह्मचारी है।

यदि शारीरिक उपवास के साथ-साथ मन का उपवास न हो तो वह दम्भपूर्ण और हानिकारक हो सकता है। —महात्मा गांधी

धार्मिक आन्दोलन की सफलता उसके समर्थको की बौद्धिक शक्ति पर निर्भर नही करती, एकमात्र आध्यात्मिक शक्ति पर ही सफलता निर्भर करती है, और उस शक्ति के बढाने में उपवास ही अत्यन्त सुन्दर साधन है। —महात्मा गांधी

असकृज्जलपानाच्च सकृत् ताम्बूलभक्षणात्।
उपवास प्रणश्येत दिवा-स्वापाच्च मैथुनात्॥ —अज्ञात

एक से अधिक बार पानी पी लेने, एक बार भी ताम्बूल खा लेने, दिन में सो लेने तथा स्त्रीप्रसग से उपवास का फल नष्ट हो जाता है।

अन्तरा प्रातराश च सायमाश तथैव च।
सदोपवासी स भवेद् यो न भुङ्क्तेऽन्तरा पुन॥

—वेदव्यास (महा० शान्ति०)

जो प्रतिदिन प्रात काल के सिवा फिर शाम को ही भोजन करे और बीच में कुछ न खाय, वह नित्य उपवास करनेवाला होता है।

उपहार

The best thing to give to our enemy is forgiveness; to an opponent, tolerance; to a friend, your heart; to your child, a good example, to a father, deference; to your mother, conduct that will make her proud of you; to yourself, respect; to all men, charity.

शत्रु को उपहार देने योग्य सर्वोत्तम वस्तु है क्षमा, विरोधी को सहनशीलता; मित्र को अपना हृदय, शिशु को उत्तम दृष्टान्त, पिता को आदर, माता को अपना ऐसा आचरण जिससे वह तुम पर गर्व करे; अपने को प्रतिष्ठा; और सभी मनुष्यो को उपकार। —बालफोर

That which is given with pride and ostentation is rather ambition than a bounty.

अभिमान और आडम्बर के साथ दी हुई वस्तु उदारता की नही वरन् महत्वाकांक्षा की सूचक है। —सेनेका

The manner of giving shows the character of the giver, more than the gift itself.

किसी वस्तु के देने का तरीका उपहार से अधिक उपहार देनेवाले के चरित्र को बताता है। —लवाटर

धूल स्वयं अपमान सहन कर लेती है, और बदले में वह पुष्पो का उपहार देती है। —रवीन्द्र

The heart of the giver makes the gift dear and precious.

देनेवाले का हृदय उपहार को प्रिय और मूल्यवान् बना देता है। —लूथर

Love's gift cannot be given, it waits to be accepted.

प्रेम के उपहार दिये नही जाते, वे स्वीकार किये जाने की प्रतीक्षा करते है। —रवीन्द्र

उपहास

समय परिवर्तन का धन है, परन्तु घड़ी उसका उपहास करती है। उसे केवल परिवर्तन के रूप में दिखाती है, धन के रूप में नही। —रवीन्द्र

मित्रो का उपहास करना उनके पावन प्रेम को खण्डित करना है। —अज्ञात

मृत्यु. शरीरगोप्तारं धनरक्षं वसुंधरा।
दुश्चारिणी च हसति स्वपतिं पुत्रवत्सलम्॥ —अज्ञात

शरीर की रक्षा करनेवाले को मृत्यु, धन की रक्षा करनेवाले को पृथ्वी और पुत्र का दुलार करनेवाले अपने पति को व्यभिचारिणी स्त्री हँसती है।

उपाधि (पदवी)

The three highest titles that can be given to a man are those of a martyr, hero, saint.

तीन सब से बड़ी उपाधियाँ जो मनुष्य को दी जा सकती हैं यह हैं; शहीद, वीर और सन्त। —ग्लेडस्टन

It is not titles that reflect honour on men, but men on their titles.

उपाधि मनुष्य के सम्मान की सूचक नही है वरन् मनुष्य ही उपाधि के सम्मान का सूचक है। —मैकियावेली

उपेक्षा

प्रेम सब कुछ सह लेता है परन्तु उपेक्षा नही सह सकता।
—अज्ञात

In persons grafted in a serious trust negligence is a crime

ऐसे व्यक्तियो द्वारा की गयी उपेक्षा अपराध है जिन पर गम्भीर विश्वास किया जाता है। —शेक्सपियर

उपेक्षाभाव मनुष्य के लिए निकृष्टतर व्यवहार है। वह गालियाँ सह सकता है, मार खा सकता है परन्तु उपेक्षा नही सह सकता। —अज्ञात

उषा

विगत रात्रि के तूफान ने आज के प्रभात को स्वर्णमयी शान्ति का ताज पहना दिया है। —रवीन्द्र

सूर्य, प्रकाश का सादा वेश धारण किये हुए है। बादलो की वेश-भूषा कैसी रंगीली है। —रवीन्द्र

प्रभात के पहले प्रकाश और अंधकार में परस्पर द्वन्द्व-युद्ध हुआ। इस युद्ध के परिणामस्वरूप प्रकाश की विजय हुई, और अव वह प्राची के प्रांगण में खड़ा मुस्करा रहा है। —अज्ञात

रात्रि का अंधकार एक थैला है जिसमें से उषा का स्वर्ण फूटकर निकला पड़ता है। —रवीन्द्र

ऊसर

ममता-रत सन ज्ञान-कहानी। अति लोभी सन विरति वखानी॥
क्रोधिहि शम कामिहि हरिकथा। ऊसर बीज वये फल यथा॥
—तुलसी (मानस-सुन्दर)

जाति-सेवा ऊसर की खेती है। —प्रेमचन्द

ऋण

Neither a borrower nor a lender be, for loan oft loses both itself and friend, and borrowing dulls the edge of husbandry.

न हो ऋणी और न हो महाजन; क्योंकि ऋण दिया हुआ धन अपने को भी खो देता है और देनेवाले मित्रो को भी। और ऋण लेने की आदत मितव्ययिता की धार को मोटी कर देती है। —शेक्सपियर

Who goeth a-borrowing goeth a-sorrowing.
जो ऋण लेने जाता है, वह दुःख मोल लेने जाता है। —टसर

एकता

एकता का किला वड़ा प्रौढ़ है। इसके भीतर रहकर कोई प्राणी दुःख नही भोगता। —अज्ञात

वहूनामल्पसाराणां समवायो हि दुर्जय।
तृणैरावेष्ट्यते रज्जु वध्यन्ते तेन दन्तिन.॥
वहुत-से क्षुद्र और कमजोर लोगो की एकता भी अजेय वन जाती है। कमजोर तिनको से वनायी गयी रस्सी वड़े-वड़े हाथियो को भी वाँध लेती है। —अज्ञात

परस्पर विरोधी मतों में एकता कराने से वढकर दुष्कर कार्य और नहीं है। —ओवेन डिक्सन

मोरचगारा चु वुवद इत्तफाक।
शेरेंजिया रा वदरारन्द पोस्त॥ —सादी

यदि चिड़ियाँ एका कर लें तो शेर की खाल खींच सकती है।

मानवजाति को एकता का पाठ चीटियो से सीखना चाहिए। —अज्ञात

जब तक जीव-मात्र के साथ एकता महसूस न हो तब तक प्रार्थना, उपवास, जप-तप सब थोथी बातें है। —महात्मा गांधी

सबको हाथ की पाँच उँगलियो की तरह रहना चाहिए। हाथ की पाँचो उँगलियाँ समान थोडे ही है? कोई छोटी है, कोई बडी, लेकिन हाथ से किसी चीज को उठाना होता है तब पाँचो इकट्ठा होकर उठाती है। है तो पाँच लेकिन काम हजारो का कर लेती है, क्योकि उनमें एका है। —विनोबा

एकांगी

मनुष्य का जीवन इतना एकाङ्गी नही कि उसे हम केवल अर्थ, केवल काम या ऐसी ही किसी एक कसौटी पर परख कर सम्पूर्ण रूप से खरा या खोटा कह सकें। कपटी से कपटी लुटेरा भी अपने साथियो के साथ जितना सच्चा है उसे देखकर महान् सत्यवादी भी लज्जित हो सकता है। कठोर से कठोर अत्याचारी भी अपनी संतान के प्रति इतना कोमल है कि कोई भावुक भी उसकी तुलना में न ठहरेगा।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

एकांत

एकान्तवास शोक-ज्वाला के लिए समीर के समान है। —प्रेमचन्द

The grass seeks her crowd in the earth,
The tree seeks his solitude of the sky

दूब पृथ्वी पर अपनी सहचरियो की खोज करती है, वृक्ष आकाश में एकान्त का अनुसन्धान करते है। —रवीन्द्र

Conversation enriches the understanding, but solitude is the school of genius

वार्तालाप वुद्धि को मूल्यवान बना देता है, परन्तु एकान्त प्रतिभा की पाठशाला है। —गिबन

Solitude shows us what we should be; society shows us what we are.

एकान्त हमें वताता है कि हमें कैसा होना चाहिए, समाज हमें वताता है कि हम क्या है। —सिसिल

अपने हृदय की नीरवता में मुझे निर्जन संध्या के उच्छ्वास का आभास होता है। —रवीन्द्र

Solitude is sometimes best society.

एकान्त प्राय. सर्वोत्तम संगति है। —मिल्टन

O solitude! where are the charms
That sages have seen in thy face?

हे एकान्त! तुम्हारा वह आकर्षण कहाँ है जिसे ऋपियों ने तुममें देखा है? —काउपर

एकान्त में रहना ही महान आत्माओ का भाग्य है। —शोपेनहार

एकाग्रता

अपनी अभिलापाओ को वगीभूत कर लेने के वाद मन को जितनी देर तक चाहो एकाग्र किया जा सकता है। —स्वामी रामतीर्थ

तुम्हारी विजयगक्ति है—मन की एकाग्रता। यह गक्ति मनुष्य-जीवन की समस्त ताकतो को समेटकर मानसिक क्राति उत्पन्न करती है। —अज्ञात

एकाग्रता आवेग को पवित्र और गान्त कर देती है, विचारवारा को गक्तिगाली और कल्पना को स्पष्ट करती है। —स्वामी शिवानन्द

तुम एकाग्रता द्वारा उस अनंत गक्ति के अटूट भडार के साथ मिल जाते हो, जिससे इस व्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई है। —अज्ञात

पवित्रता के विना एकाग्रता का कोई मूल्य नहीं। —स्वामी शिवानन्द

मन में एकाग्र शक्ति प्राप्त करनेवाले मनुष्य संसार में किसी समय असफल नही होते। —अज्ञात

संसार के प्रत्येक कार्य में विजय पाने के लिए एकाग्रचित्त होना आवश्यक है। जो लोग चित्त को चारो ओर विखेरकर काम करते है उन्हें सैकड़ो वर्पो तक सफलता का मूल्य मालूम नही होता। —मार्ले

ऐक्य

हार्दिक ऐक्य के विना दिमागी ऐक्य का उपदेश देना मानो आसमान से तारे तोड़ना है। —रस्किन

ऐक्य हमारी आत्मा का गुण है। —स्वेट मार्डेन

ऐब

लोगों के छिपे हुए ऐब जाहिर मत करो। इससे उनकी इज्जत तो जरूर घट जायगी, मगर तुम्हारा तो एतबार ही उठ जायगा। —सादी

चुप्पा ऐब वह चिकना घडा है, जिस पर किसी बात का असर नही होता। —प्रेमचन्द

ऐश्वर्य

ऐश्वर्य उपाधि में नही वरन् इस चेतना में है कि हम उसके योग्य है। —अरस्तू

स्थान के प्राप्त होने से कभी वास्तविक ऐश्वर्य नही मिलता और न उपाधि के वापस ले लेने पर कभी समाप्त हो जाता है। —मेसिंजर

ऐश्वर्य ईश्वर का विशेष गुण है। —विनोबा

ऐश्वर्य के मद से मस्त व्यक्ति ऐश्वर्य के भ्रष्ट होने तक प्रकाश में नही आता। —जर्मन कहावत

ओम्

अपने भीतर की परम निधि को पाने के लिए और स्वर्ग के साम्राज्य का ताला खोलने के लिए इसी ॐ की ताली को काम में लाना होगा। —स्वामी रामतीर्थ

जैसे स्वभावत रोगी मनुष्य फैले हुए वृक्ष की शीतल छाया ढूंढता है, वैसे ही हर एक व्यक्ति व्यथा की हालत में स्वभावत इस अक्षर ॐ का आश्रय लेता है। —स्वामी रामतीर्थ

ॐ समग्र विश्व को ढके हुए है, सारे ससार का एक भी पदार्थ ऐसा नही है जो ॐ के बाहर हो। —स्वामी रामतीर्थ

ॐ—यह ध्वनि उस सुन्दर वृक्ष के तुल्य है जो प्रचण्ड सूर्य के ताप से झुलसे हुए रोगी मनुष्य को शीतल छाया प्रदान करता है। —स्वामी रामतीर्थ

सम्पूर्ण वेदान्त, वरन् हिन्दुओं का सम्पूर्ण दर्शन-शास्त्र केवल इस ॐ अक्षर की व्याख्या है। —स्वामी रामतीर्थ

ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म। —उपनिषद्

ॐ यही एक अक्षर चराचर में व्याप्त ब्रह्म का दूसरा पर्याय है।

औरत

औरत मर्द की सबसे बड़ी कमजोरी है। जो मर्द औरत की दुनियां में जाता है वह बर्बाद हो जाता है, और दुनिया उसे समुद्र में डूबे हुए जहाज की तरह भूल जाती है। —अज्ञात

औरत मर्द की सबसे बड़ी ताकत है। मर्द की जिन्दगी अधूरी है, औरत उसे पूर्ण करती है। मर्द की जिन्दगी अँधेरी है, औरत उसे रोशनी देती है; मर्द की जिन्दगी फीकी है, औरत उसमें रौनक लाती है। औरत न हो तो मर्द की दुनियां वीरान हो जाय और आदमी अपना गला घोटकर मर जाय। —अज्ञात

खूबसूरत औरत रत्न है, अच्छी औरत खजाना है। —सादी

अगर औरत स्वयं आत्मत्याग और पवित्रता की मूर्ति नहीं, तो वह कुछ भी नहीं है। —महात्मा गांधी

There is a woman at the beginning of all great things.

सभी महान कार्यों के प्रारम्भ में औरत का हाथ रहा है। —लामर्टिना

औरतें मर्दों से अधिक बुद्धिमती होती हैं; क्योंकि वे जानती कम, समझती अधिक हैं। —जेम्स स्टीफेन

कचहरी

कचहरी प्रोत्साहन की क्षेत्रभूमि है। यहाँ रिश्वत लेना और देना दोनों पाप नहीं समझे जाते। —अज्ञात

कचहरी-अदालत उसी के साथ है, जिसके पास पैसा है।

—प्रेमचन्द (गो-दान)

कंचन

यथा विहंगास्तरुमाश्रयन्ति,
नद्यो यथा सागरमाश्रयन्ति।
यथा तरुण्य पतिमाश्रयन्ति,
सर्वे गुणा काञ्चनमाश्रयन्ति॥ —अज्ञात

जैसे पक्षीगण वृक्ष का आश्रय लेते हैं, नदियाँ समुद्र का आश्रय लेती हैं और युवतियाँ पति का आश्रय लेती हैं, उसी तरह सभी गुण कांचन का आश्रय लेते हैं।

कंजूस

A miser is as furious about a half-penny as the man of ambition about the conquest of a kingdom.

कंजूस आदमी एक पाई के लिए उतना ही उत्तेजित हो जाता है, जितना कि महत्त्वाकांक्षी एक राज्य की विजय के लिए। —एडम स्मिथ

कंजूस लोग अपने धन को न तो खाते हैं, न किसी अन्य कार्य में खर्च करते हैं और न किसी को दान देते हैं। उनका धन आखिर में चोर ही ले जाते हैं। —अज्ञात

कनक

कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वहि खाये बौराय जग, यहि पाये बौराय॥ —बिहारीलाल

As the touch-stone tries gold so gold tries men.

जिस प्रकार कसौटी सोने को परखती है उसी प्रकार सोना मनुष्यों को परखता है। —चिलो

कनकहु पुनि पाषाण ते होई। जारेहु सहज न परिहरि सोई॥ —तुलसी

कनक-कामिनी

चली चलौं सब कोइ कहै, पहुँचे बिरला कोय।
एक कनक और कामिनी, दुरगम घाटी दोय॥ —कबीर

कनक कामिनी देखि कै, तू मति भूल सुरंग।
बिछुरन मिलन दुहेलरा, केंचुलि तजै भुजंग॥ —कबीर

तुलसी या संसार में, कौन भयो समरत्थ।
इक कंचन इक कुचन पर, को न चलायो हत्थ॥ —तुलसी

कनक और कामिनी को त्यागे विना आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त नही हो सकती।
—रामकृष्ण परमहंस

कपट

कपट सार सूची सदृस, बाँवि वचन परवास।
करि दुराउ चह चातुरी, सो सठ तुलसीदास॥ —तुलसी

कविरा तहाँ न जाइए, जहाँ कपट का हेत।
जानो कली अनार की, तन राता मन स्वेत॥ —कबीर

हेत प्रीति से जो मिलै, ताको मिलिए धाय।
अंतर राखे जो मिलै, तासो मिलै वलाय॥ —कबीर

कपटी

हृदय कपट वर वेष धरि, वचन कहहिं गढि छोलि।
अव के लोग मयूर ज्यो, क्यों मिलिए मन खोलि॥ —तुलसी

कपड़ा

कपड़ा अंग को ढकने के लिए है, ठंड-गर्मी से उसकी रक्षा करने के लिए है, उसे सजाने के लिए नही है। —महात्मा गांधी

अपने पुराने कपड़े भी मँगनी के कपड़ो से अच्छे है। —सादी

Eat to please thyself, but dress to please others.

अपने को प्रसन्न करने के लिए भोजन करो, दूसरो को प्रसन्न करने के लिए कपड़ा पहनो। —फ्रैंकलिन

No man is esteemed for gay garments but by fools and women.

भड़कीले कपड़ो से मनुष्य मूर्खो और स्त्रियो के अतिरिक्त और किसी का आदर-पात्र नहीं वन सकता। —वाल्टर रैले

कमजोरी

कमजोरी का इलाज कमजोरी की चिन्ता करना नही पर शक्ति का विचार करना है। —स्वामी विवेकानन्द

To be week is miserable

कमजोर होना दुखी होना है। —मिल्टन

कमजोरी कभी न हटनेवाला बोझ और यत्रणा है, कमजोरी ही मृत्यु है। —स्वामी विवेकानन्द

Some of our weaknesses are born in us, others are the result of our education, it is a question, which of the two gives us most trouble.

हमारी कुछ कमजोरियाँ पैदायशी होती है, और अन्य हमारी शिक्षा का परिणाम है। प्रश्न यह है कि इन में से कौन अधिक दुखदायी है।—गेटे

कमाई

रमन्ता पुण्या लक्ष्मीर्या पापीस्ता अनीनशम्। —अथर्ववेद

पुण्य की कमाई मेरे घर की शोभा बढाये, पाप की कमाई को मैंने नष्ट कर दिया है।

कर

यथा गौदुह्यते काले पाल्यते च तथा प्रजा
सिच्यते चीयते चैव लता पुष्पफलप्रदा।

—अज्ञात

गाय समय पर ही दुही जाती है, उसी तरह राजा प्रजा का पालन करते हुए समय पर उससे लाभ (कर) उठाता है। जैसे लताए बराबर सींची जाती है किन्तु उचित समय पर ही उनके फल-फूल चुने जाते है।

पाके पकए विटप दल, उत्तम मध्यम नीच।
फल नर लहे नरेस त्यो, करि विचार मन बीच।। —तुलसी

गोपालेन प्रजाधेनो वित्तदुग्ध शनैं शनैं।
पालनोत्पोषणाद् ग्राह्य न्याय्या वृत्ति समाचरेत्।। —अज्ञात

जिस तरह ग्वाला गाय को धीरे धीरे दुहता है और उसका पालन-पोषण भी करता रहता है, उसी प्रकार राजा को भी प्रजारूपी धेनु से धीरे धीरे वित्तरूपी दूध निकालना चाहिए और उसका पालन-पोषण भी करना चाहिए। कर के रूप में प्रजा का वित्त ग्रहण कर उसके बदले उसके साथ उचित व्यवहार करना चाहिए।

करुणा

जब हमारे करुणा के नेत्र खुल जाते है तो व्यक्ति अपने को दूसरो में और दूसरो को अपने में देख सकने में समर्थ हो जाता है। —राजगोपालाचारी

मनुष्य के अन्तःकरण में सात्त्विकता की ज्योति जगानेवाली यही करुणा है।

—रामचन्द्र शुक्ल

करुणा में शीतल अग्नि होती है जो क्रूर से क्रूर व्यक्ति का हृदय भी आर्द्र कर देती है। —सुदर्शन

जो करुणा हमें साधारण जनो के वास्तविक दुःख के परिज्ञान से होती है, वही करुणा हमें प्रियजनो के सुख के अनिश्चय मात्र से होती है। —रामचन्द्र शुक्ल

सामाजिक जीवन की स्थिति और पुष्टि के लिए करुणा का प्रसार आवश्यक है।

—रामचन्द्र शुक्ल

स्त्री-हृदय में करुणा अमृत बन कर बहा करती है। —अज्ञात

करुणा अपना बीज अपने आलम्बन या पात्र में नही फेंकती अर्थात् जिस पर करुणा की जाती है वह बदले में करुणा करनेवाले पर भी करुणा नही करता—जैसा कि क्रोध और प्रेम में होता है—बल्कि कृतज्ञ होता अथवा श्रद्धा या प्रीति करता है।

—रामचन्द्र शुक्ल

आँसू करुणा की बूंद है। —बायरन

कर्ज (दे० 'ऋण')

कर्ज दी गयी पूंजी ही सारे अनर्थो की जड़ है और अन्यायमूलक युद्धो की जननी है। —रस्किन

कर्ज अथाह सागर है। —कारलायल

Debt is to a man what the serpent is to the bird, its eye fascinates, its breath poisons, its coil crushes both sinew and bone

कर्ज मनुष्य के लिए वैसा ही है जैसा पक्षी के लिए सर्प। उसके नेत्र लुभाते हैं, उसकी श्वास विषमय बनाती है। उसकी लपेट मासपेशियो को चकनाचूर कर देती है। —बुलवर लिटन

कर्त्तव्य

जो काम अभेद-भावना की ओर ले जाता है, वह सत्कर्म है, कर्त्तव्य है, करणीय है। —डा० सम्पूर्णानन्द

आत्मज्ञान का सम्पादन करना और आत्मकेन्द्र में स्थिर रहना मनुष्य मात्र का सबसे पहला और प्रधान कर्त्तव्य है। —स्वामी रामतीर्थ

जो कार्य आपके सामने है उसे शीघ्रता एव निष्कपट भाव से करना ही कर्त्तव्य है—यही आज के अधिकार की पूर्ति है। —गेटे

ईश्वर शान्ति ही चाहता है, और ईश्वर की इच्छाके अनुसार चलना मनुष्य का परम कर्त्तव्य है। —टाल्स्टाय

वैर लेना या करना मनुष्य का कर्त्तव्य नही है—उसका कर्त्तव्य क्षमा है। —महात्मा गाधी

The reward of one duty done is the power to fulfil another.
एक कर्त्तव्य-पूर्ति का पुरस्कार है दूसरे कर्त्तव्य को पूर्ण करने की योग्यता। —जार्ज इलियट

बुराई से असहयोग करना मानव का पवित्र कर्त्तव्य है। —महात्मा गाधी

कर्त्तव्य कोई ऐसी वस्तु नही जिसको नाप-तोलकर दिया जाय। —शरत्चन्द्र (जागरण)

जिस प्रकार दूसरो के अधिकार की प्रतिष्ठा करना मनुष्य का कर्त्तव्य है, उसी प्रकार अपना मान धारण रखना भी उसका कर्त्तव्य है। —स्पेन्सर

वीर होने के लिए मनुष्य को अपने कर्त्तव्य से अधिक काम करना होता है। —रेनान

मानव की सेवा करना मानव का सर्वप्रथम कर्त्तव्य है। —विनोबा

कर्त्तव्यनिष्ठा

ससार में जो बड़े लोग हो गये है, जिनकी कीर्ति से मनुष्यजाति का इतिहास प्रकाशित है, यह सब उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा का ही फल है। —अज्ञात

जिन जातियो में सच्ची कर्त्तव्यनिष्ठा पायी जाती है वह ससार में सदा संपन्न अवस्था में रहती है और सब से सम्मान प्राप्त करती है। —अज्ञात

कर्म

जहाँ देह है वहाँ कर्म तो है ही, उससे कोई मुक्त नही है। तथापि शरीर को प्रभुमन्दिर बनाकर उसके द्वारा मुक्ति प्राप्त करनी चाहिए। —महात्मा गांधी

Action may not always bring happiness, but there is no happiness without action.

कर्म सदैव सुख न ला सके परन्तु कर्म के बिना सुख नही मिलता।—डिजरायली

कर्म ही मनुष्य के जीवन को पवित्र और अहिंसक बनाता है। —विनोबा

मनुष्य के कर्म ही उसके विचारों की सबसे अच्छी व्याख्या है। —लाक

करम प्रधान विस्व करि राखा।
जो जस करइ सो तस फलु चाखा॥ —तुलसी (मानस)

कर्म की परिसमाप्ति ज्ञान में और कर्म का मूल भक्ति अथवा सम्पूर्ण आत्म-समर्पण में है। —अरविन्द घोष

Great actions speak of great minds.

महान् कर्म महान् मस्तिष्क को सूचित करते है। —जान फ्लीचर

जीव कर्मवश दुख सुख भागी। —तुलसी (मानस)

वही कार्य सबसे अच्छा है जिससे बहुसंख्यक लोगो को अधिक से अधिक आनन्द मिल सके। —फ्रांसिस हचिसन

एक कर्म है बोना उपजै बीज बहुत।
एक कर्म है भूजना उदय न अंकुर सूत॥ —कबीर

Action springs out of what we fundamentally desire.

हम जिस वस्तु की मूलतः कामना करते है उसी से कर्म की उत्पत्ति होती है।

—एच० ए० ओवरस्ट्रीट

खेल में हम सदा ईमानदारी का पल्ला पकड़कर चलते है, पर अफसोस है कि कर्म में हम इस ओर ध्यान तक नहीं देते। —रस्किन

कर्म के प्रवाह में मन की सारी विकृतियाँ दूर हो जाती है। —अज्ञात

There is nothing more tragic in life than the utter impossibility of changing what you have done.

जीवन में अपने किये हुए कर्म को परिवर्तित करने की पूर्ण असम्भाव्यता से अधिक दुःखमय और कुछ नहीं है। —गाल्संवर्दी

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

कर्म में ही तुझे अधिकार है, उससे उत्पन्न होनेवाले फलों में कदापि नहीं। कर्म का फल तेरा हेतु न हो। कर्म न करने का भी तुझे आग्रह न हो।

किसी कार्य को खूबसूरती से करने के लिए मनुष्य को उसे स्वयं करना चाहिए।
—नेपोलियन

There is a perennial nobleness and even sacredness in work
कर्म में निरंतर श्रेष्ठता और पवित्रता भी होती है। —कारलाइल

Action speaks louder than words
कर्मों की ध्वनि शब्दों से ऊँची होती है। —महाजन

जब तुम जग में आये थे, जग हँसमुख तुम रोये।
ऐसी करनी कर चलो, तुम हँसमुख जग रोये॥ —अज्ञात

परेषामात्मनश्चैव योऽविचार्य बलाबलम्।
कार्यायोत्तिष्ठते मोहादापदं स समीहते॥

अपनी तथा शत्रुओं की शक्ति और निर्बलता का विचार किये बिना ही जो व्यक्ति पागलपन से ऊल-जलूल काम करने लगता है वह विपत्तियों को न्योता देता है।

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः॥

फल की इच्छा छोड़कर निरन्तर कर्तव्य-कर्म करो। जो फल की आकांक्षा छोड़कर कर्म करते हैं उन्हें अवश्य मोक्ष-पद प्राप्त होता है। —श्रीकृष्ण (गीता)

I multiplied myself by my activity.
मैंने कर्म से ही अपने को बहुगुणित किया है। —नेपोलियन

Action is eloquence.
कर्म में वाक्शक्ति होती है। —शेक्सपियर

कर्म प्रधान सत्य कह लोगू। —तुलसी (मानस)

Deeds are fruits, words are leaves.
कर्म फल है एवं शब्द पत्तियाँ। —कहावत

Good actions are the invisible hinges of the doors of heaven.
शुभ कर्म स्वर्ग के दरवाजे के अदृश्य कब्जा हैं। —विक्टर ह्यूगो

कर्म वह आइना है जो हमारा स्वरूप हमें दिखा देता है। अत हमें कर्म का एहसानमंद होना चाहिए। —विनोबा

Only the actions of the just smell sweet and blossom in the dust.
सच्चे मनुष्यों के ही कर्म मधुर सुगन्ध देते हैं, और मिट्टी में भी खिलते हैं। —शरले

केवल दृढ़-इच्छाप्रसूत कर्म ही सुन्दर हो सकता है। —रस्किन

What is done can not be undone
किये हुए कर्म को मिटाया नहीं जा सकता। —शेक्सपियर

करै जो कर्म पाव फल सोई।
निगम नीति अस कह सब कोई।। —तुलसी (मानस)

कर्मभूमिरियं ब्रह्मन्।
यह धरती ही हमारे कर्मों की भूमि है। —वेदव्यास (महा०)

काम का आरंभ न करो और अगर काम शुरू कर दिया है तो उसे पूरा करके छोड़ो। —विनोबा

Trust no future, however pleasant,
Let the dead past bury its dead,
Act-act in the living present,
Heart within and god overhead

भविष्य चाहे कितना ही सुन्दर हो विश्वास न करो—भूतकाल की भी चिन्ता न करो, जो कुछ करना है उसे अपने पर और ईश्वर पर विश्वास रखकर वर्तमान में करो। —लांगफेलो

कर्मायत्तं फलं पुंसां बुद्धिः कर्मानुसारिणी।
तथापि सुधियश्चार्याः सुविचार्यैव कुर्वते॥

फल मनुष्य के कर्म के अधीन है, बुद्धि कर्म के अनुसार आगे बढ़नेवाली है, तथापि विद्वान् और महात्मा लोग अच्छी तरह से विचार कर ही कोई कर्म करते हैं।

—चाणक्य

मनः कृतं कृतं मन्ये न शरीरकृतं कृतम्।
येनैवालिंगिता कान्ता तेनैवालिंगिता सुता॥

मन से किया गया कर्म ही यथार्थ होता है, शरीर से किया गया नहीं। जिस शरीर से पत्नी को गले लगाया जाता है उसी शरीर से पुत्री को भी गले लगाते हैं, पर मन का भाव भिन्न होने के कारण दोनों में अन्तर रहता है। —अज्ञात

"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समाः।"

इस धरती पर कर्म करते करते सौ साल तक जीने की इच्छा रखो क्योंकि कर्म करनेवाला ही जीने का अधिकारी है। जो कर्म-निष्ठा छोड़कर भोग-वृत्ति रखता है वह मृत्यु का अधिकारी बनता है। —वेद

कर्म-फल

"फलासक्ति छोड़ो और कर्म करो", "आसक्तिरहित होकर कर्म करो", "निष्काम होकर कर्म करो" यह गीता की वह ध्वनि है जो भुलाई नहीं जा सकती। जो कर्म छोड़ता है वह गिरता है। कर्म करते हुए भी जो उसका फल छोड़ता है वह चढ़ता है।

—महात्मा गांधी

करता था तो क्यों किया, अब करि क्यों पछिताय।
बोया पेड बबूल का, आम कहाँ से खाय॥ —अज्ञात

सुभ अरु असुभ कर्म अनुहारी।
ईस देइ फल हृदय बिचारी॥ —तुलसी (मानस)

निष्काम कर्म ईश्वर को ऋणी बना देता है और ईश्वर उसे सूद सहित वापस करने के लिए बाध्य हो जाता है। —स्वामी रामतीर्थ

यथा तैलक्षयाद् दीपः प्रशान्तिमनुगच्छति।
तथा कर्मक्षयाद् दैवं प्रशान्तिमनुगच्छति॥

जैसे तेल समाप्त हो जाने से दीपक बुझ जाता है, उसी प्रकार कर्म के क्षीण हो जाने पर दैव भी नष्ट हो जाता है। —वेदव्यास (महा० अनु०)

शुभेन कर्मणा सौख्यं दुःखं पापेन कर्मणा।
कृत फलति सर्वत्र नाकृतं भुज्यते क्वचित् ॥

(वेदव्यास महा० अनु०)

शुभ कर्म करने से सुख और पाप कर्म करने से दुःख मिलता है। अपना किया हुआ कर्म सर्वत्र ही फल देता है। विना किये हुए कर्म का फल कही नही भोगा जाता।

सुशीघ्रमपि धावन्तं विधानमनुधावति।
शेते सह शयानेन येन येन यथा कृतम् ॥
उपतिष्ठति तिष्ठन्तं गच्छन्तमनुगच्छति।
करोति कुर्वतः कर्मच्छायेवानुविधीयते ॥

वेदव्यास महा० (शान्ति०)

जिस मनुष्य ने जैसा कर्म किया है, वह उसके पीछे लगा रहता है। यदि कर्त्ता पुरुष शीघ्रतापूर्वक दौड़ता है तो वह भी उतनी ही तेजी के साथ उसके पीछे जाता है। जब वह सोता है तो उसका कर्मफल भी उसके साथ ही सो जाता है। जब वह खड़ा होता है तो वह भी पास ही खड़ा रहता है और जब मनुष्य चलता है तो उसके पीछे-पीछे वह भी चलने लगता है। इतना ही नही, कोई कार्य करते समय भी कर्म संस्कार उसका साथ नही छोड़ता। सदा छाया के समान पीछे लगा रहता है।

यथा धेनु सहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम्।
एवं पूर्वकृतं कर्म कर्त्तारमनुगच्छति ॥

—वेदव्यास (महा० अनु०)

जैसे बछडा हजारो गौओं के बीच में अपनी माता को ढूँढ लेता है, उसी प्रकार पहले का किया हुआ कर्म भी कर्त्ता को पहचानकर उसका अनुसरण करता है।

स्वकर्मफलनिक्षेपं विधानपरिरक्षितम्।
भूतग्राममिमं कालः समन्तात् परिकर्षति ॥

—वेदव्यास (महा० शान्ति०)

अपने अपने कर्म का फल एक धरोहर के समान है, जो कर्मजनित अदृष्ट के द्वारा सुरक्षित रहता है। उपयुक्त अवसर आने पर यह काल इस कर्म-फल को प्राणि-समुदाय के पास खींच लाता है।

कर्मभोग

Our riches may be taken away by fortune, our reputation by malice, our spirits by calamity, our health by disease, our friends by death, but our actions must follow us beyond the grave.

अभाग्य से हमारा धन, नीचता से हमारा यश, मुसीबत से हमारा जोश, रोग से हमारा स्वास्थ्य, मृत्यु से हमारे मित्र हमसे छीने जा सकते हैं, किन्तु हमारे कर्म मृत्यु के बाद भी हमारा पीछा करेंगे। —कोल्टन

अचोद्यमानानि यथा पुष्पाणि च फलानि च।
स्व काल नातिवर्तन्ते तथा कर्मपुरा कृतम्॥
—वेदव्यास (महा०)

जैसे फूल और फल किसी की प्रेरणा के बिना ही अपने समय पर वृक्षो मे लग जाते हैं, उसी प्रकार पहले के किये हुए कर्म भी अपने फल-भोग के समय का उल्लघन नहीं करते।

कर्मयोग

जिस यत्न से आत्मा के शरीर के बन्धन से छूटने का योग सधे वह कर्मयोग है।
—महात्मा गाधी

सन्यास कर्मयोगश्च नि श्रेयसकरावुभौ।
तयोस्तु कर्मसन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते॥ —श्रीकृष्ण (गीता)

कर्मों का त्याग और योग दोनो मोक्ष देनेवाले है। उनमें भी कर्मसन्यास से कर्मयोग बढकर है।

धृति और उत्साह मिलकर कर्मयोग बनता है। —विनोबा

कर्मशील

कर्मशील लोग शायद ही कभी उदास रहते हो—कर्मशीलता और उदासी दोनो साथ-साथ नही रहती। —[illegible]

कलंक

चन्द्रमा अपना प्रकाश सारे आकाश मे फैलाता है, परन्तु [illegible] भीतर रखता है। —[illegible]

जिस वस्तु के देखने में कलंक लगता हो उसे न देखो, जिस तरह चौथ के चांद को कोई नहीं देखता। —अज्ञात

Done to death by slanderous tongues.

कलंक मृत्यु का कारण होता है। —शेक्सपियर

निर्मल से निर्मल चरित्र पर कलंक लगना कोई बात नहीं है। वसन्त ऋतु के नये फूलो में भी घुन लग जाता है और कलियां बहुधा खिलने के पहिले ही हवा के झोंकों से मुरझा जाती है। —अज्ञात

कलम

There are only two powers in the world, the sword and the pen; and in the end the former is always conquered by the latter.

दुनिया में दो ही ताकतें है, तलवार और कलम, और अन्त मे तलवार हमेशा कलम से हारती है। —नैपोलियन

कलम में तलवार की सौगुनी चोट करने की शक्ति होती हैं। —अज्ञात

कलम तलवार से अधिक बलवान है। —बुलवर लिटन

समस्त कला अनुकरण-मात्र है। —अरस्तू

कला का सत्य जीवन की परिधि मे सौन्दर्य के माध्यम द्वारा व्यक्त अखण्ड सत्य है। —महादेवी वर्मा

The true work of art is but a shadow of the divine perfection.

सच्ची कला दैवी सिद्धि का केवल प्रतिबिम्ब होती है। ईश्वर की पूर्णता की छाया होती है। —माइकेल एंजिलो

जो कला आत्मा को आत्म-दर्शन करने की शिक्षा नहीं देती, वह कला ही नहीं है। —महात्मा गांधी

Art does not imitate but interpret.

कला अनुकरण नहीं करती परन्तु व्याख्या करती है। —मेजिनी

कला का सबसे सुन्दर रूप छिपाव है, दिखाव नहीं। —प्रेमचन्द

Art is life seen through a temperament.

कला प्रकृति द्वारा देखा हुआ जीवन है। —एमिल जोला

जीवन में सबसे बड़ी कला तपस्या है। —महात्मा गांधी

प्रत्येक राष्ट्र के गुणावगुण सदा उनकी कला में अंकित रहते है। —रस्किन

कला कला के लिए है। —विक्टर कज़िन

समस्त कला अन्तर के विकास का आविर्भाव ही है। —अज्ञात

All art is but a imitation of nature

सम्पूर्ण कला केवल प्रकृति का ही अनुकरण है। —सेनेका

कला का रहस्य भ्रान्ति है; पर वह भ्रान्ति जिस पर यथार्थ का आवरण पडा हो। —प्रेमचन्द

जो असुन्दर है, जो अनैतिक है, जो अकल्याण है, वह किसी तरह कला नहीं है, धर्म नही है। कला कला के लिए, की युक्ति भी किसी तरह सत्य नहीं है।

—शरत्चन्द्र (निबन्धावली साहित्य और नीति)

True art is the reverent imitation of god

सच्ची कला ईश्वर का भक्ति-पूर्ण अनुकरण है। —अज्ञात

कला की कसौटी सौन्दर्य है, जो सुन्दर है वही कला है। —अज्ञात

कला का शत्रु अज्ञान है। —बेन जानसन

कला केवल यथार्थ की नकल का नाम नहीं है। कला दीखती तो यथार्थ है पर यथार्थ होती नही। उसकी खूबी यही है कि वह यथार्थ मालूम हो। —प्रेमचन्द

When love and skill work together expect a masterpiece

जब लगन और प्रवीणता परस्पर मिलकर कार्य करे तो एक [illegible] की अपेक्षा करो। —रस्किन

ज्ञान को गलाकर सांचो मे ढालना और उनसे प्रतिमाएं रचना, [illegible] करती है। —[illegible]

कला विचार को मूर्ति में परिणत करती है। —एमर्सन

मानव की बहुमुखी भावनाओ का प्रबल प्रवाह जब [illegible], [illegible] कला के रूप मे फूट पडता है। —[illegible]

कला और धर्म

कला और धर्म [illegible] है। दोनो [illegible] दोनो [illegible] को हटाना चाहते है। [illegible] दोनो की [illegible] और [illegible]। —[illegible]

कलाकार

जो अंतर को देखता है वाह्य को नही, वही सच्चा कलाकार है।

—महात्मा गांधी

कलाकार के निर्माण में जीवन के निर्माण का लक्ष्य छिपा रहता है।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

Every artist was first an amateur.

प्रत्येक कलाकार प्रारम्भ में नौसिखिया होता है। —एमरसन

कलाकार न किसी को आदेश दे सकता है, न उपदेश और यदि देने की नासमझी करता भी है तो दूसरे उसे न मान कर समझदारी का परिचय देते हैं।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

कलाकार प्रकृति का प्रेमी है, अतएव वह उसका दास भी है और स्वामी भी।

—रवीन्द्र

कलाकार तो जीवन का ऐसा संगी है जो अपनी आत्म-कहानी में, हृदय-हृदय की कथा कहता है और स्वयं चल कर पग-पग के लिए पथ प्रशस्त करता है ... कांटा चुभाकर कांटे का ज्ञान तो संसार दे ही देगा परन्तु कलाकार विना काटा चुभाने की पीड़ा दिये हुए ही उसकी कसक की तीव्र मधुर अनुभूति दूसरे तक पहुचाने में समर्थ है। —महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

जिसने उत्तम जीना जाना, वही कलाकार है। —महात्मा गांधी

भारतीय कलाकारो ने अपनी कला को मंदिरो और गुफाओ में प्रकट करके सार्वजनिक कर दिया है। —महात्मा गांधी

कलाकार अपनी प्रवृत्तियो से भी विशाल है। उसकी भाव-राशि अथाह एव अचिन्त्य है। —मैक्सिम गोर्की

कलाकार स्वयं एक साधक है, चाहे वह कला साहित्य हो, नृत्य हो, शिल्प हो, या और कुछ। —अनन्त गोपाल शेवड़े

कलाकार का आरम्भ ही शैशव के पुनरुत्थान से होता है। —अज्ञात

जब समाज कलाकार के किसी भी स्वप्न का मूल्य नही आकता, किसी भी आदर्श को जीवन की कसौटी पर परखना स्वीकार नही करता, तब साधारण कलाकार तो सब कुछ धूल में फेंक कर रूठे बालक के समान क्षोभ प्रकट कर देता है, और महान, समाज की उपस्थिति ही भुलाने लगता है। —महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

निर्माण युग में जो कलासृष्टि अमृत की सजीवनी देकर ही सफल हो सकती थी वही पतन युग में मदिरा की उत्तेजना-मात्र बनकर विकासशील मानी गयी।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

कलियुग

कलिजुग सम जुग आन नहिं जौं नर कर विस्वास।
गाइ राम-गुन-गन विमल भव तर बिनहिं प्रयास॥

—तुलसी (मानस)

न देवे देवत्व कपट-पटवस्तापस-जनाः।
जनो मिथ्यावादी विरलतर-वृष्टि जलधरः।
प्रसगो नीचानामवनि-पतयो दुष्ट-मनसो।
जना भ्रष्टा नष्टा अहह कलिकाल प्रभवति। —अज्ञात

देवताओ में दैवी-शक्ति नही रह गयी, साधु लोग प्रपच करने में चतुर हो गये, जनता झूठ बोलना ही पसन्द करने लगी, मेघ बहुत कम जल देने लगे, लोग नीचो का सग ज्यादा पसन्द करने लगे, राजा लोग दुष्ट हृदय के हो गये, लोग भ्रष्ट हो गये, नष्ट हो गये, यह कलिकाल अपना फल दिखा रहा है।

कलियुग केवल नाम अधारा। सुमिरि सुमिरि नर उतरहिं पारा॥

—तुलसी (मानस)

कल्पना

भूत या प्रेत का जामा उन्हें धारण करना पड़ता है जो अपनी ही कल्पनाओ के गुलाम होते है। —स्वामी रामतीर्थ

कल्पना विश्व पर शासन करती है। —नेपोलियन

The lunatic, the lover and the poet,
Are of imagination all compact.

पागल, प्रेमी और कवि, इनकी कल्पनाएँ एक-सी होती है। —शेक्सपियर

कल्पना में मोहक और प्रिय प्रतीत होते हुए भी इसकी यथार्थ बातें सदा प्रिय नहीं होती। —रस्किन

कल्पना में जो आनन्द है वह यथार्थ में नहीं है। —अज्ञात

Imagination is the eye of the soul.
कल्पना आत्मा का नेत्र है। —जोवर्ट

कवच

परमात्मा का विश्वास ही मेरा आतरिक कवच है। —ऋग्वेद

कवि

जहाँ न पहुँचे रवि, तहाँ पहुँचे कवि। —अज्ञात

कवि वह सपेरा है जिसकी पिटारी में सर्पो के स्थान में हृदय वन्द होते है। —प्रेमचन्द

वियोगी होगा पहला कवि,
आह से उपजा होगा गान।
निकलकर आँखो से चुपचाप,
वही होगी कविता अनजान।। —पंत

हमारी अन्तस्थ सुप्त भावनाओं को जाग्रत करने का सामर्थ्य जिसमें होता है वह कवि है। —महात्मा गांधी

कवि की पदवी कितनी महान है, कैसी उच्च है। वह दिलो के सिंहासन पर राज्य करता है, वह सोती हुई जाति को जगाता है, वह मरे हुए देश में नवजीवन का संचार करता है। —अज्ञात

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।। —अज्ञात

कवि सृष्टि के सौन्दर्य का मर्मज्ञ है। वह ऐसा यन्त्र है जिसके द्वारा सृष्टि का सौन्दर्य देखा जाता है। —अज्ञात

जिसका आनद वाहरी जगत् में मर्यादित है वह कवि नही है। कवि आत्मनिष्ठ है; कवि स्वयंभू है। —विनोबा

ईश्वरीय सौन्दर्य को प्राकृतिक कविता को—भाषा की छटा द्वारा संसार को दरसाना कवि का कर्तव्य है। —पुरुषोत्तमदास टंडन

प्रेमी इश्क का उपासक है और कवि हुस्न का। —अज्ञात

कवि का सारा जीवन उपकार का जीवन है। वह गिरे हुए उत्साह को उठाता है, रोती हुई आँखो के आँसू पोछता है, और निराशावादियो के सामने आशा का दिव्य दीपक रोशन करता है। —अज्ञात

कवि सौन्दर्य देखता है। चाहे वह सौन्दर्य बहिर्जगत् का हो, चाहे अन्तर्जगत का। जो केवल बाहरी सौन्दर्य का ही वर्णन करता है, वह कवि है, पर जो मनुष्य के मन के सौन्दर्य का भी वर्णन करता है वह महाकवि है। —अज्ञात

Poets learned in suffering what they teach in song.
कवि जो कुछ विपत्ति में सीखता है उसकी शिक्षा कविता में देता है।
—शेली

संसार के पदार्थों और घटनाओ को सभी देखते हैं, परन्तु जिन आँखो से उन्हें कवि देखता है वे निराली ही होती हैं। —पुरुषोत्तमदास टंडन

कवि माने मन का मालिक। जिसने मन नहीं जीता वह ईश्वर की सृष्टि का रहस्य नहीं समझ सकता। —विनोबा

The poet's eye in fine frenzy rolling
Doth glance from heaven to earth and earth to heaven.
सौन्दर्य-मद में झूमती हुई कवि की दृष्टि स्वर्ग से भूलोक और भूलोक से स्वर्ग तक विचरती रहती है। —शेक्सपियर

कवि कैसी हीन दशा में क्यो न हो, वह स्वभाव में राजा और उदारता में हरिश्चन्द्र से कम नहीं होता। —अज्ञात

Poets utter great and wise things which they do not themselves understand.
कवि महान और बुद्धिमत्तापूर्ण बातें कह जाते हैं जिन्हें वे स्वय नहीं समझते।
—प्लेटो

कवि का हृदय जल में कमलपत्र की तरह निर्लेप होता है। उस पर उसकी रचना या कल्पना का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। —अज्ञात

कवि के अर्थ का अन्त ही नही है। जैसे मनुष्य का वैसे ही महावाक्यो के अर्थ का भी विकास होता ही रहता है। —महात्मा गांधी

कवि. करोति काव्यानि स्वादु जानन्ति पण्डिता.।
सुन्दर्या अति लावण्य पतिर्जानाति नो पिता॥

कवि काव्य रचता है पर स्वाद पडित जानता है। जैसे, सुन्दरी स्त्री के लावण्य को उसका पति जानता है, पिता नहीं। —अज्ञात

पामर दुनिया विषय-सुख से झूमती है, कवि आत्मानंद में डोलता है। लोगो को भोजन का आनद मिलता है, कवि को आनद का भोजन मिलता है। —विनोबा

He who, in an enlightened and literary society aspires to be a great poet, must first become a little child.

जो व्यक्ति जाग्रत और साहित्यिक समाज में महान कवि होने की अभिलाषा रखता है उसे पहले एक छोटा बालक बनना चाहिए। —मैकाले

कविर्मनीषी परिभू. स्वयंभू।
यथातथ्यतोर्थान् व्यदधात् शाश्वतीभ्य समाभ्य.।

—ईशावास्योपनिषद्

कवि मन का स्वामी, विश्व-प्रेम से भरा हुआ, आत्मनिष्ठ, यथार्थभाषी और शाश्वत काल पर दृष्टि रखनेवाला होता है।

कवि विश्व-सम्राट् होता है, कारण वह हृदय-सम्राट् होता है। —विनोबा

कवि जिस समय कविता करता है, वह अलौकिक पुरुष बन जाता है।

—डाक्टर हजारीप्रसाद द्विवेदी

तज्जाड्यं वसुधाधिपस्य कवयो ह्यर्थं विनापीश्वरा.।
कुत्स्या. स्यु. कुपरीक्षका न मणयो यैरर्घत. पातिता॥ —भर्तृहरि

कवि लोग बिना धन के ही श्रेष्ठ है, और वह राजा उस जौहरी के समान मूर्ख है जो मणि को न पहचान कर उसका मूल्य घटाता है।

पत्थर में ईश्वर के दर्शन करना काव्य का काम है। इसके लिए व्यापक प्रेम की आवश्यकता है। ज्ञानेश्वर महाराज भैसे की आवाज में भी वेद श्रवण कर सके, इसलिये वह कवि है। —विनोबा

Poets are the unacknowledged legislators of the world.

कवि विश्व के अस्वीकृत व्यवस्थापक है। —शेली

सत्कवि अतीत का गौरव-गायक, वर्तमान का चित्रकार और भविष्य का सूक्ष्म द्रष्टा होता है। —एक रूसी आलोचक

विज्ञान जहा तक घूमता-फिरता है, यदि विश्व वही तक समाप्त है तो मेरे कवि! कविता वनाना अव छोड दे। तू विज्ञान का अनुचर नही, उसका पूरक है। —अज्ञात

कवि और चित्रकार

वाहरी सौन्दर्य सुचतुर चित्रकार के चित्र में भी देखने को मिल सकता है, पर मन का सौन्दर्य कवि की वाणी में ही मिलता है। —अज्ञात

कवि और चित्रकार में भेद है। कवि अपने स्वर में और चित्रकार अपनी रेखा में जीवन के सत्य और सौन्दर्य का राग भरता है।

कवि और तत्त्ववेत्ता

तत्ववेत्ता और कवि में अन्तर है। तत्त्ववेत्ता मस्तिष्क का निवासी है और कवि हृदय का। —अज्ञात

काव्य में भावनात्मक सत्य की प्रधानता रहती है तथा विज्ञान में वैज्ञानिक सत्य की। वैज्ञानिक वस्तु के शरीर को देखता है और कवि उसकी आत्मा को, हृदय को। वह एक असुन्दर एव कुरूप वस्तु को सौन्दर्य प्रदान कर उसे ग्राह्य एवं नयनाभिराम वना देता है। —अज्ञात

कवि में अन्तर्जगत के सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावो को भी स्पर्श करने की शक्ति है, उसी प्रकार वैज्ञानिक सूक्ष्मातिसूक्ष्म तथ्यो का विश्लेषण करता है। कवि के जीवन का लक्ष्य है पूर्णता की प्राप्ति। कवि का सत्य विशुद्ध वैज्ञानिक नही है, वह तो उसकी अनुभूति के रस में पगा हुआ होता है। —अज्ञात

कवि और दर्शन

धन और ऐश्वर्य, रूप और वल, विद्या और वुद्धि, ये विभूतियाँ ससार को चाहे कितना ही मोहित कर लें, कवि के लिए यहा जरा भी आकर्षण नही है, उसके मोद और आकर्षण की वस्तु तो वुझी हुई आशाए, मिटी हुई स्मृतियाँ और टूटे हुए हृदय के आँसू है। जिस दिन इन विभूतियो में उसका प्रेम न रहेगा उस दिन वह कवि न रहेगा। दर्शन जीवन के इन रहस्यो से केवल विनोद करता है कवि उनमें लय हो जाता है। —प्रेमचन्द (गो-दान)

कवि और शब्द

कवि और शब्द की विचित्र महिमा है। शब्द कवि को अमर बना देते हैं और कवि शब्द को भाग्यवान। —अज्ञात

कविता

कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भाव-पूर्ण सगीत गाया करता है। अधकार का आलोक से, असत का सत् से, जड़ का चेतन से और वाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से सम्बन्ध कौन कराती है? कविता ही न? —जयशंकर प्रसाद (स्कन्द-गुप्त)

कविता सृष्टि का सौंदर्य है, कविता ही सृष्टि का सुख है, और कविता ही सृष्टि का जीवन-प्राण है। —पुरुषोत्तमदास टंडन

Poetry comes nearer to vital truth than history.
इतिहास की अपेक्षा कविता सत्य के अधिक निकट आती है। —प्लेटो

कविता अमरावती से गिरती हुई अमृत की धारा है। —अज्ञात

कविता सच्ची भावनाओ का चित्र है, और सच्ची भावनाएँ चाहे वे दुख की हो या सुख की, उसी समय उत्पन्न होती हैं जब हम दुख या सुख का अनुभव करते हैं। —प्रेमचन्द (वरदान)

Poetry is the intellect coloured by feelings.
कविता भावना से रंजित बुद्धि है। —प्रो० विल्सन

कविता शब्द नही, शान्ति है। कविता कोलाहल नही, मौन है। शब्दो के कलरव के परे कविता की अशब्दता का निवास है। —अज्ञात

कविता केवल वस्तुओ के ही रगरूप में सौन्दर्य की छटा नही दिखाती प्रत्युत कर्म और मनोवृत्ति के सौन्दर्य के भी अत्यन्त मार्मिक दृश्य सामने रखती है। —रामचन्द्र शुक्ल

कविता जीवन की समालोचना है। —अज्ञात

मेरे लिए तो मनुष्य एक सजीव कविता है। कवि की कृति तो उस सजीव कविता का शब्दचित्र-मात्र है, जिससे उसका व्यक्तित्व और ससार के साथ उसकी एकता जानी जाती है। —महादेवी वर्मा (यामा)

कविता का उद्देश्य मूर्ख और साधारण लोगो को आनन्द देने का है, विद्वानो को नहीं। —अज्ञात

कविता देवलोक के मधुर सगीत की गूज है। —अज्ञात

कविता प्रकाश और अन्धकार की वह सन्धि-रेखा है जहाँ पहुँचकर मनुष्य का मन परिचित विश्व को छोड़कर अपरिचित जगत से परिचय लाभ करता है।
—अज्ञात

हृदय पर नित्य प्रभाव रखनेवाले रूपो और व्यापारो को भावना के सामने लाकर कविता वाह्य प्रकृति के साथ मनुष्य की अन्त प्रकृति का सामंजस्य घटित करती हुई उसकी भावात्मक सत्ता के प्रसार का प्रयास करती है।
—रामचन्द्र शुक्ल

Poetry is the art of uniting pleasure with truth by calling imagination to the help of reason and its essence is in invention.

कविता वह कला है जिसमें कल्पना-शक्ति विवेक की सहायक होकर सत्य और आनन्द का परस्पर सम्मिश्रण करती है। —डा० जानसन

संस्कृत साहित्य में काव्य का उद्देश्य जीवन का अनुकरण-मात्र नही, वरन् मनोविनोद और आनद की सृष्टि भी है। —अज्ञात

Truth shines the brighter clad in verse

कविता का वाना पहनकर सत्य और भी चमक उठता है। —पोप

Poetry is the record of the best and happiest moments of the happiest and best minds.

कविता सुखी और उत्तम मनुष्यो के उत्तम और सुखमय क्षणो का उद्गार है।
—शेली

कवित्व अंधकार में दीपक है; कवित्व दरिद्र का धन है, कवित्व भूख में अन्न और प्यास में शीतल जल है; कवित्व दु ख में धैर्य और विरह में मिलन है। —अज्ञात

कविता वह सुरंग है, जिसके भीतर से मनुष्य एक विश्व को छोडकर दूसरे विश्व में प्रवेश करता है।

कविता अपनी मनोरंजन-शक्ति द्वारा पढने या सुनने वाले का चित्त रमाये रहती है, जीवन-पट पर उक्त कर्मो की सुन्दरता या विरूपता अंकित करके हृदय के मर्मस्थलो का स्पर्श करती है। —रामचन्द्र शुक्ल

जो कविता रमणी के रूपमाधुर्य्य से हमें तृप्त करती है वही उसकी अन्तर्वृत्ति की सुन्दरता का आभास देकर हमें मुग्ध करती है। —रामचन्द्र शुक्ल

कविता मानवता की उच्चतम अनुभूति की अभिव्यक्ति है।
—डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी

परमाणु में कविता है, विराट् रूप में कविता है, विन्दु में कविता है, सागर में कविता है, रेणु में कविता है···जिधर देखो कविता ही का साम्राज्य है। प्रकृति काव्यमय है, सारा ब्रह्माण्ड एक अद्‌भुत महाकाव्य है।

—पुरुषोत्तमदास टंडन

Poetry is the music of thought, conveyed to us through the music of language.

कविता भावना का सगीत है, जो हमको शब्दो के संगीत द्वारा मिलता है।

—चैटफील्ड

कविता हृदय-कानन में खिली हुई कुसुम-माला है। —अज्ञात

गद्य जहा असमर्थ है वहां कविता जन्म लेती है। —अज्ञात

कविता गाकर रिझाने के लिए नही, समझकर खो जाने के लिए है। —अज्ञात

कविता मनोरजन नही, आत्मानुसन्धान का उन्मेष है। कविता सजावट और रगीनी नहीं, अपने आप को चीरने का प्रयास है और जो अपने आप को चीरता है वह मनुष्य की जड़ता को चीर सकता है। —अज्ञात

कष्ट

आज के कष्टो का सामना करनेवाले के पास आगामी कल के कष्ट आते हुए झिझकते है। —अज्ञात

कष्ट हृदय की कसौटी है। —जयशंकर प्रसाद

कसरत

शरीर रोगी और दुर्वल रखने के समान दूसरा कोई पाप नही है।
—लोकमान्य तिलक

Health is the vital principle of bliss; and exercise of health.

आनन्द का मुख्य सिद्धान्त तन्दुरुस्ती है और तन्दुरुस्ती का मुख्य सिद्धान्त कसरत।

—टामसन

जिस प्रकार विजली की धारा से विजली के तार में उत्तेजना होती है उसी प्रकार व्यायाम द्वारा खून में गर्दिश पहुंचाने से शरीर की नसें-नाडियाँ उत्तेजित व कार्यशील हो जाती है। —अज्ञात

कस्तूरी

कस्तूरी की पहिचान उसकी सुगन्धि से होती है, गन्धी के कहने से नही।

—सादी

कहानी

पढकर आनन्दातिरेक से आँखें गीली न हो जायें, तो वह कहानी कैसी?

—शरत्चन्द्र (पत्रावली)

कहावत

कहावतें दैनिक अनुभवो की वेटियाँ हैं। —डच कहावत

कान

कानो के दुरुपयोग से मन बहुत अशान्त और कलुषित हो जाता है, कान इनका अनुभव नही कर पाते। —महात्मा गांधी

कान हमारे गुरुदेव हैं। —अज्ञात

कान का कच्चा होना बुरा है, वह सदा अच्छी चीजें ही नही देता। —अज्ञात

काम

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति। हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्द्धते।

काम की शांति कभी काम के उपभोग से नहीं हो सकती। वह तो इससे आग में घी डालने के समान अधिक बढता है।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
काम क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्॥ —गीता

काम, क्रोध और लोभ ये तीनों नरक के द्वार हैं, ये ही तीनों आत्मा को नष्ट कर देते हैं, इन तीनो को त्यागना उचित है।

सहकामी दीपक दसा सोखैं तेल निवास।
कविरा हीरा संत जन सहजैं सदा प्रकाश।।　　—कबीर

कामार्त्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।　　—कालिदास

काम से जो पुरुष पीड़ित हैं वे जड़ और चेतन में भेद नहीं कर सकते।

तात तीन अति प्रबल खल, काम, क्रोध अरु लोभ।
मुनि विज्ञान-निधान मन, करहिं निमिष महुं छोभ।　　—तुलसी

कामक्रोधग्राहवतीं पंचेन्द्रियजलां नदीम्।
नावं धृतिमयीं कृत्वा जन्मदुर्गाणि सन्तर।।　　—अज्ञात

काम और क्रोध मगर के समान हैं, पाचो इन्द्रियां जलरूप हैं और जन्मो की शृंखला दुर्गरूप है। इस दुस्तर नदी को पार करने के लिए धैर्यरूपी नाव ही काम दे सकती है।

जहां काम तहँ नाम नहिं, जहां नाम नहिं काम।
दोनों कबहूं ना मिलैं, रवि रजनी इक ठाम।।　　—कबीर

The worst of slaves is he whom passion rules.
वह निकृष्ट दास है जिस पर काम शासन करता है।　　—ब्रुक

काम क्रोध मद लोभ सब, प्रबल मोह की धार।
तिनमहं अति दारुण दु:खद, मायारूपी नार।।
—तुलसी (मानस)

Passion, though a bad regulator, is a powerful spring.
काम यद्यपि एक निकृष्ट प्रबन्धक है तथापि एक शक्तिशाली स्रोत है।
—एमर्सन

काम क्रोध मद लोभ की जब लग घट में खान।
तब लगि पंडित मूर्खहू दोनों एक समान।।　　—कबीर

लोभ के इच्छा दंभ बल, काम के केवल नारि।
क्रोध के परुष वचन बल, मुनिवर कहहिं विचारि।।　　—तुलसी

कामदेव

कामदेव बडा छली है, जो उसका विश्वास करता है, वह धोखा खाता है। —गेटे

कामना

कामनाएँ साप के जहरीले दात के समान है। —स्वामी रामतीर्थ

लोभी मनुष्य की कामना कभी पूरी नही होती। —वेदव्यास (म० शान्तिपर्व)

आसक्ति से कामना उत्पन्न होती है। —भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

कामनाओ को इष्ट वनाना वधन को स्वीकार करना है। —स्वामी रामतीर्थ

विषय-सुख की कामना मनुष्य को अधा वना देती है। —वेदव्यास

कामना वाले के लिए क्रोध अनिवार्य है, क्योकि कामना कभी तृप्त नहीं होती। —महात्मा गांधी

विहाय कामान्य सर्वान्पुमाश्चरति नि स्पृह ।
निर्ममो निरहकार स शान्तिमधिगच्छति ॥
—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

जो पुरुष सम्पूर्ण कामनाओ का त्यागकर निस्पृह हो जाता है और ममता तथा अहकार को छोड देता है वही शाति पाता है।

जब तक कामना है तव तक सुख के दर्शन स्वप्न में भी नही होगे। —अज्ञात

जैसे कच्ची छत में जल भरता है वैसे ही अज्ञानी के मन में कामनाए जमा होती है। —गौतम बुद्ध

कामना सागर की भाति अतृप्त है, ज्यो ज्यो हम उसकी आवश्यकता पूरी करते है त्यो त्यो उसका कोलाहल वढता है। —स्वामी विवेकानन्द

कामिनी

कामिनी के शब्द जितनी आसानी से दीन और ईमान को गारत कर सकते हैं; उतनी ही आसानी से उनका उद्धार भी कर सकते है। —प्रेमचन्द

कामिनी को लावण्य देने वाले यह छहो अनुपम है—हरिण, इन्दु, अरविन्द, करिणी, हिम और पिक। हरिण से नयन, इन्दु से मुख, अरविन्द से परिमल (अग-सुगन्ध), करिणी से गति, हिम से तनु-रुचि, और पिक से नव-यौवना कामिनी की सुललित वाणी की वर्णना की। —अज्ञात

माया सापणि सव डसै, कनक कामणी होई।
ब्रह्मा विष्णु महेस लौं, दादू वचै न कोई। —दादू

कामी

उल्लू को दिन में नही दीखता, कौए को रात में नही दीखता। मगर कामी ऐसा अन्धा होता है जिसे न दिन में सूझता है और न रात में। —अज्ञात

कामी स्वता पश्यति। —कालिदास (शकुन्तला)

कामी सब वस्तुओ को अपने अनुकूल ही समझता है।

कामातुराणां न भयं न लज्जा—
कामी व्यक्तियो को न भय लगता है, न लज्जा।

जे कामी लोलुप जगमाही, कुटिल काक इव सवहि डेराही।। —तुलसी

कायर

Cowards die many times before their death; the valiant taste death but once.

कायर अपने जीवन-काल में ही अनेक वार मरते है; वीर लोग केवल एक ही वार मरते है। —शेक्सपियर (जूलियस सीजर)

छोटी नदिया थोड़ा ही जल पाकर उतरा जाती है, चूहे की अंजलि थोड़ी ही चीजों से भर जाती है। इसी तरह कायर पुरुष भी थोड़े में ही सतुष्ट हो जाते है। —पचतत्र

The world has no room for cowards, we must all be ready somehow to toil, to suffer, to die.

ससार में कायरो के लिए कही स्थान नही है। हम सवको किसी न किसी प्रकार कठोर परिश्रम करने, दुःख उठाने और मरने के लिए तैयार रहना चाहिए। —स्टीवेन्सन

कायरता

मनुष्य जितना ही चाहता है, उतनी ही उसकी प्राप्त करने की शक्ति बढती है। अभाव पर विजय पाना ही जीवन की सफलता है। उसे स्वीकार करके उसकी गुलामी करना ही कायरपन है। —शरत्चन्द्र (तरुणो का विद्रोह)

कार्य

मनुष्य के सम्पूर्ण कार्य उसकी इच्छा के प्रतिबिम्ब होते हैं। —अज्ञात

A life spent worthily should be measured by deeds, not years.

योग्यता से व्यतीत हुए जीवन को हमें वर्षो के नही अपितु कर्मों के पैमाने से नापना चाहिए। —शेरीडेन

विवेकपूर्ण कार्य उपयोगी होता है। उपयोगी होने पर कार्य की कठिनता की हम परवाह नहीं करते। —रस्किन

For men must work, and women must weep
And there is little to earn and many to keep

मनुष्यो को कार्य करना और स्त्रियो को रोना है। आय कम और पालन करने को बहुतेरे हैं। —सी० किंग्स्ले

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवश कर्म सर्व. प्रकृतिजैर्गुणै ॥ श्रीकृष्ण (गीता)

किसी अवस्था में कोई भी प्राणी शारीरिक, मानसिक व वाचिक कर्म किये बिना एक क्षण भी नही रह सकता, क्योंकि प्रकृति के राग-द्वेषादि गुण के वश होकर सब प्राणियो को कर्म करना ही पडता है।

जो नेक काम करता है और नाम की इच्छा नही रखता उसकी चित्त-शुद्धि होती है और उसका काम सहज ही परमात्मा को अर्पण हो जाता है। —विनोबा

Right action cannot come out of nothing, it must be preceded by thought.

उचित कार्य विचार के अभाव से उत्पन्न नहीं हो सकता, उसके पहले विचार की जरूरत है। —जवाहरलाल नेहरू

सहसा विदधीत न क्रियामविवेक. परमापदा पदम् ॥
वृणते हि विमृश्यकारिण गुणलुब्धा. स्वयमेव सम्पद. ॥
—भारवि (किरातार्जुनीयम्)

एकाएक विना सोचे विचारे कोई कार्य्य नही करना चाहिए। सम्यक् विचार न करना परम आपत्ति का उत्पादक होता है। गुण के ऊपर अपने आप को समर्पण करनेवाली सम्पत्तिया विचारवान् पुरुष को स्वयं मनोनीत करती है अर्थात् जो कुछ किया जाय उसके आगे-पीछे की सब बातो का विचार कर लेना चाहिए।

कोई काम गुप्तरूप से न करो, जिसे दूसरो से छिपाने की जरूरत हो।
—जवाहरलाल नेहरू

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मण.।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मण.॥ —श्रीकृष्ण (गीता)

तू निश्चित कर्म कर, कर्म न करने से कर्म करना श्रेष्ठ है और कर्म न करने से तेरे शरीर का निर्वाह होना भी कठिन हो जायगा।

प्रत्येक कार्य समय से होता है इसलिए उतावली नही करनी चाहिए। जिस प्रकार वृक्ष में चाहे जितना पानी डाला जाय परन्तु वह समय पर ही फल देता है। —वृन्द

काहु न कोउ सुख दुख कर दाता।
निज कृत कर्म भोग सब भ्राता॥ —तुलसी

धर्म का कार्य मनुष्य के हृदय को विशाल बनाता है। —विनोवा

हे कार्य ! तुम्ही मेरी कामना हो, मेरी प्रसन्नता हो, मेरे आनन्द हो, मुझे दुखो से मुक्त करना यह तो तुम्हारे ही हाथ में है। —एलेक्जेन्डर ड्यूमास

विना कार्य के सिद्धात दिमागी ऐय्याशी है, विना सिद्धांत के कार्य अन्धे की टटोल है। —जवाहरलाल नेहरू

कार्य उसी का सिद्ध होता है जो समय को विचार कर कार्य करता है। वह खिलाड़ी कभी नही हारता जो दाव विचार कर खेलता है। —वृन्द

कार्यकर्त्ता

नरपतिहितकर्त्ता द्वेष्यतां याति लोके जनपदहितकर्त्ता त्यज्यते पार्थिवेन।
इति महति विरोधे विद्यमाने समाने, नृपति जनपदानां दुर्लभ. कार्यकर्त्ता॥
—पंचतंत्र

जो शासन का साथ देता है, वह जनता का द्वेषी बन जाता है, जो जनता के हित के बारे में बोलता है वह शासन की दृष्टि में खटकता है। सर्वत्र इस विरोध के रहते शासन और जनता दोनों के लिए समान रूप से प्रिय कार्यकर्त्ता दुर्लभ है।

कार्य-सिद्धि

उपायमास्थितस्यापि नश्यन्त्यर्था प्रमादतः।
हन्ति नोपशयस्थोऽपि शयालुर्मृगयुर्मृगान्॥

—माघ (शिशुपाल वध)

कार्यसिद्धि के उपायो में लगे रहनेवाले भी असावधानी से अपने कार्य का नाश कर देते है, घात (मृगो के आने-जाने के मार्ग में शिकारियो द्वारा बनाये गये गड्ढे) में बैठा हुआ भी नींद में निरत शिकारी मृगो को नही मार पाता।

काल

नाकाले म्रियते जन्तुर्विद्धः शरशतैरपि।
कुशाग्रेणैव संस्पृष्टः प्राप्तकालो न जीवति॥ —हितोपदेश

जो काल न हो तो सैकडो बाणो के बिंधने से भी प्राणी नहीं मरता और जो काल आ जाय तो कुश की नोक छुआए से मर जाता है।

काव्य (दे० कविता)

सत्य काव्य का साध्य और सौन्दर्य साधन है। —महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

काव्य कवि के हृदय का गान है, उसकी बुद्धि का सौन्दर्य है। —अज्ञात

Poetry is the sister of sorrow, every man that suffers and weeps is a poet, every tear is a verse; and every heart a poem

काव्य दुःख की बहिन है, प्रत्येक मनुष्य जो दुःख सहता है और रुदन करता है कवि है, प्रत्येक आंसू काव्य है, और प्रत्येक हृदय एक कविता। —एंड्री

जैसे योगी समाधि में ब्रह्मानन्द-सुधा के पान में तन्मय हो जाता है, और अन्य विषय-व्यापार भूल जाता है, वैसा ही आनन्द काव्य से सहृदय मनुष्य के हृदय में उत्पन्न होता है। —अज्ञात

काव्य साहित्य का उत्तम अंग है। काव्य से मनुष्य को जैसा अलौकिक आनन्द प्राप्त होता है वैसा और किसी प्रकार के साहित्य से नही। —अज्ञात

Poetry is the first and last of all knowledge, it is as immortal as the heart of man

काव्य सभी ज्ञान का आदि और अन्त है—यह इतना ही अमर है जितना मानव का हृदय। —वर्ड्सवर्थ

काव्य और दर्शन

दर्शन में, चेतना के प्रति नास्तिक की स्थिति भी सम्भव है, परन्तु काव्य में अनुभूति के प्रति अविश्वासी कवि की स्थिति असम्भव ही रहेगी।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

काशी

मुकुति-जनम-महि जानि, ग्यान खानि अघहानि-कर।
जहँ बस संभु-भवानि, सो कासी सेइय कस न॥ —तुलसी

जैसे दिल्ली का इतिहास भारतवर्ष का इतिहास है, वैसे यदि काशी का इतिहास कभी लिखा गया होता तो वह भारत के हिन्दू-धर्म और दर्शन का इतिहास होता।

—अज्ञात

किसान

अन्न पैदा करने में किसान ब्रह्मा के समान है। खेती उसके ईश्वरीय प्रेम का केन्द्र है। उसका सारा जीवन पत्ते-पत्ते में, फूल-फूल में, फल-फल में, विखर रहा है।

—पूर्णसिंह

वृक्षों की तरह किसान का भी जीवन एक तरह का मौन जीवन है। किसान पत्ते में, फूल में, फल में आहुत हुआ सा दिखाई देता है। —पूर्णसिंह

कीर्ति

Fame is the perfume of heroic deeds.

कीर्ति वीरोचित कार्यों की सुगन्ध है। —सुकरात

क्या नदी अपने झाग पर कुछ भी ध्यान देती है?
कीर्ति जीवन की नदी का झाग है। —रवीन्द्र

वह नाम अति भार-स्वरूप है जोकि बहुत शीघ्र प्रसिद्ध हो गया। —वालटेयर

कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई॥ —तुलसी (मानस)

Blessed is he whose fame does not outshine his truth
धन्य है वह मानव जिसकी कीर्ति उसकी सत्यता से अधिक प्रकाशवान् नहीं है। —रवीन्द्र

As the pearl ripens in the obscurity of its shell, so ripens in the tomb, all the fame that is truly precious
जिस प्रकार समुद्र की गहराई में सीपी के भीतर का मोती परिपक्व होता है, इसी प्रकार से मनुष्य की कीर्ति कब्र में परिपक्व होती है। —लान्डोर

कीर्ति का नशा शराब के नशे से भी तेज है। शराब छोडना आसान है, कीर्ति छोडना आसान नहीं। —अज्ञात

तुलसी निज करतूति बिनु, मुकुत जात जब कोइ।
गयो अजामिल लोक हरि, नाम सक्यो नहिं धोइ॥ —तुलसी

अकृत्वा हेलया पादमुच्चैर्मूर्धसु विद्विषाम्।
कथकारमनालम्ब्या कीर्तिर्द्यामधिरोहति॥ —माघ (शिशु०)

लीलापूर्वक शत्रुओ के ऊचे मस्तक पर पैर बिना रखे ही निरालम्ब कीर्ति कैसे स्वर्ग तक चढ सकती है।
सर्वोत्तम कीर्ति, प्रतिद्वन्द्वी द्वारा की गयी प्रशसा है। —टामस योर

कुकर्म

अपने कुकर्मो का फल चखने में कडुआ परन्तु परिणाम में मधुर होता है। —जयशंकर प्रसाद

A few vices are sufficient to darken many virtues
कुछ कुकर्म बहुत से गुणो को दूषित करने के लिए पर्याप्त है। —प्लूटार्क

दुष्ट कार्य ईश्वर से हमें सदा अलग रखता है। —रस्किन

यदि मुझे यह विश्वास हो जाय कि ईश्वर मुझे क्षमा कर दें और मनुष्य मेरे कुकर्म को न जान सकेंगे तब भी मुझे कुकर्म करते हुए लज्जा आयेगी। —प्लेटो

प्रत्येक कुकृत्य उस तार को तोड देता है जो हमारे और ईश्वर के बीच में लगा हुआ है। —रस्किन

बुरे कर्मों का परिणाम कभी शुभ नही हो सकता। बुरे कर्मों के लिए पीडा और क्लेश अवश्य भोगना पड़ेगा। —स्वामी रामतीर्थ

कुकर्म मनुष्य के जीवन पर काला परदा डाल देता है। —अज्ञात

कुपुत्र

एकेन शुष्कवृक्षेण दह्यमानेन वह्निना।
दह्यते तद्वनं सर्वं कुपुत्रेण कुलं यथा ॥ —चाणक्य

आग से जलते हुए एक ही सूखे वृक्ष से समस्त वन इस प्रकार जल जाता है, जैसे एक ही कुपुत्र से सम्पूर्ण कुल।

ज्यो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो लगै, बढ़े अंधेरो होय ॥ —रहीम

जनक वचन निदरत निडर, बसत कुसंगति माहिं।
मूरख सो सुत अधम है, तेहिं जनमे सुख नाहिं ॥ —विदुर

कुमति

जहां कुमति तहं विपति निदाना ॥ —तुलसी (मानस)

कुमति कीन्ह सब विश्व दुखारी। —तुलसी (मानस)

संगति सुमति न पावही, परे कुमति के धंध।
राखेहु मेलि कपूर में, हींग न होत सुगंध ॥ —बिहारी

कुमारी

कुमारी! तेरी सरलता, सरोवर की श्यामता की भांति, तेरे सत्य की गहराई व्यंजित करती है। —रवीन्द्र

कुरीति

कुरीति के अधीन होना कायरता है, उसका विरोध करना पुरुषार्थ है।
—महात्मा गांधी

कुरूपता

कुरूपता शीलयुता विराजते। —चाणक्य

कुरूपता सुशीलता से सुशोभित होती है।

कुरूपता विधाता का ऐसा अभिशाप है जिसे हम अपने सद्गुणो द्वारा दूर कर सकते है। —अज्ञात

विद्या रूप कुरूपाणाम्। क्षमा रूप तपस्विनाम्। —चाणक्य

कुरूप मनुष्यो का सौंदर्य विद्या है। तपस्वियोका सौंदर्य क्षमा है।

कुल-मर्यादा

कुल-मर्यादा में आत्मरक्षा की वडी शक्ति होती है। —प्रेमचन्द

कुल की प्रतिष्ठा भी नम्रता और सद्व्यवहार से होती है। हेकडी और रुआई से नही। —प्रेमचन्द

सत्पुरुष अपनी कुल-मर्यादा के लिए अपने को वलिदान कर देते है। —अज्ञात

कुलीन

छिन्नोपि चन्दनतरुर्न जहाति गन्ध।
वृद्धोपि वारणपतिर्न जहाति लीलाम्॥
यन्त्रार्पितो मधुरता न जहाति चेक्षु।
क्षीणोपि न त्यजति शीलगुणान्कुलीन॥ —चाणक्य

जैसे काटा हुआ चन्दन का वृक्ष गन्ध को नही छोड देता, बूढा हो जाने पर भी गजराज अपनी मन्दगति को नही छोडता, कोल्हू में पेरी हुई ईख मधुरता नही छोड देती, उसी प्रकार दरिद्र हो जाने पर भी कुलीन व्यक्ति सुशीलता आदि गुणो को नही छोडता।

Good blood—descent from the great and good, is a high honour and privilege He that lives worthily of it is deserving of the highest esteem, he that does not, of the deeper disgrace

महान और उच्चवंश से उत्पत्ति स्वय ही एक वडा सम्मान और विशेष अधिकार है। जो इन्ही के अनुसार जीवन व्यतीत करता है सर्वोच्च आदर का पात्र होता है और जो नही करता वह सबसे वडी अपकीर्ति का पात्र होता है। —स्टेन्टन

वरये कुलजा प्राज्ञो विरूपामपि कन्यकाम्।
रूपशीला न नीचस्य विवाह सदृशे कुले॥ —चाणक्य

कुलीन कन्या कुरूप भी हो तो विवाह कर लो, सुन्दर किन्तु नीच संस्कारो वाली स्त्री से कभी विवाह न करो।

कुशल-क्षेम

भूतानां हि क्षयिपु करणेष्वाद्यमाश्वास्यमेतत्।

—कालिदास (मेघदूत)

काल सब प्राणियो के सिर पर है, इसलिए पहले कुशल पूछना चाहिए।

कुशलता

कार्य-कुशल आदमी के लिए यश और धन की कमी नही। —अज्ञात

The ability to deal with people is as purchasable a commodity as sugar or coffee.

लोगो के साथ व्यवहार करने की कुशलता वैसी ही क्रेय वस्तु है जैसी कि खाड या काफी। —जे० डी० राकफेलर

कुशल पुरुष

विरोधि वचसो मूकान् वागीशानपि कुर्वते।
जडानप्यनुलोमार्थान् प्रवाच. कृतिनां गिर ॥

—माघ (शि०)

कुशल पुरुषो की वाणी प्रतिकूल बोलनेवाले बड़े-बड़े वक्ताओ को भी बिल्कुल मूक बना देती है और अपने पक्ष में बोलनेवाले मन्दमतियो को भी निपुण वक्ता बना देती है।

आत्मोदय परज्यानिर्द्वयं नीतिरितीयती।
तदूरीत्य कृतिभिर्वाचस्पत्यं प्रतायते ॥ —माघ (शि०)

अपनी उन्नति और शत्रु का विनाश—यही दो नीति की बातें है। (इनके अतिरिक्त कोई तीसरी बात नीतिशास्त्र में नही है) इन्ही दोनो को अंगीकार कर कुशल पुरुष अपनी वाक्चतुरता का विस्तार करते है।

कुशासक

कंटक करि करि परत गिरि साखा सहस खजूरि।
मरहिं कुनृप करि करि कुनय सो कुचालि भव भूरि ॥ —तुलसी

वह शासक अत्याचारी है, जो अपनी इच्छा के अतिरिक्त कोई नियम नही जानता।
—वाल्टेयर

कुशासक के प्रति विद्रोह करना ईश्वर की आज्ञा मानना है। —फ्रैंकलिन

कुशासन

जोर जुल्म करनेवाली बादशाहत बादल की छाँह की तरह टिकाऊ नही होती।
—अज्ञात

जासु राजु प्रिय प्रजा दुखारी।
सो नृप अवसि नरक अधिकारी॥ —तुलसी (मा०)

जहा कानून का अन्त होता है वहा कुशासन प्रारम्भ होता है। —विलियम पिट

राज करत बिनु काजही, करहिं कुचालि कुसाजि।
तुलसी ते दसकन्ध ज्यो, जैहें सहित समाजि॥ —तुलसी

Bad laws are the worst sort of tyranny
बुरे नियम सबसे निकृष्ट प्रकार का कुशासन है। —बर्क

चढे बघूरे चग ज्यो, ग्यान ज्यो सोक समाज।
करम धरम सुख सपदा, त्यो जानिबे कुराज॥ —तुलसी

अत्याचार और अराजकता में कभी अधिक पृथकता नही रहती।
—जे० बेन्थम

राज करत बिनु काजही, ठर्हि जे कूर कुठाट।
तुलसी ते कुरुराज ज्यो, जइहैं बारह बाट॥ —तुलसी

कुसंग

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसग।
चदन विष व्यापत नही, लपटे रहत भुजग॥ —रहीम

हानि कुसग सुसगति लाहू।
लोकहु वेद विदित सब काहू॥ —तुलसी

दाग जो लागा नीलका, सौ मन साबुन धोय।
कोटि जतन परबोधिए, कागा हस न होय॥ —कबीर

वसि कुसंग चाहत कुसल यह रहीम अपसोस।
महिमा घटी समुद्र की रावन वसा परोस॥ —रहीम

को न कुसंगति पाय नसाई। रहै न नीच मते चतुराई॥
—तुलसी (मानस, अयोध्या)

मारी मरै कुसंग की केरा के ढिग वेर।
वह हालै वह अंग चिरै विधि ने संग निवेर॥ —कबीर

रहिमन उजली प्रकृति को, नहीं नीच का संग।
करिया वासन कर गहे, करिखा लागत अंग॥ —रहीम

वरु भल वास नरक कर ताता। दुष्ट संग जनि देइ विधाता॥
—तुलसी (मानस)

होत सुसंगति सहज सुख, दुख कुसंग के थान।
गंधी और लुहार की, देखौ वैठि दुकान॥ —अज्ञात

आप अकारज आपनो, करत कुसंगति साथ।
पांय कुल्हाड़ा देत है, मूरख अपने हाथ॥ —वृन्द

रहिमन नीचन संग वसि, लगत कलंक न काहि।
दूध कलारिन हाथ लखि, मद समुझहिं सव ताहि॥ —रहीम

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
आस्वाद्यतोयाः प्रभवन्ति नद्यः
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः॥ —अज्ञात

गुणज्ञो के पास गुण ही गुण होते हैं, किन्तु वे ही निर्गुणियों के पास रहकर दोष हो जाते हैं। नदियाँ स्वभावतः मधुर जलवाली होती हैं, किन्तु समुद्र के साथ मिलने से खारे जलवाली हो जाती हैं।

कुसमय

जेहि अचल दीपक दुर्‍यो हन्यो सो ताही गात।
रहिमन कुसमय के परे मित्र शत्रु ह्वै जात॥ —रहीम

कुसमय में साहस भी साथ छोड़ देता है। —अज्ञात

जो रहीम दीपक दशा, तिय राखत पट ओट।
समय परे ते होत है, वाही पट की चोट॥ —रहीम

तुलसी पावस के समय, धरी कोकिला मौन।
अब तो दादुर बोलहै, हमें पूछिहैं कौन॥ —तुलसी

रहिमन असमय के परे, हित अनहित ह्वै जाय।
बधिक बधै मृग बान सो, रुधिरै देत बताय॥ —रहीम

रहिमन चुप ह्वै बैठिए देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहैं बेर॥ —रहीम

कूटनीति

Diplomacy is to do and say the nastiest thing in the nicest way.
घृणिततम बात को अति-सुन्दर ढंग से कहना और करना ही कूटनीति है।
—गोल्डबर्ग

कूटनीति मानवीय गुणों के विरुद्ध एक ऐसा दुर्गुण है, जिसने दुनिया के बहुत बड़े भाग को गुलामी की जंजीरों में जकड़ रखा है और जो मानवता के विकास में सबसे बड़ी बाधा बना हुआ है। —रोमां रोलां

कृतघ्न

How sharper than a serpent's tooth it is to have a thankless child.

कृतघ्न पुत्र का होना, सर्प के दांतों से भी ज्यादा तेज होता है। —शेक्सपियर

दत्त देवेन यत् तुभ्य, तदर्थं त्वकृतज्ञताम्,
ब्रूहि त परमात्मान, मा भूत् तेऽत्र कृतघ्नता॥

परमात्मा ने जो कुछ तुमको दिया है, तुमको चाहिए कि उसके लिए परमात्मा के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करो। इस विषय में तुम्हें कृतघ्न नहीं होना चाहिए।

कृतार्था ह्यकृतार्थाना मित्राणा न भवन्ति ये।
तान्मृतानपि क्रव्यादा कृतघ्नान्नोपभुञ्जते॥

जो अपना स्वार्थ सिद्ध हो जाने पर अपने मित्रों के कार्य को पूरा करने की परवाह नही करते उन कृतघ्न पुरुषो के मरने पर मांसाहारी जन्तु भी उनका मांस नही खाते। —वाल्मीकि (रा०, कि०)

कृतज्ञता

ईश्वर अपने दिये हुए पुष्पो के बदले में कृतज्ञता चाहता है, सूर्य और पृथ्वी के बदले में नही। —रवीन्द्र

Gratitude is the memory of the heart.

कृतज्ञता हृदय की स्मृति है। —अंग्रेजी कहावत

जैसे नदिया अपने जल को समुद्र में बहाकर ले जाती है जहाँ से वह पहले आया था, इसी प्रकार कृतज्ञ मनुष्य को प्रसन्नता होती है जब वह उस लाभ को वहा ही पहुंचा देता है जहा से उसने प्राप्त किया था। —अज्ञात

कृतज्ञता निर्धन मनुष्यो का बदला चुकाना है। —कहावत

कृतज्ञ और प्रसन्न हृदय से की गयी पूजा ईश्वर को सबसे अधिक प्रिय है। —प्लूटार्क

A grateful thought toward heaven is of itself a prayer.

स्वर्ग की ओर कृतज्ञपूर्ण भावना स्वय ही एक प्रार्थना है। —लेसिंग

Whenever I find a great deal of gratitude in a poor man, I take it for granted there would be as much generosity if he were a rich man.

जब कभी किसी निर्धन व्यक्ति मे मै अधिक कृतज्ञता पाता हूँ तो मुझे विश्वास हो जाता है कि यदि वह धनी होता तो उसमें उतनी ही दानशीलता होती। —पोप

Gratitude preserves friendship and procures new.

कृतज्ञता मित्रता को चिरस्थायी रखती है और नये मित्र बनाती है। —कहावत

If you pick up a starving dog and make him prosperous, he will not bite you. This is the principal difference between a dog and a man.

यदि तुम किसी भूख से पीड़ित कुत्ते को उठा लो और उसको देख-भाल से सुखी करो, तो वह तुम्हें कभी न काटेगा। मनुष्य और कुत्ते में यही प्रधान अन्तर है। —मार्कट्वेन

कृतज्ञता एक कर्तव्य है जिसे पूरा करना चाहिए लेकिन जिसे पाने का किसी को अधिकार नहीं है। —रूसो

केन्द्र

अपना केन्द्र अपने से बाहर मत बनाओ, अन्यथा ठोकरें खाते रहोगे।
—स्वामी रामतीर्थ

आत्मज्ञान का सम्पादन करना और आत्मकेन्द्र में स्थिर रहना मनुष्य-मात्र का सबसे पहला और प्रधान कर्तव्य है। —स्वामी रामतीर्थ

कोयल

कागा काको धन हरै, कोयल काको देय।
मीठे वचन सुनाय के, जग को वश कर लेय॥ —अज्ञात

गुन के ग्राहक सहस नर, बिनु गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय॥
—गिरिधर कविराय

कोकिलानाम् स्वरो रूप नारी रूप पतिव्रतम्।
विद्या रूप कुरूपाणा क्षमा रूप तपस्विनाम्।

कोकिलाओ का रूप स्वर होता है, स्त्री का रूप पतिव्रत धर्म है, कुरूप मनुष्य का रूप विद्या होती है और तपस्वियो का रूप क्षमा है। —चाणक्य

आम का स्वर्गीय रस पीकर भी कोयल को गर्व नहीं होता, पर गंदा [illegible] पानी पीकर भी मेडक टरटराना शुरू कर देता है। —अज्ञात

क्रान्ति

क्रान्ति शान्ति नहीं है। उसे हिंसा में से ही चलना पड़ता है,—यही उसका [illegible] है और यही उसका अभिशाप॥ —[illegible] ([illegible])

Revolutions are like the most noxious dung-heaps, which bring into life the noblest vegetables.

क्रान्ति अति हानिकारक कूड़े के ढेर के सदृश है जिससे अति उत्तम [illegible] पैदावार होती है। —नेपोलियन

When economic change goes ahead too fast and the forms of government remain more or less static, a hiatus occurs, which is usually bridged over by a sudden change called revolution

जब आर्थिक परिवर्तन की प्रगति बहुत अधिक बढ़ जाती है, पर शासन-तन्त्र जैसे का तैसा बना रहता है, तब दोनो के बीच बहुत बड़ा अन्तर पड़ जाता है। प्राय: यह अन्तर एक आकस्मिक परिवर्तन से दूर होता है, जिसे क्रान्ति कहते हैं।

—जवाहरलाल नेहरू

Political convulsions, usher in new epochs of the world's progress.

राजनीतिक विप्लव विश्व के विकास में एक नया युग लाता है।

—वेन्डेल फिलिप्स

क्रान्ति का उदय सदा ही पीड़ितो के हृदय एवं त्रस्त व्यक्तियो के अन्त करण में हुआ करता है। —अज्ञात

क्रान्ति कभी पीछे की ओर नही जाती। —एमर्सन

क्रान्ति सभ्यता की जननी है। —विक्टर ह्यूगो

क्रान्ति सदैव द्रुतिगामिनी होती हैं। —वाल्टेयर

क्रान्त वनायी नही जाती, वह स्वयं आती है। —वेन्डेल फिलिप्स

क्रान्तिकारी

क्रान्तिकारी—उनकी नस नस में भगवान ने ऐसी आग जला दी है कि उन्हें चाहे जेल में ठूँस दो, चाहे सूली पर चढ़ा दो,—कह न दिया कि पंचभूतो को सौंपने के सिवा और कोई सजा ही लागू नही होती। न तो इनमे दया-माया है, न धर्म कर्म ही मानते हैं। —शरत्चन्द्र (अधिकार)

क्रूरता

Cruelty is a tyrant that is always attended with fear.

क्रूरता अत्याचारिणी है जो सदैव भय के साथ रहती है। —कहावत

क्रूरता देवोपम मनुष्यो में राक्षसी प्रवृत्ति है। —अज्ञात

क्रूरता शैतान का पहला गुण है। —कहावत

क्रोध

क्रोधाद्भवति संमोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

क्रोध से मूढ़ता उत्पन्न होती है, मूढ़ता से स्मृति भ्रान्त हो जाती है, स्मृति भ्रान्त होने से बुद्धि का नाश हो जाता है, और बुद्धि नष्ट होने पर प्राणी स्वयं नष्ट हो जाता है।

जब क्रोध आये तो उसके परिणाम पर विचार करो। —कनफ्यूशस

प्रणिपातप्रतीकारः संरम्भो हि महात्मनाम्। —कालिदास

महात्माओं के क्रोध की शान्ति उनको प्रणाम करने से होती है।

When thou art above measure angry, bethink thee how momentary is man's life

जब तुम अत्यधिक क्रोध में हो तब यह विचार करो कि मानव-जीवन कितना क्षणिक है। —मार्क्स आरेलियस

दसों दिसा के क्रोध की, उठी अपरबल आगि।
सीतल संगत साधु की, तहाँ उबरिए भागि॥ —कबीर

क्रोध अच्छे मनुष्यों में क्षणिक होता है। —[illegible]

अग्नि उसी को जलाती है जो उसके पास जाता है मगर क्रोधाग्नि सारे कुटुम्ब को जला डालती है। —संत [illegible]

अक्रोधेन जिने क्रोध, असाधु साधुना जिने। —गौतम बुद्ध

मनुष्य को चाहिए क्रोध को दया से और बुराई को भलाई से जीते।

When angry count ten before you speak; if very angry count a hundred

जब क्रोध में हो तो दस बार सोच कर बोलो, अगर अत्यधिक क्रोध में हो तो सौ बार सोचो। —जेफरसन

क्रोध एक प्रचण्ड अग्नि है, जो मनुष्य इस अग्नि को वश में [illegible] उसको बुझा देगा। जो मनुष्य अग्नि को वश में नहीं कर [illegible] स्वयं [illegible] जला लेगा। —[illegible]

क्रोधी मनुष्य को एक वार पुन. अपने ऊपर क्रोध आता है, जब उसे समझ आती है।
—पब्लियस साइरस

Anger makes a rich man hated, and a poor man scorned
क्रोध से धनी मनुष्य घृणा का पात्र होता है और निर्धन तिरस्कार का। — कहावत

जिस क्रोध से अपने कुटुम्बी, अपने इष्ट-मित्र अथवा दूसरो का आचरण सुधरे, ईश्वर में पूज्य बुद्धि उत्पन्न हो, दया, उदारता और परोपकार मे प्रवृत्ति हो, वह क्रोध बुरा नहीं। —अज्ञात

सञ्चितस्यापि महतो वत्स क्लेशेन मानवै ।
यशसस्तपसश्चैव क्रोधो नाशकर पर ॥ —विष्णुपुराण

वत्स ! मनुष्य के द्वारा बहुत क्लेश से सञ्चित किये हुए यश और तप को भी क्रोध सर्वथा. विनाश कर डालता है।

Anger begins in folly and ends in repentance.
क्रोध मूर्खता से प्रारम्भ होता है और पश्चात्ताप पर समाप्त होता है।—पैथागोरस

क्रोध एक प्रकार की आधी है, जब आती है तो विवेक को नष्ट कर देती है।
—अज्ञात

क्रोध ज्ञानी पुरुष के हृदय में झाक सकता है, परन्तु वह केवल मूर्खो के हृदय मे ही निवास करता है। — कहावत

कोटि करम लागे रहै, एक क्रोध की लार।
किया कराया सब गया, जब आया हंकार॥ —कबीर

Beware of the fury of a patient man.
संतोषी मनुष्य के तीव्र क्रोध से सावधान रहो। —ड्राइडेन

क्रोध प्राणहर शत्रु. क्रोधोमितमुखो रिपु ।
क्रोधो:सि सुमहातीक्ष्ण सर्वं क्रोधोऽपकर्षति ॥
तपते यतते चैव यच्च दानं प्रयच्छति।
क्रोधेन सर्वं हरति तस्मात् क्रोधं विवर्जयेत् ॥ —वामन पुराण

क्रोध प्राणनाशक शत्रु है, क्रोध अपरिमित मुखवाला वैरी है; क्रोध बड़ी तेज धार तलवार है, क्रोध सब कुछ हर लेता है, मनुष्य जो तप, सयम और दान आदि करता है, उस सब को वह क्रोध के कारण नष्ट कर डालता है। अतएव क्रोध का त्याग करना चाहिये।

ईश्वर ने जिनको प्रभुता दी है, उनको क्रोध घमंडी बना देता है।
—अज्ञात

जो मनुष्य क्रोधी पर क्रोध नहीं करता क्षमा करता है, वह अपनी और क्रोध करने वाले की महासंकट से रक्षा करता है, वह दोनों का रोग दूर करनेवाला चिकित्सक है।
—वेदव्यास (म० सभापर्व)

क्रोध की सर्वश्रेष्ठ औषधि विलम्ब है।
—सेनेका

क्रोध भाग्यवानों को अभागा बना देता है और जो उन्नति के शिखर पर पहुँचना चाहते हैं उन्हें गर्त में ढकेल देता है।
—अज्ञात

क्रोध और ग्लानि से सद्भावनाएँ विकृत हो जाती हैं, जैसे कोई मैली वस्तु निर्मल वस्तु को दूषित कर देती है।
—प्रेमचन्द

किसी के प्रति मन में क्रोध लिये रहने की अपेक्षा उसको तत्काल प्रकट कर देना अधिक अच्छा है, जैसे पल भर में जल जाना देर तक सुलगने से ज्यादा अच्छा है।
—वेदव्यास (म०)

Anger blows out the lamp of the mi[illegible]d
क्रोध मन के दीपक को बुझा देता है।
—इंगरसोल

जब क्रोध नम्रता का रूप धारण कर लेता है, तो अभिमान भी सिर [illegible] लेता है।
—अज्ञात

क्रोधो वैवस्वतो राजा।
—चाणक्य

क्रोध यमराज है।

क्रोध बुरे विचारों की खिचड़ी है। उसमें द्वेष भी है, दुःख भी है, भय भी है, तिरस्कार भी है, घमण्ड भी है और अविवेकिता भी है।
—अज्ञात

क्रोध से वही मनुष्य सबसे अच्छी तरह बचा रहता है जो ध्यान रखता है कि ईश्वर उसे हर समय देख रहा है।
—प्लेटो

जो मनुष्य क्षुद्र है, उन्हीं को क्रोध शोभा देता है।
—[illegible]

बुद्धिमान पुरुषों ने अपनी लौकिक उन्नति, पारलौकिक [illegible] प्राप्त करने के लिए क्रोध पर विजय प्राप्त की है।
—[illegible]

अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां।
भवन्ति वश्या स्वयमेव देहिन.॥
अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना
न जात हार्देन न विद्विषादर ॥ —भारवि

सफल क्रोधवाले पुरुष की आपत्ति दूर करने के लिए मनुष्य स्वय ही अनुकूल हो जाते है। परन्तु क्रोधरहित पुरुप को न मित्र से आदर प्राप्त होता है और न शत्रु ही डरता है।

यत् क्रोधनो यजति यच्च ददाति नित्य।
यद्वा तपस्तपति यच्च जुहोति तस्य॥
प्राप्नोति नैव किमपीह फलं हि लोके।
मोघं फलं भवति तस्य हि कोपनस्य॥

क्रोधी मनुष्य जो कुछ पूजन करता है, नित्य जो दान करता है, जो तप करता है और जो होम करता है, उसका उसे इस लोक मे कोई फल नही मिलता। उस क्रोधी के सभी फल वृथा होते हैं। —वामन पुराण

When passion is on the throne reason is out of doors.
क्रोध के सिहासनासीन होने पर वुद्धि वहाँ से खिसक जाती है। —एम० हेनरी

क्रोध विप है क्योंकि उसके नशे में भले वुरे का ज्ञान नही रहता। —अज्ञात

जिस अग्नि को तुम शत्रु के लिए प्रज्ज्वलित करते हो वह वहुधा तुमको ही अधिक जलाती है। —चीनी कहावत

स्त्री क्रोध में हो तो वफरी हुई शेरनी वन जाती है। —अज्ञात

जो मनुष्य मन में उठे हुए क्रोध को दौड़ते हुए रथ के समान शीघ्र रोक लेता है, उसी को मै सारथी समझता हूँ, क्रोध के अनुसार चलने वाले को केवल लगाम रखने वाला कहा जा सकता है। —गौतम वुद्ध

Men often make up in wrath what they want in reason.
मनुष्य प्राय. अपने विवेक की पूर्ति क्रोध द्वारा पूर्ण कर लेता हैं। —एलजर

क्रोध में आदमी अपने मन की वात नही कहता, वह केवल दूसरो का दिल दुखाना चाहता है। —प्रेमचन्द

जो मनुष्य अपने क्रोध को अपने ही ऊपर झेल लेता है वह दूसरो के क्रोध से वच जाता है। —सुकरात

क्षमा

क्षमा धर्मः क्षमा यज्ञः क्षमा वेदाः क्षमा श्रुतम्।
य एतदेवं जानाति स सर्वं क्षन्तुमर्हति॥

—वेदव्यास (म० वन०)

क्षमा धर्म है, क्षमा यज्ञ है, क्षमा वेद है और क्षमा शास्त्र है। जो इस प्रकार जानता है, वह सब कुछ क्षमा करने योग्य हो जाता है।

क्षमा ब्रह्म क्षमा सत्यं क्षमा भूतं च भावि च।
क्षमा तपः क्षमा शौचं क्षमयेदं धृतं जगत्॥

—वेदव्यास (म० वन०)

क्षमा ब्रह्म है, क्षमा सत्य है, क्षमा भूत है, क्षमा भविष्य है, क्षमा तप है और क्षमा पवित्रता है। क्षमा ने ही सम्पूर्ण जगत् को धारण कर रक्खा है।

क्षमा तेजस्विनां तेजः क्षमा ब्रह्म तपस्विनाम्।
क्षमा सत्यं सत्यवतां क्षमा यज्ञः क्षमा शमः॥

—वेदव्यास (म० वन०)

क्षमा तेजस्वी पुरुषों का तेज है, क्षमा तपस्वियों का ब्रह्म है, क्षमा सत्यवादी पुरुषों का सत्य है। क्षमा यज्ञ है और क्षमा शम (मनोनिग्रह) है।

न श्रेयः सततं तेजो न नित्यं श्रेयसी क्षमा।
न तो तेज ही सदा श्रेष्ठ है और न क्षमा ही। —वेदव्यास (म० वन०)

पूर्वोपकारी यस्ते स्यादपराधे गरीयसि।
उपकारेण तत् तस्य क्षन्तव्यमपराधिनः॥

—वेदव्यास (म० वन०)

जिसने पहले कभी तुम्हारा उपकार किया हो, उससे यदि कोई भारी अपराध हो जाय, तो भी पहले के उपकार का स्मरण करके उस अपराधी के अपराध को तुम्हें क्षमा कर देना चाहिये।

संसार में ऐसे अपराध कम ही हैं जिन्हें हम चाहें तो क्षमा न कर सकें।

—[illegible] ([illegible])

अबुद्धिमाश्रितानां तु क्षन्तव्यमपराधिनाम्।
न हि सर्वत्र पाण्डित्यं सुलभं पुरुषेण वै॥

वेदव्यास (म० [illegible])

छिमा बड़ेन को चाहिए छोटन को उत्पात।
कहा विष्णु को घट गयो जो भृगु मारी लात॥ —कबीर

क्षमा पर मनुष्य का अधिकार है, वह पशु के पास नही मिलती। प्रतिहिंसा पाशव धर्म है। —जयशंकर प्रसाद

अजानता भवेत् कश्चिदपराध. कृतो यदि॥
—वेदव्यास (म० वन०)

अच्छी तरह जांच-पड़ताल करने पर यदि यह सिद्ध हो जाय कि अमुक अपराध अनजान में ही हो गया है, तो उसे क्षमा के ही योग्य बताया गया है।

क्षमा दंड से अधिक पुरुषोचित है—क्षमा वीरस्य भूषणम्। —महात्मा गांधी

खोद-खाद धरती सहै काट-कूट वनराय।
कुटिल वचन साधू सहै और से सहा न जाय॥ —कबीर

यदि कोई दुर्बल मनुष्य तुम्हारा अपमान करे तो उसे क्षमा कर दो, क्योंकि क्षमा करना ही वीरो का काम है, परन्तु यदि अपमान करने वाला बलवान हो तो उसको अवश्य दण्ड दो। —गुरु गोविन्द सिंह

क्षमा से बढ़कर और किसी बात में पाप को पुण्य बनाने की शक्ति नहीं है।
—जयशंकर प्रसाद

जहाँ दया तहँ धर्म है, जहां लोभ तहं पाप।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहां छिमा तहं आप। —कबीर

क्षमाशील

क्षमा दंड से बड़ी है। दड देता है मानव, किन्तु क्षमा प्राप्त होती है देवता से। दंड में उल्लास है पर शान्ति नही और क्षमा में शान्ति भी है और आनन्द भी।
—अज्ञात

क्षमावतामय लोक. परश्चैव क्षमावताम्।
इह सन्मानमृच्छन्ति परत्र च शुभां गतिम्॥
—वेदव्यास (म० वन०)

क्षमावानो के लिए ही यह लोक है। क्षमावानों के लिए ही परलोक है। क्षमाशील पुरुष इस जगत में सम्मान और परलोक में उत्तम गति पाते है।

यदि न स्युर्मानुषेषु क्षमिण पृथिवीसमा ।
न स्यात् सधिर्मनुष्याणा क्रोधमूलो हि विग्रह ॥
—वेदव्यास (म० वन०)

यदि मनुष्यो में पृथ्वी के समान क्षमाशील पुरुष न हो तो मानवो में कभी सन्धि हो ही नही सकती, क्योकि झगडे की जड तो क्रोध ही है।

क्षुद्र

रत्नै रापूरितस्यापि मदलेशोस्ति नाम्बुधे ।
मुक्ता कतिपया प्राप्य मातगा मद-विह्वला ॥ —अज्ञात

रत्नो से भरा रहने पर भी समुद्र मदविह्वल नही होता। किन्तु एक आध मुक्ता (मोती) पालने से ही हाथी मदमत्त हो जाता है। तात्पर्य यह है कि क्षुद्र व्यक्ति थोडा पाकर ही इतराने लगते है।

क्षुधा

जिस तरह सूखी लकडी जल्दी से जल उठती है, उसी तरह क्षुधा से बावला मनुष्य जरा जरा सी बात पर तिनक जाता है। —अज्ञात

The exploited and suffering masses carry on the struggle, for their drill-sergeant is hunger

चूसी जानेवाली पीडित प्रजा को लडाई में पिले रहने के लिए क्षुधा ही उनकी व्यायाम शिक्षक है। —जवाहरलाल नेहरू

क्षुधा पत्थर की दीवार को भी तोड डालती है। —कहावत

Hunger and cold deliver a man up to his enemy

क्षुधा और सरदी से पीडित मनुष्य अपने को दुश्मन के हवाले कर देता है।
—कहावत

खजाना

राजा की जड है खजाना और सेना, इनमें सेना की जड है खजाना, सेना सब धर्मों की रक्षा का मूल है इसलिये सब के मूलभूत खजाना को बढाना चाहिए।
—वेदव्यास (म० शा०)

खजाने के नष्ट होने से राजा के बल का नाश होता है।
—वेदव्यास (म० शा०)

खर्च

खर्च तो गगाजी का प्रवाह है। जल तो वहता ही है इसलिए खर्च होना भी जरूरी है। हाँ वरसाती नदी की तरह खर्च नही होना चाहिए।

—डाक्टर रामकुमार वर्मा

रुपए ने कहा मेरी चिन्ता न कर पाई की चिन्ता कर। —चेस्टरफील्ड

अपार धनशाली कुवेर भी यदि आमदनी से अधिक खर्च करे तो कगाल हो जाता है। —चाणक्य

छोटे-छोटे खर्चों से सावधान रहो। थोड़ा-थोड़ा जल रिसते रिसते वड़े वड़े जहाज डूब जाते हैं। —अज्ञात

धन पैदा करने की अपेक्षा उसके खर्च करने का काम कही कठिन है।

खतरा

खतरे में हमारी चेतना अन्तर्मुखी हो जाती है। —प्रेमचन्द (गो-दान)

खल

दामिनि दमकि रही घन माही।
खल की प्रीति यथा थिर नाही। —तुलसी (मानस)

क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई।
जस थोरे धन खल बौराई॥ —तुलसी (मानस)

टेढ़ जानि सब वंदइ काहू।
वक्र चन्द्रमा ग्रसइ न राहू॥

—तुलसी (मानस, बाल)

कवि कोविद गावहिं अस नीती। खल सन कलहु न भल नहिं प्रीती॥
उदासीन नित रहिय गोसांईं। खल परिहरिय स्वान की नाईं॥

—तुलसी (मानस)

खातिरदारी

खातिरदारी जैसी चीज में मिठास जरूर है, पर उसका ढकोसला करने में न तो मिठास है और न स्वाद ही। —शरत्चन्द्र

खादी

खादी द्वारा कला की—जीवित कला की उपासना होती है। —विनोबा

खादी को छोड़ने के मानी होंगे भारतीय जनता को बेच देना, भारतवर्ष की आत्मा को बेच देना। —महात्मा गांधी

खादी न खरीदना करोड़ो 'लोगों' के मुह का 'कौर' छीन लेने के बराबर है। —विनोबा

स्वराज्य के समान ही खादी भी राष्ट्रीय जीवन के लिए श्वास के जितनी ही आवश्यक है। —महात्मा गांधी

खादी पहनने से हम अपने नादान गरीब, नगे, भूखे भाइयो की झोपडियो में उम्मीदो से भरी हुई झलक चमका सकते है। —जवाहरलाल नेहरू

खादी में गुप्तदान सिद्ध होता है। —विनोबा

खामोशी

Speech is great, but silence is greater.

वाचालता महान है परन्तु खामोशी उससे भी महान है। —कारलाइल

The temple of our purest thoughts is silence.

खामोशी हमारे पवित्रतम् विचारो का मदिर है। —श्रीमती एस० जे० हेल

Speech is silver, silence is golden; speech is human, silence is divine.

वाचालता चादी है, खामोशी सोना है; वाचालता मनुष्योचित है, खामोशी देवोचित। —जर्मन कहावत

खिदमत

देश तथा समाज की सच्ची खिदमत वही करता है जो बदले तथा यश की आशा न रखकर निःस्वार्थ भाव से खिदमत करता है। —महात्मा गांधी

जिस मनुष्य ने आत्मसयम की साधना नही की है, वह कभी सच्ची खिदमत नहीं कर सकता। —अज्ञात

खुदा

सारा दरिया स्याही वन जाय और सारा दरख्त कलम वन जाय तो भी खुदा का पूरा वयान नहीं हो सकता। —कुरान

खुद को जानना खुदा को जानना है। —अज्ञात

जो खुदा को जानता है वह खुद अपनी तारीफ नहीं करता। —अली

खुदा से डरने वाले को और किसी का क्या डर। —विनोबा

खुदी

It is the admirer of himself and not the admurer of virtue, that thinks himself superior to others

जो स्वयं का प्रशसक है, गुणो का प्रशसक नहीं वही मनुष्य अपने को औरो से उच्च समझता है। —प्लूटार्क

Conceit may puff a man up, but can never prop him up

खुदी से आदमी फूल सकता है परन्तु स्वयं अपने को सहारा नहीं दे सकता। —रस्किन

खुशवू

फूलों की खुशवू वायु के विपरीत नही जाती, परन्तु मानवी गुणो की खुशवू चारो दिशा में फैल जाती है। —धम्मपद

खुशामद

अगर वादशाह दिन को रात्रि वतलावे तो यही कहना चाहिए कि वह चन्द्रमा और रोहणी है। —सादी

खुशामदी

खुशामदी आदमी इसलिए आपकी खुशामद करता है कि वह आपको अयोग्य समझता है, लेकिन आप उसके मुंह से अपनी प्रशंसा सुनकर फूले नहीं समाते। —टाल्सटाय

रहिमन जो रहिवो चहै कहै वाहि के दांव।
जो वासर को निसि कहै तो कचपची दिखाव॥ —रहीम

खुशी

Cheerfulness is health; its opposite melancholy, is disease
प्रसन्नता स्वास्थ्य है; इसका विपरीत उदासी, रोग है। —हेलीवर्टन

Happiness is neither within us only, nor without us; it is the union of ourselves with God.

प्रसन्नता न हमारे अन्दर ही है और न बाहर है वरन् यह हमारा ईश्वर के साथ ऐक्य है। —पास्कल

खुशी का रहस्य त्याग है। —एन्ड्रयू कारनेगी

अत्यन्त प्रसन्नचित्त मनुष्य वह है जो अपने जीवन के आदि और अन्त से सम्बन्ध स्थापित करना जानता है। —गेटे

खून

Murder will out.
खून सर पर चढ कर बोलता है। —कहावत

One murder makes a villain; millions, a hero; numbers sanctify the crime.

एक खून अधम बनाता है तो लाखो एक वीर! सख्या पाप को पवित्र बना देती है। —पोरटियस

खूबसूरती

Beauty is often worse than wine, intoxicating both the holder and the beholder.

खूबसूरती प्रायः मदिरा से भी बुरी है। यह स्वय को और देखने वाले दोनो को मदमत्त कर देती है। —जमीरमन

Beauty is a witch against whose charms faith melteth into blood.

खूबसूरती ऐसी जादूगरनी है कि उसके जादू से धर्म-ईमान गल कर खून हो जाते है। —शेक्सपियर

खूबसूरत वस्तु में सभी मनुष्यो की दृष्टि को आकर्षित करने की इतनी प्रबल शक्ति है कि कोई भी उससे प्रसन्न हुए बिना नही रह सकता। —क्लेंडन

खोटा

यदि आप खोटे मनुष्यों को देखते और उनकी बातो को सुनते हैं तो यही से खोटेपन का आरम्भ हो गया, समझिए। —कन्फ्यूशस

रहिमन खोटी आदि को, सो परिनाम लखाय।
ज्यो दीपक तम को भखै, कज्जल वमन कराय। —रहीम

ख्याति

ख्याति-प्रेम वह प्यास है जो कभी नही बुझती। वह अगस्त ऋषि की भाति सागर को पीकर भी शान्त नही होती। —प्रेमचन्द

ख्याति नदी के प्रवाह के समान है। जैसे नदी के प्रवाह में हल्की तथा फूली हुई वस्तु ऊपर तैरा करती है और जड़ तथा गरुई नीचे डूब जाती है, उसी प्रकार प्रशसा रूपी प्रवाह में उत्तमोत्तम गुण डूबे रहते हैं, केवल छोटे-छोटे गुण ऊपर दिखलाई देते है। —वेकन

धन और स्त्री का छोड़ना सहज है परन्तु ख्याति का लोभ छोड़ना बहुत कठिन है। —हनुमानप्रसाद पोद्दार

Fame like the river is narrowest at its source and broadest afar off.
ख्याति नदी की भाँति अपने उद्गम स्थान पर अति संकीर्ण और बहुत दूर अति-विस्तृत होती है। —डेवीनेण्ट

अपनी ख्याति और स्मृति के लिए मै दूसरों की दया और कृपा पर निर्भर रहता हूँ। —वेकन

Men's evil manners live in brass; their virtues we write in water.
मनुष्य की बुराइया दीर्घजीवी होती है, उसकी अच्छाइयां अल्पायु होती हैं। —शेक्सपियर

लोकमान्य और विचारशील मनुष्यो के द्वारा की गयी प्रशसा सुवासित तैल के समान सर्वत्र शीघ्र फैल जाती है। —वेकन

Fame is a magnifying glass
ख्याति एक आतशी शीशा है। —कहावत

Fame is but the breath of the people, and that often unwholesome

ख्याति केवल जनता की स्वाँस है और वह प्राय: अस्वास्थ्यजनक है। —रूसो

Desire of glory is the last garment that even wise men put off

ख्याति की अभिलाषा वह पोशाक है जिसे ज्ञानी मनुष्य भी अन्त में उतारते है। —कहावत

ख्वाहिश (दे० 'इच्छा')

Desires are nourished by delays.

ख्वाहिशो का विलम्ब द्वारा पालन पोषण होता है। —कहावत

गंगा जी

अपहृत्य तमस्तीव्रं यथा भात्युदये रवि।
तथापहृत्य पाप्मानं भाति गङ्गाजलोक्षित:॥ —वेदव्यास

जैसे सूर्य उदय काल में घने अन्धकार को विदीर्ण करके प्रकाशित होते हैं; उसी प्रकार गंगाजल में स्नान करनेवाला पुरुष अपने पापो को नष्ट करके सुशोभित होता है।

विसोमा इव शर्वर्यो विपुष्पास्तरवो यथा।
तद्वद् देशा दिशश्चैव हीना गङ्गाजलै शिवै:॥

—वेदव्यास (महा० अनु०)

जैसे बिना चादनी की रात और बिना फूलो के वृक्ष शोभा नही पाते, उसी प्रकार गगा जी के कल्याणमय जल से वञ्चित हुए देश और दिशाएं भी शोभा एव सौभाग्य से हीन हैं।

भवन्ति निर्विषा: सर्पा यथा तार्क्ष्यस्य दर्शनात्।
गङ्गाया दर्शनात् तद्वत् सर्वपापै प्रमुच्यते॥

—वेदव्यास (वही)

जैसे गरुड़ को देखते ही सारे सर्पों के विष झड़ जाते हैं, उसी प्रकार गंगाजी के दर्शनमात्र से मनुष्य सब पापो से छुटकारा पा जाता है।

'नास्ति गङ्गासमं तीर्थं'　　—बृह० यो० याज्ञ०

गगाजी के समान कोई तीर्थ नही है।

गंग सकल मुद मंगल मूला,
सब सुख करनि हरनि सबशूला ।।

—तुलसी (मानस अयो०)

गंगा जी मे जाकर अपवित्र जल भी पवित्र हो जाता है।　　—तुलसी

गम खाना (दे० 'क्षमा')

चार बाते सुनकर गम खा जाना इससे कही अच्छा है कि तनाजा हो।

—प्रेमचन्द

गरीब (दे० 'दरिद्र')

उस मनुष्य से अधिक गरीब कोई नही है, जिसके पास केवल पैसा है।

—एडविनपग

गरीब होना और गरीब मालूम पड़ना यह कभी तरक्की न करने का एक निश्चित मार्ग है।　　—गोल्डस्मिथ

भगवान गरीब को गरीब रखकर आजमाता है कि वह हिम्मत रखता है या नही !　　—विनोबा

गरीब वह है जिसका व्यय आय से अधिक है।　　—ब्रूएयर

He is not poor that has little, but he that desires much.

वह गरीब नही जिसके पास कम धन है वरन् गरीब वह है जिसकी अभिलाषाए बढी हुई है।　　—डेनियल

गरीबो के अतिरिक्त कुछ ही ऐसे व्यक्ति है जो गरीबो के बारे में सोचते हैं।

—एल० ई० लन्डन

मनुष्य को अपने जीवन के बाहर की कल्पना करना मुश्किल होता है। इसीलिए कहा गया है कि गरीब की सेवा करने के लिए गरीब बनना चाहिए।

—विनोबा

गरीबी

Poverty is the test of civility and the touchstone of friendship.
गरीबी विनम्रता की परीक्षा और मित्रता की कसौटी है। —हैजलिट

सभी महान् धार्मिक नेताओ ने गरीबी को जानबूझ कर अपने भाग्य के समान अपनाया। मुहम्मद साहब ने कहा है कि गरीबी मेरा अभिमान है। —महात्मा गांधी

गरीबी एक अपराध है और आधुनिक सभ्यता की देन, जहा भाई का नाता भी 'पोजीशन' की मर्यादाओ में बँधा है, जहा श्रद्धा, भक्ति, यहा तक कि जीवन-संगिनी पत्नी के प्रेम की भी कीमत है। यह आधुनिक सभ्यता है। —अज्ञात

गरीबी स्वय अपमानजनक नही है, केवल उस गरीबी के अतिरिक्त जो आलस्य व्यसन, फिजूलखर्ची और मूर्खता के कारण हुई हो। —प्लूटार्क

If poverty is the mother of crimes, want of sense is the father of them
यदि गरीबी अपराधो की जननी है तो बुद्धिराहित्य उनका पिता है। —ब्रूएयर

Poverty of any kind places us in our proper relation to God, while riches of any kind, mind or money, tend to sever us from Him
किसी प्रकार की भी गरीबी हमारा ईश्वर से उचित सम्बन्ध जोड देती है जबकि हर प्रकार की अमीरी, मन या धन की, हमारा उनसे विच्छेद करा देती है।
—फ्रैंक क्रासले

He that hath pity upon the poor lendeth unto the lord
जो दरिद्रो पर दया करता है वह अपने कार्य से ईश्वर को ऋणी बनाता है।
—बाइबिल

Poverty is not a shame, but the being ashamed of it is.
गरीबी लज्जा नही है परन्तु गरीबी से लज्जित होना लज्जा की बात है।
—कहावत

गरीब वे लोग है जो अपने को गरीब मानते है, गरीबी गरीब समझने मे ही है।
—एमर्सन

गरीबी सब कलाओ के आविष्कार का कारण है। —कहावत

Poverty makes a man acquainted with strange bed-fellows.
गरीवी अनोखे मनुष्यो से घनिष्ट सम्वन्ध करा देती है। —कहावत

गर्व

जिसने गर्व किया, उसका अवश्य पतन हुआ। —महर्षि दयानन्द

Pride in prosperity turns to misery in adversity.
वैभव में गर्व विपत्ति में दु ख का रूप ग्रहण कर लेता है। —कहावत

Pride breakfasted with plenty, dined with poverty and supped with infamy.
गर्व समृद्धि के साथ जलपान करता है, गरीवी के साथ दोपहर का भोजन एवं वदनामी के साथ रात्रि का भोजन करता है। —फ्रैंकलिन

गर्व हमारे शत्रुओ की सख्या को वढ़ाता है परन्तु हमारे मित्रो से सम्वन्ध-विच्छेद कर उन्हें भगा देता है। —कहावत

Pride goes before, and shame follows after.
पहले गर्व चलता है उसके वाद कलंक आता है। —कहावत

कविरा गरव न कीजिए कवहुं न हँसिए कोय।
अवहू नाव समुद्र में का जाने का होय॥ —कवीर

गर्व सन्तोप का घोर शत्रु है। —कहावत

धन अरु यौवन को गरव कवहूं करिए नांहि।
देखत ही मिट जात है, ज्यो वादर की छांहि॥ —अज्ञात

गलती

गलतियाँ करके, उनको मजूर करके और उन्हें सुधार करके ही मैं आगे वढ सकता हूँ। पता नही क्यो, किसी के वरजने से या किसी की चेतावनी से मैं उन्नति कर ही नही सकता। ठोकर लगे और दर्द उठे तभी मैं सीख पाता हूँ। —महात्मा गांधी

गलती ज्ञान की शिक्षा है। जव तुम गल्ती करो तो उसे वहुत देर तक मत देखो। उसके कारण को ले लो और आगे की ओर देखो। भूत वदला नहीं जा सकता, भविष्य अव भी तुम्हारे हाथ में है। —अज्ञात

No man ever became great or good except through many and great mistakes

बहुत सी तथा बडी गलतियाँ किये बिना कोई मनुष्य बड़ा और महान् नही बनता। ग्लेडस्टन

बुद्धिमान् मनुष्य दूसरे की गलतियो से अपनी गलती सुधारते है।
—प्यूब्लियस साइरस

Sometimes we may learn more from a man's errors than from his virtues

हम प्राय दूसरे के गुणो की अपेक्षा उसकी गलतियो से अधिक सीख लेते है।
—लागफेलो

Any man may make a mistake but none but a fool will continue in it.

गलती कोई भी मनुष्य कर सकता है परन्तु मूर्ख के अतिरिक्त कोई उसको जारी नही रखेगा। —सिसरो

Error of opinion may be tolerated where reason is left free to combat it

सम्मति की त्रुटि वहा सहनीय है जहा बुद्धि उसके विरोध के लिए स्वतत्र है।
—जेफरसन

Error, though blind herself, sometimes bringeth forth children that can see.

गलती यद्यपि स्वय अन्धी है तथापि वह ऐसी सतान उत्पन्न करती है जो देख सकती है। —कहावत

हमारा गौरव कभी न गिरने में नही है वल्कि प्रत्येक वार उठने में है जब कभी हम गिरें। —कन्फ्यूशस

गलती वह शक्ति है जो मनुष्यो को ठुकराकर आपस में मिलाती है, सत्य केवल सत्य कर्मो से ही मनुष्यो में पहुचाया जा सकता है। —टालस्टाय

Error is not a fault of our knowledge but a mistake of our judgment giving assent to that which is not true

गलती, हमारे ज्ञान की नही अपितु निर्णय की त्रुटि है जो असत्य के लिए अपनी स्वीकृति दे देता है। —लॉक

गल्प

गल्प का आधार अब घटना नहीं, मनोविज्ञान की अनुभूति है। —प्रेमचन्द

गहना (दे० 'आभूषण')

स्त्री का गहना ऊख का रस है जो पेरने ही से निकलता है। —प्रेमचन्द

धैर्य्य और विनय भारत की देवियो का आभूषण है। —प्रेमचन्द

ग्रन्थ

ग्रन्थो मे आत्मा है। सद्ग्रन्थो का कभी नाश नही होता। —लिटन

Some books are to be tasted; others to be swallowed and some few to be chewed and digested.

कुछ 'पुस्तकें' चखी जाती है, कुछ 'निगली' जाती हैं, और कुछ चबा चबा कर खायी पचायी जाती हैं। —बेकन

बहते हुए झरनो में प्रासादिक ग्रंथ सचित है, पत्थरो मे दर्शन छिपे हुए हैं। —शेक्सपियर

A good book is the precious life-blood of a master-spirit, embalmed and treasured up on purpose to a life beyond life.

सद्ग्रन्थ महान् आत्मा का मूल्यवान् जीवन-रक्त है जो ध्येयस्वरूप आनेवाली पीढ़ियो के लिए स्वरक्षित और सचित रखा गया है। —मिल्टन

Books are lighthouses erected in the great sea of time.

ग्रन्थ समय के महासमुद्र में प्रकाशगृह की तरह खड़े हुए है। —ई० पी० विपिल

A room without books is a body without a soul.

✓ ग्रन्थरहित कमरा आत्मारहित शरीर के सदृश है। —सिसरो

Books are the masters who instruct us without rods and ferules, without hard words and anger, without clothes and money.

ग्रन्थ ऐसे शिक्षक है जो बिना बेत मारे, बिना कटु शब्द और क्रोध के, बिना वस्त्र और धन के हमें शिक्षा देते हैं। —रिचार्ड डी बरी

Without books, God is silent, justice dormant, Natural science at a stand, philosophy lame, letters dumb, and all things involved in darkness

विना ग्रन्थ के ईश्वर मौन है, न्याय निद्रित है, प्राकृतिक विज्ञान स्तब्ध है, दर्शन लँगडा है, शब्द गूँगे है और सभी वस्तुए पूर्ण अधकार में है। —वार्योलिन

गाँठ

रहिमन खोजो ऊख में, जहाँ रसन की खानि।
जहाँ गाँठ तहँ रस नही, यही प्रीति की हानि ॥ —रहीम

रहिमन धागा प्रेम को, मत तोरो चटकाय।
टूटे से फिरि ना मिलै, मिले गाँठि परिजाय ॥ —रहीम

जहाँ गाँठि तहँ रस नही, यह जानत सब कोय।
मडये तर की गाँठि में, गाँठि गाँठि रस होय ॥ —रहीम

गाना

जब शरीर का रोआँ रोआँ रोता हो, दिल के हरएक तार में दुख की लहर भर गयी हो, चित को हर प्रकार की तपन और जलन की झुलस मता रही हो—गाने की एक स्वर्गीय तान में अपना समूचा दुख डुबो देना कितना सरल और सुगम है। —अज्ञात

A song will outlive all sermons in the memory.

गाना, स्मृति में सभी नीति वचनो की अपेक्षा अधिक काल तक जीवित रहेगा। —एच० गिल्स

गाय

गोभिस्तुल्य न पश्यामि धन किञ्चिदिहाच्युत ॥
कीर्तन श्रवण दान दर्शन चापि पार्थिव।
गवा प्रशस्यते वीर सर्व-पाप-हर शिवम् ॥—वेदव्यास (महा)

मै इस ससार में गौवो के समान दूसरा कोई धन नही समझता। गौवो के नाम और गुणो का कीर्तन-श्रवण, गौवो का दान तथा उनका दर्शन—इनकी बडी प्रशसा की गयी है। यह समस्त कार्य सम्पूर्ण पापो को दूर करके परम कल्याण को प्रदान करने वाले है।

त्वं माता सर्वदेवाना त्वं च यज्ञस्य कारणम्।
त्वं तीर्थं सर्वतीर्थानां नमस्तेऽस्तु सदानघे॥
(स्कन्द-ब्राह्म-धर्मारण्य)

हे पाप रहिते! तुम समस्त देवो की जननी हो। तुम यज्ञ की कारण रूपा हो, तुम समस्त तीर्थो की महातीर्थ हो; तुमको सदैव नमस्कार है।

मेरे विचार के अनुसार गौ-रक्षा का सवाल स्वराज्य के प्रश्न से छोटा नही। कई वातो में मै इसे स्वराज्य के सवाल से भी वड़ा मानता हूँ। मेरे नजदीक गोवव और मनुष्यवव एक ही चीज है। —महात्मा गांवी (२५-१-२५)

फरमाया रसूल अल्लाह ने कि 'गाय का दूव शिफा है और घी दवा और उसका मांस नितान्त मर्ज (रोग) है।' —हजरत आयशा
(हजरत मोहम्मद साहव की धर्मपत्नी)

गाय के गोश्त में वीमारी है, उसके दूव में दुआ और घी में सफा है।
—अल्लामा जलालुद्दीन सियुती (अलरहमत)

गाय को मारने वाला, फलदार दरख्त काटने वाला और शराव पीनेवाला कभी नही वख्शा जायगा। —मुल्ला मोहम्मद वाकर हुसैनी (महारुल अनवर)

गवां सेवा तु कर्तव्या गृहस्थै पुण्यलिप्सुभिः।
गवां सेवापरो यस्तु तस्य श्रीर्वर्वतेऽचिरात्॥ —अज्ञात

मेरा सारा प्रयत्न गो-वध रोकने के लिए है। जो गाय को वचाने के लिए प्राण होम देने को तैयार नही, वह हिन्दू नही। —महात्मा गांवी (२४-४-२१)

गायत्री

गायत्री छन्दसां मातेति। —नारायण उप०

गायत्री समस्त वेदो की माता है।

नास्ति गङ्गासमं तीर्थं न देव. केशवात्परः।
गायत्र्यास्तु परं जप्यं न भूतं न भविष्यति॥
—वृह० यो० याज्ञ०

गंगाजी के समान कोई तीर्थ नही है, श्रीकृष्ण भगवान् से वढकर कोई देवता नही है और गायत्री से वढकर जपने योग्य मन्त्र न कोई हुआ न आगे होगा।

सव्याहृतिका सप्रणवा गायत्री शिरसा सह।
ये जपन्ति सदा तेषा न भय विद्यते क्वचित्॥

—शंख स्मृति

जो सदा गायत्री का जाप व्याहृतियो और ओंकार सहित करते है उन्हे कही भी कोई भय नही सताता।

गायत्र्यास्तु पर नास्ति शोधन पापकर्मणाम्।
महाव्याहृतिसयुक्ता प्रणवेन च सजपेत्॥ —संवर्तस्मृति

गायत्री से बढकर पापकर्मों का शोधक दूसरा कुछ भी नही है। ओंकार सहित तीन महाव्याहृतियो से युक्त गायत्री मन्त्र का जप करना चाहिए।

गायत्री वेद-जननी गायत्री पापनाशिनी।
गायत्र्यास्तु परन्नास्ति दिविचेह च पावनम्॥ —वशिष्ठ

गायत्री वेदो की जननी है। गायत्री पापो को नाश करनेवाली है। गायत्री से बडा और कोई पवित्र मत्र स्वर्ग तथा पृथ्वी पर नही है।

गायत्री मन्त्र द्वारा सारे विश्व को उत्पन्न करनेवाले परमात्मा का जो उत्तम तेज है उसका ध्यान करने से वुद्धि की मलिनता दूर हो जाती है और धर्माचरण में श्रद्धा और योग्यता उत्पन्न होती है। —स्वामी दयानन्द सरस्वती

गायन्त त्रायते यस्माद् गायत्री तेन कथ्यते।

गायन (तल्लीनता से जप) करनेवाले की त्राता (रक्षक) होने से वह गायत्री कही जाती है।

गाली

गाली देनेवाला तिरस्कृत नही करता वरन् गाली के प्रति हृदय में उठी हुई भावना तिरस्कार करती है, इसलिए जब कोई मनुष्य तुमको उत्तेजित करता है तो यह तुम्हारे अन्दर की तुम्हारी ही भावना है जो तुम्हे उत्तेजित करती है।

—इपिक्टेटस

It is better a man should be abused than forgotten

मैं गाली खा लेना अच्छा समझता हू बजाय इसके कि कोई मुझे भुला दे।

—डा० जॉनसन

गीत

सुख दुख के भावावेगमयी अवस्था-विशेष का गिने चुने शब्दो में स्वरसाधना के उपयुक्त चित्रण कर देना ही गीत है। —महादेवी वर्मा

Our sweetest songs are those that tell us of saddest thought.

हमारे मधुरतम गीत वही होते है, जिनमें हमारी गहन संवेदना अभि-व्यंजित होती है। —शेली

भावना से प्रेम, प्रेम से आनन्द और आनन्दातिरेक से गीतो की सृष्टि होती है।
—रस्किन (विजय पथ)

गीता

गीता विवेकरूपी वृक्षो का एक अपूर्व बगीचा है। यह सब सुखो की नींव है। सिद्धान्त-रत्नो का भण्डार है। नवरसरूपी अमृत से भरा हुआ समुद्र है। खुला हुआ परमधाम है। —संत ज्ञानेश्वर

गीता हमारे धर्मग्रन्थों में एक अत्यन्त तेजस्वी और निर्मल हीरा है।
—लोकमान्य तिलक

गीता विश्वधर्म की एक पुस्तक है। ···वह हमारे लिए सद्गुरु रूप है, माता-रूप है। —महात्मा गांधी

गीता वह तैलजन्य दीपक है जो अनन्त काल तक हमारे ज्ञान मन्दिर में प्रकाश करता रहेगा। —महर्षि द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर

गीता को धर्म का सर्वोत्तम ग्रन्थ मानने का यही कारण है कि उसमें ज्ञान, कर्म और भक्ति—तीनो योगो की न्याययुक्त व्याख्या है; अन्य किसी भी ग्रन्थ से इसका सामंजस्य नही है। —बंकिमचन्द्र

गीता जबानी जमा खर्च का शास्त्र नही, किन्तु आचरण शास्त्र है। —विनोबा

गुण

पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते। —कालिदास (रघु०)

गुण सब स्थानो पर अपना आदर करा लेता है।

गुणा सर्वत्र पूज्यते न महत्योपि सपद ।
पूर्णेन्दु किं तथा वद्यो निष्कलको यथा कृश.॥

—चाणक्य

गुण की पूजा सर्वत्र होती है, वडी सम्पत्ति की नहीं, जिस प्रकार पूर्ण चन्द्रमा वैसा वंदनीय नही है जैसा निर्दोष द्वितीया का क्षीण चन्द्रमा।

बौना छोटा ही रहेगा चाहे वह पर्वत पर खडा हो, देव देव ही रहेगा चाहे वह कुएँ में ही क्यो न खडा हो। —सेनेका

यत्रास्ति लक्ष्मीर्विनयो न तत्र ह्यभ्यागतो यत्र न तत्र लक्ष्मी ।
उभौ च तौ यत्र न तत्र विद्या नैकत्र सर्वो गुणसंनिपात ॥ —अज्ञात

जहा लक्ष्मी रहती है वहा नम्रता नही है, और जहा अतिथि समागम है वहा लक्ष्मी नही रहती है। और जहा दोनो है वहा विद्या का ही अभाव रहता है, अत यह निश्चित है—एक जगह सव गुण समूह नही रहते।

Talent is that which is in a man's power, genius is that in whose power a man is.

गुण मनुष्य के वश में है, प्रतिभा के वश में मनुष्य स्वय होता है। —लावेल

दातापन, मीठीबोली, धीरज और उचित का ज्ञान ये अभ्यास से नही मिलते, ये चार स्वाभाविक गुण है। —चाणक्य

एको हि दोषो गुणसंनिपाते निमज्जतीन्दो किरणेष्विवाङ्क।
—कालिदास (कुमार संभव)

जहा वहुत से गुण हो वहा यदि एक-आध अवगुण भी आ जाय तो उनका वैसे ही पता नही चल पाता जैसे चन्द्रमा की किरणो में उनका कलक।

Genius does what it must and talent what it can.

प्रतिभावान मनुष्य वह कार्य करते है जिसे किये विना वे रह नहीं सकते, गुणी मनुष्य वह कार्य करते है जो वह कर सकते है। —ओवेन मेरीडेन

गुन के ग्राहक सहस नर, बिनु गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला, सब्द सुनै सब कोय॥

—गिरिधर कविराय

Contemporaries appreciate the man rather than the merit; but posterity will regard the merit rather than the man.

समकालीन व्यक्ति गुण की अपेक्षा मनुष्य की प्रशंसा करते हैं, आने वाली पीढ़ियां मनुष्य की अपेक्षा उसके गुणों का सम्मान करेंगी। —कोल्टन

गुण को किसी की सिफारिश की आवश्यकता नहीं होती।

शूराश्च कृतविद्याश्च रूपवत्यश्च योषितः।
यत्र यत्र गमिष्यन्ति तत्र तत्र कृतादराः॥ —अज्ञात

वीर, विद्वान् और रूपवती स्त्रियाँ जहाँ जहाँ जाती हैं वहाँ वहाँ इनका आदर ही होता है। —अज्ञात

गुणाः सर्वत्र पूज्यन्ते पितृवंशो निरर्थक.।
वासुदेवं नमस्यन्ति वसुदेवं न ते जना॥ —चाणक्य

गुणों का ही सर्वत्र सम्मान होता है, गुणी के वंश का नहीं। लोग वासुदेव (कृष्ण) की ही वन्दना करते हैं, उनके पिता वसुदेव की नहीं।

यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारे गुण रौशन हो तो दूसरे के गुणों को मान्यता दो।

विवेकिनमनुप्राप्ता गुणा यान्ति मनोज्ञताम्।
सुतरां रत्नमाभाति चामीकरनियोजितम्॥ —चाणक्य

विवेकी को पाकर गुण सुन्दरता को प्राप्त होते हैं, सोने में जड़ा हुआ रत्न अत्यन्त शोभित होता है।

जहाँ रहै गुनवंत नर ताकी शोभा होत।
जहाँ धरै दीपक तहाँ निहचै करै उदोत। —अज्ञात

गुणैरुत्तमतां यान्ति नोच्चैरासनसंस्थितैः।
प्रसाद शिखरस्थोपि काकः किं गरुड़ायते॥ —चाणक्य

गुणों से ही मनुष्य महान् होता है, ऊंचे आसन पर बैठने से नहीं। महल के ऊंचे शिखर पर बैठने से भी कौवा गरुड़ नहीं हो सकता।

गुन गरुवौ लघुता गहै, तिहि सनमानत धीर।
मंद तऊ प्यारो लगै, सीतल सुरभि समीर॥ —अज्ञात

परस्तुतगुणो यस्तु निर्गुणोऽपि गुणी भवेत्।
इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः॥ —चाणक्य

जिस गुण का दूसरे लोग वर्णन करते है उससे निर्गुण भी गुणवान् होता है, इन्द्र भी अपने गुणो की प्रशंसा करने से लघुता को प्राप्त होता है।

गुणा. कुर्वन्ति दूतत्व दूरेऽपि वसता सताम्।
केतकी गन्धमाघ्राय स्वयमायान्ति षट्पदा:।

—अज्ञात

सज्जन लोग चाहे दूर भी रहें पर उनके गुण उनकी ख्याति के लिए स्वय दूत का कार्य करते हैं। केवड़ा पुष्प की गन्ध सूंघकर भ्रमर स्वय उनके पास चले जाते हैं।

गुण-स्थान

कौशेय कृमिज सुवर्णमुपलाद् दूर्वापि गोरोमत।
पकात्तामरस शशाक उदधेरिन्दीवर गोमयात्॥
काष्ठादग्निरहे फणादपि मणिर्गोपित्ततो रोचना।
प्राकाश्य स्वगुणोदयेन गुणिनो गच्छन्ति कि जन्मना॥

—पचतत्र

रेशम कीडे से, सोना पत्थर से, नील कमल गोबर से, लाल कमल कीचड से, चन्द्रमा समुद्र से, गोरोचन गौ के पित्त से, अग्नि लकडी से, मणि सर्प के फन से और दूब गौ के रोम से उत्पन्न होती है। इन सभी वस्तुओ का उत्पत्ति स्थान वैसा महिमा-मय नही जैसा इनका गुण। इससे स्पष्ट है कि कोई भी वस्तु गुण के उदय से ही प्रकाशमान होती है। उनके उत्पत्ति स्थान का कोई महत्त्व नही होता।

गुण-ग्राहक

गुणी ही गुण को परखते है जैसे हीरे की कदर जौहरी ही करते है। —अज्ञात

To love one that is great is almost to be great one's self

महान की उपासना करना स्वय महान होने के बराबर है। —श्रीमती नेकर

Every man I meet is my superior in some way. In that I learn of him.

प्रत्येक मनुष्य जिससे मैं मिलता हूँ किसी न किसी रीति में मुझसे श्रेष्ठ होता है। इसलिए मैं उससे कुछ शिक्षा लेता हूँ। —एमर्सन

गुण-ग्राहकता

The way to develop the best that is in a man is by appreciation and encouragement.

मनुष्य के भीतर जो कुछ सर्वोत्तम है उसका विकास गुण-ग्राहकता एवं प्रोत्साहन द्वारा ही किया जा सकता है। —चार्ल्स श्वेब

सफलता का रहस्य निष्कपट गुण-ग्राहकता है। —अज्ञात

The difference between appreciation and flattery ? One is sincere and the other insincere. One comes from the heart out, the other from the teeth out. One is unselfish, the other selfish. *One is universally admired, the other is universally condemed.*

गुण-ग्राहकता और चापलूसी में अन्तर ? गुण-ग्राहकता सच्ची होती है और चापलूसी झूठी। गुणग्राहकता हृदय से निकलती है और चापलूसी दांतो से। एक नि.स्वार्थ होती है और दूसरी स्वार्थमय। एक की संसार में सर्वत्र प्रशंसा होती है और दूसरे की सर्वत्र निन्दा। —डेल कारनेगी

गुणहीन

कुलहीने नृप भृत्या. कुलीनमति चोन्नतम्।
सत्यज्यान्यत्र गच्छंति शुष्कं वृक्षमिवाण्डजा.॥ —अज्ञात

उन्नत कुल मे उत्पन्न फलहीन (अपने दया दाक्षिण्यादि गुण से) राजा को छोड़ कर नौकर अन्यत्र चले जाते है, किस तरह ? जैसे सूखे हुए पेड को छोड़कर पक्षी दूसरे पेड़ पर चले जाते हैं।

गुणी

गुणी मनुष्य अपनी प्रशंसा स्वय नही करते वल्कि दूसरों से अपनी प्रशंसा सुनकर नम्र हो जाते है। —अज्ञात

वडे वड़ाई ना करें, वडे न वोले वोल।
रहिमन हीरा कव कहै, लाखट का मेरो मोल॥ —रहीम

प्रवला एवं गुणवतामाक्रम्य धुर पुर. प्रकर्पन्ति।
तृणकाष्ठमेव जलधे उपरिप्लवते न रत्नानि॥ —अज्ञात

गुणवानो को दुष्ट लोग दबाकर नीचे कर देते है और अपने आगे हो जाते है। जैसे तृण और लकडियाँ समुद्र के ऊपर तैरती है किन्तु रत्न नही, वह नीचे बैठ जाते है।

गुणवन्त. क्लिश्यन्ते प्रायेण भवन्ति निर्गुणा. सुखिन ।
वन्धनमायान्ति शुका भवन्ति यथेष्ट सचारिणा काका ॥ —अज्ञात

प्राय देखा जाता है कि गुणी क्लेश भोगते रहते है और निर्गुण सुखी रहते है। तोते पिजडे में बन्द किये जाते है, कौए नही। वे स्वेच्छापूर्वक निर्भय घूमते है।

गुनाह

अगर गुनाह से किसी की जान बचती हो तो ऐसा करना सवाब है। —प्रेमचन्द

गुनाह छिपा नही रहता। वह मनुष्य के मुख पर लिखा रहता है। उस शास्त्र को हम पूरे तौरपर नही जानते, लेकिन बात साफ है। —महात्मा गाधी

गुप्त-भेद

He who trusts secrets to a servant, makes him his master

जो मनुष्य अपना गुप्त-भेद नौकरो पर प्रकाशित करता है वह उनको अपना मालिक बना लेता है। —ड्राइडेन

हम कैसे विश्वास करें कि दूसरे हमारे भेद को गुप्त रखेंगे जब कि हम स्वय ही उन्हे गुप्त नही रख सकते। —ला रोशेफो

दीवार के भी कान होते है, इसका ध्यान रखना चाहिए। —सादी

Trust no secrets to a friend, which if reported, would bring infamy.

किसी मित्र को अपना ऐसा भेद न बताओ जिसके जाहिर हो जाने पर बदनामी हो। —पेन्न

वह मनुष्य कम विश्वास पात्र है जो स्वय अपना गुप्त भण्डागार नही है।
—पोप

अर्थनाशं मनस्तापं गृहे दुश्चरितानि च।
नीचवाक्यं चापमानं मतिमान्न प्रकाशयेत्॥ —चाणक्य

धन का नाश, मन का ताप, घर का चरित्र, नीच का वचन और अपमान इनको बुद्धिमान् प्रकाशित न करे।

रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय।
मुनि अठिलैहैं लोग सब, बाटि न लैहैं कोय।।   —रहीम

गुरु

बिन गुरु होइ न ज्ञान।   —तुलसी

गुरु साहब दोनों खड़े, काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरुदेव की, जिन साहब दियो दिखाय।।   —कबीर

कबिरा ते नर अब हैं गुरु को कहते और।
हरि रूठै गुरु ठौर है गुरु रूठै नहिं ठौर।।   —कबीर

गुरोरवज्ञया सर्वं नश्यते च समुद्भवम्।

गुरु की अवहेलना करने से सारा अभ्युदय नष्ट हो जाता है।

यह तन विष की बेलरी गुरु अमृत की खान।
सीस दिये जो गुरु मिले तो भी सस्ता जान।।   —कबीर

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वर:, गुररेवपरब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नम.।
—अज्ञात

जो मनुष्य परमात्मा का ज्ञान प्राप्त कर लेता है, वह परमात्मा का ही स्वरूप बन जाता है और इस तरह सिद्ध है कि गुरु के आसन पर मनुष्य नही, किन्तु परमात्मा स्वय आसीन रहते है।   —निराला

जो स्वय प्रकाश फैलानेवाला है यदि वही अँधेरे में ठोकर खा खाकर गिरे तो वह दूसरो के लिए उजाला क्या करेगा।   —हरिऔध

गुरु को अगर हमने देह रूप से माना तो हमने गुरु से ज्ञान नही, अज्ञान पाया।
—विनोबा

गुरु कुछ नया नहीं देता। जो बीज रूप से रहता है, उसी को विकसित करने में सहायक होता है। मन्द सुगन्ध को बाहर निकालता है।   —साने गुरुजी

एकमात्र ईश्वर ही विश्व का पथ-प्रदर्शक और गुरु है।
—रामकृष्ण परमहंस

पतिरेव गुरुस्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतो गुरु.।
गुरुरग्निर्द्विजातीना वर्णानां ब्राह्मणो गुरु.।।   —चाणक्य

स्त्रियों का गुरु उनका पति है, आया हुआ अतिथि सब का गुरु है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इनका गुरु अग्नि है और चारों वर्णों का गुरु ब्राह्मण है।

गुलाम (दे० 'दास')

जो मनुष्य अपने मन का गुलाम बना रहता है वह कभी नेता और प्रभावशाली पुरुष नहीं हो सकता। —स्वेट मार्डेन

देह से ही नहीं जो दिल से भी गुलाम हो गये हैं वे कभी आजादी हासिल नहीं कर सकते। —महात्मा गांधी

जिन्हें हम हीन या नीच बनाये रखते हैं वे भी क्रमशः हमें हेय और दीन बना देते हैं। —रवीन्द्र

मायानदी के प्रवाह में बहे जाने वाले काम-शास्त्र के अनुयायी प्रवाह-पतित वासनाओं के गुलाम होते हैं। —विनोबा

जब गुलाम अपनी बेड़ी को आभूषण समझकर मुस्कराये, तब उसके मालिक की पूरी जीत हुई मानी जाती है। —महात्मा गांधी

गुलाम मनोवृत्ति वीर पूजा या निःशंक होकर आज्ञा मानने की वृत्ति से अलग चीज है। —गांधी जी

वे गुलाम हैं जिनको यह साहस नहीं है कि वे न्याय का साथ दें चाहे वे दो तीन की ही संख्या में क्यों न हों। —लोवेल

गुलामी

Slavery is a system of the most complete injustice

गुलामी पूर्ण अन्याय की एक व्यवस्था है।

गुलामी दुनिया का सबसे बड़ा घृणित पाप है। —सुभाषचन्द्र बोस

गुलामी अत्याचार और क्रूरता की प्रणाली है। —[illegible]

बन्दी-दशा तो सिर्फ जेल की चहार दीवारी के अन्दर ही नहीं होती, मनुष्य के हृदय को दबाना ही तो बन्धन है। —रवीन्द्र

एक घंटे के लिए भी गुलामी को रहने देना अन्याय है। —विलियम पिट

स्वर्ग की गुलामी की अपेक्षा तो नरक का अधिराज्य श्रेयस्कर है। —मिल्टन

गुस्सा

गुस्से को शर्बत के घूंट की तरह पी जाओ क्योंकि जहां तक उसके अंत का सम्बन्ध है, इससे अच्छी और कोई आनन्ददायक वस्तु नहीं है। —अज्ञात

गुस्सा इंजन है, अविवेक और अज्ञान उसके पहिये हैं। —अज्ञात

गुस्सा एक प्रकार का क्षणिक पागलपन है। —महात्मा गांधी

To be angry is to revenge the fault of others upon ourselves.
गुस्सा होना दूसरे की गलती का अपने से बदला लेना है। —पोप

As heat conserved is transmuted into energy, so anger controlled can be transmuted into a power which can move the world.

जैसे ताप स्वरचित रहकर शक्ति में परिवर्तित होता है उसी प्रकार क्रोध को अधीन रखकर ऐसी शक्ति में परिवर्तित किया जा सकता है जो विश्व को हिला दे।
—महात्मा गांधी

सज्जन मनुष्य का गुस्सा शीघ्रता से समाप्त हो जाता है। —कहावत

क्रोध के लक्षण शराब और अफीम दोनो से मिलते हैं। क्रोध के लक्षण क्रमश: सम्मोह, स्मृति-भ्रंश, और बुद्धिनाश माने गये हैं। —महात्मा गांधी

गूंगा

प्रकृति के समान गूंगे की भी अपनी महिमा होती है। —रवीन्द्र

गोपनीय

To keep your secret is wisdom, but to expect others to keep it is folly.

अपने भेद को गोपनीय रखना बुद्धिमानी है, परन्तु दूसरों से उसे गोपनीय रखने की आशा करना मूर्खता है। —ओ० डब्लू० होम्स

दिल की ऐसी कोई गुप्त बात नहीं है जिसे हमारे काम प्रकट न कर देते हों।
—मोलियर

गृहस्थ

गृहस्थ का घर भी एक तपोभूमि है, सहनशीलता और संयम खोकर कोई उसमें सुखी नहीं रह सकता। —जनार्दनप्रसाद झा "द्विज"

जिस गृह से अतिथि निराश लौटता है उस गृहस्थ के समस्त पुण्य वह ले जाता है और अपने पाप वहीं छोड़ जाता है। —अज्ञात

जो पुरुष धर्मानुकूल धन प्राप्त करके यज्ञ करता है, अतिथियों को खिलाता है वही सच्चा गृहस्थ है।

—वेदव्यास (म० आदि०)

गृहस्थ-जीवन की सफलता यही है कि उसके द्वारा अतिथि-सेवा हो।

—अज्ञात

जो गृहस्थ यथाशक्ति अपने आश्रम-धर्म का पालन करता है, वह मरने के पश्चात् अक्षय लोक प्राप्त करता है। —(वेदव्यास म० शा०)

गृहस्थाश्रम

गृहस्त्वेव हि धर्माणां सर्वेषां मूलमुच्यते —वेदव्यास (म०)

गृहस्थाश्रम ही सब धर्मों का मूल आधार है।

घर का प्रेम भारतीय नारी का जीवन है। —रवीन्द्र

जिस भांति सब प्राणी माता के आश्रय से जीते हैं उसी भांति अन्य सब आश्रम गृहस्थाश्रम के आधार पर स्थित है। —अज्ञात

वह गृहस्थाश्रम धन्य है, जिसमें आनन्दमय घर, विद्वान् पुत्र, सुन्दरी स्त्री, अच्छे मित्र, सात्त्विक धन, स्वपत्नी से प्रीति, [illegible] सेवा, [illegible] देवपूजा, मधुर भोजन सत्संगति और उपासनाएँ सदैव प्राप्त होती रहती हैं।

—[illegible]

गृहस्थी

सुखी परिवार [illegible] स्वर्ग है। —[illegible]

Woman, when you move about in your household service your limbs sing like a hill stream among its pebbles.

स्त्री ! जिस समय तू अपने गृह कामो में लीन रहती है, उस समय तेरे अंगो से ऐसी रागिनी निकलती है, जैसी पहाड़ी झरनो से निकलती है जब वे बिल्लौरो में से होकर क्रीड़ा करते हैं। —रवीन्द्र

Woman is the salvation or the destruction of the family.

स्त्री परिवार की मुक्ति है या विनाश है। —एमियेल

ग्लानि

मर्द लज्जित करता है तो हमें क्रोध आता है, स्त्रिया लज्जित करती है तो ग्लानि उत्पन्न होती है। —प्रेमचन्द

घटना

कभी कभी जीवन में ऐसी घटनाएँ हो जाती है जो क्षण मात्र में मनुष्य का रूप पलट देती है। —प्रेमचन्द (वरदान)

प्रत्यक्ष घटना विचार से कही अधिक प्रभावशालिनी होती है। रणस्थल का विचार कितना कवित्वमय है। युद्धावेश का काव्य कितनी गर्मी उत्पन्न करने वाला है। परन्तु कुचले हुए शव और कटे हुए अंग-प्रत्यंग देखकर कौन मनुष्य है जिसे रोमाच न हो आवे। —प्रेमचन्द

जैसे तिनका हवा का रुख बताता है वैसे ही मामूली घटनाएँ भी मनुष्य के हृदय की वृत्ति को बताती हैं। —महात्मा गांधी

घड़ी

समय परिवर्तन का धन है, परंतु घड़ी उसका उपहास करती है। उसे केवल परिवर्तन के रूप में दिखाती है, धन के रूप में नही। —रवीन्द्र

घमंड (दे० 'गर्व')

आदमी का सबसे बड़ा दुश्मन गरूर है। —प्रेमचन्द

घमंडी का सिर नीचा। —प्रेमचन्द

घमंडी आदमी प्राय. शक्की हुआ करता है। —प्रेमचन्द (गोदान)

घृणा

इस संसार में घृणा घृणा से कभी कम नही होती; घृणा प्रेम से ही कम होती है, यही सर्वदा उसका स्वभाव रहा है। —धम्मपद

पाप से घृणा करो, पापी से नही। —महात्मा गांधी

घायल

घायल की गति घायल जाने और न जाने कोय। —मीरा

घाव

घाव पर कपड़ा भी छुरी वन कर लगता है। दुखे हुए अंग को हवा भी दुखा देती है। —सुदर्शन

घूस

रुपए वाले दोषी न्याय को भी रास्ता वताते है और ऐसा भी देखा गया है कि घूस कानून को भी मोल ले लेती है। —शेक्सपियर

चंद्रमा

चद्रमा अपना प्रकाश संपूर्ण आकाश में फैलाता है; परंतु अपना कलक अपने ही पास रखता है। —रवीन्द्र

चक्रवर्ती

वसुन्धरा के समान चक्रवर्ती का हृदय भी उदार और सहनशील होना चाहिए। —जयशंकर प्रसाद

चक्रवर्ती राज्य का नाश उस समय तक नही होता, जव तक कि आपस में फूट न हो। —स्वामी दयानन्द सरस्वती

जिस देश को चक्रवर्ती राजा प्राप्त हो वह देश देवलोक ही हो जाता है। —हरिभाऊ उपाध्याय

स्वर्गलोक तो पुण्य के प्रभाव से भी मिल सकता है परन्तु चक्रवर्ती-पद उससे भी श्रेष्ठ है। —हरिभाऊ उपाध्याय

जो पुरुष पवित्र होकर जगत के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देता है, वह चक्र-वर्ती से भी अधिक सत्ता भोगता है। —महात्मा गांधी

चतुर

देशाटनं पण्डितमित्रता च वाराङ्गना राजसभाप्रवेशः।
अनेकशास्त्रार्थ-विलोकनं च चातुर्यमूलानि भवन्ति पञ्च॥ —अज्ञात

देशों का भ्रमण, पण्डितों के साथ मित्रता, वेश्याप्रसंग, राजसभा में बैठना, और अनेक शास्त्रों का अनुशीलन करना ये पांच चतुर होने के प्रधान कारण हैं।

चरखा

चरखा भूखे की रोटी, अन्धे की लकड़ी और विधवा का सुहाग है।
—महात्मा गांधी

मनुष्य की नग्नता को ढाकना यह चरखे का दावा है। —विनोबा

चरखे की पुकार दूसरी सब पुकारों से मधुर है। क्योंकि वह प्रेम की पुकार है। —महात्मा गांधी

चरखे के द्वारा माता बच्चे को देश-प्रेम सिखा सकती है। —विनोबा

चरखा तो लँगड़े की लाठी है—सहारा है। भूखे को खाना देने का साधन है। निर्धन स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा करनेवाला किला है। —महात्मा गांधी

चरखा आनन्द का साधन है। —विनोबा

चरित्र

चरित्र बिना सफलता के भी रह सकता है। —[illegible]

उत्तम चरित्र ही निर्धन का धन है। —[illegible]

Character is the g[illegible]

चरित्र जीवन में शासन करने वाला [illegible]
—[illegible]

चरित्र की शुद्धि ही सारे ज्ञान का ध्येय होना चाहिए। —महात्मा गांधी

कठिनाइयों को जीतने [illegible]
चरित्र उत्तम, सुदृढ़ और निर्मल होना है। —[illegible]

व्यक्तिगत चरित्र समाज की महान आशा है। —चैनिंग

चरित्र सम्पत्ति है। यह सम्पत्ति में सबसे उत्तम है। —स्माइल्स

Talents are best nurtured in solitude; character is best formed in the stormy billows of the world.

गुण एकान्त में अच्छी तरह विकसित होता है, चरित्र का निर्माण ससार के भीषण कोलाहल में होता है। —गेटे

✓ चरित्र-शुद्धि ठोस शिक्षा की बुनियाद है। —गांधी

Character is like a tree, and reputation is like its shadow. The shadow is what we think of it; the tree is the real thing.

चरित्र एक वृक्ष के समान है और ख्याति उसकी छाया है। छाया वही है जो हम उसके बारे में सोचते हैं, परन्तु वृक्ष वास्तविक वस्तु है। —लिंकन

दुर्बल चरित्रवाला उस सरकंडे के समान है जो हवा के हर झोके से झुक जाता है। —माघ

Character is a diamond that scratches every other stone.
चरित्र एक ऐसा हीरा है जो हर किसी पत्थर को घिस सकता है। —बर्टल

चरित्र परिवर्तित नही होता, विचार परिवर्तित होते हैं, किन्तु चरित्र विकसित किया जाता है। —डिजरायली

Sow an act, and you reap a habit, sow a habit and you reap a character, sow a character and you reap a destiny.

कर्म को बोओ और आदत (की फसल) को काटो; आदत को बोओ और चरित्र को काटो; चरित्र को बोओ और भाग्य को काटो। —बोर्डमैन

सुगन्धि दर्शनीय च लोकरंजनतत्परम्।
दृष्ट्वा कुसुममारामे सर्वैरप्यभिनन्दितम्॥
प्रसाद सुमुखः शील चारित्र्याभ्यां सुवासित ।
उद्युक्तो लोकसेवायां भवेयमिति भावये॥ —अज्ञात

उपवन में सुगन्धित, सुन्दर लोको के रंजन में तत्पर और साथ ही सबके द्वारा अभिनदित पुष्प को देखकर मेरे मन में आता है कि मुझे भी प्रसन्न मुखशील और चरित्र की सुगन्ध से वासित तथा लोक-सेवा में तत्पर होना चाहिए।

चोरी से कोई धनवान् नहीं बन सकता, दान से कोई कंगाल नहीं हो सकता। थोड़ा सा झूठ भी कभी छिप नहीं सकता। यदि तुम सच बोलोगे तो सारी प्रकृति और सब जीव तुम्हारी सहायता करेंगे। चरित्र ही मनुष्य की पूंजी है। —एमरसन

चरित्रबल

समाज के प्रचलित विधि-विधानों के उल्लंघन का दुःख सिर्फ चरित्र-बल और विवेक-बुद्धि के बल पर ही सहन किया जा सकता है।

—शरत्चन्द्र (शेष प्रश्न)

Character must be capable of standing firm upon its feet in the world of daily work, temptation and trial and able to bear the wear and tear of actual life

चरित्रबल पर ही मनुष्य दैनिक कार्य, प्रलोभन और परीक्षा के संसार में दृढ़ता-पूर्वक स्थिर रहते हैं, और वास्तविक जीवन की [illegible] को सहन करने योग्य होते हैं। —स्माइल्स

चले चलो

बैठनेवाले का भाग्य भी बैठ जाता है और खड़े होनेवाले का भाग्य भी खड़ा हो जाता है। इसी प्रकार सोने वाले का भाग्य भी सो जाता है और पुरुषार्थी का भाग्य भी गतिशील हो जाता है। चले चलो, चले चलो। —वेदवाणी

चातुर्य

मनुष्य के अंतरंग का शृंगार है चातुर्य, वस्त्र तो केवल बाहरी [illegible]।

—गु [illegible]

चापलूस

Flatterers are the worst kind of enemies

चापलूस अत्यन्त निकृष्ट प्रकार के शत्रु हैं। —टैसिटस

मीठी बातें तो वह [illegible] है जिसमें [illegible]

[illegible] मान का [illegible] है। —[illegible]

When flatterers [illegible]

जब चापलूस [illegible] —[illegible]

आत्म-प्रेम चापलूसों में सबसे बड़ा चापलूस है। —ला० रोशोको

ऐसे आदमी पर कभी विश्वास न करो जो प्रशंसा के पुल बांध दे। —अज्ञात

चापलूसी

चापलूसी का जहरीला प्याला आपको तब तक नुकसान नहीं पहुंचा सकता जब तक कि आपके कान उसे अमृत समझकर पी न जायं। —प्रेमचन्द

Imitation is the sincerest form of flattery

अनुकरण करना सबसे बड़ी निष्कपट चापलूसी है। —कोल्टन

Don't be afraid of the enemies who attack you. Be afraid of the friends who flatter you.

जो शत्रु तुम पर आक्रमण करते हैं उनसे तुम मत डरो, उन मित्रों से डरो जो तुम्हारी चापलूसी करते हैं। —जनरल ओब्रगोन

Flattery is telling the other man precisely what he thinks about himself.

चापलूसी दूसरे मनुष्य से ठीक वही कहने का नाम है जो वह अपने आप को समझता है। —अज्ञात

Flattery sits in the parlour, when plain dealing is kicked out of door.

जब निष्कपट व्यवहार को दरवाजे से बाहर ढकेल दिया जाता है तो चापलूसी बैठक में आ बैठती है। —कहावत

Flattery is counterfeit, and like counterfeit money, it will eventually get you into trouble if you try to pass it.

चापलूसी एक नकली सिक्का है और नकली सिक्के की भांति वह अन्ततः आप को कष्ट में डाल देगी यदि आप इसे चलाने का प्रयत्न करेंगे। —डेलकार नेगी

The most skilful flattery is to let a person talk on and be a listener.

सबसे बड़ी चापलूसी यह है कि दूसरे व्यक्ति को बोलने दें और आप स्वयं सुनता रहें। —एडीसन

मुझे सिखाइए कि मैं न तो किसी की सस्ती प्रशंसा करूं और न किसी से अपनी सस्ती प्रशंसा कराऊं। —कहावत

जो लोग अधिक सोचने-विचारने के आदी होते है वे चिन्तित भी अधिक रहते है। —अज्ञात

चिकित्सा

समुद्र इव गम्भीर नैव शक्यं चिकित्सितम्।
वक्तु निर्विशेषेण श्लोकानामयुतैरपि — —सुश्रुत-संहिता

चिकित्सा-विज्ञान असीमित, अगाध जलधि सदृश है, तथा उसका विवरण हजारों श्लोकों में भी नही किया जा सकता।

चिकित्सक (दे० "डाक्टर")

The greatest mistake physicians make is that they attempt to cure the body without attempting to cure the mind, yet the mind and the body are one and should not be treated separately.

चिकित्सको की सबसे बड़ी त्रुटि यह है कि वे विना मन को आरोग्य किये शरीर को अच्छा करने का प्रयत्न करते है, जबकि मन और शरीर एक ही है इसलिए उनकी पृथक् पृथक् चिकित्सा नही होनी चाहिए। —प्लेटो

A good surgeon must have an eagle's eyes, a lions' heart and a lady's hand.

एक निपुण शल्य-चिकित्सक (सर्जन) के पास गिद्ध की आँख, शेर का हृदय और नारी जैसा (कोमल) हाथ होना चाहिए। —कहावत

संयम और परिश्रम मनुष्य के दो सर्वोत्तम चिकित्सक है। परिश्रम से भूख तेज होती है और संयम अतिभोग से रोकता है। —रूसो

पापी अंतःकरण का रोग संसार के सभी देशों के चिकित्सकों की चिकित्सा के परे है। —ग्लैडस्टन

चितवन

अमिय हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुकि झुकि परत, जेहि चितवत एक बार॥ —बिहारी

अनियारे दीरघ नयनि, किती न तरुनि जहान।
वह चितवन औरै कछू जेहि वस होत सुजान॥ —बिहारी

चुनना

God offers to every mind its choice between truth and repose.

ईश्वर प्रत्येक मस्तिष्क को सच और झूठ में एक को चुनने का अवसर देता है। —एमर्सन

चुनाव

चुनाव युद्ध नही, तीर्थ है, पर्व है—यह पानीपत नही, कुरुक्षेत्र नही, यह प्रयाग है,—त्रिवेणी है, संगम है, सिंहस्थ है, कुम्भ है। —हरिभाऊ उपाध्याय

चुनाव जनता को राजनीतिक शिक्षा देने का विश्वविद्यालय है।
—जवाहरलाल नेहरू

चुम्बन

God kisses the finite in his love, and man the infinite.

ईश्वर अपने प्रेम में सीमित को चूमता है और मनुष्य अनंत को। —रवीन्द्र

A kiss from my mother made me a painter.

मेरी माँ के चुम्बन ने मुझे चित्रकार बना दिया। —बेंजमिन वेस्ट

चूल्हा

चूल्हा गृहस्थ आश्रम का प्रतीक है, आत्मीयता की दोला है, कुटुम्ब-परम्परा का संरक्षण है। —काका कालेलकर

चेहरा

A good face is the best letter of recommendation.

सुन्दर चेहरा सबसे अच्छा प्रशंसापत्र है। —रानी एलिजाबेथ

हँसमुख चेहरा रोगी के लिए लगभग उतना ही अच्छा है जितनी कि स्वस्थ ऋतु। —फ्रैंकलिन

All men's faces are true, whatsoever their hands are.

सभी मनुष्यो के चेहरे वास्तविक होते है, उनके हाथ चाहे जैसे भी हो।
—शेक्सपियर

चेहरा मस्तिष्क और हृदय—दोनो का प्रतिबिम्ब है। —कहावत

चोट

जिसने तुम्हें चोट पहुँचायी है वह तुमसे प्रबल था या निर्बल? यदि तुमसे निर्बल है तो उसे क्षमा कर दो, यदि प्रबल है तो अपने को कष्ट न दो। —सेनेका

चोर

चोर अपराधी बनकर छूट जाने से निर्दोष बनकर दंड भोगना बेहतर समझता है। —प्रेमचन्द

चोरहिं चाँदनी रात न भावा। —तुलसी (मानस)

चोर केवल दंड से ही नहीं बचना चाहता, वह अपमान से भी बचना चाहता है। वह दंड से उतना नहीं डरता जितना अपमान से। —प्रेमचन्द

लुब्धाना याचक शत्रुर्मूर्खाणां बोधको रिपु ।
जारस्त्रीणां पति शत्रुश्चौराणां चन्द्रमा रिपु ॥ —अज्ञात

लोभियों का वैरी भिक्षुक है, मूर्खों का शत्रु समझाने वाला है, व्यभिचारिणी स्त्रियों का शत्रु पति और चोरों का शत्रु चन्द्रमा है।

चोरी

गोपिकाओं के इससे बढ़कर और क्या सुकर्म होंगे कि कृष्ण ने उनका माखन चुराया। धन्य है वह जिसका सब कुछ चुराया जाय, मन और चित्त तक बाकी न रहे। —स्वामी रामतीर्थ

चोरी का माल खाने से छात्र शूरवीर नहीं बनते, दीन बनते हैं।

—महात्मा गांधी

चोरी का धन कच्चे पारे को खाने के समान है। जैसे कच्चा पारा शरीर में से फूट निकलता है वैसे ही चोरी का धन है। —महात्मा गांधी

छल

The first and worst of all frauds is to cheat ourselves
सभी छलों में अपने साथ किया हुआ छल प्रथम और निकृष्ट होता है। —बेली

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा, वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।
धर्म. स नो यत्र न सत्यमस्ति, सत्यम् न तत्यच्छलमभ्युपैति ॥

जिस सभा में वृद्ध न हो वह सभा नही, जो वृद्ध धर्म न कहें वह वृद्ध नही, जिस धर्म में सत्य न हो वह धर्म नहीं और जिस सत्य में छल हो वह सत्य नही।

—व्यास

स्पष्ट कहनेवाला छली नही होता। —चाणक्य

छाया

Shadow, with her veil drawn, follows light in secret meekness, with her silent steps of love.

छाया घूंघट डालकर प्रेम की मौन गति से, विनीत भाव से प्रकाश का अनुसरण करती है। —रवीन्द्र

What you are you do not see, what you see is your shadow.
तुम अपने आप को नहीं देख सकते, जो तुम देख रहे हो वह तुम्हारी छाया है।

—रवीन्द्र

छायावाद

कविता के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश-विदेश की सुन्दरी के वाह्य वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब उसे "छायावाद" के नाम से अभिहित किया गया। —जयशंकर प्रसाद

छायावाद का कवि धर्म के अध्यात्म से अधिक दर्शन के ब्रह्म का ऋणी है जो मूर्त्त और अमूर्त्त विश्व को मिला कर पूर्णता पाता है। —महादेवी वर्मा

पौराणिक रूपको या छायाओ से परे जो सत्य है वही हम रहस्यवादी या छायावादियो का लक्ष्य है। इन छायाओ के आधार से सत्य को प्राप्त करने वाले लोग छायावादी कहे जा सकते हैं, पर छाया उनका वाद नहीं,—उनका वाद सत्य है, अत. वह सत्यवादी है। —अज्ञात

छाया भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की भगिमा पर अधिक निर्भर करती है। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यमय-प्रतीक-विधान तथा उपचार-वक्रता के साथ स्वानुभूति की निवृत्ति 'छायावाद' की विशेषताएँ हैं।

—जयशंकर प्रसाद

छिद्रान्वेषण

दुर्बल-जन तथा अज्ञानी लोग ही हमेशा सबसे अधिक छिद्रान्वेषण किया करते हैं। —स्वामी रामतीर्थ

दूसरों में दोष न निकालना, दूसरों को इतना उन दोषों से नहीं बचाता जितना अपने को बचाता है। —स्वामी रामतीर्थ

जंजीर

जजीरें जजीरें ही है, चाहे वे लोहे की हो या सोने की, वे समान रूप से तुम्हें गुलाम बनाती हैं। —स्वामी रामतीर्थ

जगत

सृष्टि की रचना करके ईश्वर स्वयं अपने को ही प्रकट करता है। —रवीन्द्र

जगत के बिना ईश्वर ईश्वर नहीं है, सृष्टि नहीं तो ईश्वर नहीं। —हेगेल

अज्ञस्य दुःखौघमयं ज्ञस्यानन्दमयं जगत्।
अन्धं भुवनमन्धस्य प्रकाशं तु सुचक्षुषाम्॥ —वराहोपनिषद

जैसे अन्धे के लिए जगत अन्धकारमय है और अच्छी आँखों वाले के लिए प्रकाशमय है वैसे ही अज्ञानी के लिए जगत दुःखों का समूहमय है और ज्ञानी के लिए आनन्दमय है।

जगत का प्रतीयमान रूप मायाजनित है इसलिए असत्य है। जगत का वास्तविक रूप ब्रह्म है, इसलिए सत्य है। —सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)

'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या'।
ब्रह्म सत्य है और जगत मिथ्या है। —उपनिषद्

जड़ता

जड़ता निर्दयता की जननी है। —रस्किन

जनता

जनता कल्पवृक्ष है, जो भावना आप लेकर जायेंगे, वही आप उससे पायेंगे। —विनोबा

जनता बलवान मनुष्य से प्रेम करती है। वह स्त्री की तरह होती है।

—मुसोलनी

सर्वसाधारण जनता की उपेक्षा ही एक बड़ा राष्ट्रीय पाप है।

—स्वामी विवेकानन्द

Individuals are occasionally guided by reason, crowds never.
व्यक्ति प्राय. बुद्धि से मार्ग-दर्शन करते है, जनता कभी नही

—डीन डब्लू० आर० इन्ज

'जबान खल्क नक्कारा खुदा' —कहावत

जनता की आवाज ईश्वर की आवाज है।

राजमहलो की चालबाजियाँ, सभा-भवनों की राजनीति, समझौते और लेन-देन का जमाना उसी दिन खत्म हो जाता है जब जनता राजनीति में प्रवेश करती है।

—जवाहरलाल नेहरु

जनता और कुछ नही कर सकती, हमदर्दी तो करती है। दु ख-कथा सुनकर, आँसू तो बहाती है। —प्रेमचन्द

जनता जो कुछ सीखती है वह घटना-क्रम की पाठशाला में सीखती है। और दु.ख-दर्द ही उसका शिक्षक है। —जवाहरलाल नेहरु

जनता तो धरती माता की तरह है जिस पर कुदाली से घाव होता है लेकिन गेंद का स्पर्श यो ही ऊपर के ऊपर उड़ जाता है। —विनोबा

बड़े-बड़े आन्दोलनो से, जो व्यक्तियो और श्रेणियो के असली रूप को प्रकट कर देते है, जनता राजनीति का पाठ पढ़ती है। —जवाहरलाल नेहरु

जननी

कोमलता में जिसका हृदय गुलाब की कलियो से भी अधिक कोमल दयामय है पवित्रता में जो यज्ञ की धूम के समान है, कर्त्तव्य में जो वज्र की तरह कठोर है—वही विश्व जननी है। —अज्ञात

जननी का हृदय बच्चे की पाठशाला है। —एच० डब्लू० बीचर

A mother is a mother still,
The holiest thing alive.

जननी जननी ही है, जीवित वस्तुओ में जो सबसे अधिक पवित्र है। —कोलरिज

The future destiny of the child is always the work of the mother.

बालक का भाग्य सदैव उसकी माँ द्वारा निर्मित होता है। —नेपोलियन

जय

विहातुमुद्यता सदा परार्थमात्मनो हितम्।
अथाभिमान वर्जिता जयन्ति ते जना भुवि॥ —अज्ञात

दूसरों के निमित्त अपने हित को छोड़ने के लिए सदा उद्यत होते हुए भी जो स्वयं अभिमान से रहित होते हैं संसार में उन्हीं की जय होती है।

जय उसी की होती है जो अपने को संकट में डालकर कार्य सम्पन्न करते हैं। जय कायरों की कभी नहीं होती। —पं० जवाहरलाल नेहरू

विराग मूर्त्तयोऽपि ये, स्वदेश-राग-शोभिता।
अरण्यवास निःस्पृहा, जयन्ति ते जना भुवि॥ —अज्ञात

स्वयं वैराग्य की मूर्ति होते हुए भी जो स्वदेश के प्रेम से शोभित हैं और अपने कर्तव्य से भागकर वनवास के लिए उत्सुक नहीं हैं, संसार में उन्हीं की जय होती है।

The smile of God is victory.

जय ईश्वर की मुस्कान है। —व्हिटियर

अक्रोधेन जयेत्क्रुद्धमसाधुं साधुना जयेत्।
जयेत्कदर्यं दानेन जयेत्सत्येन चानृतम्॥

—वेदव्यास (महाभारत)

क्रोध न करके क्रोध को, भलाई करके बुराई को दान करके कृपण को और सत्य बोलकर असत्य को जीतना चाहिए।

जल

अमृतं वै आपः —शं० ब्रा०

जल स्वयं अमृत है।

जल ही औषधि है, जल रोगों का शत्रु है, यही सब रोगों का नाश करता है। इसलिए यह तुम्हारा भी रोग दूर करे। —ऋग्वेद

The water saw its master's face and flushed.

जल ने अपने नियन्ता की ओर दृष्टिपात किया और वह पानी-पानी हो गया।

—बायरन

जल अत्यन्त आरोग्यप्रद एवं वलदायक है। —ऋग्वेद

अप्स्वन्तरममृतमप्सु भेषजम्। —अथर्ववेद

जल में अमृत है, जल में औषधियाँ हैं।

अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि वलप्रदम्।
भोजने चामृतं वारि भोजनांते विषप्रदम्॥ —चाणक्य

अजीर्ण होने पर जल औषधि है, पच जाने पर जल वल देता है। भोजन के समय जल अमृत के समान है, और भोजन के अन्त में विष का फल देता है।

जवानी (दे० 'यौवन')

It is a truth but too well known, that rashness attends *youth*, as prudence does old age.

यह सत्य है और अति प्रसिद्ध है कि जैसे वुढ़ापे में वुद्धिमत्ता होती है वैसे ही जवानी में अविवेकिता होती है। —सिसरो

In the lexicon of youth, which fate reserves for a bright manhood, there is no such word as—fail.

जवानी के कोष में जिसको भाग्य उज्ज्वल पराक्रम के लिए सुरक्षित रखता है, असफलता का शब्द नहीं है। —लिटन

राष्ट्र और व्यक्ति के लिए जवानी आशा, साहस एवं शक्ति का काल है।

—डब्ल्यू० आर० विलियम्स

जवानी जोश है, वल है, साहस है, दया है, आत्मविश्वास है, गौरव है और वह सब कुछ जो जीवन को पवित्र, उज्ज्वल और पूर्ण वना देता है। —प्रेमचन्द

जवानी हिम्मत और साहस का घर है। —अज्ञात

नदी की वाढ़ें, वृक्षों के फूल और चन्द्रमा की कलाएँ नष्ट होकर फिर से आती हैं, मगर देहधारियों की जवानी नहीं। —अज्ञात

रहती है कव, वहारे जवानी तमाम उम्र।
मानिन्द वूये गुल, इधर आई उधर गई॥ —अज्ञात

सदा न फूलै तोरई, सदा न सावन होय।
सदा न यौवन थिर रहे, सदा न जीवै कोय॥ —अज्ञात

यौवन जीवित चित्त, छाया लक्ष्मीश्च स्वामिता।
चञ्चलानि षडेतानि, ज्ञात्वा धर्मरतो भवेत्॥ —अज्ञात

यौवन, जीवन, मन, शरीर की छाया, धन और स्वामिता—ये छहों चञ्चल हैं, यानी ये स्थिर होकर नहीं रहते।

मा कुरु धन-जन-यौवनगर्वं, हरति निमेषात् कालः सर्वम्।
मायामयमिदमखिलं हित्वा, ब्रह्मपदं प्रविशाशु विदित्वा॥

—अज्ञात

इस धन-यौवन का गर्व न कर, काल इनको पलक मारते हर लेता है। इस मायामय संसार को त्यागकर, शीघ्र ही ब्रह्मपद में प्रविष्ट हो।

जागरण

जागरण का अर्थ है कर्मक्षेत्र में अवतीर्ण होना और कर्मक्षेत्र क्या है? जीवन-संग्राम। —जयशंकर प्रसाद

जल्दी सोनेवाला और प्रातःकाल जल्द उठने वाला मनुष्य आरोग्यवान, भाग्यवान और ज्ञानवान होता है। —फ्रैंकलिन

जाति

जन्म से नहीं बल्कि कर्म से ही मनुष्य शूद्र या ब्राह्मण होता है। —भगवान बुद्ध

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।
मैंने गुण और कर्म के अनुसार ही जाति व्यवस्था की स्थापना की है।
—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

कभी किसी महात्मा से यह न पूछो कि तुम्हारी जाति क्या है, क्योंकि भगवान के दरबार में जाति का बन्धन नहीं रह जाता। —कबीर

जो जाति जब तक मरना जानती रहेगी, उसको तभी तक इस पृथ्वी पर जीने का अधिकार रहेगा। —जयशंकर प्रसाद

चारों वर्ण परमात्मा के ही शरीर से उत्पन्न हुए हैं। मुख से ब्राह्मण, भुजा से क्षत्रिय, जंघा से वैश्य और पैरों से शूद्र की उत्पत्ति हुई है।

जाति से कोई पतित नही है। पतित वह है जो चोरी, व्यभिचार, ब्रह्महत्या, भ्रूण-हत्या, सुरापान इत्यादि दुष्ट कृत्यो को करता है, और उनको गुप्त रखने के लिए वार-वार असत्य भाषण करता है। —वेद

वर्तमान काल में जाति-प्रथा जिस रूप में प्रचलित है उसका एकान्त रूप से विनाश करना ही होगा। यदि भारतीय जनता को नवीन जीवन प्राप्त करना है तो उसे वर्ण-भेद के वर्तमान स्वरूप को मिटा देना होगा, क्योकि वह उन्नति के सभी विभागो में भयंकर रूप से वाधा समुपस्थित कर रहा है। —डाक्टर भगवानदास

हमारी जाति-प्रथा मनुष्यों का सर्वश्रेष्ठ श्रेणी विभाग है। क्योकि हर एक जाति में शास्त्र नारायण का अंश वतलाया है। जाति की निन्दा भी कही नहीं की गयी। जाति निन्दनीय नही। —निराला

जाति-सेवा

जाति-सेवा ऊसर की खेती है, वहाँ वड़े से वड़ा उपहार जो मिल सकता है, वह है गौरव और यश; पर वह भी स्थायी नही, इतना अस्थिर कि एक क्षण में जीवन भर की कमाई पर पानी फिर जाय। —प्रेमचन्द

जाति-सेवा वही कर सकते है जिनके हृदय में भ्रातृ-भाव की भावना भरी है। —अज्ञात

जाति-सेवा में शरीर को घुलाना पड़ता है, रक्त को जलाना पडता है। यही जाति-सेवा का उपहार है। —प्रेमचन्द (प्रेमपचीसी)

जितेन्द्रिय

श्रद्धावांल्लभते ज्ञानं तत्पर. सयतेन्द्रिय.।
ज्ञानम् लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥

श्रद्धावान, ज्ञान की प्राप्ति में तत्पर, जितेन्द्रिय पुरुष ज्ञान को पाता है और ज्ञान को पाकर थोड़े ही काल में परम शान्ति पाता है। —भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

जिन्दगी

जिन्दगी एक कसौटी है ईश्वर उस पर हमें कस लेता है। नेक काम करके हम कसौटी पर खरे उतरते है तो भगवान की सच्ची भक्ति करते है। —विनोवा

जिन्दगी हमारे साथ किया गया एक मजाक है। —रूसो

न समझने की ये बातें हैं, न समझाने की।
जिन्दगी उचटी हुई नींद है दीवाने की॥ —जलाल

जिन्दगी इन्सां की है मानिन्दे मुर्गे खुशनवा।
शाख पर बैठा कोई दम चहचहाया, उड़ गया॥
—डाक्टर मुहम्मद 'इकबाल'

जिन्दगी और मौत

जिन्दगी क्या है, अनासिर में जहूरे तरतीब,
मौत क्या है, इन्हीं अजजा का परेशां होना॥
फना का होश आना जिन्दगी का दर्द सरजाना,
अजल क्या है, खुमारे बादए हस्ती उतर जाना॥
—पं० बृजनारायण चकबस्त

जिन्दगी का मौत से उसी प्रकार का सबंध है जिस प्रकार जन्म से। चलने के लिए पैर उठाना उतना ही आवश्यक है जितना पैर रखना। —रवीन्द्र

मरण सोने के समान है और जन्म सोकर उठने के समान। —सन्त तिरुवल्लुवर

जिज्ञासा

जिज्ञासा बिना ज्ञान नहीं होता। दुःख बिना सुख नहीं होता। [illegible] हृदय मन्थन सब जिज्ञासुओं को एक बार होना ही है। —महात्मा गांधी

Curiosity is one of the permanent and certain characteristics of a vigorous intellect.

जिज्ञासा तीव्र बुद्धि का एक स्थायी और निश्चित गुण है। —सैमुअल जानसन

जिज्ञासा जनानी बहादुरी का ही एक रूप है। —विक्टर ह्यूगो

प्रथम और सरलतम भावना जो हम मनुष्य के मस्तिष्क में पाते हैं वह जिज्ञासा की है। —बर्क

जिज्ञासु

जिन ढूंढा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ।
मैं बपुरा बूडन डरा रहा किनारे बैठ। —कबीर

The over curious are not over wise.

बहुत जिज्ञासु बहुत विज्ञ नहीं होते। —मैसिंजर

जिम्मेदारी

जिन्दगी की जिम्मेदारी कोई डरावनी चीज नहीं है। वह आनन्द से ओत-प्रोत है। —विनोबा

मनुष्य को जिम्मेदारी के पद पर नियुक्त कर दो वह परिस्थिति के अनुसार उन्नति करेगा। —अज्ञात

जिह्वा

खट्टा मीठा चरपरा जिह्वा सब रस लेय।
चोरो कुतिया मिल गई पहरा किसका देय॥ —कबीर

A wound from a tongue is worse than a wound from a sword; for the latter affects only the body, the former the spirit

जिह्वा का घाव तलवार के घाव से अधिक बुरा होता है क्योंकि तलवार शरीर पर आघात करती है और जिह्वा आत्मा पर। —पाइथागोरस

No sword bites so fiercely as an evil tongue
कोई तलवार इतना भयानक घाव नहीं करती जितना कि एक बुरी जिह्वा।
—पी० सिडनी

ईश्वर ने हमें दो कान दिये है और दो आँखें, पर जिह्वा केवल एक ही—इस लिये कि हम बहुत अधिक सुने और बहुत अधिक देखें; लेकिन बोलें कम-बहुत कम। —सुकरात

रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गई सरग पताल।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल॥ —रहीम

जिह्वा केवल तीन इंच लम्बी होती है। परन्तु वह छै फुट ऊँचे आदमी को कत्ल कर सकती है। —जापानी कहावत

हे जिह्वे! मैं तुझी से एक भिक्षा माँगता हूं, तू ही मुझे दे। वह यह कि जब गदापाणि यमराज इस शरीर का अंत करने आवें तो बड़े ही प्रेम से गद्‌गद स्वर में 'हे गोविन्द, हे माधव, हे दामोदर, इन मंजुल नामों का उच्चारण करती रहना।
—बिल्व मंगल

जिह्वा कैंची-सी कतरती है। —कहावत

जीना

जीविते यस्य जीवन्ति विप्रा मित्राणि बान्धवा ।
सफल जीवित तस्य, आत्मार्थे को न जीवति॥ —हितोपदेश

जिसके जीवित रहने से विद्वान्, मित्र और बन्धु बान्धव जीते हैं, उसी का जीना सार्थक है अपने लिए कौन नहीं जीता।

मुहूर्तमपि जीवेच्च नर शुक्लेन कर्मणा।
न कल्पमपि कष्टेन लोकद्वयविरोधिना॥ —चाणक्य

उत्तम कर्म से मनुष्य दो पल भी जीवित रहे यह श्रेष्ठ है पर दोनों लोक का विरोधी दुष्ट कर्म करनेवाले का कल्प भर जीना भी अच्छा नहीं।

जीव

ईश्वर अंश जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुखराशी॥
सो माया बस भयउ गोसाईं। बँध्यो कीर मरकट की नाईं॥
—तुलसी (मानस, उत्तर)

माया बस्य जीव अभिमानी। —तुलसी (मानस, उत्तर)

स्वयं कर्म करोत्यात्मा स्वयं तत्फलमश्नुते।
स्वयं भ्रमति संसारे स्वयं तस्माद्विमुच्यते॥ —चाणक्य

जीव आप ही कर्म करता है, और उसका फल भी आप ही भोगता है, आप ही संसार में भ्रमता है और आप ही उससे मुक्त भी होता है।

ईस अधीन जीव गति जानी। —तुलसी (मानस)

जैसे बर्फ का टुकड़ा पानी में डाल देने से वह स्वयं [illegible] पानी [illegible] ही हो जाता है, वैसे ही अभेद उपासना [illegible] जीवात्मा [illegible] ब्रह्म स्वरूप ही हो जाता है। —स्वामी [illegible]

माया ईस न आपु कहुँ जान कहिय सो जीव। —तुलसी

जीव ब्रह्म ही है ब्रह्म से पृथक् नहीं है। —[illegible]

यह देह रूपी [illegible] माया रूपी [illegible] , [illegible] जब भगवान् रूपी [illegible] के [illegible] से [illegible] कुछ नहीं दिखाई [illegible]। —[illegible]

जीवन ('दे० जिन्दगी')

That I exist is a perpetual surprise which is life.

मेरा अस्तित्व एक निरंतर आश्चर्य है, और यही जीवन है। —रवीन्द्र

जीवन इस शरीर रूपी पिजडे में बन्द पक्षी के पंखो की फड़फड़ाहट मात्र है।
—स्वामी रामतीर्थ

No man enjoys the true taste of life, but he who is ready and willing to quit it.

कोई भी व्यक्ति जब तक कि वह प्रसन्नता से मरने को तैयार नही रहता—जीवन का सच्चा आनन्द नही ले सकता। —सेनेका

✓ मनुष्य का जीवन इसलिए है कि वह अत्याचार के खिलाफ लडे।
—सुभाषचन्द्र बोस

A life spent worthily should be measured by a nobler line, by deeds not years

योग्यता से व्यतीत हुए जीवन को हमें वर्ष के नही अपितु कर्म के अच्छे पैमाने से नापना चाहिए। —शेरीडन

हमारा सदा यही लक्ष्य रहता है कि हमारा जीवन सुख-आनन्द से परिपूर्ण हो।
—स्वेटमार्डेन

अच्छा जीवन, ज्ञान और भावनाओ तथा बुद्धि और सुख दोनो का सम्मिश्रण होता है। —सुकरात

अमृत जीवन की अगर इच्छा है तो आत्मा की व्यापकता का अनुभव करो, सब की सेवा करो, सबसे एक रूप हो जाओ। —विनोबा

जब मनुष्य का युद्ध अपने आप के साथ आरम्भ होता है तब उसका कुछ मूल्य होता है। —ब्राउनिंग

जीवन एक खिले हुए फूल के समान है, जो कुछ काल में आप ही आप कुम्हला कर गिर पड़ेगा। —अज्ञात

Life like a dome of many coloured glass, stains the white radiance of eternity.

जीवन अनन्त काल के श्वेत प्रकाश को रंग-बिरंगे शीशे के गुम्बज के सदृश रंग देता है। —शेली

मनुष्य का जीवन जितना सादा और स्वाभाविक होगा उसी के अनुसार उसका चित्त अधिक प्रसन्न रहेगा। —अज्ञात

A useless life is an early death.
व्यर्थ जीवन शीघ्र-प्राप्त मृत्यु है। —गेटे

जीवन तो मृत्यु और पुनर्जन्म की परंपरा की कहानी है। हमें पुनर्जन्म पाने के लिए पहले मरना होगा। —रोम्यां रोला

One crowded hour of glorious life is worth an age without a name.
गौरवपूर्ण जीवन का एक व्यस्त घण्टा कीर्ति-रहित युगों से कहीं अधिक महत्व-पूर्ण है। —वाल्टर स्काट

जीवन का रहस्य भोग में नही है, पर अनुभव के द्वारा शिक्षा-प्राप्ति में है। —स्वामी विवेकानन्द

जीवन एक कहानी के सदृश है—वह कितनी लम्बी है, नही वरन् कितनी अच्छी है, यह विचारणीय विषय है। —सेनेका

हमारी महात्वाकांक्षा चाहे जो हो पर हम सबको जैसा अपना जीवन प्यारा है वैसा और कोई पदार्थ नहीं। —स्वेट मार्डेन

Tell me not in mournful numbers "life is butan empty dream."
जीवन केवल एक निरर्थक स्वप्न है—यह वात मुझसे शोकयुक्त कविता में न कहो। —लांगफेलो

जीवन एक वाजी के समान है। हारजीत तो हमारे हाथ नही है पर वाजी का खेलना हमारे हाथ में है। —जर्मी टेलर

जीवन किसी को स्थायी सम्पत्ति के रूप में नही मिला। वह तो केवल प्रयोग के लिए है। —लुक्रीटस

जीवन खोने के वजाय मानवी गुणो को संगठित करने में अपने समय का अधिक उपयोग करो। —स्वेट मार्डेन

Life is the childhood of our immortality.
जीवन अमरता का शैशव काल है। —गेटे

Life is a principle of growth, not of standing still, a continuous becoming, which does not permit static condition

जीवन विकास का सिद्धान्त है, स्थिर रहने का नहीं। निरन्तर विकसित होना स्थिर अवस्था में रहने की अनुज्ञा नहीं देता। —पं० जवाहरलाल नेहरू

For life in general, there is but one decree youth is a blunder, manhood a struggle old age a regret.

साधारण जीवन में एक ही विधान है, यौवन एक भूल है, जवानी संघर्ष है और बुढ़ापा पश्चात्ताप। —डिजरायली

जीवन एक प्रयोगशाला के समान है जिसमें मनुष्य निरन्तर प्रयोग करता रहता है। —अज्ञात

✓ मनुष्य-जीवन अनुभव का शास्त्र है। —विनोबा

जीवन को नियम के अधीन कर देना आलस्य पर विजय पाना है। जीवन को नियम के अधीन कर देना प्रमाद को सदा के लिए विदा कर देना है।

—स्वामी [illegible]

Life is nothing but a short postponement of death.

जीवन और कुछ नहीं है, केवल मृत्यु का कुछ समय के लिए टालना है।

—शोपेनहार

Life is a flower of which love is the honey.

जीवन एक पुष्प है और प्रेम उसका मधु। —विक्टर ह्यूगो

जीवन और मृत्यु (दे० "मृत्यु", "जिन्दगी और मौत")

जीवन और मृत्यु [illegible]

—स्वामी [illegible]

[illegible]

[illegible]

In death the many becomes one, in life the one becomes many
मृत्यु में अनेक एक हो जाता है, जीवन में एक अनेक रहता है। —रवीन्द्र

जीवन एक प्रश्न है और मरण है उसका अटल उत्तर।
—जयशंकर प्रसाद

जीवन एक यात्रा है जिसकी समाप्ति मृत्यु है। —अज्ञात

जीवन-चरित्र

जीवन-चरित्र ही केवल सच्चा इतिहास है। —कारलाइल

There is properly no history, only biography.
वास्तव में इतिहास कुछ नही, केवल जीवन चरित्र ही है। —एमर्सन

Lives of great men all remind us,
We can make our lives sublime,
And, departing, leave behind us
Footprints on the sands of time.

महापुरुषो की जीवनियाँ हमें याद दिलाती है कि हम भी अपना जीवन महान बना सकते है और मरते समय अपने पदचिह्न समय की बालू पर छोड़ सकते।
—लांगफेलो

To be ignorant of the lives of the most celebrated men of antiquity is to continue in a state of childhood all our days.

प्राचीन महापुरुषो के जीवन से अपरिचित रहना जीवन भर निरन्तर बाल्यावस्था में ही रहना है। —प्लूटार्क

जीविका

Absence of occupation is not rest, a mind quite vacant is a mind distressed.

जीविका का अभाव विश्राम नही है, बिल्कुल शून्य मस्तिष्क एक पीड़ित मस्तिष्क है। —काउपर

The crowning fortune of man is to be born to some pursuit which finds him in employment and happiness

मनुष्य का महान सौभाग्य यह है कि वह कोई व्यावसायिक प्रवृत्ति लेकर जन्में जिससे उसे जीविका और आनन्द प्राप्त हो। —एमर्सन

व्यवसाय समय का यंत्र है। —नेपोलियन

व्यस्त मनुष्य को आँसू वहाने के लिए अवकाश नही। —वायरन

जुआ

Gambling is the child of avarice, the brother of iniquity and the father of mischief

जुआ लोभ का पुत्र, दुराचार का भाई और वुराइयो का पिता है। —वाशिंगटन

मनुष्य एक वाजी लगानेवाला जीव है। —लैम्ब

जुआ आपस की फूट का मूल कारण है। —वेदव्यास (महाभारत)

जुआ सुख, सम्पत्ति और समय इन तीनो का—जोकि जीवन के लिए अति मूल्यवान हैं—नाश करता है। —अज्ञात

जुल्म

Bad laws are the worst sort of tyranny.

खराब कानून निकृष्ट प्रकार का जुल्म है। —वर्क

जुल्मी

Tis time to fear when tyrants seem to kiss.

जव जुल्मी चूमने का अभिनय करे तो डरना चाहिए। —शेक्सपियर

जालिम मर जाता है पर जुल्म रह जाता है। —अज्ञात

जेल

जेल सम्मान और भक्ति की एक रेखा है, जिसके भीतर शैतान कदम नही रख सकता। —प्रेमचन्द

जेल के वाहर भूलो की सम्भावना है, वहकने का भय है, समझौते का प्रलोभन है, स्पर्धा की चिन्ता है। —प्रेमचन्द

जेहन

वह जेहन किस काम का जो हमारे आत्मगौरव की हत्या कर डाले।
—प्रेमचन्द

If a man's eye is on the eternal, his intellect will grow
यदि मानव नेत्र शाश्वत पर होते हैं तो उसकी बुद्धि प्रतिदिन विकसित होती है। —एमर्सन

ज्ञानी की बुद्धि दर्पण के सदृश है। वह स्वर्गीय प्रकाश को ग्रहण करती है और उसे परावर्तित कर देती है। —हेयर

ज्ञान (दे० 'बुद्धि')

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते। —भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)
ज्ञान के समान इस संसार में और कुछ पवित्र नहीं है।

आरोह तमसो ज्योति.। —अथर्ववेद
अन्धकार (अविद्या) से निकलकर प्रकाश (ज्ञान) की ओर बढ़ो।

ज्ञान केवल सत्य में ही पाया जाता है। —गेटे

ज्ञान सदा एकरस है, वह काल के बंधन से बाहर है। —निराला

Man's wisdom is his best friend; folly his worst enemy.
मनुष्य का ज्ञान उसका परम मित्र है; मूर्खता उसका निकृष्ट शत्रु है।
—सर डब्ल्यू० टेम्पिल

In youth and beauty wisdom is but rare.
यौवन और सौंदर्य में ज्ञान प्राय. दुर्लभ ही होता है। —होमर

ज्ञान भी जब सीमा के बाहर हो जाता है तो नास्तिकता के क्षेत्र में जा पहुँचता है।
—प्रेमचन्द

ज्ञान ही वास्तविक सोना अथवा हीरा है। —स्वामी शिवानन्द

जब ज्ञान इतना घमंडी बन जाय कि वह रो न सके, इतना गंभीर बन जाय कि हँस न सके और इतना आत्म-केन्द्रित बन जाय कि अपने सिवा और किसी की चिन्ता न करे, तो वह ज्ञान अज्ञान से भी ज्यादा खतरनाक होता है। —खलील जिब्रान

Knowledge is power.
ज्ञान शक्ति है। —बेकन

ज्ञान का मूल्य बहुमूल्य से बहुमूल्य रत्न से भी अधिक है।
ज्ञान का निरादर अपने ही मस्तिष्क का अपमान है। —निराला

Knowledge is the wing wherewith we fly to heaven.
ज्ञान वह पंख है जिसके द्वारा हम स्वर्ग की ओर उड़ते हैं।

ज्ञान की अग्नि सुलगते ही कर्म भस्म हो जाते हैं। —स्वामी शंकराचार्य

Knowledge is proud that he has learn'd so much; wisdom is humble that he knows no more
ज्ञान अभिमानी होता है कि उसने बहुत कुछ सीख लिया, बुद्धि विनीत होती है कि वह अधिक कुछ जानती ही नही। —काउपर

✓ ज्ञान का अंतिम लक्ष्य चरित्र-निर्माण होना चाहिए। —महात्मा गांधी

The aim of knowledge is truth, and truth is a need of soul.
ज्ञान का ध्येय सत्य है, और सत्य आत्मा की भूख है। —लेसिंग

भयउ प्रकास कतहुँ तम नाही। ज्ञान उदय जिमि संसय नाही।
—तुलसी (मानस-लंका०)

To be conscious that you are ignorant is a great step to knowledge
अपने अज्ञान का आभास होना ही ज्ञान की तरफ एक बड़ा कदम है।
—डिजरायली

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा॥
—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

हे अर्जुन! जैसे जलती हुई अग्नि ईंधन को भस्म कर देती है, वैसे ही ज्ञानरूपी अग्नि संपूर्ण शुभाशुभ कर्मों को जलाकर नष्ट कर देती है।

The essence of knowledge is, having it, to apply it, not having it, to confess ignorance
ज्ञान का सार यह है कि ज्ञान रहते उसका प्रयोग करना चाहिए और उसके अभाव में अपनी अज्ञानता स्वीकार कर लेनी चाहिए। —कन्फ्यूशस

Wisdom is the daughter of experience
ज्ञान अनुभव की बेटी है। —कहावत

पारमार्थिक कर्मों के आचरण से ही मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है।

—स्वामी शंकराचार्य

Wisdom is to the soul what health is to the body.

✓ जैसे शरीर के लिए स्वास्थ्य है वैसे आत्मा के लिए ज्ञान। —अज्ञात

भूली हुई चीजों की स्मृति ही ज्ञान है। —प्लेटो

Wisdom teaches us to do, as well as talk and to make our words and actions all of a colour.

ज्ञान हमको करना और बोलना सिखाता है और हमारे शब्दों एवं कर्मों को एक रंग में रँग देता है। —सेनेका

मनुष्य जितना ज्ञान में घुल गया हो, उतना ही वह कर्म के रँग में रंग जाता है।

—विनोबा

He that thinks himself the wisest is generally the greatest fool.

जो अपने को सबसे बुद्धिमान् समझता है वह सामान्यत: सबसे बड़ा मूर्ख होता है।

—कोल्टन

जैसे जल के द्वारा अग्नि को शान्त किया जाता है, वैसे ही ज्ञान के द्वारा मन को शान्त रखना चाहिए। —वेदव्यास (महाभारत)

ज्ञान धन से उत्तम है क्योंकि धन की तुमको रक्षा करनी पड़ती है और ज्ञान तुम्हारी रक्षा करता है। —अली

✓ श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परंतप।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ! ज्ञाने परिसमाप्यते॥ —श्रीकृष्ण (गीता)

हे परंतप, द्रव्ययज्ञ से ज्ञानयज्ञ श्रेष्ठ है, क्योंकि हे पार्थ! जितने कर्म है वे सब ज्ञान में समाप्त हो जाते है।

As for me, all I know is that I know nothing

जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैं जानता हूँ कि मैं कुछ नही जानता। —सुकरात

जो यथार्थ मुक्ति का कारण है वही वास्तविक ज्ञान है। —स्वामी शंकराचार्य

"न तेन स्थविरो भवति येनास्य पलितं शिरः।
बालोपि यः प्रजानाति तं देवाः स्थविरं विदुः॥ —वेदव्यास

कोई सिर के बाल श्वेत होने से वृद्ध नही होता। बालक होकर भी यदि कोई ज्ञान-सम्पन्न है तो वह वृद्ध माना जाता है।

'अज्ञो भवति वै वाल', पिता भवति मन्त्रद ।' —अज्ञात

ज्ञानहीन व्यक्ति चाहे वह वृद्ध ही क्यो न हो वालक है, और शिक्षक चाहे वह अल्प-वयस्क ही हो, पिता है।

पक्के ज्ञान की एकमात्र पहचान है सिखाने की शक्ति। —अरस्तू

ज्ञानी

ज्ञानी मनुष्य को ससार लुभा नही सकता, मछलियो के कूदने से समुद्र नही उमडता। —भर्तृहरि

वहूना जन्मनामन्ते ज्ञानवान् माम् प्रपद्यते।
—श्रीकृष्ण (गीता)

वहुत जन्मो के अन्त में ज्ञानी मुझे पाता है।

ज्ञानी पुरुष विवेक से सीखते है, साधारण मनुष्य अनुभव से, अज्ञानी आवश्यकता से और पशु स्वभाव से। —सिसरो

सवसे अधिक ज्ञानी वह है जो अपनी हानि का सवसे अच्छा सुधार कर सकता है। —अज्ञात

One fool can ask more questions in a minute, than twelve wise men can answer in an hour. —*Lenin*

वारह ज्ञानी एक घटे में जितने प्रश्नो का उत्तर दे सकते है, उससे कही अधिक प्रश्न मूर्ख व्यक्ति एक मिनट में पूछ सकता है। —लेनिन

ज्ञानी मनुष्य इस जगत् को स्वर्ग में परिवर्तित कर सकता है।
—स्वामी शिवानन्द

जोश ("दे० उत्साह")

जोश मनुष्य से कितनी शपथें कराता है। यह वह आग है जिसमें चमक वहुत है, गरमी कम है और जो वहुत जल्दी वुझ जाती है। —शेक्सपियर (हेमलेट)

मुहव्वत के जोश में आदमी अपने आपे को भूल जाता है। —शेक्सपियर

ज्योति

वड़े आदमी मरने पर ऐसी ज्योति छोड जाते है जो उनकी मृत्यु के वाद भी कई युगो तक जगमगाती रहती है। —लांगफैलो

झंडा

O splendid flag of new born India ! We pay you the homage of our dedicated heart and hands and pledge ourselves to translate into glorious deeds the dreams that were our share and inspiration in the long darkness of our bondage.

हे नव भारत के प्रतापी ध्वज ! हम अपने हृदय और कर की श्रद्धाजलियाँ तुम्हें अर्पण करते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि हम उन स्वप्नो को प्रतिभाशाली कर्म में वदल देंगे जो हमारी दासता की लम्बी अवधि में हमारे साथी रहे हैं और हमें प्रेरणा देते रहे हैं। —सरोजनी नायडू

झगड़ा

Beware of entrance to a quarrel, but being in, bear it that the opposer may beware of thee.

झगडे से वचना उचित है। अगर उसमें पड़ ही जाय तो वैरी को अपना तेज, वल और पौरुप दिखा दे। —शेक्सपियर

झुकना

उड़ने की अपेक्षा जब हम झुकते है तब विवेक के अधिक निकट होते हैं। —वर्नार्ड शा

झूठ

जहाँ सत्य का परिणाम असत् और असत्य का परिणाम सत् होता हो, वहा सत्य न वोलकर असत्य वोलना ही उचित है। —वेदव्यास (म० क०)

जहाँ लुटेरो के चगुल में फँस जाने पर झूठी शपथ खाने से छुटकारा मिलता हो, वहा झूठ वोलना ही ठीक है, इसी को विना विचारे सत्य समझो।
—वेदव्यास (महाभारत, कर्णपर्व)

झूठ वोलना तलवार के घाव की तरह है, घाव तो भर जायगा परन्तु उसका चिह्न हमेशा वना रहेगा। —सादी

संसार में झूठ पापो का मरदार है, स्वार्थपरता, निर्दयता, कुटिलता और कायरता मव उसके साथी है। —अज्ञात

झूठ को इज्जत देकर जितना ऊंचा उठाया जाता है, उतनी ही ग्लानि, उतना ही कीचड, उतना ही अनाचार इकट्ठा होता है। —शरत् (ब्राह्मण की बेटी)

Falsehood has an infinity of combinations, but truth has only one mode of being

झूठ के असख्य सयोग होते है परन्तु सत्य का केवल एक रूप होता है। —रूसो

झूठ कभी श्रेष्ठ पद को प्राप्त नही होता। —उपनिषद्

मिथ्या भाषण प्रजा का नाश करनेवाला होता है। —वेदव्यास

लोग झूठ बोलनेवाले मनुष्य से उसी प्रकार डरते है जैसे साँप से। संसार में सत्य ही सबसे महान् धर्म है। वही सबका मूल कहा जाता है। —वाल्मीकि

भवेत् सत्यमवक्तव्य वक्तव्यमनृतं भवेत्।
यात्रावृत भवेत् सत्य सत्य चाप्यनृत भवेत्। —वेदव्यास

जहाँ मिथ्या बोलने का परिणाम सत्य बोलने के समान मगलकारक हो अथवा जहाँ सत्य बोलने का परिणाम असत्य-भाषण के समान अनिष्टकारी हो, वहाँ सत्य नहीं बोलना चाहिए। वहाँ असत्य बोलना ही उचित होगा।

विवाहकाले रति-सम्प्रयोगे प्राणात्यये सर्ववनापहारे।
विप्रस्य चार्थे ह्यनृत वदेत पञ्चानृतान्याहुरपातकानि॥
—वेदव्यास (महा० कर्णपर्व)

विवाह काल में, स्त्री प्रसग के समय, किसी के प्राणो पर सकट आने पर, सर्वस्व का अपहरण होते समय तथा ब्राह्मण की भलाई के लिए आवश्यकता हो तो अनृत बोल दे। इन पाँच अवसरो पर झूठ बोलने से पाप नही होता।

टका (दे० "द्रव्य" "धन")

टका ही माता-पिता है। —कहावत

टका का प्रेम ही सब बुराइयो की जड है। —अज्ञात

पैसे की कसौटी पर आत्मिक नाते की कौन कहे, शारीरिक नाता तक नष्ट हो जाता है। पैसा एक दीवार बन जाता है। —अज्ञात

When money speaks, truth is silent

जब टका बोलता है, तो सत्य मौन रहता है। —रूसी कहावत

टका करै कुलहूल, टका मिरदंग बजावै।
टका चढै सुखपाल, टका सिर छत्र धरावै॥
टका माय अरु बाप, टका भैयन को भैया।
टका सास अरु ससुर, टका सिर लाड़ लड़ैया॥ —बैताल

ठग

ठग किसी संबंध का ख्याल नहीं करते; वे सभी को ठग लेते हैं। —अज्ञात

ठगाना

ठगाने से ठाकुर होता है, धोखा खाने से आदमी सयाना होता है।
—कहावत

ठगाना अच्छा है किन्तु ठगना अच्छा नहीं। —अज्ञात

ठोकर

ठोकर लगे और दर्द उठे तभी मैं सीख पाता हूँ। —महात्मा गांधी

ठोकरें पृथ्वी से केवल धूल उड़ा सकती हैं, खेती नहीं उगा सकती। —रवीन्द्र

ठोकर खाकर साँप जैसा नाचीज कीड़ा बदला लेता है, चींटी जैसी तुच्छ हस्ती काट खाती है, मनुष्य भी स्वाभिमान की रक्षा के लिए सर्वस्व की बाजी लगा देता है।
—अज्ञात

डर (दे० 'भय')

डरते हो? किससे?
ईश्वर से? मूर्ख हो!
मनुष्य से? कायर हो।
पंचभूतों से? उनका सामना करो।
अपने से? जानो अपने आप को।
कहो—अहं ब्रह्मास्मि। —स्वामी रामतीर्थ

भय सदा अज्ञानता से उत्पन्न होता है। —एमर्सन

डरनेवाला मौके पर ऐसे बुरे काम कर जाता है कि उसको ही बाद में ताज्जुब होने लगता है। —विनोबा

तावद्भयेन भेतव्यं यावद्भयमनागतम्।
आगतं तु भय दृष्ट्वा प्रहर्तव्यमशङ्कया॥ —चाणक्य

तब तक ही भय से डरना चाहिए जब तक वह पास नही आता परन्तु भय को अपने निकट आता हुआ देखकर प्रहार करके उसे नष्ट करना ही उचित है।

जिसे पराजित होने का भय है—उसकी हार निश्चित है। —नेपोलियन

डर हमें मनुष्य-प्रकृति का अनुभव कराता है। —डिजराइली

डर रखने से हम अपनी जिन्दगी को बढा तो नही सकते। डर रखने से इतना होता है कि हम ईश्वर को भूल जाते है, इन्सानियत को भूल जाते है। —विनोबा

मनुष्य जिससे डरता है उससे प्रेम नही करता। —अरस्तू

डर प्रेम से अधिक शक्तिशाली है। —कहावत

Fear can keep a man out of danger, but courage only can support him in it

डर मनुष्य को खतरे से दूर रख सकता है परन्तु उसमें केवल साहस ही उसकी सहायता करता है। —अज्ञात

डरपोक (दे० "कायर")

"डरपोक प्राणियो में सत्य भी गूँगा हो जाता है। वही सीमेन्ट जो ईंट पर चढ़कर पत्थर हो जाता है, मिट्टी पर चढ़ा दिया जाय तो मिट्टी हो जायगा।

—प्रेमचन्द (गोदान)

Cowards falter, but danger is often overcome by those who nobly dare.

डरपोक डगमगाते है—लेकिन खतरे से वही प्राय पार होते हैं जो साहस से उसका सामना करते हैं। —रानी एलिजाबेथ

डाँटना

गुरु की डाँट-डपट पिता के प्यार से अच्छी है। —सादी

डाँवाडोल

डाँवाडोल मन केवल नीच सम्पत्ति है। —यूरिपिडीज

It is a miserable thing to live in suspense, it is the life of a spider.

डाँवाडोल स्थिति में रहना दुखदायी है, यह मकड़ी के जीवन के तुल्य है। — स्विफ्ट

जीवन में, विशेपकर राजनीति में, कोई चीज इतनी हानिकारक और खतरनाक नहीं है जितना कि डाँवाडोल स्थिति में रहना। — सुभाषचन्द्र बोस

डाक्टर

डाक्टर मृत्युपर्यंत विद्यार्थी होता है और जब वह विद्यार्जन की कामना छोड़ देता है तो उसकी मृत्यु समझिए। — लार्ड डासन

The best doctors in the world are doctor diet, doctor quiet, and doctor merryman.

भोजन, शान्ति और विनोद ही ससार के सर्वश्रेष्ठ डाक्टर हैं। — स्विफ्ट

डाक्टर प्रकृति के सहायक हैं। — गैलेन

डाक्टर इलाज करते हैं—प्रकृति अच्छा करती है। — अरस्तू

Nature, time and patience are the three great physicians.

प्रकृति, समय और धैर्य, ये तीन बड़े डाक्टर हैं। — एच० जे० वहन

No physician, in so far as he is a physician considers his own good in what he prescribes, but the good of his patient, for the true physician is also a ruler having the human body as subject, and is not a mere money-maker.

कोई चिकित्सक (डाक्टर) जहाँ तक कि वह डाक्टर है—दवा लिखने में अपना ही भला नहीं सोचता वल्कि ही अपने मरीज का भला सोचता है, क्योंकि सच्चा डाक्टर शरीररूपी प्रजा का शासक भी है—केवल रुपया पैदा करनेवाला नहीं। — प्लेटो

आशा से बढकर कोई शक्तिशाली औषधि नहीं है और डाक्टर के चेहरे या शब्दों से निराशा का लेशमात्र भी चिह्न रोगी की जान ले सकता है। — एक्जेल मन्थे

He is a good surgeon, who can amputate a limb, but he is a better surgeon who can save a limb.

वह अच्छा सर्जन है जो किसी अंग को काट सकता है, परन्तु वह सर्जन अधिक अच्छा है जो उसे बचा सकता है। — सर ए० कूपर

सज्जनता की आवश्यकता औषधि के व्यापार में अन्य व्यवसाय की अपेक्षा अधिक होती है, और किसी भी अन्य व्यक्ति की अपेक्षा चिकित्सक को उसकी अधिक आवश्यकता है। —सर डब्लू ओसलर

डींग

• Where boasting ends, there dignity begins
जहा डींग समाप्त होती है वही प्रतिष्ठा का प्रारम्भ होता है। —यंग

• The empty vessel makes the greatest sound

थोथा चना बाजे घना। —शेक्सपियर

अधजल गगरी छलकत जाय। —कहावत

जो गरजते है वे बरसते नहीं। —कहावत

ढोंगी

जो मनुष्य के साथ तो दयालुता का वर्ताव नही करता किन्तु पाषाण-मूर्ति की पूजा करता रहता है, वह ढोंगी कहा जा सकता है। —विनोबा

ढोंगी बनने की अपेक्षा स्पष्ट रूप से नास्तिक बनना अच्छा है। —विवेकानन्द

तकदीर

वही कानूने फितरत है जिसे तकदीर कहते है।
जिसे किस्मत समझते है वो तदबीरो का हासिल है॥ —अकबर

• We make our fortunes and we call them fate.
हम अपने भाग्य का निर्माण करते है और उसे होनी कहते है। —डिजरायली

तकरीर

Speech is the index of the mind.
तकरीर मस्तिष्क का प्रतिबिम्ब है। —सेनेका

• In oratory, the greatest art is to conceal art
तकरीर में सबसे बड़ी कला—कला का छिपाना है। —स्विफ्ट

Speech is silvery, silence is golden, speech is human, silence is divine.

वाणी चाँदी है, मौन सोना है; वाणी मानुषिक है, मौन दिव्य।

—जर्मन कहावत

• Speech is the gift of all, but the thought of few.

तकरीर सभी के गुण हैं, परन्तु विचार थोड़े ही के। —केटो

तजुर्बा

Experience is the father of wisdom and memory the mother

तजुर्बा ज्ञान का जनक है और स्मरणशक्ति उसकी जननी। —कहावत

Experience without learning is better than learning without experince.

विना ज्ञान का तजुर्बा अनुभवरहित ज्ञान से अच्छा है। —कहावत

• Experience is good if not bought too dear.

तजुर्बा अच्छा है यदि उसका अधिक मूल्य न चुकाना पड़े। —कहावत

अगर कोई सिर्फ तजुर्बो से ही अक्लमंद हो जाता तो लदन के अजावघर के पत्थर इतने वर्षो वाद संसार के वड़े से वड़े वुद्धिमानो से भी ज्यादा वुद्धिमान् होते।

—वर्नार्ड शा

तत्त्व (दे० 'दार्शनिक')

कर्म से केवल मन की ही शुद्धि होती है तत्त्व वस्तु नही प्राप्त हो सकती, उसके लिए मुख्य उपाय ध्यान है। —शंकराचार्य

तत्त्वज्ञ

For there was never yet a philosopher.

That could endure the tooth-ache patiently.

अभी तक ऐसा कोई तत्त्वज्ञ नही हुआ जो कि दाँत दर्द को धैर्यपूर्वक सहन कर सकता। —शेक्सपियर

जैसे वांस के पिंजड़े में सिह वन्द नही किया जा सकता उसी प्रकार तत्त्व-वेत्ता संसार में नही फँस सकता। —अज्ञात

जो सत्य की झलक के प्रेमी हैं वही सच्चे तत्त्व-ज्ञानी हैं। —सुकरात

तत्त्व-ज्ञान (दे० 'दर्शनशास्त्र' 'फिलासफी')

Queen of arts and daughter of heaven.

तत्त्वज्ञान कलाओ की रानी और स्वर्ग की बेटी है। —बर्क

तत्त्वज्ञान वह विज्ञान है जो सत्य का विचार करता है। —अरस्तू

Adversity is sweet milk of philosophy.

विपत्ति तत्त्वज्ञान का मधुर दूध है। —शेक्सपियर

तप

कामना का त्याग ही उत्तम तप है। —श्रीमद्भागवत

मन प्रसाद सौम्यत्व मौनमात्मविनिग्रह ।
भावसशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ॥ —श्रीकृष्ण (गीता)

मन की प्रसन्नता, शान्ति भाव, मौन, आत्म-सयम, अन्त करण का शुद्ध रखना यह सब मानसिक तप है।

अनुद्वेगकर वाक्य सत्य प्रियहित च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसन चैव वाङ्मय तप उच्यते ॥ —श्रीकृष्ण (गीता)

दु ख न देनेवाला सत्य, प्रिय, हितकर वचन, तथा धर्मग्रन्थो का अभ्यास—यह वाणी का तप है।

सबसे श्रेष्ठ तप ब्रह्मचर्य है। —स्वामी भजनानन्द

अध्रुवे हि शरीरे यो न करोति तपोऽर्जनम् ।
सपश्चात्तप्यते मूढो मृतो गत्वात्मनो गतिम् ॥ —वाल्मीकिरा०

यह शरीर क्षण भगुर है, इसमें रहते हुए जो जीव तप का उपार्जन नही करता, वह मूर्ख मरने के बाद, जब उसे अपने दुष्कर्मो का फल मिलता है, बहुत पश्चात्ताप करता है।

तप का फल है प्रकाश और ज्ञान। —वेदव्यास (महाभारत, शातिपर्व)

देव-द्विज-गुरु-प्राज्ञ-पूजन शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीर तप उच्यते ॥—श्रीकृष्ण (गीता)

देवता, ब्राह्मण, गुरु और ज्ञानी की पूजा पवित्रता, नम्रता, ब्रह्मचर्य, अहिंसा—यह शारीरिक तप है।

वन, गौ, सोना, मणि, रत्न और पुत्र सबका मूल तप ही है। तप ही से ये सब चीजें मिल सकती है। —वेदव्यास (महाभारत, शान्तिपर्व)

आन्तरिक तप चैतन्यमय प्रकाश से युक्त है, उससे तीनो लोक व्याप्त है। —वेदव्यास (महाभारत, शान्तिपर्व)

तपबल रचइ प्रपंचु विधाता। तपबल विष्नु सकल जगत्राता॥
तपबल संभु करहिं संघारा। तपबल सेषु धरहिं महि-भारा॥

—तुलसी (मानस)

रजोगुण और तमोगुण का नाश करनेवाला निष्काम कर्म ही तप है। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

विनयेन विना चीर्णम्—अभिमानेन संयुतम्।
महच्चापि तपो व्यर्थम्—इत्येतदवधार्यताम्॥ —अज्ञात

यह समझ लेना चाहिए कि विनय के बिना और अभिमान के साथ किया हुआ बड़ा तप भी व्यर्थ ही होता है। —अज्ञात

तप की महिमा महान है। तप द्वारा ही मनुष्य अपने अभीष्ट पद को प्राप्त करता है और पाप या अपूर्णता को दूर कर अपने चरित्र को उज्ज्वल तथा पवित्र बनाता है। वीर पुरुष तप द्वारा ही संसार में उन्नति के शिखर पर विराजमान होता है। —अज्ञात

तपस्या

अपनी पीड़ा सह लेना और दूसरे जीवों को पीड़ा न पहुँचाना, यही तपस्या का स्वरूप है। —संत तिरुवल्लुवर

तपस्या धर्म का पहला और आखिरी कदम है। —महात्मा गांधी

धन संग्रह की अपेक्षा तपस्या का संग्रह श्रेष्ठ है। —वेदव्यास (महा०)

दुःख-वेदना ही मनुष्य-जीवन में कठोर तपस्या का रूप धारण कर लेती है। यह तपस्या जिसकी सार्थक होती है उसकी आत्मा तपाये हुए सोने के सदृश निर्मल, निष्कलुष, व उज्ज्वल हो जाती है। —अज्ञात

तर्क

कड़े और कटु शब्द दुर्बल कारण को सूचित करते हैं। —विक्टर ह्यूगो

In argument similes are like songs in love, they describe much, but prove nothing

तर्क में उपमाएँ प्रेम में गीत के सदृश हैं। वे वर्णन तो अधिक करती है परन्तु सिद्ध कुछ भी नहीं करती। —प्रायर

Arguments out of a pretty mouth are unanswerable

सौंदर्य का तर्क लाजवाब होता है। —एडीसन

तलवार

तलवार ही सब कुछ है, उसके बिना मनुष्य न अपनी रक्षा कर सकता है और न निर्बल की। —गुरु गोविन्द सिंह

ताड़ना (दे० 'दंड')

गुरु की ताडना पिता के प्यार से अच्छी है। —सादी

लालयेत् पञ्चवर्षाणि दशवर्षाणि ताडयेत्।

पाँच वर्ष तक दुलार, दस तक ताडना करनी चाहिए।

तिरस्कार

पहचाने न जाने से देवता को भी तिरस्कृत होना पडता है।

जो अपमान सहन करता है, अनिष्ट को आमन्त्रण देता है। —कहावत

The way to procure insult is to submit to them. A man meets with no more respect than he exacts

तिरस्कृत होने का मार्ग तिरस्कार के सम्मुख सर झुका देना है। मनुष्य का उतना ही सम्मान होता है जितना कि वह दूसरों से प्राप्त करने में समर्थ होता है। —हैजलिट

तिल

"रसपाल" गाल पै रसाल तिल सोहै किधौं,
लपटो रसिक राय मन रस भीनो है।
कैधौं रूप-रतन-खजाने के महल पर,
मदन महीपति मुहर कर दीनो है।

—अज्ञात

दृष्टि लग जाय न किसी के चन्द्र आनन पै,
काला चिह्न विधि ने इसी से क्या दिया है छोड़। —अज्ञात

दस गुना रूप है वढ़ाता वन कर विन्दु,
अंक अनमोल ये कहाँ से गया मिल है। —अज्ञात

प्यारी की ठोढ़ी विराज रह्यौ तिल,
देखि विचार यहै मै कर्‌यौ है।
भौहै वनावत्त मानो विरंचि की,
लेखनी तें मसि-विन्दु झर्‌यो है॥ —अज्ञात

तीक्ष्णवुद्धि

स्पृशन्ति शरवत्तीक्ष्णस्तोकमन्तर्विशन्ति च।
वहुस्पृशापि स्थूलेन स्थीयते वहिररमवत्॥

—माघ (शिशु०)

तीक्ष्ण वुद्धि वाले लोग वाण की भाँति वहुत स्वल्प (स्थल में) स्पर्श करते है, किन्तु अन्त प्रविष्ट हो जाते है और मन्द वुद्धि लोग पत्थर के टुकड़े की भाँति वहुत (चौडे स्थल में) स्पर्श करने पर भी वाहर ही रह जाते है।

तीर्थ

सव से उत्तम तीर्थ अपना मन है जो विशेष रूप से शुद्ध किया हुआ हो।

—स्वामी शंकराचार्य

शरीर आत्मा के रहने की जगह होने के कारण तीर्थ जैसा पवित्र है।

—महात्मा गांवी

सत—महापुरुष ही वास्तविक तीर्थ और देवता है क्योकि इन संत महापुरुषों के दर्शन-मात्र से ही कल्याण हो जाता है। —श्रीमद्‌भागवत

तुलना

The superiority of some men is merely local. They are great because their associates are little.

कुछ व्यक्तियो की प्रधानता केवल स्थानीय होती है। वे वड़े इसलिए होते है कि उनके सहयोगी वौने होते है। —जानसन

तृण

तनु तिय तनय धामु धनु धरनी।
सत्यसब कहुँ तृन सम बरनी॥

—तुलसी (मानस)

सत्यव्रती के लिए तो शरीर, स्त्री, पुत्र, घर, धन और पृथ्वी सब तिनके के बराबर कहे गये है।

तृण ब्रह्मविदा स्वर्ग तृणं शूरस्य जीवितम्।
जिताक्षस्य तृण नारी निस्पृहस्य तृण जगत्॥ —चाणक्य

ब्रह्मज्ञानी को स्वर्ग तृण है, शूर को जीवन तृण है, जिसने इन्द्रियो को वश में किया उसको स्त्री तृण-तुल्य जान पडती है, निस्पृह को जगत तृण है।

तृष्णा

तृष्णा चतुर को भी अन्धा बना देती है। —सादी

तृष्णा वैतरणी नदी है। —चाणक्य

की त्रिस्ना है डाकिनी की जीवन का काल।
और और निस दिन चहै जीवन करै निहाल॥ —कबीर

जीर्यन्ते जीर्यते केशा दन्ता जीर्यन्ति जीर्यत।
चक्षु श्रोत्राणि जीर्यन्ति तृष्णैका तरुणायते।

वृद्धावस्था में बाल बूढे होकर सफेद हो जाते है, दाँत टूट जाते है, आँख और कान जीर्ण हो जाते हैं, पर एक तृष्णा ऐसी है, जो तरुणी ही बनी रहती है। —अज्ञात

अनन्तपारा दुष्पूरा तृष्णा दोष-शता-वहा।
अधर्म-बहुला चैव तस्मात्ता परिवर्जयेत्॥

तृष्णा का कही ओर छोर नही है, उसका पेट भरना कठिन होता है, वह सैकड़ो दोषो को ढोये फिरती है, उनके द्वारा बहुत से अधर्म होते है। अत तृष्णा का परित्याग कर दे। —वेदव्यास (पद्मपुराण)

जिसकी तृष्णा का ओर छोर नही है, नैराश्य उन पर अपना प्राबल्य प्रकट कर अपने वश में कर लेता है। —अज्ञात

आसा तृस्ना ना मरी कह गये दास कबीर —कबीर

तृष्णा के समान दूसरी कोई व्याधि नही है। —चाणक्य

गात्राणि शिथिलायन्ते तृष्णैका तरुणायते॥ —भर्तृहरि

चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गयीं, सिर के वाल पककर सफेद हो गये, सारे अंग ढीले हो गये,—पर तृष्णा तो तरुण होती जाती है।

कालो न यातो वयमेव यातास्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा।
—भर्तृहरि (वैराग्यशतक)

काल का खात्मा न हुआ, किन्तु हमारा ही खात्मा हो चला। तृष्णा का वुढापा न आया, किन्तु हमारा ही वुढापा आ गया।

यच्च काममुखं लोके, यच्च दिव्यं महत्सुखम्।
तृष्णाक्षय मुखस्यैः नार्हत. पोड़शी कलाम्॥

संसार मे जितने भी सुख काम के द्वारा मिलते हैं या वनाये गये है और जो भी सुन्दर तथा महान सुख है वे सभी तृष्णा के नाश से जो सुख मिलता है उसके सोलहवें अंश की भी तुलना में नही आ सकते। —अज्ञात

तृष्णा संतोप की वैरिन है, यह जहां पाव जमाती है, सतोप को भगा देती है। —सुदर्शन

तृष्णा रहित

चन्द्रमा और हिमालय पर्वत भी इतने शीतल नही, कदली वृक्ष और चन्दन भी इतने शीतल नही, जितना तृष्णारहित चित्त शीतल रहता है। —वशिष्ठ

तेजस्वी

तेजसा हि न वय. समीक्ष्यते।
—कालिदास (रघुवश)

तेजस्वियों की आयु नही देखी जाती।

तेजवत लघु गनिय न रानी। —तुलसी (मानस बाल०)

जिस मनुष्य में तेज नही रहता उसकी सब अवहेलना करते है। आग वुझ जाने पर राख को सब लोग छूते है। —अज्ञात

त्याग

त्याग के समान कोई सुख नहीं है। —महाभारत (शान्तिपर्व)

त्याग के सिवा इस ससार में कोई दूसरी शक्ति नहीं है। —स्वामी रामतीर्थ

जिस आदमी की त्याग की भावना अपनी जाति से आगे नहीं वढती, वह स्वय स्वार्थी होता है और अपनी जाति को भी स्वार्थी वनाता है। —महात्मा गाधी

कर्म से, धन से, अथवा सतान से विद्वानो ने अमृत रूप मोक्ष नहीं प्राप्त किया है, किन्तु एक त्याग से ही उसे प्राप्त किया है। —अज्ञात

छोटी वस्तुओ की अपेक्षा वड़ी वस्तुओ का त्याग सरल है। —मान्टेन

त्याग और दान

त्याग तो विल्कुल जड़ पर ही आघात करने वाला है। दान ऊपर ही ऊपर से कोपलें खोटने जैसा है। —विनोवा

त्याग का स्वभाव दयालु है, दान का ममतामय। धर्म दोनो ही पूर्ण है। त्याग का निवास धर्म के शिखर पर है, दान का उसके ललाट में। —विनोवा

त्याग से पाप का मूलधन चुकता है, और दान से पाप का व्याज। —विनोवा

त्याग पीने की दवा है, दान सिर पर लगाने की सोंठ। त्याग में अन्याय के प्रति चिढ है, दान में नाम का लिहाज है। —विनोवा

त्यागी

जिसने इच्छा का त्याग किया है, उसको घर छोड़ने की क्या आवश्यकता है, और जो इच्छा का वँधुआ है, उसको वन में रहने से क्या लाभ हो सकता है? सच्चा त्यागी जहा रहे वही वन और वही भवन-कदरा है। —महाभारत

त्याज्य

यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न च वान्धवा।
न च विद्यागमोप्यस्ति वास तत्र न कारयेत्॥ —चाणक्य

जिस देश मे मान नहीं, जीविका नहीं, वन्धु नहीं और विद्या का भी लाभ नहीं है, वहा नहीं रहना चाहिए।

जिस स्थान में धनी, वेद का पाठ करनेवाले, राजा, नदी, और वैद्य—ये पाच न हो उस स्थान में एक दिन भी नही रहना चाहिए। —हितोपदेश

निद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध, आलस्य, और दीर्घसूत्रता इन अवगुणो को उन्नति चाहने वाले पुरुष को अवश्य त्याग देना चाहिए। —हितोपदेश

त्योहार

त्योहार साल की गति के पड़ाव है, जहां भिन्न भिन्न मनोरंजन है, भिन्न भिन्न आनंद है, भिन्न भिन्न क्रीड़ास्थल है। —अज्ञात

त्रिया-चरित्र

स्त्रियाश्चरित्रम् पुरुषस्य भाग्यं दैवो न जानाति कुतो मनुष्य.।
स्त्रियो का चरित्र और पुरुषों का भाग्य, मनुष्य क्या देवता भी नही जान सकते। —भर्तृहरि

सत्य कहे कवि नारि स्वभाऊ। सब विधि अगम अगाध दुराऊ।
निज प्रतिबिम्ब मुकुर गहि जाई। जानि न जाय नारि-गति भाई॥
—तुलसी (मानस-अयोध्या)

त्रुटि

त्रुटि निकालना सरल है; अच्छा कार्य करना कठिन है। —प्लूटार्क

यदि तुम्हें अपने पड़ोसी की त्रुटियो को सहना है तो अपनी दृष्टि खुद अपनी ही त्रुटियो पर डालो। —गोलिना

थकान

Fatigue is the best pillow.
थकान सबसे अच्छी तकिया है। —फ्रैंकलिन

थूकना

Spit not against heaven, it will fall back in thy face.
चन्द्रमा पर थूकने वाले का थूक उसी के मुंह पर पड़ता है। —कहावत

दंड

लालनाद् वहवो दोपा ताडनाद्वहवो गुणा ।
तस्मात्पुत्र च शिष्यञ्च ताडयेन्नतु लालयेत् ॥ —चाणक्य

दुलारने से वहुत दोप होते है और दड देने से वहुत गुण, इसलिए पुत्र और शिष्य को दंड देना उचित है, वहुत प्यार करना नही।

गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानत
उत्पथ प्रतिपन्नस्य कार्यं भवति शासनम् ॥ —वाल्मीकि

यदि गुरु भी अभिमान में आकर कर्तव्य-अकर्तव्यता का ज्ञान खो वैठे और कुमार्ग पर चलने लगे तो उसे भी दण्ड देना आवश्यक हो जाता है।

एक कठोर दड वरसो के प्रेम को मिट्टी में मिला देता है। —प्रेमचन्द

दड सम्पूर्ण जगत को नियम के अन्दर रखने वाला है, यह धर्म की सनातन आत्मा है, इसका उद्देश्य है—प्रजा को उद्दण्डता से वचाना। —वेदव्यास (शातिपर्व)

दड अन्यायी के लिए न्याय है। —आगस्टाइन

The punishment of criminals should be of use: when a man is hanged, he is good for nothing

अपराधी के दड में उपयोगिता होनी चाहिए। जव एक मनुष्य को फासी दे दी गयी तो इससे कोई लाभ नही। —वाल्टायर

राजभिर्धृतदण्डाश्च कृत्वा पापानि मानवा ।
निर्मला स्वर्गमायान्ति सन्त सुकृतिनो यथा ॥
—वाल्मीकि (रा० कि०)

मनुष्य पाप या अपराध करने के पश्चात् यदि राजा के दिये हुए दण्ड को भोग लेते है तो वे शुद्ध होकर पुण्यात्मा पुरुषो की भाति स्वर्गलोक में आ जाते है।

' Punishment is lame, but it comes

दड लँगड़ा है लेकिन फिर भी वह आता है। —हर्बर्ट

यदि दण्ड न हो तो यह ससार नरक से भी वढकर दुर्गति में फँस जाय। —अज्ञात

रात में भी जव कि चराचर जगत सोता रहता है, केवल दण्ड जागता रहता है। —अज्ञात

दंभ

जिस वस्तु को मनुष्य दे नही सकता उसे ले लेने की स्पर्धा से बढ़कर दूसरा दंभ नही। —जयशंकर प्रसाद

दंभ और अहंकार से पूर्ण मनुष्य अदृष्टशक्ति के क्रीड़ा-कंदुक है।
—जयशंकर प्रसाद

दक्ष

The winds and waves are always on the side of the ablest navigators

लहर और तूफान भी दक्ष नाविक का साथ देती है। —गिबन

अपनी योग्यता को कैसे छिपाएं यह जानना बहुत बड़ी चातुरी है। —रोशोको

दमन

दमन और आतंक की तेजी हुकूमत के डर का नाम हुआ करती है। हर एक हुकूमत आतकवाद का सहारा तब लेती है जब उसे खुद अपनी हस्ती खतरे में मालूम पड़ती है। —पं० जवाहरलाल नेहरू

दया (दे० 'दयालुता')

दया सबसे बड़ा धर्म है। —महाभारत (शान्तिपर्व)

मधुर दया सज्जनता का वास्तविक चिह्न है। —शेक्सपियर

दया धर्म का मूल है, पाप-मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए, जब लगि घट में प्रान॥ —तुलसी

Mercy is an attribute to God himself, and earthly power doth then show likest God's when mercy seasons justice.

दया परमात्मा का निजी गुण है, और लौकिक शक्ति उस समय ईश्वर तुल्य मालूम होती है जब न्याय में दया का सम्मिश्रण होता है। —शेक्सपियर

शुद्ध न्याय में शुद्ध दया होनी चाहिए। न्याय का विरोध करनेवाली दया, दया नहीं बल्कि क्रूरता है। —महात्मा गांधी

Mercy and truth are met together; righteousness and peace have kissed each other.

दया और सत्यता परस्पर मिलते हैं, धर्म और शांति एक दूसरे का साथ देते हैं। —बाइबिल

जहाँ दया तहँ धर्म है, जहा लोभ तहँ पाप।
जहाँ क्रोध तह काल है, जहाँ क्षमा तह आप॥ —कबीर

Nothing emboldens sin so much as mercy.
पाप को इतना कोई साहसी नहीं बनाता—जितना कि दया बनाती है। —शेक्सपियर

दया कौन पर कीजिये, का पर निर्दय होय।
साईं के सब जीव हैं, कीरी कुजर दोय॥ —कबीर

Mercy is twice blessed, it blesseth him that gives, and him that takes

दया दो तरफी कृपा है। इसकी कृपा दाता पर भी होती है और पात्र पर भी। —शेक्सपियर

दया वह भाषा है जिसे बहरे सुन सकते हैं और गूंगे समझ सकते हैं। —अज्ञात

पापी हो या पुण्यात्मा अथवा वध के योग्य अपराध करनेवाले ही क्यों न हों, उन सब के ऊपर श्रेष्ठ पुरुष को दया करनी चाहिए, क्योंकि ऐसा कोई नहीं है जो सर्वथा अपराध न करता हो। —वाल्मीकि (रा० लंका०)

हम सभी ईश्वर से दया की प्रार्थना करते हैं और वही प्रार्थना हमें दूसरों पर दया करना भी सिखाती है। —शेक्सपियर

दुनिया का अस्तित्व शस्त्रबल पर नहीं बल्कि सत्य, दया या आत्मबल पर है। —महात्मा गांधी

दया सब वस्तुओं में सबसे अधिक सस्ती है, उसके प्रयोग में हमें सबसे कम कष्ट सहन करना और आत्मत्याग करना होता है। —एम० स्माइल्स

केवल दया दिखानेवाला परमात्मा अन्यायी परमात्मा है। —यंग

नित्य अपने से पूछो कि तुमने आज कितने बुरे मनुष्यों के साथ दया का बर्ताव किया। —मार्कस एंटोनियस

दयालु

The truly generous is the truly wise, and he who loves not others, lives unblest.

जो सच्चा दयालु है वही सच्चा बुद्धिमान है, और जो दूसरो से प्रेम नही करता उस पर ईश्वर की कृपा नही रहती। —होम

A kind heart is a fountain of gladness, making everything in its vicinity freshen into smiles.

दयालु हृदय प्रसन्नता का फव्वारा है, जोकि अपने पास की प्रत्येक वस्तु को मुस्कानो में भरकर ताजा बना देता है। —इर्विंग

दयालुता

दयालुता, दयालुता को जन्म देती है। —शोफोक्लीज

दयालुता हमको ईश्वर तुल्य बनाती है। —क्लाडियन

दयालुता वह सोने की जंजीर है जिसके द्वारा समाज परस्पर बँधा है। —गेटे

दरिद्र

दरिद्र वे लोग है जो अपने को दरिद्र मानते है, दरिद्रता दरिद्र समझने में ही रहती है। —एमर्सन

उस मनुष्य से अधिक दरिद्र कोई नही है, जिसके पास केवल पैसा है। —एडविन पग

दरिद्रता (दे० 'गरीबी,' 'निर्धनता')

दरिद्रता धीरतया विराजते, कुवस्त्रता शुभ्रतया विराजते।
कदन्नता चोष्णतया विराजते, कुरूपता शीलयुता विराजते॥ —चाणक्य

दरिद्रता धीरता से सुशोभित होती है, कुवस्त्र स्वच्छता से अच्छा लगता है, कुअन्न उष्णता से अच्छा लगता है, कुरूपता सुशीलता से शोभा देती है।

दरिद्रता प्रकट करना दरिद्र होने से अधिक दुखदायी होता है। —प्रेमचन्द

Poverty is the mother of health.

दरिद्रता तन्दुरुस्ती की मां है। —कहावत

मानसिक दरिद्रता अर्थहीनता के समान ही है जो हमें गरीब बनाती है।

—अज्ञात

दरिद्रता कलह की जड़ है। —कहावत

दरिद्रता मित्रो को परखती है। —कहावत

दरिद्रता का भाव रखकर हम समृद्धि को अपने मानस क्षेत्र की ओर कैसे आकृष्ट कर सकते हैं। —स्वेट मार्डेन

Poverty parteth friends
दरिद्रता मित्रो को अलग करती है। —कहावत

Poverty the most deadly and prevalent of all diseases
दरिद्रता अत्यन्त प्राणनाशक और प्रचलित रोग है। —'यूजीन ओ-नील'

एको हि दोषो गुण सन्निपाते निमज्जतीन्दोरिव यो बभापे।
नून न दृष्ट कविनापि तेन दारिद्र-दोषो गुणराशिनाशी॥

एक दोष गुणो के समूह में इस प्रकार छिप जाता है जिस प्रकार चन्द्रमा का कलंक उसके गुणो में छिप जाता है। यह बात जिस कवि (कालिदास) ने कही थी, वह भी यह न देख सका कि दरिद्रता का दोष ऐसा दोष है जो राशि राशि गुणो का विनाश कर देता है।

दरिद्रनारायण

अतिथि की भाति दीन, दु खी, पीडित, रोगी इत्यादि की सेवा करना भी भगवान-पूजा का एक अग है। दरिद्रनारायण भी एक महान् देवता है। उनका हम पर बड़ा उपकार है, जिसका कभी बदला नही चुकाया जा सकता। —विनोबा

दर्शन-शास्त्र (दे० "तत्त्वज्ञान", "फिलासफी")

दर्शन जगत् को समझने और उसको उन्नत बनाने का श्रेष्ठतम साधन है।

—डा० सम्पूर्णानन्द ('चिद्विलास')

कहा से? किधर? क्यो? कैसे? मात्र दर्शनशास्त्र इन्ही प्रश्नो से बना है। —जूबर्ट

Admiration is the foundation of all philosophy; investigation the progress and ignorance the end.

आश्चर्य सारे दर्शनशास्त्र की आधारशिला है। अनुसन्धान उसका विकास एवं अज्ञानता उसकी समाप्ति है। —मान्टेन

दर्शन सर्वश्रेष्ठ सगीत है। —प्लेटो

दर्शन का सम्बन्ध विचार के ऊँचे से ऊँचे स्तर और व्यवहार के नीचे से नीचे स्तर से है। —डा० सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)

दर्शन का उद्देश्य, जीवन की व्याख्या करना नही, जीवन को बदलना है।

—राधाकृष्णन्

दवा

दिनान्ते च पिबेद्दुग्धं
निशान्ते च पिबेत् पय ।
भोजनान्ते पिबेत्तक्र
किं वैद्यस्य प्रयोजनम् ॥ —अज्ञात

दिन के अन्त में दूध पिये, रात के अन्त में जल पिये, और भोजन के अन्त में मठा पिये, फिर वैद्य की क्या आवश्यकता ?

आराम और उपवास सर्वोत्तम दवा है। —फ्रैंकलिन

Words are of course the most powerful drug used by mankind
शब्द ही अत्यन्त शक्तिशाली दवा है, मानव जिसे प्रयोग में लाता है।

—किप्लिंग

जहां तक हो सके निरन्तर हँसते रहो—यह सस्ती दवा है। —अज्ञात

घर के पड़े कूड़े को ढक देने का और दवा का असर एक-सा होता है।

—महात्मा गांधी

An apple a day keeps the doctor away.
प्रतिदिन एक सेब का प्रयोग डाक्टर को दूर रखता है। —अंग्रेजी कहावत

ईश्वर अच्छा करता है पर फीस डाक्टर लेता है। —फ्रैंकलिन

The art of medicine is to be properly learned onl from its practice and exercise

औषधि की कला केवल उसके अभ्यास और प्रयोग से अच्छी तरह सीखी जा सकती है। —साइडेन हावर

दस्तकारी

जिस चीज में मनुष्य के प्यारे हाथ लगते हैं, उसमें उसके हृदय का प्रेम और मन की पवित्रता सूक्ष्म रूप से खिल जाती है। और उनमे मुर्दे को जिन्दा करने की शक्ति आ जाती है। —पूर्णसिंह

मनुष्य के हाथ से बने हुए कामो में उसकी प्रेममय पवित्र आत्मा की सुगन्ध आती है। —पूर्णसिंह

दाता

दाता का दोष उसी तरह छिप जाता है जिस तरह चन्द्र के किरण-जाल में उसका कलंक। —अज्ञात

अपनी भूख मार कर जो भिखारी को भीख दे वही तो दाता है। —अज्ञात

दान

दानेन भूतानि वशीभवन्ति
दानेन वैराण्यपि यान्ति नाशम्।
परोपि बन्धुत्वमुपैति दानै-
र्दानं हि सर्वव्यसनानि हन्ति॥ —अज्ञात

दान से सभी प्राणी वश में हो जाते हैं, दान से शत्रुता का नाश हो जाता है। दान से पराया भी अपना हो जाता है। अधिक क्या कहें, दान सभी विपत्तियों का नाश कर देता है।

तुलसी पछिन के पिये, घटै न सरिता-नीर।
दान दिये धन ना, घटै जो सहाय रघुबीर॥
—तुलसी (दोहावली)

जो जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दान।
दोऊ हाथ उलीचिये, यही सयानो काम।' —कबीर

दान देना ही आमदनी का एकमात्र द्वार है। —स्वामी रामतीर्थ

As the purse is emptied the heart is filled.

ज्यो ज्यो धन की थैली दान में खाली होती है दिल भरता जाता है।

—विक्टर ह्यूगो

दान तो वही है जो किसी को दीन नही वनाता। दया या मेहरवानी से जो हम देते है उसके कारण दूसरे की गर्दन झुकाते हैं। —विनोवा

प्रार्थना ईश्वर की तरफ आधे रास्ते तक ले जाती है, उपवास हमको उनके महल के द्वार तक पहुंचा देता है और दान से हम अन्दर प्रवेश करते हैं। —कुरान

• Charity begins at home, but should not end there.

दान घर से प्रारम्भ होता है लेकिन वही उसको समाप्त नहीं होना चाहिए।

—कहावत

जो दान अनीति और आलस्य को वढ़ाता है वह दान ही नही है; वह तो अधर्म है। —विनोवा

हाड़ वड़ा हरि भजन कर, द्रव्य वड़ा कछु देय।
अकल वड़ी उपकार कर, जीवन का फल येह॥ —कवीर

तुम्हारा दाँया हाथ जो देता हो उसे वाँया हाथ न जानने पाये। —वाइविल

दान का भाव वड़ा उत्तम भाव है, पर इसका भाव यह नही है कि समाज में दान पात्रों का एक वर्ग उत्पन्न किया जाय। —डा० सम्पूर्णानन्द

वुद्धि और भावना के सहयोग से जो क्रिया होती है वही सुन्दर है। दान के माने 'फेकना' नही वल्कि 'वोना' है। —विनोवा

आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव। —कालिदास

जैसे वादल पृथ्वी से जल लेकर फिर पृथ्वी पर वरसा देते हैं वैसे ही सज्जन भी जिस वस्तु का ग्रहण करते है उसका दान भी करते हैं।

दान धर्म की पूर्णता और उसका शृंगार है। —एडीसन

दारिद्र्यनाशनं शीलं दानं दुर्गति-नाशनम्।
अज्ञाननाशिनी प्रज्ञा भावना भय‑नाशिनी॥ —चाणक्य

शील दरिद्रता का, दान दुर्गति का, वुद्धि अज्ञान का और भक्ति भय का नाश करती है।

तगड़े और तन्दुरुस्त आदमी को भीख देना, दान करना, अन्याय है। —विनोबा

प्रत्युक्त हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव। —कालिदास

सज्जनो की रीति ही यह है कि जब कोई उनसे कुछ मागें तो वे मुह से कुछ न कह-कर काम पूरा करके ही उत्तर दे डालते हैं।

जो अपनी सम्पदा को जोड-जोड़ कर जमा करता जाता है उन पाषाण-हृदय को क्या मालूम कि दान में कितनी मिठास है। —अज्ञात

दान का भी एक शास्त्र है, वह कोई विवेकशून्य क्रिया नही है। —विनोबा

"अभय सर्वभूताना नास्ति दानमत परम्।" —वेदव्यास

सबसे बडा दान तो अभयदान है जो सत्य, अहिंसा का पालन करने से दिया जा सकता है।

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त सकिर।

सैकड़ो हाथो से इकट्ठा करो और हजारो हाथो से बाटो। —अथर्ववेद

दानव

किसी में दानव की सी शक्ति का होना तभी तक अच्छा है जब तक कि वह दानव की तरह उसका प्रयोग नही करता। —शेक्सपियर

दानी

जो बिना मागे ही दान करता है वही श्रेष्ठ दानी है। —अज्ञात

दानियो के पास धन नही होता और धनी दानी नही होते। —सादी

जब आप किसी को भौतिक पदार्थ देने में असमर्थ हो तो भी अपनी सद्भावनाएं और शुभ कामनाएँ दूसरो को देते रहिए। —अज्ञात

दारिद्र्य (दे० 'दरिद्रता')

दार्शनिक

अहकार को दूर करना ही दार्शनिक का सबसे पहला कार्य है। —इपिक्टेटस

मेरे विचार से सच्चा दार्शनिक वह है, जो अपने दाँत के दर्द को पड़ा हुआ सहन कर सिर धुनने के स्थान पर यह सोच कर सन्तोष कर लेता है कि उस [illegible] से ज्यादा हिलता पानी था। —वाल्टेयर

दार्शनिक कौन है? जिसको प्रत्येक प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने का जोश होता है, जिसको सदा जानने की इच्छा बनी रहती है और जो (बिना जाने) कभी संतुष्ट नहीं होता, वही सच्चा दार्शनिक है। —सुकरात

दासता

सांसारिक वस्तुओ, स्थूल पदार्थो की इच्छा करना ही दासता का कारण है।
—स्वामी रामतीर्थ

Slavery is contrary to the fundamental law of all societies.
दासता सभी समाज के मौलिक नियमो के विरुद्ध है। —मान्टेस्क्यू

दासता के साचे में ढलकर मनुष्य अपना मनुष्यत्व खो बैठता है। —प्रेमचन्द

दिमाग ('दे० मन')

खाली दिमाग शैतान का कारखाना बन जाता है। —महात्मा गांधी

• Strength of mind is exercise, not rest.
मस्तिष्क की शक्ति अभ्यास है, आराम नही। —पोप

The mind in its own place, and in itself can make a heaven of hell and hell of heaven.
मस्तिष्क स्वय अपने में ही स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग में बदल सकता है।
—मिल्टन

मनुष्य के मस्तिष्क की प्रगति धीमी है। —बर्क

दिल

जिसने दिल खोया उसी को कुछ मिला।
फायदा देखा इसी नुकसान में॥ —अज्ञात

• Hearts are stronger than swords.
दिल तलवार से अधिक शक्तिशाली है। —वेन्डेल फिलिप्स

, A good heart is worth gold.
अच्छा दिल सोने के मूल्य का होता है। —शेक्सपियर

दिल के घाव आसानी से नहीं भर जाया करते। —अज्ञात

दिल को दिल से राहत होती है। —अज्ञात

If a good face is a letter of recommendation a good heart is a letter of credit.

अगर सुन्दर चेहरा संस्तुति है तो नेक दिल विश्वास-पत्र। —बुल्वर

A merry heart maketh a cheerful countenance

दिल की खुशी चेहरे पर भी प्रसन्नता ला देती है। —कहावत

दिवालिया

The worst bankrupt in the world is the man who has lost his enthusiasm

संसार का सबसे खराब दिवालिया वह है जिसने अपना जोश खो दिया है।
—एच० डब्ल्यू० आरनाल्ड

दीक्षा

दीक्षा का अर्थ आत्म-समर्पण है। आत्म-समर्पण बाहरी आडम्बर से नहीं होता। यह मानसिक वस्तु है। —महात्मा गांधी (हरिजन)

दीन

अमीर गरीब सभी जरूरतें रखते हैं इसलिए दीन हैं—अमीरों की जरूरतें भी ज्यादा हैं इसलिए वे औरों की अपेक्षा दीन भी ज्यादा हैं। —सादी (गुलिस्तां)

दीन सबन को लखत है दीनहिं लखै न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय॥ —रहीम

दीनता ('दे० नम्रता')

बाहर की दीनता भीतर की दीनता ला देती है। —रवीन्द्र

दिव्य दीनता के रसहिं का जानै जग अन्धु।
भली बिचारी दीनता, दीनबन्धु से बन्धु॥ —रहीम

ऊँचे पानी ना टिकै नीचे ही ठहराय।
नीचा होय सो भरि पिवै ऊँचा प्यासा जाय॥ —कबीर

Humility is the solid foundation of all the virtues
दीनता सभी सद्गुणों की दृढ आधार-शिला है। —कन्फ्यूशस

It was pride that changed angels into devils; it is humility that makes men as angels.

यह अभिमान था जिसने देवों को दैत्यो में बदल दिया, यह दीनता है जो मनुष्य को देवतुल्य बना देती है। —आगस्टाइन

आत्म-सम्मान की भावना ही दीन भावना की औषधि है। —अज्ञात

I believe the first test of truly great man is his humility.
मेरा विश्वास है कि वास्तविक महान् पुरुष की पहली पहचान उसकी दीनता (नम्रता) है। —रस्किन

दीपक

भगवान् भुवनभास्कर के अभाव में दीपक भी आदरणीय है। —वेद

जो दीपक को अपने पीछे रखते है वे अपने मार्ग में अपनी ही छाया डालते हैं। —रवीन्द्र

दीर्घसूत्रता

जो कार्य तुम आज कर सकते हो उसे कल पर कदापि मत छोड़ो। —फ्रैंकलिन

दुनिया

· All the world's a stage
And all the men and women merely players.
सम्पूर्ण विश्व एक नाट्यशाला है।
और सभी पुरुष एवं नारी उसके अभिनय-कर्त्ता हैं। —शेक्सपियर

The only fence against the world is a thorough knowledge of it
दुनियां के विरुद्ध उसका पूर्णज्ञान ही मानव का रक्षक है। —लॉक

देशत्यागेन दुर्जनः।

दुर्जन को देश-त्याग करके छोड़ना चाहिए। —चाणक्य

दुर्जन के संसर्ग तें, सज्जन लहत कलेस।
ज्यों दशमुख अपराध ते, बंधन लह्यो जलेस॥ —वृंद

तक्षकस्य विषं दन्ते मक्षिकाया विषं शिरे।
वृश्चिकस्य विषं पुच्छे सर्वांगे दुर्जनां विषम्॥ —चाणक्य

सांप के दन्त में विष रहता है, मक्खी के सिर में माहुर रहता है, बिच्छू की पूंछ में विष होता है, किन्तु दुर्जन के सब शरीर में विष रहता है।

दाग जो लागा नील का सौ मन साबुन धोय।
कोटि जतन परबोधिए कागा हंस न होय॥ —कबीर

लोग कहते है कि दुर्जन पर हम प्रेम करते हैं तो वह और भी दुर्जन बनता है। लेकिन यह खयाल गलत है। अगर कही अन्धकार है और हम उसमें दीपक लाते है तो क्या अन्धकार ज्यादा हो जाता है। —विनोबा

न दुर्जनः साधुदशामुपैति
बहुप्रकारैरपि शिक्ष्यमाणः।
आमूलसिक्तः पयसा घृतेन
ननिम्बवृक्षो मधुरत्वमेति॥ —चाणक्य

दुर्जन को अच्छी अच्छी शिक्षा दी जाय तब भी वह साधु नहीं हो सकता जैसे नीम के पेड़ को यदि घी और दूध से सींचा जाय तो भी वह मधुर नहीं होगा।

सूर्य दुर्जन पर भी चमकता है। —सेनेका

कथापि खलु पापानामलमश्रेयसे यतः। —माघ (शिशु०)

दुर्जनों की (दर्शन सहवास आदि तो दूर) चर्चा भी अकल्याण करनेवाली होती है।

प्रकृत्यमित्रा हि सतामसाधवः। —भारवि

दुर्जन स्वभाव से ही सज्जनों के शत्रु होते है।

दुर्जनः परिहर्तव्यः विद्ययालंकृतो ऽपि सन्।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः॥ —भर्तृहरि

विद्या से विभूषित होने पर भी दुर्जन का परित्याग ही उचित है; मणि धारण करनेवाला सांप क्या भयंकर नहीं होता?

दुर्भावना

दुर्भावनाओं को मैं मनुष्यत्व का कलंक मानता हूँ। —महात्मा गांधी

A man's venom poisons himself more than his victim.

मनुष्य की दुर्भावना उसके शत्रु की अपेक्षा उसे ही अधिक दुःख देती है।

—चार्ल्स वक्सटन

दुश्मन (दे० 'शत्रु')

जब तुम अपनी आँखें उस परमात्मा से बन्द कर लेते हो, तब दुश्मन आते हैं।

—स्वामी रामतीर्थ

मनुष्य स्वयं ही अपना सबसे बड़ा शत्रु है। —सिसरो

If you want enemies, excel others, if friends, let others excel you.

यदि तुम शत्रु चाहते हो तो दूसरे से आगे बढ़ो, यदि मित्र तो दूसरे को अपने से आगे बढ़ने दो। —कोल्टन

शत्रु के साथ मृदुता का व्यवहार अपकीर्ति का कारण बनता है और पुरुषार्थ का व्यवहार यश का। —अज्ञात

आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मन.। —श्रीकृष्ण (गीता)

आत्मा ही आत्मा का बन्धु है और आत्मा ही आत्मा का दुश्मन है।

तात, तीनि अति प्रबल खल, काम क्रोध अरु लोभ।
मुनि विज्ञान-धाम मन, करहिं निमिष महुँ छोभ॥

—तुलसी (मानस-अरण्य)

दुश्मनी

दुश्मनी दोस्ती में छिपकर आती है। —डा० रामकुमार वर्मा

दुष्ट (दे० 'दुर्जन')

शाम्येत् प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जन.। —कालिदास (कुमा०)

दुष्ट उपकार से नहीं, अपकार से ही शान्त होता है।

दुष्टा भार्या, दुष्ट पुत्र, कुटिल राजा, दुष्ट मित्र, दूषित सम्बन्ध और दुष्ट देश को तो दूर से ही छोड देना चाहिए। —वेदव्यास (महाभारत, शान्तिपर्व)

कितनी भी सेंक—मालिश आदि करने पर भी जैसे कुत्ते की पूँछ टेढी ही रहती है वैसे ही कितनी भी सेवाशुश्रूपा की जाय, दुष्ट सीधे नही होते। —अज्ञात

अन्तर्गतमलो दुष्टस्तीर्थस्नानशतैरपि।
न शुध्यति यथा भाण्डं सुराया दाहित च तत्॥ —चाणक्य

जिसके हृदय में विकारादि है, अथवा तापादि है, ऐसा दुष्ट सौ वार भी तीर्थस्नान से शुद्ध नही होता, जैसे मदिरा का पात्र जलाया जाय तो भी वह शुद्ध नहीं होता।
—चाणक्य

कवि कोविद गावहि अस नीती। खलसन कलह न भल नहि प्रीती।
—तुलसी (मानस, उत्तर)

खल परिहरिय श्वान की नाई।
—तुलसी (मानस, उत्तर)

वसिये तहा विचार के, जहा दुष्ट डर नाहि।
होत न कवहू भँवर डर, ज्यो चपक वन माहि। —अज्ञात

दुष्ट न छाडे दुष्टता, कैसे हू सुख देत।
धोये हू सौ वेर के, काजर होत न सेत॥ —वृन्द

सन इव खल पर-वन्धन करई। खाल कढाइ विपति सहि मरई॥
खल विनु स्वारथ पर अपकारी। अहि मूपक इव सुनु उरगारी॥
—तुलसी (मानस उत्तर)

क्षमा खड्ग लीने रहैं, खल को कहा वसाय।
अगिन परी तृन रहित थल, आपहि ते वुझि जाय॥ —वृन्द

दर सम्पदा विनाशि नशाही। जिमि कृपि हति हिम उपल विलाही॥
दुष्ट उदय जग आरति हेतू। यथा प्रसिद्ध अवम ग्रह केतू।
—तुलसी (मानस-उत्तर)

वरु भल वास नरक कर ताता। दुष्ट सग जनि देइ विधाता॥ —तुलसी

जैसे उल्लू को सूर्य नहीं दिखाई पडता, इसी प्रकार दुष्ट को भगवान् नही दिखाई पडते। —स्वामी भजनानन्द

यदि दुष्ट को कोई भला कहे तो वह भला नही होगा। कहने से विष मधुर और नमक मीठा नही हो सकता। —अज्ञात

परस्वहरणे युक्तं परदाराभिमर्शकम्।
त्याज्यमाहुर्दुरात्मानं वेश्म प्रज्वलितं यथा ॥ —वाल्मीकि

जिस प्रकार जलता हुआ घर त्याग देने योग्य है, उसी प्रकार जो पराया धन हडपने में लगा हो और पर-स्त्री के साथ भोग करता हो, उस दुष्टात्मा को भी त्याग देने योग्य बताया गया है।

अकरुणत्वमकारणविग्रहः परधने परयोषिति च स्पृहा।
स्वजनबन्धुजनेष्वसहिष्णुता प्रकृतिसिद्धमिदं हि दुरात्मनाम् ॥

—भर्तृहरि

निर्दयता, अकारण वैर करना, दूसरे के धन और स्त्री की सर्वदा इच्छा करना, अपने परिवार और मित्रो की उन्नति न देख सकना, यह दुष्टो की स्वाभाविक आदत है।

दुःख (दे० 'विपत्ति')

दुःख को दूर करने की एक ही अमोघ औषधि है—मन से दुःखो की चिन्ता न करना। —वेदव्यास (म०)

दुःख की बलिहारी जाऊं। जब यह होता है तभी तो प्रभु की याद आती है।
—अज्ञात

दुःख मनुष्य के विकास का साधन है। सच्चे मनुष्य का जीवन दुःख में ही खिल उठता है। सोने का रग तपाने पर ही चमकता है। —हनुमान प्रसाद पोद्दार

धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपत काल परखियहि चारी ॥
—तुलसी (मानस-अरण्य)

दुःख की उत्पत्ति पाप से होती है। —भगवान् बुद्ध

यदि काँटो पर पड़ जाने से परमेश्वर की याद आती हो तो प्यारे! जब देखो कि संसार के काम-धन्धो में उलझकर राम भूलने लगा है, झटपट अपने तई नुकीले काटों पर गिरा दो। और कुछ नहीं तो पीड़ा के बहाने याद आ ही जायगी।
—स्वामी रामतीर्थ

रहिमन विपदा हू भली जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में जानि परत सब कोय॥ —रहीम

स्वेच्छा से ग्रहण किये हुए दुःख को ऐश्वर्य के समान भोगा जा सकता है।
—शरत् (शेष प्रश्न)

न ह वै सशरीरस्य सत प्रियाप्रिययोरपहति रस्ति। —छान्दोग्य उ०

निश्चयपूर्वक जब तक यह शरीर बना हुआ है तब तक सुख और दुःख का निवारण नही हो सकता।

चिर ध्येय यही जलने का, ठंडी विभूति बन जाना।
पीडा की अन्तिम सीमा, दुःख का फिर सुख हो जाना॥
—महादेवी वर्मा

दुःख भोगने से सुख के मूल्य का ज्ञान होता है। —सादी

रंज से खूगर हुआ इन्सा तो मिट जाता है रंज।
मुश्किलें मुझ पर पडी इतनी कि आसा हो गई॥ —गालिब

गम राह नही कि साथ दीजै। दुःख बोझ नही कि बाँट लीजै॥ —नसीम

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाटि न लैहै कोय॥ —रहीम

यदि मनुष्य पाप कर भी ले तो उसे पुन न दोहराये, न उसे छुपाये और न उसमें रत हो। पाप का सचय ही सब दुःखो का मूल है। —गौतम बुद्ध

सुख के बाद दुःख आता है और दुःख के बाद सुख। मनुष्य के दुःख और सुख गाडी के पहिये की तरह घूमते रहते है। —वेदव्यास (महा०)

• Men shut their doors against the setting sun
मनुष्य अपना दरवाजा डूबते हुए सूर्य को देख कर बन्द कर लेते है।
—शेक्सपियर

दुःख की पिछली रजनी बीच।
विकसता सुख का नवल प्रभात॥ —जयशंकर प्रसाद

Little minds are tamed and subdued by misfortune, but great minds rise above it

दुःख छोटे मनुष्यो को वशीभूत कर उन्हें निस्तेज कर देता है, परन्तु महान् पुरुष दुःख से ऊपर उठ जाते है। —वाशिंगटन अर्विंग

विना दुख के मुख है निस्सार।
विना आमू के जीवन भार॥ —अज्ञात

दु ख केवल चित्त की एक वृत्ति है, सत्य है केवल आनन्द। —प्रेमचन्द

गहरे दुख से वाणी मूक हो जाती है। —दि टालमड

वुढापा दु.ख है, वनक्षय दु ख है, अप्रिय पुरुषो के साथ रहना दु ख है और प्रिय जनो का विछुड़ना दु ख है। वव और वंवन से भी सव को दु ख होता है, तथा स्त्री के कारण और स्वाभाविक रूप से भी दु ख होता ही रहता है। —वेदव्यास

व्यस्त मनुष्य को आंसू वहाने के लिए समय नही। —वायरन

दु ख रहता है तो दुखियो के प्रति हमदर्दी रहती है और भगवान् का निरंतर स्मरण होता है। मुख में मनुष्य का हृदय निष्ठुर वन जाता है वह भगवान् को भूल जाते है। —वेदव्यास (महाभारत)

दुःखदायक

वृद्धकाले मृता भार्या वंधुहस्तगतं धनम्।
भोजनं च पराधीनं तिस्र. पुंसां विडम्वना॥ —चाणक्य

वुढ़ापे में मरी स्त्री, वन्धु के हाथ में गया धन और दूसरे के अवीन भोजन ये तीन पुरुषों की विडम्वना हैं, अर्थात दु.खदायक होते है।

दुःखी

अन्याय सहनेवाले से ज्यादा दु.खी अन्याय करनेवाला होता है। —प्लेटो

दुखियारों को हमदर्दी के आमू भी कम प्यारे नही होते। —प्रेमचन्द

लोकेषु निर्धनो दुःखी ऋणग्रस्तस्ततोऽधिकम्।
ताभ्यां रोगयुतो दु खी तेभ्यो दु खी कुभार्यक.॥ —विदुर

संसार के दुखियो में पहला दुःखी निर्धन है। उससे अधिक दु खी वह है जिसे किसी का ऋण चुकाना हो। इन दोनो से अधिक दुःखी है सदा रोगी मनुष्य। सव से दु.खी वह है जिसकी पत्नी दुष्टा हो।

दूत

नीति विरोध न मारिय दूता। —तुलसी

दृढ़ता

दृढता वडी प्रवल शक्ति है। पुरुष के सर्व गुणो की रानी है। दृढता वीरता का एक प्रधान अग है। —प्रेमचन्द

दृढता प्रेममन्दिर की पहली सीढी है। —प्रेमचन्द

चित्त में दृढ हो जानेवाला निश्चय चूने का फर्श है, जिसको आपत्ति के थपेडे और भी पुष्ट कर देते हैं। —प्रेमचन्द

When firmness is sufficient, rashness is unnecessary

जब दृढता पर्याप्त है तो उतावलापन अनावश्यक है। —नेपोलियन

ध्येय में दृढ निश्चय कर्म के सदृश है। —यंग

दृढ़-प्रतिज्ञ

दृढ-प्रतिज्ञ मनुष्य ससार को अपनी इच्छा के अनुसार झुका लेता है। —गेटे

वह दृढ-प्रतिज्ञ मानव जो प्राण देने के लिए तैयार रहता है, ब्रह्माण्ड तक को हाथो पर उठा सकता है। —रोम्याँ रोलाँ

दृष्टान्त

दृष्टान्त मानवता की पाठशाला है। —बर्क

Example is more efficacious than precept

दृष्टान्त उपदेश से अधिक फलोत्पादक होता है। —डा० जान्सन

अच्छे दृष्टान्त हमको अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित करते है, एव महान् आत्माओ का इतिहास हमें उदार विचार के लिए प्रोत्साहित करता है। —सेनेका

देवता

जो समस्त मानव जाति को अपनेपन मे ओतप्रोत देखते है वे देवता है।
—अज्ञात

पथ श्रुतेर्दर्शयितार ईश्वरा मलीमसामाददते न पद्धतिम्। —कालिदास

पवित्र मार्ग के प्रदर्शक देवतागण स्वय पाप-मार्ग का अनुसरण नहीं करते।

अस्वाधीनं कथं दैवं प्रकारैरभिराध्यते।
स्वाधीनं समतिक्रम्य मातरं पितरं गुरुम्॥ —वाल्मीकि

माता, पिता और गुरु—ये प्रत्यक्ष देवता हैं, इनकी अवहेलना करके अप्रत्यक्ष देवता की विविध उपचारो से आराधना करना कैसे ठीक हो सकता है?

न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे न मृन्मये।
भावो हि विद्यते देवस्तस्माद् भावो हि कारणम्॥ —चाणक्य

देवता न काठ में है, न पत्थर में है, न मिट्टी की मूर्ति में है, निश्चय है कि देवता भाव में विद्यमान है, इस हेतु भाव ही सब कारण है।

जिनके विचार और कार्य उदारतापूर्ण हैं, जो दूसरे लोगो की सुविधा का अधिक ध्यान रखते हैं, वास्तव में वे ही इस भूलोक के देवता हैं। —अज्ञात

देश

यस्मिन्देशे न सन्मानो न वृत्तिर्न च बान्धवा।
न च विद्यागमोप्यस्ति वास तत्र न कारयेत्॥ —चाणक्य

उस देश मे न रहे, जहाँ न आदर है, न जीविका, न बन्धु और न नये ज्ञान की आशा।

जिस देश की शक्ति आन्तरिक शान्ति रखने में खत्म होती है वह कोई अमली काम नही कर सकता। —विनोबा

जैसे मनुष्य बाल-वृद्ध-तरुण अवस्था में परिणत हुआ करता है वैसे ही देश की दशा में भी परिवर्तन होता रहता है। —अज्ञात

देश-भक्त

देश-भक्त के चरणस्पर्श से कारागार अपने को स्वर्ग समझ लेता है, इन्द्रासन उसे देखकर काँप उठता है, देवता नंदन-कानन से उस पर पुष्प-वृष्टि कर अपने को धन्य मानते हैं, कलकल करती हुई सुर-सरिता और ताण्डव-नृत्य में लीन रुद्र उसका जय जयकार करते है। —अज्ञात

अपने देश से बढ़कर दूसरा कोई नजदीकी सम्बन्ध नही। —प्लेटो

देशभक्ति का दम भरनेवालो के लिए जनता का खून चूसना बहुत बड़ा अपराध है। —प्रेमचन्द

Patriotism is the last refuge of a scoundrel
दुरात्मा के लिए देशभक्ति अन्तिम शरण है। —डा० जान्सन

देश-भक्त कर्त्ता की पवित्र कृति है। —अज्ञात

देश-सेवक

जो जनता की सेवा करना चाहते हैं या जिन्हें सच्चे धार्मिक जीवन के दर्शन करने की आशा है वे विवाहित हो या कुँवारे, उन्हें ब्रह्मचारी का जीवन विताना चाहिये।
—महात्मा गांधी

देश-हित

निज के विचारों तथा देश के हित में किसे चुना जाय यह जानना कभी कभी कठिन हो जाता है। कभी ऐसा भी अवसर आता है जब बहुजन हिताय अपने मौलिक विश्वासों को भी तिलांजलि देनी पडती है। —सरदार पटेल

देशाटन

Travel teaches toleration
देशाटन सहनशीलता की शिक्षा देता है। —डिजरायली

The use of travelling is to regulate imagination by reality.
देशाटन का लाभ कल्पना की वास्तविकता में व्यवस्था करना है।
—डा० जान्सन

देशोद्धारक

देश का उद्धार विलासियों के हाथ से नहीं हो सकता, उनके लिए सच्चा त्याग होना चाहिए। —प्रेमचन्द

देह

इस देही का गरब न करना, माटी में मिल जाए। —मीरा

यदि संसार में कोई वस्तु पवित्र है तो वह है मनुष्य की देह। —ह्विटमैन

विश्व में केवल एक ही मन्दिर है और वह है मनुष्य-शरीर। इस स्थल से अधिक पवित्र कोई स्थान नहीं। —नावलिन

दोष

निन्नानवे प्रति सैकड़ा अवस्थाओ में कोई भी मनुष्य अपने को दोषी नही ठहराता, चाहे उसकी कितनी ही भारी भूल क्यों न हो। —डेल कारनेगी

दोषभरी वात यदि यथार्थ है तव भी नही कहना चाहिए जैसे अंधे को अधा कहने पर तकरार हो जाती है। —अज्ञात

To find out a girl's faults, praise her to her girl friends.

यदि किसी लड़की के दोष जानना हो तो उसकी सखियो में उसकी प्रशसा करो। —फ्रैंकलिन

सभी छिपे हुए दोषो का उपाय ढूँढना कठिन होता है। —महात्मा गांधी

परस्वाना च हरणं परदाराभिमर्शनम्।
सुहृदामतिशंका च त्रयो दोषा क्षयावहा.॥
—वाल्मीकि (रा०, लंका)

दूसरो के धन का अपहरण, पर-स्त्री के साथ संभोग और अपने हितैषी सुहृदो के प्रति घोर अविश्वास—ये तीनो दोष जीव का नाश करनेवाले हैं।

The greatest of faults, I should say, is to be conscious of none.

सवसे वड़ा दोष, मेरी राय में, किसी भी दोष का ज्ञान न होना है। —कार्लाइल

जव आप के अपने द्वार की सीढ़ियां मैली है, तो अपने पड़ोसी की छत पर पडे हुए वर्फ की शिकायत मत कीजिए। —कन्फ्यूशियस

To find fault is easy; to do better may be difficult.

दोष निकालना सरल है, उससे अच्छा करना कठिन। —प्लूटार्क

दोषदर्शन

दूसरे के दोष पर ध्यान देते समय हम स्वयं वहुत भले वन जाते हैं। परन्तु जव हम अपने दोषो पर ध्यान देंगे, तो अपने आप को कुटिल और कामी पायेंगे।
—महात्मा गांधी

अपनी आंख में शहतीर देख पाने की अपेक्षा दूसरो की आख में तिनका देख लेना अधिक सुगम है। —स्वामी रामतीर्थ

खतायें बुजुर्गां गिरफ्तन खतास्त। —शेख सादी

बड़ो का दोष दिखाना दोष है।

दोषा वाच्या गुरोरपि।

गुरु का भी दोष कह देना चाहिये। —अज्ञात

दोषान्वेषण

दूसरो में दोष न निकालना, दूसरो को इतना उन दोषो से नहीं बचाता जितना अपने को बचाता है। —स्वामी रामतीर्थ

दूसरो के दोषो की चर्चा करने से अपना चित्त प्रक्षुब्ध ही होता है इसलिए उसके वर्तन की ओर लक्ष्य न देकर अथवा उसकी चर्चा करने न बैठकर उसके प्रति उपेक्षा दृष्टि से देखना ही श्रेयस्कर है। —स्वामी विवेकानन्द

जब तक तुममें दूसरो के दोष ही दोष देखने की आदत मौजूद है तब तक तुम्हारे लिए ईश्वर का साक्षात्कार करना अत्यन्त कठिन है। —स्वामी रामतीर्थ

दोषारोपण

उस काम को जिसे तुम दूसरे व्यक्ति में बुरा समझते हो, स्वय त्याग दो परन्तु दूसरो पर दोष मत लगाओ। —स्वामी रामतीर्थ

दोस्त (दे० मित्र)

आवश्यकता के समय काम आनेवाला दोस्त वास्तव में दोस्त है। —कहावत

• A true friend is one soul in two bodies

सच्चे मित्र वे हैं जिनके शरीर दो पर आत्मा एक होती है। —अरस्तू

मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्या। —कालिदास

जिसने अपने मित्रो का काम करने का बीडा उठाया है, वह विलम्ब नहीं किया करता।

• The only way to have a friend is to be one

मित्र पाने का एक ही मार्ग है, स्वयं किसी का मित्र बन जाना। —एमर्सन

विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्र गृहेषु च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतस्य च॥ — चाणक्य

विदेश में विद्या दोस्त होती है, गृह में भार्या दोस्त है, रोगी का दोस्त औषध और मरे का दोस्त धर्म है।

विवेकी मित्र ही जीवन का सबसे बड़ा वरदान है — यूरीपिडीज

दोस्ती (दे० 'मित्रता')

Friendship improves happiness, and abates misery, by doubling our joy and dividing our grief.

दोस्ती खुशी को दूना करके और दुख को बाँट कर प्रसन्नता बढ़ाती है तथा मुसीबत कम करती है। — एडीसन

दोस्ती धीरे धीरे पैदा करो, परन्तु जब कर लो तो उसमें दृढ़ और अचल रहो। — सुकरात

दौलत, द्रव्य (दे० 'धन')

सारी दौलत परिश्रम की उपज है। — लाक

दौलत राष्ट्र का जीवन-रक्त है। — स्विफ्ट

That man is the richest whose pleasures are the cheapest.

वही व्यक्ति सबसे अधिक दौलतमंद है जिसकी प्रसन्नता सबसे सस्ती है। — थोरो

जल्दी इकट्ठी की हुई दौलत जल्दी ही घट जाती है। थोड़ी-थोड़ी इकट्ठी की गयी बढ़ती है। — गेटे

Wealth consists not in having great possessions, but in having few wants.

दौलत अधिक संग्रह में नहीं वरन् थोड़ी आवश्यकताएँ होने में है। — इपीक्युरस

नकद दौलत अलादीन का चिराग है। — बायरन

दौलत की तीन तरह की गति होती है—दान, भोग और नाश; जो न देता है, न खाता है उसकी तीसरी गति होती है, अर्थात् वह नाश को प्राप्त होती है। — हितोपदेश

Riches serve a wise man but command a fool.

दौलत बुद्धिमान् की सेवा करती है, और मूर्ख पर शासन। —कहावत

जिनके पास दौलत है वे यदि वृद्ध भी हो चुके हैं तो जवान हैं और दौलत से जो रहित हैं वे जवान भी बुड्ढे हैं। —पचतंत्र

सस्कृत में पैसे को द्रव्य कहा गया है। द्रव्य माने वहने वाला। अगर वह स्थिर रहा तो रुके हुए पानी की तरह उसमें बदबू आने लगेगी —विनोबा

द्वन्द्व

द्वन्द्व को जीतनेका उपाय द्वन्द्व को मिटाना नही है, लेकिन द्वन्द्वातीत होना, अनासक्त होना है। —महात्मा गाधी

द्वेष

जिनका हृदय वैर या द्वेष की आग में जलता है उन्हे रात मे नीद नही आती। —विदुर

द्वेष-बुद्धि को हम द्वेष से नही मिटा सकते, प्रेम की शक्ति ही उसे मिटा सकती है। —विनोबा

मानव-मन मे द्वेष जैसी भयकरता उत्पन्न करता है वैसी कोई दूसरी वस्तु नही करती। —स्वेटमार्डेन

द्वेषी

द्वेपी को मृत्यु-तुल्य कष्ट भोगना पडता है। —वेदव्यास (म० सभा०)

धन (दे० 'दौलत', 'द्रव्य', 'पैसा')

धन उत्तम कर्मो से उत्पन्न होता है, प्रगल्भता (साहस, योग्यता, कीर्ति, वेग, दृढ निश्चय) से बढता है, चतुराई से फूलता-फलता है और सयम से सुरक्षित होता है। —विदुर

यथा मधुसमदत्ते रक्षन् पुष्पाणि षट्पदः।
तद्वदर्थान्मनुष्येभ्य आदद्यादविहिंसया॥ —विदुर

जैसे भौंरा पुष्प के नष्ट किये बिना उनमें से मधु ग्रहण कर लेता है, उसी प्रकार मनुष्य को भी धन के मूल साधन को नष्ट किये बिना उनमें से धन ग्रहण करना चाहिए।

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्य.। —कठ उ०

धन से मनुष्य कभी तृप्त होने वाला नहीं है।

गोधन, गजधन, वाजिधन और रतन-धन खान।
जो आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान॥ —कबीर

धर्म का सेवन धन के ही द्वारा होता है। —वेदव्यास (म० वन०)

धन से बड़े से बड़े पापो पर पर्दा पड़ सकता है। —प्रेमचन्द

Riches have wings; sometimes they fly away of themselves and sometimes they must be set flying to bring in mo.e.

धन के पर होते है, कभी कभी वे स्वयं उड़ते है और कभी कभी अधिक धन लाने के लिए उन्हें उड़ाना पड़ता है। —बेकन

जिस तरह तीतर अपने अंडो को नही सेता, उसी तरह बेईमानी से कमाई करने वाले का धन भी अधबीच में पड़ा रह जायगा और मरने पर लोग उसे मूर्ख कहेंगे। —रस्किन

धन भिक्षा-वृत्ति से अथवा उत्साहहीन होकर बैठ जाने से नही मिलता।
—वेदव्यास (महा० वन०)

धन के द्वारा अमरत्व-प्राप्ति असम्भव है। —स्वामी शिवानन्द

यस्यास्ति वित्तं स नर. कुलीन. स पण्डित. स श्रुतवान् गुणज्ञ ।
स एव वक्ता स च दर्शनीय. सर्वे गुणा काञ्चनमाश्रयन्ते॥
—भर्तृहरि

जिसके पास धन है वही कुलीन है, वही पंडित, बहुश्रुत, गुणज्ञ, सुवक्ता, और दर्शन करने योग्य है। तात्पर्य यह है कि ससार के सभी गुण सुवर्ण में बसते है।

Wealth is not his that has it, but his that enjoys it.

धन उसका नहीं है, जिसके पास है बल्कि उसका है जो उसका उपयोग करता है।
—फ्रैंकलिन

धन से धन की भूख बढती है, तृप्ति नही होती। —प्रेमचन्द

परिश्रम का कमाया धन और उसका सदुपयोग बहुत बड़ी नियामत है।
—कहावत

आपत्ति के समय भी यदि प्रजा को दुःख देकर धन वसूल किया जाता है, तो पीछे वह राजा के लिए मौत के समान सिद्ध होता है। —वेदव्यास (महा० शा०)

जब लगि वित्त न आपने, तब लगि मित्र न कोय।
रहिमन अम्बुज अम्बु बिनु, रवि ताकर रिपु होय॥ —रहीम

जब तक धन पैदा करने की ताकत रहती है, तभी तक घर के लोग मनुष्य से प्रसन्न रहते हैं, जब बुढापे में शरीर जर्जर हो जाता है, तब कोई बात भी नहीं पूछता।
—स्वामी शंकराचार्य

• Riches are but the baggage of fortune
धन भाग्य की गठरी है। —कहावत

धनैर्निष्कुलीना कुलीना भवन्ति,
धनैरापदम् मानवा निस्तरन्ति।
धनेभ्यः परो बान्धवो नास्ति लोके,
धनान्यर्जयध्वं धनान्यर्जयध्वं॥ —नीतिसार

आपदर्थे धनं रक्षेद्दारान् रक्षेद्धनैरपि।
आत्मानं सततं रक्षेद्दारैरपि धनैरपि॥ —चाणक्य

विपत्ति के लिए धन को बचाना चाहिए, धन से स्त्री को बचाना चाहिए, स्त्री और धन से सदा अपने को बचाना चाहिए।

दूसरे के धन का हरण करना, पर-स्त्री से प्रेम करना, मित्रों का त्याग करना, ये तीनों नाशकारक होते हैं। —विदुर

मनुष्य में चाहे सभी गुण हों, पर धन न हो तो धर्माचरण नहीं हो सकता।
—वेदव्यास (महाभारत, वनपर्व)

जो अधिक धन का स्वामी होकर भी इन्द्रियों पर अधिकार नहीं रखता, वह इन्द्रियों को वश में न रखने के कारण ही ऐश्वर्य से भ्रष्ट हो जाता है।
—विदुर

फुटबाल की तरह धन का खेल होना चाहिए। गेंद को कोई अपने पास नहीं रखता। वह जिसके पास पहुंचती है वही उसे फेंक देता है। पैसे को इस तरह फेंकने जाइये तो समाज-शरीर में उसका प्रवाह बहता रहेगा और समाज का आरोग्य कायम रहेगा। —विनोबा

✓ विदेशेषु धनं विद्या, व्यसनेषु धनं मति.।
परलोके धनं धर्मः, शीलं सर्वत्र वै धनम्॥

विदेश में विद्या धन (सुख का साधन) है, संकट-काल में बुद्धि धन है, परलोक में धर्म धन है, किन्तु शील सर्वत्र धन है। —अज्ञात

यत्कर्म करणेनान्तः संतोषं लभते नर।
वस्तुतस्तद् धनं मन्ये, न धन धनमुच्यते॥

जिस काम के करने से मनुष्य के अन्तःकरण को सतोष होता है मैं वास्तविक धन उसी को मानता हूं। लौकिक धन को धन नही कहा जाता। —अज्ञात

जो धन दया और ममता से रहित है, उसकी तुम कभी इच्छा मत करो और उसको कभी अपने हाथ से मत छुओ। — संत तिरुवल्लुवर

✓ पूज्यते यदपूज्योऽपि, यदगम्योऽपि गम्यते।
वन्द्यते यदवन्द्योऽपि, स प्रभावो धनस्य च॥

धन का ही यह प्रभाव है कि अपूजनीय भी पूजनीय, अगमनीय भी गमनीय और अवन्दनीय भी वन्दनीय हो जाता है। —पंचतंत्र

Money is a bottomless sea, in which, honour, conscience and truth may be drowned.

धन अथाह समुद्र है जिसमें इज्जत, अन्त.करण, और सत्य डूब सकते हैं। —कोजले

भाग्य और धन प्रायः पुरुषो की गोद में आप से आप टपक पड़ता है। —बेकन

धनाद्धर्मस्तत. सुखम्। —हितोपदेश

धन से धर्म होता है और उससे सुख।

धन ही संसार की प्रमुख वस्तु है। —बर्नार्ड शा

अर्थार्थी जीवलोकोऽयं श्मशानमपि सेवते।
जनितारमपि त्यक्त्वा नि.स्वं गच्छति दूरत.।

इस संसार में धन की कामना करनेवाला मनुष्य श्मशान का भी सेवन करता है और धन से रहित होने पर अपने जन्म देनेवाले पिता को भी दूर से छोड़कर चला जाता है। —पंचतंत्र

यस्यार्थस्तस्य मित्राणि यस्यार्थस्तस्य बान्धवा ।
यस्यार्थं स पुमाल्लोके यस्यार्थ स च जीवति । —चाणक्य

जिसको धन रहता है उसी के मित्र बहुत होते है, जिसके पास धन रहता है, उसी के बन्धु होते है, जिसके पास धन रहता है वही पुरुष गिना जाता है और जिसको अर्थ है वही जीवित है।

समय ही धन है। —कहावत

धन की प्यास कभी नहीं बुझती, उसकी ओर से मुह मोड लेना ही परम सुख है।
—वेदव्यास (महाभारत, वनपर्व)

धन बढाने की अभिलाषा उन्नति का बीज है। —वेदव्यास (महा०)

पुत्र-धन सबसे श्रेष्ठ है, इसके सामने ससार के सब धन फीके है। —वेदव्यास

यदि धन अपने पास इकट्ठा हो जाय तो वह पाले हुए शत्रु के समान है। उसका छोडना भी कठिन हो जाता है। —वेदव्यास (म० वन०)

धन की सफलता दान में ही है। —वेदव्यास (म० सभा०)

कोई व्यक्ति दो आदमियो की एक साथ सेवा नही कर सकता। चाहे ईश्वर की उपासना कर लो, चाहे कुबेर की। —बाइबिल

धन मनुष्य के दुख का कारण है। जो धन अच्छे काम में लगाया जाता है, वह भी मनुष्य को स्थायी आनन्द नही देता। —वेदव्यास

Who steals my purse steals my trash.
जो मेरा धन चुराता है, मेरी तुच्छ वस्तु ही ले जाता है। —शेक्सपियर

जो अपने धन से सतुष्ट रहकर धर्म में स्थित रहता है वही सुखी रहता है।
(वेदव्यास म० सभा०)

धर्म करने के लिए भी धन कमाने की अपेक्षा न कमाना ही अच्छा है, जब अन्त में कीचड़ को धोना ही पडेगा तो छुआ ही क्यो जाय। —वेदव्यास (म० वन०)

पानी बाढो नाव में, घर में बाढो दाम।
दोनो हाथ उलीचिए, यही सयानो काम॥ —कबीर

नुपात्रदानाच्च भवेद्धनाढ़यो धन-प्रभावेण करोति पुण्यम्।
पुण्य-प्रभावात्सुर-लोकवासी पुनर्धनाढ्यः पुनरेव भोगी॥ —अज्ञात

सुपात्र को दान देने से आदमी धनाढ्य होता है, और धन के प्रभाव से पुण्य करता है, एवं पुण्य के प्रभाव से सुरलोकवासी होता है और उसके बाद फिर से धनाढ्य और फिर सभी सुखो का भोगनेवाला होता है।

जब धन जरूरत से ज्यादा हो जाता है, तो अपने लिए निकास का मार्ग खोजता है। यों न निकल पायगा, तो जूए में जायगा, घुड़दौड़ में जायगा, ईंट-पत्थर में जायगा या ऐयाशी में जायगा। —प्रेमचन्द (गो-दान)

धनवान्, धनी (दे० "टका")

✓ जो अधिक धनवान् है वही अधिक मोहताज है। —सादी

जिसे सब तरह से संतोष है वही धनवान् है। —स्वामी शंकराचार्य

धनवानों के हाथ में माप ही एक है, वह विद्या, सौन्दर्य, बल, पवित्रता और तो क्या, हृदय भी उसीसे मापते हैं। वह माप है—उनका ऐश्वर्य। —जयशंकर प्रसाद

✓ धन पाकर फूलना नहीं चाहिए, विद्वान् होकर अहंकार नहीं करना चाहिए।
—वेदव्यास (म० आदि०)

जैसे प्राणियों के सिर पर मृत्यु का भय सर्वदा सवार रहता है वैसे ही धनी पुरुषों को, राजा, जल, अग्नि, चोर और कुटुम्ब का भय सदा बना रहता है। —वेदव्यास

वे धनी आपसे भी अधिक अन्यायी और विचारहीन है जो गरीबों को आलसी और कामचोर कहकर पुकारते हैं। —रस्किन, विजयपथ

जैसे मांस को आकाश में पक्षी, भूमि पर हिंसक जीव, और जल में मगर मच्छ खा जाते हैं वैसे ही धनी पुरुष के धन को सब कहीं दूसरे लोग ही भोगा करते हैं।
—वेदव्यास (म० वन०)

सुई के छेद से ऊंट का निकल जाना सम्भव है किन्तु धनी मनुष्यों का स्वर्ग में पहुंचना असम्भव है। —अज्ञात

धनवानों का हृदय धन के भार से दबकर सिकुड़ जाता है, उसमें उदारता के लिए स्थान नहीं रहता। —अज्ञात

जिसके जीवन को उसके इर्द-गिर्द की जनता चाहती है, वह सच्चा धनी है।
—विनोबा

धन्यवाद

'Please' and 'thank you' are the small change with which we pay our way as social beings. They are the little courtesies by which we keep the machine of life oiled and running sweetly.

'कृपया' और 'धन्यवाद'—ये छोटी रेजगारी है जिसके द्वारा हम सामाजिक प्राणी होने का मूल्य चुकाते हैं। ये ऐसे साधारण शिष्टाचार हैं जिनके द्वारा हम जीवन-यन्त्र को स्नेहयुक्त और चालित रखते हैं। —गार्डनर

धर्म

पर-हित सरिस धरम नहिं भाई।
पर-पीड़ा सम नहिं अधमाई॥ —तुलसी

धर्म की शक्ति ही जीवन की शक्ति है, धर्म की दृष्टि ही जीवन की दृष्टि है।
—डा० राधाकृष्णन्

विश्वव्यापी धर्म तो एक ही है, यद्यपि उसके सैकड़ों रूपान्तर हैं।
—जी० बी० शॉ

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥

सावधान होकर धर्म का वास्तविक रहस्य सुनो और उसे सुनकर उसी के अनुसार आचरण करो। जो कुछ तुम अपने लिए हानिकर और दुखदायी समझते हो उसे दूसरों के साथ मत करो। —वेदव्यास (महा०)

धर्म वस्तुतः बुद्धि-ग्राह्य नहीं, हृदय-ग्राह्य है। —महात्मा गांधी

भारतवर्ष का धर्म उसके पुत्रों से नहीं, पुत्रियों के प्रताप से ही स्थिर है। भारतीय देवियों ने यदि अपना धर्म छोड़ दिया होता तो देश कब का नष्ट हो चुका होता।
—स्वामी दयानन्द

जो धर्म शुद्ध अर्थ का विरोधी है वह धर्म नही है। जो धर्म राजनीति का विरोधी है वह धर्म नही है। धर्म-रहित अर्थ त्याज्य है। धर्म-रहित राज्यसत्ता राक्षसी है।

—महात्मा गांधी

धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो, मा नो धर्मो हतो वधीत॥—वेदव्यास

मारा हुआ धर्म ही हमको मारता है और हमसे रक्षा किया हुआ धर्म ही हमारी रक्षा करता है, इसलिये धर्म का हनन नही करना चाहिए, जिससे तिरस्कृत धर्म हमारा विनाश न करे।

जहा दया तहं धर्म है, जहां लोभ तहं पाप।
जहा क्रोध तह काल है, जहा क्षमा तहं आप॥ —कबीर

धर्म को रोका नही जा सकता, अन्तरात्मा या हृदय को दबाया नही जा सकता। धर्म तो हृदय की चीज है और हृदय है स्वतंत्र, इसलिए पूजा और धर्म स्वतत्र है।

—स्टालिन

अन्याय सह कर बैठ रहना,
यह महा दुष्कर्म है।
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी,
दण्ड देना धर्म है। —मैथिलीशरण गुप्त

धर्मो हि परमो लोके धर्मे सत्यं प्रतिष्ठितम्। —वाल्मीकि

ससार में धर्म ही सबसे श्रेष्ठ है। धर्म में ही सत्य की प्रतिष्ठा है।

धर्म तो मानव-समाज के लिए अफीम है। —कार्ल मार्क्स

धर्म की पवित्रता शरत्कालीन जल-स्रोत के सदृश हो, उसकी उज्ज्वलता शारदीय गगन के नक्षत्रालोक से भी कुछ बढ़कर और शीतल हो। —जयशंकर प्रसाद

मानव की परिपूर्णता में धर्म बाधक है। परलोक की सुन्दर कल्पना कर धर्म अपनी आज की जिम्मेवारियो से बरी हो जाता है। धर्म आज रूढ़ियो और स्थिर स्वार्थों का समर्थक है। —आचार्य नरेन्द्रदेव (राष्ट्रीयता और समाजवाद)

सच्चा धर्म तो पापो की जड़ काट कर मुक्ति का मार्ग-प्रदर्शन करता है पर मिथ्या धर्म में मुक्ति टको के बल बिकती है। —रस्किन

धर्मो यो बाधते धर्म न स धर्म्म कुधर्म्म तत्।
धर्म्माविरोधी यो धर्म्म. स धर्म्म सत्यविक्रम ॥ —अज्ञात

जो धर्म दूसरे धर्म को बाधा पहुँचाता है वह धर्म नही कुधर्म है। जो धर्म का अविरोधी है, सत्य पराक्रमशील धर्म वही है।

सच्चा धर्म हमे अपने आश्रितो का सम्मान करना सिखाता है और मानवता, दरिद्रता, विपत्ति, पीडा एव मृत्यु को ईश्वरीय देन जानता है। —गेटे

In death the many become one, in life the one becomes many.
Religion will be one when God is dead.
मृत्यु में अनेक एक हो जाता है, जीवन में एक अनेक रहता है।
धर्म एक हो जायगा जब ईश्वर का अत होगा। —रवीन्द्र

धृति क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रियनिग्रह ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्मलक्षणम् ॥ —मनु०

धर्म के दस चिह्न है। अर्थात् जिनमें यह दस चिह्न धैर्य, क्षमा, दम न करना, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध पाये जावें वह मनुष्य धार्मिक है।

धर्म से केवल मोक्ष की ही नही अर्थ और काम की भी सिद्धि होती है।
—वेदव्यास (महा०)

जहा धर्म नही, वहा विद्या, लक्ष्मी, स्वास्थ्य आदि का भी अभाव होता है। धर्म-रहित स्थिति मे बिलकुल शुष्कता होती है, शून्यता होती है। —महात्मा गाधी

If men are so wicked with religion what would they be without it

धर्म होने पर जब मनुष्य इतने नीच है, तो धर्म न होने पर वे क्या होंगे।
—इंगरसोल

मान बड़ाई के मोल में धर्म को न दो, मान-बड़ाई को पैरो तले [illegible], पर धर्म को बचाओ। —अज्ञात

धर्म सेवा का नाम है, लूट और कत्ल का नहीं। —प्रेमचन्द

धर्म परमेश्वर की कल्पना कर मनुष्य को दुर्बल बना देता है, उसमे आत्मविश्वास उत्पन्न नही होने देता और उसकी स्वतन्त्रता का अपहरण करता है।
—आचार्य नरेन्द्रदेव (राष्ट्रीयता और समाजवाद)

धर्म का उद्देश्य है कि मनुष्य के चरित्र में अटल बल प्राप्त हो।

—स्वामी रामतीर्थ

मानव और ईश्वर की कसौटी पर जो जीवन खरा उतरे, वही सच्चे धर्म का एकमात्र प्रमाण-पत्र है। —डा० जानसन

धर्म उस अग्नि की, जो प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर जलती है, ज्वाला को प्रज्ज्वलित करने में सहायता करता है। —डा० राधाकृष्णन्

धर्म कभी धन के लिए न आचरित हो, वह श्रेय के लिए हो, प्रकृति के कल्याण के लिए हो, धर्म के लिए हो। —जयशंकर प्रसाद

धर्म जिन्दगी की हर एक सांस के साथ अमल में लाने की चीज है।

—महात्मा गांधी

आपत्ति के समय भी जो धर्म का त्याग नहीं करता वह श्रेष्ठ है। —वेदव्यास

विशाल व्यापक धर्म है ईश्वरत्व के विषय में हमारी अचल श्रद्धा, पुनर्जन्म में अविचल श्रद्धा, सत्य और अहिंसा में हमारी सम्पूर्ण श्रद्धा। —महात्मा गांधी

हिन्दू धर्म का आदर्श सभी मनुष्यों को ब्राह्मण और सभी व्यक्तियों को पैगम्बर बनाना है। —डा० राधाकृष्णन्

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्म्मः। —अज्ञात

जिससे अभ्युदय और कल्याण अथवा परमार्थ की सिद्धि हो, वही धर्म है।

जो धर्म के गौरव को पूज्य मान कर शान्त और मग्न होता है, उसी को सच्चा शान्त और सच्चा नम्र समझना चाहिए। अपना मतलब साधने के लिए कौन शांत और नम्र नहीं बन जाता? —गौतमबुद्ध

प्राणियों की अभिवृद्धि के लिए धर्म का प्रवचन किया गया है; अतः जो प्राणियों की अभिवृद्धि का कारण हो, वही धर्म है। —वेदव्यास (म०)

हमारा धर्म है हमारा भोजन। भोजन पवित्र रहे, फिर हमारे धर्म पर कोई आंच नहीं आ सकती। रोटियां ढाल बनकर अधर्म से हमारी रक्षा करती हैं। —प्रेमचन्द

गम्भीरता, उदारता, विश्वस्तता, तत्परता तथा दयालुता का व्यवहार ही सच्चा धर्म है। —कनफ्यूशियस

आहारनिद्राभयमैथुनं च, सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषः, धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः॥ —हितो०

खाने, सोने, डरने और मैथुन के बारे में मनुष्य और पशु परस्पर समान हैं लेकिन धर्म ही मनुष्यों में विशेष है। यदि वह भी न रहा तो फिर मनुष्य सर्वदा पशु के समान ही है।

मन को निर्मल रखना ही धर्म है, बाकी सब कोरे आडम्बर हैं। —संत तिरुवल्लुवर

धर्म-त्याग

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥ —श्रीकृष्ण (गीता)

पराये धर्म से अपना धर्म गुणरहित होने पर भी श्रेष्ठ है, अपने धर्म में मरना भी श्रेष्ठ है, किन्तु परधर्म भयानक है।

न जातु कामान्न भयान्न लोभात् धर्मं जह्याज्जीवितस्यापि हेतोः।

कामना से, भय से, लोभ से, अथवा प्राण बचाने के लिए भी धर्म का त्याग न करे। धर्म ही नित्य है सुख दुःख तो अनित्य है। —वेदव्यास (म०)

धर्म-प्रचार

धर्म आत्मा का विषय है जिसका प्रचार चिन्तन से, ज्ञान से, [illegible] से, [illegible] से ही होता है। —[illegible]

सत्ता के बल पर जो धर्म ग्रहण कराया जाता है वह तभी तक [illegible] तक तलवार आगे चमकती रहती है। —हरिभाऊ उपाध्याय

सत्ता से धर्म फैलाने के उद्योग इतिहास में हुए हैं लेकिन [illegible] ही हुई है। धर्म का उद्देश्य ही सत्ता से [illegible] है। —विनोबा

धर्मतत्त्व के प्रचार का [illegible] साधन बुद्धि है। [illegible] तो बुद्धि से उसको समझाना है। [illegible] बुद्धि के बिना विधि-निषेध का [illegible] किया जाता है। —स्वामी [illegible]

धर्म-पालन

धर्म का पालन करने पर जिस धन की प्राप्ति होती है, उससे बढ़कर कोई धन नहीं है।

—वेदव्यास (म० अ०)

धर्म-बंधन

धर्म का बंधन रक्त और वीर्य के बंधन से सुदृढ़ है। —अज्ञात

धर्म-मार्ग

धर्म का मार्ग फूलों की सेज नहीं है। इसमें बड़े-बड़े कष्ट सहन करने पड़ते हैं।

—अज्ञात

धर्म-शिक्षा

जो चीज विकार को मिटा सके, राग-द्वेष को कम कर सके. जिस चीज के उपयोग से मन सूली पर चढ़ते समय भी सत्य पर डटा रहे वही धर्म की शिक्षा है।

—महात्मा गांधी

धर्म-हीन

मेरा विश्वास है कि बिना धर्म का जीवन बिना सिद्धांत का जीवन होता है और बिना सिद्धान्त का जीवन वैसा ही है जैसा कि बिना पतवार का जहाज। जिस तरह बिना पतवार का जहाज मारा-मारा फिरेगा, उसी तरह धर्महीन मनुष्य भी संसार सागर में इधर से उधर मारा मारा फिरेगा और अपने अभीष्ट स्थान तक नहीं पहुंचेगा।

—महात्मा गांधी

धर्मात्मा

सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन्। —ऋग्वेद

धर्मात्मा को सत्य की नाव पार लगाती है।

जिमि सरिता सागर महुं जाहीं। यद्यपि ताहि कामना नाहीं॥
तिमि सुख-सम्पति, बिनहिं बुलाये। धर्मशील पहं जाहि सुभाये॥

—तुलसी (मानस-बाल०)

धीर

विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः।

—कालिदास (कुमारसंभव)

यथार्थ में धीर पुरुष तो वे ही हैं जिनका चित्त विकार उत्पन्न करनेवाली परिस्थिति में भी अस्थिर नहीं होता।

धीर मनुष्य मनःप्रसाद का सहारा लेकर आपत्ति की नदियों को सुखपूर्वक पार कर जाते हैं। वे अपने को दुःखी नहीं करते। —अज्ञात

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु, गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु, युगान्तरे वा।
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥ —भर्तृहरि

नीतिज्ञ लोग चाहे निन्दा करें अथवा प्रशंसा करें, लक्ष्मी (धन) चाहे आवे अथवा बिलकुल चली जाय, मृत्यु चाहे आज ही हो जाय अथवा एक युग के बाद, पर धीर लोग न्याययुक्त मार्ग से कभी पैर नहीं हटाते।

धीरज

सङ्कट के समय धीरज धारण करना ही मानो आधी लड़ाई जीत लेना है।

—प्लाटस

जिसे धीरज है और जो मेहनत से नहीं घबराता कामयाबी उसकी चेरी है।

—अज्ञात

कबिरा धीरज के धरे हाथी मन भर खाय।
टूक एक के कारने, स्वान घरै घर जाय॥ —कबीर

धीरज धारण करनेवाले दरिद्र की धीरता के गुण को कोई भी दुर्दिन दूर नहीं कर सकता। जैसे नीचे झुकाई हुई आग की ज्वाला को कोई भी मनुष्य नीचे की ओर कभी झुका नहीं सकता।

धीरज सारे आनन्दों और शक्तियों का मूल है। —जान रस्किन

धूर्त

नराणां नापितो धूर्तः पक्षिणां चैव वायसः।
चतुष्पदां श्रृगालस्तु स्त्रीणां धूर्ता च मालिनी॥ —चाणक्य

पुरुषों में नाई, पक्षियों में कौवा, पशुओं में सियार और स्त्रियों में मालिन धूर्त होती है।

धूर्त को धोखा देने से दूना आनन्द आता है। —अज्ञात

A wolf in lamb's skin.

मुख में राम बगल में छुरी। —कहावत

बुरा आदमी और भी बुरा है जब वह साधु बनने का स्वांग रचता है। —बेकन

One may smile and smile and be a villain.

हँसमुख व्यक्ति भी नीच हो सकता है। —शेक्सपियर

No man is a hypocrite in his pleasures.

अपने आनन्द में कोई भी व्यक्ति पाखंडी नहीं हो सकता। —डा० जानसन

धूर्तता

धूर्तता नीचता का आवश्यक बोझ है। —डा० जानसन

It is time to fear when tyrants seem to kiss.

जब जुल्मी चूमने का अभिनय करे तो डरना चाहिए। —शेक्सपियर

धूल

धूल अपमान सह लेती है और बदले में पुष्पों का उपहार देती है। —रवीन्द्र

पादाहतं यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति।
स्वस्थादेवापमानेऽपि देहिनस्तद्वरं रजः॥
—माघ (शिशुपालवध)

जो धूल पैर से आहत होने पर उड़कर (आहत करनेवाले के) सिर पर चढ जाती है, वह अपमान होने पर भी स्वस्थ बने रहनेवाले शरीरधारी मनुष्य से श्रेष्ठ है।

ध्यान

जब बुद्धि में चंचलता न हो तभी ध्यान है। मन को वशीभूत करना ही ध्यान है।
—अज्ञात

ध्यान वायुयान है जो साधक को अनन्त आनन्द और अक्षय शांति के साम्राज्य में उड़ा ले जाता है। —स्वामी शिवानन्द

क्या तुम्हें मालूम है कि सात्विक प्रकृति का मनुष्य कैसे ध्यान करता है? वह आधी रात को अपने बिस्तर के अन्दर ध्यान करता है, ताकि लोग उसे देख न सकें।
—रामकृष्ण परमहंस

ध्यान ही मोक्ष प्राप्त करने का एकमात्र राजमार्ग है। —स्वामी शिवानन्द

ध्यान एक रहस्यमयी सीढ़ी है जो अवनी और अम्बर को मिलाती है एवं साधक को ब्रह्म के अमरलोक की ओर ले जाती है। —स्वामी शिवानन्द

ध्यान ही वह गगन है जहां मगन मानव-मन के अमित बलशाली आराध्य की तस्वीर खींचने में, दैवी चितेरे भी असफल होते आये हैं। —अज्ञात

ध्येय

महान् ध्येय महान् मस्तिष्क की जननी है। —इमर्सन

Not failure, but low aim is crime.
असफलता नहीं वरन् निकृष्ट ध्येय ही अपराध है। —जे० आर० लावेल

ध्येयरहित व्यक्ति की पवन सहायता नहीं करता। —मानटेन

ध्येय जितना महान् होता है, उसका रास्ता उतना ही लम्बा और बीहड़ होता है।
—साने गुरुजी

महान् ध्येय का मौन में ही सर्जन होता है। —साने गुरुजी

हमारा ध्येय सत्य होना चाहिए, न कि सुख। —सुकरात

ध्वनि

ध्वनि ही सृष्टि का मूल है। —प्रेमचन्द

नकल

Man is an imitative creature, and whoever is foremost leads the herd

मानव नकल करनेवाला प्राणी है और जो सबसे आगे होता है वही नेतृत्व करता है। —शिलर

No man ever yet became great by imitations.

केवल नकल करने से कोई मनुष्य महत्त्व नही प्राप्त कर सकता। —जानसन

A good imitation is the most perfect originality.

अच्छी नकल पूर्ण मौलिकता है। —वाल्टायर

नकल चापलूसी का अकपट रूप है। —कोल्टन

नकेल

✓ पुरुषो की नकेल स्त्रियो के हाथ में है। —प्रेमचन्द

नगर

नगर मनुष्य की दुनिया है परन्तु गाव ईश्वर की। —काउपर

Cities force growth and make men talkative and entertaining, but they make them artificial.

नगर वृद्धि को प्रोत्साहन देता है और मनुष्य को बातूनी एवं मनोरंजक बना देता है, किन्तु वह उन्हें बनावटी बनाता है। —एमर्सन

नजर

One of the most wonderful things in nature is a glance of the eye, it transends speech, it is the bodily symbol of identity.

प्रकृति की सबसे आश्चर्यजनक वस्तु नेत्रो की एक झलक है। यह वाणी से भी श्रेष्ठ होती है, यह एकता का शारीरिक चिह्न है। —एमर्सन

The eye of the master will do more work than both his hands.

स्वामी की नजर उनके दोनों हाथो की अपेक्षा अधिक कार्य करती है। —फ्रैंकलिन

नजीर

A precedent embalms a principle.

नजीर सिद्धान्त को सुरक्षित रखती है। —डिजरायली

नफरत

Hatred is the madness of the heart.

नफरत हृदय का पागलपन है। —बायरन

नफरत नफरत से कभी कम नही होती, नफरत प्रेम से ही कम होती है, यही सर्वदा उसका स्वभाव रहा है। —गौतमबुद्ध

नफरत और प्रेम दोनो अन्धे है। —कहावत

शत्रुओ के प्रति हमारी नफरत उनके आनन्द की अपेक्षा हमारे आनन्द को अधिक नुकसान पहुचाती है। —अज्ञात

नमस्कार

नम इदुग्रं नम आ विवासे नमो दाधार पृथिवीमुतद्याम्।
नमो देवेभ्यो नम ईश एषां कृतं चिदेनो नमसा विवासे। —ऋग्वेद

नमस्कार सबसे बड़ी वस्तु है, इसलिए मै वेदो को नमस्कार करता हूं, देवता लोग भी नमस्कार के वशीभूत है, इसलिए मै नमस्कार द्वारा किये हुए पापो का प्रायश्चित्त करता हूँ।

नमस्ते

'नमस्ते' स्वीकार करने से 'नमस्ते' करनेवाले को यह संतोष हो जाता है कि आपने उसके सन्मान को स्वीकार कर लिया है। —अज्ञात

'नमस्ते' प्रशसा का एक हलका-सा स्वरूप है अत. उत्तम प्रभाव डालने के लिए यह एक सहज उपाय है। —अज्ञात

नम्रता (दे० "दीनता")

जिनमें नम्रता नही आती, वे विद्या का पूरा सदुपयोग नही कर सकते।
—महात्मा गांधी

ईश्वर के सामने दान हजार पापो को भी ढक लेता है। मनुष्य के सम्मुख नम्रता बुराइयो को छिपा लेती है। —ग्रेविलो

जहाँ नम्रता से काम निकल आये वहाँ उग्रता नही दिखानी चाहिए। —प्रेमचन्द

Politeness goes far, yet costs nothing
नम्रता का प्रभाव दूर तक जाता है और उसमें कुछ व्यय भी नही होता।
—स्माइल्स

हम महानता के निकटतम होते हैं, जब हम नम्रता में महान् होते हैं। —रवीन्द्र

Humility is the solid foundation of all the virtues.
नम्रता समस्त सद्गुणो का दृढ आधार है। —कन्फ्यूशियस

नम्रता का अर्थ है अहभाव का आत्यन्तिक क्षय। —महात्मा गाधी

भवति नम्रास्तरव फलोद्गमैर्नवाम्बुभिर्भूरि विलम्विनो घना।
अनुद्धता सत्पुरुषा समृद्धिभि स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्॥
—कालिदास (शाकुन्तल)

फल के आने से वृक्ष झुक जाते हैं, नव वर्षा के समय वादल झुक जाते हैं, सम्पत्ति के समय सज्जन भी नम्र होते हैं। परोपकारियो का स्वभाव ही ऐसा है।

यथा नवहिं वुध विद्या पाये। —तुलसी

After crosses and losses men grow humbler and wiser.
दुख और हानि सहने के वाद आदमी अधिक नम्र और ज्ञानी होता है।
—फ्रैंकलिन

अभिमान की अपेक्षा नम्रता से अधिक लाभ होता है। —कहावत

Nothing is so scandalous as a man that is proud of his humility.
अपनी नम्रता का घमण्ड करने से अधिक निन्दनीय और कुछ नही है।
—मारकस औरेलियस

To be humble to superiors is duty, to equals courtesy, to inferiors nobleness, and to all, safety.

वड़ो के प्रति नम्रता कर्त्तव्य है, वरावरवालो के प्रति विनयसूचक है, छोटो के प्रति कुलीनता की द्योतक एव सवके प्रति सुरक्षा है। —सर टी० मूर

सवते लघुताई भली, लघुता ते सव होय।
जस द्वितिया को चन्द्रमा, शीग नवै सव कोय ॥ —कवीर

It was pride that changed angels into devils; it is humility that makes men as angels.

अभिमानवश देवता दानव वन जाते हैं और नम्रता से मानव देवता।

—आगस्टाइन

उड़ने की अपेक्षा जव हम झुकते हैं तव विवेक के अधिक निकट होते हैं।

—वर्ड्सवर्थ

नयन (दे० 'आँख' 'नैन', 'नेत्र')

नयनन में नय नाहिनै, याते नयना नाम ।

नर-रत्न

जिन्ह कै लहहिं न रिपु रन पीठी। नहिं लावहिं परतिय मनु डीठी।
मंगन लहहिं न जिन्ह के नाहीं। ते नर-वर थोरे जग माहीं ॥

—तुलसी (मानस-बाल)

नरक

काम क्रोध मद लोभ सव, नाथ नरक के पथ।

—तुलसी (मानस-सुन्दर)

नरक में गिरना सहल है। —वर्जिल

सासारिक वैभव और सत्ता के पीछे पागल होकर जो दूसरे का वुरा चाहता है और उसका अहित करने का प्रयत्न करता है, उसका जीवन नरक वन जाता है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

संसार में छल, प्रवञ्चना और हत्याओं को देखकर कभी कभी मान ही लेना पडता है कि यह जगत ही नरक है। कृतघ्नता और पाखंड का साम्राज्य यहीं है।

—जयशंकर प्रसाद

वे मनुष्य जो ज्ञान की वड़ी-वड़ी वातें वनाते हैं परन्तु जिनके हृदय में दया नहीं है, अवश्य नरक में जाते हैं। —कवीर

Hell is God's justice, heaven is his love, earth his long suffering
नरक ईश्वर का न्याय है, स्वर्ग उसका प्रेम है, पृथ्वी उसकी दीर्घकालीन यातना।
—बारोन बेंसेनबर्ग

Hell is opportunity missed and truth seen too late.
अवसर का हाथ से निकल जाना, और समय वीतने के वाद यथार्थता का ज्ञान होना ही नरक है। —अज्ञात

The mind in its own place, and in itself can make a heaven of hell, a hell of heaven.
मन अपनी निज रुचि से अपने ही में स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग वना सकता है। —मिल्टन

The torture of a bad conscience is the hell of living soul
खराव अन्त करण की यातना जीवित आत्मा का नरक है। —काल्विन

नरक-गामी

जो मनुष्य दूसरो की जीविका नाश करते है, दूसरो का घर उजाडते हैं, दूसरे की स्त्री का उसके पति से वियोग कराते है और मित्रो में भेद-भाव उत्पन्न करते है वे अवश्य नरक में जाते है। —वेदव्यास (महा०)

नशा

नशे में क्रोध की भाति ग्लानि का वेग भी सहज में ही उठ आता है। —प्रेमचन्द

नसीहत

Good counsel has no price.
अच्छी नसीहत अमूल्य होती है। —मेजिनी

Never give advice unless asked.
विना माँगे किसी को नसीहत न दो। —जर्मन कहावत

नसीहत वर्फ के सदृश है, जितनी धीरे-धीरे गिरती है उतनी ही अधिक स्थायी होती है और उतनी ही गहराई से मन में प्रवेश करती है। —कोलरिज

Admonish your friends privately but praise them openly.

अपने मित्रो को चुपके में नसीहत दो किन्तु प्रशंसा खुले आम करो। —साइरस

अच्छी नसीहत मानना अपनी ही योग्यता वढ़ाना है। —गेटे

ऐसी नसीहत न दो जो अति सुन्दर हो वल्कि ऐसी दो जो अति लाभदायक हो। —सोलन

नहीं

रहिमन ते नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाँहि।
उनते पहिले वे मुए जिन मुख निकसत नाहिं॥ —रहीम

The man who has not learned to say 'No' will be a weak if not a wretched man as long as he lives.

वह मनुष्य जिसने 'नहीं' कहना नहीं सीखा, जव तक वह जीवित रहेगा अगर दीन नही तो दुर्वल अवश्य रहेगा। —ए० मैकलेरन

A 'No' response is a most difficult handicap to overcome. When a person has said 'No', all his pride of personality demands that he remains consistant with himself.

एक वार उत्तर में मुंह से 'नहीं' निकल जाने पर फिर 'हां' कहलवाना वड़ा ही कठिन होता है। जव कोई व्यक्ति एक वार 'नहीं' कह देता है, तो फिर उसके व्यक्तित्व का सारा गर्व यह चाहता है कि वह 'हां' न करे। —प्रो० ओवरस्ट्रीट

He that cannot decidedly say 'No' when tempted to evil is on the highway to ruin.

वह मनुष्य जो वुराई के लिए लालच देने पर भी निश्चयपूर्वक 'नहीं' नहीं कह सकता, सर्वनाश के पथ पर है। —जे० हेवीज

Get a student to say 'No' at the beginning or a customer, child, husband or wife, and it takes the wisdom and the patience of angels to transform that bristling negative into an affirmative.

एक वार आरम्भ में विद्यार्थी, ग्राहक, वच्चे या पति या पत्नी के मुँह से नहीं निकल लेने दो, तो फिर उस दुखद 'नहीं' को 'हां' में वदलवाने के लिए देवताओं की वुद्धिमत्ता और धैर्य चाहिए। —डेल कारनेगी

नागरिक

कोई नागरिक इतना अमीर न हो कि दूसरे को खरीद सके या इतना गरीब न हो कि उसे अपने को बेचने के लिए बाध्य होना पडे। —रूसो

नाटक

The drama is the book of the people

नाटक मानव की पुस्तक है। —विल्मट

A young girl must not be taken to the theatre, let us say it once for all. It is not only the drama which is immoral, but the place.

किसी नवयुवती को नाटकशाला में नही ले जाना चाहिए। केवल नाटक ही नही वरन् वह स्थान भी अपवित्र होता है। —एलेकजेन्डर ड्यूमा

नातेदारी

नात नेह दूरी भली, लो रहीम जिय जानि।
निकट निरादर होत है, ज्यो गड़ही को पानि॥ —रहीम

नाम

रूप विशेप नाम विनु जाने।
करतलगत न परहिं पहिचाने॥
देखियहि रूप नाम आधीना।
रूपज्ञान नहि नाम विहीना॥ —तुलसी

How vain, without the merit, is the name.

गुणरहित नाम निरर्थक होता है। —होमर

आदि नाम पारस अहै, मन है मैला लोह।
परसत ही कचन भया, छूटा बंधन मोह॥ —कबीर

What is in a name ? That which we call a rose, by any other name would smell as sweet

नाम में क्या है ? जिसे हम गुलाब कहते है, वह किसी और नाम मे भी वैसी ही सुगन्धि देगा। —शेक्सपियर

आदि नाम निज मूल है, और मन्त्र सब डार।
कह कवीर निज नाम विनु, वूड़ि मुआ संसार॥ —कवीर

A good name is rather to be chosen than great riches.
अधिक धन की अपेक्षा नेकनाम (सुयश) अधिक पसन्द करना चाहिए।
—कहावत

खोया हुआ सुयश कदाचित ही पुन. मिलता है—जब चरित्र का पतन होता है तब सब कुछ खो जाता है और जीवन का वहुमूल्य रत्न सदैव के लिए चला जाता है।
—अज्ञात

जवहिं नाम हिरदे धरा, भया पाप का नास।
मानो चिनगी आग की, परी पुरानी घास॥ —कवीर

अपना नाम सदा अमर रखने के लिए मनुष्य वड़े से वड़ा जोखिम उठाने, धन व्यय करने, हर प्रकार के कष्ट सहने, यहाँ तक कि मरने के लिए भी तैयार हो जाता है।
—सुकरात

नामो में देश-काल की संस्कृति का प्रतिविम्व रहता है। —धीरेन्द्र वर्मा

प्रत्येक मनुष्य अपने नाम को सर्वोच्च स्थान प्रदान करना चाहता है। अत दूसरो को प्रभावित करने के लिए उनके नाम की प्रतिष्ठा कीजिए। —अज्ञात

नाम-जप

नामजप, विषयवासना की ओर जाती हुई विचारधारा को रोकता है। यह मन को ईश्वर की ओर, अनन्त आनन्द-प्राप्ति की ओर जाने के लिए प्रेरित करता है।
नाम-जप जन्म और मृत्यु को नष्ट कर देता है। —स्वामी शिवानन्द

नायक

Every hero becomes a bore at last.
प्रत्येक नायक अंत में 'वोर' हो जाता है (उससे मन ऊवने लगता है)। —एमर्सन

नारायण

नारायण परम ज्योति है, नारायण परमात्मा है, नारायण परब्रह्म है, नारायण परमतत्त्व है, नारायण परम ध्याता है, और नारायण ही परम ध्यान है।
—नारायण उप०

नारी

नारी केवल मासपिंड की संज्ञा नही है। आदिम काल से आज तक विकास-पथ पर पुरुष का साथ देकर, उसकी यात्रा को सरल बनाकर, उसके अभिशापो को स्वय झेलकर, और अपने वरदानो से जीवन में अक्षय शक्ति भरकर, मानवी ने जिस व्यक्तित्व, चेतना और हृदय का विकास किया है उसी का पर्याय नारी है।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा से)

घृतकुम्भसमा नारी तप्तागारसम पुमान्।
तस्माद्घृत च वह्नि च नैकत्र स्थापयेद् बुध ॥ —अज्ञात

नारी घी का कुप्पा है और पुरुष जलता हुआ अगार। दोनो के सयोग से ज्वाला प्रज्ज्वलित हो उठती है। इसलिए घी और आग को कभी भी बुद्धिमान् पुरुष इकट्ठा न रखें।

सत्य कहहि कवि नारि सुभाऊ। सब विधि अगम अगाव दुराऊ॥
निज प्रतिबिम्ब मुकुर गहि जाई। जानि न जाय नारिगति भाई॥

—तुलसी (मानस, अयोध्या)

नारी के जीवन का सतोप ही स्वर्ण-श्री का प्रतीक है। —डा० रामकुमार वर्मा

नारी पुरुष की अकाश्रिता है, जैसे वृक्ष के सहारे कोई बेल बढ रही हो वैसे ही, वह छाया है, अनुगामिनी है, अवलम्बिता है। उसका अपना स्वतत्र अस्तित्व जैसे है ही नही, वह पुरुष की सहयात्रिणी सहचरी नही, अनुचरी है। —अज्ञात

A woman should be seen, not heard
नारी देखने की वस्तु है, सुनने की नहीं। —सफाक्लीज

Men have sight, women insight.
मनुष्य को दृष्टि होती है और नारी को दिव्य-दृष्टि। —विक्टर ह्यूगो

Women, in your laughter you have the music of the fountain of life
नारी! तेरे हास में जीवन-निर्झर का सगीत है। —रवीन्द्र

नारी की करुणा अंतर्जगत का उच्चतम विकास है, जिसके बल पर समस्त सदाचार ठहरे हुए हैं। —जयशंकर प्रसाद (अजातशत्रु)

नारीजाति स्नेह और सौजन्य की देवी है, वह नर-पशु को मनुष्य बनाती है, वाणी से जीवन को अमृत-मय बनाती है, उसके नेत्र में आनन्द का दर्शन होता है। वह संतप्त हृदय की शीतल छाया है, उसके हास्य में निराशा मिटाने की अपूर्व शक्ति है। —अज्ञात

राष्ट्र का उदय नारीजाति के उदय से होता है। —अज्ञात

नारी तुम केवल श्रद्धा हो। —प्रसाद

सांप बीछि को मंत्र है, माहुर झारे जात।
विकट नारि पाले परी, काटि करेजा खात॥ —कबीर

नारी निन्दा मत करो, नारी नर की खान।
नारी तें नर होत हैं, ध्रुव प्रहलाद समान॥ —अज्ञात

नारी बड़े से बड़ा दु:ख भी होठो पर मुस्कराहट लेकर सह लेती है। —अज्ञात

पवित्र नारी का अपमान संसार में क्रान्ति का अग्रदूत है। —डा० रामकुमार वर्मा

कितने ही कठोरता के इन्जेक्शन देने पर भी नारी का हृदय कोमल ही रहता है। —अज्ञात

नारीजाति को खाली हाथ कभी बैठना नहीं चाहिए। —शरत्चन्द्र

न पिता नात्मजो नात्मा न माता न सखीजन:।
इह प्रेत्य च नारीणां पतिरेको गति सदा॥
—वाल्मीकि (रा० अयो०)

नारी के लिए इस लोक और परलोक में एकमात्र पति ही सदा आश्रय देनेवाला है। पिता, पुत्र, माता, सखियाँ तथा अपनी यह आत्मा भी उसकी सच्ची सहायक नहीं है।

यदि नारी वर्तमान के साथ भविष्य को भी अपने हाथ में ले ले तो वह अपनी शक्ति से बिजली की तड़प को भी लज्जित कर सकती है। —अज्ञात

पुरुष विजय का भूखा होता है, नारी समर्पण की। पुरुष लूटना चाहता है, स्त्री लुट जाना। —महादेवी वर्मा

नाश

नरपति नसत कुमंत्र सो, साधु कुसंगति पाय।
बिनसत सुत अति प्यार सो, द्विज बिन पढे नसाय॥ —विदुर

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सत। —श्रीकृष्ण (गीता)

असत् का अस्तित्व नहीं है और सत् का नाश नहीं है।

नाशवान्

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ता शरीरिण। —श्रीकृष्ण (गीता)

नित्य रहनेवाले देही की यह देह नाशवान् कही गयी है।

नास्तिक

वह नास्तिक है जो अपने आप में विश्वास नहीं रखता। —स्वामी विवेकानन्द

अपने अदर छिपी हुई दैवी शक्तियो में विश्वास न करनेवाला आलसी मनुष्य ही वास्तव में नास्तिक है। —अज्ञात

Virtue in distress and vice in triumph. make atheists of mankind.

सद्गुण जब विपत्ति में पड़ जाय और विजय में अवगुणो की जीत होने लगे तो यह स्थिति मनुष्य को नास्तिक बना देती है। —ड्राइडेन

नास्तिको वेदनिन्दक।
नास्तिक वह है जो वेदो की निन्दा करता है। —अज्ञात

निन्दा

जो मनुष्य अपनी निंदा सह लेता है उसने मानो सारे जगत् पर विजय प्राप्त कर ली। —वेदव्यास (म० आदि०)

निंदक नियरे राखिए, आगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय॥ —कबीर

हमें धर्म का विचार हो या न हो, मगर निंदा का भय अवश्य होना है। —सुदर्शन

दोष पराये देख कर, चलत हसंत हसन्त।
अपने याद न आवई, जिनका आदि न अत॥ —कबीर

Take each man's censure, but reserve thy judgment

प्रत्येक की निन्दा सुन लो, परन्तु अपना निर्णय गुप्त रखो। —शेक्सपियर

निग्रह

शरीर को रोके विना मन पर अंकुश आता ही नहीं। परन्तु शरीर के अंकुश के साथ साथ मन पर अंकुश रखने का प्रयत्न होना ही चाहिए। —महात्मा गांधी

निडर

चिरस्थायी और सच्चे फल पाना हो, तो हमें पहले निडर जरूर वनना होगा। यह गुण धार्मिक जागृति के विना नहीं आ सकता। —महात्मा गांधी

निद्रा

निद्रा तुम्हारे मिथ्या अह, माया, स्वप्न, भ्रम का एक रूप है। —स्वा० राम०

निद्रा व्याधिग्रस्त की माता, भोगी की प्रियतमा और आलस्य की कन्या है। —अज्ञात

सोता साध जगाइए, करै नाम का जाप।
यह तीनों सोते भले, साकत, सिंह, औ साँप॥ —कबीर

निद्रा केवल मन या मिथ्या अहं को आती है। —स्वामी रामतीर्थ

One hour's sleep before midnight is worth three afterwards.
आधी रात के पहले की एक घन्टे की निद्रा उसके बाद की तीन घन्टे की निद्रा के वरावर है। —जार्ज हर्बर्ट

ब्रह्मचर्यरतेर्ग्राम्यसुखनिस्पृहचेतस.।
निद्रा सन्तोषतृप्तस्य स्वकालं नातिवर्तते॥ —अज्ञात

जो मनुष्य सदाचारी है, विजय-भोग से निस्पृह है और सन्तोष से तृप्त है, उसको समय पर निद्रा आये विना नहीं रहती।

निधि

शीलं शौर्यमनालस्यं पाण्डित्यं मित्रसंग्रह.।
अचोरहरणीयानि पञ्चैतान्यक्षयो निधि.॥ —अज्ञात

सुन्दर स्वभाव, शौर्य, आलस्य न करना, पण्डिताई और मित्र का संग्रह—ये पाँचों चोरो द्वारा नहीं चुरायी जानेवाली अक्षय निधि हैं।

नियम

न देवानामतिव्रतं शतात्मा च न जीवति। —ऋग्वेद

देवताओ के नियम तोडकर कोई सैकड़ो सिद्धियोवाला मनुष्य भी सौ वर्ष नही जी सकता।

जहाँ नियमो की रक्षा नही की जाती वहाँ कोई भी अनर्थ अपना पैर फैला सकता है। —अज्ञात

निराश

निराश मनुष्य को पग पग पर मृत्यु ही दिखाई पडती है। उसके जीवन में कोई वस्तु प्रसन्नता नही भर सकती। —अज्ञात

सभ्यता में उस मनुष्य के लिए स्थान नही है जो उदास, खिन्न और निराश है। —स्वेट मार्डन

निराशा

निराशा, निर्बलता का चिह्न है। —स्वामी रामतीर्थ

निराशा आशा के पीछे पीछे चलती है। —एल० ई० लैंनडन

निराशा में प्रतीक्षा अधे की लाठी है। —प्रेमचन्द

निराशा जब चरम सीमा पर पहुँच जाती है तब हमारी जीभ बन्द हो जाती है। —सुदर्शन

निराशा चारो ओर अधकार के रूप में दिखाई देती है। —प्रेमचन्द

अपने अह का विस्तार करना ही निराशा से बचने का एकमात्र उपाय है। —टाल्सटाय

नैराश्य परम सुखम्—निराशा परम सुख है। —अज्ञात

कभी कभी निराशा में भय भाग जाता है। —अज्ञात

Despair is the damp of hell as joy is the serenity of heaven

निराशा स्वर्ग की सीलन है, जैसे प्रसन्नता स्वर्ग की शाति। —जान डोन

निराशा असभव को संभव बना देती है। —प्रेमचन्द

घोर निराशा व्यक्ति को अनासक्त बनाकर द्रष्टा होने के लिए तैयार करती है। —अज्ञात

निराशाया. समं पापं मानवस्य न विद्यते।
ता समूलं समुत्सार्य ह्याशावादपरो भव॥ —अज्ञात

मनुष्य के लिए निराशा के समान दूसरा पाप नहीं है। इसलिए तुम्हें उस पाप-रूपिणी निराशा को समूल हटाकर आशावादी बनना चाहिए।

निराशावादिनो मन्दा ' मोहावर्त्तेऽत्र दुस्तरे।
निमग्ना अवसीदन्ति पंके गावो यथावशा.॥ —अज्ञात

प्रगति की भावना से विहीन निराशावादी लोग मोह के दुस्तर भँवर में पड़े हुए, दलदल में फँसी विवश गौओं के समान दुःख पाते हैं।

निराशावाद

निराशावाद भयंकर राक्षस है जो हमारे नाश की ताक में बैठा रहता है। —स्वेट मार्डेन

A pessimist ? A man who thinks everybody as dirty as himself, and hates them for it.

निराशावादी ? ऐसा व्यक्ति जो सबको अपनी तरह गंदा समझता है और इसलिए उनसे घृणा करता है। —बर्नार्ड शा

निराशावादी हमेशा बुराई ही देखता है, आशावादी हमेशा पहले अच्छी बात देखता है। निराशावादी चिन्ता के मारे अधमरा हो जाता है। आशावादी प्रसन्न होकर अपनी व्यथा को दूर कर ही लेता है। —अज्ञात

निरुत्साह

निरुत्साहस्य दीनस्य शोकपर्याकुलात्मन.।
सर्वार्था. व्यवसीदन्ति व्यसनं चाधिगच्छति॥ —वाल्मीकि

जो पुरुष निरुत्साह, दीन और शोकाकुल रहता है, उसके सब काम बिगड़ जाते हैं और वह बहुत बड़ी विपत्ति में पड़ जाता है।

निर्गुण

ईश्वर के सिवा इस संसार में कोई निर्गुण नहीं है। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो अवगुणी में भी कोई न कोई गुण रहता ही है। —अज्ञात

निर्णय, निश्चय

अपना निर्णय किसी से पहले न कहो। —जान सलडेस

किसी वस्तु का निर्णय करने के लिए तीन तत्त्वो की आवश्यकता होती है। —अनुभव, ज्ञान और व्यक्त करने की क्षमता। —सुकरात

Experience teacheth that resolution is a sole help in need.
अनुभव बताता है कि दृढ निश्चय आवश्यकता में पूरी सहायता करता है।
—शेक्सपियर

निर्धन (दे० 'दरिद्र')

The greatest man in history was the poorest
इतिहास का सबसे बडा व्यक्ति निर्धन था। —एमर्सन

As poor as a church-mouse.
इतना निर्धन जितना चर्च का चूहा। —कहावत

निर्धनता (दे० 'गरीबी', 'दरिद्रता')

Not to be able to bear poverty is a shameful thing, but not to know how to chase it away by work is a more shameful thing yet.

निर्धनता सहने योग्य न होना शर्मनाक बात है परन्तु अपने कार्यों द्वारा कैसे उसे भगाना होता है, यह न जानना और भी शर्मनाक है। —पेरीक्लीज

दारिद्र्याद्ह्रियमेति ह्रीपरिगत सत्त्वात्परिभ्रश्यते
नि:सत्त्व परिभूयते परिभवान्निर्वेदमापद्यते।
निर्विण्ण शुचमेति शोकनिहतो बुद्ध्या परित्यज्यते
निर्बुद्धि क्षयमेत्यहो निर्धनता सर्वापदामास्पदम्॥

—हितोपदेश

निर्धनता से मनुष्य को लज्जा होती है, लज्जा से पराक्रम नष्ट हो जाता है, पराक्रम न होने से अपमान होता है, अपमान होने से दुःख मिलता है, दुःख से शोक होता है, शोक से बुद्धि नष्ट हो जाती है, और बुद्धि न होने से नाश हो जाता है। निर्धनता ही सब आपत्तियो का घर है।

निर्बल

सबल की शिकायतें सब सुनते है, निर्बल की फरियाद भी कोई नही सुनता।
—प्रेमचन्द

सबै सहायक सबल के, कोई न निबल सहाय। —अज्ञात

यद्यपि शहद की मक्खियाँ कमजोर होती है, फिर भी वे सब मिलकर मधु निकालने-वाले का प्राण तक ले लेती है, वैसे ही निर्बल पुरुष भी इकट्ठे होकर बलवान् शत्रु का नाश कर सकते है। —वेदव्यास (म० वन०)

निर्भयता

यदि उपनिषदो से बम की तरह आनेवाला और बमगोले की तरह अज्ञानता के समूह पर बरसनेवाला कोई शब्द है, तो वह है 'निर्भयता' —स्वामी विवेकानन्द

निर्मलता

केवल निर्मल हृदय ही पूर्ण आनन्द जानता है। —गेटे

निर्माण

निर्माण सदैव बलिदानो पर टिकता रहा है और जब तक निर्माण के लिए बलिदान की खाद नही दी जाती तब तक विकास भी अंकुरित नही होता।
—अज्ञात

निर्लज्ज

निर्लज्ज हारकर भी नही हारता, मरकर भी नही मरता।
—जयशंकर प्रसाद

सबसे अधिक निर्लज्ज वही है जो ईश्वर को नही मानता। —अज्ञात

निर्लोभी

गरदने बेतमा बुलन्द बुवद। —सादी

निर्लोभी मनुष्य का सिर सदा ऊँचा रहता है।

निश्चय

He who is firm and resolute in will moulds the world to himself.

वह व्यक्ति जो अपने निश्चय में दृढ़ और अटल है, संसार को अपने साँचे में ढाल सकता है। —गेटे

दृढ़ निश्चय ही विजय है। —कहावत

निश्चयात्मक प्रकृति के मनुष्य ही प्रभावशाली हो सकते हैं। —स्वेट मार्डेन

निष्कपटता

Candour is the brightest gem of criticism

निष्कपटता आलोचना का सबसे उज्ज्वल रत्न है। —डिजरायली

निष्कपटता निष्कपटता को आमन्त्रित करती है। —एमर्सन

निःस्वार्थ

निःस्वार्थता ही धर्म की कसौटी है। जो जितना अधिक निःस्वार्थी है वह उतना ही अधिक आध्यात्मिक और शिव के समीप है। —विवेकानन्द

नींद

नींद एक ऐसा अथाह सागर है जिसमें हम सब अपने दुखों को डुबो देते हैं। —प्रेमचन्द

नीच

नीच निचाई नहि तजै, सज्जनहू के संग।
तुलसी चंदन विटप बसि, विष नहिं तजत भुजंग॥ —तुलसी

नीच मनुष्य विपत्ति में फँसने पर प्रारब्ध की ही निन्दा करते हैं, अपने किये हुए कुकर्मों की नहीं। —वेदव्यास (म० भा०)

जो उपकार करने वाले को नीच मानता है उससे अधिक नीच दूसरा कोई नहीं। —विनोबा

ऊँच निवास नीच करतूती। देखि न सकहिं पराइ विभूती॥—तुलसी (मा०)

कछु कहि नीच न छेड़िये, भलो न वाको संग।
पाथर डारे कीच में, उछरि बिगारै अंग॥ —वृन्द

रहिमन ओछे नरन ते, तजौ बैर औ प्रीति।
काटे चाटे स्वान के, दुहूँ भाँति विपरीत॥ —रहीम

लातहु मारे चढ़ति सिर, नीच को धूरि समान।
—तुलसी (मा० अयो०)

दह्यमाना. सुतीव्रेण नीचा. परयशोऽग्निना।
अशक्ता स्तत् पद गन्तु ततो निन्दा प्रकुर्वते॥ —चाणक्य

नीच दूसरे की यशरूपी अत्यन्त तीव्र अग्नि से जलकर और उसके पद को प्राप्त करने में असमर्थ होकर उसकी निंदा करते हैं।

रहइ न नीच-मते चतुराई। —तुलसी (मा० अयो०)

नीचता

स्वभाव की नीचता वर्षो में भी मालूम नही होती। —सादी

नीति

नीति न तजिय राज-पद पाये। —तुलसी (मा० अयो०)

नीति धर्म की दासी है। धर्मपालन के लिए मनुष्य को नीतिमान होना चाहिए और आजीवन नीतिपथ न छोड़ना चाहिए। —अज्ञात

सम्पत्ति रहते हुए भी उसकी वृद्धि के लिए प्रयत्न करना नीतिनिपुणता है।
—वेदव्यास (म० सभा०)

नीति-शास्त्र

नीतिशास्त्र ही इस भूमंडल का अमृत है, यही उत्तम नेत्र है और यही श्रेय-प्राप्ति का सर्वोच्च उपाय है। —वेदव्यास (म० शा०)

नीरोग

सबसे बढ़कर नीरोग वही है जो निश्चिन्त है। —अज्ञात

नृत्य

नृत्य भी शरीर की चेष्टाओं पर आश्रित होने के कारण मूर्ति के बन्धनों से सर्वथा मुक्त नहीं। वह एक प्रकार का अभिनीत गीत है। —महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

समस्त कलाओं में नृत्य सबसे महान्, सबसे अधिक प्रभाव डालनेवाली और सबसे अधिक सुन्दर कला है, क्योंकि यह जीवन का केवल अनुवाद या पृथक्करण ही नहीं है यह स्वयं ही जीवन है। —हेवलाक इल्लिस

नेक

सौजन्यधन्यजनुषः पुरुषाः परेषां
दोषान् विहाय गुणमेव गवेषयन्ति।
त्यक्त्वा भुजङ्गमविषं हि पटीरगर्भात्,
सौगन्ध्यमेव पवनाः परिवाहयन्ति॥ —अज्ञात

वे भले मानुष लोग धन्य हैं जो दूसरे के दोषों को छोड़कर गुण को ही खोजते रहते हैं। मलयाचल के चन्दन वृक्ष पर लिपटे हुए सर्पों के विष को न ग्रहण कर वायु चन्दन की सुगन्धि का ही वहन करती है।

नेक बनने में सारी आयु लग जाती है, बदनाम होने में तो एक दिन भी नहीं लगता। ऊपर चढ़ना कैसा कठिन है? इसमें कितना समय लगता है? मगर गिरना कितना आसान है? इसमें परिश्रम कुछ नहीं करना पड़ता। —अज्ञात

नेकी

जितने दिन जिन्दा हो इसको गनीमत समझो और इससे पहले कि लोग तुम्हें मुर्दा कहें नेकी कर जाओ। —सादी (गुलिस्तां)

सम्मान नेकी का उपहार है। —सिसरो

नेकी का उपहार नेकी है। —एमर्सन

बदी करने के मौके दिन में सौ बार मिलते हैं, लेकिन नेकी करने का मौका साल में केवल एक बार मिलता है। —वाल्टेयर

Our life is short but to expand that span to vast eternity is virtue's work.

हमारा जीवन क्षणिक है लेकिन उसे अनन्त तक फैलाना सद्गुण का काम है।
—शेक्सपियर

नेता

Leaders are like ships on the ocean—they come and they go, but the people are like the ocean itself, they always remain.

नेता समुद्र में जहाज के सदृश हैं; वह आते हैं और चले जाते हैं, परन्तु जनता समुद्र की भाँति है जो सदा रहती है। —मॉरिस हिंडस

Reason and judgment are the qualities of a leader.

तर्क और निर्णय नेता के गुण हैं। —टैसीटस

लोगो को सही रास्ता बताना नेताओ का काम है। —विनोबा

अगर अन्धा अन्धे का नेतृत्व करे, तो दोनों खाईं में गिरेंगे। —अज्ञात

नेतृत्व

भूतकाल का कष्ट और कुर्बानी भविष्य के नेतृत्व के लिए हर हालत में पासपोर्ट नहीं देती। —सुभाषचन्द्र बोस

नेत्र, नैन (दे० 'आँख')

नेत्र ही ज्ञान का द्वार है। —अज्ञात

रहिमन तीर की चोट ते, चोट परे बचि जाय।
नैन बान की चोट ते, धन्वंतरि न बचाय॥ —रहीम

जूठे जानि न संग्रहे, मन मुँह निकसे बैन।
याही तें मानो किये, बातन को विधि नैन॥ —बिहारी

लाज लगाम न मानही, नैना मो बस नाहिं।
ये मुँह जोर तुरंग लौं, ऐंचत हू चलि जाहिं॥ —बिहारी

तनक किरकिरी के परे, नैन होत बेचैन।
वे नैना कैसे जियें, जिन नैनन बिच नैन॥ —बिहारी

दृगन लगत बेधत हियो, बिकल करत अग आन।
ये तेरे सब तें विषम, ईछन तीछन बान॥ —बिहारी

नैना नेकु न मानही, कितो कहौं समुझाय।
तन-मन हारे हू हँसैं, तिनसो कहा बसाय॥ —बिहारी

वर जीते सर मैन के, ऐसे देखे मैं न।
हरिनी के नैनान तें, हरि नीके ये नैन॥ —बिहारी

नौकर

अपने सेवक से बहुत मेल-जोल मत बढ़ाओ। प्रारम्भ में स्नेह-सा प्रतीत होता है परन्तु अन्त में यह घृणा उत्पन्न करता है। —फुलर

We become willing servants to the good by the bonds their virtues lay upon us
महान् व्यक्तियों द्वारा की गयी नेकी के बन्धनों में बँधकर हम उनके ऐच्छिक सेवक हो जाते हैं। —सर पी सिडनी

नौकरी

He profits most who serves best.
जो सबसे ज्यादा सेवा करता है वह सबसे अधिक लाभ उठाता है। —शेल्डन

उत्तम खेती, मध्यम बान।
निकृष्ट चाकरी, भीख निदान॥ —कहावत

They serve God well, who serve His creatures
जो मानव की सेवा करते हैं वे ही ईश्वर की सबसे अच्छी सेवा करते हैं।
—कैरोलियन नारटन

Service is no inheritance सेवा पैतृक सम्पत्ति नहीं है। —कहावत

न्याय

हा न्याय! क्या तू भी जानवरों के हृदय में चला गया और मनुष्यों में स्थान नहीं रहा। (दे० उन्माद') —शेक्सपियर

न्याय को प्रेम कलंकित नहीं कर सकता। —[illegible]

Justice delayed is justice denied
न्याय में विलम्ब करना, न्याय को अस्वीकार करना है। —ग्लैडस्टन

प्रथम त्यागमय दिव्य कर्म 'न्याय करना' है। —रस्किन

Delay of justice is injustice.

न्याय में विलम्ब अन्याय है। —लैंडर

न्याय के पद पर बैठनेवाले मनुष्य को पक्षपात और द्वेष से मुक्त होना चाहिए। —अज्ञात

ईश्वरीय न्याय की चक्की यद्यपि मन्द गति से चलती है, लेकिन चलती अवश्य है। —जार्ज हर्बर्ट

सत्य का कर्म में परिणत होना न्याय है। —डिजरायली

न्याय का थोड़ा-बहुत व्यवहार भी वर्षो की झूठ-भक्ति से लाख दर्जे अच्छा है। आज का हमारा न्याय तो बुरी तरह बेजबान और खुले आम अन्धा है। बेकसी की दीर्घ मार से वह पीड़ित है। —रस्किन

न्याय के सदृश कोई गुण वास्तव में ईश्वरतुल्य और महान् नही है। —एडीसन

बिना बुद्धिमत्ता के न्याय असम्भव है। —फ्राउड

हम प्रेम का दरिया बहा सकते है पर न्याय के नाम पर नानी मर जाती है। —रस्किन

संसार में झूठी तुलाओ का आदर होता है और न्याय दीनारो के मोल बिकता है। —अज्ञात

न्यायाधीश

Four things belong to a judge : to hear courteously, to answer wisely, to consider soberly and to decide impartially.

न्यायाधीश में चार बातें होनी चाहिए—शिष्टतापूर्वक सुनना, बुद्धिमत्तापूर्ण उत्तर देना, गभीर होकर विचार करना और निष्पक्ष होकर न्याय करना। —सुकरात

पंडित

लाख मूर्ख तजि राखिये, इक पंडित बुधवाम।
सर शोभा इक हंस सों, लाख काक केहि काम॥ —विदुर

अच्छे पति को वहरा और अच्छी पत्नी को अन्वी होना चाहिए। —कहावत

A husband is a plaster that cures all the ills of girlhood.

पति वह लेप है जो लड़कियो के कुँआरेपन की सभी वीमारियो को अच्छा कर देता है। —मोलिएरी

साध्वीनां हि स्थितानां तु शीले सत्ये श्रुते स्थिते।
स्त्रीणां पवित्रं परमं पतिरेको विशिष्यते॥ —वाल्मीकि (रा० अ०)

जो सत्य, सदाचार, शास्त्रो की आज्ञा और कुलोचित मर्यादा में स्थित रहती है, उन साध्वी स्त्रियो के लिए एकमात्र पति ही परम पवित्र एव सर्वश्रेष्ठ आश्रय है।

पतिव्रत

कोकिलानां स्वरो रूपं नारीरूपं पतिव्रतम्।
विद्या रूपं कुरूपाणा क्षमा रूपं तपस्विनाम्॥ —चाणक्य

कोकिला का स्वर ही उसकी सुन्दरता है और स्त्रियो की सुन्दरता उनका पातिव्रत धर्म है। कुरूपो की सुन्दरता विद्या है और तपस्वियो की सुन्दरता उनकी क्षमा है।

एकै धरम एक व्रत नेमा। काय, वचन, मन पति-पद-प्रेमा॥
—तुलसी (मानस, अरण्य)

पतिव्रता

पतिवरता पति को भजै, और न आन सुहाय।
सिंह-वचा जो लंघना, तो भी घास न खाय॥ —कवीर

पतिव्रता स्त्री पति का सिरताज है। —कहावत

पतिवरता मैली भली, गले काँच की पोत।
सव सखियन में यो दिपै, ज्यो रवि-ससि की जोत॥ —कवीर

सूरा के तो सिर नही, दाता के वन नाँहि।
पतिवरता के तन नही, सुरति वसै मन माँहि॥ —कवीर

जिस प्रकार मदारी वलपूर्वक सर्प को विल से निकाल लेता है वैसे ही पतिव्रता स्त्री पति को लेकर स्वर्गलोक में पूजित होती है। —हितोपदेश

पत्नी

For a wife take the daughter of a good mother.
पत्नी के चुनाव में किसी सुचरित्र मा की बेटी को पसन्द करो। —फुलर

In the election of a wife as in a project of war to err but once is to be undone forever.
पत्नी के चुनाव में युद्ध की योजना के सदृश केवल एक बार गलती करना सदा के लिए बरबाद हो जाना है। —मिल्टन

कार्येषु मन्त्री, करणेषु दासी, भोज्येषु माता, शयनेषु रम्भा।
धर्मानुकूला, क्षमया धरित्री, भार्या च षाड्गुण्यवती च दुर्लभा॥—[illegible]

कामकाज में मन्त्री के समान सलाह देनेवाली, सेवादि में दासी के समान काम करनेवाली, माता के समान सुन्दर भोजन करानेवाली, शयन में रम्भा (अप्सरा) के समान सुख देनेवाली और धर्म के अनुकूल तथा क्षमादि गुण धारण करने में पृथ्वी के समान स्थिर रहनेवाली, ऐसे छः गुणों से युक्त स्त्री दुर्लभ होती है।

A woman must be a genius to create a good husband.
स्त्री में प्रतिभा होनी चाहिए कि वह अच्छे पति का निर्माण कर सके।
—[illegible]

पत्नी पुरुष की पूरक है। पुरुष के सभी अभाव उसे पाकर समाप्त हो जाते हैं।

पदवी

Virtue is the first title of nobility.
सद्गुण कुलीनता की पहली पदवी है। —मॉलियर

पर-घर

[illegible]
[illegible] —[illegible]

[illegible]

परतंत्र

मनुष्य प्रकृति का अनुचर और नियति का दास है। —जयशंकर प्रसाद

स्वभावजेन कौन्तेय निवद्ध स्वेन कर्मणा।
कर्तु नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत्॥
—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

हे कौन्तेय! अपने स्वभावजन्य कर्म से वद्ध होने के कारण तू जो मोह के वश होकर नही करना चाहता वह परवश होकर करेगा।

ईश्वर. सर्वभूताना हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया॥ —गीता

हे अर्जुन! ईश्वर सव प्राणियो के हृदय में वास करता है और अपनी माया के वल से उन्हें चाक पर चढे हुए घड़े की तरह घुमाता है।

लायी हयात आये, कजा ले चली चले।
अपनी खुशी न आये, न अपनी खुशी चले॥ —जौक

मनुष्य अपना स्वामी नही है, वह परिस्थितियो का दास है—विवश है। वह कर्त्ता नही है; वह केवल सावन है। —भगवतीचरण वर्मा (चित्रलेखा)

पर-पीड़ा

पर-पीड़ा सम नहिं अधमाई। —तुलसी (मानस)

अगर तुम्हारे एक शब्द से भी किसी को पीड़ा पहुँचती है, तो तुम अपनी सव नेकी नष्ट हुई समझो। —संत तिरुवल्लुवर

अपनी पीड़ा सह लेना और दूसरे जीवो को पीडा न पहुँचाना, यही तपस्या का स्वरूप है। —संत तिरुवल्लुवर

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकार पुण्याय पापाय परपीड़नम्॥

अठारहो पुराणों में वेदव्यासजी ने केवल दो वातें कही है। परोपकार करके पुण्य कमाया जाता है और दूसरों को कष्ट पहुँचा कर पाप। —अज्ञात

एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा एकं रूपं वहुधा य करोति।
—कठोपनिषद्

'एकं सद्विप्रा वहुधा वदन्ति' —ऋग्वेद

'एकं सन्तं वहुधा कल्पयन्ति'

एक ही परमेश्वर है, कोई उसका जैसा दूसरा नही। एक ही को विप्र लोग वहुत से नामो से वर्णन करते है। वह है एक ही, किन्तु उसकी वहुत प्रकार से कल्पना करते हैं।

परम्परा

Tradition is an important help to history, but its statements should be carefully scrutinized before we rely on them.

परम्परा इतिहास को महत्वपूर्ण सहयोग देती है, परन्तु उसकी वातो को सूक्ष्म रूप से जाँचकर तभी हमें उस पर विश्वास करना चाहिए। —एडीसन

परहित (दे० "परोपकार")

परहित लागि तर्जाहि जो देही।
संतत संत प्रशंसहि तेही॥ —तुलसी (मानस-वाल)

जिसमें दया नही है वह तो जीते जी ही मुर्दे के समान है। दूसरे का भला करने से अपना ही भला होता है। —अज्ञात

कोई व्यक्ति सचाई, ईमानदारी तथा लोक-हितकारिता के राजपथ पर दृढता-पूर्वक चलता रहे तो उसे कोई भी वुराई क्षति नही पहुँचा सकती।

—हरिभाऊ उपाध्याय

परहित वस जिनके मन माँही। तिन्ह कहुँ जग दुर्लभ कछु नाही॥
परहित सरिस धरम नहि भाई। —तुलसी, मानस

प्रिय वानी जे सुनहि जे कहही, ऐसे नर निकाय जग अहहीं।
वचन परमहित सुनत कठोरे, सुनहि जे कहहि, ते नर प्रभु थोरे।
—तुलसी (मानस, लंका)

परहित-निरत निरंतर मन-क्रम-वचन नेम निवहौंगो। —तुलसी

पराक्रम

No one reaches a high position without daring.

विना पराक्रम के कोई उच्च पद पर नही पहुँचता। —साइरस

तदल प्रतिपक्षमुन्नतेरवलम्ब्य व्यवसायवन्ध्यताम्।
निवसन्ति पराक्रमाश्रया न विषादेन समं समृद्धय ॥ —भारवि

उन्नति-पथ के बाधक अनुत्साह का अवलम्बन करके पडे रहना ठीक नही, क्योकि समृद्धियाँ पराक्रमशील (उत्साही) पुरुष का आश्रय लेती है और अनुत्साही का परित्याग कर देती हैं।

पराजय

पराजय से सत्याग्रही और अहिंसक को निराशा नही होती। उससे तो कार्य-क्षमता और लगन बढती है। और सत्य से मनुष्य की बुद्धि परिष्कृत होकर उसका मार्ग-दर्शन करती है। — महात्मा गाधी

What is defeat ? Nothing but education, nothing but the first step to something better

पराजय क्या है ? कुछ नही, केवल शिक्षा एव अपेक्षाकृत अच्छी स्थिति की ओर पहला कदम है। — वेन्डेल फिलिप

पराधीन

नात्मन कामकारो हि पुरुषोऽयमनीश्वर ।
इतश्चेतरतश्चैन कृतान्त परिकर्षति ॥ — वाल्मीकि (रा०अ०)

मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार कुछ नही कर सकता, क्योंकि यह पराधीन होने के कारण असमर्थ है। काल इसे इधर उधर खीचता रहता है।

एतावज्जन्मसाफल्य यदनायत्तवृत्तिता।
ये पराधीनता यातास्ते वै जीवन्ति के मृता ॥ — हितोपदेश

स्वाधीनता का होना ही जन्म की सफलता है और जो पराधीन होने पर भी जीते है तो मरे हुए कौन हैं ? अर्थात् वे ही मरे के समान हैं जो पराधीन रहते है।

पराधीन सपनेहुँ सुख नाही। — तुलसी (मानस)

If you put a chain around the neck of a slave, the other end fastens itself around your own.

अगर गुलाम के गले के चारो तरफ आप एक जजीर बाँधते हैं तो उसका दूसरा किनारा स्वय आप के ही गले में बँध जाता है। — एमर्सन

परामर्श

He that gives good advice, builds with one hand; he that gives good counsel and example, builds with both

जो मनुष्य नेक सलाह देता है, वह एक हाथ से निर्माण करता है, और जो मनुष्य उपयुक्त परामर्श के साथ दृष्टान्त भी देता है, वह दोनों हाथों से निर्माण करता है।

—बेकन

परिग्रह

परिग्रह का मतलब सञ्चय या इकट्ठा करना है। सत्य-शोधक अहिंसक परिग्रह नहीं कर सकता। —महात्मा गांधी

जो विचार हमें ईश्वर से विमुख रखते हैं, या ईश्वर की ओर नहीं ले जाते, वे सब परिग्रह में शुमार होते हैं और इसलिए वे त्याज्य हैं। —महात्मा गांधी

परमात्मा परिग्रह नहीं करता, वह अपने लिए आवश्यक वस्तु रोज-रोज पैदा करता है। —महात्मा गांधी

सच्ची संस्कृति—सुधार और सभ्यता का लक्षण परिग्रह की वृद्धि नहीं, बल्कि विचार और इच्छापूर्वक उसकी कमी है। जैसे-जैसे परिग्रह कम करते हैं वैसे-वैसे सच्चा सुख और सच्चा सन्तोष बढ़ता है। सेवा-क्षमता बढ़ती है।

—महात्मा गांधी

केवल सत्य की आत्मा की दृष्टि से विचारें तो शरीर भी परिग्रह है। भोगेच्छा के कारण हमने शरीर का आवरण खड़ा किया है, और उसे टिकाये रखते हैं।

—महात्मा गांधी

परिग्रही

जो मनुष्य अपने दिमाग में निरर्थक ज्ञान ठूँस रखता है वह परिग्रही है।

महात्मा गांधी

परिचय

किसी को अपना परिचय देना बुरा नहीं है, बुरा तभी है जब वह किसी स्वार्थ या अहंकार से दिया जाता है। —अज्ञात

परिणाम

फलत्याग का यह अर्थ भी नहीं है कि परिणाम के सम्बन्ध में लापरवाही रहे। परिणाम और साधन का विचार और उसका ज्ञान अत्यावश्यक है।—महात्मा गांधी

परिपूर्णता

परिपूर्णता धीरे धीरे प्राप्त होती है, उसको समय की आवश्यकता होती है।
—वाल्टेयर

Trifles make perfection, and perfection is no trifle
छोटी-छोटी बातों से पूर्णता प्राप्त होती है, और पूर्णता कोई छोटी बात नहीं है।
—माइकेल एन्जिलो

This is the very perfection of man, to find out his own imperfection
मानव की परिपूर्णता अपनी अपूर्णता को जान लेने में है। —ऑगस्टाइन

परिवर्तन

जीवन-ऋतु में परिवर्तन स्वाभाविक है। —अज्ञात

परिवर्तन ही सृष्टि है, जीवन है। स्थिर होना मृत्यु है। निश्चेष्ट शांति मरण है। प्रकृति क्रियाशील है। —जयशंकर प्रसाद

परिश्रम (दे० 'श्रम')

परिश्रम हमारा देवता है। —विनोबा

न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः। —ऋग्वेद

बिना स्वयं परिश्रम किये देवों की मैत्री नहीं मिलती।

Without labour nothing prospers
बिना परिश्रम के उन्नति नहीं होती। —सफोक्लीज

परिश्रम सभी पर विजय प्राप्त करता है। —होमर

परिश्रम उज्ज्वल भविष्य का पिता है। —अज्ञात

जीवन में शारीरिक और मानसिक परिश्रम के बिना कोई फल नहीं मिलता। दृढ़चित्त और महान् उद्देश्यवाला मनुष्य जो करना चाहे सो कर सकता है।
—ऐरी शेफर

Genius begins great works; labour alone finishes them.

प्रतिभा महान् कार्यों का प्रारम्भ करती है किन्तु परिश्रम ही उनको समाप्त करता है। —जोवरी

परिश्रम की निज की प्रतिष्ठा इतनी है कि उसने महात्मा को प्रतिष्ठा दी। —विनोबा

जो अपने हिस्से का काम किये विना ही भोजन पाते है वे चोर है। —महात्मा गांधी

परिश्रम से भागनेवाला किसी न किसी प्रकार की चोरी अवश्य करता है। यदि नही करता तो भविष्य में करेगा। —अज्ञात

परिश्रमी

परिश्रमी के घर के द्वार को भूख दूर से ताकती है पर भीतर नही घुस सकती। —अज्ञात

परिस्थिति

मनुष्य विगड़ता है या तो परिस्थितियो से या पूर्व संस्कारो से। परिस्थितियो से गिरनेवाला मनुष्य उन परिस्थितियो का त्याग करने से ही वच सकता है। —प्रेमचन्द

पुरुपार्थ परिस्थितियों को अपने अनुकूल वनाने में है। —महात्मा गांधी

Men are the sport of circumstances, when the circumstances seem the sport of men.

मनुष्य परिस्थितियो की क्रीड़ा है, जव कि परिस्थितियाँ ही मनुष्य को क्रीड़ा मालूम पड़ती है। —वायरन

In all our reasoning concerning men we must lay it down as a maxim that the great part are moulded by circumstances.

मनुष्य के वारे में, हमें अपनी सारी युक्तियो में यह सिद्धान्त के रूप में मान लेना होगा कि जीवन का अविकाश भाग परिस्थितियों द्वारा निर्मित होता है। —रावर्ट हाल

Deep tragedy is the school of great men.

गम्भीर परिस्थिति ही महापुरुषों का विद्यालय है। —महात्मा गांधी

मनुष्य परिस्थितियो का दास नही है, परिस्थितियाँ मनुष्य की दास है। —डिजरायली

स्वतन्त्र बुद्धि के लोग भी एक हद तक यदि परिस्थिति के गुलाम नहीं होते तो कम से कम परिस्थिति द्वारा गढे जाते है। —विनोबा

मनुष्य परतन्त्र है, परिस्थितियो का दास है। —भगवतीचरण वर्मा

परीक्षा

दातुर्वैव परीक्षा वै दुर्भिक्षे जायते नृभि।
शूरस्यैव तु सग्रामे मित्रस्य च तथापदि॥
अशक्तौ च तथा स्त्रीणा विपत्तौ सुकुलस्य च।
स्नेहस्य च परोक्षेण सत्यस्य सकटे गते॥

—वेदव्यास (शिवपुराण)

दाता की परीक्षा दुर्भिक्ष में, वीर की युद्ध में, मित्र की आपत्काल में, स्त्री की निर्धनावस्था में, अच्छे कुल की विपत्ति में, प्रेम की परोक्ष में और सत्य की परीक्षा सकट के समय होती है।

हेम्न सलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धि श्यामिकापि वा। —रघुवंश

सुवर्ण की विशुद्धता की परीक्षा अग्नि में होती है और उसके खोटेपन की भी।

जिस प्रकार सोने को काटकर, तपाकर, घिसकर और पीटकर उसकी जांच की जाती है, उसी प्रकार त्याग, शील, गुण और कर्म इन चार प्रकारों से पुरुष की भी परीक्षा की जाती है। —चाणक्य

परोपकार

पर उपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसंपति पाइ।

—तुलसी (मानस-अरण्य)

जिस शरीर से धर्म न हुआ, यज्ञ न हुआ और परोपकार न हो सका, उस शरीर को धिक्कार है, ऐसे शरीर को पशु-पक्षी भी नहीं छूते। —अज्ञात

भवन्ति नम्रास्तरव फलोद्गमैर्नवाम्बुभिर्भूरिविलम्बिनो घना।
अनुद्धता सत्पुरुषा समृद्धिभि स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्॥

—कालिदास (शकुन्तला)

फल आने से वृक्ष झुक जाते है, नये बरसाती जल से भरे हुए बादल [illegible] झुक जाते है, समृद्धियो के आने से सज्जन पुरुष नम्र हो जाते है —परोपकारियो का यह स्वभाव ही है।

पर उपकार वचन-मन-काया।
संत सहज सुभाव खगराया॥ —तुलसी (मानस-उत्तर)

परोपकार के लिए कुछ जाल भी करना पडे तो वह आत्मा की हत्या नही है।
—प्रेमचन्द

तरुवर फल नहि खात हैं, सरवर पियहि न पानि।
कहि रहीम परकाज हित, सम्पति सचहि सुजानि॥ —रहीम

As the purse is emptied the heart is filled.
ज्यो ज्यो परोपकार के लिए रुपये की थैली खाली होती है त्यो त्यो हमारा हृदय भरता जाता है। —विक्टर ह्यूगो

जीवित सफल तस्य य परार्थोद्यत सदा।
—वेदव्यास (ब्रह्मपुराण)

उसी का जीवन सफल माना जाता है जो परोपकार में प्रवृत्त रहता है।

जे गरीव सो हित करैं, वनि रहीम वे लोग।
कहा सुदामा वापुरो, कृष्ण मिताई जोग। —रहीम

परोपकार का प्रत्येक कार्य स्वर्ग की ओर एक कदम है। —एच० डब्लू० वीचर

'परोपकार. पुण्याय'—परोपकार से पुण्य होता है।

पर-उपदेश

पर उपदेश कुसल वहुतेरे। जे आचरहि ते नर न घनेरे।
—तुलसी (मानस)

पवित्र

शरीर जल से पवित्र होता है, मन सत्य से, आत्मा धर्म से, और वुद्धि ज्ञान से पवित्र होती है। —मनु०

The stream is always purer at its source.
सरिता अपने उद्गम स्थान पर सदैव अधिक पवित्र होती है। —पैस्कल

पवित्रता

Chastity is a wealth that comes from abundance of love.
पवित्रता वह घन है जो प्रेम के वाहुल्य से पैदा होता है। —रवीन्द्र

न्हाए धोये क्या भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहै, धोए बास न जाय॥ —कबीर

जहाँ पवित्रता है वहीं निर्भयता हो सकती है। —महात्मा गांधी

तन को जोगी सब करै, मन को बिरला कोय।
सहजै सब विधि पाइए, जो मन जोगी होय॥ —कबीर

मन चंगा तो कठौती में गंगा। —संत रैदास

पवित्रात्मा

पवित्र आत्माएँ इस संसार में चिरकाल तक नहीं ठहरतीं। —प्रेमचंद

पशु

साहित्य-संगीत-कलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानस्तद् भागधेयं परमं पशूनाम्॥ —भर्तृहरि

जिस मनुष्य ने साहित्य और संगीत-शास्त्र नहीं सीखा वह बिना पूंछ और सींग का साक्षात् पशु है। वह तृण खाये बिना ही जीता है यह पशुओं का परम भाग्य है।

येषां न विद्या न तपो न दानं न चापि शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्युलोके भुविभारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥

—चाणक्य

जिन मनुष्यों में न विद्या है, न तप है, न दान है, न ज्ञान है और न जिनमें शील, गुण और धर्म है, वे इस पृथ्वी पर भारस्वरूप हैं, वे मनुष्यत्व धारण कर पशु के समान विचरते हैं।

पशु-हिंसा

गीतायुग के पहले कदाचित् यज्ञ में पशुहिंसा मान्य रही हो, पर गीता के यज्ञ में उसकी कहीं गन्ध तक नहीं है। —महात्मा गांधी

पहाड़

पहाड़ के ऊपर की हरियाली देखकर किसे पता लग सकता है कि इसके हृदय में कैसी भयंकर आग दहक रही है। —अज्ञात

किं तेन हेमगिरिणा रजताद्रिणा वा यत्राश्रिता हि तरवस्तरवस्त एव।
मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण कंकोलनिम्बकुटजान्यपि चन्दनानि ॥

—भर्तृहरि

उस सोने अथवा चादी के पहाड़ से क्या फल जहाँ पैदा होनेवाले वृक्ष यदि वैसे ही वृक्ष रह गये। हम तो मलयाचल को ही विशिष्ट मानते हैं जिस पर पैदा होनेवाले ककोल, नीम और कुरैया के वृक्ष भी चन्दन के समान सुगन्धित हो जाते हैं।

पाखण्डी

अनार्यस्त्वार्यसस्थान. शौचाद्धीनस्तथा शुचि ।
लक्षण्यवदलक्षण्यो दुःशील: शीलवनिव ॥

—वाल्मीकि (रा० अयो०)

पाखण्डी मनुष्य अनार्य होकर भी आर्य के समान मालूम हो सकता है, शौचाचार से हीन होकर भी अपने को परम शुद्ध रूप में प्रकट कर सकता है, उत्तम लक्षणो से शून्य होकर भी सुलक्षण-सा दिखाई दे सकता है और बुरे स्वभाव का होकर भी दिखाने के लिए सुशील-सा आचरण कर सकता है।

पागलपन

No excellent soul is exempt from mixture of madness.
कोई भी महान् आत्मा पागलपन के मिश्रण से बरी नही है। —अरस्तू

Insanity in individual is something rare, but in groups, parties, nations and epochs it is the rule.
व्यक्तियों का पागलपन असाधारण बात है, किन्तु गिरोहों, दलों, राष्ट्रो और युगो का पागलपन नियम है। —नीत्शे

पाठशाला

जो मनुष्य एक पाठशाला खोलता है वह संसार का एक जेलखाना बन्द कर देता है। —ह्यूगो

School houses are the republican line of fortification.
विद्यालय ही लोकतंत्र की किलेबन्दी है। —होरेसमैन

आजीविका का साधन शरीर है और पाठशाला चरित्रनिर्माण की जगह है। उसे शरीर की जरूरतें पूरी करने का साधन समझना, चमड़े की जगह भी रस्सी के लिए भैंस को मारने के बराबर है। — महात्मा गांधी

पान

ताम्बूल मुखरोगनाशननिपुण स्वर्धन तेजसो।
नित्य जाठरवह्निवृद्धिजनन दुर्गन्धदोषापहम्॥
वक्त्रालंकरणं प्रहर्षजनन विद्वन्नृपाग्रे रणे।
कामस्यायतन समुद्भवकर लक्ष्म्या सुखस्यास्पदम्॥ — अज्ञात

ताम्बूल (पान) मुख के रोगों का नाशक है, तेज को बढ़ानेवाला है, उदराग्नि को नित्य प्रदीप्त करनेवाला है, दुर्गन्धि आदि दोषों का नाशक है, मुख का आभूषण है, हर्ष को बढ़ानेवाला है, विद्वान्, राजा और रणभूमि के लिए मंगलकारी है, कामदेव का मंदिर है, अभ्युदयकारक है तथा लक्ष्मी का निवासस्थल है।

पाप

कोई भी कर्म अपने आप पाप अथवा पुण्य नहीं हो सकता, ठीक जिस प्रकार बिन्दु या शून्य का स्वतः कोई मूल्य नहीं होता। — स्वामी रामतीर्थ

किसी कर्म को पाप नहीं कहा जा सकता, वह अपने स्थान में पूर्ण है, पवित्र है। युद्ध में हत्या करना धर्म है, परन्तु दूसरे स्थल पर अधर्म। — जयशंकर प्रसाद

कायेन कुरुते पाप मनसा सम्प्रधार्य तत्।
अनृत जिह्वया चाह त्रिविध कर्म पातकम्॥

— वाल्मीकि (रा० अयो०)

असत्यरूप पाप को मनुष्य पहले मन में विचारता है फिर उसे शरीर द्वारा करता है, तब जिह्वा से कहता है, अतः मानसिक, वाचिक और कायिक—तीन प्रकार के पातक होते हैं।

शरीर को रोगी और दुर्बल रखने के समान दूसरा कोई पाप नहीं है।

— लोकमान्य तिलक

Not failure but low aim is crime.
असफलता नहीं वरन् निकृष्ट ध्येय ही पाप है। — लॉवेल

संसार में दुर्बल और दरिद्र होना पाप है। —प्रेमचन्द

अनजान में जो पाप होता है उसका प्रायश्चित्त है—देवता उसे क्षमा कर देते हैं। किन्तु जान-बूझकर जो पाप किया जाता है, उससे कैसे बचा जा सकता है?
—शरत्चन्द्र (काशीनाथ)

पाप का पुरस्कार मृत्यु है। —स्वामी रामतीर्थ

पाप छिपाने से बढ़ता है। —शरत्चन्द्र (विराजबहू)

यदि मुझे विश्वास होता कि ईश्वर मुझे क्षमा कर देगा और मनुष्य मेरे पाप को न जान सकेंगे, तो भी पाप की अनिवार्य तुच्छता के कारण मुझे उसके करने में लज्जा आयेगी। —प्लेटो

आँके ब मुसीबते गिरफ्तारम न बमासीयते। —सादी (गुलिस्तां)
पापो में लिप्त होने की अपेक्षा दुःखो में फँसा रहना अच्छा है।

पापो की स्मृति पापो से अधिक भयानक होती है। —अज्ञात

जिस प्रकार अग्नि अग्नि का शमन नही कर सकती उसी प्रकार पाप पाप का शमन नही कर सकता। —टालस्टाय

Poverty and wealth are comparative sins.
दरिद्रता और धन दोनो तुलनात्मक पाप हैं। —विक्टर ह्यूगो

पाप एक प्रकार का अँधेरा है जो ज्ञान का प्रकाश होते ही मिट जाता है। —अज्ञात
जहाँ मिथ्याभिमान है वही पाप है। —महात्मा गांधी

अपना कर्त्तव्य करने के पहले दूसरे के कर्त्तव्य की आलोचना करने से पाप होता है। —शरत्चन्द्र (पण्डितजी)

संसार में सब प्राणी स्वतन्त्र और स्वाभाविक जीवन व्यतीत करने के लिए आये हैं, उनको स्वार्थ के लिए कष्ट पहुँचाना महान् पाप है। —लोकमान्य तिलक

मनुष्य जब एक बार पाप के नागपाश में फँसता है, तब वह उसी में और भी लिपटता जाता है, उसी के गाढ़ आलिंगन में सुखी होने लगता है। पापो की शृंखला बन जाती है। उसी के नये नये रूपो पर आसक्त होना पड़ता है। —जयशंकर प्रसाद

पाप से घृणा करो, किन्तु पापी से नही। —महात्मा गांधी

मानवो के सम्पूर्ण पापों को मैं उनके स्वभाव की अपेक्षा उनकी बीमारी समझता हूँ। —रस्किन

When we think of death, a thousand sins, which we have trodden as worms beneath our feet, rise up against us as fanning serpents.

जब हम मृत्यु का स्मरण करते हैं तो हजारों पाप, जिन्हें हमने कीड़े मकोड़ो की तरह पैरो के नीचे मसल डाला है, हमारे विरुद्ध फणदार सर्प की तरह खड़े होते हैं।

—वाल्टर स्काट

पाप कमजोर के रूप और धन पर इस तरह लपकता है जैसे बकरी पर चीता।

—अज्ञात

प्राणघात, चोरी और व्यभिचार ये तीन शारीरिक पाप हैं। झूठ बोलना, निन्दा करना, कटु वचन एवं व्यर्थ भाषण ये चार वाणी के पाप हैं। पर-धन की इच्छा, दूसरे की बुराई की इच्छा, असत्य, हिंसा, दया-दान में अश्रद्धा—ये मानसिक पाप हैं।

—भगवान् बुद्ध

The wages of sin is death.

पाप की उजरत मृत्यु है।   —बाइबिल

पाप की कल्पना आरंभ में अफीम के फूल की तरह सुन्दर और मनोहारिणी होती है, किन्तु अन्त में नागिन के आलिगन की तरह विनाशमयी है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

पाप में पड़नेवाला मनुष्य होता है, जो पाप पर पश्चात्ताप करता है वह साधु है, जो पाप पर अभिमान करता है वह शैतान है।   —फुलर

भुजते ते त्वघं पापा ये पंचन्त्यात्मकारणात्। —श्रीकृष्ण (गीता)

जो अपने लिए ही भोजन पकाते हैं वे पापी हैं, वे पाप खाते हैं।

जैसे पुण्य का हृदय से ही सम्बन्ध है उसी प्रकार पाप का भी हृदय से ही सम्बन्ध है। पाप और पुण्य दोनों तुम्हारी मानसिक अवस्था से सम्बन्धित हैं।

—स्वामी रामतीर्थ

पाप एक करुणाजनक वस्तु है—मानवीय विवशता की द्योतक। उसे देखकर दया आती है, लेकिन पाप के साथ निर्लज्जता और मदान्धता एक पैशाचिक लीला है—दया व धर्म की क्षमा के बाहर।   —प्रेमचन्द

पुत्रेषु वा नप्तृषु वा न चेदात्मनि पश्यति।
फलत्येव ध्रुवं पापं गुरुभुक्तमिवोदरे॥

—वेदव्यास (महा० आदि०)

जिस प्रकार गरिष्ठ भोजन पेट में जाकर अवश्य दुःख देता है, उसी प्रकार पाप अपने लिए अनिष्टकर न प्रतीत होने पर भी बेटे पोतों तक पहुँच कर अपना प्रभाव दिखाता है।

पाप करने का अर्थ यह नहीं कि जब वह आचरण में आ जाय तब ही उसकी गिनती पाप में हुई। पाप तो जब हमारी दृष्टि में आ गया, विचार में आ गया वह हमसे हो गया। —महात्मा गांधी

पापी

पापी अगर मर जाय तो प्रायश्चित्त कौन भोगेगा? —शरत्चन्द्र (बोस)

जो पापियों से जान बूझकर कड़े शब्द कहता है वह मानो उनके पाप रूपी घाव पर नमक छिड़कता है। —भगवान बुद्ध

पापी को पुण्यात्मा बनाने का यह भी एक उपाय है कि बार बार उसके पुण्य की प्रशंसा की जाय। अपने सम्बन्ध में ऊँची ऊँची बातें सुनकर मनुष्य सदैव ऊपर ही उठने की कोशिश करता है। —जनार्दनप्रसाद झा "द्विज"

सोने की चोरी करनेवाला, शराबी, गुरुपत्नी-गामी, ब्रह्महत्यारा—ये चारों महापापी होते हैं और जो इनके साथ सम्पर्क रखता है, वह पाँचवाँ भी महापापी है।

—अज्ञात

पापी का पैसा पुण्य कार्य में लगाने से उसके पाप का भी छेदन हो जायगा।

—विनोबा

पापियों में भी आत्मा का प्रकाश रहता है और कष्ट पाकर जाग्रत हो जाता है। यह समझना कि जिसने एक बार पाप किया वह पुण्य कर ही नहीं सकता, मानव-चरित्र के एक तत्त्व का अपवाद करना है। —प्रेमचन्द

जैसे सूखी लकड़ियों के साथ गीली लकड़ी भी जल जाती है, उसी प्रकार पापियों के सम्पर्क में रहने से धर्मात्माओं को भी उनके समान दण्ड भोगना पड़ता है।

—वेदव्यास (महा० शा०)

पापवंत कर सहज सुभाऊ। भजन मोर तेहि भाव न काऊ॥

—तुलसी (मानस, सुन्दर)

पाषाण

पाषाण के भीतर भी कितने मधुर स्रोत बहते रहते हैं, उनमें मदिरा नहीं, शीतल जल की धारा बहती है। —जयशंकर प्रसाद

पारखी

हंसा बगुला एक सा, मानसरोवर माहिं।
बगा ढंढोरे माछरी, हंसा मोती खाहिं॥ —कबीर

ज्ञान रतन की कोठरी, चुप करि दीन्हो ताल।
पारखि आगे खोलिए, कुंजी वचन रसाल॥ —कबीर

पाहुना (दे० 'अतिथि')

पिता

न सत्यं दानमानौ वा न यज्ञाश्चाप्तदक्षिणाः।
तथा बलकराः सीते! यथा सेवा पितुर्हिता॥
—वाल्मीकि (रा० अयो०)

हे सीता ! पिता की सेवा करना जिस प्रकार कल्याणकारी माना गया है, वैसा प्रबल साधन न सत्य है, न दान-सम्मान है और न प्रचुर दक्षिणावाले यज्ञ ही हैं।

प्रत्येक कुटुम्ब के पिता को अपने मितव्ययी पड़ोसी का अनुकरण करना चाहिए और उन पुरुषों के जीवन से लाभ उठाना चाहिए जो अपनी आमदनी उत्तम रीति से खर्च करते हैं। —सुकरात

A father is a banker provided by nature.
पिता प्रकृति का दिया हुआ महाजन है। —फ्रेंच कहावत

न ह्यतो धर्मचरणं किंचिदस्ति महत्तरम्।
यथा पितरि शुश्रूषा तस्य वा वचनक्रिया॥
—वाल्मीकि (रा० अयो०)

पिता की सेवा अथवा उनकी आज्ञा का पालन जैसा धर्म दूसरा कोई भी नहीं है।

पिपासा

पिपासा तृप्त होने की चीज नहीं। आग को पानी की आवश्यकता नहीं होती, उसे घृत की आवश्यकता होती है जिससे वह और भड़के। —भगवतीचरण वर्मा

पीड़ा

चु अजवे वदर्द आवुर्द रोजगार।
दिगर अजवहारा न मानद करार॥ —सादी

जब शरीर के किसी अंग में पीड़ा होती है तो सारा शरीर व्याकुल हो जाता है।

The pain of the mind is worse than the pain of the body
मानसिक पीड़ा शारीरिक पीड़ा की अपेक्षा अधिक कष्टदायक होती है।

—साइरस

पीड़ा पाप का परिणाम है। —भगवान् बुद्ध

Pain and pleasure, like light and darkness, succeed each other.
पीड़ा और प्रसन्नता, प्रकाश और अन्धकार की भाँति एक दूसरे के पीछे चलते हैं।

इस मीठी-सी पीड़ा में, डूबा जीवन का प्याला।
लिपटी-सी उतराती है, केवल आँसू की माला॥ —महादेवी वर्मा

पीड़ा से दृष्टि मिलती है, इसलिए आत्मपीड़न ही आत्मदर्शन का [illegible] है।
—[illegible]

पुण्य

किसी मनुष्य के निन्दा करने पर भी जो उसकी निन्दा नहीं करता और [illegible] निन्दा को सह लेता है, वह पुरुष निन्दा करनेवाले पुरुष को [illegible] उसके पुण्य को अपने आप ग्रहण कर लेता है। —वेदव्यास (म० [illegible])

जैसे धन का नाश होने पर सभी सम्बन्धी छोड़ देते हैं वैसे ही पुण्य [illegible] देवता भी मनुष्य को स्वर्ग से गिरा देते हैं। —वेदव्यास (म० [illegible])

पुत्र

पुत्र का मोह प्रकृति का [illegible] है। —प० [illegible]

किं तया क्रियते धेन्वा
या न दोग्ध्री न गर्भिणी।
कोऽर्थः पुत्रेण जातेन
यो न विद्वान् न धार्मिकः॥

उस गाय से क्या फायदा जो न दूध देती हो न गर्भ धारण करती हो, उस पुत्र के उत्पन्न होने से क्या लाभ, जो न विद्वान् ही हुआ न धार्मिक। —पंचतंत्र से

पुन्नाम्नो नरकाद् यस्मात्पितरं त्रायते सुतः।
तस्मात्पुत्र इति प्रोक्तः पितॄन् यः पाति सर्वतः॥
—वाल्मीकि (रा० अयो०)

क्योकि बेटा 'पुम्' नामक नरक से पिता का त्राण (उद्धार) करता है, इसलिये 'पुत्र' कहा गया है। वास्तव में जो पितरो का सब ओर से परित्राण करता है, वही पुत्र है।

लालयेत् पञ्च वर्षाणि दश वर्षाणि ताड़येत्।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत्॥ —चाणक्य

पाँच वर्ष की अवस्था तक पुत्र का लालन (दुलार) करे और उसके अनन्तर दस वर्ष अर्थात् १५ वर्ष की अवस्था तक ताड़न करता हुआ शिक्षा दे। परन्तु जब वह १६ वर्ष की अवस्था में पहुँचे तब से मित्र के समान उसके साथ व्यवहार करे।

पुत्र के प्रति पिता का कर्तव्य यही है कि वह उसे सभा में पहली पंक्ति में बैठने लायक बना दे। —तिरुवल्लुवर

पुत्रवती

पुत्रवती युवती जग सोई। रघुपति भक्त जासु सुत होई॥
—तुलसी (मानस, अयो०)

पुनर्जन्म

आत्मा एक चेतन तत्त्व है, जो अपने रहने के लिए उपयुक्त शरीर का आश्रय लेता है और एक देह से दूसरी देह में जाता रहता है। भौतिक शरीर आत्मा को धारण करने के लिए विवश होता है। —गेटे

जन्म और मृत्यु संसार के दो निर्विवाद सत्य हैं। पुनर्जन्म की समस्या इन्हीं दो सत्यों का स्पर्श करती है। —अज्ञात

पुरस्कार

He who wishes to secure the good of others has already secured his own.

जो व्यक्ति दूसरे की भलाई चाहता है उसने अपना भला पहले ही कर लिया।

—कन्फ्यूशियस

पुराना

पुराना होना ही सच्चाई का कोई सबूत नहीं है। —स्वामी रामतीर्थ

पुराणमित्येव न साधु सर्वम्। —कालिदास

कोई वस्तु केवल इस कारण ग्राह्य और उत्तम नहीं है कि वह पुरानी है।

पुरुष

स्वाभिमानी और पवित्रहृदय पुरुष निर्धन होने पर भी श्रेष्ठ गिना जाता है।

—लोकमान्य तिलक

उद्यानं ते पुरुष नावयानम्। —अथर्ववेद

पुरुष! तेरे लिए ऊपर उठना है न कि नीचे गिरना।

जो वीरता से भरा हुआ है, जिसका नाम लोग बड़े गौरव से लेते हैं, सब भी जिसके गुणों की प्रशंसा करते हैं, वही पुरुष वास्तव में पुरुष है।

—गणेशशंकर विद्यार्थी

नारी से पुरुष अधिक कार्यकुशल होता है परन्तु स्मरणशक्ति में व [illegible] कला में स्त्री पुरुष से आगे रहती है। —[illegible]

पुरुष और स्त्री

पुरुष है—कुतूहल और प्रश्न, और स्त्री है विश्लेषण, उत्तर और सब बातों का समाधान। —जयशंकर प्रसाद

पुरुषार्थ

ईश्वरत्व हुए बिना मनुष्य का समाधान नहीं होता, [illegible]। ईश्वरत्व होने का प्रयत्न ही सच्चा और एकमात्र पुरुषार्थ है।

—महात्मा गांधी

उद्योगे नास्ति दारिद्रय जपतो नास्ति पातकम्।
मौने च कलहो नास्ति नास्ति जागरितो भयम्॥ —चाणक्य

पुरुषार्थ करने पर दरिद्रता नही रहती, जपनेवाले को पाप नही लगता, मौन होने से कलह नही होता और जागनेवाले के निकट भय नही आता।

कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो में सव्य आहित.।
गोजिद् भूयासमश्वजिद् धनंजयो हिरण्यजित्॥ —वेद

दाहिने हाथ में मै अपना पुरुपार्थ लिये हूँ वायें में सफलता, अपने परिश्रम से गोधन, अश्वधन, स्वर्ण आदि का विजेता प्रभुकृपा से मै स्वय ही होऊँ।

अभिमानवतो मनस्विन. प्रियमुच्चैः पदमारुरुक्षत.।
विनिपातनिवर्त्तनक्षम मतमालम्बनमात्मपौरुपम्॥
—भारवि (किरातार्जुनीय)

उन्नति के पद पर आरोहण करने के इच्छुक, मानशाली धीर पुरुप आपत्ति-निवारण करने में समर्थ अपने पुरुपार्थ का आश्रय लेना उचित मानते हैं। शूरवीरो का पुरुपार्थ ही सच्चा सहायक है।

क्षेत्रं पुरुपकारस्तु दैवं बीजमुदाहृतम्।
क्षेत्रवीजसमायोगात् ततः सस्यं समृद्ध्यते॥
—वेदव्यास (महा० अनु०)

पुरुपार्थ खेत है और दैव को बीज बताया गया है। खेत और बीज के संयोग से ही अनाज पैदा होता है।

तथा स्वर्गश्च भोगश्च निष्ठा या च मनीपिता।
सर्वं पुरुपकारेण कृतेनेहोपलभ्यते॥
—वेदव्यास (महा० अनु०)

इस जगत में पुरुपार्थ करने से स्वर्ग, भोग, धर्म में निष्ठा और बुद्धिमत्ता—इन सबकी उपलब्धि होती है।

अर्थो वा मित्रवर्गो वा ऐश्वर्य वा कुलान्वितम्।
श्रीश्चापि दुर्लभा भोक्तु तथैवाकृतकर्मभि॥
—वेदव्यास (महा० अनु०)

जो पुरुपार्थ नही करते, वे धन, मित्रवर्ग, ऐश्वर्य, उत्तम कुल तथा दुर्लभ लक्ष्मी का उपभोग नही कर सकते।

कृतः पुरुषकारस्तु दैवमेवानुवर्तते।
न दैवमकृते किंचित् कस्यचिद् दातुमर्हति॥
—वेदव्यास (महा० अनु०)

किया हुआ पुरुषार्थ ही दैव का अनुसरण करता है, परन्तु पुरुषार्थ न करने पर दैव किसी को कुछ नहीं दे सकता।

कृतं चाप्यकृतं किंचित् कृते कर्मणि सिध्यति।
सुकृतं दुष्कृतं कर्म न यथार्थं प्रपद्यते॥ —वेदव्यास

प्रबल पुरुषार्थ करने से पहले का किया हुआ भी कोई कर्म बिना किया हुआ सा हो जाता है और वह प्रबल कर्म ही सिद्ध होकर फल प्रदान करता है। इस तरह पुण्य या पाप-कर्म अपने यथार्थ फल को नहीं दे पाते हैं। —वेदव्यास (महा०)

यथाग्नि पवनोद्धूतः सुसूक्ष्मोऽपि महान् भवेत्।
तथा कर्मसमायुक्तं दैवं साधु विवर्धते॥

जैसे थोड़ी-सी भी आग वायु का सहारा पाकर बहुत बड़ी हो जाती है, उसी प्रकार पुरुषार्थ का सहारा पाकर दैव का बल विशेष बढ़ जाता है।

पूर्वजन्मकृतं कर्म तद्दैवमिति कथ्यते।
तस्मात् पुरुषयत्नेन विना दैवं न सिध्यति॥ —[illegible]

पूर्वजन्म में किया हुआ कर्म ही भाग्य कहलाता है। इसलिए पुरुषार्थ किये बिना भाग्य का निर्माण नहीं हो सकता। —वाल्मीकि (रामा०)

दैवं पुरुषकारेण यः समर्थः प्रबाधितुम्।
न दैवेन विपन्नार्थः पुरुषः सोऽवसीदति॥

जो अपने पुरुषार्थ से दैव को दबा देने की शक्ति रखता है, वह दैव के द्वारा अपने कार्य में बाधा पड़ने पर खेद नहीं करता—[illegible]।

लक्ष्य पूरा करने के लिए अपनी समस्त शक्तियों द्वारा [illegible] पुरुषार्थ है। —[illegible]

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पुरुषार्थ कहलाते हैं। [illegible] काम दो परस्पर विरोधी सिरे पर स्थित हैं। —[illegible]

आत्मा को मोक्ष-पुरुषार्थ की अभिलाषा होती है, शरीर को [illegible] है। दोनों एक दूसरे का नाश करने को [illegible]। —[illegible]

कर्म, ज्ञान और भक्ति इन तीनो का जिस जगह ऐक्य होता है वही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है। — अरविन्द घोष

पुरुषार्थ का अर्थ है पुरुष को प्रवृत्त करनेवाला हेतु। यह आवश्यक नही कि यह हेतु 'सद्धेतु' ही हो। — विनोबा

पुरुषार्थहीन

पुरुषार्थहीन मनुष्य (वास्तव में) जीते जी मरा हुआ है। — स्वामी शंकराचार्य

विपदोऽभिभवन्त्यविक्रम रहयत्यापदुपेतमायति.।
नियता लघुता निरायतेरगरीयान्न पद नृपश्रिय.॥
— भारवि (किरातार्जुनीय)

पुरुषार्थहीन पुरुष को विपत्तियाँ आक्रान्त कर लेती है। विपत्तियो से आक्रान्त होने पर उसकी भावी उन्नति रुक जाती है। जिससे उसका गौरव नष्ट हो जाता है। गौरव नष्ट होने पर राज्यश्री के लिए कोई स्थान नही रह जाता, जिसका वह आश्रय ले सके।

पुरुषोत्तम

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशया.।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे॥ — उपनिषद्

कार्य-कारणस्वरूप उस परात्पर पुरुषोत्तम को तत्त्व से जान लेने पर इस (जीवात्मा) के हृदय की गाँठ खुल जाती है, सम्पूर्ण संशय कट जाते हैं और समस्त शुभाशुभ कर्म नष्ट हो जाते हैं।

पुष्प (दे० 'फूल')

पुण्यसंवर्द्धनाच्चापि पापौघपरिहारत.।
पुष्कलार्थ प्रदानाच्च पुष्पमित्यभिधीयते॥ — अज्ञात

फूल पापसमूह को दूर करते हुए पुण्य की अभिवृद्धि करता है तथा प्रचुर अर्थ को प्रदान करता है, इसलिए वह पुष्प नाम से पुकारा जाता है।

न रत्नैर्न सुवर्णेन न वित्तेन च भूरिणा।
तथा प्रसादमायाति यथा पुष्पैर्जनार्दनः॥ — अज्ञात

भक्तजनों के ऊपर कृपा रखनेवाले भगवान प्रचुर रत्नराशि अथवा सुवर्ण के खजाने से भी उतने प्रसन्न नहीं होते जितने भक्तो के दिये हुए पुष्पों के समूह से।

The world is a great book, of which they who never stir from home read only a page.

संसार एक महान् पुस्तक हैं जिसमें वे लोग जो कभी घर से बाहर नहीं निकलते केवल एक पृष्ठ पढ़ पाते है। —आगस्टाइन

✓बुरी पुस्तकों का पढ़ना जहर पीने के समान है। —टालस्टाय

Books are those faithful mirrors that reflect to our mind, the minds of sages and heroes.

पुस्तकें वे विश्वस्त दर्पण हैं जो सन्तों और वीरों के मस्तिष्क का परावर्तन हमारे मस्तिष्क पर करती हैं। —गिब्बन

रोग की पीड़ा शान्त करने के लिए चित्ताकर्षक और मनोरंजक पुस्तक से बढ़कर दूसरा कोई अच्छा साधन नहीं है। —अज्ञात

जहाँ पुस्तकें हैं, वहाँ से लोभ, मोह, भ्रम और भय को भगाना कठिन नहीं।

सरस पुस्तक से रोग-पीड़ित व्यक्ति को बड़ी शान्ति मिलती है। जैसे स्नेहमयी जननी की मीठी-मीठी थपकियाँ बच्चे को नींद की गोद में सुला देती हैं। —अज्ञात

पुस्तकें जाग्रत देवता हैं, उनकी सेवा करके तत्काल वरदान प्राप्त किया जा सकता है। —अज्ञात

पूजा

मनुष्य ही परमात्मा का सर्वोच्च साक्षात् मन्दिर है इसलिए साकार देवता की पूजा करो। —स्वामी विवेकानन्द

लाखों गूंगों के हृदय में ईश्वर विराजमान है, मैं उसके सिवा अन्य किसी ईश्वर को नहीं मानता। वे इसकी सत्ता को नहीं जानते यह मैं जानता हूँ। मैं इन लाखों की सेवा द्वारा उस ईश्वर की पूजा करता हूँ जो सत्य है अथवा उस सत्य की जो ईश्वर है। —महात्मा गांधी

पूजा के द्वारा संयत चित्त कभी कुमार्ग की ओर नहीं दौड़ता। —अज्ञात

अकृतोपद्रवः कश्चिन्महानपि न पूज्यते।
अर्चयन्ति नरा नागं न तार्क्ष्यं न गजादिकम्॥ —पंचतंत्र

बिना उपद्रव किये महान् व्यक्ति की भी पूजा कोई नहीं करता। मनुष्य सर्प की पूजा करते हैं न कि गरुड़, हाथी आदि की।

Money is a handmaiden if thou knowest how to use it; a mistress, if thou knowest not.

पैसा आपका दास है अगर आप उसका उपयोग जानते है, वह आपका स्वामी है अगर आप उसका उपयोग नही जानते। —होरेस

पैसे को अपना ईश्वर मानिए, वह शैतान की तरह आपको भ्रष्ट कर देगा। —फीलिडग

पैसा आदमी को रंक बना देता है। —महात्मा गांधी

पोशाक

✓ सादी पोशाक ब्रह्मचर्य पालन में मददगार होती है। —महात्मा गांधी

Costly thy habit as purse can buy, ..rich, not gaudy.

तुम्हारी पोशाक उतनी कीमती होनी चाहिए जितनी बनवाने की तुम्हारी योग्यता हो। वह बहुमूल्य तो हो पर भड़कीली न हो। —शेक्सपियर

साफ-सुथरी पोशाक में एक प्रकार का यौवन होता है जिसमें अधिक उम्र छिप जाती है। —अज्ञात

Good clothes open all doors.

अच्छी पोशाक के लिए सभी दरवाजे खुले रहते हैं। —टामस फुलर

प्यार (दे० "प्रेम", "मुहब्बत")

बल और शक्ति की आज्ञा टालना आसान है, मगर प्यार की आज्ञा टालना आसान नही। —सुदर्शन

हम सब प्रेम के लिए जन्म लेते हैं। यह जीवन का सिद्धान्त है। —डिजरायली

Man's love is of man's life a thing apart, it is woman's whole existence.

मनुष्य का प्यार उसके जीवन की एक भिन्न वस्तु है, परन्तु नारी के लिए उसका प्यार उसका सारा जीवन है। —बायरन

जिसे हम प्यार करते हैं उसी के अनुसार हमारा रूप और आकार निर्मित होता है। —गेटे

प्रेम ही प्रेम का पुरस्कार है। —ड्राइडेन

प्रकृति शून्य से घृणा करती है। —अज्ञात

Nature is commanded by obeying her.

प्रकृति की आज्ञा मानकर ही हम उसका नेतृत्व करते हैं। —बेकन

प्रगति

Intercourse is the soul of progress.

पारस्परिक व्यवहार प्रगति का सार है। —बक्स्टन

All that is human must retrograde if it do not advance.

सारी मानवीय वस्तुएँ यदि प्रगति पर नहीं हैं तो उन्हें पीछे हटना होगा।

—गिबन

प्रगति जीवन की निशानी है; जिसमें प्रगति नहीं वह मुर्दे के समान है।

—अज्ञात

प्रजा

प्रजा के साथ मेल करके शत्रु के साथ लड़ना चाहिए। प्रजा-पालक राजा की प्रजा सेना के बराबर ही है। —सादी (गुलिस्ताँ)

प्रजा बहुत बुद्धिमान् आलोचक से भी अधिक बुद्धिमान् होती है। —बेनक्राफ्ट

प्रजा और राजा में पुत्र और पिता का नाता है। —अज्ञात

प्रजा का असंतोष राजनीति का अभिशाप है। —डा० रामकुमार वर्मा

जो व्यक्ति प्रजा के पैर बनकर चलता है, उसे कभी काँटे नहीं चुभ सकते।

—डा० रामकुमार वर्मा

प्रजातंत्र

प्रजातन्त्र का अर्थ मैं यह समझता हूँ कि इसमें नीचे से नीचे और ऊँचे से ऊँचे आदमी को आगे बढ़ने का समान अवसर मिले। —महात्मा गांधी

Democracy means government of the people, by the people and for the people.

प्रजातंत्र का अर्थ है जनता के हेतु ही जनता द्वारा जनता का शासन।

—अब्राहम लिंकन

मैं इस बात से सहमत नही हूँ कि प्रजातत्र का अर्थ है कि काग्रेसजन वही कार्य करें जो जनता का बहुमत उनसे कराना चाहता है। —जवाहरलाल नेहरू

प्रजातत्र का रहस्य यान्त्रिक विधि से किसी रीति को बदल देने में नही है। इसमें हृदय-परिवर्तन की आवश्यकता है। —महात्मा गांधी

प्रज्ञा (दें० "बुद्धि", "प्रतिभा")

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्र तस्य करोति किम् ।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पण. किं करिष्यति ॥ —हितोपदेश

जिस मनुष्य को अपनी बुद्धि नही हो, उसके लिए शास्त्र बेकार है, जैसे दोनो आँखो से रहित अन्धे मनुष्यको दर्पण क्या करेगा।

प्रण (दें० "प्रतिज्ञा")

शिवि दधीचि बलि जो कछु भाखा।
तन धन तजेउ वचन प्रण राखा॥ —तुलसी (मानस)

प्रणय-स्मृति

One sad voice has its nest among the ruins of the years. It sings to me in the night—"I loved you".

काल-रूपी खडहरो में एक विषादमयी वाणी निवास करती है। रात्रि में वह मुझसे गा-गाकर कहती है—"मै तुम्हें प्यार करती थी।" —रवीन्द्र

प्रतिभा

Genius is one percent inspiration, and ninty percent perspiration.

प्रतिभा एक प्रति सैकड़ा प्रेरणा और निन्नानवे प्रति सैकड़ा श्रम है।
—टामस ए० एडिसन

The first and last thing required of genius is the love of truth
सत्य के प्रति प्रेम ही प्रतिभा की प्रथम और अतिम माँग है। —गेटे

Genius finds its own road and carries its own lamp.

प्रतिभा अपना मार्ग स्वयं निर्धारित कर लेती है और अपना दीपक स्वय ले चलती है। —विल्मट

प्रतिभा के माने है बुद्धि में नयी-नयी कोपलें फूटते रहना। नयी कल्पना, नया उत्साह, नयी खोज, नयी स्फूर्ति ये सब प्रतिभा के लक्षण हैं। —विनोबा

Genius is infinite pains-taking
प्रतिभा निरन्तर कष्ट सहने में है। —लांगफेलो

प्रतिभा के साथ जब शुभ्र निष्ठा एव लगन का सामञ्जस्य हो जाता है तो व्यक्ति के गुण कस्तूरी की गंध में बोलने लगते हैं। —अज्ञात

प्रतिभा के बल पर स्वतंत्र वातावरण में स्वतंत्रतापूर्वक सांस ली जा सकती है। —जे० एस० मिल

Patience is a necessary ingredient of genius.
धैर्य प्रतिभा का आवश्यक अंग है। —डिजरायली

Genius does what it must, and talent what it can.
प्रतिभा वही कार्य करती है जो वह करने के लिए बाध्य है एव गुणी वही कार्य करता है जो वह कर सकता है। —ओवेन मेरीडेथ

Genius, that power which dazzles mortal eyes, is oft but perseverence in disguise
प्रतिभा अर्थात् वह शक्ति जो मानवीय नेत्र में चकाचौंध उत्पन्न कर देती है, गुप्त रूप से केवल कठिन परिश्रम का नाम है। —आस्टिन

Genius always gives its best at first, prudence, at last
प्रतिभा में जो सबसे अच्छी बात होती है उसे वह सबसे पहले दे देती है और दूरदर्शिता सबसे बाद में देती है। —लेवेटर

लबी-चौड़ी पढ़ाई के नीचे प्रतिभा दबकर मर जाती है। —विनोबा

There is no great genius without a mixture of madness
ऐसी कोई महान् प्रतिभा नहीं है जिसमें लगन का सम्मिश्रण न हो। —अरस्तू

A man of genius has been seldom ruined, but by himself
प्रतिभाशाली व्यक्ति यदि नष्ट होता है तो प्रायः अपने ही द्वारा नष्ट होता है। —जानसन

होनहार बिरवान के होत चीकने पात। —कहावत

Genius must be born, and never can be taught
प्रतिभा जन्मजात होती है, वह सिखायी नहीं जाती। —ड्राइडेन

प्रतिरोध

प्रतिरोध से बड़ी शक्तियाँ रुकती नहीं, प्रत्युत उनका वेग और भी भयानक हो जाता है। —जयशंकर प्रसाद (विशाख)

प्रतिष्ठा

✓ प्रतिष्ठा बनाने में कई वर्ष लग जाते हैं, कलंक एक पल में लग जाता है।—अज्ञात

The way to gain a good reputation is, to endeavour to be what you desire to appear.

अच्छी प्रतिष्ठा पाने का मार्ग अपने को उस योग्य बनाने का प्रयत्न करना है जैसा कि तुम दूसरो की दृष्टि में दीखना चाहते हो। —सुकरात

The reputation of a man is like his shadow, gigantic when it precedes him, and pigmy in its proportions when it follows.

मनुष्य की प्रतिष्ठा उसकी छाया की भाँति है। जब वह मनुष्य के आगे चलती है तो बहुत बड़ी हो जाती है और जब उसके पीछे चलती है तो उसकी तुलना में बहुत छोटी हो जाती है। —टालरेन्ड

विपक्षमखिलीकृत्य प्रतिष्ठा खलु दुर्लभा।
अनीत्वा पंकतां धूलिमुदकं नावतिष्ठते॥

—माघ (शिशुपालवध)

शत्रु का समूल नाश किये बिना प्रतिष्ठा की प्राप्ति दुर्लभ है, (क्योंकि) जल धूल को कीचड़ बनाये बिना नहीं ठहरता।

प्रतिज्ञा (दे० "प्रण")

दृढ प्रतिज्ञा एक गढ के सदृश है जो भयानक प्रलोभनो से हमारी रक्षा करता है और दुर्बलता एवं अस्थिरता से हमें बचाता है। —महात्मा गांधी

रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाय बरु बचन न जाई॥ —तुलसी

प्रतीज्ञाहीन जीवन बिना नींव का घर है, अथवा यो कहिए कि कागज का जहाज है। प्रतिज्ञा के बल पर ही ससार टिका हुआ है। प्रतिज्ञा न लेने का अर्थ अनिश्चित या डाँवाडोल रहना है। —महात्मा गांधी

प्रतीक्षा

प्रतीक्षा का एक-एक क्षण एक-एक युग के समान होता है। —अज्ञात

प्रतीक्षा में जो आनन्द है वह प्राप्ति में नहीं। —अज्ञात

वह मजा वस्लेयार में नहीं जो मजा इंतजार में है। —अज्ञात

प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री के लिए सबसे आवश्यक गुण धैर्य है। —पिट

अच्छी तरह से राष्ट्र-शासन करनेवाले प्रधानमंत्री के लिए अधिक सुनना और कम बोलना नितान्त आवश्यक है। —रिचलू

Coolness is the most important quality for a man destined to rule

शान्त स्वभाव का होना शासक का सबसे आवश्यक गुण है। —एण्ड्री मारिस

प्रभुता

नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं। प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं॥ —तुलसी

Power, like a desolating pestilence
Pollutes whatever it touches

प्रभुता विनाशकारी प्लेग के समान है, यह जिसे छूती है उसे ही भ्रष्ट करती है।
—शैली

The appetite for unrestrained power grows with use

निरंकुश शक्ति की क्षुधा उपयोग से बढ़ती है। —जवाहरलाल नेहरू

प्रभुता भ्रष्ट करती है और पूर्ण प्रभुता पूर्ण रूप से भ्रष्ट करती है।
—लार्ड आक्टन

Unlimited power corrupts the possessor

असीम शक्ति धारणकर्त्ता को ही भ्रष्ट करती है। —विलियम पिट

प्रभुता को सब कोई भजै, प्रभु को भजै न कोय।
कह कबीर प्रभु को भजै प्रभुता चेरी होय॥ —कबीर

प्रभुता ऐसी मदिरा है जिसे पीनेवाला ही उन्मत्त नहीं होता प्रत्युत उसके परिवार, सबधी और पडोसी भी उन्मत्त हो जाते हैं। —अज्ञात

प्रयत्न तथा प्रयास

महान् ध्येय के प्रयत्न मे ही आनन्द है, उल्लास है और किसी अश तक प्राप्ति की मात्रा भी है। —जवाहरलाल नेहरू

आनन्द की दृष्टि से देखें तो साक्षात् स्वराज्य की अपेक्षा स्वराज्यप्राप्ति के प्रयत्न का आनन्द कुछ और ही है। —विनोबा

जलकणो का अविच्छिन्न प्रपात पत्थर में भी छेद कर देता है। —अज्ञात

के वा न स्यु. परिभवपद निष्फलारम्भयत्ना.। —कालिदास
निष्फल प्रयत्न करने से दुनिया में किसकी पराजय नही होती।

✓ सच्चा प्रयास कभी निष्फल नही होता —चिल्सन

निरन्तर जल की बूँदो के गिरने से पत्थर मे गड्ढा हो जाता है और धीरे धीरे चोट मारने से बड़े बड़े वृक्ष भी काट डाले जाते हैं। —अज्ञात

प्रलोभन

गुरु के झगड़ो और प्रलोभन को यदि मनुष्य जीत ले तो समग्र प्रकृति को चेरी बनना पड़ेगा। —स्वामी रामतीर्थ

The absence of temptation is the absence of virtue.
प्रलोभन का अभाव सद्गुण का अभाव है। —गेटे

Every moment of resistance to temptation is a victory
प्रलोभन के अवरोध का प्रत्येक क्षण विजय है। —फेबर

Some temptations come to the industrious, but all temptations attack the idle.

कुछ प्रलोभन परिश्रमी व्यक्ति को हो सकता है, किन्तु सारे प्रलोभन आलसी व्यक्ति पर ही आक्रमण करते हैं। —स्पर्जन

प्रशंसा

प्रत्येक व्यक्ति प्रशंसा चाहता है। —लिंकन

You can tell the character of every man when you see how he receives praise.

आप प्रत्येक व्यक्ति का चरित्र बता सकते हैं, यदि आप देखें कि वह प्रशंसा से कैसा प्रभावित होता है। —सेनेका

मानव-प्रकृति में सब से गहरा नियम कद्र किये जाने की लालसा है। —विलियम जेम्स

There is nothing I need so much as nourishment for my self-esteem

मुझे दूसरी किसी वस्तु की उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी कि आत्मपूजा की भूख के पोषण की। —अज्ञात

अयोग्य मनुष्यों की प्रशंसा छिपे हुए व्यंग्य के समान होती है। —[illegible]

Praise is more divine than prayer, prayer points our ready path to heaven, praise is already there

प्रशंसा, प्रार्थना से अधिक दिव्य है, प्रार्थना स्वर्ग का तैयार रास्ता हमें दिखाती है, प्रशंसा वहाँ पहले से ही उपस्थित रहती है। —यंग

True praise takes root and spreads

सच्ची प्रशंसा जड़ थाम लेती है और पनपती है। —[illegible]

We live by admiration, hope and love

हम प्रशंसा, आशा और प्रेम से जीते हैं। —वर्ड्सवर्थ

Admiration begins when acquaintance ceases

प्रशंसा वहाँ आरम्भ होती है जहाँ परिचय समाप्त होता है। —एस० जानसन

प्रतिद्वन्द्वी द्वारा की गयी प्रशंसा सर्वोत्तम कीर्ति है। —टामस मूर

प्रशंसा अज्ञान की बेटी है। —[illegible]

किसी के गुणों की प्रशंसा करने में अपना समय व्यर्थ नष्ट न करो, उनके गुणों को अपनाने का प्रयत्न करो। —[illegible]

प्रशंसा अच्छे गुणों की छाया है, परन्तु जिन गुणों की वह छाया है उन्हीं के अनुसार उसकी योग्यता भी होती है। —बेकन

मनुष्य के भीतर जो कुछ सर्वोत्तम है उसका विकास प्रशंसा एवं प्रोत्साहन द्वारा ही किया जा सकता है। —चार्ल्स श्वेब

Praise like gold and diamonds owes its value only to its scarcity.
स्वर्ण और हीरे के समान, प्रशंसा का मूल्य केवल उसके दुर्लभत्व में ही होता है।
—एस० जानसन

The greatest efforts of the race have always been traceable to the love of praise as its greatest catastrophes to the love of pleasure.
प्रशंसा के प्रति अनुराग पर ही सदैव किसी जाति का महान् प्रयास आधारित रहा है, जैसे उसका पतन विलासिता के प्रति अनुराग में रहा है। —रस्किन

प्रशंसा के वचन साहस बढ़ाने में अचूक औषधि का काम देते हैं। —अज्ञात

प्रशंसा की भूख जिसे लग जाती है, वह कभी तृप्त नहीं होता। —अज्ञात

प्रशासक

नरपतिहितकर्त्ता द्वेष्यतां याति लोके
जनपद हितकर्त्ता त्यज्यते पार्थिवेन्द्रैः
इति महति विरोधे वर्त्तमाने समाने
नृपति जनपदानां दुर्लभ कार्यकर्ता ।।

अर्थं देखो 'कार्यकर्त्ता' में —पंचतंत्र

प्रशासन-कार्य

प्रशासन-कार्य अत्यन्त दुःसाध्य है क्योंकि इसमें मनुष्य को आंतरिक एवं बाह्य दोनों संघर्षों में सदैव निरत रहना पड़ता है। —अज्ञात

प्रसन्नता (दे० "सुख")

मन की प्रसन्नता ही व्यवहार में उदारता बन जाती है। —प्रेमचन्द

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते।। —श्रीकृष्ण (गीता)

चित्त प्रसन्न रहने से सब दुःख दूर हो जाते हैं। जिसे प्रसन्नता प्राप्त हो जाती है उसकी बुद्धि तुरन्त ही स्थिर हो जाती है।

Cheerfulness gives elasticity of the spirit.
प्रसन्नता आत्मा को बल देती है। —सेमुएल स्माइल्स

प्रसन्नहृदय मनुष्य वह सूर्य है जिसकी किरणें अनेकों हृदयों के शोकरूपी अन्धकार को दूर भगा देती हैं। —अज्ञात

प्रसन्नता और शोक वास्तव में मन की स्थितियां हैं और मन को वश में रखना अपने हाथ में है। —मार्कस ओरेलियस

मनुष्य अपनी प्रसन्नता के लिए स्वयं ही उत्तरदायी है। —थोरो

Happiness lies, first of all, in health

प्रसन्नता (सुख) सर्वप्रथम स्वास्थ्य में है। —जी० डब्लू० कर्टिस

प्रसन्नता तो चन्दन है, दूसरे के माथे पर लगाइये तो आपकी उँगलियां अपने आप महँक उठेंगी। —अज्ञात

To be happy you must forget yourself—learn benevolence, it is the only cure of a morbid temper

प्रसन्न रहने के लिए तुम स्वयं अपने को भूल जाओ, परोपकारी बनो, दूषित विचार को दूर करने का केवल यही एक उपाय है। —बुल्वर

True happiness renders men kind and sensible, and that happiness is always shared with others

सच्चे सुख से मनुष्य दयालु और बुद्धिमान् होता है, और ऐसे सौख्य में दूसरे भी भाग लेते हैं। —मोनटेसक्यो

प्रसन्न रहना हमारा कर्तव्य है। यदि हम प्रसन्न रहेंगे तो अज्ञात रूप से संसार की बहुत भलाई करेंगे। —स्टीवेंसन

यदि कोई मनुष्य अप्रसन्न है तो यह उसी का दोष है क्योंकि ईश्वर ने सभी को प्रसन्न बनाया है। —इपिक्टस

हँसमुख और प्रसन्न रहने में कुछ प्रयास की आवश्यकता है। अपने को प्रसन्न रखना भी एक कला है। —लार्ड एवेबरी

मुस्कराते हुए चेहरे से दिया हुआ जलपान पूरा भोजन हो जाता है —हर्बर्ट

Cheerfulness is contagious. Nothing is so catching in this world as a full warm spontaneous smile

प्रसन्नता छूत की बीमारी है। एक पूर्ण स्वाभाविक मुस्कान से बढ़कर इस संसार में कोई अन्य प्रभावित करने वाली वस्तु नहीं है। —अज्ञात

A good laugh is sunshine in a house.

अच्छी हंसी घर में सूर्य के प्रकाग के सदृश होती है। —थैकरे

Cheerfulness is health; its opposite melancholy is disease.

प्रसन्नता स्वास्थ्य है, इसके विपरीत उदासी रोग है। —हालीवर्टन

I had rather have a fool make me merry, than experience make me sad.

मैं पसन्द करूंगा कि एक मूर्ख मुझे प्रसन्न वनाये, अपेक्षा इसके कि अनुभव मुझे दुखी वनावे। —शेक्सपियर

Burdens become light when cheerfully borne.

वोझ हल्का हो जाता है यदि प्रसन्नतापूर्वक उठाया जाय। —ओविड

✓ प्रसन्न-चित्त व्यक्ति अधिक जीते हैं। —शेक्सपियर

If there is a virtue in the world at which we should always aim, it is cheerfulness.

यदि संसार में एक गुण है जो हम सव का सदैव ध्येय होना चाहिए तो वह प्रसन्नता है। —लार्ड लिटन

I must die, but must I then die sorrowing ? I must be put in chains must I then also lament ? I must go into exile Can I be prevented from going with cheerfulness and contentment ?

मुझे मरना है तो क्या मैं दुखी होकर मरूं? मुझे कारागार में वन्द होना पड़े तो क्या मुझे वहाँ दुखी रहना चाहिए? मुझे निर्वासित होना पड़े तो क्या मुझे प्रसन्नता-पूर्वक और संतोष के साथ जाने से रोका जा सकता है। —इपिक्टस

घमण्ड विजली की क्षणिक चमक के समान है। जवकि प्रसन्नता मन में सूर्य के समान प्रकाश करती है। —जोजफ एडीसन

प्रसन्नता हृदय की वह निर्मलता है, जो अनायास देखी जा सकती है। —अज्ञात

यदि प्रसन्नता स्वभाव में वस गयी है तो रोग शोक दूर से ही भाग जायेंगे। —अज्ञात

प्रसिद्ध

It is the penalty of fame that a man must ever keep rising.

प्रसिद्ध होने का यह एक दंड है कि मनुष्य को निरन्तर उन्नतिशील वने रहना पड़ता है। —चैपिन

प्रांतीयता

प्रांतीयता का भाव पृथक् करनेवाला है। परस्पर संयुक्त करनेवाला नहीं।
—अज्ञात

प्रांतीयता, वर्गवाद तथा पृथक्तावादी प्रवृत्तियां देश के स्वस्थ विकास में बाधक हैं।
—अज्ञात

प्रान्तीयता हमारी राष्ट्रीयता के कल्पवृक्ष को काटनेवाली कुल्हाड़ी है।
—अज्ञात

प्रांतीयता में राष्ट्रीय एकता का अभाव होता है, और एकता के अभाव में राष्ट्र अपने विकासोन्मुख ध्येय से गिर जाता है। —अज्ञात

प्राणायाम

प्राणायाम रहस्यमयी गुप्त कुंडलिनी शक्ति को जाग्रत करता है।
—स्वामी शिवानन्द

इच्छानुसार सांस लेने और छोड़ने की क्रिया को रोकने पर अधिकार प्राप्त करने का नाम प्राणायाम है, जो कि आसन-विजय के बाद ही प्राप्त होता है।
—पातञ्जलि (योगसूत्र)

प्रायश्चित्त

जो मनुष्य अधिकारी व्यक्ति के सामने स्वेच्छापूर्वक अपने दोष शुद्ध हृदय से कह देता है और फिर कभी न करने की प्रतिज्ञा करता है वह मानो शुद्धतम प्रायश्चित्त करता है। —महात्मा गांधी (आत्मकथा)

जो पुरुष अपनी जाति, आश्रम या कुल के धर्म को त्याग देते हैं उनकी शुद्धि किसी प्रायश्चित्त से नहीं हो सकती। —वेदव्यास (महा० शान्ति०)

मदिरापान, ब्रह्महत्या तथा गुरुपत्नी गमन—इन महापापों के लिए कोई प्रायश्चित्त ही नहीं बताया गया है। किसी भी उपाय से इनके प्राणों का अन्त होने पर ही इनसे छुटकारा मिलता है। यही शास्त्रों का निर्णय है।
—वेदव्यास (महा० शान्ति०)

पापी मनुष्य धर्माचरण और तप करके ही अपने पाप को नष्ट कर [illegible]।
—वेदव्यास (महा० शान्ति)

प्रार्थना

असत्य से मुझे सत्य की ओर ले चलो। अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मृत्यु से मुझे अमरता की ओर ले चलो। (दे० 'प्रकाश') —बृहदारण्यक

प्रार्थना अर्थात् ईश्वर के पास पहुंचने की इच्छा। हम भगवान की शरण में आये हैं, यह भावना प्रार्थना में होनी चाहिए। —विनोबा

प्रार्थना वही कर सकता है जिसकी आत्मा ऊंची उठी हुई हो।
—सन्त मैकैरियस

असहाय अवस्था में प्रार्थना के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं।
—जयशंकर प्रसाद

प्रार्थना अगर रक्षण के अन्दर होती है तो वह प्रार्थना ही मिट जाती है।
—महात्मा गांधी

केषा न स्यादभिमतफला प्रार्थना ह्युत्तमेषु। —कालिदास (मेघदूत)

सज्जन से की हुई प्रार्थना कभी निष्फल नहीं होती।

सच्ची करुण प्रार्थना का उत्तर तत्काल ही मिला करता है। —अज्ञात

प्रार्थना के सयोग से हमें बल मिलता है। अपने पास का सम्पूर्ण बल काम में लाकर और बल की ईश्वर से माग करना यही प्रार्थना का मतलब है। —विनोबा

प्रार्थना धर्म का निचोड़ है। प्रार्थना याचना नहीं है, यह तो आत्मा की पुकार है। प्रार्थना दैनिक दुर्बलताओ की स्वीकृति है, यह हृदय के भीतर चलने वाले अनुसंधानो का नाम है। —महात्मा गांधी

Our prayers should be for blessings in general, for God knows best what is good for us.

हमारी प्रार्थना सर्व-सामान्य भलाई के लिए होनी चाहिए, क्योंकि ईश्वर जानता है कि हमारे लिए अच्छा क्या है। —सुकरात

अहंकार को शून्य करने में प्रार्थना मदद दे सकती है। —विनोबा

Prayer is the most powerful forms of energy one can generate

प्रार्थना एक अभूतपूर्व शक्ति है, जिसे कोई व्यक्ति उत्पन्न कर सकता है।
—एक वैज्ञानिक

प्रार्थना के बिना मैं कब का पागल हो गया होता। —महात्मा गांधी

हमारी मानसिक वृत्तियां, हमारी अभिलाषाएं हमारी नित्य की प्रार्थनाएं हैं।
—स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)

Whatever a man prays for, he prays for a miracle
मनुष्य की प्रार्थनाएं किसी आश्चर्य की प्राप्ति के हेतु होती हैं। —तुर्गनिव

In prayer it is better to have a heart without words, than words without a heart.
शब्द-रहित सहृदय प्रार्थना, हृदयहीन सुन्दर प्रार्थना से उत्तम है। —जान बनयन

प्रार्थना में दैववाद और प्रयत्नवाद का समन्वय है। दैववाद में नम्रता है वह जरूरी है, प्रयत्नवाद में जो पराक्रम है वह भी आवश्यक है। प्रार्थना उभय-भावनी है। —विनोबा

He prayeth best who loveth best
उसकी प्रार्थना सर्वोत्तम है, जिसका प्यार सर्वोत्तम है। —कोलरिज

प्रार्थना लाजिमी हो ही नहीं सकती, प्रार्थना तभी प्रार्थना है जब वह अपने आप हृदय से निकलती है। —महात्मा गांधी

मनुष्य के अन्दर में शुभ और अशुभ दोनों तरह की दुनिया है। लेकिन अन्तरतर में तो शुभ ही भरा है। प्रार्थना से उस अन्तरतर में प्रवेश होता है। —विनोबा

जो देवताओं की बात सुनते हैं देवता उनकी सुनते हैं। —होमर

प्रार्थना कोई यान्त्रिक वस्तु नहीं, वह हृदय की क्रिया है। —विनोबा

मैं भगवान से अष्टसिद्धि या मोक्ष तक की कामना नहीं करता। मेरी तो यह प्रार्थना है कि समस्त प्राणियों के अन्तःकरण में स्थित होकर मैं ही उनके समस्त दुःखों को सहूं। —रन्तिदेव भागवत

मैं कोई काम बिना प्रार्थना के नहीं करता। मेरी आत्मा के लिए प्रार्थना उतनी ही अनिवार्य है जितना शरीर के लिए भोजन। —महात्मा गांधी

More things are wrought by prayer th[illegible]
जितना संसार समझता है, प्रार्थना से उससे कहीं, [illegible]
—टेनिसन

शक्ति का परिणाम शरीर पर और उसके द्वारा [illegible] परिणाम हृदय के द्वारा आत्मा पर होता है। —विनोबा

हम जब अपनी असमर्थता खूब समझ लेते हैं और सब कुछ छोड़कर ईश्वर पर भरोसा करते हैं तो उसी भावना का फल प्रार्थना है। —महात्मा गांधी

अपने दुर्गुणो का चिन्तन और परमात्मा के उपकारो का स्मरण यही सच्ची प्रार्थना है। अज्ञात

धैर्य सर्वश्रेष्ठ प्रार्थना है। —भगवान् बुद्ध

I pray thee, o God, that I may be beautiful within.
मेरी प्रार्थना है कि, हे ईश्वर, मैं अन्दर से सुन्दर बनूं। —सुकरात

प्रार्थना आत्मशुद्धि का आह्वान है, यह विनम्रता को निमन्त्रण देना है, यह मनुष्यो के दु:खो में भागीदार बनने की तैयारी है। —महात्मा गांधी

प्रार्थना का आमन्त्रण निश्चय ही आत्मा की व्याकुलता का द्योतक है। प्रार्थना पश्चात्ताप का एक चिन्ह है। प्रार्थना हमारे अधिक अच्छे, अधिक शुद्ध होने की आतुरता को सूचित करती है। —महात्मा गांधी

परमात्मा की प्रार्थना के लिए एकत्र होनेवाले हृदय से एक हो जाते हैं।
—विनोबा

Prayer is the voice of faith
प्रार्थना विश्वास की ध्वनि है।

सर्वोत्तम प्रार्थना वह है जिसमे कम से कम शब्द हो। —ल्यूथर

शरीर की शक्ति कायम रखने के लिए हमको रोज खाना पडता है। आत्मा के लिए तो चौबीस घटे प्रार्थना की जरूरत है। —विनोबा

भगवान् की प्रार्थना में सारे भेदो को भूल जाने का अभ्यास हो जाता है।
—विनोबा

सभी सकुशल रहें, सभी निरोगी और स्वस्थ हो। सबका पूर्ण कल्याण हो, कोई दु:ख-भागी न हो। —उपनिषद्

प्रीति प्रेम (दे० "प्यार", "मुहब्बत")

सुरनर मुनि सब की यह रीती।
स्वारथ लागि करैं सब प्रीती॥

—तुलसी (मानस-किष्किन्धा)

प्रेम वलिदान सिखाता है, हिसाव नही सिखाता। प्रेम मस्तिष्क को नही हृदय को छूता है। —अज्ञात

धन और वैभव हृदय की प्यास नही बुझा सकते, उसके लिए आवश्यकता है निर्वन प्रेम की। —डा० रामकुमार वर्मा

प्रेम हृदय के समस्त सद्भावो का शान्त, स्थिर, उद्गारहीन समावेश है। —प्रेमचन्द

Mutual love, the crown of all our bliss.

पारस्परिक प्रेम हमारे सभी आनन्दो का शिरोमणि है। —मिल्टन

प्रेम से ही सृष्टि का जन्म होता है, प्रेम से ही उसकी व्यवस्था होती है और अन्त मे प्रेम में ही वह विलीन हो जाती है। —रवीन्द्र

Love reasons without reason.

प्रेम विना तर्क का तर्क है। —शेक्सपियर

प्रेम इस लोक का अमृत है। —अज्ञात

प्रेम आत्मा से होता है, शरीर से नहीं। —भगवतीचरण वर्मा

यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहि।
सीस उतारै भुई धरै, तव पैठे घर माहि॥ —कबीर

प्रेम टेविल लैम्प नही है कि प्लग जोड़ा, स्विच दवाया और रोशनी जल गयी। अपनी दोनो हथेलियों से रगड़ कर आग पैदा करनी पड़ती है तब जाकर प्रेम की खीर पकती है। —अज्ञात

प्रेम थकान को मिटाता है, दु:ख को सुख वनाता है। जीवन की वाटिका में प्रेम का गुलाव खिलकर अपने चारो ओर सुगन्ध विखेर देता है। प्रेम भगवान् का सर्व-श्रेष्ठ वरदान है। —वालटेयर

प्रेम भाग्य के वश में है। —शेक्सपियर (हैमलेट)

दया के सामने जैसे दुष्टता का नाश हो जाता है, वैसे ही प्रेम और उदार सहानुभूति के सामने बुरे मनोविकारो का नाश हो जाता है। —स्वेट मार्डन

जीवन का सवसे वड़ा आनंद प्रेम है।

प्रेम दु:ख और वेदना का वन्धु है। इस ससार में जहां दु:ख और वेदना का अथाह सागर है, वहा प्रेम की अधिक आवश्यकता है। —डा० रामकुमार वर्मा

Love all God's creation, the whole and every grain of sand in it

ईश्वर की समस्त सृष्टि से, इसके कण कण से प्रेम करो। —डास्टाएवस्की

प्रेम और वासना में उतना ही अतर है, जितना कचन और काँच में।
—प्रेमचन्द

सच्चा प्रेम स्तुति से प्रकट नही होता, सेवा से प्रकट होता है। —महात्मा गाधी

प्रेम वलिदान है,—आत्म-त्याग है ममत्व का विस्मरण है।
—भगवतीचरण वर्मा (चित्रलेखा)

प्रेम पियाला जो पियै, सीस दच्छिना देय।
लोभी सीस न दे सकै, नाम प्रेम का लेय॥ —कबीर

Love sought is good, but given unsought is better.
ऐच्छिक प्रेम उत्तम है, परन्तु विना याचना के दिया हुआ प्यार वेहतर है।
—शेक्सपियर

प्रेम में स्वर्गीय आनन्द और मृत्यु की सी यन्त्रणा है, किन्तु जो प्रेम करता है वही सच्चा सुखी और भाग्यवान् है। —गेटे

क्रोध जैसे तलवार को वाहर खीच लेता है, विज्ञान जैसे जलशक्ति का उद्घाटन कर लेता है, वैसे ही प्रेम रमणी के साहस और धैर्य को प्रदीप्त कर देता है। —प्रेमचन्द

प्रेम हमें अपने पडोमी या मित्र पर ही नही वल्कि जो हमारे शत्रु हो उन पर भी रखना है। —महात्मा गांधी

Love gives itself; it is not bought
प्रेम खरीदा नही जाता, वह स्वय को अर्पित करता है। —लांगफेलो

प्रेम ही आरोग्य के मूल कारण—परमात्मा से हमारा मेल कराता है।
—स्वेट मार्डन (दिव्य जीवन)

नारी की आत्मा प्रेम में वसती है। —श्रीमती सिगोरने

प्रेम विना तलवार के शासन करता है। —कहावत

प्रेमी प्रीति न छाडही, होत न प्रेम तें हीन।
मरे परेहू उदर में, जल चाहत है मीन॥ —अज्ञात

पीया चाहै प्रेम रस, राखा चाहै मान।
एक म्यान में दो खडग, देखा सुना न कान॥ —कबीर

प्रेम ही असन्तोष-रूपी महान् व्याधि की रामवाण औषधि है। प्रेम ही द्वेष, ईर्ष्या आदि दुर्गुणो का उपशामक है। —स्वेट मार्डेन

प्रेम आरम्भ नही है—वह तो उत्तम कार्य का अन्तिम फल है। —रस्किन

प्रेम ही शान्ति है, प्रेम ही सुख और आनन्द है।
—स्वेड मार्डेन (दिव्य जीवन)

प्रेम दहकती हुई आग है तो वियोग उसके लिए घृत है। —प्रेमचन्द

प्रेम सरीर प्रपंच रुज, उपजी अधिक उपाधि।
तुलसी भली सुवैदई, वेगि वाधिए व्याधि॥
—तुलसी (दोहावली)

प्रेम ही सबसे बड़ा शिक्षक है, प्रेम ही सर्वोत्कृष्ट शान्ति-कर्त्ता है।
—स्वेट मार्डेन

Love is blind, and lovers cannot see the pretty follies that they themselves commit

प्रेम अंधा है और प्रेमी उन सुन्दर मूर्खताओ को जिन्हें वे करते हैं, नही देख सकते।
—शेक्सपियर

प्रेम कभी दावा नही करता, वह तो हमेशा देता है। प्रेम हमेशा कष्ट सहता है। न कभी झुझलाता है, न वदला लेता है। —महात्मा गाँधी

प्रेम नगरो में नही वरन् देहाती झोपडियो में वसता है। —गेटे

प्रेम सीधी-सादी गौ नही, खूँख्वार शेर है, जो अपने शिकार पर किसी की आँख भी नही पड़ने देता। —प्रेमचन्द (गो-दान)

जव मैं था तव गुरु नही, अव गुरु हैं हम नाहि।
प्रेम-गली अति साकरी, ता में दो न समाहि॥ —कवीर

सच्चा प्रेम संयोग में भी वियोग की मधुर वेदना का अनुभव करता है।
—प्रेमचन्द

मनुष्य का कर्तव्य है कि कष्ट देनेवाले से भी प्रेम करे।
—मारकस आंटोनियस

Love is never lost If not reciprocated it will flow back and soften and purify the heart

प्रेम कभी नष्ट नही होता। यदि प्यार का उत्तर प्यार से न मिला तो वह प्रेमी के पास लौट आता है और उसके हृदय को कोमल और पवित्र बना देता है

जहा प्रेम जितना उग्र होता है वहा वैसी ही तीखी घृणा भी होती है।

—वाशिंगटन इर्विन

Happiness is the only good, reason the only torch, justice the only worship, humanity the only religion, and love the only priest.

प्रसन्नता ही केवल सद्गुण है, (बुद्धि) तर्क ही केवल दीप है, न्याय ही केवल पूजनीय है, मानवता ही केवल धर्म है और प्रेम ही केवल पुजारी है।

—आर० जी० इंगरसोल

प्रेम हृदयो को मिलाता है, देह पर उसका वश नही चलता। —प्रेमचन्द

प्रेम स्वर्गीय शक्ति का जादू है। इसमें पडकर राक्षस भी देवता बन जाते है।

—सुदर्शन

प्रेम असाध्य रोग है। —प्रेमचन्द

प्रेम मृत्यु से अधिक बलवान है मृत्यु जीवन से अधिक बलवान है। यह जानते हुए भी मनुष्य मनुष्य के बीच कितनी संकुचित सीमा खिंची है। —खलील जिब्रान

अपने प्रेम को पर्वत के विषम शिखर पर स्थापित न करो, ऐसा करने से उसमें पतन का भय है। —रवीन्द्र

परमात्मा पूजा का नहीं, प्रेम का भूखा है। —स्वामी दयानन्द

जो उपकार जताने का इच्छुक है, वह द्वार खटखटाता है। जो प्रेम करता है, उसके लिए द्वार खुला है। —रवीन्द्र

प्रेम और द्वेष

प्रेम का स्वभाव है अनेक को एक करना और द्वेष का स्वभाव है एक को अनेक करना। —अज्ञात

प्रेम द्वेष को परास्त करता है। ईश्वर निरंतर शैतान के दांत खट्टे करता है।

—महात्मा गांधी

प्रेम और सौन्दर्य

प्रेम ही सर्वोच्च कानून है और सौन्दर्य भी। दोनो ही पूर्णता को प्राप्त करते हैं। एक तो स्त्री-पुरुष के अविभाज्य ऐक्य में, दूसरा अनन्त आनन्द में। —क० मा० मुंशी

प्रेमहीन

प्रेम-विहीन हृदय के लिए ससार काल-कोठरी है, जो नैराश्य और अधकार से भरी है। —प्रेमचन्द

जिसने कभी प्रेम नही किया उसने स्वर्ग में रहकर भी नरक का अनुभव किया। प्रेमहीन जीवन नरक की दहकती ज्वाला है, जिसकी आँच मे दूसरे भी जलने लगते है। —अज्ञात

प्रेमी

प्रेमी हृदय उदार होता है, वह दया और क्षमा का सागर है, ईर्ष्या और दभ के नाले उसमें मिलकर उसे विशाल बना देते हैं। —प्रेमचन्द

सच्चा प्रेमी अपने सुखो की तनिक भी इच्छा नही करता, वरन् जिस पर प्रेम करता है उसके सुख पर अपने सुख को उत्सर्ग कर देता है। —अज्ञात

The lunatic, the lover, and the poet
Are of imagination all compact.

पागल हो, प्रेमी हो या कवि, इन सबकी कल्पना-शक्ति बडी तीव्र होती है। —शेक्सपियर

प्रेरणा

प्रेरणा ईश्वर-ज्योति है जो सात्विक प्रकृति के महापुरुषो को अपना जीवन-कार्य करने का आदेश तथा उत्साह देती है। —अज्ञात

प्रेरणा मनुष्य के अन्त:स्थित अगाध सामर्थ्य को बाहर प्रकट करने की चेतावनी है। —अज्ञात

फल

जो कर्म छोड़ता है वह गिरता है। कर्म करते हुए भी जो उसका फल छोडता है वह चढता है। —महात्मा गांधी

फलेन परिचीयते। —कहावत

फल (परिणाम) से ही उद्योग की पहिचान होती है।

फलत्याग से मतलब है फल के सम्बन्ध में आसक्ति का अभाव। वास्तव में फलत्यागी को हजारगुना फल मिलता है। —महात्मा गांधी

अविज्ञाय फल यो हि कर्मत्वे चानुधावति।
स शोचेत्फलवेलाया यथा किंशुकसेचक॥ —वाल्मीकि

जो फल को जाने बिना ही कर्म की ओर दौड़ता है, वह फल-प्राप्ति के अवसर पर केवल शोक का भागी होता है—जैसे कि पलाश को सींचनेवाला पुरुष उनका फल न पाने पर खिन्न होता है।

फलहीन

फलहीन नृप भृत्या कुलीनमपि चोन्नतम्।
सत्यज्यान्यत्र गच्छन्ति शुष्क वृक्षमिवाण्डजा॥ —पचतत्र

उन्नत कुल में उत्पन्न किन्तु फलहीन (अपने दया, दाक्षिण्यादि गुणो से रहित) राजा को छोडकर नौकर अन्यत्र चले जाते हैं, जैसे कि सूखे पेड को छोडकर पक्षी दूसरे पेड पर चले जाते हैं।

फायदा

जब तक तकलीफ सहने की तैयारी नहीं होती तब तक फायदा दिखाई दे ही नही सकता। फायदे की इमारत नुकसान की धूप में बनी है। —विनोबा

फजूल-खर्ची

जो मूर्ख दिन दहाडे कपूर की बत्ती जलाता है, एक दिन ऐसा आयेगा कि उसको रात को जलाने के लिए तेल भी न मिलेगा। उसकी फजूलखर्ची एक दिन विषम फल लायेगी ही। —सादी (गुलिस्तां)

मनुष्य धन के अभाव से उतना कष्ट नही पाता जितना वह अपनी फजूल-खर्ची के कारण पाता है। —अज्ञात

Waste of time is the most extravagant and costly of all expenses.

समय गँवाना सभी खर्चों से कीमती और व्यर्थ होना है। —अज्ञात

फिलॉसफर (दे० "दार्शनिक")

दार्शनिक का सर्वप्रथम कर्त्तव्य अपने अहकार को तिलाजलि देना है।

—इपिक्टस

To be a philosopher is not merely to have subtle thoughts, but so to love wisdom as to live according to its dictates

दार्शनिक होना केवल सूक्ष्म विचार रखना ही नही है किन्तु ज्ञान की इस तरह आरावना करना है कि यह जीवन उसी के नियमानुसार व्यतीत होने लगे। —थोरो

फिलॉसफी (दे० "दर्शन", "तत्त्वज्ञान")

फलसफी की बहस के अन्दर खुदा मिलता नही।
डोर को सुलझा रहे है और सिरा मिलता नही॥ —अकबर

Queen of arts and daughter of heavan

दर्शन कलाओ की रानी और स्वर्ग की बेटी है। —बर्क

Philosophy if rightly defined is nothing but the love of wisdom

दर्शन को यदि स्पष्ट किया जाय तो वह केवल ज्ञान से प्रेम के अतिरिक्त और कुछ नही। —सिसरो

फूल

फूल केवल देव-मन्दिरो की अथवा राज-महलो की ही वस्तु नही है, निर्धनो के झोपड़ो में अथवा वीतराग सन्यासियो के मन में भी उनके प्रति आदर के भाव है।

—अज्ञात

Lovely flowers are the smiles of God's goodness.

लुभावने फूल ईश्वर की अच्छाई की मुस्कान है। —विवरफोर्स

नैसर्गिकी सुरभिण. कुसुमस्य सिद्धा।
मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताड़नानि॥ —कालिदास

सुगन्धित पुष्प की स्वाभाविक स्थिति यह है कि वह मस्तक पर धारण किया जाय, चरणो से न रौंदा जाय।

फूल की पखुडियो को तोड़ कर तुम उसका सौदर्य नही ग्रहण कर सकते।

—रवीन्द्र

प्रकाश जब काले बादलो का चुंबन करता है तो वे स्वर्ग के फूल बन जाते हैं।

—रवीन्द्र

फूल प्रकृति की उदारता का दान है। उसके सूँघने से हृदय पवित्र होता है, मेधा-शक्ति बढती है और मस्तिष्क प्रफुल्ल होता है। —जयशंकर प्रसाद

फूल प्रेम की सच्ची भाषा है। —पी० बेन्जामिन

फुलवारी

To cultivate a garden is to walk with God.

फुलवारी लगाना ईश्वर के साथ टहलना है। —बोवी

बंधन

Man barricades against himself

मनुष्य अपने को स्वय बंधन में डालता है। —रवीन्द्र

बद्धो हि को यो विषयानुरागी।
का वा विमुक्तिर्विषये विरक्ति ॥ —शंकराचार्य

वास्तव मे बंधन में कौन है? विषयो मे आसक्त। विमुक्ति क्या है? विषयो से वैराग्य।

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धन। —गीता

जो कर्म यज्ञ के लिए (परोपकारार्थ) किये जाते हैं उनके अतिरिक्त कर्मों से इस लोक में बंधन पैदा होता है।

यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सर।
सम सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबद्धयते॥ —गीता

जो यथालाभ से सन्तुष्ट रहता है, जो सुख-दुःखादि द्वन्द्वो से मुक्त हो गया है, जो द्वेषरहित हो गया है, जो सफलता निष्फलता में तटस्थ है, वह कर्म करते हुए भी बन्धन में नही पडता।

बंधु

आवत काम रहीम है, बंधु विरल गहि मोह।
जीरन पेडहि के भये, राखत बरहि बरोह॥ —रहीम

वरं वने व्याघ्र-गजेन्द्र-सेवितम्।
द्रुमालये पक्वफलाम्बु भोजनं।
तृणानि शय्या परिवान वल्कलं।
न बन्धु मध्ये धनहीन जीवनं॥

वरु रहीम कानन वसिय, असन करिय फल तोय।
बन्धु मध्य गति दीन ह्वै, बसिबो उचित न कोय॥ —रहीम

वचपन

विद्यार्थी का बाल्यकाल सबसे महत्त्व का समय है। उस समय मिला हुआ ज्ञान वह कभी भूलता नही। —गांधी

Childhood shows the man, as morning shows the day.
जिस प्रकार प्रभात दिन का आभास कराता है उसी प्रकार वचपन युवावस्था का —मिल्टन

स्वर्ग वचपन के आस-पास रहता है। —वर्ड्सवर्थ

वच्चा (दे० "शिशु")

Spare the rod and spoil the child.
बेंत को बचाना (दड न देना) बच्चे को बरबाद करना है। —कहावत

बच्चे का जन्मसिद्ध अधिकार परतन्त्रता है। हर बात के लिए उसे मां-बाप पर निर्भर रहना पड़ता है। —विनोबा

वह समझदार पुत्र है जो अपने पिता को जानता है। —होमर

Children have more need of models than of critics.
बच्चों को आलोचको की अपेक्षा नमूनो की अधिक आवश्यकता है। —जेवेरी

वड़प्पन (दे० "महानता")

बड़प्पन सिर्फ उम्र में नही, उम्र के कारण मिले हुए ज्ञान और चतुराई में भी है। —महात्मा गांधी

Some are born great, some achieve greatness, and some have greatness thrust upon them

कुछ जन्म से ही महान् होते हैं; कुछ महानता प्राप्त करते हैं और कुछ व्यक्तियो पर महानता लाद दी जाती है। —शेक्सपियर

नकल करके कोई आज तक महान् नही हुआ। —डा० जानसन

किसी को अपने से छोटा समझकर उनसे घृणा न करो, न अपने में वडप्पन का अभिमान ही आने दो। —अज्ञात

A great man shows his greatness by the way he treats little men.

छोटो के साथ सद्व्यवहार करके ही वडा मनुष्य अपने वडप्पन को प्रकट करता है। —कार्लाइल

छोटी वातो में वडा होना ही सच्चा वडप्पन है। —डा० जानसन

वडा वही है जो अपने को सवसे छोटा मानता है।

A really great man is known by three signs, generosity in the design, humanity in the execution, moderation in success

अभिप्राय मे उदारता, कार्यसम्पादन में मानवता, सफलता में नयम—इन्ही तीन चिह्नो से महान् व्यक्ति जाना जाता है। —विस्मार्क

वडप्पन सूट-बूट और ठाठ-वाट में नही है, जिसकी आत्मा पवित्र है वही वडा है। —प्रेमचन्द

All great men come out of the middle classes

समस्त महापुरुष मध्यमवर्ग से उत्पन्न होते हैं। —एमर्सन

Greatness lies not in being strong, but in the right using of strength.

वलवान् होने में वडप्पन नही है अपितु वल का सदुपयोग करने में वडप्पन है। —एच० डब्लू बीचर

वड़ाई

वडे वड़ाई ना करें, वडे न वोलैं वोल।
रहिमन हीरा कव कहै, लाख टका है मोल॥ —रहीम

सच्ची वडाई उनी की है जिनकी शत्रु भी सराहना करे।

वदनामी

हम इतना वुराई से नहीं डरते जितना वदनामी से डरते हैं। वदनामी का डर न हो तो संसार में पापो की संख्या कई गुनी वढ़ जाय। —अज्ञात

There are calumnies against which even innocence loses courage.

वहुत सी ऐसी वदनामिया है जिनके समक्ष भोलापन भी साहस छोड़ देता है।
—नेपोलियन

To persevere in one's duty and to be silent is the best answer to calumny.

अपने कर्तव्य में प्रयत्नशील रहना और चुप रहना वदनामी का सवसे अच्छा जवाव है। —वाशिंगटन

वदला

वदला अमानुषिक शब्द है। —सेनेका

He that studieth revenge keepeth his own wounds green, which otherwise would heal and do well.

जो वदला लेने की वात सोचता है, वह अपने ही घाव को हरा रखता है जो कि अव तक कभी का अच्छा हो गया होता। —वेकन

वदला मधुर होता है। —कहावत

In taking revenge, a man is but equal to his enemy; but in passing it over he is his superior.

वदला लेने से मनुष्य अपने शत्रु के समान हो जाता है, परन्तु न लेने से वह उससे श्रेष्ठ वनता है। —वेकन

वदला साहस नही है, परन्तु उसका सहना साहस है। —शेक्सपियर

हत्या के रूप में वदला लेना शैतान का काम है। —कहावत

शत्रुओ को क्षमा करना वदले का सवसे अच्छा साधन है। —अज्ञात

वल

दुष्टो का वल हिंसा है, राजाओ का वल दण्ड-विधि है, स्त्रियो का वल सेवा है और गुणवालो का वल क्षमा है। —विदुर

वालानाम् रोदन वल

रोना ही वालकों का वल है।

सेवा के लिए अर्पण किया हुआ वल टिकेगा, अमर होगा। —वाल्मीकि

Force is all-conquering but its victories are short-lived

वल सव पर विजय प्राप्त करता है, परन्तु वह विजय क्षणिक होती है। —लिंकन

भोग को अर्पण किया हुआ वल अपने और ससार के नाश का कारण होगा।

—वाल्मीकि

Who overcomes by force, hath overcome but half his foe

वल से जो शत्रु को जीतता है, वह केवल उसको आधा ही जीत पाता है।

—मिल्टन

वलवान

अधिक वलवान तो वे ही होते हैं जिनके पास वुद्धि-वल होता है। जिनमें केवल शारीरिक वल होता है, उन्हें वास्तविक वलवान नही माना जाता।

—वेदव्यास (महाभारत, शाति)

✓ सच्चा वलवान वही है जिसने अपने मन पर कावू पा लिया है। —अज्ञात

वलिदान

It is easier to sacrifice great than little things

छोटी छोटी वस्तुओ की अपेक्षा वडी वस्तुओ का वलिदान करना सरल है।

—मानटेन

वहादुर (दे० "वीर")

वहादुर रोगशय्या पर मरने की अपेक्षा रणक्षेत्र में मरना पसन्द करता है।

—महात्मा गाधी

No man can be brave who considers pain the greatest evil of life.

कोई मनुष्य वहादुर नही हो सकता जो दुःख को जीवन का सवसे वडा अभिशाप समझता है। —सिसरो

Gold is tried by fire, brave man by adversity.

अग्नि सोने को परखती है और आपत्ति वहादुरो को। —सेनेका

वहादुरी

Strength of numbers is the delight of the timid The valiant of spirit glory in fighting alone

कायर वहुसख्यक होने में प्रसन्न होते है। वहादुर अकेले ही लड़ने में अपना गौरव समझते हैं। —महात्मा गांधी

Physical bravery is an animal instinct, moral bravery is a much higher and truer courage

शारीरिक वीरता पशुता का द्योतक है, नैतिक वीरता अपेक्षाकृत ऊची और सच्ची है। —वेन्डेल फिलिप्स

The better part of valour is discretion

विवेक वहादुरी का उत्तम भाग है। —शेक्सपियर

Valour would cease to be a virtue if there were no injustice

अगर अन्याय न रहे तो वहादुरी का गुण समाप्त हो जाय। —एजिसलस

वहुमत

One, on God's side, is a majority

जिसके साथ ईश्वर है वह वहुमत मे है। —वेन्डेल फिलिप्स

It is my principle that the will of the majority should always prevail.

यह मेरा सिद्धान्त है कि वहुमत का निर्णय मान्य हो। —जेफरसन

The voice of the majority is no proof of justice.

वहुमत की आवाज न्याय की द्योतक नही है। —शिलर

अत.करण के मामले में वहुमत के सिद्धान्त को कोई स्थान नहीं है।
—महात्मा गांधी

वातचीत

✓ ऐसी वानी वोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहुं सीतल होय॥ —कवीर

अवाक् रहकर अपने आप बातचीत करने का साधन यावत् साधनो का मूल्य है; शाति का परम पूज्य मदिर है, परमार्थ का एकमात्र सोपान है। —बालकृष्ण भट्ट

ता गर्दे सुखन न गफ्ता बाशद।
ऐबो हुनरश न हुफ्ता बाशद॥ —सादी (गुलिस्ता)

किसी आदमी की बुराई-भलाई उस समय तक मालूम नही होती जब तक कि वह बातचीत न करे।

हमारी जिह्वा कतरनी के समान सदा स्वच्छन्द चला करती है, उसे यदि हमने दबाकर काबू में कर लिया तो क्रोधादिक बडे-बडे अजेय शत्रुओ को बिना प्रयास ही जीतकर अपने वश में कर डाला। —बालकृष्ण भट्ट

मधुर वचन है औषधी, कटुक वचन है तीर।
स्रवन द्वार ह्वै सचरै, सालै सकल शरीर॥ —कबीर

सत्सग या बातचीत से मनुष्य उद्यत बुद्धि का होता है, क्योकि उनके लिए मनुष्य को अपनी जानकारी इस प्रकार उपस्थित रखनी पडती है, जिसमें जब सुअवसर आ पडे तब वह उसे काम में ला सके। —बेकन

बातचीत प्रिय हो पर ओछी न हो, चुहल हो पर बनावट लिए न हो, स्वच्छन्द हो पर अश्लील न हो, विद्वत्तापूर्ण हो पर दम्भयुक्त न हो, अनोखी हो पर असत्य न हो। —शेक्सपियर

अगर किसी की कडवी बात न सुनना चाहे तो उसका मुंह मीठा करे। —सादी

Silence is one great art of conversation

मौन बातचीत की एक महान कला है। —हैजलिट

बोली एक अमोल है, जो कोई बोलै जानि।
हिए तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि॥ —कबीर

Know how to listen, and you will profit even from those who talk badly.

सुनना सीखो। तुम्हे उन लोगो से भी लाभ होगा जिन्हें ठीक तरह से बातचीत करना नही आता। —प्लूटार्क

बातचीत का अच्छा ढग यह है कि प्राप्त प्रसग के साथ कुछ तर्क भी मिला रहे, दृष्टान्तो और कथाओ के साथ युक्ति भी रहे, प्रश्नो के साथ सम्मति भी प्रकाशित की जाय और हँसी-दिल्लगी के साथ कुछ काम की बात भी रहे। —बेकन

जो मनुष्य तौलकर वात नही करता उसे कठोर वातें सुननी पडती है। — सादी

The first ingredient in conversation is truth; the next, good sense, the third, good humour, and the fourth, wit.

वातचीत का पहला अंश है सत्य, द्वितीय सुन्दर समझ-वूझ, तृतीय सुन्दर विनोद और चतुर्थ वाक्चातुर्य। — सर डब्लू० टेम्पिल

वाधा

जिस आदमी को चारो ओर विघ्न-वाधाएँ ही दीख पडती है उसका आत्मवल क्षीण हो जाता है, वह कोई महान् कार्य नही कर सकता। — स्वेट मार्डेन

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचै.
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्या.
विघ्नै पुन. पुनरपि प्रतिहन्यमाना
प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति ॥ — भर्तृहरि

निकृष्ट व्यक्ति वाधाओ के डर से काम शुरु ही नही करते, मध्यम प्रकृतिवाले कार्य का प्रारभ तो कर देते है किन्तु विघ्न उपस्थित होने पर उसे छोड देते है; (इसके विपरीत) उत्तम व्यक्ति वार वार विघ्नो के आने पर भी काम को एक वार शुरू कर देने के वाद फिर उसे नही छोडते।

वालक

✓ वालक शुद्ध और ब्रह्मरूप है। — अज्ञात

प्रत्येक वालक यह सदेश लेकर ससार में आता है कि ईश्वर अभी मनुष्यो से निराश नही हुआ है। — रवीन्द्र

✓ वालक निर्धन का धन है। — कहावत

In praising or loving a child, we love and praise not that which is, but that which we hope for.

वालक की प्रशसा या प्यार करने में हम उस वस्तु की प्रशंसा और प्यार नहीं करते जो वह है अपितु उस वस्तु की, जिसकी हम उससे आशा करते है। — गेटे

वालक देवलोक से आया है, वह छल-कपट और दुराव नही जानता। — अज्ञात

Children increase the cares of life, but mitigate the remembrance of death

वालक जीवन की चिन्ता को वढा देते हैं परन्तु मृत्यु की स्मृति को कम कर देते हैं। —कहावत

वालक वे चमकते हुए तारे हैं जो ईश्वर के हाथ से छूटकर धरती पर गिर पड़े हैं। —अज्ञात

जीवन की महत्वाकाक्षाएँ वालको के रूप में आती हैं। —रवीन्द्र

वालक राष्ट्र की मुस्कुराहट है। —चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

सत्य, अहिंसा का पाठ मैंने वालक से सीखा है। —महात्मा गाधी

यदि स्वर्ग मे पहुँचने की इच्छा है तो पहले वालक वनो। —ईसा

राजनीतिक सम्मेलनो से हमारी उलझने कभी न सुलझेंगी। यदि इन गुत्थियो को सुलझाना है तो इसके लिए हमें वालक की शरण लेनी होगी। —प्रेसीडेन्ट रुजवेल्ट

बच्चे देश के दर्पण हैं। —अज्ञात

वालक भगवान के जीते-जागते खिलौने हैं। वालको मे भगवान् का दर्शन जितनी जल्दी हो सकता है, उतना शायद ही किसी मे हो। —हरिभाऊ उपाध्याय

वालक प्रकृति की अनमोल देन है, सुन्दरतम कृति है, सबसे निर्दोष वस्तु है। वालक मनोविज्ञान का मूल है, शिक्षक की प्रयोगशाला है। वालक मानव-जगत् का निर्माता है। वालक के विकास पर दुनियाँ का विकास निर्भर है। वालक की सेवा ही विश्व की सेवा है। —अज्ञात

बच्चे राष्ट्र की आत्मा हैं, क्योंकि यही हैं जिनको लेकर राष्ट्र पल्लवित हो सकता है, यही हैं जिनमें अतीत सोया हुआ है, वर्तमान करवटें ले रहा है और भविष्य के अदृश्य बीज बोये जा रहे हैं। —अज्ञात

क्या तुम जानते हो कि वालक होना क्या है? इससे तात्पर्य है प्रेम मे विश्वास करना, सौन्दर्य में विश्वास करना तथा विश्वास मे विश्वास करना।

—फ्रान्सिस टामसन

The child is father of the man

वालक मानव का जनक है। —वर्ड्सवर्थ

वालको की कर्त्तव्यशीलता ही सब गुणो की नींव है। —सिसरो

वालक और मूर्ख सत्य वोलते हैं। —कहावत

बालविधवा

वालविधवाओ का अस्तित्व हिन्दू धर्म के ऊपर एक कलक है। —महात्मा गांधी

The child widow is the unique product of the Indian soil unknown in other parts of the world.

वालविधवा भारत की अनोखी उपज है जिससे ससार के अन्य भाग अपरिचित हैं। —अज्ञात

बिगड़ी बात

विगरी वात वनै नही, लाख करो किन कोय।
रहिमन विगरे दूव को, मथे न माखन होय॥ —रहीम

सुधरी विगरै वेगि ही, विगरी फिर सुधरै न।
दूध फटै कॉंजी परे, सो फिर दूध वनै न॥ —अज्ञात

बिन्दी

भाल लाल विंदी दिये, छुटे वार छवि देत।
गह्यो राहु अति आहु करि, मनु ससि सूर समेत॥ —विहारी

भाल लाल विंदी ललन, आखत रहे विराज।
इन्दुकला कुज में वसी, मनो राहु-भय भाजि॥ —विहारी

सवै कहें विन्दी दिये, आँक दसगुनो होत।
तिय ललाट वेंदी दिये, अगनित वढ़त उदोत॥ —विहारी

बीमारी (दे० 'रोग')

वीमारी प्रकृति के साथ किये हुए अत्याचार का प्रतिकार है। —होसिया वेलू

कठिन वीमारी के लिए तीव्र चिकित्सा की आवश्यकता है। —कहावत

जो आदमी दुनिया में वीमार वनकर आया है उसकी मौत कभी शानदार नहीं हो सकती। उसकी मौत पर दुनिया आराम की साँस लेगी और शाति की नीद सोयेगी। कहेगी, चलो अच्छा हुआ, वीमारी टल गयी। —अज्ञात

बुजदिली

घर की मोहब्बत बुजदिली का दूसरा नाम है। —अज्ञात

Cowardice is not synonymous with prudence It often happens that the better part of discretion is valour

बुजदिली दूरदर्शिता का पर्यायवाची नही है। प्राय ऐसा होता है कि बहादुरी विवेक का उत्तम भाग है। —हैजलिट

बुढापा

बुढापा तृष्णारोग का अन्तिम समय है, जब सम्पूर्ण इच्छाएँ एक ही केन्द्र पर आ लगती है। —प्रेमचन्द

मनुष्य की उम्र चाहे कम ही क्यो न हो पर यौवन के विचार यदि उसके मन से निकल गये हैं, उसका उत्साह ढीला पड गया है, उसका कार्यबल कमजोर हो गया है, तो उसे बूढा ही समझना चाहिए। —स्वेट मार्डेन

Old age is a tyrant who forbids, at the penalty of life, all the pleasures of youth

बूढापा जुल्मी है जो मृत्यु का भय दिखाकर यौवन के समस्त उल्लासो का निषेध कर देता है। —रोशेफो

आदौ चित्ते पुनः काये सता सम्पद्यते जरा।
असतान्तु पुनः काये नैव चित्ते कदाचन॥ —पचतत्र

सत्पुरुषो को पहले चित्त में और बाद मे शरीर मे बुढापा आता है। असत्पुरुषो को शरीर मे ही बुढापा आता है, चित्त मे कभी नही।

नयी चीज सीखने की जिसने आशा छोड दी वह बूढा है। —विनोबा

मनुष्य तब तक बूढा नही होता जब तक उसके जीवन मे मधुरता और उत्साह बना रहता है, जब तक उसके हृदय में महत्त्वाकाक्षा बनी रहती है, तब तक उसके मन मे कार्यशक्ति का प्रवाह बहता रहता है।

—स्वेट मार्डेन

बुढापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है। —प्रेमचन्द

वुढ़ापा-जवानी

वुढापा वरफ से भी ठडा है, जवानी अंगारे से भी गरम। वुढापा अक्लमंद और समझदार है। जवानी दीवानी और नातजुर्वेकार है। वुढापा देखता है और सोचता है, जवानी देखती है और वेचैन हो जाती है। —अज्ञात

वुद्धि (दे० 'ज्ञान', 'प्रज्ञा', 'विवेक')

मनुष्य के पास वुद्धि और वल से वढकर श्रेष्ठ कोई दूसरी चीज नही।
—वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

वुद्धि आत्मा के इस प्रकार अवीन है जिस प्रकार कोई भोला पुरुप किसी चालाक स्त्री के वश में हो। —सादी (गुलिस्तां)

जिसको वुद्धि नही है उसको विना सीग का पशु समझना चाहिए। —प्रेमचन्द

'वुद्धिर्यस्य वलं तस्य' —पंचतंत्र

जिमको वुद्धि है, वही वलवान् है।

अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता।
सर्वार्थान्विपरीताञ्च वुद्धि सा पार्थ तामसी॥ —श्रीकृष्ण (गीता)

जो वुद्धि धर्म को अवर्म मानकर सव वातो में विपरीत निर्णय करती है उसको तामसी वुद्धि (दुर्वुद्धि) कहते हैं।

ईश्वर ने वुद्धि की कोई सीमा निश्चित नही की। —वेकन

वुद्धि की स्थिरता के विना कोई भी आदर्श पूरा नही होता। —विनोवा

वुद्धि-विकास के लिए सच्चा क्षेत्र गाँव ही है, शहर नही। —महात्मा गांवी

यस्य नास्ति स्वय प्रज्ञा शास्त्र तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्या विहीनस्य दर्पण. किं करिष्यति॥ —चाणक्य

जिमको वुद्धि नही है उसको शास्त्र से क्या लाभ? जैसे नेत्रहीन मनुष्य के लिए दर्पण वेकार है।

केवल वुद्धि के द्वारा ही मनुष्य का मनुष्यत्व प्रकट होता है। —प्रेमचन्द

वुद्धि के सिवा विचार-प्रचार का दूसरा कोई शस्त्र नही है, क्योकि अन्याय को ज्ञान ही मिटा सकता है। —स्वामी शंकराचार्य

बुद्धि माया की माँ है, जहाँ जाती है बेटी को साथ ले जाती है। —अज्ञात

जिस मनुष्य की बुद्धि का विकास नहीं होता अथवा जो बुद्धिद्रोही या अविवेकी होता है वह मनुष्यता से गिर जाता है। —कौटिल्य

यया धर्ममधर्म च कार्य चाकार्यमेव च।
अयथावत् प्रजानाति बुद्धि सा पार्थ राजसी॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

धर्म-अधर्म, कार्य-अकार्य का ठीक ठीक निर्णय जो बुद्धि न कर सके उसको राजसी कहते हैं।

बुद्धितत्त्व दैवी विभूतियों में एक उच्च कोटि का वरदान है। इसका उपयोग अधिक से अधिक ईमानदारी से होना चाहिए। —अज्ञात

बुद्धि की शुद्धि के लिए भगवान् की भक्ति से बढ़कर कोई भी साधन आज तक अनुभव में नहीं आया। —विनोबा

बुद्धिश्रेष्ठानि कर्माणि बाहुमध्यानि भारत।
तानि जङ्घाजघन्यानि भारप्रत्यवराणि च॥

—वेदव्यास (महाभारत)

बुद्धि से विचार कर किये जानेवाले कार्य श्रेष्ठ होते हैं, केवल बाहुबल के सहारे होनेवाले मध्यम श्रेणी के। विचार और उत्साहरहित केवल पैरों के भरोसे होनेवाले कार्य निकृष्ट होते हैं जो केवल भाररूप हैं।

प्रवृत्ति च निवृत्ति च कार्याकार्ये भयाभये।
बन्ध मोक्ष च या वेत्ति बुद्धि सा पार्थ सात्त्विकी॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

प्रवृत्ति निवृत्ति, कार्य अकार्य, भय अभय तथा बन्ध मोक्ष का भेद जो बुद्धि उचित रीति से जानती है, वह सात्त्विक है।

(दे० "ज्ञान", "प्रज्ञा", "विवेक")

बुद्धिमान्

बुद्धिमान् विवेक से, साधारण मनुष्य अनुभव से, अज्ञानी आवश्यकता से और पशु स्वभाव से सीखते हैं। —सिसरो

आरभन्तेऽल्पमेवाज्ञा काम व्यग्रा भवन्ति च।
महारम्भा कृतधियस्तिष्ठन्ति च निराकुला.॥ —माघ

मूर्ख लोग छोटा-सा कार्य आरम्भ करते हैं और उसी में अत्यन्त व्याकुल हो जाते हैं, वुद्धिमान लोग वड़े से वडा कार्य आरम्भ करते है और निश्चिन्त वने रहते है। (अर्थात् सफलता प्राप्त कर ही लेते हैं।)

वुद्धेर्वुद्धिमता लोके नास्त्यगम्य हि किंचन।
वुद्ध्या यतो हता नन्दाश्चाणक्येनासिपाणय ॥ —पंचतंत्र

वुद्धिमानो की वुद्धि के सम्मुख ससार में कुछ भी असाध्य नही है। वुद्धि से ही शस्त्रहीन चाणक्य ने सशस्त्र नदवश का नाश कर डाला।

वुध नहिं करहिं अवम कर सगा॥ —तुलसी (मानस-उत्तर)

वुद्धिमान् के पास थोडा-सा वन हो तो वह भी वढता रहता है। वह दक्षतापूर्वक काम करते हुए सयम के द्वारा सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है।

—वेदव्यास (महाभारत)

दीर्वौ वुद्धिमतो वाहू याभ्यां दूरे हिनस्ति स । —पंचतंत्र

वुद्धिमान् की भुजाएँ वडी लम्वी होती है, जिनसे वह दूर तक वार करता है।

A wise man's day is worth a fool's life.

वुद्धिमान् मनुष्य का एक दिन मूर्ख के जीवन भर के वरावर होता है। —कहावत

खाली पेट कोई भी आदमी वुद्धिमान् नही हो सकता। —जार्ज इलियट

The intellect of the wise is like glass; it admits the light of heaven and reflects it.

वुद्धिमान की वुद्धि दर्पण के सदृश है। वह स्वर्ग का प्रकाश लेकर उसे परावर्तित कर देती है। —हेयर

इह तुरगशतै प्रयान्ति मूढा धनरहितास्तु वुधा प्रयान्ति पदभ्याम्।
गिरिशिखरगतापि काकपक्ति. पुलिनगतैर्न समत्वमेति हसै.॥

सैकडो घोड़ो पर चलनेवाले मूर्ख लोग पैदल चलनेवाले धनरहित वुद्धिमानो की वरावरी नही कर सकते, क्योकि पर्वत के शिखर पर निवास करनेवाले कौए नदी के तट पर विहार करनेवाले हसो की वरावरी नही कर सकते। —अज्ञात

वुद्धिमान् अपना विचार वदल देते हैं, मूर्ख कभी नही वदलते। —कहावत

Wise men learn by other men's mistakes, fools by their own.
बुद्धिमान् दूसरो की त्रुटियो से शिक्षा लेते हैं, मूर्ख अपनी त्रुटियो से। —कहावत

बुद्धिमत्ता

अच्छी तरह सोचना बुद्धिमत्ता है, अच्छी योजना बनाना उत्तम है और अच्छी तरह काम को पूरा करना सब से अच्छी बुद्धिमत्ता है। —फारसी कहावत

बुराई

इस विश्व मे बुराई भी अपना अस्तित्व चाहती है। —जयशंकर प्रसाद

जब तक मनुष्य रहेंगे तब तक बुराई रहेगी। —हेमीटन

One sin doth provoke another
एक बुराई दूसरी बुराई को जन्म देती है। —शेक्सपियर

Let thy vices die before thee
अपनी बुराई को अपने पहले ही मर जाने दो। —फ्रेंकलिन

The evil that men do lives after them, the good is oft interred with their bones
मनुष्य की बुराइयाँ उनके मरने के पीछे तक जीवित रहती हैं। भलाइयों को तो लोग मरते ही भूल जाते हैं। —शेक्सपियर

बुराई आदमी को पहले अज्ञानी व्यक्ति के समान मिलती है और हाथ बाँधकर नौकर की तरह उसके सामने खड़ी हो जाती है। फिर मित्र बन जाती है और निकट आ जाती है, फिर मालिक बनती है और आदमी के सिर पर सवार हो जाती है एव उसको सदा के लिए अपना दास बना लेती है। —[illegible]

बुराई के बीज चाहे गुप्त से गुप्त स्थान मे बोओ, वह स्थान [illegible] चाहे सुरक्षित ही क्यो न हो, पर प्रकृति के अत्यन्त कठोर, निर्दय, और [illegible] कानून के अनुसार तुम्हें ब्याजसहित कर्मों का मूल्य चुकाना होगा। —स्वामी रामतीर्थ

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न दीखा कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझ सा बुरा न कोय॥ —कबीर

Vice lives and thrives best by concealment
बुराइयाँ गुप्त रहकर जीवित रहती हैं और अच्छी तरह [illegible]। —[illegible]

वुरी वातो को भूल जाना चाहिए, वुरी वातो को ही देखते रहेंगे तो इन्सान हैवान वन जायगा। —विनोबा

वेईमानी

वेईमानी का प्रत्येक व्यवहार डडी मारने से कम नही है। —रस्किन

वेवकूफ

जो अपने को वुद्धिमान समझता है वह वड़ा वेवकूफ है। —वाल्टेयर

Fools rush in where angels fear to tread.

जहाँ देवता भी पैर रखते हुए भय खाते हैं वहा वेवकूफ झपट पड़ते हैं। —पोप

A learned fool is more foolish than an ignorant fool.

शिक्षित मूर्ख, अशिक्षित की अपेक्षा अधिक वेवकूफ होता है। —मोलियर

दुनिया में वेवकूफो की कमी नही गालिव, एक ढूँढो हजार मिलते हैं। —गालिव

A fool always finds some greater fool to admire him.

वेवकूफ को उससे वड़ा वेवकूफ उसकी प्रशंसा करनेवाला मिल जाता है। —वाइलो

वैर

वैर के कारण उत्पन्न होनेवाली आग एक पक्ष को स्वाहा किये विना कभी शान्त नही होती। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

जव किसी से वैर वँध जाय तो उसकी चिकनी चुपडी वातो में आकर विश्वास नही करना चाहिए। ऐसा करने से वैर दूर नही होता वल्कि विश्वास करनेवाला ही मारा जाता है। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

जैसे मिट्टी का घड़ा एक वार फूट जाने पर फिर नही जुड़ता वैसे ही जव किसी कुल में दुखदायी वैर वँध जाता है तो वह शान्त नही होता। उसे याद दिलानेवाले वने ही रहते हैं, इसलिए जव तक कुल मे एक भी व्यक्ति वना रहता है खुन्स नही मिटती। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

वैर का अन्त वैरी के जीवन के साथ हो जाता है। —प्रेमचन्द

ब्रह्म (दे० "ईश्वर", "परमेश्वर")

सत्य ज्ञानमनन्त ब्रह्म। —तैत्तिरीय उपनिषद्

ब्रह्म सत्यस्वरूप, ज्ञानस्वरूप एव अनत है।

ब्रह्मैवेदं सर्वम्। ब्रह्म ही यह सब है। —नृसिंह ता० उपनिषद्

आकाशो वै नाम नामरूपयोर्निर्वहिता ते यदन्तरा तद् ब्रह्म।

—छान्दोग्य उपनिषद्

निश्चयपूर्वक आकाश ही नाम और रूप का निर्वाह करनेवाला अर्थात् उनका आधार है, वे दोनो जिनके भीतर हैं, वह ब्रह्म है।

क ब्रह्म ख ब्रह्म। सुख ब्रह्म है, आकाश ब्रह्म है। —छान्दोग्य उपनिषद्

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व। —तैत्तिरीय उपनिषद्

जिनसे ये सम्पूर्ण प्राणी जन्म लेते, जन्म लेकर जिससे जीवन धारण करते तथा प्रलय के समय जिसमे पूर्णतः प्रवेश कर जाते हैं वह ब्रह्म है, उसको जानने की इच्छा करो।

जिसका मन के द्वारा मनन नहीं होता, किन्तु जिसकी शक्ति से ही मन मनन व्यापार में सफल होता है, उसी को तुम ब्रह्म जानो। —केनोपनिषद्

ब्रह्म ही सत्य है, वह एक, अद्वय, अपरिणामी, चिद्घन है। ब्रह्म ही ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय है। —सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)

यह सब कुछ अमृतमय ब्रह्म ही है। आगे ब्रह्म है, पीछे ब्रह्म है तथा दायें और बायें भी ब्रह्म है। —मुण्डकोपनिषद्

यथा सुदीप्तात् पावकाद् विस्फुलिङ्गा सहस्रशः प्रभवन्ते सरूपाः।
तथाक्षराद् विविधा सोम्य भावा प्रजायन्ते तत्र चैवापि यन्ति॥

—मुण्डकोपनिषद्

जैसे जलती हुई आग से उसी के समान रूपवाली सहस्रों चिनगारियाँ निकलती हैं उसी प्रकार अविनाशी ब्रह्म से नाना प्रकार के भाव (जीव) उत्पन्न होते और उसी में लीन होते रहते हैं।

यह सारी प्रजा सत्‌रूपी कारण से उत्पन्न हुई है, सत् में ही निवास करती है और अन्त में भी सत् में ही प्रतिष्ठित होती है। —छान्दोग्य उपनिषद्

जिसका नेत्रों द्वारा दर्शन तथा हाथों द्वारा ग्रहण नहीं हो सकता, [illegible] कोई [illegible] नहीं है जो आँख-कान और हाथ-पैर आदि से रहित है, [illegible] सूक्ष्म एवं अविनाशी ब्रह्म को धीर पुरुष ही [illegible]। —मुण्डकोपनिषद्

जैसे मकड़ी अपने शरीर से ही जाले को बनाती और पुन: उसे निगल लेती है, जैसे पृथ्वी से अन्न आदि औषधियाँ उत्पन्न होती हैं, जैसे जीवित पुरुष से ही केश लोम आदि उत्पन्न होते हैं, उसी प्रकार अक्षर ब्रह्म से ही सम्पूर्ण जगत् प्रकट होता है।

—मुण्डकोपनिषद्

हवन की सामग्री भी ब्रह्म है, घी भी ब्रह्म है, अग्नि भी ब्रह्म है, हवन करने वाला भी ब्रह्म है। इस प्रकार जो कर्म के साथ ब्रह्म का मेल साध लेता है वह ब्रह्म को ही पाता है। —गीता

ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचर्य अर्थात् ब्रह्म की, सत्य की, शोध में चर्या, अर्थात् तत्सम्बन्धी आचार।

—महात्मा गांधी

यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति। —भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

परमात्मा की प्राप्ति के इच्छुक ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं।

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत। —अथर्ववेद

ब्रह्मचर्यरूपी तपोबल से ही विद्वान् लोगो ने मृत्यु को जीता है।

ऊँचा आदर्श सामने रखना और उसके लिए संयमी जीवन का आचरण; यही ब्रह्मचर्य है। —विनोबा

मन, वाणी और शरीर से सम्पूर्ण संयम में रहने का नाम ही ब्रह्मचर्य है।

—स्वामी महावीर

ब्रह्मचर्य का अर्थ है मन, वचन और काया से समस्त इन्द्रियों का संयम
जब तक अपने विचारो पर इतना कब्जा न हो जाय कि अपनी इच्छा के बिना एक भी विचार न आये तब तक वह सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य नही। —महात्मा गांधी

विषय-मात्र का निरोध ही ब्रह्मचर्य है। —महात्मा गांधी

ब्रह्मचारी

ब्रह्मचारी रहने का यह अर्थ नहीं कि मैं किसी स्त्री को स्पर्श न करूँ, अपनी बहिन का स्पर्श न करूँ। ब्रह्मचारी होने का यह अर्थ है कि स्त्री का स्पर्श करने से किसी प्रकार का विकार न उत्पन्न हो, जिस तरह कि कागज को स्पर्श करने से नहीं होता।

—महात्मा गांधी

ब्रह्मचारी को कभी दुःख नही प्राप्त होता, उनको सब कुछ प्राप्य है।

—भीष्म पितामह

ब्रह्मचारी स्वाभाविक सन्यासी होता है। —महात्मा गांधी

ब्रह्मज्ञान

ब्रह्म-ज्ञान मूक ज्ञान है, स्वयं प्रकाश है। सूर्य को अपना प्रकाश मुँह से नहीं बताना पड़ता। वह है, यह हमें दिखाई देता है। यही बात ब्रह्मज्ञान के बारे में भी है।

—महात्मा गाधी

आतम अनुभव ज्ञान की, जो कोइ पूछै बात।
सो गूँगा गुड़ खाइ के, कहै कौन मुख स्वाद॥ —कबीर

ब्रह्मज्ञान प्राप्त हो जाने पर मनुष्य शीघ्र ही परमानन्द का अधिकारी होता है।

—भगवान् श्रीकृष्ण

ब्राह्मण

सम्मानाद् ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेत विषादिव।
अमृतस्येव चाकाङ्क्षेदवमानस्य सर्वदा॥ —भगवान् मनु

ब्राह्मण को चाहिए कि सम्मान से विष के समान बचे और अपमान की अमृत के समान इच्छा करे।

ब्राह्मण के माने हैं ब्रह्म की साक्षात् प्रतिमा। —विनोबा

जो जाति विश्व के मस्तिष्क का शासन करने का अधिकार लिये उत्पन्न हुई है वह कभी चरणो के नीचे न बैठेगी। —जयशंकर प्रसाद

सच्चा ब्राह्मण वही है जो कभी किसी का अनुपकार नहीं करता, झूठ नहीं बोलता, गर्व नही करता। —अज्ञात

भक्त

जिनका मैं ही एकमात्र परम आश्रय हूँ, उन साधुस्वभाव भक्तों को छोड़कर मैं तो न अपने आपको चाहता हूँ और न अपनी हृदयङ्गमा अविनाशिनी लक्ष्मी को।

—भगवान् विष्णु (श्रीमद्भागवत)

जिसके मन में कभी क्रोध नही होता और जिसके हृदय में रात-दिन राम बसते हैं वह भक्त भगवान् के समान ही है। —रैदास

राम तें अधिक राम कर दासा। —तुलसी

सच्चे ईश्वरभक्त की भक्ति किसी भी लोक परलोक की कामना के लिए नही होती, वह तो अहैतुकी हुआ करती है। —रबिया

जहाँ भगवान् है और जहाँ भक्त है वहाँ सब कुछ है, लेकिन भगवान् को तो हमने देखा नही, भक्त को हम देख सकते है इसलिए हमारी निगाह में भक्त की महिमा बढ़ जाती है। —विनोबा

अनपेक्ष. शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथ.।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्त. स मे प्रिय.॥ —गीता

जो इच्छारहित है, पवित्र है, दक्ष (सावधान) है, तटस्थ है, चिन्तारहित है, संकल्प-मात्र का जिसने त्याग किया है ऐसा जो मेरा भक्त है वह मुझे प्रिय है।

जल ज्यो प्यारा माछरी, लोभी प्यारा दाम।
माता प्यारा बालका, भक्त पियारा नाम॥ —कबीर

भक्ति

ईश्वर के प्रति सम्पूर्ण अनुराग ही भक्ति है। —भक्तिदर्शन

✓ जब लग नाता जगत का, तब लग भक्ति न होय।
नाता तोड़ै हरि भजै, भक्त कहावै सोय॥ —कबीर

मानव-मात्र को एक करने के लिए भगवान् की भक्ति से बढकर कोई साधन नही। —विनोबा

✓ कामी क्रोधी लालची, इनतें भक्ति न होय।
भक्ति करै कोई सूरमा, जाति बरन कुल खोय॥ —कबीर

अधिकार के कारण जो श्रद्धा-भक्ति होती है वह सच्ची श्रद्धा-भक्ति नहीं है। —एमर्सन

जैसे समुद्र में आकर सारी नदियाँ एक हो जाती है, सब काष्ठ अग्नि में जलकर एक हो जाते हैं, वैसे ही सब हृदय भगवान् की भक्ति मे विलीन होकर एकरूप हो जाते हैं। —विनोबा

परमात्मा की भक्ति के सिवा कोई दूसरी पावन वस्तु नही जो हृदयो को धो सकती है और सबको एक बना सकती है। —विनोबा

भजन

भजन का फल अनत है, महान् है, उसे वाणी द्वारा व्यक्त नही किया जा सकता।
—वेदव्यास (महाभारत)

भय (दे० "डर")

भय ही पतन और पाप का निश्चित कारण है। —स्वामी विवेकानन्द

मनुष्य का भय और आशा खरगोश के सींग के समान हैं। —अज्ञात

भय ते भक्ति सबै करैं, भय ते पूजा होय।
भय पारस है जीव को, निर्भय होय न कोय॥ —कबीर

यथा फलाना पक्वाना नान्यत्र पतनाद् भयम्।
एवं नरस्य जातस्य नान्यत्र मरणाद् भयम्॥ —वाल्मीकि

जैसे पके हुए फलो को गिरने के अतिरिक्त दूसरा कोई भय नही है, उसी प्रकार पैदा हुए मनुष्य को मृत्यु के सिवा अन्यत्र भय नही है।

भय बिनु भाव न ऊपजै, भय बिनु होय न प्रीति।
जब हिरदे तें भय गया, मिटी सकल रस रीति॥ —कबीर

भय से ही दुःख आते है, भय से ही मृत्यु होती है और भय से ही बुराइयां उत्पन्न होती हैं। —स्वामी विवेकानन्द

Fear is the tax that conscience pays to guilt
भय वह कर है जिसे अन्तःकरण अपराध को देता है। —सिवेल

भोगे रोगभय कुले च्युतिभय वित्ते नृपालाद् भय
माने दैन्यभय बले रिपुभय रूपे जराया भयम्।
शास्त्रे वादभय गुणे खलभय काये कृतान्ताद् भय
सर्व वस्तु भयावह भुवि नृणा वैराग्यमेवाभयम्॥ —भर्तृहरि

भोगों में रोग का भय है, ऊँचे कुल मे पतन का भय है, धन में राजा का, मान में दीनता का, बल मे शत्रु का तथा रूप मे वृद्धावस्था का भय है और शास्त्र में वाद-

विवाद का, गुण में दुष्ट जनो का तथा शरीर में काल का भय है। इस प्रकार संसार में मनुष्यो के लिए सभी वस्तुएँ भयपूर्ण हैं, भय से रहित तो केवल वैराग्य ही है।

जिस मनुष्य को अपने मनुष्यत्व का भान है वह ईश्वर के सिवा और किसी से भय नहीं करता। —महात्मा गांधी

मूर्ख मनुष्य भय से पहले ही डर जाता है, कायर भय के समय ही डरता है और साहसी भय के बाद डरता है। —रिशर

सचिव, वैद, गुरु तीनि जो, प्रिय बोलहिं भय आस।
राज, धर्म, तन तीनि कर, होइ बेगि ही नास॥

—तुलसी (मानस-सुन्दर)

Fear is more painful to cowardice than death to true courage.

सच्ची वीरता को मृत्यु से जितना कष्ट नही होता उससे कही अधिक कष्ट बुजदिली को भय से होता है। —सर पी० सिडनी

भय से उत्पन्न दुर्वृत्तियाँ सब प्रकार के पुरुषार्थ को नष्ट कर देती हैं। —अज्ञात

Fear is the mother of foresight

भय दूरदर्शिता की जननी है। —एच० टेलर

जीवन में होकर, शून्य ध्यान द्वारा, परमात्मा की साधना करो, मौत का भय छूट जायगा। —अज्ञात

भीतवत्संविधातव्यं यावद् भयमनागतम्।
आगतं तु भयं दृष्ट्वा प्रहर्तव्यमभीतवत्॥

जब तक भय का कारण आ न पहुँचे तब तक उससे डरते रहकर बचने का उपाय करते रहना चाहिए; किन्तु जब वह सिर पर आ ही पहुँचे तो उसे निडर होकर मार भगाना चाहिए।

भलाई

He that does good to another, does also good to himself; not only in the consequence, but in the very act of doing it; for the consciousness of well doing is an ample reward.

जो दूसरो की भलाई करता है वह अपनी भलाई स्वयं कर लेता है। परिणाम में नही वरन् कर्म करने मे ही, क्योंकि अच्छा कर्म करने का भाव ही अच्छा इनाम है।

—सेनेका

निकोई बा बदा करदन चुनानस्त।
कि बद करदन बजाए नेक मरदा॥ —सादी

दुर्जनो के साथ भलाई करना सज्जनो के साथ बुराई करने के समान है।

He who loves goodness harbors angels, reveres reverence, and lives with god

जो भलाई मे प्रेम करता है वह देवताओ की पूजा करता है, आदरणीयो का सम्मान करता है और ईश्वर के समीप रहता है। —एमर्सन

भलाई का मार्ग भय से पूर्ण है, परन्तु परिणाम अत्युत्तम है। —अज्ञात

In nothing do man approach so nearly to the gods as in doing good to men

मानव की भलाई करने के अतिरिक्त और अन्य किसी कर्म द्वारा मनुष्य ईश्वर के इतने निकट नही पहुँच सकता। —सिसरो

जैसे एक छोटे दीपक का प्रकाश बहुत दूर तक फैलता है, उसी प्रकार इस बुरे संसार में भलाई बहुत दूर तक चमकती है। —शेक्सपियर

जो भलाई करने में अति लीन है, उनको भला होने का समय नही मिलता।
—रवीन्द्र

To be doing good is man's most glorious task.

भलाई करना मानव का सबसे शानदार कर्तव्य है। —सफोक्लीज

जो तोको कांटा बुवै, ताहि बोव तू फूल।
तोहि फूल को फूल है, वाको है तिरसूल॥ —कबीर

पुष्प की सुगन्ध वायु के विपरीत कभी नही जाती परन्तु मानव के सद्गुण की महक सब तरफ फैल जाती है। —अज्ञात

Good, the more communicated, more abundant grows

भलाई जितनी अधिक की जाती है उतनी ही अधिक फैलती है। —मिल्टन

भलाई रह जाती है, इसके अतिरिक्त सब वस्तुएँ नष्ट हो जाती है।—पराशर

भलाई बुराई का अभाव नहीं वरन् उस पर विजय है।
—सर अर्नॉल्ड दोनें

भवितव्यता

तुलसी जस भवितव्यता, तैसी मिलै सहाय।
आपु न आवै ताहि पै, ताहि तहाँ लै जाय॥ —तुलसी

भविष्य

Trust no future however pleasant;
Let the dead past bury its dead.

भविष्य कैसा ही सुखमय हो उस पर विश्वास न करो और भूतकाल की वीती वातो को भूल जाओ। —लांगफेलो

Age and sorrow have the gift of reading the future by the past
भूतकाल के ज्ञान और कष्ट के आधार पर भविष्य जाना जा सकता है।
—फरार

भाग्य ("दे० तकदीर")

मनुष्य अपने भाग्य का स्वय ही विधाता है। —स्वामी रामतीर्थ

भाग्य फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम्।
समुद्रमथनाल्लेभे हरिर्लक्ष्मी हरो विषम्॥ —अज्ञात

भाग्य ही सर्वत्र फलता है, विद्या और पौरुष नहीं। तभी तो समुद्र का मन्थन होने पर विष्णु ने लक्ष्मी को प्राप्त किया और शकर ने विष को।

The wheel of fortune turns round incessantly and who can say to himself; I shall to-day be uppermost.

भाग्यचक्र निरन्तर घूमा करता है, कौन कह सकता है कि आज मैं उच्च शिखर पर पहुँच जाऊँगा। —कन्फ्यूशियस

भाग्य वालू के कण को सूर्य और बूँद को नदी वना देता है। —अज्ञात

भाग्य विगड़ने पर सगे भी पराये हो जाते हैं। अन्धकार में छाया भी साथ छोड़ देती है। —अज्ञात

भाग्य साहसी मनुष्य की सहायता करता है। —वर्जिल

We make our fortune, and call that fate
हम अपना ऐश्वर्य स्वय वनाते है और उसको भाग्य कहते है। —डिजरायली

सहस वार डुबकी दई, मुक्ता लगी न हाथ।
सागर को क्या दोष है, बुरे हमारे भाग॥ —अज्ञात

Fortune makes him fool, whom she makes her darling.
किस्मत जिसे दुलार करती है उसे मूर्ख बना देती है। —बेकन

Human life is more governed by fortune than by reason
मानवजीवन बुद्धि की अपेक्षा भाग्य से अधिक शासित होता है। —ह्यूम

दाता के द्वार पर सभी भिक्षुक जाते हैं, अपना अपना भाग्य है, किसी को एक चुटकी मिलती है किसी को पूरा थाल। —प्रेमचन्द

भाग्य पर नहीं चरित्र पर निर्भर रहो। —प्यूब्लियस साइरस

भाग्य के भरोसे बैठे रहने पर भाग्य सोया रहता है और हिम्मत बांधकर खड़े होने पर भाग्य भी उठ खड़ा होता है। —अज्ञात

पत्रं नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम्
नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम्।
वर्षा नैव पतन्ति चातकमुखे मेघस्य किं दूषणम्
यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः॥ —भर्तृहरि

करील वृक्ष में यदि पत्ते नहीं है तो वसन्त का क्या दोष ? उल्लू यदि दिन में नहीं देख पाता तो सूर्य का क्या दोष ? वर्षा का जल यदि पपीहा के मुख में नहीं पड़ता तो मेघ का क्या दोष ? विधाता ने जो पहले ही भाग्य में लिख दिया है उसे कौन मिटा सकता है ?

सीमन्तिनी यस्य गृहेऽन्नपूर्णा त्रिलोकरक्षा कुरुतेऽन्नदानैः।
भिक्षाचरः सोऽपि कपालपाणिर्ललाटलेखो न पुनः प्रयाति॥ —अज्ञात

जिनके घर में गृहिणी अन्नपूर्णा है जो कि अन्न दान से तीनो लोकों की रक्षा करती है, वे शकरजी भी हाथ में कपाल लेकर भिक्षा मांगते फिरते हैं। वस्तुत भाग्य में लिखा हुआ नही मिटता।

मा धाव मा धाव विनैव दैवं भो धावन धावनमस्ति लक्ष्म्या।
चेद्धावनं साधनमस्ति लक्ष्म्याः श्वा धावमानोऽपि भवेत् लक्ष्मीवान्॥ —अज्ञात

भाग्य यदि साथ नहीं दे रहा है तो धन के लिए बहुत दौड़-धूप मचाना व्यर्थ है। भाग्य के बिना केवल दौड-धूप से ही यदि लक्ष्मी की प्राप्ति होती तो बराबर दौड़ता रहनेवाला कुत्ता भी धनी हो जाता।

कर्तव्योऽप्याश्रय. श्रेयान् फल भाग्यानुसारत.।
नीलकण्ठस्य कण्ठेऽपि वासुकिर्वायुभक्षक ॥ ——अज्ञात

महान् आश्रय लेने पर भी फल भाग्यानुसार ही मिलता है। तभी तो शकरजी के कठ में लिपटे रहने पर भी वासुकि को वायु पीकर ही जीवन-यापन करना पड़ता है।

भाग्य वेश्या ही तो है। —शेक्सपियर (हैमलेट)

It is fortune, not wisdom, that rules man's life
यह भाग्य है ज्ञान नही जो मानवजीवन पर शासन करता है। —सिसरो

भाग्य-रेखा

सम्भव है कि सूर्य पश्चिम से उदय होने लगें, सम्भव है कि पर्वत चलने लगें, संभव है कि अग्नि का गुण उष्णता से शीतलता में परिवर्तित हो जाय, सम्भव है कमल पर्वतो पर खिलने लगें, परन्तु मनुष्य के भाग्य की रेखाओ में लेश मात्र भी परिवर्तन हो जाना असम्भव है। —अज्ञात

हँसि बोले रघुवंशकुमारा। विधि का लिखा को मेटनहारा॥ —तुलसी

भाग्यवान्

वेदान्तवाक्येषु सदा रमन्तो भिक्षान्नमात्रेण च तुष्टिमन्त ।
विशोकमन्त करणे रमन्त कौपीनवन्त खलु भाग्यवन्त ॥

वस्तुत वेदान्तवाक्यो में रमनेवाले, भिक्षान्न मात्र से संतोष लाभ करनेवाले, कौपीन धारण करनेवाले, निरुद्विग्नचित्त आत्माराम संत ही भाग्यवान् है।

वह मनुष्य बडा भाग्यवान् है जिसकी कीर्ति उसकी सत्यता से अधिक प्रकाशमान नही है। —रवीन्द्र

भारतवर्ष

यदि हम संपूर्ण विश्व की खोज करे; ऐसे देश का पता लगाने के लिए जिसे प्रकृति ने सर्वसम्पन्न, शक्तिशाली और सुन्दर बनाया है, तो मैं भारतवर्ष की ओर संकेत करूँगा।

यदि मुझसे पूछा जाय कि किस आकाश के नीचे मानव-मस्तिष्क ने अपने मुख्यतम गुणो का विकास किया, जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या पर सबसे अधिक गहराई के

साथ सोच-विचार किया और उनमें से कुछ ऐसे समाचार ढूंढ निकाले, जिनकी ओर उन्हे भी ध्यान देना चाहिए जिन्हो ने प्लेटो और कान्ट का अध्ययन किया है, तो मैं भारतवर्ष की ओर सकेत करूँगा। और यदि मै अपने आपसे पूछूं कि किस साहित्य का आश्रय लेकर हम यूरोपीय, जो कि बहुत कुछ केवल यूनानियो, रोमनो और एक सेमेटिक जाति के यानी यहूदियो के विचार के साथ साथ पले हों, वह सुधारक वस्तु प्राप्त कर सकते हैं, जिसकी कि हमें अपने जीवन को अधिक पूर्ण, अधिक विस्तृत और अधिक व्यापक बनाने के लिए आवश्यकता है, न केवल इस जीवन के लिए अपितु एकदम बदले हुए और अनत जीवन के लिए, तो मैं फिर भारतवर्ष की ओर सकेत करूँगा। —मैक्समूलर

भारतवर्ष केवल हिन्दू धर्म का ही घर नही है, वरन् वह ससार की सभ्यता का आदि भडार है। —फाउंट जोन्स जेनी

ससार, रेखागणित के लिए भारत का ऋणी है, यूनान का नहीं। —डा० बोरो

अरब में ज्योतिष विद्या का विकास भारतवर्ष से हुआ। —प्रो० वेबर (इतिहासज्ञ)

भारतवर्ष ने चीन और अरब को ज्योतिष और अकगणित सिखाया। —कोलब्रुक

गोलो का आविष्कार सबसे पहले भारत में हुआ। यूरोप के [illegible] में [illegible] से बहुत पहले ही उनका प्रयोग भारत में होता था। —प्रोफेसर विल्सन

सीसे की गोलियो और बन्दूको के प्रयोग का हाल विस्तार से यजुर्वेद में मिलता है। भारत मे वैदिक काल मे ही बन्दूक और तोपो का प्रचलन हो गया था। —कर्नल [illegible] विलियम

भारतीय विज्ञान इतना विस्तृत है कि यूरोपीय विज्ञान के [illegible] [illegible] [illegible] हैं। —[illegible]

पश्चिमी ससार को जिन बातो पर अभिमान है, वे असल में भारतवर्ष से [illegible] गयी है। और तो और तरह तरह के फल-फूल, पेड़-पौधे जो इस समय यूरोप में [illegible] होते है, हिन्दुस्तान से ही लाकर वहां लगाये गये थे। [illegible], [illegible], [illegible] और इनके साथ-साथ लोहा और सोने का प्रचार भी यूरोप में भारत से [illegible] [illegible]। [illegible] इतना ही नही, ज्योतिष, वैद्यक अकगणित, चित्रकारी और कानून भी [illegible] ने ही यूरोपवालो को सिखलाया। —मि० [illegible], [illegible] ([illegible])

दर्शन, विज्ञान और सभ्यता सबधी सारी बातें यूनान ने भारत से सीखी और यहाँ (यूनान) से वे सारे ससार में फैली। अरब और यूरोप में जो ज्ञान का प्रकाश फैला वह भी भारत से ही। वर्तमान भूगोल, इतिहास और पुराने चिह्नों की खोज स्पष्टतया प्रकट करते है कि हिन्दुओ ने कला-कौशल और ज्ञान-विज्ञान का प्रचार पश्चिम के देशो में जाकर किया। —यूरोप का प्राचीन इतिहास

भारत के निवासी यहाँ (यूनान में) आकर बसे। वे बड़े बुद्धिमान्, विद्वान् और कला-कुशल थे। उन्होंने यहाँ विद्या और वैद्यक का प्रचार किया। यहाँ के निवासियो को सभ्य और अपना विश्वासपात्र बनाया।

—यूनान का प्राचीन इतिहास

जो लोग पूर्व (भारत) से आकर यूनान में बसे थे और जिन्होंने वहाँ के असभ्य निवासियो को अधीन किया था, वे कैसे थे? वे देवताओ के वशज थे, अपना निज का सोना उनके पास विपुल था। वे रेशम के कामदार ऊनी दुशाले ओढते थे, हाथीदाँत की वस्तुएँ व्यवहार में लाते थे और बहुमूल्य रत्नो के हार पहनते थे।

—प्रसिद्ध यूनानी विद्वान् एरियन

गायन्ति देवा किल गीतकानि धन्यास्तु ये भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदहेतुभूते भवन्ति भूयः पुरुषा· सुरत्वात्॥

—श्रीमद्भागवत

स्वर्ग के देवता भी यह गीत गाते है कि वे लोग धन्य है जो स्वर्ग और अपवर्ग को देनेवाली भारतभूमि में देवताओ से फिर मनुष्य होकर निवास करते है।

भारत समग्र विश्व का है और सम्पूर्ण वसुन्धरा इसके प्रेम-पाश में आबद्ध है, अनादि काल मे ज्ञान की, मानवता की, ज्योति यह विकीर्ण कर रहा है, वसुन्धरा का हार भारत किस मूर्ख को प्यारा न होगा। —जयशंकर प्रसाद

हे प्राचीन भारतभूमि! हे मानव-जाति की पालन करनेवाली! हे पूजनीया! हे पोषणदात्री! तुझे नमस्कार है। शताब्दियो से लगातार चलनेवाले पाशविक अत्याचार आज तक तुझे नष्ट नही कर सके। तेरा स्वागत है! हे श्रद्धा, प्रेम, कला और विज्ञान की जन्मदात्री! तुझे नमस्कार है। —एम० लुई जेकोलियट

ससार मे भारतवर्ष के प्रति लोगो का प्रेम और आदर उसकी बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक सम्पत्ति के कारण है। —प्रो० लुई रिनाड

अगर ससार में कोई एक देश है जहाँ जीवित मनुष्य के सभी सपनो को, उस प्राचीन काल से जगह मिली है जबसे कि मनुष्य ने अस्तित्व का सपना प्रारम्भ किया, तो वह भारत है। —रोम्यां रोलां

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें है इसकी यह गुलिस्ताँ हमारा॥
मजहब नही सिखाता आपस में बैर रखना।
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा॥
कुछ बात है जो हस्ती मिटती नही हमारी।
सदियो रहा है दुश्मन दौरे जमाँ हमारा॥ —डा० इकबाल

भारतीय संस्कृति

जब हम पूर्व की और उसमें भी शिरोमणिस्वरूप भारत की साहित्यिक एव दार्शनिक कृतियो का अवलोकन करते हैं, तब हमें ऐसे अनेक गभीर सत्यो का पता चलता है, जिनकी उन निष्कर्षो से तुलना करने पर, जहाँ पहुँचकर यूरोपीय प्रतिभा कभी-कभी रुक गयी है, हमें पूर्व के तत्त्वज्ञान के आगे घुटना टेक देना पडता है।
—विक्टर कोसिन

Even the loftiest philosophy of the Europeans appears in comparison with the abundant light of oriental idealism like a feeble promethean spark in full flood of the heavenly glory of the noonday sun—faltering and feeble and ever ready to be extinguished

पूर्वीय अध्यात्मवाद के प्रचुर प्रकाशपुज की तुलना में यूरोपवासियो का उच्चतम तत्त्वज्ञान ऐसा ही लगता है, जैसे मध्याह्न सूर्य के व्योमव्यापी प्रताप की पूर्ण प्रखरता में टिमटिमाती हुई अनलशिखा की कोई आदि किरण, जिसकी अस्थिर और निस्तेज ज्योति ऐसी हो रही हो मानो अब बुझी कि तब बुझी। —फ्रेडरिक श्लेगिल

भारतीय सस्कृति के प्रवाह का उद्गम वे चिरतन, शाश्वत और सनातन सत्य रहे हैं जिनकी अनुभूति प्रतिभासम्पन्न आर्य जाति के ऋषियो ने अपने तप के द्वारा की थी। —अज्ञात

भारतीय सस्कृति की चमक आज के ऐटम युग में भी हम गान्धीजी के व्यक्तित्व में देख सकते है। यह वही चमक है जिसने शताब्दियो पूर्व भगवान् बुद्ध के व्यक्तित्व में विकास पाकर समूचे ससार को प्रतिभासित किया था। —अज्ञात

भार्या (दे० "स्त्री", "सुभार्या")

पुरुष की सर्वोत्तम सम्पत्ति उसकी भार्या है। —वेदव्यास (शांतिपर्व)

माता यस्य गृहे नास्ति भार्या चाप्रियवादिनी ।
अरण्यं तेन गन्तव्यं यथारण्यं तथा गृहम् ॥ —पंचतंत्र

जिसके घर में माता न हो और भार्या अप्रियभाषिणी हो उसे वनवासी हो जाना चाहिए, क्योंकि उसके लिए वन और घर बराबर है।

'यत्र भार्या गृह तत्र।' जहाँ स्त्री है, वही घर है। —अज्ञात

भाव

मित्रता और शत्रुता के भाव तो बादलो के समान क्षण क्षण पर बदलते रहते है।
—वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

भावी

भवितव्याना द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र। —कालिदास

भावी को सर्वत्र द्वार खुला मिलता है।

भावना

कोई वस्तु भली या बुरी स्वय नही होती, समझने से हो जाती है।
—शेक्सपियर (हैमलेट)

जहाँ भावो का सम्बन्ध है वहाँ तर्क और न्याय से काम नही चलता।
—प्रेमचन्द

काम से ज्यादा काम के पीछे की भावना का महत्त्व होता है। जो काम शुद्ध हृदय से होता है, देखने में छोटा भले ही हो परन्तु उसका फल बड़ा ही महत्त्वपूर्ण होता है। बड़े से बड़ा काम अगर हीन आदर्श लेकर किया जाय तो उसकी कोई बडी कीमत नही हो सकती।

—राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद

भावना से कर्तव्य ऊँचा है। —अज्ञात

मन्त्रे तीर्थे द्विजे देवे दैवज्ञे भेषजे गुरौ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी॥ —पंचतंत्र

मंत्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, ज्योतिषी, औषध और गुरु में जैसी भावना होती है वैसी ही सिद्धि मिलती है।

भावना ही मनुष्य का जीवन है, भावना ही प्राकृतिक है, भावना ही सत्य है और नित्य है। भावनाओं के मामले में मनुष्य विवश है। —अज्ञात

जहाँ जैसी हमारी मानसिक भावना रहती है वहाँ परमेश्वर हमारे लिए उसी रूप में प्रकट हो जाते हैं। —विनोबा

Fancy rules over two-thirds of the universe, the past and future, while reality is confined to the present

भावना दो-तिहाई विश्व पर शासन करती है—भूत और भविष्य पर, जब कि यथार्थता वर्तमान पर सीमित है। —रिचर

भावना सौंदर्य से भी बढ़कर है। —कहावत

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी॥ — तुलसी

Fancy may kill or cure.
भावना मार भी सकती है, जिला भी सकती है। —कहावत

भाषण (दे० "तकरीर", "व्याख्यान")

भाषण शक्ति है, भाषण कायल करने के लिए, मत बदलने के लिए और बाध्य करने के लिए दो। —एमर्सन

भाषण मानव के मस्तिष्क पर शासन करने की कला है। —प्लेटो

देखना तकरीर की लज्जत कि उसने जो कहा।
मैंने यह जाना कि गोया यह भी मेरे दिल में है॥ —गालिब

भाषण चाँदी है, मौन सोना है, भाषण मानवीय एवं मौन दैविक है।
—जर्मन कहावत

भाषण मस्तिष्क का दर्पण है। —सेनेका

भाषा

✓ हमारी भाषा हमारा अपना प्रतिबिम्ब है। —महात्मा गांधी

विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा पाने की पद्धति से अपार हानि होती है।

—महात्मा गांधी

भाषा विचार की पोशाक है। —डा० जानसन

देशी भाषा का अनादर राष्ट्रीय आत्महत्या है। —महात्मा गांधी

किसी भी भाषा का शुद्ध रूप देश, काल तथा बहुमत से सीमित है। —अज्ञात

परायी भाषा के साहित्य से ही आनन्द लेने की आदत चोरी के माल से आनन्द लूटने की चोर आदत जैसी है। —महात्मा गांधी

जब भाषा का शरीर दुरुस्त, उसकी सूक्ष्मातिसूक्ष्म नाड़ियाँ तैयार हो जाती हैं, नसों में रक्त का प्रवाह और हृदय में जीवन स्पन्द पैदा हो जाता है, तब वह जीवन यौवन के पुष्प-पत्रसंकुल वसन्त में नवीन कल्पनाएँ करता हुआ नयी-नयी सृष्टि करता है।

—निराला

माँ के दूध के साथ जो संस्कार मिलते हैं और जो मीठे शब्द सुनाई देते हैं, उनके और पाठशाला के बीच जो मेल होना चाहिए वह विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा लेने से टूट जाता है। जिसे तोड़ने का हेतु पवित्र हो तो भी वे जनता के दुश्मन हैं।

—महात्मा गांधी

जिस भाषा में बहादुरी, सचाई, दया वगैरह के लक्षण नहीं होते, उस भाषा के बोलनेवाले बहादुर, सच्चे और दयावान् नहीं होते। —महात्मा गांधी

Language is a city to the building of which every human being brought a stone.

भाषा एक नगर है जिसके निर्माण में प्रत्येक मानव एक पत्थर लाया है।

—एमर्सन

भाषा मनुष्य की बुद्धि के सहारे चलती है, इसलिए जब किसी विषय तक बुद्धि नहीं पहुँचती, तब भाषा अधूरी होती है। —महात्मा गांधी

भिक्षा (दे० "माँगना")

माँगन मरन समान है, मति कोई माँगो भीख।
माँगन से मरना भला, यह सतगुरु की सीख॥ —कबीर

तगड़े और तन्दुरुस्त आदमी को भीख देना, दान करना, अन्याय है। कर्महीन मनुष्य भिक्षा के दान का अधिकारी नहीं हो सकता। —विनोबा

भिखारी

भिक्षुक को दुत्कारा जा सकता है, द्वार पर आने से रोका नहीं जा सकता।

—प्रेमचन्द

आप भिखारियों को नहीं चाहते, परमात्मा भी भिखारियों को नहीं चाहता। परमात्मा तो सच्चे सेवकों का प्रेमी है। —रस्किन (विजयपथ)

माँगने पर भिक्षुक को देना श्रेष्ठ है, किन्तु विना माँगे स्वयं भिक्षुक की खोज करके देना श्रेष्ठतर है। —विनोबा

काक आह्वयते काकान् याचको न तु याचकान्।
काकयाचकयोर्मध्ये वरं काको न याचकः॥ —अज्ञात

कहीं कोई खाद्य वस्तु देखकर कौआ कौओं को बुलाने लगता है, किन्तु कोई भिक्षुक कहीं कुछ मिलता देखकर दूसरे भिक्षुकों को नहीं बुलाता। इससे सिद्ध होता है कि कौआ और भिक्षुक में कौआ ही श्रेष्ठ है, भिक्षुक नहीं।

भीरुता (दे० "कायरता")

पुरुषों में भीरुता भयंकर दुर्गुण है। —अज्ञात

त्यजेत् क्षुधार्ता महिला स्वपुत्रं, खादेत् क्षुधार्ता भुजगी स्वमण्डम्।
बुभुक्षितः किं न करोति पापं ? क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति॥

—हितोपदेश

भूखी स्त्री अपने पुत्र को छोड देती है, भूखी नागिन अपने अंडे को खा लेती है। भूखा व्यक्ति क्या-क्या पाप नहीं करता है ? क्योंकि क्षीण मनुष्य करुणाहीन होते हैं।

भूख

भोजन के लिए सबसे अच्छी चटनी भूख है। —सुकरात

A well-governed appetite is a great part of liberty.

भूख पर अच्छा नियन्त्रण स्वतन्त्रता का एक बड़ा भाग है। —सिनेका

भूख लगना जिन्दा मनुष्य का धर्म है। भूख तो भगवान् का संदेश है। भूख न होती तो दुनिया बिल्कुल अनैतिक और अधार्मिक बन जाती। फिर नैतिक प्रेरणा ही हमारे अन्दर न होती। —विनोबा

सम्पन्नतरमेवान्नं दरिद्रा भुञ्जते सदा।
क्षुत्स्वादुतां जनयति सा चाढ्येषु सुदुर्लभा॥ —अज्ञात

दरिद्र व्यक्ति जो भी खायें, सदा अच्छा ही भोजन करते हैं क्योंकि वह भूख से खाते हैं। स्वाद को उत्पन्न करनेवाली वह भूख धनियों को दुर्लभ है।

बीमारियों की अधिकता पर यदि आपको आश्चर्य हो तो अपनी थाली गिनिए।
—सिनेका

आगि बड़वागि ते बड़ी है आग पेट की। —तुलसी (कवितावली)

Reason should direct, and appetite obey
बुद्धि के आदेश, भूख को मानना चाहिए। —सिसरो

भूख की ज्वाला उच्च से उच्च और कोमल से कोमल हृदय के व्यक्तियों को भी नीच से नीच और कठोर से कठोर कार्य करने के लिए विवश कर देती है।
—अज्ञात

All philosophy in two words—sustain and abstain.
सारा दर्शन दो शब्दों में है—जीवित रहने के लिए खाओ और अनावश्यक वस्तु से बचो। —इपिक्टेटस

अपनी भूख सहनेवाले तपस्वी की शक्ति उतनी नहीं, जितनी कि दूसरों की भूख मिटानेवाले दानी की शक्ति। —संत तिरुवल्लुवर

खट्टा मीठा चरपरा, जिह्वा सब रस लेय।
चारों कुतिया मिलि गयी, पहरा किसका देय॥
—कबीर

संसार में असम्भव से असम्भव कार्य हो सकता है किन्तु क्षुधा की ज्वाला में जलते हुए हृदयों में उच्च विचारों के अंकुर शेष नहीं रह सकते और न बिना उस ज्वाला को मिटाये पुन. जमाये जा सकते हैं। —अज्ञात

यदि भूख न हो तो भोजन की शिकायत न करो। —रवीन्द्र

भूल

यदि तुम भूलों को रोकने के लिए द्वार बंद कर दोगे तो सत्य भी बाहर रह जायगा।
—रवीन्द्र

यदि मनुष्य सीखना चाहे तो उसकी प्रत्येक भूल उसे कुछ न कुछ शिक्षा दे सकती है। —डिकेन्स

जान-बूझकर की गयी भूल हमारी इच्छा पर निर्भर करती है, पर अनजाने की गयी भूल की भी कोई सीमा है। —रस्किन (विजयपथ)

दूसरो की भूलो से बुद्धिमान् लोग अपनी भूले सुधारते है।
—पब्लियस साइरस

The stream of truth flows through its channels of mistakes
सत्य का स्रोत भूलो के वीच से होकर वहता है। —रवीन्द्र

भूषण (दे० "गहना")

सरसिज मनुविद्ध शैवलेनापि रम्य
मलिनमपि हिमाशोर्लक्ष्म लक्ष्मी तनोति।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणा मण्डन नाकृतीनाम्। —कालिदास

सेवार लिपटी रहने पर भी कमल सुन्दर लगता है, मलिन होने पर भी चन्द्रमा शोभा बढाता है, यह मुनिकन्या वल्कल पहनने से भी अधिक शोभित है। स्वभावत सुन्दरतावालो के लिए भूषण व्यर्थ ही होते है।

केयूरा न विभूषयन्ति पुरुष हारा न चन्द्रोज्ज्वला
न स्नान न विलेपन न कुसुम नालकृता मूर्धजा।
वाण्येका समलकरोति पुरुष या सस्कृता धार्यते
क्षीयन्तेऽखिलभूषणानि सतत वाग्भूषण भूषणम्॥ —भर्तृहरि

वाजूबन्द अथवा चन्द्रमा के समान उज्ज्वल हार मनुष्य को विभूषित नही करते, न स्नान से, न अगराग से, न फूलो से और न सँवारे हुए केशो से ही उनकी शोभावृद्धि होती है। एकमात्र वाणी ही उसे समलकृत करती है जो सस्कारपूर्वक भली भाँति धारण की गयी हो।

मानहु विधि तन अच्छ छवि, स्वच्छ राखिवे काज।
दृग-पग पोछन को किये, भूषण पायदाज॥ —विहारी

उत्तम चरित्र ही भूषणो मे उत्तम भूषण है। —स्वामी शकराचार्य

स्त्रियो का सवसे वड़ा भूपण पति-सेवा है। —अज्ञात

मनुष्य का सवसे मूल्यवान् भूषण उसका चरित्र है। —अज्ञात

ऐश्वर्यस्य विभूपणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो
ज्ञानस्योपशम. कुलस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्यय.।
अक्रोवस्तपस. क्षमा वलवता वर्मस्य निर्व्याजिता
सर्वेपामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूपणम्॥ —भर्तृहरि

ऐश्वर्य का भूपण सज्जनता, शूरता का मित-भापण, ज्ञान का शान्ति, कुल का भूपण विनय, वन का उचित व्यय, तप का अक्रोव, समर्थ का क्षमा और वर्म का भूपण निश्छलता है। यह तो सवका पृथक् पृथक् हुआ, परन्तु सवसे वढ़कर सवका भूपण शील है।

हस्तस्य भूपणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूपणम्।
श्रोत्रस्य भूपण शास्त्रं भूपणैः किं प्रयोजनम्॥ —अज्ञात

हाथ का भूषण दान है, सच वोलना कण्ठ का भूपण है, शास्त्रवचन कान का भूषण है, फिर दूसरे भूपणो की क्या आवश्यकता है।

भेद

रहिमन अँसुवा नयन ढरि, जिय दुख प्रगट करेय।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देय॥ —रहीम

जो मनुष्य नौकर से अपना भेद कहता है, वह उसे अपना स्वामी वना लेता है।
—ड्राइडेन

भोगलिप्सा

भोगलिप्सा मनुष्य को स्वार्थान्व वना देती है। —प्रेमचन्द

भोजन

जैसा अन-जल खाइए, तैसा ही मन होय।
जैसा पानी पीजिए, तैसी वानी सोय॥ —कवीर

भोजन के पूर्व सदा हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारी कमाई विलकुल खरी है। —रस्किन

जिस प्रकार दीपक अधकार की कालिमा का भक्षण करके कज्जल की कालिमा ही पैदा करता है, उसी प्रकार मनुष्य भी जैसा खाता है वैसे ही अपने ज्ञान को प्रकट करता है। —अज्ञात

रहिमन रहिला की भली, जो परसै चित लाय।
परसत मन मैला करै, सो मैदा जरि जाय॥ —रहीम

इष्ट मित्रो के सग भोजन करने से मनुष्य का चित्त प्रसन्न रहता है और आयु बढती है। —अज्ञात

अस्वाद-वृत्ति और परिमित आहार का क्या ही अधिक महत्त्व है।
विनोबा

भ्रमण (दे० "देशाटन")

The world is a great book, of which they who never stir from home read only a page

ससार एक बडी पुस्तक है जिसमें वे लोग, जो घर से बाहर नही जाते, केवल एक पृष्ठ ही पढ पाते हैं। —आगस्टाइन

भाव-ससार का भ्रमण अतीव सुखमय होता है। —प्रेमचन्द

मंत्र

मत्र तोप के गोले से भी बलवान् होता है। —विनोबा

मत्र परम लघु जासु बस, विधि हरि हर सुर सर्व।
महामत्त गजराज कहँ, बस कर अकुश खर्व॥
—तुलसी (मानस-बाल)

मत्र के प्रभाव व प्रेरणा से मनुष्य का जीवन तदनुरूप अपने आप बनता है।
—विनोबा

मंदिर

✓ मनुष्य ही परमात्मा का सर्वोच्च साक्षात् मन्दिर है। —विवेकानन्द

भगवान् के पास जाने के लिए दूर जाने की जरूरत नहीं। अपने हृदय के भीतर ही टटोलो। इस हृदय को गदा मत करो। यह भगवान् का मन्दिर है। —अज्ञात

प्रेम की ईंट से अपने प्रभु का मंदिर बनाओ। —अज्ञात

मजहब (दे० "धर्म")

मजहब किसी की टाँग पकड़कर नीचे नहीं घसीटता, वह ऊपर उठाता है।

—अज्ञात

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर करना। —डा० इकबाल

मजाक (दे० "हंसी", "हास्य")

A joker loses every thing when the joker laughs himself

जब मजाकिया स्वय हँस पडता है तो मजाक का सभी लुत्फ चला जाता है।

—शिलर

Joking often loses a friend and never gains an enemy.

मज़ाक प्राय. मित्र को अलग कर देता है और एक भी शत्रु पर विजय नहीं पाता।

—सी० सिमन्स

Humour is the harmony of the heart.

मजाक हृदय की शान्ति है। —डी० जेरोल्ड

जो मजाक करता है वह दुश्मनी मोल लेता है। —फ्रेंकलिन

Good humour is one of the best articles of dress one can bear in society

अच्छा मजाक एक उत्तम पोशाक है जिसे समाज में पहना जा सकता है।

—थैकरे

Good humour is the health of the soul; sadness is its poison

अच्छा मजाक आत्मा का स्वास्थ्य है, चिन्ता उसका जहर है। —स्टैनिलस

मदिरा

मदिरा का उपयोग तो स्वयं को भुलाने के लिए है, स्मरण करने के लिए नहीं और जीवन का सर्जनात्मक विकास अपनेपन की चेतना में ही सम्भव है।

—महादेवी वर्मा

जहाँ शैतान स्वय नहीं पहुँच सकता वहाँ मदिरा को भेज देता है। —अज्ञात

Wine has drowned more men than the sea.

सागर की अपेक्षा मदिरा ने अधिक मनुष्यों को डुबाया है। —कहावत

युद्ध, दुर्भिक्ष तथा महामारी इन तीनों ने मिलकर मनुष्य जाति को इतनी हानि नहीं पहुँचायी जितनी कि अकेली मदिरा ने पहुँचायी है। —ग्लैडस्टन

मदिरा और यौवन आग पर आग हैं। —फील्डिंग

मन

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।
बन्धाय विषयासक्तं मुक्तं निर्विषयं स्मृतम्॥ —ब्रह्मबिन्दु उप०

मन ही मनुष्य के बन्धन और मोक्ष का कारण है, विषयासक्त मन बन्धन के लिए है और निर्विषय मन मुक्त माना जाता है।

जिसने मन को जीत लिया उसने जगत् को जीत लिया। —स्वामी शंकराचार्य

मन का दुःख मिट जाने पर शरीर का दुःख भी मिट जाता है।
—वेदव्यास (महाभारत, वनपर्व)

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद् दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्॥ —गीता

मन बड़ा चंचल है, मनुष्य को मथ डालता है अतः बहुत बलवान् है। जैसे वायु को दबाना बहुत कठिन है वैसे ही मन का वश करना भी मैं कठिन मानता हूँ।

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते॥ —श्रीकृष्ण (गीता)

हे महाबाहो! निस्सन्देह मन बड़ा चंचल है, यह रुक नहीं सकता, परन्तु हे कौन्तेय! अभ्यास और वैराग्य से यह वश में किया जा सकता है।

तुलसी मन महराज के, दृग से नहीं दिवान।
जाहि देखि रीझै नयन, मन तेहि हाथ बिकान॥ —तुलसी

मन ही मनुष्य को स्वर्ग या नरक में बिठा देता है। स्वर्ग या नरक में जाने की कुंजी भगवान् ने हमारे ही हाथ में दे रखी है। —स्वामी शिवानन्द

मन का पूर्ण निरोध करने से विषयविहीन मन ही मुक्त होता है।
—उपनिषद्

न्हाये धोये क्या भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहै, धोये वास न जाय॥ —कबीर

जिन्हें तृष्णारूपी ग्राह ने पकड़ रखा है, जो ससारसमुद्र मे गिरे हुए हैं, भँवरो के जाल में पड़कर लक्ष्य से दूर भटक रहे हैं, उनको बचाने के लिए अपना विषयविहीन मन ही नौका का रूप है। —उपनिषद्

मन बड़ा जादूगर, महान् चित्रकार है। मन है ब्रह्मसृष्टि का तत्त्व। सकल्प के विना सृष्टि नही होती और मन के विना सकल्प नही होता। —साने गुरु

मन बड़ा चंचल है, यदि काम न हो तो इधर-उधर भटकने लगता है और अपने स्वामी को विनाशमार्ग मे फँसाकर मार डालता है। इसे भक्ति की जजीरो से जकड देना चाहिए, नहीं तो सर्प बनकर डस लेता है, बिच्छू बनकर काट खाता है।
—अज्ञात

मनसैव कृतं पाप न वाण्या न च कर्मणा।
येनैवालिंगिता कान्ता तेनैवालिंगिता सुता॥ —अज्ञात

मन के भाव से ही पाप माना जाता है, वचन या कर्म से नही। पत्नी और पुत्री के आलिगन में भाव की ही भिन्नता है।

जब तक मन नही जीता जाता, राग-द्वेष शान्त नहीं होते, तब तक मनुष्य इन्द्रियो का गुलाम बना रहता है। —विनोबा

मन ही अपने लिए जीवन का रास्ता बनाता है और मृत्यु का रास्ता भी मन ही में तैयार होता है, विचार उस रास्ते की सीमा निश्चित कर देते हैं।
—स्वेट मार्डन

दुखते हुए फोडे में कितना मवाद भरा है यह उस समय मालूम होता है जब नश्तर लगाया जाता है। मन का विष उस समय मालूम होता है जब कोई उसे खोलकर हमारे सामने रख देता है। —प्रेमचन्द

Strength of mind is exercise, not rest.
मन की शक्ति अभ्यास है, विश्राम नही। —पोप

मन एक भीरु शत्रु है, जो सदैव पीठ के पीछे से वार करता है। —प्रेमचन्द

यथा सूर्योदये प्रातर् ध्वान्त धावति दूरत.।
तथा मन प्रसादेन सर्वा बाधा प्रशाम्यति॥ —अज्ञात

जैसे प्रात काल सूर्योदय के होते ही अन्धकार दूर भाग जाता है, वैसे ही मन की प्रसन्नता से सारी बाधाएँ शान्त हो जाती है।

पतितः पशुरपि कूपे निःसर्तुं चरणचालनं कुरुते।
धिक् त्वा चित्त, भवाब्धेरिच्छामपि नो बिभर्षि निःसर्तुम्॥ —अज्ञात

कुएँ में गिरा हुआ पशु भी उसमें से निकलने के लिए पैर चलाता, कोशिश करता है, किन्तु हे मन, तुझे धिक्कार है कि तू भवसागर से निकलने की इच्छा भी नहीं करता।

जब तक मन अस्थिर और चंचल है तब तक किसी को अच्छा गुरु और साधु लोगों की संगति मिल जाने पर भी कोई लाभ नहीं होता। —रामकृष्ण परमहंस

मनो यस्य वशे तस्य भवेत्सर्वं जगद्वशे।
मनसस्तु वशे योऽस्ति स सर्वजगतो वशे॥ —अज्ञात

जिसने अपने मन को वश में कर लिया उसने संसार भर को वश में कर लिया, किन्तु जो मनुष्य मन को न जीतकर स्वयं उसके वश में हो जाता है, उसने सारे संसार की अधीनता स्वीकार कर ली।

तमेव विषयं प्राप्य सुखदुःखे ततो नृणाम्।
मनोऽवस्थितिभेदेन जायेते इति दृश्यते॥ —अज्ञात

मन ही सुख-दुःख का कारण है, इसी लिए ऐसा देखा जाता है कि एक ही विषय को पाकर मन की अवस्था के भेद से मनुष्यों को सुख और दुःख हुआ करते हैं।

मनन

आत्मा का अपने साथ बातचीत करना ही मनन है। —प्लेटो

जिन पदार्थों पर हम अपनी स्थिति कायम करते हैं, जिनपर हम मनन करते हैं वे ही हमारी मानसिक माला में गुँथ जाते हैं। —स्वेट मार्डेन

Meditation is the nurse of thought and thought the food for meditation

मनन विचार की परिचारिका है और विचार मनन का भोजन।

—सी० सिमन्स

मनस्वी

गुरुस्तनिरास [illegible] नैव [illegible]।
[illegible] हेतुरेनय [illegible]॥

—माघ ([illegible])

पर्वत में ऊँचाई है, अगाध गहराई नही है और समुद्र मे अगाध गहराई है, ऊँचाई नही है, किन्तु अलघनीय होने के ये दोनो ही कारण मनस्वी पुरुष में विद्यमान रहते है। अर्थात् मनस्वी पुरुष पर्वत के समान ऊँचे तथा समुद्र के समान गभीर होते है, उनका पार पाना सरल काम नही।

मनस्वी म्रियते काम कार्पण्य न तु गच्छति।
अपि निर्वाणमायाति नानलो याति शीतताम्॥ — हितोपदेश

मनस्वी पुरुष मर भले ही जाय पर कृपणता नही करता, जैसे अग्नि भले बुझ जाय, पर ठडी नही होती।

कुसुमस्तवकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विन:।
सर्वेषा मूर्ध्नि वा तिष्ठेद्विशीर्येत वनेऽथवा॥ — हितोपदेश

फूलो के गुच्छे के समान मनस्वी पुरुष की दो तरह की प्रकृति होती है ; या तो वह सबके सिर पर रहे या वन मे कुम्हला जाय।

मनाना

टूटे सुजन मनाइए, जो रूठें सौ वार।
रहिमन फिरि फिरि पोहिए, टूटे मुक्ताहार॥ — रहीम

मनाना उन्ही को चाहिए जो मानना जानते हो। — अज्ञात

मनुष्य

मनुष्य नवजात शिशु के तुल्य है, विकास ही उसका वल है। — रवीन्द्र

विश्व वड़ा है, जीवन विश्व से वड़ा है, मनुष्य जीवन से वड़ा है। — अज्ञात

मनुष्य इसीलिए है कि वह पशु को भी मनुष्य वनाये।

— जयशंकर प्रसाद

An honest man is the noblest work of god.
ईमानदार मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। — पोप

यथागार दृढस्थूण जीर्णं भूत्वोपसीदति।
तथावसीदन्ति नरा जरामृत्युवशंगता:॥ —वाल्मीकि

जिस प्रकार मजवूत खम्भेवाला मकान भी पुराना होने पर गिर जाता है, उसी प्रकार मनुष्य जरा और मृत्यु के वश में पड़कर नष्ट हो जाते है।

मनुष्य तो दुर्बलताओं की प्रतिमा है जिसमें देवत्व और दानवत्व दोनों का ही समावेश है। —अज्ञात

Man thou pendulum betwixt a smile and tear
मुसकान और आँसू के मध्य मानव! तू एक गतिशील यन्त्र है। —बायरन

मनुष्य इस संसार में आत्मा, विवेक और बुद्धि लेकर आया है। —अज्ञात

Every man is a volume, if you know how to read him
प्रत्येक व्यक्ति एक महान् ग्रंथ है, यदि आप उसे पढ़ना जानते हैं।
—चैनिंग

Man that is made in the image of the creator is made for God-like deeds
मनुष्य सृष्टिकर्त्ता के प्रतिबिम्ब में ईश्वरतुल्य कार्य के लिए बनाया गया है।
—डिजरायली

मनुष्य की दशा उस घड़ी के समान है जो ठीक तरह से रखी जाए तो सौ वर्ष तक काम दे सकती है और लापरवाही से बरती जाय तो जल्दी बिगड़ जाती है।
—स्वेट मार्डेन

मनुष्य वे हैं जो मन की शक्तियों के बादशाह हैं, संसार की समस्त शक्तियाँ जिनके आगे नतमस्तक हैं। —अज्ञात

परोपकारशून्यस्य धिक् मनुष्यस्य जीवितम्।
जीवन्तु पशवो येषां चर्माप्युपकरिष्यति॥ —अज्ञात

मनुष्य होकर भी जो दूसरों का उपकार करना नहीं जानता उसके जीवन को धिक्कार है। उससे अच्छे तो पशु ही हैं जिनका चमड़ा तक (मरने पर) दूसरों के काम आता है।

दुर्लभं मानुषं जन्मान्तरं [illegible] [illegible]।
तथापि [illegible] [illegible] दुर्लभं [illegible]॥ —[illegible]

मनुष्य का जन्म दुर्लभ है उसका एक क्षण भी [illegible]। तो भी [illegible] है कि मनुष्य कौड़ियों के समान उसको [illegible] [illegible] हैं।

मनुष्य [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। —[illegible]

प्रत्येक मनुष्य वास्तव में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
—[illegible]

Man is a visible mystery walking between two eternities and two infinities.

मनुष्य एक दृष्टिगोचर रहस्य है जो दो अनन्तो और दो अपरिमितियो के बीच घूमता है। —कार्लसन

जल में मीन मौन है, पृथ्वी पर पशु कोलाहल कर रहे हैं, आकाश में चिड़िया गा रही हैं, परन्तु मनुष्य में समुद्र का मौन है, पृथ्वी का कोलाहल है एवं आकाश का संगीत है। —रवीन्द्र

अपने आपको वश में रखने से ही पूर्ण मनुष्यत्व प्राप्त होता है। —हर्बर्ट स्पेन्सर

मनोरथ (दे० 'अभिलाषा', 'इच्छा', 'महत्त्वाकांक्षा')

हाय रे मनुष्य के मनोरथ ! तेरी भित्ति कितनी अस्थिर है। बालू पर की दीवार तो वर्षा मे गिरती है, पर तेरी दीवार विना पानी बूँद के ढह जाती है। आँधी में दीपक का कुछ भरोसा किया जा सकता है; पर तेरा नहीं ! तेरी अस्थिरता के आगे बालकों का घरौंदा अचल पर्वत है। —प्रेमचन्द

मनोरथानामगतिर्न विद्यते। —कुमार०

ऐसा कोई स्थान नही जहाँ मनोरथ की पहुँच न हो।

संसार में सफलमनोरथ होना अपनी शक्ति, अपने पराक्रम, अपने मानसिक बल पर ही अवलम्बित है। —अज्ञात

मनोरंजन

मनोरंजन नवीनता का दास है और समानता का शत्रु। —प्रेमचन्द

जिस समय तुम्हें अपना मनोरंजन करना हो उस समय अपने सहवास में रहने-वालो के साथ सद्गुणो का चिन्तन करो। —मार्कस अरेलियस

मनोवृत्ति

मनोवृत्तियाँ सुगन्ध के समान हैं जो छिपाने से नही छिपती। —प्रेमचन्द

पाप-पुण्य सब मनोवृत्तियो के लक्षणो पर निर्भर हैं। यदि मनोवृत्ति शुद्ध हो और कोई व्यक्ति पाप कर बैठे तो पाप नहीं। यदि मनोवृत्ति दूषित हो और ऐसे समय में कोई पुण्य भी बन जाय तो उसका कोई फल नही। —वृन्दावनलाल वर्मा

Be ambitious, and let there be no limits to your ambition It is better to live gloriously and die gloriously than live a life of inactivity.

महत्त्वाकांक्षी बनो और उसकी कोई सीमा न होने दो। अकर्मण्यता के जीवन से यशस्वी जीवन और यशस्वी मृत्यु अधिक अच्छी है। —सर सी० वी० रमन

जो छोटे-छोटे कामों के पीछे बहुत ज्यादा पड़े रहते हैं वे अक्सर बड़े कामों के लिए नाकाबिल बन जाते हैं। —रोशे

Ambition is but the evil shadow of apiration

महत्त्वाकांक्षा लालसा का केवल निकृष्ट प्रतिबिम्ब है। —मेक्डानेल्ड

Ambition is so powerful a passion in the human breast that however high we reach we are never satisfied

महत्त्वाकांक्षा मानवहृदय की इतनी शक्तिशाली अभिलाषा है कि हम कितने ही ऊँचे पद पर पहुँचें, सन्तुष्ट नहीं होते। —मेकियावेली

सौन्दर्य और विलास के आवरण में महत्त्वाकांक्षा उसी प्रकार पोषित होती है जैसे मखमली म्यान में तलवार शयन करती है। —डा० रामकुमार वर्मा

संसार में जितने बड़े काम हुए हैं, उन सबको करानेवाली महत्त्वाकांक्षा ही है। —अज्ञात

महात्मा

सम्पूर्ण संसार से जिनकी आसक्ति नष्ट हो गयी है, जिनका अज्ञान नष्ट हो चुका है और जो कल्याणरूप परमात्मतत्त्व में स्थिर हैं वही महात्मा हैं। —स्वामी शंकराचार्य

महात्माओं का चरित्र विचित्र होता है। वे धन-वैभव को तिनके के समान समझते हैं; किन्तु इसके प्राप्त होने पर बोझ से झुक जाते हैं। —चाणक्य

महान् (दे० "संत", "सज्जन", "सत्पुरुष")

मनुष्य उतना ही महान् होगा जितना वह अपनी आत्मा में सत्य, त्याग, दया, प्रेम और शक्ति का विकास करेगा। —स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)

क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्वमुच्चैःशिरसां सतीव।

—कालिदास

जो महान् होते हैं वे अपनी शरण में आये हुए नीच लोगों से भी वैसा ही अपनापन बनाये रहते हैं जैसा सज्जनो के साथ।

कोई कितना ही महान् हो, लेने के लिए तो उसे झुकना ही पडता है। इतना बडा समुद्र भी क्षुद्र नदी नालो से पानी लेने के लिए उनसे नीचे ही रहता है।

—अज्ञात

Nothing can be truly great which is not right

बिना सत्य के कोई भी चीज वास्तव में महान् नही हो सकती। —डा० जानसन

सभी महान् वस्तुएँ सदैव अच्छी नही हो सकतीं, किन्तु सभी अच्छी वस्तुएँ महान् होती हैं। —डिमास्थेनीज

महात्मानोऽनुगृह्णन्ति भजमानान् रिपूनपि।
सपत्नी प्रापयन्त्यब्धि सिन्धवो नगनिम्नगा ॥

—माघ (शिशुपालवध)

महान् पुरुष तो शरणागत शत्रुओ पर भी अनुग्रह करते हैं। बडी नदियाँ अपनी सपत्नी (छोटी मोटी) पहाडी नदियो को भी समुद्र तक (अपने पति तक स्वय) पहुचाती हैं।

Count no man great till he is dead.

किसी महापुरुष को तब तक महान् नही समझना चाहिए, जब तक कि उनकी मृत्यु नही हो जाती। —कहावत

वह मनुष्य कभी नही महान् हो सकता जो केवल अपनी वर्तमान शक्ति पर ही अवलम्बित रहता है और दैवी तत्त्व का ज्ञान नही प्राप्त करता। —स्वेट मार्डेन

अभी तक कोई भी व्यक्ति वास्तव मे महान् नही हुआ जो साथ ही साथ गुणवान् न रहा हो। —फ्रैंकलिन

He is not great who is not greatly good

वह महान् नही है जो बहुत भला नही है। —शेक्सपियर

महानता (दे० "बड़प्पन")

महानता की आकाक्षा करने मे हमारी आत्मा की सर्वोत्कृष्ट शक्तियों का विकास होता है, वे जाग्रत हो जाती हैं। —स्वेट मार्डेन

मनुष्य की सबसे बडी महानता विपत्तियो को सह लेने मे है। —अज्ञात

लोभ की अपेक्षा अपनी महत्ता सिद्ध करने की मनुष्य की इच्छा अधिक प्रबल होती है। —अज्ञात

महापुरुष (दे० "संत", "सज्जन")

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणा चेतासि को हि विज्ञातुमर्हति ॥ —भवभूति

उत्तम पुरुषों का हृदय वज्र से भी कठोर और फूल से भी कोमल होता है। उसे जानने में समर्थ कौन है?

न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्। —कालिदास
ससार ही महापुरुष को ढूँढता है न कि महापुरुष ससार को।

जैसे सूर्य आकाश में छिपकर नही विचर सकता वैसे ही महापुरुष भी ससार में छिपकर नही रह सकते। —वेदव्यास (महाभारत, वनपर्व)

All great men come out of the middle classes
सभी महापुरुष मध्यम वर्ग से आते हैं। —एमर्सन

जो श्रेष्ठ महापुरुष हैं, वे सभी धर्म, सभी इतिहास और सभी नीतियो से ससार का श्रेष्ठ ज्ञान ग्रहण करते हैं। —रवीन्द्र

जहाँ चक्रवर्ती नृपाल की शस्त्रधारा कुंठित हो जाती है; वहाँ महापुरुष का एक मधुर वचन ही काम कर जाता है। —हरिऔध

A really great man is known by three signs—generosity in the design, humanity in the execution, moderation in success.

वास्तविक महान् व्यक्ति तीन चिह्नो द्वारा जाना जाता है—योजना में उदारता, उसे पूरा करने मे मनुष्यता और सफलता में संयम। —बिस्मार्क

जो महापुरुष हैं वे ससार के ज्ञान को अपने माहात्म्य से ही ग्रहण करते हैं, और ग्रहण करने के बाद अपने जीवन मे उतारकर जगत् में उसकी सचाई का प्रकाश चमका देते हैं। —रवीन्द्र

विपदि धैर्यमयाभ्युदये क्षमा
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्॥ —हितोपदेश

महान् पुरुषों में यह गुण स्वभावत पाये जाते हैं—विपत्ति मे धैर्य, अभ्युदय, उन्नति में क्षमा, सभा में भाषण-कुशलता, युद्ध में विक्रम, यश में रुचि और वेदशास्त्र के अध्ययन का व्यसन।

The world can not do without great men, but great men are very troublesome to the world

ससार महान् व्यक्तियो के बिना नही रह सकता, लेकिन महान् व्यक्ति ससार के लिए बहुत दु खदायी होते हैं। —गेटे

धर्म को परिष्कृत करने एव लोगो के नैतिक स्तर को ऊँचा करने के लिए महापुरुषो की सब युगो मे बडी आवश्यकता होती है। —हरिभाऊ

माँ (दे० "माता")

माँ के बलिदानो का प्रतिशोध कोई बेटा नही कर सकता, चाहे वह भूमण्डल का स्वामी ही क्यो न हो। —प्रेमचन्द

माँ के ममत्व की एक बूँद अमृत के समुद्र से ज्यादा मीठी है। —अज्ञात

The future destiny of the child is always the work of the mother

बच्चे का भाग्य सदैव उसकी माँ की कृति है। —नेपोलियन

माँगना

केवल अपने लिए माँगनेवाला भिखारी कहा जा सकता है, परन्तु सबके लिए माँगनेवाला देनेवाले का स्वामी ही रहेगा। —महादेवी वर्मा

मान बडाई प्रेमरस, गुरुआपन औ नेह।
ये पाँचो तब ही गये, जबै कही कछु देहु॥ —नरोत्तमदास

जो कुछ माँगना हो खुदा से माँग ऐ अक्बर।
यही वह दर है कि जिल्लत नही सवाल के बाद॥ —अकबर

रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहि।
उनते पहिले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहि॥ —रहीम

आव गयी आदर गया, नैनन गया सनेहु।
ये तीनों तव ही गये, जव हि कहा कुछ देहु॥ —कबीर

माँगे घटत रहीम पद, कितो करो वढि काम।
तीन पैग वसुधा करी, तऊ वावने नाम॥ —रहीम

माता (दे० "जननी", "माँ")

शिशो शुश्रूपणाच्छक्तिर्माता स्यान्माननाच्च सा। —स्कंदपुराण

शिशु की शुश्रूषा करने से माता को शक्ति और सदा सम्मान देने के कारण उसे माता कहते हैं।

Men are what their mothers made them.
मनुष्य वही होते हैं जो उनकी माताएँ उन्हें वनाती ह। —एमर्सन

माता का हृदय वच्चे की पाठशाला है। —वीचर

माता का कोमल क्रोड ही शान्ति का निकेतन है। —अज्ञात

ऐसी माताओ से देश का मुख उज्ज्वल होता है जो देशहित के सामने मातृ-स्नेह की धूल-वरावर भी परवाह नही करती। उनके पुत्र देश के लिए होते हैं, देश पुत्र के लिए नही होता। —प्रेमचन्द

मात्रा समं नास्ति शरीरपोषणं, चिन्तासमं नास्ति शरीरशोषणम्।
भार्यासमं नास्ति शरीरतोषण, विद्यासमं नास्ति शरीरभूषणम्॥—अज्ञात

माता के समान शरीर का पालन-पोषण करनेवाली, चिन्ता के समान देह को सुखानेवाली, स्त्री के समान शरीर को सुख देनेवाली और विद्या के समान शरीर को अलकृत करनेवाली दूसरी कोई वस्तु नही है।

मातृत्व

मातृत्व दीर्घ तपस्या है। —प्रेमचन्द

मातृत्व में ही नारीत्व की पूर्णता है। —अज्ञात

मातृ-प्रेम

भाई-वहिनों को एक करनेवाली कोई शक्ति है तो मातृप्रेम है, पितृप्रेम है।
—विनोवा

मातृभाषा

मातृभाषा का अनादर माँ के अनादर के बराबर है। जो मातृभाषा का अपमान करता है, वह स्वदेशभक्त कहलाने लायक नहीं। —महात्मा गांधी

इडा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुव । बर्हि सीदन्त्वस्रिध । —वेदमन्त्र

मातृभाषा, मातृसभ्यता और मातृभूमि तीनों सुखकारिणी स्थिर रूप देवियाँ हमारे हृदयासन पर विराजती रहें।

मातृभूमि

उदीराणा उतासीनास्तिष्ठन्त प्रक्रामन्त ।
पद्भ्यां दक्षिणसव्याभ्यां मा व्यथिष्महि भूम्याम् ॥ —यजुः

हम लोग चलते हुए या बैठे हुए, ठहरे हुए या आगे बढ़ते हुए, दायें या बायें पैर से भूमि को कष्ट न दें तथा कोई ऐसा काम न करें जिससे मातृभूमि का अहित हो।

हे मातृभूमि! धन और कीर्ति तुझसे ही मिलती है, और यह तेरे ही वश में है कि तू उन्हें दे या अपने पास रखे। लेकिन मेरा गम (शोक) बिल्कुल मेरा अपना है और जब मैं इसे भेंट करने के लिए तेरे पास लाता हूँ तो तू मुझे आशीर्वाद देती है।
—रवीन्द्र

माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या । —अथर्ववेद

भूमि मेरी माता है और मैं इस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी मातृभाषा को अनुकरण के द्वारा सीखता है, व्याकरण के सहारे नहीं। —धीरेन्द्र वर्मा

मातृभाषा में माता की ममता और जन्मभूमि का प्यार बसता है, जब हम उसका प्रयोग करते हैं तो ऐसा लगता है जैसे हमारा बचपन हमें वापस मिल गया है। —अज्ञात

मातृ-हृदय

माता का हृदय दया का आगार है। उसे जलाओ तो उसमें से दया की ही सुगन्ध निकलती है। पीसो तो दया का ही रस निकलता है। वह देवी है। विपत्ति की क्रूर लीलाएँ भी उस निर्मल और स्वच्छ स्रोत को मलिन नहीं कर सकतीं। —प्रेमचन्द

मादकता

यौवन, सुन्दरता और ऐश्वर्य इनमें से प्रत्येक में मनुष्य को मदान्ध बना देने की शक्ति है। —कालिदास

कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
वह खाये बौरात है, यह पाये बौराय॥ —बिहारी

मान

जिस आदमी का मान उसके अपने ख्याल से मर चुका है वह जितनी हानि अपने को पहुँचा सकता है उतनी दूसरा कोई और नही पहुँचा सकता। —महात्मा गांधी

घटने न देना मान, करना मोह मत धन-धाम का।
यदि मान ही जाता रहा तो धन रहा किस काम का॥ —अज्ञात

मान गुण से ही मिलता है, जैसे तोते को सब पालते है परन्तु कौए को कोई नहीं। —अज्ञात

मान चाहनेवाले ही अपमान से डरा करते हैं। मान का बोझा मन से उतरते ही मन हलका और निडर बन जाता है। —अज्ञात

अमी पियावत मान बिन, रहिमन मोहि न सुहाय।
प्रेम सहित मरिबो भलो, जो विष देइ बुलाय॥ —रहीम

मान सहित विष खाइके, संभु भए जगदीस।
बिना मान अमृत पिये, राहु कटायो सीस॥ —रहीम

ज्वलितं न हिरण्यरेतसं चयमास्कन्दति भस्मनां जनः।
अभिभूतिभयादसूनतः सुखमुज्झन्ति न धाम मानिनः॥
—भारवि (किरातार्जुनीय)

लोग राख के ढेर को पदाक्रान्त करते हैं, परन्तु जाज्वल्यमान अग्नि को पदाक्रान्त नही करते। अत मानी मानहानि की आशंका से सुखपूर्वक प्राण विसर्जित कर देते हैं, पर अपनी मान-मर्य्यादा तथा तेज को धक्का नहीं लगने देते।

मानव

मानव का दानव होना उसकी हार है। मानव का महामानव होना उसका चमत्कार है और मनुष्य का मानव होना उसकी जीत है। —डा० राधाकृष्णन

मनुष्य को पापी कहना ही पाप है, यह कथन मानवसमाज पर एक लाञ्छन है।
—स्वामी विवेकानन्द

संसार भर मे दो ही व्यक्ति ऐसे है जो सही शब्दो मे मानव है। एक जो मर चुका है, दूसरा जिसका अभी तक जन्म नहीं हुआ है। —चीनी कहावत

मानवता

मानवता का खेल प्रातकालीन सूर्य की तरह सुन्दर है। —रस्किन

कोई मनुष्य मानवता से बडा नही है। —थेडोर पार्कर

मानवता का उचित अध्ययन मानव है। —पोप

ध्रुव सत्य है कि सर्वोच्च जाति का मानवता-परिपूर्ण प्राणी सदा उदार और सत्य-प्रिय होता है। —रस्किन

मानवप्रकृति

जहाँ तक मानवप्रकृति से सम्बन्ध है, यह नही कहा जा सकता कि वह कब बदल जाय। यहाँ तक कि मरते समय जो मति हो वैसी ही गति बतलायी जाती है। पुराने दिनो का स्मरण करके भविष्य में भी विश्वास खो बैठने का अर्थ है मानवप्रकृति मे निहित शिवत्व की भावना से अविश्वास। —सरदार पटेल

Men are cruel but man is kind
मनुष्य निर्दयी होते है परन्तु मानवस्वभाव दयालु है। —रवीन्द्र

मानस-तीर्थ

सत्यं तीर्थं क्षमा तीर्थं तीर्थमिन्द्रियनिग्रहः।
सर्वभूतदया तीर्थं तीर्थमार्जवमेव च॥
दानं तीर्थं दमस्तीर्थं सन्तोषस्तीर्थमुच्यते।
ब्रह्मचर्यं परं तीर्थं तीर्थं च प्रियवादिता॥
ज्ञानं तीर्थं धृतिस्तीर्थं तपस्तीर्थमुदाहृतम्।
तीर्थानामपि तत्तीर्थं विशुद्धिर्मनसः परा॥ —महर्षि व्यास

सत्य तीर्थ है, क्षमा तीर्थ है, इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना भी तीर्थ है, सब प्राणियो पर दया करना तीर्थ है और सरलता भी तीर्थ है। दान तीर्थ, दम

संयम तीर्थ है, संतोष भी तीर्थ कहा जाता है। ब्रह्मचर्य का पालन उत्तम तीर्थ है। प्रिय वचन बोलना भी तीर्थ ही है। ज्ञान तीर्थ है, धैर्य तीर्थ है, तप को भी तीर्थ कहा गया है। तीर्थों मे भी सबसे बड़ा तीर्थ है अत करण की आत्यन्तिक शुद्धि।

दानमिज्या तप शौच तीर्थसेवा श्रुत तथा।
सर्वाण्येतान्यतीर्थानि यदि भावो न निर्मल ॥
निगृहीतेन्द्रियग्रामो यत्रैव च वसेन्नर।
तत्र तस्य कुरुक्षेत्रं नैमिष पुष्कराणि च॥ — महर्षि अगस्त्य

भीतर का भाव शुद्ध न हो तो दान, यज्ञ, तप, शौच, तीर्थसेवन, शास्त्रो का श्रवण एव स्वाध्याय—ये सभी अतीर्थ हो जाते हैं। इसलिए जिसने अपने इन्द्रियसमुदाय को वश में कर लिया है, वह मनुष्य जहाँ भी निवास करता है, वही उसके लिए कुरुक्षेत्र, नैमिपारण्य और पुष्कर आदि तीर्थ हैं।

ध्यानपूते ज्ञानजले रागद्वेषमलापहे।
य. स्नाति मानसे तीर्थे स याति परमां गतिम् ॥ — महर्षि अगस्त्य

ध्यान के द्वारा पवित्र तथा ज्ञानरूपी जल से भरे हुए, राग-द्वेपरूप मल को दूर करनेवाले मानस-तीर्थ में जो मनुष्य स्नान करता है, वह परम गति—मोक्ष को प्राप्त होता है।

मानसिक पीड़ा

लोहे का गरम गोला यदि घड़े के जल में डाल दिया जाय तो वह जल भी गरम हो जाता है, वैसे ही मानसिक पीड़ा से शरीर भी व्यथित हो जाता है।

— वेदव्यास (महाभारत वनपर्व)

मानसिक वृत्तियाँ

हमारी मानसिक वृत्तियां हमारी सेविकाए हैं। जो कुछ हम उनसे चाहते ह वे हमें वही देती हैं। — स्वेट मार्डेन

माप

धनवानो के हाथ में माप ही एक है। वह विद्या, सौन्दर्य, वल, पवित्रता, और तो क्या, हृदय भी उसी से मापते हैं। वह माप है—उनका ऐश्वर्य।

— जयशंकर प्रसाद

माया

गो गोचर जहँ लगि मन जाई। सो माया सब जानेहु भाई॥

—तुलसी (मानस-अरण्य)

मैं जानूं हरि से मिलूं, मो मन मोटी आस।
हरि बिच डारै अंतरा, माया बड़ी पिसाच॥ —कबीर

माया ईश्वर की शक्ति होने पर भी अनिर्वचनीय पदार्थ है।

—स्वामी शंकराचार्य

अति प्रचंड रघुपति कै माया। जेहि न मोह अस को जग जाया॥

—तुलसी (मानस-बाल)

जब माया आती है बुद्धि चली जाती है। —अज्ञात

माया छाया एक सी, बिरला जानै कोय।
भगतो के पीछे फिरै सनमुख भागै सोय॥ —कबीर

सुर नर मुनि कोउ नाहिं, जेहि न मोह माया प्रबल।
अस बिचारि मन माहिं, भजिअ महा मायापतिहि॥ —तुलसी

माया-मोह का स्थान मन है घर नहीं। —प्रेमचन्द

वेदान्त के अनुसार यह निद्रा-अवस्था और जाग्रत-अवस्था भी माया या भ्रम के सिवा और कुछ नहीं है। —स्वामी रामतीर्थ

मायावी

मायावी मनुष्य संसार को धोखा दे सकता है, परन्तु अपने [illegible] धोखा नहीं दे सकता। —अज्ञात

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधानसंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः॥

—भारवि (किरातार्जुनीय)

वे अविवेकी पुरुष (सर्वदा) पराजित होते हैं जो मायावियों के [illegible] मायावी नहीं बनते अर्थात् 'शठे शाठ्यं समाचरेत्' नीति का [illegible]। मायावी सरलचित्त व्यक्तियों के [illegible] हैं जैसे तीक्ष्ण धारवाले बाण [illegible] शरीर में प्रवेश [illegible]।

मार्क्सवाद

मार्क्सवाद तो भौतिकवाद है इसी लिए वह वेमुरव्वती के साथ धर्म का विरोध करता है। —लेनिन

माली

अनार के फूल और फल में वाग के माली के रुधिर की याद आती है। उसकी मेहनत के कण जमीन मे गिरकर उगते हैं और हवा तथा प्रकाश की सहायता से मीठे फलो के रूप में नजर आते है।

—अध्यापक पूर्णसिंह

मित्र (दे० "दोस्त")

न स सखा यो न ददाति सख्ये। —ऋग्वेद

वह मित्र ही क्या, जो अपने मित्र को सहायता नही देता।

सव लोग घोड़े, कुत्ते, सम्पत्ति, मान, सम्मान इत्यादि की हवस करके उनके पाने के लिए परिश्रम करते है, परन्तु मुझे किसी मित्र के समागम का लाभ होने से जितना सतोप होगा, उतना उन सव चीजो के मिलकर प्राप्त होने पर भी नही होगा।

—सुकरात

Life has no blessing like a prudent friend.
ज्ञानी मित्र के सदृश जीवन मे कोई वरदान नही है। —यूरीपिडीज

मथत मथत माखन रहै, दही मही विलगाय।
रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय॥ —रहीम

There are three faithful friends; an old wife, an old dog, and ready money.

तीन विश्वासी मित्र होते हैं—वृद्धा पत्नी, वूढा कुत्ता और नकद धन।

—फ्रैंकलिन

विद्या, शूरवीरता, दक्षता, वल और धैर्य ये पाँच मनुष्य के स्वाभाविक मित्र हैं। वुद्धिमान् लोग सर्वदा इनके सहवास मे रहते हैं।

—वेदव्यास (शांतिपर्व)

The worst friend is he who frequents you in prosperity and deserts you in misfortune.

सबसे निकृष्ट मित्र वह है जो अच्छे दिनो में पास आता है और मुसीबत के दिनो में त्याग देता है। —अज्ञात

परोक्षे कार्यहन्तार प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्ज्जयेत्तादृश मित्र विपकुम्भ पयोमुखम्॥ —हितोपदेश

मुंह सामने मीठी बातें करने और पीठ पीछे छुरी चलानेवाले मित्र को दुवमुहे विषभरे घडे की तरह छोड दे।

रजत वा सुवर्ण वा शुभान्याभरणानि च।
अविभक्तानि साधूनामवगच्छन्ति साधव॥
—वाल्मीकि (रा० कि०)

अच्छे स्वभाववाले मित्र अपने घर के सोने-चाँदी अथवा उत्तम आभूषणो को अपने सन्मित्रो से अलग नही समझते।

हमारा यदि कोई सच्चा मित्र न हो तो जगत् निर्जन वन के समान प्रतीत होगा। —बेकन

Friends though absent, are still present, though in poverty they are rich, though weak, yet in the enjoyment of health and what is still more difficult to assert, though dead they are alive

मित्र चाहे अनुपस्थित हो वे उपस्थित रहने के ही समान हैं; चाहे वे दरिद्र हो, धनवान् होने के समान हैं, चाहे वे दुर्बल हो, स्वस्थ होने के समान हैं और यह बात मानना और भी अधिक कठिन मालूम पडता है कि वे जीवित होने के समान है यद्यपि वे मर गये हैं। —सिसरो

सबसे निकृष्ट मित्र वह है जो तुम्हारी चापलूसी करता है और तुम्हारे अवगुणो पर परदा डालता है। —अज्ञात

मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्या। —कालिदास (मेघ०)

जिसने मित्रकार्य सम्पन्न करने का वचन दिया है, वह उसके समाप्त होने तक ढीला नही पड़ता।

सच्चा मित्र आनद को दुगना तथा दुख को आधा कर देता है। —बेकन

विमलं कलुषीभवच्च चेत कथयत्येव हितैषिण रिपु वा। —भारवि

चित्त का प्रसन्न होना तथा मलिन होना मित्र और शत्रु की सूचना देता है। अर्थात् जिसके प्रति मन प्रसन्न होता है वह मित्र है और जिसके प्रति मन में क्षोभ उत्पन्न होता है वह शत्रु है।

आढ्यो वापि दरिद्रो वा दुःखितः सुखितोऽपि वा।
निर्दोषश्च सदोषश्च वयस्यः परमा गति ॥

—वाल्मीकि (रा० कि०)

मित्र धनी हो या गरीब, सुखी हो या दुखी अथवा निर्दोष हो या सदोष, वह हमारे लिए सबसे बड़ा सहायक होता है।

Be more prompt to go to a friend in adversity than in prosperity.

अच्छे दिनो की अपेक्षा मुसीबत के दिनो में मित्र के पास जाने के लिए अधिक उद्यत रहो। —चिलो

मिलने पर मित्र का आदर करो, पीठ पीछे उसकी प्रशंसा करो तथा आवश्यकता के समय उसकी मदद करो। —अरस्तू

घर, सोना, पृथ्वी, चाँदी, स्त्री और सुहृदगण ये मध्यम कोटि के मित्र हैं, ये मनुष्य को सभी जगह मिल सकते हैं। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

विश्वासपात्र मित्र मे बड़ी भारी रक्षा रहती है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाय उसे समझना चाहिए कि खजाना मिल गया। —अज्ञात

जो गुण हममें नही है, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले जिसमें वह गुण हो। चिन्ताशील मनुष्य प्रफुल्लचित्त मनुष्य का साथ ढूँढता है, निर्बल बली का, धीर उत्साही का। उच्च आकाक्षावाला चन्द्रगुप्त युक्ति और उपाय के लिए चाणक्य का मुँह ताकता था। नीतिविशारद अकबर मन बहलाने के लिए बीरबल की ओर देखता था।

—रामचन्द्र शुक्ल

कुदिन हितू सो हित सुदिन, हित अनहित किन होइ।
ससि छवि हर रवि सदन तउ, मित्र कहत सब कोइ ॥ —तुलसी

मित्रता

केवल सज्जनो में ही सच्ची मैत्री हो सकती है। —सिसरो

सच्ची मित्रता में उत्तम से उत्तम वैद्य की सी निपुणता और परख होती है, अच्छी से अच्छी माता का सा धैर्य और कोमलता होती है। —रामचन्द्र शुक्ल

बहुत लोगो से मित्रता मत करो। —पाइथैगोरस

Never contract friendship with a man that is not better than thyself

ऐसे मनुष्य से मित्रता मत करो जो तुमसे श्रेष्ठ न हो। —कन्फ्यूशियस

मित्रता दैवी देन है और मनुष्य के लिए अत्यन्त बहुमूल्य वरदान।
—डिजरायली

मित्रता करने में शीघ्रता मत करो, परन्तु करो तो अन्त तक निभाओ।
—सुकरात

मनुष्य जो स्वय करे उसे भूल जाय और जो दूसरे से ले उसे सर्वदा याद रक्खे। मित्रता की यही जड है। —ड्यूमाज

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्॥
—पचतंत्र

दुष्ट की मित्रता सूर्य-उदय के पीछे की छाया के सदृश पहले तो लम्बी चौडी होती है, फिर क्रम से घटती जाती है और सज्जनो की मित्रता तीसरे पहर की छाया के सदृश पहले छोटी और फिर क्रमश वढती जाती है। —पंचतत्र

इस ससार में मित्रता से अधिक मूल्यवान् अन्य कोई वस्तु नही है।
—सिसरो

सहापकृष्टैर्महता न सगत भवन्ति गोमायुसखा न दन्तिन। —भारवि

नीचो के साथ उच्च व्यक्तियो की मित्रता नही होती क्योकि हाथी शृगालो के साथ मैत्री नही करते।

किसी व्यक्ति की मित्रता पूर्ण नही है जब तक कि वह अपने मित्र की, अनुपस्थिति, गरीबी और आपत्ति में सहायता नही करता एव मृत्यु के उपरान्त भी उसके अधिकार की रक्षा नही करता। —अज्ञात

इच्छेच्चेद् विपुला मैत्री त्रीणि तत्र न कारयेत्।
वाग्वादमर्थ-सम्बन्ध तत्पत्नीपरिभाषणम्॥ —चाणक्य

यदि दृढ मित्रता चाहते हो तो मित्र से वहस करना, उधार लेना-देना और उसकी स्त्री से वातचीत करना छोड दो। यही तीन वातें विगाड़ पैदा करती है।

मित्रघात

मित्रघात पाप नही महापाप है। —सुदर्शन

मिथ्या

मिथ्या का स्थान यदि कही है तो मनुष्य के मन को छोड़कर और कही नही।
—शरत्चन्द्र (श्रीकान्त)

मिथ्याचारी

कर्मेन्द्रियाणि सयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचार स उच्यते ॥ —श्रीकृष्ण (गीता)

जो मनुष्य कर्म करनेवाली इन्द्रियो को रोकता है, परन्तु उन इन्द्रियो के विषयों का चिन्तन मन से करता है, वह मूढात्मा मिथ्याचारी कहलाता है।

मिथ्याभिमान

मिथ्याभिमान हमारी निष्क्रियता और पतन का कारण है। —अज्ञात

मिथ्यावादी

जहाँ वुद्धि और तर्क का कुछ वग नही चलता, मनुष्य मिथ्यावादी हो जाता है।
—प्रेमचन्द (प्रेमपचीसी)

मुक्ति

जब तक ससार में कीट पतग आदि की मुक्ति न हो जायगी तव तक मैं अपनी मुक्ति की आकाक्षा नही करता। —भगवान् बुद्ध

मुक्ति शब्द का अर्थ छूटना है। यहा प्रश्न होता है, किससे छूटना ? उत्तर स्पष्ट है कि दु:ख अर्थात् वन्धन से छूटना मुक्ति है। जहाँ वन्धन नही, वहाँ मुक्ति भी नही। जीवात्मा वद्ध है, इसलिए इसको मुक्ति की आवश्यकता है। —स्वामी दयानन्द

मुक्तिमिच्छसि चेत्तात विषयान् विषवत् त्यज।
क्षमार्जवदयाशौचसत्य पीयूषवत् पिव ॥ —अज्ञात

भाई ! यदि तुझे मुक्ति की इच्छा है तो विषयो को विष के समान त्याग दे तथा क्षमा, सरलता, दया, पवित्रता और सत्य को अमृत के समान ग्रहण कर।

परमेश्वर के ज्ञान विना मुक्ति पाने का कोई दूसरा मार्ग नहीं है।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

मुक्त पुरुष के जीवन का चिन्तन करने से हमें अपनी मुक्ति के दर्शन होते हैं।

—ज्ञानदेव

मुख

मानव का मुख तो उसका अपना जीवनग्रंथ है। —साने गुरुजी

छिप्यो छवीलो मुख लसै, नीले अंचल चीर।
मनो कलानिधि झलमलै, कालिन्दी के नीर॥ —विहारी

मुसीवत (दे० "दुख", "विपत्ति")

जेहि अंचल दीपक दुरो, हन्यो सो ताही वात।
रहिमन असमय के परे, मित्र शत्रु ह्वै जात॥ —रहीम

इशरते कतरा है दरिया में फना हो जाना।
दर्द का हद से गुजरना है दवा हो जाना॥ —गालिव

Misery acquaints a man with strange bedfellows.
मुसीवत के दिनो में अजीव अजीव लोगो से जान-पहचान हो जाती है।

—शेक्सपियर

Fire tries gold, misery tries brave men.
अग्नि सोने को परखती है, मुसीवत वीर पुरुषो को। —सेनेका

मुरली

अधर धरत हरि के परत, ओठ दीठि पट ज्योति।
हरित वाँस की बाँसुरी इन्द्र-धनुष रंग होति॥ —विहारी

किती न गोकुल कुलवधू, काहि न किन सिख दीन।
कौनें तजी न कुल-गली, ह्वै मुरली-सुर लीन॥ —विहारी

मुसकान (दे० "प्रसन्नता", "हँसी")

जिस मनुष्य का मुखमण्डल मुसकराता हुआ न हो, उसे दुकान नहीं खोलनी चाहिए। —चीनी कहावत

जिस मुख पर मुसकान नहीं आती वह अच्छा नहीं होता। —मार्शल

A beautiful smile is to the female countenance what sunbeam is to the landscapes, it embellishes an inferior face, redeems an ugly one

नारी के चेहरे पर सुन्दर मुसकान वैसी ही है जैसे प्राकृतिक दृश्य पर सूर्यकिरणें। साधारण चेहरे को यह शोभावान् बना देती है और कुरूप को दीप्तिमान्।

—लेवेटर

Smile enriches those who receive, without impoverishing those who give.

मुसकान पानेवाला मालामाल हो जाता है, परन्तु देनेवाला दरिद्र नहीं होता।

Smile is rest to the weary, daylight to the discouraged, sunshine to the sad and Nature's best antidote for trouble.

मुसकान थके हुए के लिए विश्राम है, हतोत्साह के लिए दिन का प्रकाश है, उदास के लिए धूप तथा कष्ट के लिए प्रकृति का सर्वोत्तम प्रतिकार है। —अज्ञात

मुसकान, जो शिशु के अधरों पर क्रीडा कर रही है, ऐसा प्रतीत होता है मानो शरद् के विलीन होनेवाले बादलों की कोर को छूनेवाली द्वितीया के चन्द्र की किरणों तथा ओसों से स्नात प्रभात के स्वप्न से उत्पन्न हुई है। —रवीन्द्र

Smile is love's language.

मुस्कान प्रेम की भाषा है। —हेमर

The odour is to the rose; the smile to the woman.

जैसे गुलाब के लिए सुगन्ध वैसे ही स्त्री के लिए मुसकान। —जानसन

A good laugh is sunshine in a house.

मधुर हास्य मकान में सूर्य प्रकाश के तुल्य है। —थैकरे

मुहब्बत (दे० 'प्रीति', 'प्रेम')

मुहब्बत त्याग की माँ है, जहाँ जाती है, बेटे को साथ ले जाती है। —सुदर्शन

यह इश्क नहीं आसा इतना ही समझ लीजे।
एक आग का दरिया है और डूबके जाना है॥ —जिगर

इलाही तर्क मुहब्बत भी क्या मुहब्बत है,
भुलाते हैं उन्हें वह याद आये जाते हैं। —जिगर

ये दर्द सर ऐसा है कि सर जाये तो जाये।
उल्फत का नशा जब कोई मर जाये तो जाये ॥ —जौक

मूर्ख

वह मूर्खो में भारी मूर्ख है जो जानता है कि इस ससार मे सुख है।
—गुरु रामदास

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नत पीडयन्
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिल पिपासार्दित ।
कदाचिदपि पर्यटञ्छशविषाणमासादयेद्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥ —भर्तृहरि

यत्नपूर्वक पेरने से रेत मे से तेल निकालना सम्भव है, मृगतृष्णा से प्यासे की प्यास बुझाना सम्भव है, ढूढने से खरगोश का सीग भी मिल सकता है परन्तु मर्ख का मन जिस वस्तु की ओर झुक गया है उससे हटाना सम्भव नही है।

विचार-हीन मनुष्य ही मूर्ख है। —शंकराचार्य

अजातमृतमूर्खाणा वरमाद्यौ न चान्तिम ।
सकृद्दु खकरावाद्यौ अन्तिमस्तु पदे पदे —हितोपदेश

जो पुत्र पैदा ही न हुआ हो वा पैदा होकर मृत हो गया हो अथवा मूर्ख हो, इन तीनो में पहले दो ही बेहतर है, न कि तीसरा। कारण यह है कि प्रथम दोनो तो एक बार ही दु ख देते है, जब कि तीसरा पद पद पर दु खकारक होता है।

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्ख शतान्यपि ।
एकश्चन्द्रस्तमोहन्ति न च तारागणैरपि —चाणक्य

एक गुणवान् पुत्र ही बेहतर है, सौ मूर्ख पुत्र नही। एक चन्द्रमा सारा अन्धकार दूर कर देता है जो झुण्ड के झुण्ड तारे नही कर पाते।

मूरख को समझावते ज्ञान गाठि को जाय।
कोयला होय न ऊजरो नौ मन साबुन लाय ॥ —कबीर

मूर्खो की मूर्खता से लाभ उठाना पाप ही है। —आचार्य चतुरसेन

फूलै फलै न बेंत, यदपि सुधा बरषहि जलद।
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलै विरचि सम ॥ —तुलसी

A fool may have his coat embroidered with gold, but it is a fool's coat still.

मूर्ख मनुष्य चाहे सुनहले काम के कपड़े पहन ले फिर भी वे मूर्ख के ही कपडे रहेगे। —रीवारोल

पय पानं भुजङ्गाना केवल विपवर्धनम्।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये॥ —हितोपदेश

जैसे साँपो को दूध पिलाना केवल जहर को बढाना है, वैसे ही मूर्खों को उपदेश करना भी क्रोध को बढानेवाला है, शाति करनेवाला नही।

मूर्ख यदि नही समझता तो सद्ग्रन्थों का क्या दोष? यदि अन्धा नही देखता तो दर्पण का क्या दोष? —अज्ञात

मूर्खस्तु परिहर्तव्य. प्रत्यक्षो द्विपद. पशु।
भिनत्ति वाक्यशल्येन निर्दृश कण्टको यथा॥ —चाणक्य

मूर्ख को दूर करना उचित है, क्योकि देखने में वह मनुष्य यथार्थ में दो पाव का पशु है, और वाक्यरूपी शल्य से वेधता है जैसे अन्धे को काटा।

मूर्ख का हृदय उसके मुख में रहता है, जब कि ज्ञानी की जिह्वा उसके हृदय में। —अज्ञात

Fools may ask more questions in an hour than wise man can answer in seven years

जितने प्रश्नो का उत्तर बुद्धिमान् सात वर्षो में दे सकता है उससे कही अधिक प्रश्न मूर्ख एक घण्टे में पूछता है। —कहावत

वरं पर्वतदुर्गेपु भ्रान्त वनचरै. सह।
न मूर्खजनसपर्क सुरेन्द्रभवनेष्वपि॥ —भर्तृहरि

पर्वतो और वनो मे वनचरो के सग विचरना श्रेष्ठ है, परन्तु मूर्खो के संग स्वर्ग में भी रहना बुरा है।

अज्ञ. सुखमाराध्य. सुखतरमाराध्यते विशेपज्ञ।
ज्ञानलवदुर्विदग्ध ब्रह्मापि तं नर न रञ्जयति॥ —भर्तृहरि

अनजान मनुष्य को आसानी से सुधार सकते हैं, ज्ञानियो को अति सुख से वशीभूत कर सकते हैं, परन्तु अल्पज्ञ मूर्ख को ब्रह्मा भी नही सुधार सकता।

मूर्ख छ: बातो से जाना जा सकता है—अकारण क्रोध, बिना लाभ के वार्त्तालाप, बिना विकास के बदलना, बिना आधार पूछताछ, अपरिचित व्यक्ति का विश्वास करना और शत्रु को मित्र समझना। —अज्ञात

Fools make feasts, and wise men eat them

मूर्ख दावत देते हैं और बुद्धिमान उसे खाते हैं। —कहावत

प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्राङ्कुरात्
समुद्रमपि सतरेत् प्रचलदूर्मिमालाकुलम्।
भुजगमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद्धारयेत्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्॥ —भर्तृहरि

मनुष्य घडियाल के मुख से बलपूर्वक मणि निकाल सकता है और भयकर लहरें उठती हो ऐसे दुस्तर समुद्र को भी तैरकर पार कर सकता है, कोपित सर्प को पुष्प की भाँति सिर पर धारण कर सकता है, परन्तु हठी मूर्खो के चित्त को नही मना सकता।

शक्यो वारयितु जलेन हुतभुक्छत्रेण सूर्यातपो
नागेन्द्रो निशिताङ्कुशेन समदो दण्डेन गोगर्दभौ।
व्याधिर्भेषजसग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विष
सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहित मूर्खस्य नास्त्यौषधम्॥ —भर्तृहरि

जल से अग्नि को रोकना सम्भव है, छतरी से धूप का निवारण करना सम्भव है, मतवाला हाथी भी अकुश से वश में हो सकता है, गौ, गर्दभ आदि चौपायो को डडे से वश में कर सकते है, रोग को विविध प्रकार की औषधियो से दूर करना सम्भव है और मत्र द्वारा विष भी उतर जाता है, इस प्रकार पृथ्वी पर सब वस्तुओ की शास्त्रोक्त औषध है परन्तु मूर्ख की कोई औषध नहीं है। —भर्तृहरि

शत दद्यान्न विवदेदिति विज्ञस्य सम्मतम्।
विना हेतुमपि द्वन्द्वमेतन्मूर्खस्य लक्षणम्॥ —हितोपदेश

अपनी सैकडो की हानि सह ले परन्तु विवाद न करे यह बुद्धिमान् का मत है, और बिना कारण ही कलह कर बैठना यह मूर्ख का लक्षण है।

मूर्खता

To stumble twice against the same stone is a proverbial disgrace

उसी पत्थर से दुबारा टकराना मूर्खता है। —सिसरो

साधु के मस्तिष्क में भी मूर्खता का कोना होता है। —कहावत

जिसके साथ प्रेम किया जाय उसके चरित्र पर शंका करना भारी मूर्खता है।—अज्ञात

कठोर सत्य की दुहाई देकर जीवन की मेल-जोलवाली चाल में लडखडाहट उत्पन्न कर देना मूर्खता है। —अज्ञात

The folly of one man is the fortune of another

एक की मूर्खता से दूसरे का भाग्य बनता है। —बेकन

मूर्च्छा

मूर्छा निद्रा की सहोदरा है। जिस प्रकार निद्रा श्रमित विश्व को अपने विशाल वक्ष स्थल पर सुलाकर शान्ति प्रदान करती है, उसी प्रकार मूर्छा भी व्यथित प्राणी को अपनी गोद में लेकर उसे शान्ति प्रदान करके फिर तुमुल सग्राम के लिए प्रस्तुत करती है। —अज्ञात

मूर्ति-पूजा

मूर्ति मे जिनकी इष्ट-भावना होती है वे ही विश्वासपूर्वक उसकी पूजा करते हैं इस सत्य को हृदय में उतारने के लिए विश्वास चाहिए। —स्वामी विवेकानन्द

मूर्ति में भावना का मौन दर्शन होता है। —साने गुरुजी

मूर्तिपूजा सर्वव्यापी परमात्मा के दर्शन की पहली सीढ़ी है। —अज्ञात

मूल्य

Worth begets in base minds, envy; in great souls, emulation.

गुण नीच पुरुषो में द्वेष और महान् व्यक्तियो में स्पर्धा पैदा करता है। —फील्डिंग

मेरे विचार से मनुष्य का मूल्य उसके काम या उसके कथन से नहीं, बल्कि वह जीवन में स्वयं क्या बन रहा है इसे देखकर आँकना चाहिए। —अरविन्द

मृत्यु

That which ends in exhaustion is death but the perfect ending is in the endless.

मृत्यु थकावट के सदृश है, परन्तु सच्चा अंत तो अनंत की गोद में है। —रवीन्द्र

मृत्यो न किंचिच्छक्यस्त्वमेको मारयितु वलात्।
मारणीयस्य कर्माणि तत्कर्तृणीति नेतरत्॥ —योगवाशिष्ठ

हे मृत्यु, तू स्वय अपनी शक्ति से किसी मनुष्य को नही मार सकती। मनुष्य किसी दूसरे कारण से नही स्वय अपने ही कर्मो से मारा जाता है।

मृत्यु सच्चा मित्र है। हमारा अहभाव हमको दु ख देता है। —महात्मा गांधी

सभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते। —गीता

सम्मानित पुरुष के लिए अपकीर्ति मृत्यु से भी बुरी है।

शरीर का नाश होना मृत्यु नही है। मृत्यु है वास्तव में पापो की वासना।
—अज्ञात

मृत्यु से नया जीवन मिलता है। जो व्यक्ति और राष्ट्र मरना नही जानते, वे जीना भी नही जानते। केवल वही जहाँ कब्र है, पुनरुत्थान होता है।
—जवाहरलाल नेहरू

जीने की एक राह है, मरने की सौ। —कहावत

Death is the golden key that opens the palace of eternity.
मृत्यु वह सोने की चाभी है जो अमरता के महल को खोल देती है। —मिल्टन

जो मरना जानते हैं उनके लिए मौत भयकर नही है। —अज्ञात

मृत्यु भी धर्मनिष्ठ प्राणी की रक्षा करती है। —कौटिल्य

Hunger and thirst scarcely kill any but gluttony and drink kill a great many

क्षुधा और प्यास से जितनो की मृत्यु होती है उनसे कही अधिक लोगो की मृत्यु अधिक भोजन और मदिरा-सेवन से होती है। —कहावत

मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ हो जाती है। जन्म भर की घटनाएँ एक एक कर सामने आती है। समय की धुध बिल्कुल उन पर से हट जाती है।
—चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

जीवन की चलती हुई तसवीर के लिए मृत्यु ही एक समुचित चौखट है।—
—एक जर्मन दार्शनिक

वृद्ध मनुष्य मृत्यु के पास जाते है लेकिन युवको के पास मृत्यु स्वय आती है।
—अज्ञात

Be of a good cheer about death, and know this of a truth, that no evil can happen to a good man, either in life or after death.

मृत्यु के वारे में सदैव प्रसन्न रहो, और इसे सत्य मानो कि भले आदमी पर जीवन में या मृत्यु के पश्चात् कोई वुराई नही आ सकती। —सुकरात

आह! मृत्यु कितनी भयानक वस्तु है। नही प्यारे, यह सव इस कारण है कि हमने इससे अपनी जान-पहचान वढाने का उद्योग नही किया। —मेरीवेल

अपकीर्ति ही मृत्यु है। —स्वामी शंकराचार्य

दुष्टा भार्या शठ मित्र भृत्यश्चोत्तरदायक।
ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न सशय॥ —चाणक्य

दुष्ट स्त्री, कपटी दोस्त, जवाव देनेवाला नौकर और सर्प वाले घर में रहना मौत ही है, सन्देह नही।

मृत्यु तो प्रभु का आमंत्रण है। जव वह आये तो द्वार खोलकर उसका स्वागत करो और चरणो में हृदयधन सौंप अभिवादन करो। —रवीन्द्र

Death is the liberator of him whom freedom cannot release; the physician of him whom medicine cannot cure; the comforter of him whom time cannot console.

मृत्यु उसकी मुक्तदायिनी है जिसे स्वतत्रता मुक्त नही कर सकती, यह उसकी चिकित्सक है जिसे औषध निरोग नही कर सकती, यह उसकी आनन्ददायिनी है जिसे समय सांत्वना प्रदान नही कर सकता। —कोल्टन

मृत्यु का दूत अधा और वहरा है। यदि उसके नेत्र और कान होते तो जगत् में वहुत से विनाश के हृदयवेधक दृश्य न देख पड़ते। —सुदर्शन

He whom the gods love dies young.
जिसे देवता प्यार करते हैं वह जल्दी मरता है। —अज्ञात

सहैव मृत्युर्व्रजति सह मृत्युर्निषीदति।
गत्वा सुदीर्घमध्वानं सह मृत्युर्निवर्तते॥ —वाल्मीकि (रा०)

मृत्यु साथ ही चलती है, वह साथ ही वैठती है और सुदूरवर्ती पथ पर भी साथ-साथ जाकर साथ ही लौट आती है।

The fountain of death makes the still water of life play.
मृत्यु का फव्वारा जीवन के स्थिर जल को नर्त्तन कराता है। —रवीन्द्र

मृदुता

तुल्येऽपराधे स्वर्भानुर्भानुमन्त चिरेण यत्।
हिमांशुमाशु ग्रसते तन्म्रदिम्न स्फुट फलम्॥ —माघ

अपराध के समान होने पर भी राहु सूर्य को चिरकाल बाद और चन्द्रमा को शीघ्र ही जो ग्रसता है, सो (चन्द्रमा की) मृदुता का ही स्पष्ट परिणाम है।

मेहमान (दे० "अतिथि")

मेहमान नारायण का साक्षात् स्वरूप होता है। उसकी सेवा बड़े सौभाग्य से प्राप्त होती है। —स्वामी श्रद्धानन्द

मेहरबानी (दे० "दया")

किसी की मेहरबानी मांगना अपनी आजादी बेचना है। —महात्मा गांधी

मैं

जब "मैं" है तब हरि नहीं, हरि है तब मैं नाहिं।
प्रेम गली अति साँकरी, ता में द्वै न समाहिं॥ —कबीर

अहं ब्रह्मास्मि। —बृहदारण्यकोपनिषद्

मैं ब्रह्म हूँ।

मैं और मेरे पिता दोनों एक हैं। —महात्मा ईसा

I am the master of my fate, I am the captain of my soul

मैं ही अपने भाग्य का मालिक हूँ और मैं ही अपनी आत्मा का सेनाध्यक्ष हूँ। —हैनले

हर एक को ये दावा है कि हम भी हैं कोई चीज।
और हमको है ये नाज कि हम कुछ भी नहीं है॥ —अकबर

जब मैं अपने गुण और दूसरे के दोषों को देखता हूँ तो मुझे मालूम होता है कि मैं कोई महात्मा नहीं तो साधु पुरुष अवश्य हूँ। पर मैं जब अपने दोष और दूसरे के गुणों पर विचार करता हूँ तो सहसा कह उठता हूँ—"मो सम कौन कुटिल खल कामी" —हरिभाऊ उपाध्याय

मोक्ष

मोक्षस्य न हि वासोऽस्ति न ग्रामान्तरमेव वा।
अज्ञान-हृदय-ग्रन्थि-नाशो मोक्ष इति स्मृत.॥ —शिवगीता

मोक्ष किसी स्थान पर रखा हुआ नही मिलता और न उसको ढूढने के लिए किसी दूसरे गांव को ही जाना पडता है। हृदय की अज्ञानग्रन्थि का नष्ट होना ही मोक्ष कहा जाता है।

द्वे पदे बन्धमोक्षाय निर्ममेति ममेति च।
ममेति बध्यते जन्तुर्निर्ममेति विमुच्यते॥
—वेदव्यास (महाभारत)

बन्धन और मोक्ष के दो ही आश्रय हैं—ममता और ममता-शून्यता, ममता से प्राणी बन्धन में पडता है और ममतारहित होने पर मुक्त हो जाता है।

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणा.।
गच्छन्त्यपुनरावृत्ति ज्ञाननिर्धूतकल्मषा ॥ —गीता

ज्ञान द्वारा जिनके पाप धुल गये हैं, वे ईश्वर का ध्यान धरनेवाले, तन्मय हुए, उसमें स्थिर रहनेवाले, उसी को सर्वस्व माननेवाले लोग मोक्ष पाते हैं।

असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुष । —गीता

फल की अभिलाषा छोड कर कर्म करनेवाला पुरुष मोक्ष पाता है।

मोह

मोह ही भय का कारण है। —अज्ञात

बुद्धि का नाश ही मोह है, वह धर्म और अर्थ दोनो को नष्ट करता है। इससे मनुष्य में नास्तिकता आती है और वह दुराचार में प्रवृत्त हो जाता है।
—वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

जहँ लग सब ससार है मिरग सबन को मोह।
सुर नर नाग पाताल अरु ऋषि मुनिवर सब मोह। —कबीर

काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धारि।
तिन्ह महँ अति दारुन दुखद मायारूपी नारि॥ —तुलसी (दो०)

मोहताज

सर्वदा दूसरो की सगति का मोहताज रहना ही अज्ञान की अवस्था का दर्शक है।

— अज्ञात

मौत (दे० 'मृत्यु')

मृत्यु नही वरन् बीमारी हमें कष्ट पहुचाती है, क्योकि बीमारी हमें निरन्तर तन्दुरुस्ती की याद दिलाती है और फिर भी हमें उससे वचित रखती है।

— रवीन्द्र

Death's stamp gives value to the coin of life, making it possible to buy with life what is truly precious

मौत की छाप जीवन के सिक्के को मूल्यवान् बना देती है। इसलिए जीवन देकर वास्तव में मूल्यवान् वस्तु का खरीदना सम्भव हो जाता है। — रवीन्द्र

मौन

मौन उस अवस्था को कहते हैं जो वाक्य और विचार से परे है, शून्य ध्यान-अवस्था है। मौन में ही अनत वाणी की ध्वनि है।

— अज्ञात

मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना ही चाहिए तो कम से कम बोलो। एक शब्द से काम चले तो दो नही।

— महात्मा गाधी

नापृष्टः कस्यचिद् ब्रूयान्नाप्यन्यायेन पृच्छतः।
ज्ञानवानपि मेधावी जडवल्लमुपाविशेत्॥

— वेदव्यास (महाभारत, शातिपर्व)

किसी के प्रश्न किये बिना न बोले, तथा कोई अन्याय से कोई प्रश्न करता हो तब भी न बोले। मेधावी विद्वान् पुरुष (जानने पर भी नियमानुसार प्रश्न किये बिना) मूर्ख पुरुष की तरह व्यवहार करे।

None preaches better than the ant and she says nothing

चीटी से अच्छा कोई उपदेश नही देता, और वह मौन रहती है।

— फ्रैंकलिन

"What language is thine, O sea"
"The language of eternal question"
"What language is thy answer, O sky"
"The language of eternal silence."

"हे सागर, तेरी भाषा क्या है?"
"अनत प्रश्न की भाषा"
"हे आकाश, तेरे उत्तर की भाषा क्या है?"
"अनत मौन की भाषा।" —रवीन्द्र

Silence is more eloquent than words
मौन में शब्दो की अपेक्षा अधिक वाक्शक्ति होती है। —कारलाइल

भय से उत्पन्न मौन पशुता और सयम से उत्पन्न मौन साधुता है।
—हरिभाऊ उपाध्याय

मौन अवस्था में "मैं" का लोप हो जाता है। फिर कौन सोचे और बोले।
—अज्ञात

The rest is silence.
विश्राम मौन है। —शेक्सपियर

Silence in women is like speech in men; deny it who can.
स्त्री का मौन पुरुष की वाणी के सदृश होता है। इससे कौन इन्कार कर सकता है। —बेनजान्सन

अप्रिय शब्द बोलने से मौन रहना अच्छा है। —अज्ञात

विधाता ने मौन अर्थात् चुप रहना ही अज्ञानता का ढकना बनाया है, यह मनुष्य के अधीन है तथा इसमें और भी अनेक गुण हैं। यही ज्ञानियो की सभा में अज्ञानियो का आभूषण है। —भर्तृहरि

मौनं सम्मति लक्षणम्। मौन सम्मति का चिह्न है। —कहावत

मौन अवस्था में भगवद्भक्ति वेग से मनुष्य की ओर बढती है। मनुष्य फिर देव स्वरूप होकर भगवद् रूप को प्राप्त होता है। —अज्ञात

Still waters run deep.
स्थिर जल बहुत गहरा होता है। —अंग्रेजी कहावत

वाद विवादे विष घना, बोले बहुत उपाध।
मौन गहे सबकी सहै, सुमिरै नाम अगाध॥ —कबीर

आओ हम मौन रहें ताकि फरिश्तों की काना-फूसियाँ सुन सकें। —एमर्सन

मौन एक बहुत शक्तिशाली अस्त्र है जिसे हममें से बहुत कम लोग व्यवहार में ला सकते हैं। —अज्ञात

Rapture is born dumb
अत्यन्त हर्ष गूंगा उत्पन्न हुआ है। —अज्ञात

मौन निद्रा के सदृश है। यह ज्ञान में नयी स्फूर्ति उत्पन्न करता है। —बेकन

जैसे घोंसला सोती हुई चिड़ियों को आश्रय देता है वैसे ही मौन तुम्हारी वाणी को आश्रय देगा। —रवीन्द्र

Silence is wisdom and gets friends
मौन बुद्धिमानी है और मित्र बनाती है। —कहावत

स्त्री में मौन सर्वोत्तम आभूषण है। —कहावत

विपत्ति में मौन रहना अति उत्तम है। —ड्राइडेन

यज्ञ

यज्ञ अर्थात् परोपकारार्थ किये हुए कर्म, भूत-मात्र ईश्वर की सृष्टि है। उसकी सेवा देश-सेवा है। और वह यज्ञ है। —महात्मा गांधी

यज्ञशिष्टाशिन सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः। —गीता

जो मनुष्य यज्ञ से बचा हुआ खानेवाले हैं, वे सब पापों से छूट जाते हैं।

यज्ञ का अर्थ है मुख्यतः परोपकारार्थ शरीर का उपयोग। —महात्मा गांधी

यश (दे० "कीर्ति")

सर्वे नन्दन्ति यशसागतेन सभासाहेन सख्या सखाय ।
किल्विषस्पृत् पितुषणिर्ह्येषामरं हितो भवति वाजिनाय॥ —ऋग्वेद

यश मित्र का काम करता है, वह सभा-समाज में प्रधानता प्राप्त कराता है। इसको प्राप्त कर सभी प्रसन्न होते हैं, क्योंकि यश के द्वारा दुर्नाम दूर होता है, अन्न प्राप्त होता है, शक्ति मिलती है और सब तरह से लाभ होता है।

The temple of fame stands upon the grave, the flame upon its altars is kindled from the ashes of the dead

कब्र पर यश का मदिर खड़ा होता है और मृतक की राख से उस पर चिराग जलता है। —हैजलिट

यश त्याग से मिलता है, धोखे-धड़ी से नही। —प्रेमचन्द

जो विचारशील है उनका सिद्धान्त है कि यश और सत्कर्म का वही सम्बन्ध है जो धुआ और अग्नि का। —अज्ञात

Only the actions of the just smell sweet and blossom in the dust.

केवल निष्पक्षपाती के कर्म ही मधुर सुगन्ध देते है और धूल मे खिलते है। —शर्ले

धन तो काल पाकर क्षय हो जाता है, पर यशरूपी धन अक्षय है, इसको काल भी नष्ट नही कर सकता। —अज्ञात

The way to fame is like the way to heaven, through much tribulation.

यश का मार्ग स्वर्ग के मार्ग के तुल्य बड़ा कष्टमय है। —स्टर्न

यश-प्राप्ति की मधुर आशा, मनुष्य को जन्म भर सुपथ पर चलाया करती है। —अज्ञात

यशस्वी

देवतुल्य विद्वानो, घर के बूढो, संन्यासियो, अतिथियो और मानवता की सहानुभूति के पात्र मनुष्यो की जो ठीक प्रकार से सेवा करता है वही पुरुष संसार में यशस्वी होता है। —अज्ञात

याचक

तृण लघु तृणात्तूल तूलादपि च याचक.।
वायुना किं न नीतोऽसौ मामय याचयिष्यति॥
—चाणक्य

तृण हलका होता है, तृण से हलकी रुई होती है, रुई से भी हलका याचक होता है; वायु उसको इसी कारण से नही उड़ाती कि कही यह मुझसे भी कुछ माँगने लगेगा।

याचना (दे० 'भिक्षा', 'मांगना')

सेवेव मानमखिलं ज्योत्स्नेव तमो जरेव लावण्यम्।
हरिहरकथेव दुरितं गुणशतमप्यर्थिता हरति॥ —हितोपदेश

जैसे सेवा सब मान को, चांदनी अंधकार को, बुढ़ापा खूबसूरती को, और विष्णु तथा महादेव की कथा पापों को हरती है वैसे ही याचना सैकड़ों गुणों को हर लेती है।

निर्गलिताम्बुगर्भं शरद्घनं नार्दति चातकोऽपि। —कालिदास

पपीहा भी बिना जलवाले बादलों से पानी नहीं मांगता।

वरं विभवहीनेन प्राणैः सन्तर्पितोऽनलः।
नोपचारपरिभ्रष्टः कृपणः प्रार्थितो जनः॥ —हितोपदेश

धनहीन मनुष्य प्राणों को अग्नि में झोंक दे तो अच्छा, परन्तु अपने मान को छोड़कर कृपण मनुष्य से याचना करना अच्छा नहीं है।

याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा। —कालिदास

सज्जन से निष्फल याचना भी अच्छी है पर दुर्जन से सफल याचना भी अच्छी नहीं।

मांगे मुकुरि न को गयो, केहि न त्यागियो साथ।
मांगत आगे सुख लह्यो, ते रहीम रघुनाथ॥ —रहीम

यात्रा

यात्रा में सत्संगति रास्ते को छोटा बना देती है। —अज्ञात

यात्री

अनुभवहीन यात्री पंख रहित पक्षी के सदृश है। —सादी

याद (दे० "स्मृति")

याद हमारे जीवन को हरा भरा रखने के लिए हमारे साथ बसन्त [illegible] रहता है।
—[illegible]

Sorrows remembered sweeten present joy.
दुख की याद वर्तमान प्रसन्नता को मधुर बना देती है। —पोलक

याद पख है, जो प्राण के परिन्दे को जीवन के उच्चतर आकाश में उड़ने का पुरुषार्थ देती है। —अज्ञात

Pleasure is flower that fades; remembrance is the lasting perfume.

आनंद पुष्प है जो मुरझा जाता है, किन्तु उसकी याद शाश्वत सुगन्ध है।

याद ही केवल ऐसा स्वर्ग है जहां से हम कभी भगाये नही जा सकते। —रिचर

युग

कलियुग में रहना है या सतयुग में। यह तो स्वयं चुनो, तुम्हारा युग तुम्हारे पास है। —विनोबा

युद्ध

When a man's fight begins within himself he is worth something.

जब मनुष्य का युद्ध अपने आप के साथ आरम्भ होता है तब उसका कुछ मूल्य होता है। —ब्राउनिंग

धर्म-युद्ध में मरने के बाद भी बहुत कुछ बाकी रह जाता है; हार को पार करके मिलती है जीत, और मृत्यु को पार करके मिलता है अमृत। —रवीन्द्र

War is business of barbarians.

युद्ध असभ्य लोगों का व्यापार है। —नेपोलियन

अधर्म-युद्ध में 'मरना' मरना कहलाता है। —रवीन्द्र

युद्ध की विधि भी विजय का आधार है। —अज्ञात

War is a profession by which a man cannot live honourably; an employment by which the soldier, if he would reap any profit, is obliged to be false, rapacious and cruel.

युद्ध ऐसा पेशा है, जिसमें मनुष्य सम्मानपूर्वक नही रह सकता। यह ऐसी नौकरी है, जिसमें लाभ कमाने के लिए सैनिक को छली, लुटेरा और क्रूर बनना पड़ता है। —मेकियावेली

धर्म-युद्ध बाहरी जीत जीतने के लिए नही होता, वह तो हार कर भी जीतने के लिए होता है। —रवीन्द्र

युवक

The youth who does not look up will look down; and the spirit that does not sour is destined perhaps to grovel

युवक जो ऊपर नहीं देखता नीचे देखेगा, आत्मा जो आकाश में नहीं उड़ती विनीत हो जाती है। —डिज़रायली

योग

योगश्चित्तवृत्तिनिरोध । —पतंजलि

चित्त की वृत्तियों को वश में रखना ही योग है।

सभी चिन्ताओं का परित्याग कर निश्चिन्त हो जाना ही योग है।

—योगशास्त्र

योग कर्मसु कौशलम्—कार्य में कुशलता को योग कहते हैं।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

आत्मसाक्षात्कार का एकमात्र उपाय योग है। —सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)

नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः।
न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन॥
युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

जो बहुत भोजन करता है उसका योग सिद्ध नहीं होता, जो निराहार रहता है उसका भी योग सिद्ध नहीं होता, जो बहुत सोता है उसका भी योग सिद्ध नहीं होता, और जो बहुत जागता है उसका भी योग सिद्ध नहीं होता।

जो मनुष्य आहार-विहार में, दूसरे कर्मों में, सोने-जागने में परिमित रहता है, उसका योग दुःखभंजन हो जाता है।

योगी

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः॥ —गीता

सर्वत्र समभाव रखनेवाला योगी अपने को सब भूतों में और सब भूतों को अपने में देखता है।

न तस्य रोगो न जरा न मृत्यु प्राप्तस्य योगाग्निमय शरीरम। —उपनिषद्

जिसने योगाभ्यास की अग्नि से अपने शरीर को खूब तपा लिया, उसे फिर न रोग सताता है न बुढापा। मृत्यु भी उसके पास आते डरती है।

यो मा पश्यति सर्वत्र सर्व च मयि पश्यति।
तस्याह न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

जो मुझे सर्वत्र देखता है और सबको मुझमें देखता है, वह मेरी दृष्टि से ओझल नहीं होता और मैं उसकी दृष्टि से ओझल नहीं होता।

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुख वा यदि वा दु ख स योगी परमो मत॥ —गीता

जो मनुष्य अपने जैसा सबको देखता है और सुख हो या दु ख दोनो को समान समझता है वह योगी श्रेष्ठ गिना जाता है।

योग्य

The winds and waves are always on the side of the ablest navigators.

आंधियाँ और समुद्री लहरें निरतर सबसे योग्य नाविको का साथ देती है।—गिबन

They are able because they think they are able.

जो अपने को योग्य समझते हैं वे योग्य हैं। —वर्जिल

योग्य आदमी के लिए धन और यश की कमी नही रहती। —अज्ञात

योग्यता

Ability is of little account without opportunity.

बिना अवसर प्राप्त हुए योग्यता से लाभ कम होता है। —नेपोलियन

अपनी योग्यता को छिपाने के लिए भी बडी योग्यता की आवश्यकता होती है।

—ला रोशोको

केवल सफेद बाल, सिकुड़ी हुई खाल और पोपला मुह या झुकी हुई कमर किसी को आदर का पात्र नही बना देती। न जनेऊ या तिलक या पडित या शर्मा की उपाधि ही भक्ति की वस्तु है। —प्रेमचन्द

There never was a bad man, that had ability for good service
जिसमें अच्छी सेवा की योग्यता है, ऐसा मनुष्य कभी बुरा नहीं हो सकता।

—बर्क

From each according to his ability, to each according to his needs.

योग्यता के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को न मिलकर उसकी आवश्यकता के अनुसार उसको मिलना चाहिए। —कार्ल मार्क्स

यौवन (दे० "जवानी")

युवावस्था आवेशमय होती है, क्रोध से आग हो जाती है तो करुणा से पानी भी हो जाती है। —प्रेमचन्द

यौवन का शक्ति-प्रवाह बहुधा बौद्धिक आँखों की दृष्टि ज्योति को हरण [illegible] है, मनुष्य की सूझ-बूझ सतर्कता पर पानी फेर देती है। —अज्ञात

Youth is a continual intoxication, it is the fever of reason
यौवन एक निरन्तर मादकता है, यह बुद्धि का ज्वर है। —रूशेफोको

तरुणाई की नयी उमग ऐसी चीज है कि उसके जोश में आकर मनुष्य [illegible] भी चूर चूर कर सकता है। —अज्ञात

युवावस्था बहुत सुन्दर है, सन्देह नहीं, पर जहाँ जीवन की गहनता [illegible] है, वहा यौवन का कोई मूल्य नही रह जाता। —डान्टाएल [illegible]

जिन्दगी और दौलत की तरह, जवानी को भी [illegible] नहीं [illegible]।

—अज्ञात

यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्॥ —हितोपदेश

यौवन, धन-सम्पत्ति, प्रभुत्व (अधिकार) और अ[illegible] एक अनर्थकारी होता है। जहाँ ये चारों [illegible], वहाँ [illegible]

रक्त (दे० "खून")

रुधिर के सूखे हुए धब्बे [illegible] पुकारता है। —[illegible]

रक्षा

शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्ष्य न तद्यशः शस्त्रभृता क्षिणोति।

—कालिदास

जिसकी शस्त्रों से रक्षा हो ही नही सकती, उसकी यदि शस्त्रधारी रक्षा न कर सके तो इससे उसका अपयश नहीं होता।

आपदर्थे धनं रक्षेद्दारान् रक्षेद्धनैरपि।
आत्मानं सततं रक्षेद्दारैरपि धनैरपि॥ —चाणक्य

विपत्ति के लिए धन को बचाना चाहिए, धन से स्त्री को बचाना चाहिए, स्त्री और धन से सदा अपने को बचाना चाहिए।

रमणी (दे० "नारी", "स्त्री")

रमणी की कातर दृष्टि में जो बल, जो कर्तृत्व-शक्ति है, वह मानव शक्ति की संचालक है। —जयशंकर प्रसाद

रमणी! तेरे हास में जीवन-स्रोत का संगीत है। —रवीन्द्र

रत्न-जटित मखमली म्यान में जैसे तेज तलवार छिपी रहती है, जल के कोमल प्रवाह में जैसे असीम शक्ति छिपी रहती है वैसे ही रमणी का कोमल हृदय साहस और धैर्य को अपनी गोद में छिपाये रहता है। —प्रेमचन्द

रमणी का अनुराग कोमल होने पर भी बड़ा दृढ होता है। वह सहज में छिन्न नही होता। जब वह एक बार किसी पर मरती है तब उसी के पीछे मिटती भी है।

—जयशंकर प्रसाद (जनमेजय का नागयज्ञ)

रमणीयता

क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः। —माघ

क्षण-क्षण में जो वस्तु को अपूर्व सुन्दरता अथवा नवीनता प्राप्त होती है, वही रमणीयता का सच्चा स्वरूप है।

रस

एषा भूतानां पृथिवी रसः पृथिव्या आपो रसः अपामोषधयो रसः ओषधीनां पुरुषो रसः पुरुषस्य वाग्रसः —छांदोग्य उपनिषद

समस्त भूतो का रस पृथ्वी है, पृथ्वी का रस जल है, जल का रस ओषधियां है
ओषधियो का रस पुरुष है और पुरुष का रस वाणी है।

जिसने छोटे छोटे रसो को जीतने का प्रयत्न नही किया, उसे वे ऐन मौके प
दगा देते हैं। —महात्मा गांधी

रहस्यवाद

तमाम आर्य संस्कृति रहस्यवाद पर प्रतिष्ठित है, रामायण, महाभारत रहस्यवा
के ग्रन्थ है, सब ऋषि, कवि, रहस्यवादी थे, रहस्यवाद ही सर्वोच्च साहित्य है।
—निराला

बुद्धि के सूक्ष्म धरातल पर कवि ने जीवन की अखण्डता का मनन किया, हृद
की भाव भूमि पर उसने प्रकृति मे बिखरी सौन्दर्यसत्ता की रहस्यमयी अनुभूति की और
दोनो को मिलाकर एक ऐसी काव्य-सृष्टि उपस्थित कर दी जो प्रकृतिवाद, हृदयवा
अध्यात्मवाद, रहस्यवाद आदि अनेक नामो का भार सभाल सकी।
—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

राग

राग के समान कोई दुख नही है। —वेदव्यास (महाभारत, शांति पर्व)

किसी भी वस्तु तथा व्यक्ति के प्रति अपनत्व के भाव से मन का [illegible]
राग है। —[illegible]

राग-द्वेष

राग द्वेष ईर्ष्या मद मोहू। जनि सपनेहु इनके बस होहू।
—तुलसी (मानस-अयोध्या०)

जब तक राग-द्वेष वर्तमान है, तब तक कोई भी न तो योगी है, न भक्त है और न
ज्ञानी ही है। —[illegible]

राग-द्वेष के अभाव से ही कर्म योग, भक्ति योग ज्ञान योग की सिद्धि होती
है, जब तक राग द्वेष है तब तक विषमता है और [illegible]
परमात्मा से बहुत दूर है। —[illegible]

राजदूत

An ambassador is an honest man who lies and intrigues abroad for the benefit of his country.

राजदूत एक ईमानदार व्यक्ति है, जो विदेश में अपने देश के लाभार्थ रह कर षड्यंत्र रचता है। —अज्ञात

नीति विरोध न मारिय दूता। —तुलसी (मानस-सुन्दर०)

सहज विवेक, आकर्षक रूप, मननशील विद्या, ये तीनों जिसमें हो, वही राजदूत बनने योग्य है। —संत तिरुवल्लुवर

दयालु हृदय, उच्चकुल और राजाओं को प्रसन्न करनेवाले उपाय—ये सब राजदूतो के विशेष गुण हैं। —संत तिरुवल्लुवर

प्रेम-मय प्रकृति, सुतीक्ष्ण बुद्धि और वाक्पटुता—ये तीनो बातें राजदूत के लिए अनिवार्य हैं। —संत तिरुवल्लुवर

राजधर्म

राजधर्म सब होइ सूर तहँ, प्रजा न जाय सताए। —सूरदास

मुखिया मुख सो चाहिये, खान पान कहुं एक।
पालै पोषै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक। —तुलसी

राजनीति

राजनीति साधुओ के लिए नही है। —लोकमान्य तिलक

There is no gambling like politics

राजनीति के सदृश कोई दूसरा जुआ नही है। —डिजरायली

Politics is the madness of the many for the gain of the few.

राजनीति कुछ मनुष्यो के लाभार्थ बहुत से व्यक्तियो का उन्माद है।

—एलेक्जेन्डर पोप

मै इस बात से सहमत नहीं हूं कि धर्म का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है। धर्म से विलग राजनीति मृतक शरीर के तुल्य है जो केवल जला देने के योग्य है।

—महात्मा गांधी

कारागार की अपेक्षा राजनीति में उससे अधिक स्वतन्त्रता नहीं है।

—विल रोजर्स

आधुनिक राजनीति मूलत. मनुष्यों का नहीं अपितु शक्तियों का संघर्ष है।

—हेनरी ऐडम

राजनीति में कुज की पुष्प-शैया जल उठती है। लाल फूल अंगारों का रूप धारण कर लेते हैं और शीतल समीर सर्पो की फुफकार बन जाती है।

—डा० रामकुमार वर्मा

All political parties die at last by swallowing their own lies
समस्त राजनीतिक दल अंत में अपने ही असत्यों से नष्ट हो जाते हैं।

—जान अरबुथनट

Practical politics consists in ignoring facts
व्यावहारिक राजनीति यथार्थ को स्वीकार न करने में है। —हेनरी ऐडम

Politics is the art of looking for trouble, finding it everywhere, diagnosing it wrongly and applying unsuitable remedies
राजनीति विपत्तियों को खोजने, उसे सर्वत्र प्राप्त करने, गलत निदान करने और अनुपयुक्त चिकित्सा करने की कला है। —सर अर्नेस्ट बेन

Knowledge of human nature is the beginning and end of political education
मानव स्वभाव का ज्ञान ही राजनीतिक शिक्षा का आदि और अन्त है।

हेनरी ऐडम

सत्यानृता च परुषा प्रियवादिनी च
हिंस्रा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या।
नित्यव्यया प्रचुरनित्यधनागमा च
वेश्याङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा॥ —भर्तृहरि

राजनीति वेश्या के समान अनेक प्रकार से व्यवहार में लायी जाती है। कहीं झूठी, कहीं सच, कहीं कठोर और प्रियभाषिणी होती है, कहीं हिंसक और दयालु होती है, कहीं कृपण और कहीं उदार होती है, कहीं अधिक द्रव्य व्यय करने वाली और कहीं बहुत संचय करने वाली होती है।

राजनीति कहती है, हाथ आये दुश्मन को छोड़ना और अपनी हार स्वीकारना एक ही चीज के दो नाम हैं। —ल्हासा

राजनीतिज्ञ

राजनीतिज्ञ पारे की तरह है। अगर तुम उस पर उंगली रखने की कोशिश करो तो उसके नीचे कुछ नहीं मिलता। —आस्टिन

A politician thinks of the next election, a statesman of the next generation.

राजनीतिज्ञ अगले चुनाव के बारे में और कुशल राजनेता अगली पीढ़ी के बारे में सोचता है। —जे० एफ० क्लार्क

राजनीति-जीवियों की, उनकी नाना छल-चतुराइयों के लिए, हम तारीफ कर सकते हैं, किन्तु उनके प्रति भक्ति नहीं कर सकते। —रवीन्द्र

खाली पेट अच्छा राजनीतिज्ञ परामर्शदाता नहीं है। —आइंस्टीन

राजनीतिक उन्नति

जिस देश को राजनीतिक उन्नति करना हो वह यदि पहले सामाजिक उन्नति नहीं कर लेगा, तो राजनीतिक उन्नति आकाश में महल बनाने जैसी होगी।

—महात्मा गांधी

राजमद

सब ते कठिन राजमद भाई। —तुलसी (मानस-अयोध्या)

सहसबाहु सुरनाथ त्रिशंकू। केहि न राज मद दीन्ह कलंकू॥ —तुलसी

राजसत्ता

यदि राजसत्ता अत्याचारी हो तो किसान का सीधा उत्तर है—जा, जा, तेरे ऐसे कितने ही राज मैंने मिट्टी में मिलते देखे हैं। —सरदार पटेल

राजा

राजा सत्यं च धर्मश्च राजा कुलवतां कुलम्।
राजा माता-पिता चैव राजा हितकरो नृणाम्॥

—वाल्मीकि (रा० अयो०)

राजा सत्य है, राजा धर्म है, राजा कुलीन पुरुषों का कुल है, राजा ही माता और पिता है तथा राजा, समस्त मानवों का हित-साधन करनेवाला है।

जिसे पुरवासी और देश-वासियों को प्रसन्न रखने की कला आती है वह राजा इस लोक और परलोक में सुख पाता है। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

यदि राजा दुश्चरित्र हो तो सारे राष्ट्र को सन्तप्त कर डालता है। —वही

अधर्मी राजा के अत्याचार से प्रजा का नाश हो जाता है। —वही

जिस राजा की प्रजा सरोवर में कमलों के समान विकसित होती रहती है वह सब प्रकार से पुण्य फलों का भागी होता है और अधिक दिन तक उसका यश छाया रहता है। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

यथा दृष्टिः शरीरस्य नित्यमेव प्रवर्तते।
तथा नरेन्द्रो राष्ट्रस्य प्रभवः सत्यधर्मयोः॥ —वाल्मीकि

जैसे दृष्टि सदा ही शरीर के हित में लगी रहती है, उसी प्रकार राजा राष्ट्र को सत्य और धर्म में लगानेवाला होता है।

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृप अवसि नरक-अधिकारी॥
—तुलसी (मानस-अयोध्या)

जो राजा प्रजा की अच्छी तरह रक्षा नहीं करता वह चोर के समान है।
—वेदव्यास (महाभारत, शान्तिपर्व)

नीति न तजिय राज-पद पाये। —तुलसी (मानस-अयोध्या)

सोचिय नृपति जो नीति न जाना। जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना॥
—तुलसी (मानस-अयोध्या)

नाराजके जनपदे स्वकं भवति कस्यचित्।
मत्स्या इव जना नित्यं भक्षयन्ति परस्परम्॥ —वाल्मीकि

बिना राजा के देश में किसी की कोई वस्तु अपनी नहीं रहती। मछलियों की भाँति सब लोग सदा परस्पर एक दूसरे को अपना ग्रास बनाते—लूटते-खसोटते रहते हैं।

बुद्धिशस्त्रः प्रकृत्यङ्गो घनसंवृतिकञ्चुकः।
चारेक्षणो दूतमुखः पुरुषः कोऽपि पार्थिवः॥
—माघ (शिशुपालवध)

बुद्धि ही जिसका शस्त्र है, सेना अमात्य, आदि प्रकृतियाँ ही जिसके अंग हैं, दुर्भेद्य मन्त्र की सुरक्षा ही जिसका कवच है, गुप्तचर ही जिसके नेत्र हैं, और दूत ही जिसका मुख है, इस प्रकार का राजा कोई अलौकिक ही पुरुष है।

राजाश्रय

महात्वाकाक्षी विद्वान्, शिल्पकार्य में निपुण कारीगर, शूरवीर एव सेवा-वृत्ति में चतुर लोगो के लिए राजा के विना कही दूसरी जगह आश्रय नही मिलता।

—पंचतंत्र

अपने मित्रो और हितैषियो का उपकार करने के लिए तथा शत्रुओ का अपकार करने के लिए वुद्धिमान् लोग राजाओ का आश्रय ग्रहण करते हैं, केवल अपने पेट को कौन नही भर लेता। —पंचतंत्र

राम नाम

नाम राम को अक है, सव साधन है सून।
अक गये कछु हाथ नहिं, अंक रहे दस गून॥

—तुलसी (दोहावली)

राम-नाम मृत्यु के दु ख को मिटा देता है, यह रामनाम का क्या कोई छोटा मोटा चमत्कार है। —महात्मा गांधी

रामनाम मणि दीप वरु, जीह-देहरी द्वार।
तुलसी भीतर वाहिरहु, जो चाहसि उजियार॥ —तुलसी

तुलसी 'रा' के कहत ही, निकसत सकल विकार।
पुनि आवन पावत नहीं, देत "म" कार किवार॥ —तुलसी

रामनाम सुन्दर करतारी। संशय विहग उड़ावन हारी। —तुलसी

सतों ने साहित्य का सारा सार रामनाम में ला रखा है। —विनोबा

तुलसी राम सनेह करु, त्यागु सकल उपचार।
जैसे घटत न अंक नौ, नौ के लिखत पहार॥ —तुलसी

ब्रह्म राम तें नामु वड, वरदायक वरदानि।
राम चरित सत्कोटि मह, लिय महेस जिय जानि॥
राम नाम कलि कामतरु, सकल सुमंगल कन्द।
सुमिरत करतल सिद्धि सव, पग पग परमानन्द॥ —तुलसी (दोहा०)

श्वास श्वास पर राम भज, वृथा श्वास मत खोय।
ना जाने यह श्वास को, आवन होय न होय॥ —तुलसी

राम-राज्य

धार्मिक दृष्टिकोण से रामराज्य पृथ्वी पर ईश्वरीय कहा जा सकता है। राज-
तैक दृष्टि से रामराज्य एक ऐसा पूर्ण प्रजातन्त्र है, जहा अधिकार, वर्ण, स्त्री तथा
न के विभेद पर आश्रित असमानताए तिरोहित हो जाती हैं। इस प्रजातन्त्र में
नै तथा राजसत्ता की अधिकारिणी प्रजा है। —महात्मा गाधी

दैविक दैहिक भौतिक तापा। रामराज्य काहुहि नहि व्यापा॥ —तुलसी

रामायण

मैं तुलसीदास जी की रामायण को भक्ति-मार्ग का सर्वोत्तम ग्रन्थ समझता हू।
रामचरित मानस विचार-रत्नो का भडार है। —महात्मा गाधी

रामायण मे ज्ञान, भक्ति और वैराग्य की निर्मल त्रिवेणी का प्रवाह बहता है।
—महामना पं० मदन मोहन मालवीय

रामचरित मानस विमल, सतन जीवन प्रान।
हिन्दुआन को वेद सम, जवनहि प्रगट कुरान॥ —रहीम

गीता के बाद यदि किसी ग्रन्थ ने देशोद्धार का समुचित मार्ग दिखाया है तो तुलसी-
कृत रामायण ने ही। —अज्ञात

रामायण सुर तरु की छाया।
दुख भय दूर निकट जो आया॥ —तुलसी

रामायण के द्वारा भारतवर्ष से स्वार्थपरता का दोष जितना दूर हुआ है उतना
किसी भी नीतिवान्, धर्मविद्, समाज-सुधारक राजपुरुष और राजा के द्वारा नही
हो सका। —बंकिमचन्द्र

यह ग्रन्थ समस्त मनुष्य जाति को अनिर्वचनीय सुख और शान्ति पहुचाने का
साधन है। —महामना पं० मदन मोहन मालवीय

राष्ट्र

विवेकपूर्ण लोगो का छोटा-सा दल असभ्य मूर्खों के जगल मे रहता है और जिस
राष्ट्र ने अपने स्वरूप को पहचान लिया वही सच्चे साम्राज्य को पाने का अधिकारी है।
—रस्किन

जिस राष्ट्र मे चरित्रशीलता नही है उसमें कोई योजना काम नही कर सकती।
—विनोबा

प्रेम और भ्रातृत्व को अपना कर एक विशाल कुटुम्ब की तरह अपनी वृद्धि करने मे ही राष्ट्र की सच्ची शक्ति वर्तमान है। —रस्किन

Individuals may form communities, but it is institutions that can create a nation.

व्यक्तियो से केवल जातिया वनती है परन्तु सस्थाओ से ही राष्ट्र का निर्माण होता है। —डिजरायली

जिस राष्ट्र का व्यापार असत्य पर चलता है उसका शील समाप्त हुआ ही समझना चाहिए। —विनोबा

राज्यों की शक्ति का उतार-चढाव दया और न्याय के अनुपात के आधार पर अवलम्बित है। जनसख्या की वृद्धि से अथवा दूसरे देशो को हड़प कर कोई भी राष्ट्र शक्तिशाली नही हो सकता। —रस्किन

राष्ट्र-निर्माता

जिन्होंने राष्ट्रो का निर्माण किया है उनकी कीर्ति अमर हो गयी है।
—प्रेमचन्द

राष्ट्र-सेवा

राष्ट्रसेवा महँगा सौदा है। —प्रेमचन्द

राष्ट्रीयता

राष्ट्रीयता तो पुरानी पड़ी हुई सड़ी मिठाई है। छोटी नासमझ चीटिया स्वाद के मोह से उसमें चिपकी रहती हैं। वह वुद्धि के लिए एक मोटा घेरा है। मानव को मानव से दूर रखने का इन्द्र-जाल है। —अज्ञात

Nationalism is an infantile disease. It is the measles of mankind.

राष्ट्रीयता शिशु रोग है। यह मानव का शीतला रोग है।
—एल्वर्ट आइन्सटीन

अपनी राष्ट्रीय मनोवृत्ति को शुद्ध रखो, आपकी राष्ट्रीय आँखें स्वय ठीक हो जायगी। —रस्किन

रिपु

रिपु तेजसी अकेल अपि, लघु करि गनिय न ताहु।
अजहु देत दुख रवि ससिहिं, सिर अवसेषित राहु॥
—तुलसी (मानस-बाल)

रिपु पर दया परम कदराई। —तुलसी (मानस-अरण्य)

Heat not a furnace for your foe so hot that it do singe yourself.
अपने रिपु के लिए भट्टी को इतना अधिक गर्म न कर कि वह तुझे ही भून डाले।
—शेक्सपियर

रिश्तेदार

No man will be respected by others who is despised by his own relatives

कोई भी ऐसा व्यक्ति दूसरो से सम्मान न पायेगा जिससे खुद उनके रिश्तेदार ही घृणा करते हो। —प्लाउटस

रिश्वत

रिश्वत अब भी नब्बे फीसदी अभियोगो पर पर्दा डालती है। फिर भी पाप का भय प्रत्येक हृदय में है। —प्रेमचन्द

न्यायाधीश और सेनेट के सदस्य भी रिश्वत के द्वारा मोल लिये गये हैं।—पोप

रिश्वत देकर तो लोग खून पचा जाते हैं। —प्रेमचन्द

The universe would not be rich enough to buy the vote of an honest man

सच्चे आदमी का वोट खरीदने के लिए समस्त विश्व की सम्पदा भी पर्याप्त नही है। —सेंट ग्रेगोरी

चोर को अदालत में बेंत खाने से उतनी लज्जा नही आती, स्त्री को कलंक से उतनी लज्जा नही आती, जितनी किसी हाकिम को अपनी रिश्वत का पर्दा खुलने से आती है। —प्रेमचन्द

रीति-रिवाज

रीति-रिवाज बुद्धिहीनो के कानून हैं। —हेनयुग

रुचि

हमारी रुचि हमारे जीवन की परख है, हमारे मनुष्यत्व की पहचान है।

— रस्किन

रुदन

रुदन करना वीरो को उचित नही, रोना-धोना स्त्रियों का काम है।

— जयशंकर प्रसाद

Weep for love, but not for anger; a cold rain will never bring flowers.

क्रोध के लिए नही वरन् प्यार के लिए रोओ, सर्द वारिश फूल नही खिलाती।

— डन्कन

रूढ़ियाँ

रूढियाँ कभी धर्म नही होती। वे एक एक समय की बनी हुई सामाजिक शृंखलाएं है, वे पहले की शृंखलाएँ जिनसे समाज में सुधरापन था, मर्यादा थी पर अब जो जंजीरें बन गयी हैं। — निराला

रूप

रूप तो फूल की ही तरह है, पर उसमे प्रेम की सुगन्ध नहीं है।

— डा० रामकुमार वर्मा

पुरुषो के लिए अगर रूप-तृष्णा निन्दाजनक है तो स्त्रियो के लिए विनाशकारक है। — प्रेमचन्द (प्रेम-पचीसी)

रूप जब सो जाता है तो और भी नशीला हो जाता है, और जुल्फें जब बिखर जाती हैं तो और भी जहरीली हो जाती हैं। — सुदर्शन

कुरूपों का रूप विद्या और तपस्वियो का रूप क्षमा है। — अज्ञात

रंग कैसा ही सुन्दर हो, रूप की कमी नही पूरी कर सकता। — प्रेमचन्द

रूप ही दर्शन की सार्थकता है। — निराला (निरुपमा)

असली रूप तो अपने गुणो से ही झलकता है। अपनी छाप गुणवान् होकर डालनी चाहिए, रूपवान् होकर नही। — महात्मा गांधी

रूप के साथ आँखों का घनिष्ठ सबंध है। पतंग एक दूसरे पतंग को जलकर भस्म होते देखता है पर रह नही सकता। इतना बडा प्रत्यक्ष ज्ञान भी रूप के मोह से उसे बचा नही सकता। —निराला (निरुपमा)

रूप और गर्व में चोली-दामन का नाता है। —प्रेमचन्द

रूप की चौखट पर बडे बडे महीप नाक रगड़ते हैं। —प्रेमचन्द (गोदान)

रूप के सामने धर्म-ईमान काफूर हो जाता है। —अज्ञात

रोग (दे० "बीमारी")

को दीर्घरोगो भव एव साधो। —स्वामी शंकराचार्य

बडा भारी रोग क्या है? हे साधो, बार बार जन्म लेना ही।

बडे आदमियो के रोग भी बडे होते हैं। वह बडा आदमी ही क्या जिसे कोई छोटा रोग हो। —प्रेमचन्द

पावक वैरी रोग ऋन, सपनेहुँ राखिय नाहिं।
ये थोरे ही बढहिं पुनि, महाजतन सो जाहिं॥ —अज्ञात

मोह सकल व्याधिन्ह कर मूला। तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला॥
काम बात कफ लोभ अपारा। क्रोध पित्त नित छाती जारा॥
प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई। उपजइ सन्निपात दुखदाई॥
विषय मनोरथ दुर्गम नाना। ते सब सूल नाम को जाना॥
ममता दादु कंडु इरषाई। हरष विषाद गरह बहुताई॥
पर सुख देखि जरनि सोइ छई। कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई॥
अहंकार अति दुखद डमरुआ। दंभ कपट मद मान नेहरुआ॥
तृष्णा उदरवृद्धि अति भारी। त्रिविधि ईषणा तरुन तिजारी॥
जुग विधि ज्वर मत्सर अविवेका। कहँ लगि कहौं कुरोग अनेका॥
—तुलसी (मानस, उत्तर)

रोना

जब रोना हो तो एकान्त की तलाश करो और जब हँसना हो तो मित्रों में आओ।
—अज्ञात

रोना और हँसना ये ही तो मानवी सम्यता के आधार हैं, इसी के लिए सम्यता की कल्पना है—इसी के साधन मनुष्य की उन्नति के लक्षण कहे जाते हैं।

—जयशंकर प्रसाद

लक्ष्मी

न्याय और नीति सव लक्ष्मी के ही खिलौने है, वह जैसे चाहती है नचाती है।

—प्रेमचन्द

गरीवो की पेटपूजा करना ही लक्ष्मी की श्रेष्ठ पूजा है। —अज्ञात

वृति. क्षमा दम शौचं कारुण्य वागनिष्ठुरा।
मित्राणा चाऽनभिद्रोह सप्तैता समिव श्रिय ॥ —वेदव्यास (महा०)

धैर्य घारण करना, क्रोध न करना, इन्द्रियो को वश में करना, पवित्रता, दया, सरलता से भरे वचन और मित्रो से द्वेष न करना ये सात लक्ष्मी के सावन है।

Riches are a blessing only to him who makes them a blessing to others.

लक्ष्मी उसी के लिए वरदान है जो उसे दूसरो के लिए वरदान वना देता है।

—फीलिंडग

कुचैलिन दन्तमलोपवारिण, वह्वाशिन निष्ठुरभापिणं च।
सूर्योदये चास्तमिते शयानं, विमुञ्चति श्रीर्यदि चक्रपाणि. ॥—चाणक्य

मलिन वस्त्रवाले, गन्दे दाँत वाले, वहुत खानेवाले, कठोर वोलनेवाले और सूर्य के उदय और अस्त होने के समय मे सोनेवाले को लक्ष्मी त्याग देती है चाहे वह विष्णु ही क्यो न हो।

Riches do not delight us so much with their possession, as torment us with their loss

धन पास में रहने से उतना आनन्द नही होता जितना उसके खो जाने, छिन जाने से दुख होता है। —सेंट ग्रेगरी

मूर्खा यत्र न पूज्यन्ते धान्य यत्र सुसंचितम्।
दापत्ये कलहो नास्ति तत्र श्री स्वयमागता॥ —चाणक्य

जहा मूर्ख नही पूजे जाते, जहां अन्न सचित रहता है और जहा स्त्री-पुरुष में कलह नही होती वहाँ लक्ष्मी आप ही आकर विराजमान रहती है।

जिस तरह एक जवान स्त्री बूढे पुरुष का आलिंगन करना नही चाहती, उसी तरह लक्ष्मी भी आलसी, भाग्यवादी और साहसविहीन व्यक्ति को नही चाहती।

—अज्ञात

नैतिक स्वरूपो के घेरे में लक्ष्मी रहती है। उसे कोई लोहे की शृखलाओ मे जकड नही सकता। —अज्ञात

वेदान्त धर्म का सच्चा अधिकारी और पात्र वही हो सकता है जो सामर्थ्यवान् हो, सम्पन्न हो, लक्ष्मी जिसके चरण चूमती हो। —विवेकानन्द

धनवान् लोगो के मन मे हमेशा शका रहती है, इसलिए यदि हम लक्ष्मी देवी को खुश करना चाहते है तो हमें अपनी पात्रता सिद्ध करनी पडेगी। —महात्मा गाधी

लभेत वा प्रार्थयिता न वा श्रिय श्रिया दुराप कथमीप्सितो भवेत्।

—कालिदास (कुमारसभव)

जो लक्ष्मी को पाना चाहता हो उसे लक्ष्मी भले ही न मिले, पर जिसे स्वय लक्ष्मी चाहे वह उस को न मिले, यह कैसे हो सकता है।

इन्द्रदेव के आमत्रण से महादेवी लक्ष्मी गद्गद् हो गयी और वरद् हस्त उठाकर बोली—

"देवराज! जब किसी राष्ट्र में प्रजा सदाचार खो देती है, तो वहां की भूमि, जल, अग्नि कोई भी मुझे स्थिर नही रख सकते। मैं लोकश्री हूं, मुझे लोकसिंहासन चाहिए। व्यक्ति के सदाचारी मानस मे ही मैं अचल निवास करती हूं।"

—राजगोपालाचारी

लक्ष्मी लोहे की नगी तलवार से जीती जाती है, उसी की सीमाओ में वह रहती है। —अज्ञात

कमला थिर न रहीम कहि, यह जानत सब कोय।
पुरुष पुरातन की वधू, क्यो न चचला होय। —रहीम

श्रीर्मङ्गलात् प्रभवति प्रागल्भ्यात् सम्प्रवर्धते।
दाक्ष्यात्तु कुरुते मूल सयमात् प्रतितिष्ठति॥

—उद्योग (म०)

लक्ष्मी शुभ कार्य से उत्पन्न होती है, चतुरता से बढती है और अत्यन्त निपुणता से जड बाँधती है तथा सयम से स्थिर रहती है।

उत्साहसंपन्नमदीर्घसूत्रं क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम्।
शूर कृतज्ञं दृढसौहृद च लक्ष्मी. स्वय याति निवासहेतो ॥ —पंचतंत्र

जो उत्साही है, दीर्घसूत्री (आलसी) नही है, कार्य करने की विधि को जानता है, किसी भी प्रकार के व्यसन में आसक्त नही है, वहादुर है, किये हुए उपकार को मानता है और जिसकी मैत्री दृढ होती है; ऐसे सज्जन के पास रहने के लिए लक्ष्मी स्वय ही उपस्थित हो जाती है।

लक्ष्य

प्रणवो धनु. शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते।
अप्रमत्तेन वेद्धव्य शरवत्तन्मयो भवेत्॥
—महर्षि अंगिरा

ओंकार ही धनुष है, आत्मा ही वाण है, (और) परब्रह्म परमेश्वर ही उसका लक्ष्य कहा जाता है। (वह) प्रमादरहित मनुष्य द्वारा ही वीधा जाने योग्य है। (अतः) उसे देखकर वाण की भाँति (उस लक्ष्य में) तन्मय हो जाना चाहिए।

आरोहणमाक्रमणं जीवतो जीवतोऽयनम्। —अथर्ववेद

उन्नत होना और आगे वढ़ना प्रत्येक जीव का लक्ष्य है।

Have a purpose in life and having it throw into your work such strength of mind and muscle as God has given you.

अपने जीवन का एक लक्ष्य वनाओ, और इसके वाद अपना सारा शारीरिक और मानसिक वल जो ईश्वर ने तुम्हें दिया है, उसमे लगा दो। —कार्लाइल

मनुष्य देवत्व का अग और ससार मे उसका प्रतिनिधि है और मानवजीवन का अतिम लक्ष्य अपने मे देवत्व को पहचानना और उसे प्राप्त करना है। —अज्ञात

लक्ष्यहीन जीवन जंगल में भटकने के समान है। —अज्ञात

एक ही लक्ष्य की ओर अपने मन, वचन और काया को लगा देने मे ससार में वड़ी सफलताएँ होती हुई दीख पड़ती हैं। —अज्ञात

लक्ष्य की सिद्धि अन्याय तथा अनीति से नही; सत्य और धर्म से ही हो सकती है।
—अज्ञात

लगन

The superior man is slow in his words and earnest in his conduct

श्रेष्ठ पुरुष बोलता कम है पर व्यवहार में अधिक सक्रियता दिखलाता है।

—कन्फ्यूशियस

लगन को काँटों की परवाह नहीं होती। —प्रेमचन्द

Earnestness is enthusiasm tempered by reason

बुद्धि द्वारा मृदु किया गया उत्साह ही लगन है। —पास्कल

जिसको लगन है वह साधन भी पा जाता है, यदि नहीं पाता तो वह उन्हें पैदा करता है। —चैनिंग

लघुता

ऊँचे पानी ना टिके, नीचे ही ठहराय।
नीचा होय तो भरि पियै, ऊँचा प्यासा जाय॥
सब ते लघुताई भली, लघुता ते सब होय।
जस द्वितिया को चन्द्रमा, शीश नवै सब कोय॥ —कबीर

देख छोटों को है अल्लाह बड़ाई देना।
आस्मां आँख के तिल में है दिखाई देना। —जौक

जो काम घड़ो जल से नहीं हो सकता उसे क्वाथ के दो घूँट कर देते हैं। जो काम तलवार से नहीं होता, उसे काँटा कर देता है। —अज्ञात

धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पियत अघाय।
उदधि बडाई कौन है, जगत पियासो जाय॥ —रहीम

पञ्चत्वमेव हि वरं लोके लाघववर्जितम्।
नामरत्वमपि श्रेयो लाघवेन समन्वितम्॥ —अज्ञात

किसी के सामने छोटा न बनकर शान से मर जाना भी अच्छा है परन्तु संसार में लघुता से युक्त अमरत्व भी प्राप्त हो तो वह अच्छा नहीं है।

लघुता से प्रभुता मिलै, प्रभुता से प्रभु दूरि।
चींटी लै शक्कर चली, हाथी के सिर धूरि॥ —कबीर

रहिमन देखि वड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करे तरवारि॥ —रहीम

परस्तुतगुणो यस्तु निर्गुणोऽपि गुणी भवेत्।
इन्द्रोऽपि लघुता याति स्वय प्रख्यापितैर्गुणै ॥ —चाणक्य

जिस गुण का दूसरे लोग वर्णन करते हैं उससे निर्गुण भी गुणवान् होता है। इन्द्र भी अपने गुण की स्वय प्रशसा करने से लघुता को प्राप्त होता है।

लज्जा

जव किसी कौम की औरतो में गैरत नही होती तो वह कौम मुरदा हो जाती है।
—प्रेमचन्द

यदि कोई लड़की लज्जा त्याग देती है तो वह अपनी सुदरता का सवसे वडा आकर्पण खो देती है। —सेन्ट ग्रेगरी

लाली वन सरस कपोलो में, आँखो मे अंजन सी लगती॥
कुंचित अलकों सी घुँघराली, मन की मरोर वन कर जगती॥
—जयशंकर प्रसाद

A blush is a sign that nature hangs to show where chastity and honour dwell.

लज्जा एक सकेत है जिसे प्रकृति पवित्रता और सम्मान का निवास दिखाने के लिए वाहर लटका देती है। —गाटहोल्ड

The blush is nature's alarm at the approach of sin, and her testimony the dignity of virtue.

पाप के समय लज्जा या संकोच प्रकृति की चेतावनी है ओर पुण्य के गौरव का प्रमाण है। —फुलर

धनहीन प्राणी को जव कप्ट-निवारण का कोई उपाय नही रह जाता तो वह लज्जा को त्याग देता है। —प्रेमचन्द

मैं वह हलकी सी मसलन हूँ,
जो वनती कानो की लाली॥ —जयशंकर प्रसाद

लज्जा नारी जाति का अमूल्य आभूपण है। इसे पहनकर असुन्दरी भी आकर्पण का केन्द्र वन जाती है। —अज्ञात

To find out a girl's fault, praise her to her girl friends

यदि किसी लडकी की त्रुटि को जानना चाहते हो, तो उनकी सखियो मे उनकी ...ा करो। —बेन्जामिन फ्रैन्कलिन

लड़ाई (दे० "युद्ध")

In quarrelling the truth is always lost

लडाई में सत्य सदा खो जाता है। —साइरस

Truth is the first casualty in war

युद्ध में सत्य की हत्या सबसे पहले होती है। —कहावत

In a false quarrel there is no true valour

✓ झूठी लडाई में सच्ची वीरता नही होती। —शेक्सपियर

(The great questions of the day) are not decided by speeches and majority votes, but by blood and iron

युग की बडी बडी समस्याओ का फैसला भाषण और वोट से नही बल्कि खून और तलवार से होता है। —बिस्मार्क

मित्रामात्यसुहृद्वर्गा यदा स्युर्दृढभक्तय ।
शत्रूणा विपरीताश्च कर्तव्यो विग्रहस्तदा ॥

हितोपदेश

मित्र, मत्री और आपस के लोग जब दृढ शुभचिन्तक हो और शत्रुओ के विपरीत हो तब लडाई करनी चाहिए।

भूमिर्मित्र हिरण्य च विग्रहस्य फल त्रयम् ।
यदैतन्निश्चित भावि कर्तव्यो विग्रहस्तदा ॥

हितोपदेश

राज्य, मित्र और सुवर्ण यह तीन लडाई के बीज है, जब यह तीनो निश्चित हो जायें तब लडाई करनी चाहिए।

लांछन (दे० "निन्दा")

मनुष्य को पापी कहना ही पाप है, यह कथन मानवस्वभाव ... ... है।

—स्वामी विवेकानन्द

To persevere in one's duty, and be silent, is the best answer to calumny

अपने कर्तव्य में निरतर लगा रहना और मौन रहना लाछन का सबसे अच्छा उत्तर है। —वाशिंगटन

लाचार

लाचार तो जड़ होता है, हम चेतन हैं, आत्म-स्वरूप हैं, अपना वातावरण हम स्वयं बनायेंगे। —विनोबा

लाभ

Some times the best gain is to lose.

कभी कभी खोना ही सबसे अच्छा लाभ है। —हर्बर्ट

लाभ उसी का है, जिसने भगवान् को समझ लिया है। —अज्ञात

लालच

Avarice increases with the increasing pile of gold.

जैसे जैसे धन मे वृद्धि होती है लालच बढता है। —जुविनल

इसान अगर लालच को ठुकरा दे, तो बादशाह से भी ऊँचा दर्जा हासिल कर ले, क्योकि सतोष ही हमेशा इंसान का माथा ऊँचा रख सकता है। —सादी

Avarice is to the intellect and heart, what sensuality is to the morals.

बुद्धि और हृदय के लिए लालच वैसे ही है जैसे साधुवृत्ति के लिए इन्द्रिय-सुख। —श्रीमती जेम्सन

लालच बुरी बला। —कहावत

Poverty wants some things, luxury many, avarice all things.

दरिद्र व्यक्ति कुछ वस्तुएँ चाहता है, विलासी बहुत-सी और लालची सभी वस्तुएँ चाहता है।

लालची

लालची मनुष्य की जिन्दगी बड़ी नही होती। —अज्ञात

The avaricious man is kind to no person but he is most unkind to himself

लालची किसी के प्रति उदार नहीं होता, पर अपने प्रति तो बहुत ही कठोर होता है। —जान फिरले

लेखक

लिखते तो वे लोग हैं जिनके अंदर कुछ दर्द है, अनुराग है, लगन है, विचार है। जिन्होंने धन और भोग-विलास को जीवन का लक्ष्य बना लिया है वह क्या लिखेंगे।
—प्रेमचन्द

लिखने में शीघ्रता मुर्गी की योग्यता है, लेखक की नहीं। —शरत्चन्द्र

Every author in some degree portrays himself in his works even if it be against his will

प्रत्येक लेखक कुछ अंशों में अपने को ही अपनी कृतियों में चित्रित करता है, भले ही ऐसा करना उनकी इच्छा के विरुद्ध हो। —गेटे

महान् लेखक अपने पाठक का मित्र और शुभचिन्तक होता है। —मैकाले

लेखक की रोशनाई शहीद के खून से ज्यादा पवित्र है। —अज्ञात

लेखक वही है जो साधना और तपस्या का पुजारी है। —अज्ञात

लोकतंत्र

बहुमत भी लोकतन्त्र की सच्ची कसौटी नहीं है। सच्चा लोकतन्त्र लोगों की वृत्ति और अभिलाषाओं का प्रतिनिधित्व करनेवाले थोड़े व्यक्तियों से चलता है।
—महात्मा गांधी

वही राष्ट्र सच्चा लोकतन्त्रात्मक है, जो अपने कार्यों को बिना हस्तक्षेप के सुचारु और सक्रिय रूप से चलाता है। —महात्मा गांधी

लोकतन्त्रवादी

लोकतन्त्रवादी कहलाने का अधिकार केवल उसी व्यक्ति को है जो मानव-जाति के अत्यन्त दीन प्राणियों के साथ भी आत्मीयता दिखलाता हो, जो उनसे अधिक सुखमय जीवन बिताने की इच्छा न रखता हो और साथ ही साथ उनकी स्थिति सुधारने का यथाशक्ति प्रयत्न करता हो। —महात्मा गांधी

लोकमत

लोकमत का अर्थ है जिस समाज की राय हमें चाहिए उस का मत। यह मत नीतिविरुद्ध न हो तब तक उसका आदर हमारा धर्म है। —महात्मा गांधी

कानून का वास्तविक आधार लोकमत ही है। लोकमत की उपेक्षा करके कोई कानून दीर्घ काल तक जीवित नहीं रह सकता। —अज्ञात

लोकराज

आजादी का मतलब होना चाहिए लोकराज। लोकराज का अर्थ है कि हर शख्स को वृद्धि पाने का मौका मिले। —महात्मा गांधी

लोचन (दे० "आँख", "नेत्र")

लोभ (दे० "लालच")

मनुष्य बूढा हो जाता है परन्तु लोभ बूढा नही होता। —सुदर्शन

लोभ से बुद्धि नष्ट हो जाती है। —अज्ञात

लोभ भी एक छूत की बीमारी है। —शरत्चन्द्र (निष्कृति)

लोभ पाप को मूल है, लोभ मिटावत मान।
लोभ न कबहूँ कीजिए, यामें नरक निदान। —अज्ञात

गहरे जल से भरी हुई नदियाँ समुद्र में मिल जाती हैं परन्तु से उनके जल से समुद्र तृप्त नही होता, उसी प्रकार चाहे जितना धन प्राप्त हो जाय पर लोभी तृप्त नही होता। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

जिसमें लोभ है, उसे दूसरे अवगुण की क्या आवश्यकता? —भर्तृहरि

जन्म से लेकर बुढापे तक किसी भी अवस्था में लोभ का परित्याग करना कठिन है। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

लोभ सरिस अवगुन नही, तप नहिं सत्य समान। —अज्ञात

अनेक शास्त्रों के जाननेवाले, दूसरों की शंका का समाधान करनेवाले बहुश्रुत पडित भी लोभ के वशीभूत होकर ससार में कष्ट ही पाते है। —वेदव्यास (वही)

पाप, अधर्म और कपट की जड़ लोभ ही है। —वेदव्यास (वही)

जब मन लागै लोभ सो, गया विषय में सोय।
कहै कबीर विचारि के, कस भक्ती धन होय॥ —कबीर

ज्ञानी तापस सूर कवि, कोविद गुन आगार।
केहि की लोभ विडंबना, कीन्ह न एहि संसार॥ —तुलसी

कबिरा औंधी खोपरी, कबहूँ धापै नाहि।
तीन लोक की सम्पदा, कब आवै घर माहि॥ —कबीर

लोभी (दे० लालची)

लोभी मनुष्य की कामना कभी पूरी होती ही नहीं। —वेदव्यास (महाभारत)

लोभी मनुष्य सदैव क्रोध और द्वेष में डूबे रहते हैं।

—वेदव्यास (महाभारत, शान्तिपर्व)

लोभी की आँख दुनिया की चीजों से, ओस से कुँए की तरह कभी नहीं भरती।

लोभी की प्रार्थना यदि भगवान, सुन ले तो उसे भी दर दर का भिखारी होना पड़े। क्योंकि इस चराचर में जो कुछ भी प्रभुता है, लोभी उन सबको पाकर भी [illegible], हाय तो करता ही रहेगा। —[illegible]

वक्त (दे० "समय")

वक्त की धार बहुत तेज होती है। —[illegible]

वक्त सबसे अधिक बुद्धिमान् सलाहकार है। —पेरीक्लीज

Do not squander time, for that is the stuff life is made of

वक्त को बरबाद न करो क्योंकि जीवन इसी से बना है। —फ्रैंकलिन

जो वक्त की जरूरतों को पूरा नहीं करते, वक्त उन्हें बरबाद कर देता है। —[illegible]

वक्त और सागर की लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करतीं। —अंग्रेजी कहावत

वक्ता

An orator without judgment is a horse without a bridle

बिना बुद्धि के वक्ता बिना लगाम के घोड़े की तरह होता है। —थ्यूफ्रास्टस

What the orators want in depth, they give you in length

वक्ता अपनी गहराई के अभाव को लम्बाई में पूरा करता है। —[illegible]

The ability to speak is a short cut to distinction. It puts a man in the limelight, raises him head and shoulder above the crowd

भापण करने की योग्यता प्रसिद्धि प्राप्त करने का सीवा मार्ग है। इससे मनुष्य लोगो के सामने आ जाता है और सावारण जनता से ऊपर उठ जाता है।

—डेल कारनेगी

The man who can speak acceptably is usually given credit for an ability out of all proportion to what he really possesses.

जो मनुष्य श्रोताओ को अपने भापण से अपने साथ वहा ले जा सकता है, उसमें वस्तुत जितनी योग्यता होती है सावारणत. लोग उसमें उससे कही अविक समझने लगते हैं। —डेल कारनेगी

वक्तृता

There is not less eloquence in the tone of the voice, in the eyes and in the demeanour, than in the choice of words.

वक्तृता केवल शब्दो के चुनाव ही में नही वरन् शब्दो के उच्चारण में, आँखो में, और चेष्टा में होती है। —ला रोशोको

The finest eloquence is that which gets things done; the worst is that which delays them.

सर्वोत्तम वक्तृता वह है जो स्वेच्छया कर्म करा ले और निकृष्ट वह है जो उसमें वाधा डाले। —लायड जार्ज

वक्तृता अवसर विशेप के प्रभाव से प्रभावित होकर वनती है।

—डा० रामकुमार वर्मा

वचन (दे० "वाणी")

संसारकटुवृक्षस्य द्वे फले अमृतोपमे।
सुभाषित च सुस्वादु संगति सुजने जने॥ —चाणक्य

ससाररूपी कटु वृक्ष के अमृत के समान दो फल हैं, सरस प्रिय वचन और सज्जनों की संगति।

तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर।
वशीकरन इक मत्र है, तज दे वचन कठोर॥ —तुलसी

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।

—भारवि (किरातार्जुनीय)

लाभप्रद और साथ ही चित्ताकर्षक वचन बड़ा अलभ्य होता है।

वर्तमान

He who neglects the present moment, throws away all he has.

जो वर्तमान की उपेक्षा करता है वह सब कुछ खो देता है। —मिल्टन

The future is purchased by the present

भविष्य वर्तमान के द्वारा खरीदा जाता है। —इमर्सन

कर्त्तव्य और वर्तमान हमारा है, फल और भविष्य ईश्वर का है—होरेस ग्रेले

वश

नम्रता, प्रेमपूर्ण व्यवहार तथा सहनशीलता से मनुष्य तो क्या देवता भी तुम्हारे वश में हो जाते हैं। —लोकमान्य तिलक

क्षमया दयया प्रेम्णा सूनृतेनार्जवेन च।
वशी कुर्याज्जगत्सर्वं विनयेन च सेवया॥ —अज्ञात

क्षमा, दया, प्रेम, मधुर वाणी, सरल स्वभाव, नम्रता और सेवा से सब संसार को वश में करना चाहिए।

लुब्धमर्थेन गृह्णीयात् स्तब्धमञ्जलिकर्मणा।
मूर्खं छन्दानुरोधेन यथार्थत्वेन पण्डितम्॥ —हितोपदेश

लोभी को धन से, अभिमानी को हाथ जोड़कर, मूर्ख को उसकी मनोनुकूल बात कहके और पण्डित को सच सच कहकर वश में करना चाहिए।

सद्भावेन हरेन्मित्रं सम्भ्रमेण तु बान्धवान्।
स्त्री-भृत्यौ दानमानाभ्यां दाक्षिण्येनेतरान्जनान्॥ —हितोपदेश

विनय से मित्र को, सम्मान द्वारा बान्धवों को, दान तथा मान से स्त्री और सेवकों को तथा चतुरता से अन्य लोगों को वश में करना चाहिए।

वाणी (दे० "वचन")

वाणी से भी बाणवृष्टि होती है, जिससे [illegible] दुःखी रहता है। —वेदव्यास (महाभारत, आदिपर्व)

मधुर वचन है औषधी, कटुक वचन है तीर।
श्रवन द्वार तें सचरै, सालै सकल सरीर॥ —कबीर

वाणी ही मनुष्य का एक ऐसा आभूषण है जो अन्य भूषणों के सदृश कभी घिसता नहीं। —अज्ञात

घट घट में वह साँई रमता कटुक वचन मत बोल रे। —कबीर

तीखे और कड़ुए शब्द कमजोर पक्ष की निशानी है। —विक्टर ह्यूगो

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय॥
औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होय॥ —कबीर

मधुर वाणी क्रोध को भी भगा देती है। —अज्ञात

जैसा अन जल खाइए, तैसा ही मन होय।
जैसा पानी पीजिए, तैसी बानी सोय॥ —कबीर

वाणी मन का चित्र है। —कहावत

बोलत ही पहचानिए, साहु चोर को घाट।
अंतर की करनी सबै, निकसै मुख की बाट॥ —कबीर

वायु

न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य —कालिदास
वायु पेड़ को जड़ से उखाड़ सकती है पर पहाड़ को नहीं हिला सकती।

वायदा (दे० "प्रण, प्रतिज्ञा")

सच्चे दिल का मजबूत आदमी कभी अपना वायदा पूरा करने से मुह नहीं मोड़ेगा। वायदा कसम से बढ़कर है, जिसे पूरा करना ही होगा। —नेपोलियन

वासना

वासना का वार निर्मम, आशाहीन, आधारहीन प्राणियों पर ही होता है। चोर की अँधेरे में ही चलती है, उजाले में नहीं। —प्रेमचन्द

विषय-वस्य सुर नर मुनि स्वामी। —तुलसी (मानस)

वासना खोटे सोने के समान चमकती तो बहुत है परन्तु परीक्षा की आग में पड़कर वह चमक स्थिर नहीं रहती। —सुदर्शन

नाथ विषय सम मद कछु नाही। मुनि मन मोह करै क्षण माहीं।

—तुलसी (मानस, किष्किन्धा)

जिसके हृदय में सेवा का स्रोत वह रहा हो उसमें वासनाओ के लिए स्थान कहा। —प्रेमचन्द

वासना एक कसौटी है—अग्नि लोहे को परखती है और वासना सत्पुरुष को।

—अज्ञात

विकार

✓ विकाररूप मैल को दूर करने से प्रेम बढता है। —महात्मा गाधी

जो शरीर को काबू में रखता हुआ जान पडता है पर मन से विकार का पोषण किया करता है वह मूढ मिथ्याचारी है। —भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

मन को विकारपूर्ण रहने देकर शरीर को दवाने की कोशिश करना हानिकर है। —महात्मा गाधी

विकास

✓ विकास ही जीवन और सकोच ही मृत्यु है। —स्वामी विवेकानन्द

विकास ईश्वर का अग्रोन्मुख कदम है। —विक्टर ह्यूगो

परस्पर व्यवहार विकास की आत्मा है। —वक्सटन

No steps backward, is the rule of human history.

मानव-इतिहास का नियम है कि एक भी कदम पीछे न हो। —थियोडोर पार्कर

Nature knows no pause in progress and development and attaches her curse on all inaction.

प्रकृति अपनी उन्नति और विकास में रुकना नही जानती, और अपना अभिशाप प्रत्येक अकर्मण्यता पर लगाती है। —गेटे

The voice of time cries to man, advance

समय की पुकार मनुष्य को ललकारती है कि आगे बढो। —डिकन्स

विघ्न (दे० "बाधा")

विचार

विचार का चिराग वुझ जाने से आचार अधा हो जाता है। —विनोबा

Great thoughts reduced to practice become great acts.

महान् विचार कार्य रूप में परिणत होने पर महान् कर्म वन जाते हैं। —हैजलिट

आध्यात्मिक शक्ति भौतिक शक्ति से वढ़कर है; विचार ही संसार पर शासन करते हैं। —एमर्सन

Thought which is not meant to lead to action has been called an abortion; action which is not based on thought is chaos and confusion.

जो विचार कार्य-रूप में नही परिणत होता, उसकी 'गर्भपात' से तुलना की गयी है। उस कर्म की, जो विचार का आश्रित नही है, अवेरखाते और अराजकता में गिनती है। —जवाहरलाल नेहरू

कोई वस्तु अच्छी या वुरी नही—विचार ही उसे ऐसा वना देता है।—शेक्सपियर

कुविचार ही सवसे हानिकारक चोर है। —स्वामी शिवानन्द

ऊँचे विचार शाश्वत होते हैं, वे किसी भौगोलिक सीमा में नही वाँधे जा सकते। —अज्ञात

विचार की शुद्धि तव हो सकती है जव वह हवा की तरह सवके हृदय से लगे, चाँदनी की तरह सव की आँखें ठडी कर दे। —अज्ञात

The greatest events of an age are its best thoughts. Thought finds its way into action.

युग की महान् घटनाएँ उसके उत्तम विचार है। विचार स्वय ही कार्य में परिणत होने का मार्ग ढूँढ़ लेता है। —व्वायस

आचरण-रहित विचार कितने अच्छे क्यो न हो उन्हें खोटे मोती की तरह समझना चाहिए। —महात्मा गांधी

/ वुरे विचार हमारे अन्त करण पर कुठाराघात करते हैं। —अज्ञात

मनुष्य वैसा ही वन जाता है जैसे उसके हृदय के विचार होते है।—वाइविल

निश्चयात्मक विचार से निर्माणशक्ति का विकास होता है। —अज्ञात

Learning without thought is labour lost, thought without learning is perilous.

विना विचार के सीखना परिश्रम नष्ट करना है, विना शिक्षा प्राप्त किये विचार करना भयावह है। —कन्फ्यूशियस

विरोध उत्पन्न करनेवाला विचार हमारे परिश्रम को पगु बना देता है।—अज्ञात

शासन विचारो का होता है, नक्शे की रेखाओ का नहीं। —अज्ञात

✓ अच्छे विचारों और प्रयासो का परिणाम भी निस्सदेह अच्छा होगा।
—स्वामी विवेकानन्द

दुष्ट विचार ही मनुष्य को दुष्ट कर्म की ओर ले जाता है। —उपनिषद्

अचारी सब जग मिला, मिला विचारि न कोय।
कोटि अचारी वारिये, एक विचारि जो होय॥ —कबीर

जो बातें विचार पर छोड दी जाती हैं वे कभी पूरी नही होती। —हरिभाऊ

जैसे विचार होते हैं उन्हीके अनुसार भविष्य का निर्माण होता है। —अज्ञात

मन के विचार को मन ही में लय न करके उसका दृश्य रूप में रखना अत्यन्त आवश्यक है। —स्वेट माडॅन

अनुभव, ज्ञान-उन्मेष और वयस् मनुष्य के विचारो को बदलते हैं। —हरिऔध

जो ऊँचे विचार के महानुभाव होते हैं वे नम्र और दयावान् होते हैं। —अज्ञात

Thinking is the talking of the soul with itself
आत्मा का अपने साथ बातचीत करना ही मनन है। —प्लेटो

विचार मर्यादापूर्ण, सहानुभूति-मूलक और परिमित होने से ही समादृत होता है। —हरिऔध

To hear ideas is to gather flowers, to think, is to weave them into garlands
विचार फूलो को चुनने के समान हैं, और सोचना उनको माला में गूंथना।
—श्रीमती स्वेटशीन

Guard well thy thoughts our thoughts are heard in Heaven
अपने विचारो की अच्छी तरह रक्षा करो, क्योंकि विचार स्वर्ग में सुने जाते हैं।
—यंग

जैसे हमारे विचार होते हैं वैसी ही हमारी शारीरिक स्थिति होती है। हम चाहें कि हमारी शारीरिक स्थिति इसके विपरीत हो तो यह बात सर्वथा असभव है।
—स्वेटमाडॅन

वह विचार कभी कार्यकारी और सुफलप्रसू नही होता जिसमें यथोचित शालीनता नही होती। —हरिऔध

अगर कोई मनुष्य गुफा में रहे, वही पर उच्च विचार करे और विचार करता हुआ ही मर जाय तो वे विचार कुछ समय पश्चात् गुफा की दीवारे फाडकर वाहर निकलेंगे और सव जगह छा जाँयगे तथा अंत में सारे मानवसमाज को प्रभावित कर देंगे। विचारो में इतनी शक्ति है। —स्वामी विवेकानन्द

अच्छे विचार रखना भीतरी सुन्दरता है। —स्वामी रामतीर्थ

They are never alone that are accompanied with noble thoughts.

सुन्दर विचार जिनके साथ हैं वे कभी एकान्त में नही हैं। —सर पी० सिडनी

विचारक

विचारको को जो चीज आज स्पष्ट दीखती है दुनिया उस पर कल अमल करती है। —विनोबा

विचारक दृष्टिमा होते हैं। —विनोबा

विजय

मनोवृत्ति का परिवर्तन ही हमारी असली विजय है। —प्रेमचन्द

✓मनुष्य की सवसे वडी विजय मन की दुर्वलताओ पर विजय पाना है। —अज्ञात

प्रत्येक व्यक्ति की हर समय परीक्षा होती रहती है और जो कसौटी पर खरे उतरते हैं विजयश्री उन्हीं के हाथ है। —हरिभाऊ

✓ अपने ऊपर विजय प्राप्त करना सवसे वड़ी विजय है। —प्लेटो

विजय प्राप्त करने के लिए अविचल श्रद्धा की अत्यन्त आवश्यकता है। —स्वेट मार्डेन

अर्थ देकर विजय खरीदना तो देश की वीरता के प्रतिकूल है। —जयशंकर प्रसाद

जीवनसग्राम में विजय प्राप्त कर लेना कोई आसान काम नही है। उसके लिए अत्यन्त कठोर सावना की आवश्यकता है। —सर ऑर्थर हेल्प्स

मनुष्य लडाई में हजार आदमियो पर विजय पा सकता है लेकिन जो अपने ऊपर विजय पाता है वही सवसे वड़ा विजयी है। —भगवान वुद्ध

सबसे उत्तम विजय प्रेम की है जो सदैव के लिए विजेताओ का हृदय बाँध लेती है। —सम्राट् अशोक

अगर तू ससार पर विजय पाना चाहता है तो पहले अपने पर विजय पा। अगर तू अपने पर विजय पाना चाहता है तो औरत की दुनिया से बचकर रह। —सुदर्शन

विजय ध्येय की प्राप्ति में नही है वरन् उसे पाने के निरन्तर प्रयास मे है।— —महात्मा गांधी

दान द्वारा कृपणता पर विजय प्राप्त करो। शान्ति द्वारा क्रोध पर विजय प्राप्त करो। श्रद्धा से अश्रद्धा पर विजय प्राप्त करो। सत्य से असत्य पर विजय प्राप्त करो। यही सन्मार्ग है। यही स्वर्ग है। स्वर्ग की ओर जाओ। प्रकाश की ओर जाओ।—सामवेद

विजयी

जीवन में वही तो विजयी होता है जो दिन रात 'युध्यस्व विगतज्वर' का शख-नाद सुना करता है। —जयशंकर प्रसाद

भगवान् के विरुद्ध आचरण करनेवाला बडे से बडा वीर भी विजयी नहीं हो सकता। —महाभारत

ससार विजयी पर विश्वास करता है। उस मनुष्य का विश्वास करता है जिसके चेहरे पर विजय के भाव झलकते हों। —स्वेट मार्डेन

For they can conquer who believe they can
वे ही विजयी हो सकते है जिन्हें विश्वास है कि वे विजयी होंगे। —वर्जिल

विज्ञान

विज्ञान को विज्ञान तभी कह सकते है जब वह शरीर, मन और आत्मा की भूख मिटाने की पूरी ताकत रखता हो। —महात्मा गाधी

भौतिक विज्ञान बल है और धर्म-विज्ञान विवेक है। —एक संत

Science commits suicide, when it adopts a creed
विज्ञान आत्महत्या कर लेता है जब वह किसी एक मत को स्वीकार करता है। —हक्सले

विज्ञान ने मनुष्य को ऐसा गुप्तमन्त्र प्रदान किया है जिससे प्रकृति की गुप्त निधियों के द्वार सहज में खुल जाते हैं। —अज्ञात

विज्ञान ने मनुष्य को अपरिमित शक्ति प्रदान की, प्रकृति को उसकी चेरी वनाया और ऐश्वर्य तथा वैभव उसके चरणो मे उँड़ेल दिया। काल तथा स्थान की वाधाएँ मिट गयी। —अज्ञात

विज्ञान और कला का सम्वन्ध समस्त विश्व से है और उनके आगे राष्ट्रीयता की सीमाएँ लोप हो जाती हैं। —गेटे

Science is organised knowledge.

सघटित ज्ञान का नाम विज्ञान है। —एच० स्पेन्सर

Science surpasses the old miracles of mythology.

पौराणिक कथाओं के पुराने आश्चर्य से भी विज्ञान आगे वढ गया है। —एमर्सन

विज्ञान ने अधों को आँख दी है और वहरो को सुनने की शक्ति। उसने जीवन को दीर्घ वना दिया है, भय को कम कर दिया है। उसने पागलपन को वश में कर लिया है और रोग को रौंद डाला है। —आर्कडियन फरार

वित्त

वित्त से अमृततत्त्व की आशा करना वेकार है। —विनोवा

विद्या

✓ विद्या के समान कोई नेत्र नही है। —वेदव्यास

अपूर्व. कोऽपि कोपोऽय विद्यते तव भारति।
दानेन वृद्धिमायाति सचयेन विनश्यति॥

—अज्ञात

हे सरस्वती, यह (विद्या) तुम्हारा वडा ही अनोखा कोष है, जो दान देने से तो वढता है किन्तु गाडकर रखने से नष्ट हो जाता है।

पुस्तकस्था तु या विद्या परहस्ते गत धनम्।
कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्धनम्॥

जो विद्या पुस्तक में ही रखी हो, मस्तिष्क मे सचित न की गयी हो और जो धन दूसरे के हाथ में चला गया हो, आवश्यकता पड़ने पर न वह विद्या ही काम आ सकती है और न वह धन ही।

परमात्मा को प्राप्त करा देने वाली विद्या ही वास्तव में विद्या है।

—स्वामी विवेकानन्द

विद्या कामधेनु गाय है। —चाणक्य

वर्षहिं जलद भूमि नियराये। यथा नवहिं बुध विद्या पाये॥ —तुलसी

बिना अभ्यास के विद्या विष के समान है। —अज्ञात

गतेऽपि वयसि ग्राह्या विद्या सर्वात्मना बुधैः।
यद्यपि स्यान्न फलदा, सुलभा सान्यजन्मनि॥ —अज्ञात

उम्र बीत जाने पर भी बुद्धिमान् मनुष्य हर तरह से विद्या को प्राप्त करे। चाहे वह इस जन्म में फल न दे लेकिन दूसरे जन्म के लिए सुलभ हो जाती है।

न चौरचौर्यं न च राजदण्ड्य।
न भ्रातृभाज्यं न करोति भारम्॥
दाने कृते वर्द्धति चैव नित्यम्।
विद्याधन सर्वधनप्रधानम्॥ —अज्ञात

विद्यारूपी धन को चोर चुरा नहीं सकता, राजा दण्ड में ले नहीं सकता, भाई हिस्से में बाँट नहीं सकता, उसका कोई बोझ नहीं होता, वह दान देने से नित्य बढ़ती है, विद्या सब धनों में श्रेष्ठ है।

देहोऽहमिति या बुद्धिरविद्या सा प्रकीर्तिता।
नाहं देहश्चिदात्मेति बुद्धिर्विद्येति भण्यते॥

—अध्यात्म रामायण

'मैं देह हूँ' इस बुद्धि का नाम ही अविद्या है, और मैं देह नहीं, चेतन आत्मा हूँ, इसी को विद्या कहते हैं।

जिस विद्या में कर्तृत्व शक्ति नहीं, स्वतंत्र रूप से सोचने की बुद्धि नहीं खतरा उठाने की वृत्ति नहीं वह विद्या निस्तेज है। —विनोबा

रूप-यौवन-सम्पन्ना विशालकुलसम्भवा।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुका॥ —चाणक्य

सुन्दर, तरुणतायुक्त और बड़े कुल में उत्पन्न भी विद्याहीन मनुष्य ऐसे नहीं शोभित होते जैसे गन्धहीन पलाश के फूल।

जो विद्या की ओर ध्यान नही देता और अपने समय को व्यर्थ नष्ट करता है वह सदा मनुष्य-जन्म के फल से वचित रहता है। —प्रेमचन्द

वहुत सी पुस्तको में निर्दोष आनन्द लेने का जो अटूट भडार भरा है, वह भी विद्या के विना हमें नही मिल सकता। —महात्मा गांधी

यथा खनन् खनित्रेण भूतले वारि विन्दति।
तथा गुरुगता विद्या शुश्रूपुरविगच्छति॥ —चाणक्य

जैसे कुदारी से खोद कर मनुष्य पाताल के जल को पाता है, वैसे ही गुरु-गत विद्या सेवा से प्राप्त होती है।

विद्या के सम धन नही, जग में कहत सुजान।
विद्या ही से मनुज लघु, होवे भूप समान॥ —अज्ञात

विद्या स्वर्ण है, परन्तु भूमि की मिट्टी और मलिनता से लथपथ, जव तक प्रयोग की भट्टी मे उसे तपाया न जाय उस पर कान्ति और आभा नही आती, और जव तक कान्ति न आये तव तक संसार मे उसका उचित मूल्य नही लगता। —अज्ञात

✓ विद्या अमूल्य और अनश्वर धन है। —ग्लैडस्टन

विद्या मनुष्य का अधिक रूप है और छिपा हुआ गुप्त धन है, विद्या से भोग, सुख और यश प्राप्त होता है। विद्या गुरुओ की गुरु है। विदेश में विद्या भाई के समान है। विद्या परम देवता है ; राजाओ मे विद्या ही पूजी जाती है, धन नही। विद्या से ीन मनुष्य पशु है। —भर्तृहरि

✓ सुख चाहै विद्या पढै, विद्या है सुख हेतु।
भव सागर से तरन को, विद्या है दृढ सेतु। —अज्ञात

विद्या ददाति विनय विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्मं तत- सुखम्॥ —हितोपदेश

विद्या विनय को देती है, नम्रता से योग्यता मिलती है, योग्यता से धन, धन से धर्म और धर्म से सुख प्राप्त होता है।

The end of all knowledge must be the building up of character.

✓ विद्या का अतिम लक्ष्य चरित्र-निर्माण होना चाहिए। —महात्मा गांधी

Knowledge itself is power.

विद्या स्वय ही शक्ति है। —वेकन

जिसके पास विद्यारूपी नेत्र नही वह अन्धे के समान है। —हितोपदेश

The end of all knowledge should be virtuous action

सुकर्म विद्या का अतिम लक्ष्य होना चाहिए। —सर पी० सिडनी

विद्या विवादाय धन मदाय शक्ति परेषा परिपीडनाय।
खलस्य साधो विपरीतमेतद् ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय॥

खलो की विद्या विवाद के लिए, धन मद के लिए और शक्ति दूसरो को सताने के लिए होती है। इसके विपरीत सज्जनो की विद्या ज्ञान के लिए, धन दूसरो को देने के लिए तथा बल (दुर्बलो की) रक्षा के लिए होता है।

जो मनुष्य अपनी विद्या और ज्ञान को कार्यरूप मे परिणत कर सकता है वह दर्जनो कल्पना करनेवालो से श्रेष्ठ है। —एमर्सन

जैसे सूर्य सबको एक सा प्रकाश देता है, बरसात जैसे सब के लिए बरसती है, उसी तरह विद्यावृष्टि सब पर बराबर होनी चाहिए। —महात्मा गाधी

विद्यादान

✓ विद्या के अतिरिक्त और कोई श्रेष्ठ दान नही है। —फुलर

विद्यार्थी

विश्वविद्यालयो के विद्यार्थियो की परीक्षा उनके ज्ञान से नही वरन् उनके धर्माचरण द्वारा ही होगी। —महात्मा गाधी

ऐच्छिक विद्यार्थी के जीवन को अकथनीय आनन्द प्राप्त होता है। —गोल्डस्मिथ

सच्चा विद्यार्थी वही है जिनको विद्योपार्जन की सच्ची भूख लगी हो, जो विद्या-प्राप्ति की कठिनाइयो को देखकर आनन्दित होता है, जो विद्या को केन्द्र बनाकर अन्य सब बातो को भूल जाता है। —अनात

सुखार्थिन कुतो विद्या विद्यार्थिन कुत सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेद विद्याम् विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्॥

—चाणक्य

सुखार्थी को विद्या कहाँ, विद्यार्थी को सुख कहाँ? सुख को चाहे तो विद्या छोड दे, विद्या को चाहे तो सुख त्याग दे।

There is no royal road to learning.
शिक्षा-प्राप्तिका कोई आसान रास्ता नही है। —कहावत

विद्वत्ता

Seeing much, suffering much and studying much are the three pillars of learning.
अधिक अनुभव, अधिक विपत्ति सहना और अधिक अध्ययन, यही विद्वत्ता के तीन स्तम्भ हैं। —डिजरायली

The great art of learning is to undertake but little at a time
विद्वत्ता की महान् कला है कि एक समय मे थोड़ा सा कार्य लिया जाय। —लॉक

विद्वत्ता को अभिमान है कि उसने वहुत कुछ सीख लिया, ज्ञान नम्र है कि वह अधिक नही जानता। —कूपर

Learning makes a man fit company for himself.
विद्वत्ता से मनुष्य स्वय अपना योग्य साथी वन जाता है । —यंग

विद्वत्ता असख्य मनुष्यो को जितना वे स्वाभाविक रूप से है उससे कही अधिक मूर्ख वना देती है। —शोपेनहर

Learning is an ornament in prosperity, a refuge in adversity and a provision in old age.
विद्वत्ता अच्छे दिनो में आभूपण है, विपत्ति में सहायक एव वुढापे में सचित सामग्री है। —अरस्तू

विद्वत्ता का अभिमान करना सवसे वडी अज्ञानता है। —जर्मी टेलर

विद्वत्ता युवको को संयमी वना देती है। यह वुढापे का आराम है, निर्वनता में धन का काम देती है और धनवानो के लिए आभूपण का काम करती है। —सिसरो

विद्रोह

विना उद्देश्य का विद्रोह विनाशक है, पर साधु उद्देश्य से प्रणोदित विद्रोह शूर का धर्म है। —अज्ञात

Rebellion to tyrants is obedience to God
अत्याचारी के प्रति विद्रोह ईश्वर की आज्ञा मानना है। —जैफरसन

विद्वान्

जहाँ तक मेरा व्यक्तिगत सम्बन्ध है मैं यह जानता हूँ कि मैं कुछ भी नहीं जानता।

—सुकरात

Wise men learn more from fools than fools from the wise.

मूर्ख जितना विद्वान् से सीखते हैं उससे कहीं अधिक विद्वान् मूर्ख से सीखते हैं।

—अज्ञात

नालम्बते दैष्टिकता न निषीदति पौरुषे।
शब्दार्थौ सत्कविरिव द्वयं विद्वानपेक्षते॥ —माघ (शिशुपालवध)

विद्वान् पुरुष न तो दैव के भरोसे रहता है और न केवल पुरुषार्थ पर ही आश्रित रहता है, किन्तु वह शब्द और अर्थ दोनों की अपेक्षा करनेवाले सुकवि की भाँति दैव और पुरुषार्थ दोनों की अपेक्षा करता है।

अधिक विद्वान प्राय बहुत संकीर्ण विचार के होते हैं। —हैजलिट

विद्वत्त्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥ —चाणक्य

राजा और पण्डित दोनों कभी बराबर नहीं हो सकते, क्योंकि राजा का अपने देश में ही आदर होता है और विद्वान् का सारे संसार में आदर होता है।

विधान

विधान की स्याही का एक बिन्दु गिरकर भाग्यलिपि पर कालिमा चढा देता है।

—जयशंकर प्रसाद

There is a higher law than the constitution.

संविधान के ऊपर भी एक बड़ा कानून है। —सिवर्ड

A good constitution is infinitely better than the best despot.

किसी सर्वश्रेष्ठ निरंकुश शासक की अपेक्षा एक अच्छा विधान अधिक उत्तम होता है। —मैकाले

विधि

Laws are always useful to those who possess and obnoxious to those who have nothing

विधि सम्पत्तिवान के लिए सदैव उपयोगी है, जिनके पास कुछ भी नहीं है उनके लिए अप्रिय है। —रूसो

विनय

विनय और श्रद्धा के सामने तर्क नहीं पेश किया जाता। —सुदर्शन

Sense shines with a double lustre when it is set in humility. An able and yet humble man is a jewel worth a kingdom.

विनय के साथ विवेक दूने प्रकाश से चमकता है। योग्य और नम्र मनुष्य किसी राज्य के समान बहुमूल्य रत्न है। —पेन

विनय स्वयं का ठीक ठीक मूल्यांकन है। —स्पर्जन

विनय प्राय: गर्व की अपेक्षा अधिक प्राप्त कर लेता है।

—इटै० कहावत

विनाश

विनाशकाले विपरीतबुद्धि:। —चाणक्य

विनाश-काल में बुद्धि विपरीत हो जाती है।

विनीत

बड़ों की कुछ समता हम अत्यन्त विनीत होकर ही कर पाते हैं। —रवीन्द्र

✓ विनय समस्त गुणों की ठोस आधारशिला है। —कन्फ्यूशियस

After crosses and losses, men grow humbler and wiser.

कष्ट और हानि के बाद मनुष्य अधिक विनीत और ज्ञानी हो जाता है।

—फ्रैंकलिन

Humility, like darkness, reveals the heavenly lights.

विनय अंधकार की भाँति स्वर्गीय प्रकाश दिखाता है। —थोरो

विनोद

विनोद एक प्रकार का टानिक है, जिससे शरीर और मस्तिष्क को शक्ति मिलती है। —अज्ञात

विनोद एक कला है, गाली-गलौज वला है। सच्चा कलाकार विनोदी होता है।
—अज्ञात

यदि मुझमें विनोद का भाव न होता तो मैं ने बहुत पहले आत्महत्या कर ली होती। —महात्मा गांधी

भाषा और भाषण दोनो का भूषण है विनोद। जिस भाषा मे विनोद का पुट नही वह फीकी है। और जिस भाषण में विनोद का रग नही वह निस्सदेह फीका है, 'वोर' है। —अज्ञात

धनियो का विनोद सदा सफल होता है। —गोल्डस्मिथ

A joke is a very serious thing
विनोद बहुत गम्भीर वस्तु है। —चर्चिल

विनोद का उपयोग रक्षा के लिए होना चाहिए, उसे दूसरो को घायल करने के लिए तलवार न बनना चाहिए। —फुलर

विनोद बातचीत का नमक है, भोजन नही। —हैजलिट

कविता केवल हृदय का उद्गार होती है, विनोद रोम रोम का उद्गार है।
—अज्ञात

विनोदी

A humourist's entrance into a room is as though another candle has been lighted.
किसी स्थान में विनोदी व्यक्ति के आगमन से ऐसा प्रतीत होता है, मानो दूसरा दीपक प्रकाशित कर दिया गया है। —अज्ञात

विपत्ति (दे० "दुःख", "मुसीबत")

विपत्ति में भी जिस हृदय में सद्ज्ञान उत्पन्न न हो, वह एक ऐसा सूखा वृक्ष है जो पानी पाकर पनपता नही बल्कि सड जाता है। —प्रेमचन्द

विश्वास के कारण उत्पन्न होने वाली विपत्ति जीव का समूल नाश कर डालती है। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

विपत्ति के सदृश कोई शिक्षा नही है। —डिजरायली

विपद: सन्तु न: शश्वत् तत्र तत्र जगद्गुरो।
भवतो दर्शनं यत्स्यादपुनर्भवदर्शनम्॥ —कुन्ती

जगद्गुरो! हमारे जीवन में सर्वदा पद-पद पर विपत्तियाँ आती रहें; क्योंकि विपत्तियों में ही निश्चित रूप से आपके दर्शन हुआ करते हैं और आपके दर्शन हो जाने पर फिर जन्म-मृत्यु के चक्कर में नहीं आना पड़ता।

वचन काय मन मम गति जाही।
सपनेहुँ बूझिअ विपति कि ताही॥ —तुलसी (मानस)

Prosperity is no just scale; adversity is the only balance to weigh friends.

सुदिन अच्छी तुला नहीं है, विपत्ति ही केवल ऐसी तुला है जिस पर हम मित्रों को तौल सकते हैं। —प्लूटार्क

विपत्ति में पड़े विना सुख की महिमा समझ में नहीं आती। —अज्ञात

Adversities come in battalions.

विपत्ति अकेले नहीं आती। —कहावत

दुरदिन परे रहीम कहि, भूलत सब पहचानि।
सोच नहीं चित हानि को, जो न होय हित हानि॥ —रहीम

कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देनेवाले श्रेष्ठ गुण हैं, जो मनुष्य साहस के साथ उन्हें सहन करते हैं वे अपने जीवन में विजयी होते हैं। —लोकमान्य तिलक

विपति बराबर सुख नहीं, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जान परै सब कोय।

विपत्ति पुराने घावों को बढ़ाती है, सम्पत्ति उन्हें भर देती है। —अज्ञात

रत्न बिना रगड़ खाये नहीं चमकता, मनुष्य बिना परीक्षा के पूर्ण नहीं होते। —चीनी कहावत

विपति भए धन ना रहै, होय जो लाख करोर।
नभ तारे छिपि जात हैं, जिमि रहीम भै भोर॥ —रहीम

He that has no cross will have no crown.

जिसने विपत्ति नहीं झेली उसे राजमुकुट नहीं मिलता। —क्वार्ल्स

जिसे हम व्यथा और विपदा कहते हैं वह यथार्थ में शत्रु नहीं, मित्र है। —अज्ञात

जितने दुख, जितनी विपत्तियाँ हमें प्राप्त होती है उनका कारण यही है कि अनन्त ऐश्वर्ययुक्त सर्वशक्तिमान् परमात्मा की ओर हम भिन्नता का भाव रखते हैं।
—स्वेट मार्डेन

विपत्ति में हमारा मन अन्तर्मुखी हो जाता है। —प्रेमचन्द (गवन)

विपत्ति हीरे की धूल है जिससे ईश्वर अपने रत्नो को चमकाता है। —लेटन

विना विपत्ति के नेत्र नही खुलते, विना कष्ट झेले ज्ञान नही होता। —अज्ञात

कहि रहीम सपत्ति सगे, वनत वहुत बहु रीत।
विपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत॥ —रहीम

धर्मपरायण व्यक्तियो की कसौटी तो विपत्ति और दुख ही है। —अज्ञात

Constant success shows us but one side of the world, adversity brings out the reverse of the picture

निरन्तर सफलता हमे ससार का केवल एक ही भाग दिखाती है, विपत्ति हमें चित्र का दूसरा भाग भी दिखाती है। —कोल्टन

विपत्ति आ पडने पर जीवनरक्षा के लिए वलवान् व्यक्ति को अपने समीपवर्ती शत्रु से भी मेल कर लेना चाहिए। —वेदव्यास, (महाभारत, शातिपर्व)

को रहीम पर द्वार पर, जात न जिय पछितात।
सपति के सव जात है, विपति सवहिं लै जात॥ —रहीम

God brings men into deep waters, not to drown them but to cleanse them

ईश्वर मनुष्य को गहरे पानी में डुवाने के लिए नही ले जाता वरन् निर्मल वनाने के लिए। —अग्हे

विपत्ति से वढकर तजुर्वा सिखानेवाला कोई विद्यालय आज तक नही खुला।
—प्रेमचन्द

विभूति

महान् विभूतियाँ देह छोडने पर ही अधिक वलवान् वनती हैं।
—विनोबा

वियोग, विरह

Love reckons hours for months and days for years; and every little absence is an age.

प्रेम में घंटे महीनों के और दिन वर्षों के समान होते हैं, और प्रत्येक छोटा वियोग एक युग के समान होता है। —ड्राइडेन

मेरे प्रभु! तुम्हारे वियोग के क्षण मुझे शत्रुओ के बाणो की भाँति लगते हैं। तुम्हारे हाथ कब उन बाणो को मेरे शरीर से दूर करेंगे। —अज्ञात

हिरदे भीतर दव बरै, धुआँ न परगट होय।
जाके लागी सो लखै, की जिन लाई होय॥ —कबीर

कटे यह रात क्योकर हाय, क्या सदमे गुजरते हैं।
न वह आते, न सब्र आता, न नीद आती, न मरते हैं। —दाग

Absence makes the heart grow fonder.

वियोग हृदय को और अधिक आसक्त बना देता है। —टामस हेन्स बेली

यथा काष्ठ च काष्ठ च समेयाता महार्णवे।
समेत्य तु व्यपेयाता कालमासाद्य कश्चन॥
एव भार्याश्च पुत्राश्च ज्ञातयश्च वसूनि च।
समेत्य व्यवधावन्ति ध्रुवो ह्येषा विनाभव॥

—वाल्मीकि (रा० अयो०)

जैसे महासागर में बहते हुए दो काठ कभी एक दूसरे से मिल जाते हैं और मिलकर कुछ काल के बाद एक दूसरे से विलग भी हो जाते हैं, उसी प्रकार स्त्री, पुत्र, कुटुम्ब और धन भी मिलकर बिछुड़ जाते हैं, इनका वियोग अवश्यम्भावी है।

कठिन विरह भी मिलन की आशा से सह्य हो जाता है। —कालिदास

The joy of meeting pays the pangs of absence; else who could bear it.

मिलन की प्रसन्नता विरह की वेदना को सह्य बना देती है, यदि ऐसा न होता तो उसे कौन सहता। —रो

आशाबन्ध कुसुमसदृश प्रायशो ह्यङ्गनाना।
सद्य पाति प्रणयिहृदय विप्रयोगे रुणद्धि॥ —कालिदास

विरह में वनिता के पुष्पसदृश हृदय को आशा ही कुम्हला जाने से बचाती है।

विरह अगिनि तनु तूल समीरा। स्वांस जरइ छन माँहि सरीरा॥
नयन स्रवहि जलु निज हित लागी। जरै न पाव देह विरहागी॥
—तुलसी (मानस-सुन्दर)

विरह भुवगम तन डसा, मन्त्र न लागै कोय।
नाम वियोगी ना जिए, जिए तो वाउर होय॥ —कबीर

Distance sometimes endears friendship, and absence sweeteneth it

प्राय. दूरी मित्रता को प्रिय बना देती है और विरह उसे मधुर बना देता है।
—जे० हावेल

Absence is to love what wind is to fire, it puts out the little and kindles the great

जैसे अग्नि के लिए आँधी है वैसे प्रेम के लिए विरह है। यह तुच्छ को बुझा देते हैं और महान् को प्रकाशमान बना देते हैं। —बूसे

वियोगी, विरही

विरह वान जेहि लागिया, औषध लगत न ताहि।
सुसुक सुसुक मरि मरि जियै, उठै कराहि कराहि॥ —कबीर

पिय बिन जिय तरसत रहै, पल पल विरह सताय।
रैन दिवस मोहि कल नही, सिसक सिसक जिय जाय॥ —कबीर

मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेत
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे। —कालिदास

जो सुखी हैं उनका भी चित्त बादलो को देख स्थिर नही रहता, फिर जो विरही हैं उनकी तो बात ही क्या?

विरोध

Opposition always inflames the enthusiast, never converts him

विरोध उत्साहियो को सदैव उत्तेजित करता है, उन्हें बदलना नहीं।
—शिलर

जो हमसे कुश्ती लडता है, हमारे अगो को मजबूत करता है, हमारे गुणो को तेज करता है; हमारा विरोधी हमारी मदद करता है। —बर्क

No government can be long secure without a formidable opposition.

कोई भी सरकार प्रवल विरोधी दल के विना अधिक दिन नही टिक सकती।

—डिजरायली

Hardship and opposition are the native soil of manhood and self-reliance

कठिनाई और विरोध वह देशी मिट्टी है जिसमें पराक्रम और आत्मविश्वास का विकास होता है। —जान नील

विवाह

विवाह का उद्देश्य भोग नही, आत्मा का विकास है। —प्रेमचन्द

कुलीन कन्या कुरूप भी हो तो विवाह कर लो। सुन्दर किन्तु नीच संस्कारोवाली स्त्री से कभी विवाह न करो। (दे० 'कुलीन") —मनु

Hanging and wiving go by destiny.

फाँसी और विवाह भाग्यानुसार होता है। —शेक्सपियर

A woman must be a genius to create a good husband.

अच्छा पति वनाने के लिए स्त्री को प्रतिभावान् होना चाहिए। —वालजक

A man finds himself seven years older the day after his marriage.

मनुष्य अपने विवाह के दूसरे ही दिन अपने को सात वर्ष और वृद्ध अनुभव करने लगता है। —वेकन

Married in haste, we repent at leisure.

जल्दी के विवाह पर हम फुरसत में पश्चात्ताप करते है। —कांग्रेव

शरीर का व्याह नही होता, व्याह होता है हृदय की आत्मा का। यही विवाह का धार्मिक महत्त्व है, इसी से नैतिक महत्त्व की उपलब्धि हुआ करती है।

—जनार्दन प्रसाद झा "द्विज"

विवाह प्रेम की वह व्यवस्था है जो हमारी मानसिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक इन्द्रियो के विकास का साधन है। —अज्ञात

प्रत्येक स्त्री का यह कर्त्तव्य है कि वह जितनी जल्दी सम्भव हो सके विवाह कर ले और पुरुष का, जहाँ तक सम्भव हो सके, उससे दूर रहे। —जार्ज वर्नार्ड शा

Marriage with a good woman is a harbour in the tempest of life; with a bad woman, it is a tempest in the harbour.

अच्छी स्त्री से विवाह जीवन के तूफान में बंदरगाह है और खराब स्त्री से विवाह बंदरगाह में ही तूफान है। —जे० पी० सेन

Marriage is a great civilizer of the world.

विवाह संसार को महान् सभ्य बनाने वाला है। —राबर्ट हाल

Marriage is popular because it provides maximum of enjoyment with maximum of opportunity

विवाह लोकप्रिय इसलिए है कि वह सबसे अधिक आनन्द का सबसे अधिक अवसर से मेल कराता है। —जार्ज बर्नार्ड शा

प्रथम बार विवाह कर्त्तव्य है, द्वितीय बार मूर्खता और तृतीय बार पागलपन है। —डच कहावत

प्रेम जब आत्मसमर्पण का रूप लेता है, तभी ब्याह है, उसके पहले ऐयाशी। —प्रेमचन्द (गोदान)

विवाहित जीवन

विवाहित जीवन एक तपोभूमि है। सहनशीलता और संयम खोकर कोई इसमें सुखी नहीं रह सकता। —अज्ञात

वैवाहिक जीवन मसाले की भाँति है। लोग आँखों में आँसू भर भरकर उसकी प्रशंसा करते हैं। —अज्ञात

विवेक (दे० "बुद्धि")

Let your own discretion be your tutor; suit the action to the word, the word to the action.

अपने विवेक को अपना शिक्षक बनाओ। शब्दों का कर्म से और कर्म का शब्दों से मेल कराओ। —शेक्सपियर

विवेक बुद्धि की पूर्णता है, जीवन के सभी कर्त्तव्यों में वह हमारा पथप्रदर्शक है। —ब्रूये

समझा समझा एक है, अन-समझा सब एक।
समझा सोई जानिए, जाके हृदय विवेक॥ —कबीर

उपासना के द्वारा विवेक उत्पन्न होता है। विवेकी होने से क्षणिक वस्तुओ से शोक और आनन्द ये दोनो नही होते। —स्वामी दयानन्द सरस्वती

The better part of valour is discretion.

✓ पराक्रम का प्रमुख अग विवेक है। —शेक्सपियर

जड़ चेतन गुन दोषमय, विस्व कीन्ह करतार।
सत हंस गुन गहहिं पय, परिहरि वारि विकार॥

—तुलसी (दोहावली)

Discretion is the salt and fancy the sugar of life; the one preserves, the other sweetens it

विवेक जीवन का नमक और कल्पना उसकी मिठास है। एक उसको सुरक्षित रखता है और दूसरा उसे मधुर बनाता है। —बोवी

हसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यप । —कालिदास

हस दूध निकाल लेता है और उसमें मिले हुए पानी को छोड़ देता है।

Men in general judge more from appearances than from reality. All men have eyes, but few have the gift of penetration

साधारणत. मनुष्य सत्य की अपेक्षा बाहरी आकार से ही अनुमान लगाते है। सभी मनुष्यो के नेत्र होते है किन्तु किसी किसी को ही विवेक का वरदान मिलता है।

—मेकियावेली

Wisdom is sometimes nearer when we stoop than when we soar.

उड़ने की अपेक्षा जब हम झुकते है तब विवेक के अधिक निकट होते है।

—वर्ड्सवर्थ

Wisdom is only found in truth.

विवेक केवल सत्य में पाया जाता है। —गेटे

यौवन और सौंदर्य में विवेक कदाचित् ही होता है। —होमर

विवेकभ्रष्ट

शिरः शार्वं स्वर्गात् पशुपतिशिरस्तः क्षितिधरं
महीध्रादुत्तुङ्गादवनिमवनेश्चापि जलधिम्।
अधोऽधो गङ्गेयं पदमुपगता स्तोकमथवा
विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः ॥ —भर्तृहरि

स्वर्ग से च्युत होकर शिवजी के सिर पर, शिवजी के सिर से हिमालय पर्वत पर, हिमालय से पृथ्वी पर और फिर पृथ्वीतल से समुद्र में गिरती हुई वही गंगा लघु पद को प्राप्त हुई। वस्तुतः विवेक-भ्रष्ट पुरुषों का पतन सैकड़ों प्रकार से होता है।

विवेक-भ्रष्ट मनुष्य की दुर्गति निश्चय ही होती है। —अज्ञात

विवेकशील

विवेकिनमनुप्राप्ता गुणा यान्ति मनोज्ञताम्।
सुतरां रत्नमाभाति चामीकरनियोजितम् ॥ —चाणक्य

विवेकी मनुष्य को पाकर गुण सुन्दरता को प्राप्त होते हैं, सोने में जड़ा हुआ रत्न अत्यन्त सुशोभित होता है।

विवेकशील कीचड़ में पड़े रत्न को भी ग्रहण करते हैं, कीचड़ में लिप्त होने के कारण उसे अग्राह्य नहीं करते। —हरिऔध

विश्राम

कार्य के लिए विश्राम वैसा ही है जैसा नेत्रों के लिए पलकों का होना। —रवीन्द्र

बहुत अधिक विश्राम स्वयं दर्द बन जाता है। —होमर

जैसे पक्षी दिन में चारों तरफ इधर-उधर उड़ता फिरता है, लेकिन शाम के समय अपने घोंसले में आकर स्थिर हो जाता है, वैसे ही जीवात्मा जब संसार के सब तरह के कामों में थककर भटक जाता है तब विश्राम के लिए परमेश्वर के पास पहुँच जाता है। —विनोबा

उद्योग का परिवर्तन ही विश्राम है; इसमें बहुत सत्य है। —महात्मा गांधी

Rest is the sweet sauce of labour.

विश्राम परिश्रम की मधुर चटनी है। —प्लूटार्क

Absence of occupation is not rest; a mind quite vacant is a mind distressed.

व्यवसाय का अभाव विश्राम नहीं है, शून्य मस्तिष्क दुःखी मस्तिष्क है।

—काउपर

विश्राम में भी उद्यम की गति है।
शांत समुद्र की तरंगें गति-हीन नहीं हैं।। —रवीन्द्र

विश्व

समस्त विश्व ईश्वर से पूर्ण है। अपने नेत्र खोलो और उसे देखो।

—स्वामी विवेकानन्द

विश्वात्मा

विश्वात्मा को ही जब कोई अपनी आत्मा समझने लगता है तब अखिल विश्व उसके शरीर का काम देता है। —स्वामी रामतीर्थ

युग-प्रवर्त्तक महापुरुषों के अंतिम क्षण विश्वात्मा की प्रखरतम दीप्ति के साक्ष्य होते हैं। —अज्ञात

विश्व-शान्ति

अगर तुम्हारा हृदय पवित्र है, तो तुम्हारा आचरण भी सुन्दर होगा, अगर तुम्हारा आचरण सुन्दर है, तो तुम्हारे घर में शान्ति रहेगी, अगर घर में शांति है तो राष्ट्र में सुव्यवस्था होगी और अगर राष्ट्र में सुव्यवस्था है, तो समस्त विश्व में शांति और सुख रहेगा। —कनफ्यूशियस

विश्वास

विश्वास प्रेम की पहली सीढ़ी है। —प्रेमचन्द

Faith is the force of life.

विश्वास जीवन की शक्ति है। —टाल्सटाय

ईश्वर की अपने अन्दर उपस्थिति का चैतन्य ज्ञान ही विश्वास है।

—महात्मा गांधी

Faith is one of the forces by which men live, and the total absence of it means collapse

विश्वास उन शक्तियो में से एक है जो मनुष्य को जीवित रखती है, विश्वास का पूर्ण अभाव ही जीवन का अवसान है। —विलियम जेम्स

विश्वास के विना कार्य करना, सतहविहीन गड्ढे में पहुँचने के प्रयत्न के सदृश है। —महात्मा गांधी

विश्वास मनुष्य को केवल मनुष्य ही नही वनाता वरन् ईश्वर तक पहुँचाने में पूर्णतया सफल होता है। —अज्ञात

विश्वास क्या नही कर सकता—विश्वास हमें अथाह सागर के वीच से होकर ले चलता है और समय पर गगनचुम्बी पहाडो को लाँघने में भी सरलता अनुभव कराता है। —अज्ञात

✓ जो अपने आप में विश्वास नही करता वह नास्तिक है। —स्वामी विवेकानन्द

मनुष्य उसी काम को ठीक तरह से कर सकता है, उसी में सफलता प्राप्त कर सकता है जिसकी सिद्धि में उसका सच्चा विश्वास है। —स्वेट मार्डेन

विश्वास वह पक्षी है जो प्रभात के पूर्व अवकार में ही प्रकाश का अनुभव करता है और गाने लगता है। —रवीन्द्र

विश्वास से वढ कर कोई दवा नही, इलाज तो वहाना है। —अज्ञात

Faith is the root of all blessings

विश्वास सारे वरदानो का आधार है। —जर्मी टेलर

विश्वास मैत्री का मुख्य अग है। —प्रेमचन्द

विश्वास ही हमें वह मार्ग वताता है जो हमें अपनी मजिल पर पहुँचा देता है। —स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)

महापुरुषो का विश्वास इतना प्रवल और अनन्य होता है कि वे पानी का घी और वालू की चीनी तक वना सकते हैं। —स्वामी शिवानन्द

विश्वास तूफानी सागर में हमको खेता है, पर्वतो को डिगा देता है, सागर लँघा देता है। विश्वास एक कोमल पुष्प नही है जो आवारा वायु के झोंके में कुम्हला जाय। यह हिमाचल के सदृश अडिग है। —महात्मा गाधी

जिसने पहले अपकार किया हो वह धन और मान द्वारा बहुत सत्कार करे तो भी उसका विश्वास नहीं करना चाहिए। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

विश्वास विश्वास, अपने आप मे विश्वास, ईश्वर में विश्वास यही महानता का रहस्य है। —स्वामी विवेकानन्द

विश्वास का अभाव अज्ञान है। —स्वामी रामतीर्थ

जिस मनुष्य के चित्त से विश्वास जाता रहता है उसे मृतक समझना चाहिए। —प्रेमचन्द

There is nothing which strengthens faith more than the observance of morality.

सदाचार के आचरण के अतिरिक्त विश्वास को दृढ बनानेवाली दूसरी वस्तु नहीं है। —एडीसन

The faith waiting in the heart of a seed promises a miracle of life which it cannot prove at once

वीज के हृदय में प्रतीक्षा करता हुआ विश्वास जीवन में एक महान् आश्चर्य का वादा करता है, जिसे वह उसी समय सिद्ध नही कर सकता। —रवीन्द्र

Faith is the pencil of the soul that pictures heavenly things

विश्वास हृदय की वह पेंसिल है जो स्वर्गीय वस्तुओ को चित्रित करती है। —टी० वरब्रिज

As the flower is before the fruit, so is faith before good works.

जैसे फल के पहले फूल, वैसे ही सत्कार्य के पहिले विश्वास। —ह्वेटली

अविश्वासी के उत्तम विचार से विश्वासी की भूल अधिक अच्छी है। —टामस रसल

Faith is like love . it cannot be forced. As trying to force love begets hatred, so trying to compel religious belief leads to unbelief

विश्वास प्रेम के सदृश है, यह विवश नहीं किया जा सकता। जैसे वलपूर्वक प्रेम कराना घृणा उत्पन्न करता है वैसे ही धार्मिक विचारों में विवश करना अविश्वास पैदा करता है। —शोपेनहावर

विश्वास महान् कृतियो का जनक है। यह योग्यता को शक्ति प्रदान करता है, वल को दूना करता है, मानसिक शक्तियो का पोपण करता है, शक्ति को वढाता है। —ओ० एस० मार्डन

Love all, trust a few, do wrong to none.

प्रेम सबसे करो, विश्वास कुछ पर करो, किसी का बुरा न करो।

—शेक्सपियर

विश्वासघात

Treachery, though at first very cautious, in the end betrays itself.

विश्वासघात यद्यपि आरम्भ में बहुत सावधान होता है किन्तु अंत में स्वयं को धोखा देता है। —लिवी

मित्रद्रोही कृतघ्नश्च यश्च विश्वासघातकः।
ते नरा नरकं यान्ति यावच्चन्द्रदिवाकरौ॥

मित्रद्रोही, कृतघ्न और विश्वासघाती तब तक नरक में वास करते हैं जब तक सूरज और चाँद रहते हैं। —अज्ञात

जब अत्याचारी प्रेम का अभिनय करे तब वह डरने का समय है। —शेक्सपियर

जिसने एक बार विश्वासघात किया है, उसका पुनः विश्वास न करो।

—शेक्सपियर

विश्वासघात महापाप है। —अज्ञात

विष

अनभ्यासे विषं शास्त्रमजीर्णे भोजनं विषम्।
दरिद्रस्य विषं गोष्ठी वृद्धस्य तरुणी विषम्॥ —चाणक्य

बिना अभ्यास के शास्त्र विष हो जाता है, अजीर्ण में भोजन करना विष हो जाता है। दरिद्रों को सभा विष और वृद्ध को युवती विष जान पड़ती है।

✓ प्रेमपूर्ण व्यवहार अमृत है और द्वेषपूर्ण व्यवहार ही विष है।

—हनुमानप्रसाद पोद्दार

एक का भोजन दूसरे के लिए विष है। —कहावत

विषय (दे० 'वासना')

सारे विषयभोग विष से भी भारी विष हैं। —स्वामी शंकराचार्य

विपय-भोग में धन का ही सर्वनाग नही होता, इससे कही अविक वुद्धि और वल का सर्वनाश होता है। —प्रेमचन्द

भोग रोग सम भूषण भारू। यम-यातना सरिस ससारू॥ —तुलसी

If sensuality were happiness, beasts were happier than men, but human felicity is lodged in the soul, not in the flesh.

यदि इन्द्रियसुख ही आनन्द होता तो पशु मनुष्य से अधिक सुखी होते, परन्तु मानव-आनन्द आत्मा में है शरीर में नही। —सेनेका

विपयो के संवंध में सोचने से उनसे सम्पर्क हो जाता है। —गीता

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्तास्तपो न तप्त वयमेव तप्ता । —भर्तृहरि

विपयो को हमने नही भोगा, किन्तु विषयों ने ही हमे भोग लिया, हमने तप को नही तपा, किन्तु विषयों ने ही हमें तपा डाला।

Voluptuousness, like justice, is blind, but that is the only resemblance between them.

विपय न्याय के सदृश अन्वा है परन्तु दोनों में केवल इतनी ही समानता है। —पैस्कल

इन्द्रियसुख आत्मा की कब्र है। —चैनिंग

सुनहु उमा ते लोग अभागी। हरि पद छाँडि विपय अनुरागी॥ —तुलसी

विपयेष्वतिसरागो मानसो मल उच्यते।
तेष्वेव हि विरागोऽस्य नैर्मल्य समुदाहृतम्॥ —अज्ञात

विपयो में अत्यन्त राग ही मन का मैल है और विपयो से वैराग्य होने को ही निर्मलता कहते है।

विषयी (दे० "कामी")

The body of a sensualist is the coffin of a dead soul.

विपयी का शरीर मृतक आत्मा का कफन है। —वोवी

कामार्त्ता हि प्रकृतिकृपणाञ्चेतनाचेतनेपु। —कालिदास

काम से जो पुरुप आर्त्त है वे जीव और जड़ में भेद नही कर सकते।

असयमी और विपयी युवक क्षीण शरीर को बुढापे के हवाले करता है। —सिसरो

कामी स्वता पश्यति। —कालिदास

कामी पुरुष सब वस्तुओ को अपने अनुकूल ही समझता है।

He that lives in a kingdom of sense, shall die in the kingdom of sorrow.

जो वासना के साम्राज्य में लिप्त रहता है, वह दुःख के साम्राज्य में मरेगा।

—वेब्सटर

विषाद

न विषादे मन कार्य विषादो दोषवत्तर।
विषादो हन्ति पुरुष बाल क्रुद्ध इवोरग॥

—वाल्मीकि (रा० कि०)

मन को विषादग्रस्त नही बनाना चाहिए, विषाद में बहुत बडा दोष है। जैसे क्रोध में भरा हुआ साँप बालक को काट खाता है, उसी प्रकार विषाद पुरुष का नाश कर डालता है।

यो विषाद प्रसहते विक्रमे समुपस्थिते।
तेजसा तस्य हीनस्य पुरुषार्थो न सिध्यति॥ —वाल्मीकि

जो पराक्रम का अवसर उपस्थित होने पर विषादग्रस्त हो जाता है, तेज से रहित उस व्यक्ति से फिर पुरुषार्थ नही होता।

विस्तृत

जले तैल खले गुह्यम् पात्रे दान मनागपि।
प्राज्ञे शास्त्र स्वय याति विस्तार वस्तुशक्तित ॥ —चाणक्य

पानी में तेल, दुष्ट व्यक्ति से कही गयी गुप्त बात, सुपात्र को दिया हुआ दान और बुद्धिमान मनुष्य का शास्त्राभ्यास यदि थोड़ा भी होता है तब भी वह अपनी शक्ति के अनुसार स्वय विस्तृत हो जाता है।

विस्मृति

There is noble forgetfulness—that which does not remember injuries

क्षति की स्मृति न रखना मधुर विस्मृति है। —सी० सिमन्स

There is no rememberance which time does not obliterate, nor pain which death does not terminate.

कोई ऐसी स्मृति नहीं है जिसे समय भुला न दे, कोई ऐसी पीड़ा नहीं है जिसे मृत्यु समाप्त न कर दे। —सर्वेनटीज

The Pyramids themselves, doting with age, have forgotten the names of their founders.

युगों से अनुरक्त पिरामिड भी अपने वनानेवालो के नाम को विस्मृत कर गये हैं। —फुलर

वीतराग

वनेषु दोषा: प्रभवन्ति रागिणा गृहेषु पञ्चेन्द्रियनिग्रहस्तप ।
अकुत्सिते कर्मणि य: प्रवर्तते निवृत्तरागस्य गृहं तपोवनम् ।।

विषयी वन में भी दोषमुक्त नहीं हो पाते और संयमी जन घर में रह कर भी इन्द्रिय निग्रह कर लेते हैं। इसलिए अच्छे कार्य मे प्रवृत्त रहने वाले वीतराग पुरुष के लिए उसका घर ही तपोवन है।

वीर

वही सच्चा वीर है जो संसार की माया के वीच मे रह कर भी पूर्णता को प्राप्त करता है। —परमहंस रामकृष्ण

शूरान्महाशूरतमोऽस्ति को वा
मनोजवाणैर्व्यथितो न यस्तु ।। —स्वामी शंकराचार्य

वीरो में सवसे वड़ा वीर कौन है? जो कामवाणो से पीड़ित नहीं होता।

कायर मृत्यु के पूर्व अनेक वार मरते हैं, किन्तु वीर एक ही वार मरते हैं।
—शेक्सपियर (जूलियस सीजर)

वीर पुरुष अपने पौरुष के भरोसे युद्ध करता है, सैनिकों की संख्या के वल पर नहीं।
—वेदव्यास (महाभारत, वनपर्व)

वीर का सवसे वड़ा शत्रु उसका अपना अहंकार होता है। —अज्ञात

वीर पुरुष वह कहलाता है जो दुनिया को जीतता है, लेकिन महावीर वह है जिसने अपने ऊपर जय पायी है और दुनिया में ऐसे छिप गया जैसे दूध में शक्कर।
—विनोवा

विपत्ति आती है और चली जाती है, वीर वही है जो धीर रहे और न्याय, सचाई का त्याग न करे। —अज्ञात

दो वीरो में महान् वीर वह है जो अपने शत्रुओ का भी आदर करता है। —व्यूमेल

यदि तुम्हें क्षमावान् और सत्यवादी वीर बनना हो तो तुम्हें वीर्य की अच्छी तरह रक्षा करनी चाहिए। —महात्मा गांधी

सूर समर करनी करहिं, कहि न जनावहिं आपु।
विद्यमान रन पाइ रिपु, कायर करहिं प्रलापु॥ —तुलसी

वीर पुरुष अपना असम्मान नही देख सकते। —अज्ञात

योद्धा के लिए विजय और वीरगति एक ही समान आनददायी है, क्योकि दोनो में ही एक समान आत्मगौरव की रक्षा होती है। —अज्ञात

The heroes of mankind are the mountains, the highlands of the moral world

मानवता के वीर नैतिक जगत् के पर्वत एव पर्वतीय प्रदेश हैं। —ए० पी० स्टेनली

वीरो ने पहले मानस-ससार पर विजय प्राप्त की है, फिर पार्थिव संसार पर। —स्वेट मार्डन

वीर पुरुष दयालु होते हैं, असहायो पर, स्त्रियो पर और दुर्बलो पर उन्हें क्रोध नही आता। —प्रेमचन्द

वीरगति

क्षत्रिय युद्ध में विजय प्राप्त करके अथवा प्राणो की वलि देकर जो गति प्राप्त करता है वह तपस्या के द्वारा भी नही प्राप्त हो सकती। —वेदव्यास (महा०)

वीरता

प्राणो का मोह त्याग करना, वीरता का रहस्य है। —जयशंकर प्रसाद

आत्म-विश्वास वीरता का सार है। —एमर्सन

शस्त्र-युद्ध में विजय प्राप्त करने की अपेक्षा आत्मविजय करने में अधिक वीरता है। —अज्ञात

अहिंसा वीरो की होनी चाहिए, दुर्बलो की कदापि नही। जब शस्त्र की वार शरीर में लगती है, तभी वीरता की परीक्षा होती है। —महात्मा गांधी

Heroism is the brilliant triumph of the soul over fear.

भय पर आत्मा की शानदार विजय ही वीरता है। —एमियल

विना विवेक के वीरता महासमुद्र की लहरो में डोगी-सी डूव जाती है। —अज्ञात

वीरता मारने में नहीं है, मरने में है; किसी की प्रतिष्ठा वचाने में है, प्रतिष्ठा गँवाने में नही। —महात्मा गांधी

वीरपूजा

सारी मानवता में विश्वव्यापी वीरपूजा है, रही है और सदैव ही रहेगी। —कारलाइल

वीरपूजा वहाँ पर सवसे अधिक होती है, जहाँ पर मनुष्य की स्वतंत्रता का वहुत कम ध्यान रहता है। —हर्वर्ट स्पेन्सर

वृक्ष

जो मनुष्य सडक के किनारे तथा जलाशयो के तट पर वृक्ष लगाता है वह स्वर्ग में उतने ही वर्षो तक फूलता फलता है जितने वर्षो तक वह वृक्ष फलता फूलता है। —पद्मपुराण

अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्ण।
गमयति परितापं छायया संश्रितानाम्॥ —कालिदास

वृक्ष अपने सिर पर गर्मी सह लेता है परन्तु अपनी छाया से औरो को गरमी से वचाता है।

पत्रपुष्पफलच्छाया मूल वल्कल दारुभि.।
गन्धनिर्यासभस्मास्थितोक्मै. कामान् वितन्वते॥

वृक्ष अपने पत्ते, फूल, फल, छाया, मूल, वल्कल, काष्ठ, गन्ध, दूध, भस्म, गुठली और कोमल अकुर से सभी प्राणियो को सुख पहुँचाते हैं।

वृत्तिहीन

परागन्दा रोजी परागन्दा दिल। —शेख सादी

वृत्तिहीन मनुष्य का चित्त स्थिर नही रहता।

वेतन

✓ मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते घटते लुप्त हो जाता है। —प्रेमचन्द

वेदना

Pain and pleasure, like light and darkness, succeed each other.
वेदना और हर्ष, प्रकाश और छाया की भाँति, एक के बाद एक आते हैं।
—लारेन्स स्टर्न

Pain is the wages of ill pleasure
वेदना कुत्सित आनन्द का वेतन है। —कहावत

वेदना और बेइज्जती के मुकाबिले दुनिया में ऐसी कोई चीज नहीं है जो मनुष्य की सच्ची रूह को खींचकर बाहर ला सके। —शरत् (अधिकार)

वेदना पाप का परिणाम है। —गौतम बुद्ध

मानसिक वेदना, शारीरिक वेदना की अपेक्षा अधिक कष्टदायक होती है।
—साइरस

वेदान्त

वेदान्त की शिक्षा ग्रहण करने पर मनुष्य शोक, भय और चिन्ता से विमुक्त हो जाता है। —स्वामी रामतीर्थ

भारत को वेदान्त भुलाने की आवश्यकता है और पश्चिम को अध्यात्म सीखने की जरूरत है। —स्वामी विवेकानन्द

वेदान्त का उद्देश्य ससार को दुःख, सुख, भाग्य, मोहादि से विमुक्त करना है।
—स्वामी रामतीर्थ

वेदान्त हिन्दू सभ्यता एव सस्कृति की पराकाष्ठा है। अपने जीवन को सर्वोच्च और सर्वोत्तम प्रकार से बिताने के विज्ञान और कला को वेदान्त कहते हैं। यह वह प्रकाश है जो विचार और ज्ञान के ससार को प्रकाशित करता है। वेदान्त कहता है तुम यह नश्वर शरीर नहीं हो वरन् तुम सब में व्याप्त अमर आत्मा हो। वेदान्त भारत की सबसे बडी पैतृक देन है। यह भारत का सबसे महान् कोष है।

—स्वामी शिवानन्द

वेश्या

वेश्या जगत् की एक विकृत वस्तु है। देखने में मोहक और कोमल, किन्तु वास्तव में हलाहल विप। अपहरण उसका व्यवसाय, छल उसका स्वभाव, पाप उसका जीवन और पतन उसका मार्ग है।

—अज्ञात

सलज्जा गणिका नष्टा निर्लज्जाश्च कुलस्त्रिय.। —अज्ञात

शर्मीली वेश्या भूखों मरती है और निर्लज्ज गृहस्थिन वदनाम होकर नष्ट होती है।

खूब साज-सिंगार किये और वनी-ठनी वेश्या के सुकुमार वाहु एक तरह की गन्दी दोजखी नाली है जिनमे घृणित मूर्ख लोग जाकर अपने को डुवा देते है।

—संत तिरुवल्लुवर

जिन लोगो की वुद्धि निर्मल है और जिनमे अगाव ज्ञान है वे उन औरतो के स्पर्श से अपने को अपवित्र नही करते जिनका सौन्दर्य और लावण्य सव लोगो के लिए खुला है।

—संत तिरुवल्लुवर

वेश्यासौ मदनज्वाला रूपेन्धनसमेधिता।
कामिभिर्यत्र हूयन्ते यौवनानि धनानि च॥ —भर्तृहरि

वेश्या सुन्दरता-रूपी ईंधन से जलती हुई प्रचण्ड कामाग्नि है। कामी पुरुष अपने धन और यौवन को इस ज्वाला में भस्म कर देते है।

वित्तेन वेत्ति वेश्या स्मरसदृश कुष्ठिन जराजीर्णम्।
वित्त विनापि वेत्ति स्मरसदृग कुष्ठिन जराजीर्णम्॥

पैसेवाले कोढी और जराजीर्ण को वेश्या कामदेव के समान सुन्दर समझती है और विना पैसेवाले को चाहे वह कामदेव के समान सुन्दर ही क्यो न हो, कोढी और वुढापे से जीर्ण समझती है।

—भर्तृहरि

कश्चुम्वति कुलपुरुपो वेश्यावरपल्लव मनोज्ञमपि।
चारभटचौरचेटकनट-निष्ठीवनगरावम्॥ —भर्तृहरि

वेश्या का अवर यदि अतीव मनोहर है तो भी कौन कुलीन पुरुप उसे चुम्वन करेगा? क्योकि वह तो दूत, योद्धा, धूर्त, चोर, नीच, नट और जारो के थूकने का पात्र है।

वैभव

Like madness is the glory of this life
इस जीवन का वैभव पागलपन के सदृश है। —शेक्सपियर

वैभव में पशुता है, पशुता ही नही दानवता है। —भगवतीचरण वर्मा

The shortest way to glory is to be guided by conscience.
अन्तरात्मा द्वारा निर्धारित मार्ग पर चलना ही वैभव का सबसे छोटा मार्ग है।
—होम

धर्म का भूषण वैराग्य है, वैभव नहीं। —महात्मा गांधी

The paths of glory lead but to the grave.
वैभव का मार्ग केवल कब्र की ओर जाता है। —ग्रे

Glory follows virtue like its shadow
अपनी छाया के सदृश वैभव गुणो के पीछे पीछे चलता है। —सिसरो

वैभव अपने ध्येय तक पहुँचने के प्रयास मे है, न कि उस तक पहुँचने मे।
—महात्मा गांधी

वैर

वैर-विरोध से झगडा बखेडा शुरू हो जाता है और वह कुलनाश के लिए बिना लोहे का शस्त्र है। —वेदव्यास (महाभारत, सभापर्व)

इस संसार में वैर से वैर कभी शान्त नही होते। प्रेम से ही वैर शान्त होते है। यही सदा का नियम है। —धम्मपद

वैराग्य

वैराग्य होने पर ही शान्तिदायी त्याग साधक मे दीख पडता है। —अज्ञात

अपने दुखो का अनुभव और दूसरो की आपत्ति का दृश्य बहुधा वह वैराग्य उत्पन्न करता है जो सत्संग, अध्ययन और मन की प्रवृत्ति से भी संभव नहीं।
—प्रेमचन्द

धर्म का भूषण वैराग्य है, वैभव नहीं। —महात्मा गांधी

वैरी

वलोपपन्नोपि हि वुद्धिमान्नर पर नयेन्न स्वयमेव वैरिताम्।
भिपङ्ममास्तीति विचिन्त्य भक्षयेदकारणात् को हि विचक्षणो विपम्॥

—अज्ञात

वुद्धिमान् पुरुप वल से युक्त हो तो भी स्वय दूसरे को वैरी न वनाये। मेरे वैद्य वर्तमान है, ऐसा सोचकर कौन चतुर अकारण विप खा सकता है।

मृगमीनसज्जनाना तृणजलसतोपविहितवृत्तीनाम्।
लुव्वकधीवरपिशुना निष्कारणमेव वैरिणो जगति॥ —भर्तृहरि

तृण वृत्तिवाले मृग, जल वृत्तिवाले मीन (मछली) और सतोप वृत्तिवाले सज्जनो के भी इस संसार में शिकारी, मछुवा और चुगलखोर विना कारण के ही वैरी रहते हैं।

वोट

Votes should be weighed not counted.
वोटो को गिनना नही, तौलना चाहिए। —शिलर

The ballot is stronger than the bullet.
वोट वन्दूक की गोली से अधिक शक्तिशाली है। लिंकन

व्यंग्य

व्यग्य वचन दूसरो का हृदय छेदने में तीर का काम करते हैं। —अज्ञात

हाजिरजवावी व्यग्योक्ति का प्राण होती है। शब्दो की कोमलता और अर्थ की गहनता ये दो उसके आवश्यक और महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं। —अज्ञात

व्यंग्य और ताना मेरे देखने में शैतान की भाषा है। इसी से वहुत दिनो से मैंने उसे छोड दिया है। —कार्लाइल

चितवन से जो रुखाई प्रकट की जाती है वह भी क्रोध से भरे हुए कटु वचनो से कम नही होती। —रामचन्द्र शुक्ल

Sharp wits, like sharp knives, do often cut their owner's fingers.
तीव्र व्यंग्य तेज कृपाण की भाँति प्राय: अपने मालिक की ही उँगलियो को काट देता है। —एरोस्मिथ

ऐसा व्यंग्य कभी स्वीकार के योग्य नहीं होता जो दूसरों को कष्ट पहुँचाये।

—मर्फी

किसी मनुष्य को दूसरे को कटु वचन कहने का उसी प्रकार अधिकार नहीं है जिस प्रकार उसे ढकेल देने का। —डाक्टर जानसन

No sword bites so fiercely as an evil tongue

कोई तलवार इतनी बेदर्दी से नहीं काटती जितना कि कटु वचन।

—सर पी० सिडनी

वार्तालाप में व्यंग्योक्तियों का प्रयोग भी एक कला है। —अज्ञात

Good humour is the best shield against the darts of satirical raillery.

व्यंग्योक्तियों के तीर से बचने के लिए रसिक स्वभाव सर्वोत्तम ढाल है।

—सी० सिमन्स

Satire should not be like a saw, but a sword, it should cut and not mangle

व्यंग्य आरी नहीं, तलवार की तरह होना चाहिए जो एक ही वार में काट दे, रेते नहीं। —जैफर

We smile at the satire expended upon the follies of others, but we forget to weep at our own

दूसरे की मूर्खता पर किये गये व्यंग्य पर हम हँसते हैं लेकिन अपने ऊपर किये गये व्यंग्य पर हम रोना भूल जाते हैं। —म० नेफर

विवेकरहित व्यंग्य मूर्ख के हाथ में कृपाण के सदृश है। —अज्ञात

व्यक्ति

वे व्यक्ति तेजी से आगे बढ़ते हैं जो अकेले चलते हैं। नेपोलियन

इस संसार में हम केवल यथार्थ वस्तुएँ ही नहीं हैं जैसे कि पत्थर के टुकड़े होते हैं, हम तो व्यक्ति हैं और इसलिए हमें इससे सन्तोष नहीं होता कि हम परिस्थितियों के प्रवाह के साथ बहते जायें। —रवीन्द्र

इस संसार में वही व्यक्ति अपने कार्य में सफल होते हैं, जो अपनी परिस्थितियों को अनुकूल बना लेते हैं और यदि वे बना नहीं सकते तो अपने अनुकूल परिस्थितियों को पैदा कर लेते हैं। —जार्ज बर्नार्ड शा

The worth of a state, in the long run, is the worth of the individuals composing it.

किसी राष्ट्र का मूल्य उसके व्यक्तियों का मूल्य है जिनसे वह बना है।

—जे० एस० मिल

व्यक्तित्व

मानव के लिए व्यक्तित्व पुष्प के लिए सुगन्ध के सदृश है।

—चार्ल्स एम० श्वेब

कुछ ऐसे व्यक्तित्व होते हैं जो दूसरो को अपनी ओर आकर्षित कर लेते है, जो दूसरे व्यक्तित्व को आकर्षित करके उसको दबा देते है और उसको अपना दास बना लेते है।

—अज्ञात

Individuality is everywhere to be spared and respected as the root of everything good

व्यक्तित्व की सभी जगह रक्षा और सम्मान करना चाहिए, क्योंकि यह सभी अच्छाइयो का आधार है।

—रिचर

That life only is truly free which rules and suffers for itself.

वास्तव में वही जीवन स्वतंत्र है जो अपने पर शासन करता है और कष्ट सहता है।

—बुल्वर

The strong man is stronger if he remains alone

बलवान् मनुष्य यदि अकेला रहे तो और बलवान् बन जाता है।

—हिटलर

व्यथा

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।
सुन अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय॥

—रहीम

There are two things to be sanctified—pain and pleasure.

दो वस्तुएँ पवित्र करने की है—व्यथा और हर्ष।

—पैस्कल

व्यभिचार

किसी स्त्री के सतीत्व को भग करने से पहले मर जाना उत्तम कार्य है।

—महात्मा गांधी

द्रव्यलुब्धस्य नो सत्य न स्त्रैणस्य पवित्रता। —चाणक्य

धन के लोभी को सचाई नही होती और व्यभिचार करने वाले को पवित्रता नही होती।

व्यवसायी

नात्युच्चशिखरो मेरुर्नातिनीच रसातलम्।
व्यवसायद्वितीयाना नाप्यपारो महोदधि ॥ —अज्ञात

व्यवसायी मनुष्य के लिए सुमेरु पहाड़ की चोटी भी बहुत ऊँची नही है, उसके लिए रसातल भी अधिक नीचे नही है और वह (उद्योगी) समुद्र को भी अपार नही समझता।

व्यवहार

यस्मिन्यथा वर्तते यो मनुष्य। तस्मिस्तथा वर्तितव्य स धर्म।
मायाचारो मायया वाधितव्य। साध्वाचार साधुना प्रत्युपेय ॥
—वेदव्यास (महा० शान्तिपर्व)

अपने साथ जो जैसा बरतता है उसके साथ वैसा ही वर्ताव करना धर्मनीति है, मायावी पुरुष के साथ मायावीपन और साधु पुरुष के साथ साधुता का व्यवहार करना चाहिए।

Behavior is a mirror in which every one displays his image.
मनुष्य का व्यवहार वह दर्पण है जिसमें वह अपना चित्र दिखाता है।
—गेटे

मनुष्य नियम वनाते हैं, स्त्रियाँ व्यवहार। —डी० सीगर

The society of women is the foundation of good manners.
स्त्रियो की सगति उत्तम व्यवहार की नीव है। —गेटे

There are few things more catching than bad temper and bad manner
खराब व्यवहार और चिड़चिडे स्वभाव की तरह कुछ ही वस्तुएँ अति शीघ्र प्रभावित करती हैं। —ए० जी० गार्डनर

सभ्य और सुन्दर व्यवहार हर जगह आदर पाने के लिए प्रवेशपत्र हैं।
—जानसन

The ability to deal with people is as purchasable a commodity as sugar and coffee.

लोगों के साथ व्यवहार करने की योग्यता वैसे ही क्रेय वस्तु है जैसे चीनी और काफी। —जान डी० राकफेलर

Politeness goes far, yet costs nothing.
शिष्टता का प्रभाव दूर तक जाता है, पर उसमें कुछ व्यय नही होता।
—सैमुअल स्माइल्स

अच्छे व्यवहार छोटे छोटे त्याग से बनते हैं। —एमर्सन

Manners are minor morals.
व्यवहार छोटे सदाचार हैं। —पेले

Manners must adorn knowledge, and smooth their way through the world.

व्यवहार ज्ञान को सुशोभित करता है और संसार में अपने मार्ग को सरल बनाता है। — चेस्टरफील्ड

If bad manners are infectious, so also are good manners

जैसे बुरे व्यवहार का प्रभाव बुरा पड़ता है वैसे ही अच्छे व्यवहार का प्रभाव अच्छा पड़ता है।
—ए० जी० गार्डनर

महापुरुष अपनी महत्ता का परिचय छोटे मनुष्यो के साथ किये गये अपने व्यवहार से देते हैं। — कार्लाइल

✓ आत्मनः प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत्। — अज्ञात

जो व्यवहार अपने प्रतिकूल जान पडे उसे दूसरो के साथ भी न करो।

Manners often make fortune.
सद्व्यवहार प्राय भाग्य का निर्माण करते हैं।
— कहावत

दूसरो के साथ वैसा व्यवहार करो जैसा कि तुम चाहते हो कि वे तुम्हारे साथ करें। —बाइबिल

When dealing with people, let us remember we are not dealing with creatures of logic. We are dealing with creatures of emotion, creatures bristling with prejudices and motivated by pride and vanity.

लोगो के साथ व्यवहार करते समय हमें स्मरण रखना चाहिए कि हम तर्क-शास्त्रियो के साथ व्यवहार नही कर रहे हैं, हम ऐसे लोगो के साथ व्यवहार कर रहे हैं, जिनमें मानसिक आवेश है, पक्षपात है और जो गर्व एव अहकार से सचरित होते हैं। —डेल कारनेगी

सद्व्यवहार से उचित और सस्ती कोई अन्य वस्तु नही। —एनन

न कश्चित्कस्यचिन्मित्र न कश्चित्कस्यचिद्रिपु ।
व्यवहारेण मित्राणि जायन्ते रिपवस्तथा ॥ —हितोपदेश

न तो कोई किसी का मित्र है, और न कोई किसी का शत्रु है। व्यवहार से मित्र तथा शत्रु बन जाते हैं।

न्यायोचित कर्मानुकूल व्यवहार करने पर ही सच्चे और सरल कर्म को जाना जा सकता है। —रस्किन

व्यसन

व्यसनानि सन्ति बहुशो, व्यसनद्वयमेव केवल व्यसनम् ।
विद्याभ्यसन व्यसनमथवा हरिपादसेवन व्यसनम् ॥ —अज्ञात

ससार में व्यसन तो बहुत से हैं, किन्तु उनमें से दो ही व्यसन ऐसे हैं जिन्हें वस्तुत व्यसन (प्रिय विषय) कहा जा सकता है—एक तो विद्या का अभ्यास करना और दूसरे भगवान् के चरणो की सेवा करना।

व्याख्यान (दे० "भाषण", "तकरीर")

बुद्धिमान् लोगो के सामने उपदेशपूर्ण व्याख्यान देना जीवित पौदो को पानी देने के समान है। —संत तिरुवल्लुवर

Speech is power speech is to persuade, to convert, to compel.
व्याख्यान शक्ति है, व्याख्यान कायल करने, मत बदलने एव बाध्य करने के लिए है। —एमर्सन

A printed speech is like a dried flower : the substance, indeed is there, but the colour is faded and the perfume gone

छपा हुआ व्याख्यान मुरझाये पुष्प के सदृश है जिसमें सार तो है लेकिन रंग उड़ा हुआ है और सुगन्ध चली गयी है। —लोरेन

ऐ शब्दों का मूल्य जाननेवाले पवित्र पुरुषो! पहले अपने श्रोताओं की मानसिक स्थिति को समझ लो और फिर उपस्थित जनसमूह की अवस्था के अनुसार अपने व्याख्यान देना आरम्भ करो। —संत तिरुवल्लुवर

व्यापार

महँगे या छल-छद्मपूर्ण व्यापार से जनता को सुख नहीं होता। अत राष्ट्र के कर्णचारो का कर्त्तव्य है कि वे सोच-समझकर व्यापार करें। —अज्ञात

जिस व्यक्ति से आप वार्त्तालाप कर रहे है उसकी ओर पूर्ण ध्यान देने में ही सफल व्यापार निहित है। —इलियट

Business today consists in persuading crowds.

आज का व्यापार समूह को प्रलोभन देने में निहित है। —जी० ई० ली

Business is the salt of life.

व्यापार जीवन का नमक है। —कहावत

Business neglected is business lost.

व्यापार की उपेक्षा करना व्यापार को खोना है। —कहावत

व्यापार मनुष्य को बनाता है और उसकी परीक्षा भी लेता है। —कहावत

Business may be troublesome, but idleness is pernicious.

व्यापार कष्टदायक हो सकता है लेकिन आलस्य नाशकारी है। —कहावत

Business is like oil, it won't mix with anything but business

व्यापार तैल के सदृश है। यह व्यापार से ही मिलता है किसी अन्य वस्तु से नहीं। —जे० ग्राहम

व्यायाम

I take the true definition of exercise to be, labour without weariness.

मेरे लिए व्यायाम की परिभाषा बिना थकावट के परिश्रम है। —डा० जानसन

Health is the vital principle of bliss, and exercise, of health

आनन्द का अति आवश्यक सिद्धान्त स्वास्थ्य है, एवं स्वास्थ्य का व्यायाम।—टामसन

शरीरोपचय कान्तिर्गात्राणा सुविभक्तता।
दीप्ताग्नित्वमनालस्य स्थिरत्व लाघव मृजा॥ —महर्षि चरक

व्यायाम करने से शरीर की पुष्टि, गात्रो की कान्ति, मास-पेशियो के उभार का ठीक विभाजन, जठराग्नि की तीव्रता, आलस्य-हीनता, स्थिरता, हलकापन, और मलादि की शुद्धि प्राप्त होती हैं।

न चैन सहसाक्रम्य जरा समधिरोहति। —महर्षि चरक

व्यायाम करनेवालो पर बुढापा सहसा आक्रमण नही कर पाता।

शरीरचेष्टा या चेष्टा स्थैर्यार्था बलवर्धिनी।
देहव्यायाम सख्याता मात्रया तास माचरेत्॥ —महर्षि चरक

शरीर की जो चेष्टा देह को स्थिर करने एव उसका बल बढानेवाली हो, उसे व्यायाम कहते हैं। इसका उचित मात्रा में सेवन करना चाहिए।

शंका

शका से शका बढती है और विश्वास से विश्वास बढता है। यह अनुभव का शास्त्र है। —विनोबा

Doubt is hell in the human soul

शका मानव-आत्मा में नरक के समान है। —गैस्प्रेन

When you doubt, abstain

जब शका हो, तो काम करने से रुक जाओ। —जरदस्तु

We know accurately only when we know little, with knowledge doubt increases

जब हम थोड़ा जानते हैं तभी हम ठीक ठीक जानते हैं। ज्ञानवृद्धि के साथ शका बढती है। —गेटे

Our doubts are traitors
And make us lose the good we oft might win,
By fearing to attempt.

हमारी शकाएँ हमारे साथ विश्वासघात करती है और हमें उन अच्छाइयो से वचित रखती हैं जिन्हें हम प्रयास से पा जाते। —शेक्सपियर

Human knowledge is the parent of doubt
मानवीय ज्ञान शंका का अभिभावक है। —ग्रेवाइल

The end of doubt is the beginning of repose
शंकाओं की समाप्ति शान्ति का आरम्भ है। —पेट्रार्क

शक्ति

Force rules the world not opinion; but opinion which makes use of force.

विचार नहीं वरन् शक्ति संसार पर शासन करती है, परन्तु विचार शक्ति का उपयोग करता है। —पैस्कल

✓ शक्ति जागरण की तेजस्वी तरंगें हैं। —अज्ञात

Who overcomes
By force, hath overcome but half his foe
शक्ति द्वारा शत्रु पर विजय अधूरी विजय है। —मिल्टन

Unlimited power corrupts the possessor.
असीमित शक्ति अपने धारण करनेवाले को पतित कर देती है। —विलियम पिट

The appetite for unrestrained power grows with use.
प्रतिबंधरहित शक्ति की भूख उपयोग से बढ़ती है। —जवाहरलाल नेहरू

Patience and gentleness is power.
संतोष और सज्जनता ही शक्ति है। —ले हन्ट

शक्ति भ्रष्ट करती है; पूर्ण शक्ति पूर्ण रूप से। —लार्ड आक्टन

It is not possible to found a lasting power upon injustice, perjury and treachery.

अन्याय, असत्य और कपट की बुनियाद पर स्थायी शक्ति स्थापित करना असम्भव है। —डिमास्थेनीज

शक्ति ही जीवन है, परम सुख है, चिर अजर अमर है। —स्वामी विवेकानन्द

Power is ever stealing from many to the few
शक्ति अल्पों द्वारा सदा बहुतों से चुरायी जाती रही है। —वेन्डेल फिलिप्स

परमात्मा से जितना हम अपना सम्बन्ध जोड़ेंगे उतनी ही शक्ति हमें प्राप्त होगी, क्योंकि शक्ति वहीं से आती है। —स्वेट मार्डन

जिसके पास अपनी शक्ति नही उसे भगवान् भी शक्ति नही दे सकता। शक्ति आत्मा के अदर से आती है वाहर से नही आती। जो वाहर की शक्ति पर भरोसा करता है वह अपने लिए काले दिनो को पुकारता है। —सुदर्शन

जिसके पास अधिक शक्ति है उसे उसका मृदुलता से उपयोग करना चाहिए। —सेनेका

मनुष्य अपनी ठीक ठीक शक्ति को तव तक नही प्राप्त कर सकता जव तक कि वह इस वात को मन, वचन और काया से न समझ ले कि विश्व के महान् तत्त्व का मैं एक अग हूँ। —स्वेट मार्डेन

शक्ति की लालसा सभी वासनाओ में अधिक नीच है। —टेसीटस

मैदान मे जलता हुआ अलाव वायु में अपनी उष्णता को खो देता है लेकिन इन्जन में वद होकर वही आग सचालनशक्ति का अखण्ड भडार वन जाती है।—प्रेमचन्द

मनुष्य को चमत्कारिक शक्तियाँ कठिन काम करने से नही प्राप्त होती वल्कि इस कारण प्राप्त होती है कि वह कार्य शुद्ध हृदय से करता है। —रिचार्ड वी० ग्रेग

Force is all-conquering but its victories are short-lived.

शक्ति सर्वविजयी है परन्तु उसकी विजय अल्पस्थायी है।

जो मनुष्य अपनी शक्ति का विचार न करके अज्ञानवश भयानक मार्ग में चल पडता है, उसका जीवन उस मार्ग में ही समाप्त हो जाता है।—वेदव्यास (शान्तिपर्व)

ज्ञान ही शक्ति है। —स्वामी विवेकानन्द

अपनी शक्ति को प्रकट न करने से शक्तिशाली पुरुष भी अपमान सहन करता है, काठ के भीतर रहनेवाली आग को लोग आसानी से लाँघ जाते हैं, किन्तु जलती हुई अग्नि को नहीं। —पचतंत्र

शक्ति का उपयोग परोपकार में करना चाहिए, शत्रु को पीडित कर देना मात्र ही शक्ति का सदुपयोग नही है। —अज्ञात

शत्रु (दे० 'दुश्मन', 'वैरी', 'रिपु')

✓ अपनी इन्द्रियाँ ही अपनी शत्रु है, परन्तु वे जीत ली जायें तो मित्र है। —स्वामी शंकराचार्य

माता रिपु पिता शत्रुर्बालो याभ्यां न पाठ्यते।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा॥ —चाणक्य

वह माता शत्रु है और पिता वैरी है जिन्होने अपने बालक को नही पढाया, इस कारण वह सभा के बीच ऐसे शोभा नही पाता जैसे हंसो के बीच बगुला।

कोई शत्रु छोटा नही होता। —फ्रैन्कलिन

हमारी योजना यह है कि हम शत्रु को भीतर ही भीतर नष्ट करके उस पर विजय प्राप्त करें। मानसिक घबराहट, परस्पर विरोधी विचारो का संघर्ष, अनिश्चितता, त्रास की भावना—यही हमारे हथियार हैं। —हिटलर

दुश्मन न तवा हकीरो बेचारा शुमुर्द। —सादी

शत्रु को कभी दुर्बल न समझना चाहिए।

शत्रु च रोग च नोपेक्षव्वम् —अज्ञात

शत्रु की तथा रोग की उपेक्षा मत करो।

छोटे शत्रु को छोटा उपाय करके ही काबू में लाना चाहिए। जैसे चूहे को सिंह नही बिल्ली ही मारती है। —अज्ञात

विधाय वैर सामर्षे नरोऽरौ य उदासते।
प्रक्षिप्योदर्चिषं कक्षे शेरते तेऽभिमारुतम्॥ —माघ

जो मनुष्य पहले ही से रुष्ट शत्रु के साथ वैर ठानकर उसकी उपेक्षा करते हैं अथवा उसकी ओर से उदासीन बन जाते है, वे वायु के सम्मुख तृणो के समूह में आग लगाकर सोते है।

हमारे यथार्थ शत्रु तीन हैं—दरिद्रता, रोग और मूर्खता। वे वीर धन्य हैं जो इन तीनो के विरुद्ध युद्ध छेड़ते हैं। वे मानवता के यथार्थ उपासक और हमारे सच्चे सेनानायक हैं। —अज्ञात

शत्रु को तुच्छ माननेवाली प्रज्ञा एक मोहमयी मदिरा के समान है जो ज्योति और अमरत्व की तरफ नही वरन् अधकार और मृत्यु की तरफ ले जाती है। —अज्ञात

अपने शत्रु को कभी छोटा मत समझो, देखो तृण के ढेर को आग की छोटी सी चिनगारी भस्म कर देती है। —वृन्द

म्रियते यावदेकोऽपि रिपुस्तावत्कुत सुखम्।
पुर क्लिश्नाति सोम हि सैंहिकेयोऽसुरद्रुहाम् ॥

जब तक एक भी शत्रु शेष रहता है तब तक मनुष्य को सुख कहाँ ? राहु समस्त देवताओ के सम्मुख ही चन्द्रमा को दुख पहुँचाता है।

बुद्धिमान शत्रु अच्छा होता है, मूर्ख मित्र नही। वेदव्यास—(शान्तिपर्व)

Have you fifty friends ?—It is not enough Have you one enemy ?—It is too much

क्या आपके पचास मित्र हैं ?—यह अधिक नही है। क्या आपका एक शत्रु है ?—यह बहुत अधिक है। —कहावत

हित करनेवाला शत्रु भी मित्र होता है तथा अहित करनेवाला मित्र भी शत्रु होता है। अपने शरीर से उत्पन्न हुआ रोग भी शत्रु है तथा जगल में उत्पन्न औषधि मित्र है। —वेदव्यास

बलवान् शत्रुओ से कभी वैर नही ठानना चाहिए, क्योंकि आग जैसे तिनके में बैठ जाती है उसी प्रकार बुद्धिमान् की बुद्धि भी उसके नाश का उपाय निकाल लेती है। —वेदव्यास (महाभारत शान्तिपर्व)

✓ न कोई किसी का मित्र है न कोई किसी का शत्रु, शत्रुता और मित्रता केवल व्यवहार से ही होती है। — हितोपदेश

समूलघातमघ्नन्त परान्नोद्यन्ति मानिन.।
प्रध्वसितान्धतमसस्तत्रोदाहरण रवि ॥ —माघ

स्वाभिमानी पुरुष शत्रुओ का समूल नाश किये बिना उन्नति नही प्राप्त करते। इस विषय में गाढे अन्धकार को पूर्णत नष्ट करके उदय होनेवाला सूर्य ही उदाहरण है।

शत्रु के साथ मृदुता का व्यवहार अपकीर्ति का कारण बनता है, और पुरुषार्थ यश का। —अज्ञात

तरह तरह के कुविचार हमारी शान्ति, सुख और विजय के घोर शत्रु हैं। —स्वेट मार्डन

बलवान् शत्रु के सामने जो गर्वित होता है वह नष्ट हो जाता है और जो नम्र होता है वह अपना अस्तित्व स्थिर रखता है; जिस प्रकार पानी के प्रबल प्रवाह में बडे से बडा वृक्ष बह जाता है किन्तु इसके विपरीत बेत का वृक्ष झुककर अपना अस्तित्व कायम रखता है। —वेदव्यास (महाभारत, शान्तिपर्व)

अगर शत्रु तुम्हारे आगे झुके तो तुम उसकी नम्रता में भूल न जाओ, गाफिल न हो। कमान जितनी टेढी झुकती है, उतनी ही वह अपने काम में कारगर होती है।

—अज्ञात

उत्तिष्ठमानस्तु परो नोपेक्ष्य पथ्यमिच्छता।
समौ हि शिष्टैराम्नातौ वर्त्स्यन्तावामय: स च॥ —माघ

अपना कल्याण चाहनेवाले पुरुष को बढ़ते हुए शत्रु की उपेक्षा नही करनी चाहिए, क्योंकि (नीति के) पडितो ने बढ़नेवाले रोग और शत्रु को समान बताया है।

आलस्य हि मनुष्याणा शरीरस्थो महान्रिपु ।
नास्त्युद्यमसमो बन्धु: कृत्वा य नावसीदति॥ —भर्तृहरि

आलस्य ही मनुष्य के शरीर में रहनेवाला सबसे बड़ा शत्रु है, उद्यम के समान मनुष्य का कोई बन्धु नही है—जिसके करने से मनुष्य कभी दुखी नही होता।

शत्रुता (दे० "वैर")

शब्द

When words are scarce, they are seldom used in vain.

जब शब्दो का अभाव होता है तब कदाचित् ही वे बेकार इस्तेमाल किये जाते हैं।

सब्द सब्द बहु अतरा, सार सब्द चित देय।
जा सब्दै साहेब मिलै, सोइ सब्द गहि लेय॥ —कबीर

एक सब्द सुखरास है, एक सब्द दुखरास।
एक सब्द बन्धन कटै, एक सब्द गलफाँस॥ —कबीर

Words are like leaves and where they most abound, much fruit of sense beneath is rarely found

शब्द पत्तियो के सदृश है और जब उनकी सर्वाधिक बहुलता होती है तो उनके नीचे बुद्धिमानी का फल कदाचित् ी कभी मिलता हो। —पोप

शब्द आकाश का गुण है। उसमें निन्दा-स्तुति, मान-अपमान की कल्पना है। सब शब्द है शब्द में अर्थ की तो कल्पना की गयी है। —अज्ञात

"असम्भव" शब्द मेरे कोश में नही है। —नेपोलियन

Words that weep, and tears that speak
कुछ शब्द रोते हैं और कुछ आँसू बोलते हैं। —काउले

सब्द सब्द सब कोइ कहै, सब्द के हाथ न पाँव।
एक सब्द औषधि करै, एक सब्द कर घाव॥ —कबीर

Words are the powerful drug used by mankind
शब्द शक्तिशाली औषध है जिसका मानव उपयोग करता है। —किप्लिंग

सब्द बराबर धन नही, जो कोइ जानै बोल।
हीरा तो दामो मिलै, सब्दहि मोल न तोल॥ —कबीर

जब तक बात तुम्हारे मुख से नही निकली, तब तक वह तुम्हारे वश में है, ज्यो ही वह तुम्हारे मुख से निकली कि तुम उसके वश में हो गये। —सुकरात

शरणागत

शरणागत कहुँ जे तजहि, हित अनहित निज जानि।
ते नर पामर पापमय, तिन्हहि बिलोकत हानि॥ —तुलसी

शरणागत की रक्षा करना बडा ही पुण्य काम है, ऐसा करने मे पापी के भी पाप का प्रायश्चित्त हो जाता है। —वेदव्यास (महाभारत)

जो अपने शरणागत की रक्षा नही करता उसके सभी सुकृत नष्ट हो जाते हैं। —अज्ञात

शराब

Wine has drowned more men than the sea
समुद्र की अपेक्षा शराब ने अधिक मानवो को डुबाया है। —पब्लियस साइरस

When the wine is in, the wit is out
जब शराब मनुष्य मे प्रवेश करती है, तो बुद्धि को बाहर निकाल देती है। —अज्ञात

यह तो हद दर्जे की बेवकूफी और नालायकी है कि अपना रुपया खर्च करें और बदले में सिर्फ बेहोशी और बदहवासी हाथ लगे। —संत तिरुवल्लुवर

ससार की सारी सेनाएँ मिलकर इतने मानवो और इतनी सम्पत्ति को नष्ट नही करती जितनी शराब पीने की आदत। —मिल्टन

जिन लोगो को शराब पीने की घृणित आदत पड़ी हुई है, सुन्दरी लज्जा उनसे अपना मुह फेर लेती है। —संत तिरुवल्लुवर

शरीर

शरीरमाद्यं खलु धर्म-साधनम्।

सभी धर्म-कर्मों के लिए शरीर ही सब से पहला साधन है। —अज्ञात

शरीर आत्मा के रहने की जगह होने के कारण तीर्थ जैसा पवित्र है।

—महात्मा गांधी

नख से लेकर शिखा पर्यन्त यह सारा शरीर दुर्गन्ध से भरा हुआ है, फिर भी मनुष्य बाहर से इस पर अगर, चन्दन, कर्पूर आदि का लेप करता है।

—शंकराचार्य

शरीर वीणा है और आनन्द संगीत, यह जरूरी है कि यंत्र दुरुस्त रहे।

—बीचर

शहादत

जीवन भर किसी अच्छे विचार पर अमल करना और उसी के लिए मरना, यही शहादत है। —विनोबा

शहीद

जो किसी अच्छे ध्येय के लिए अपना सारा जीवन समर्पण करता है वही शहीद है। —विनोबा

It is the cause and not the death, that makes the martyr

यह ध्येय है, मृत्यु नही, जो मनुष्य को शहीद बना देता है। —नेपोलियन

हमारे शहीद भाई "हम में से एक हैं" जिनके नाम इन्सानो के पास नही परमात्मा के पास रहनेवाले हैं। —विनोबा

Let us all be brave enough to die the death of a martyr but let no one lust for martyrdom

हम सभी को इतना अधिक वीर होना चाहिए कि शहीद की मौत मर सकें, परन्तु हममें शहीद होने की तृष्णा न होनी चाहिए। —महात्मा गांधी

शादी (दे० "विवाह")

शान्ति

रात्रि के पश्चात् अरुण का उदय होता है, संग्राम के पश्चात् शान्ति का पुनरागमन होता है। —अज्ञात

शान्तितुल्यं तपो नास्ति। —चाणक्य

शान्ति के समान (दूसरा) तप नहीं है।

सात द्वीप नव खंड लौं, तीनि, लोक जग माहि।
तुलसी शान्ति समान सुख, और दूसरो नाहि॥
—तुलसीदास

शान्ति की कल्पना में रत रहना, जब कि संघर्ष आवश्यक हो, निश्चित रूप से शान्ति मिटाना है। —वेदव्यास (महाभारत)

शान्ति का मूलाधार शक्ति है। —वेदव्यास (महाभारत)

Peace hath her victories,
No less renowned than war

शान्ति की विजय युद्ध की विजय से कम यशस्वी नहीं होती। —मिल्टन

To be prepared for war is one of the most effectual means of preserving peace

युद्ध के लिए तैयार रहना शान्ति कायम रखने के लिए सबसे अधिक प्रभावशाली साधनों में से एक है। —वाशिंगटन

अपने भीतर ही यदि शान्ति मिल गयी तो सारा संसार शान्तिमय प्रतीत होता है।
—योगवासिष्ठ

विगत रात्रि के तूफान ने, आज के प्रभात को, स्वर्णमयी शान्ति का ताज पहना दिया है। —रवीन्द्र

जिस मनुष्य ने अपनी सारी इच्छाओं का त्याग कर दिया है एवं मैं और मेरेपन के भाव से जो मुक्त हो गया है, वही शान्ति पाता है। —महात्मा गांधी

मनुष्य की शान्ति की कसौटी समाज में ही हो सकती है, हिमालय के शिखर पर नहीं। —महात्मा गांधी

मैं ख्याति के ऊँचे शिखर पर चढ़ा हूँ। परन्तु उस ठंडे और अनुर्वर प्रदेश में मुझे त्राण नहीं मिला है। हे मेरे नायक, दिवसावसान के पूर्व ही मुझे शान्ति की घाटी में पहुँचा दो—जहाँ जीवन की खेती स्वर्णमय ज्ञान में परिपक्व होती है। — रवीन्द्र

Peace is the happy, natural state of man, war, his corruption, his disgrace.

शांति मनुष्य की सुखद और स्वाभाविक स्थिति है, युद्ध उसका पतन है, उसका कलंक है। —टामसन

जो कुछ मिले उसी में सन्तोष तथा दूसरों से ईर्षा न करना ही शान्ति की कुंजी है। — धम्मपद

सन्तोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम्।
न च तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम्॥ — चाणक्य

सन्तोषरूपी अमृत से जो लोग तृप्त होते हैं, उनको जो शांति और सुख होता है, वह धन के लोभियों को, जो इधर उधर दौड़ा करते हैं, नहीं प्राप्त होता।

विषयों का सुख और आत्मा की शान्ति—इन दोनों में से किसी एक को हमें चुनना है। अगर संसार में रहकर आत्मिक शान्ति प्राप्त करनी है, अगर दिव्य जीवन तक पहुँचना है, अगर मृत्यु के इस संसार से मुक्त होना है—तो भौतिक जीवन के फलों को नहीं चखना चाहिए। — शिलर

Peace flourishes when reason rules

जहाँ बुद्धि शासन करती है वहाँ शान्ति में वृद्धि होती है। — कहावत

आनन्द उछलता-कूदता जाता है, शांति मुस्कराती हुई चलती है। — हरिभाऊ उपाध्याय

जिसमें शान्ति का निवास नहीं है, उसके सारे सद्‌गुण व्यर्थ हैं। — अज्ञात

शान्ति मानवजीवन का चरम उद्देश्य है। संसार के जितने धर्म कर्म हम करते हैं, उन सबके पीछे यही लालसा तो रहती है कि हम शान्तिपूर्वक जीवन बितायें। — अज्ञात

शासक

दूसरों को सिखाने की भावना रखनेवाला स्वयं कुछ नहीं सीख सकता, दूसरों पर अपना रोब गालिब करनेवाला अधिकार-लोलुप कभी अच्छा शासक नहीं बन सकता। — रस्किन

That sovereign is a tyrant who knows no law but his own caprice.

वह शासक अत्याचारी है जो अपनी रुचि के अतिरिक्त और कोई नियम नहीं जानता। —वाल्टेयर

अन्यायी शासक के प्रति विद्रोह ईश्वर की आज्ञा का पालन करना है। —फ्रैंकलिन

शासक जब प्रजा को दिये गये आश्वासनों को स्वप्न की भाँति भूलने लगता है तो मृत्यु की निद्रा ही उनका स्वागत करती है। —डा० रामकुमार वर्मा

शासन

एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर राज्य करे यह विचार दोनों के लिए असह्य है, बुरा है और दोनों को नुकसान पहुँचानेवाला है। —महात्मा गांधी

शासन-दण्ड धर्म में परिवर्तन नहीं करा सकता। —जयशंकर प्रसाद

कसीदे से न चलता है न ये दोहे से चलता है।
समझ लो खूब कारे सल्तनत लोहे से चलता है॥ —अज्ञात

प्रेम से शासन करना मानवता है, अन्याय से शासन करना बर्बरता है। —प्रेमचन्द

सम्पूर्ण राष्ट्र के रक्तरहित विरोध के समक्ष कोई भी शासन सम्भवतः टिक नहीं सकता। —महात्मा गांधी

For forms of government let fools contest
Whatever is best administered is best

शासन-प्रणाली की रूपरेखा पर मूर्खों को वादविवाद करने दो। वही सर्वोत्तम शासन है जो सुव्यवस्थित हो। —पोप

What government is the best? That which teaches us to govern ourselves.

कौन शासन सर्वोत्तम है? जो आत्मशासन की शिक्षा देता है। —गेटे

शासनविधान

बढ़िया शासनविधान बनाना सरल है पर उसके अनुसार आचरण — [illegible] बड़ा कठिन है। यह तभी हो सकता है जब कि सर्वसाधारण में नागरिकता का उच्च-भाव विकसित किया जाय। —श्रीनिवास शास्त्री

शास्त्र

सर्वस्य लोचन शास्त्र यस्य नास्त्यध एव स: —हितोपदेश

शास्त्र सबके लिए नेत्र के समान है जिसे शास्त्र का ज्ञान नही वह अधा है।

यस्य नास्ति स्वय प्रज्ञा शास्त्र तस्य करोति किम् ।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पण कि करिष्यति ।।

—हितोपदेश

जिस मनुष्य को अपनी बुद्धि नही है उसके लिए शास्त्र बेकार है, जैसे दोनो आँखो से रहित अन्धे को दर्पण क्या करेगा।

शिक्षक

लोकशिक्षक चरित्रहीन हो तो वह विना खारेपन के नमक जैसा फीका होगा।

— महात्मा गांधी

The teacher is like the candle which lights others in consuming itself

शिक्षक मोमवत्ती के सदृश है जो स्वयम् जलकर दूसरे को प्रकाश देती है।

— रूफिनी

शिक्षक का अपना चरित्र भी ऐसा होना चाहिए जो मूक शिक्षण का कार्य करे, जिसे देखकर शिक्षार्थी की श्रद्धा जाग्रत हो जाय। — अज्ञात

शिक्षण

शिक्षण दड है, यह गुलामी की भावना ही आज विद्यार्थियो में प्रचलित है।

— विनोबा

शिक्षण का कार्य कोई स्वतत्र तत्त्व उत्पन्न करना नही है; सुप्त तत्त्व को जाग्रत करना है। —विनोबा

शिक्षा (दे० "नसीहत", "सीख")

सदाचार और निर्मल जीवन सच्ची शिक्षा का आधार है। — महात्मा गांधी

मनुष्य में जो सम्पूर्णता गुप्त रूप से विद्यमान है उसे प्रत्यक्ष करना ही शिक्षा का कार्य है। — स्वामी विवेकानन्द

To develop in the body and in the soul all the beauty and all the perfection of which they are capable

शरीर और आत्मा में अधिक से अधिक जितने सौन्दर्य और जितनी सम्पूर्णता का विकास हो सकता है उसे सम्पन्न करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। —प्लेटो

शिक्षा का महान् उद्देश्य ज्ञान नहीं कर्म है। —हर्बर्ट स्पेन्सर

Education is the ability to meet life's situations

शिक्षा जीवन की परिस्थितियों का सामना करने की योग्यता का नाम है।
—डा० जान जी० हिबन

What is education ? A parcel of books ? Not at all, but intercourse with the world, with men and with affairs

शिक्षा क्या है ? पुस्तकों का ढेर ? बिल्कुल नहीं, बल्कि संसार के साथ, मनुष्यों के साथ और कार्यों से पारस्परिक सम्बन्ध। —बर्क

लोगों को पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए प्रस्तुत करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। —हर्बर्ट स्पेन्सर

जैसे सूर्य सबको एक-सा प्रकाश देता है, बादल जैसे सबके लिए समान बरसते हैं, उसी तरह विद्या-वृष्टि सब पर बराबर होनी चाहिए। —महात्मा गांधी

जिन्होंने मानव पर शासन करने की कला का अध्ययन किया है उन्हें यह विश्वास हो गया है कि युवकों की शिक्षा पर ही राज्यों का भाग्य आधारित है। —अरस्तू

युवकों को यह शिक्षा मिलना बहुत जरूरी है कि वे अपने सामने सर्वोत्तम आदर्श रखें। —महामना मदनमोहन मालवीय

Schoolhouses are the republican line of fortification

विद्याभवन प्रजातंत्री किलेबन्दी है। —होरेस मैन

Education is cheap defence of nation

शिक्षा राष्ट्र की सस्ती सुरक्षा है। —बर्क

शिक्षा का ध्येय चरित्र-निर्माण है। —हर्बर्ट स्पेन्सर

संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियाँ हैं, शिक्षा सबसे बढ़कर है। —निराला

Education is the apprenticeship of life

शिक्षा जीवन की तैयारी का शिक्षणकाल है। —विल्मट

उच्च शिक्षा के प्रभाव से लोगो की बुद्धि सुकुमारता छोड़ प्रौढ़ता प्राप्त करती है।
—अज्ञात

शिक्षा का रहस्य शिष्य का आदर करने में है। —एमर्सन

शिक्षा भी अपने स्थान पर न हो तो वैसी ही निकम्मी है जैसे योग्य जगह पर न होने से किसी चीज की गिनती कचरे में की जाती है। —महात्मा गांधी

What sculpture is to a block of marble, education is to the human soul.

शिक्षा मानव-आत्मा के लिए वैसे ही है जैसे संगमरमर के टुकडे के लिए शिल्पकला।
—एडीसन

✓ कार्यकौशल और कर्मशीलता ही हमारी शिक्षा का मूल मत्र है। —अज्ञात

Universal sufferage, without universal education, would be a curse.

सर्व-व्यापी शिक्षा के बिना व्यापक मताधिकार अभिशाप हो सकता है।
—वेलैण्ड

शिक्षा और सम्पत्ति का प्रभुत्व हमेशा रहा है और रहेगा। —प्रेमचन्द

शिक्षा विविध जानकारियो का ढेर नहीं है। —स्वामी विवेकानन्द

जो शिक्षा हमें निर्बलो को सताने के लिए तैयार करे, जो हमें धरती और धन का गुलाम बनाय, जो हमें भोग-विलास में डुबाये, जो हमें दूसरो का रक्त पीकर मोटा होने का इच्छुक बनाये, वह शिक्षा नहीं भ्रष्टता है। —प्रेमचन्द (प्रेमपचीसी)

शिक्षा केवल ज्ञान-दान नही करती वह संस्कार और सुरुचि के अकुरो का पालन भी करती है। —अज्ञात

जिस शिक्षा में समाज और देश की कल्याण-चिन्ता के तत्त्व नहीं हैं, वह कभी सच्ची शिक्षा नही कही जा सकती। —अज्ञात

हमारी शिक्षा तब तक अधूरी ही रहेगी, जब तक उसमें धार्मिक विचारो का समावेश नहीं किया जायगा। —अज्ञात

हमारी आज की शिक्षा में चाहे जितने सद्गुण हो, किन्तु उसमें जो सबसे बडा दुर्गुण है वह यही है कि उसमें बुद्धि को ऊँचा और परिश्रम को नीचा स्थान दिये जाने की भावना है। —अज्ञात

शिल्पी

शिल्पी पत्थर या मिट्टी में से मूर्ति उत्पन्न नही करता। वह तो उसमें है ही, सिर्फ
पी हुई है उसे प्रकट करना उसका काम है। — रस्किन (विजयपथ)

Sculptures are far closer akin to poetry, than paintings are
शिल्पकला चित्रकला की अपेक्षा काव्य के अधिक निकट है। —कैबिल

शिशु (दे० "बच्चा", "बालक")

वच्चो के आत्मविश्वास को नष्ट करना, उनके मन पर निराशा की छाया
डालना, वडा ही भयानक पाप है। — स्वेट मार्डेन

✓ प्रेरणा-शक्ति के द्वारा वच्चो की उन शक्तियो का विकास किया जा सकता है
जिन पर उनका स्वास्थ्य, सफलता और सुख निर्भर है। — स्वेट मार्डेन

– वच्चो को तो शावाशी, प्रशसा और उत्साह की ही आवश्यकता है। इन्ही से
उनका जीवन उन्नतिशील हो सकता है। — स्वेट मार्डेन

इतिहास की धूल से मलिन न होते हुए शिशु अनन्त समय के रहस्य मे सदैव
निवास करता है। — रवीन्द्र

नीरव रात्रि में माता का सौन्दर्य आभासित होता है और कोलाहलपूर्ण दिवस में
शिशु का। — रवीन्द्र

From the solemn gloom of the temple children run out to sit
in the dust, God watches them play and forgets the priest

देवालय के गभीर अधकार से शिशु धूल में वैठने के लिए वाहर भाग आते है,
ईश्वर उन्हें खेलते हुए देख उनकी रखवाली करता है और पुजारी को भूल जाता
है। — रवीन्द्र

✓ जीवन की महत्त्वाकाक्षाएँ शिशुओ के रूप मे आती है। — रवीन्द्र

शिशुओ की दुनिया अलौकिक है, अद्भुत है, अद्वितीय है और आराध्य है।
—अज्ञात

✓ छोटे वच्चे तो भगवान् की, परब्रह्म की छोटी छोटी मूर्तियाँ है। — साने गुरु

शिशुत्व

क्राति का पथ पकडकर शिशुत्व का वाना पहनो। — रस्किन

महापुरुष जन्म-सिद्ध शिशु है। जब वह मरता है तो अपना शिशुत्व संसार को प्रदान कर जाता है। —रवीन्द्र

अपने रोग की सच्ची चिकित्सा और आत्म-शिक्षा का यथार्थ ज्ञान आपको शिशुत्व की शाला में ही मिलेगा। शिशुत्व को अपनाओ—इसी में आपका कल्याण है। —रस्किन

शिशुत्व मानवजीवन मे परमात्मा के सद्गुणों की एक थाती है, जो माता-पिता उनकी उचित देख-रेख रखते है, उन्हें कभी पछताना नही पड़ता। —अज्ञात

शिष्टाचार

शिष्टाचार का मूल सिद्धान्त है दूसरे को अपने प्रेम और आदर का परिचय देना और किसी को असुविधा और कष्ट न पहुँचाना। —अज्ञात

शील

शील प्रधान पुरुषे तद्यस्येह प्रणश्यति।
न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन न बंधुभि ॥ —वेदव्यास (म०)

शील मानवजीवन का अनमोल रत्न है। उसे जिस मनुष्य ने खो दिया उसका जीना ही व्यर्थ है। वह चाहे जितना धनी अथवा भरे-पूरे घर का हो उसका कोई मूल्य नही रहता।

सीलवंत सब ते बडा, सर्ब रतन की खानि।
तीन लोक की सम्पदा, रही सील में आनि॥ —कबीर

धर्म, सत्य, सदाचार, बल और लक्ष्मी सब शील के ही आश्रय पर रहते हैं। शील ही सब की जड़ है। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

ज्ञानी ध्यानी सयमी, दाता सूर अनेक।
जपिया तपिया बहुत है, सीलवंत कोइ एक॥ —कबीर

सब धर्मों में शील एक छिपा खजाना है। —वेदव्यास (महाभारत)

सुख का सागर सील है, कोइ न पावै थाह।
सब्द बिना साधू नही, द्रव्य बिना नहिं साह॥ —कबीर

अपनी प्रभुता के लिए चाहे जितने उपाय किये जायँ परन्तु शील के बिना संसार में सब फीका है। —वेदव्यास (महाभारत)

नील छिमा जब ऊपजै, अलख दृष्टि तब होय।
बिना सील पहुँचै नही, लाख कथै जो कोय॥ —कबीर

शून्य

अपुत्रस्य गृह शून्य दिश शून्यास्त्वबान्धवा।
मूर्खस्य हृदय शून्य सर्वशून्या दरिद्रता॥ —चाणक्य

निपुत्र का घर सूना है, बन्धुरहित दिशाएँ शून्य हैं, मूर्ख का हृदय शून्य है, और दरिद्रता के होने पर सब कुछ सूना है।

अन्त सारविहीनानामुपदेशो न जायते।
मलयाचलससर्गाद् न वेणुश्चन्दनायते॥ —चाणक्य

शून्य हृदयवालो को शिक्षा देना सफल नहीं होता। मलयाचल पर्वत का बाँस चदन के ससर्ग से चन्दन नही बन जाता।

शूर (दे० "वीर")

तृण ब्रह्मविदा स्वर्ग तृण शूरस्य जीवितम्।
जिताक्षस्य तृण नारी नि स्पृहस्य तृण जगत्॥ —चाणक्य

ब्रह्मज्ञानी को स्वर्ग तृण है, शूर को जीवन तृण है, जितेन्द्रिय को स्त्री तृणतुल्य जान पडती है, निस्पृह को जगत् तृण है।

शूर वीर वही है जो बिना शस्त्र धारण किये शत्रु के सामने छाती खोलकर मरने का साहस करता है। —महात्मा गांधी

Physical bravery is an animal instinct, moral bravery is a much higher and truer courage

शारीरिक वीरता पाशविक प्रवृत्ति है। नैतिक वीरता बहुत ऊँची और सच्ची वीरता है। —वेन्डेल फिलिप्स

सच्चे शूरवीरो के सामने सेना की शक्ति कुछ काम नही करती।
—वेदव्यास (महाभारत-उद्योगपर्व)

शैतान

दुष्ट आदमी के हाथ में नीति-शास्त्र का हथियार आने से ही तो वह शैतान कहलाता है। —महात्मा गाधी

शैतान आदमी को अंधा ही नही बहरा भी बना देता है। —अज्ञात

शैशव (दे० "बचपन", "शिशुता")

शैशवकाल मानव का वैसे ही आभास कराता है जैसे प्रातःकाल दिन का।
—मिल्टन

Childhood sometimes does pay a second visit to a man; youth never.

शैशव कभी-कभी मानव के जीवन में एक बार पुनः आता है, पर यौवन कभी नही।
—श्रीमती जेम्सन

God waits for man to regain his childhood in wisdom

भगवान् इस बात की प्रतीक्षा करता है कि मनुष्य अपने शैशव-काल को ज्ञान में प्राप्त कर ले। —रवीन्द्र

शैशव में समस्त मानवीय सद्‌गुणो के अंकुर विद्यमान रहते हैं। जो माता-पिता चतुर माली की भाँति अपने बच्चे में उनकी देख-रेख रखते हैं, वे उसका उचित पुरस्कार पाते हैं। —अज्ञात

शोक

किसी के बहुत सताने पर भी उसे सताने का प्रयत्न नही करना चाहिए, क्योंकि दुःखी प्राणी का शोक ही सतानेवाले का नाश कर देता है।
—वेदव्यास (महाभारत, आदिपर्व)

ऐसा कोई शोक नही है जिसे समय की गति कम और हलका न कर दे। —सिसरो

Light griefs are plaintive, but great ones are dumb

कम शोक कथनीय है परन्तु महान शोक गूँगा होता है। —सेनेका

शोक के गहरे घाव को समय का मलहम ही पूरा करता है। —अज्ञात

Sorrow's best antidote is employment.

शोक की सर्वोत्तम औषधि कार्य में संलग्न रहना है। —यंग

शोको नाशयते धैर्यं शोको नाशयते श्रुतम्।
शोको नाशयते सर्वं नास्ति शोकसमो रिपुः ॥

वाल्मीकि (रा० अयो०)

शोक धैर्य का नाश करता है, शोक शास्त्रज्ञान को भी नष्ट कर देता है तथा शोक सब कुछ नष्ट कर डालता है, शोक के समान कोई शत्रु नहीं है।

शोभा

शोभा चाल-चलन में होती है, दिखावट में नहीं। —महात्मा गांधी

सकट के समय धैर्य, अभ्युदय के समय क्षमा अर्थात् सब सहन करने की सामर्थ्य, सभा में वक्तृता और युद्ध में शूरता शोभा देती है। —भर्तृहरि

करे श्लाघ्यस्त्याग शिरसि गुरुपादप्रणयिता।
मुखे सत्या वाणी विजयि भुजयोर्वीर्यमतुलम्।
हृदि स्वच्छा वृत्ति श्रुतमधिगत च श्रवणयो-
विनाप्यैश्वर्येण प्रकृतिमहता मण्डनमिदम्॥ —भर्तृहरि

हाथ की शोभा दान से है, सिर की शोभा अपने से वडो को प्रणाम करने से है, मुख की शोभा सच वोलने से है, दोनो भुजाओ की शोभा युद्ध में वीरता दिखाने से है, हृदय की शोभा स्वच्छता से है, कान की शोभा शास्त्र के सुनने से है और ये ही ठाटवाट न होने पर भी सज्जनो के भूषण है।

दरिद्रता धीरता से शोभित होती है, स्वच्छता से कुवस्त्र अच्छा लगता है, कुअन्न उष्णता से अच्छा लगता है, कुरूपता सुशीलता से शोभा देती है। —चाणक्य

अपनी अपनी जगह पर ही किसी वस्तु की विशेष शोभा होती है, जैसे काजल आँख में शोभा देता है और महावर पैर में। —अज्ञात

कोकिलाना स्वरो रूप स्त्रीणा रूप पतिव्रतम्।
विद्या रूप कुरूपाणा क्षमा रूप तपस्विनाम्॥ —चाणक्य

कोकिलो की शोभा स्वर है, स्त्रियो की शोभा पतिव्रत धर्म है, कुरूपो की शोभा विद्या है, तपस्वियो की शोभा क्षमा है।

रूपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवा।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किशुका॥ —चाणक्य

सुन्दर, तरुण और वडे कुल में जन्म लेनेवाले विद्याहीन पुरुष गधहीन पलाश के फूल के समान शोभा नही पाते।

शौर्य

शौर्य किसी में बाहर से पैदा नही किया जा सकता, वह तो मनुष्य के स्वभाव में होना चाहिए। —महात्मा गांधी

श्मशान

संसार का मूक शिक्षक 'श्मशान' क्या डरने की वस्तु है? जीवन की नश्वरता के साथ ही सर्वात्मा के उत्थान का ऐसा सुन्दर स्थल और कौन है।

—जयशंकर प्रसाद (स्कंधगुप्त)

श्मशान ही एक ऐसा स्थल है जहाँ पहुँचकर संसार की असारता का प्रत्यक्ष अनुभव होता है। —अज्ञात

श्रद्धा

किसी मनुष्य में जन-साधारण से विशेष गुण या शक्ति का विकास देख उसके सम्बन्ध में जो एक स्थायी आनन्द-पद्धति हृदय में स्थापित हो जाती है उसे श्रद्धा कहते हैं। —रामचन्द्र शुक्ल

श्रद्धा महत्व की आनन्दपूर्ण स्वीकृति के साथ-साथ पूज्य बुद्धि का सञ्चार है।

—रामचन्द्र शुक्ल

वस्तुत: निराश हृदय को सात्वना, अवलम्ब और जीवन देनेवाली वृत्ति श्रद्धा ही है—श्रद्धा में आत्म-समर्पण है। —अज्ञात

प्रेम में केवल दो पक्ष होते हैं, श्रद्धा में तीन। प्रेम मे कोई मध्यस्थ नही, पर श्रद्धा में मध्यस्थ अपेक्षित है। —रामचन्द्र शुक्ल

श्रद्धा का व्यापारस्थल विस्तृत है, प्रेम का एकान्त। प्रेम में घनत्व अधिक है और श्रद्धा में विस्तार। —रामचन्द्र शुक्ल

श्रद्धा की गुंजाइश तो वही है, जहाँ बुद्धि कुंठित हो जाय। —महात्मा गांधी

मनोवांछित पदार्थ का मूल श्रद्धा ही हो सकती है। —स्वेट मार्डेन

श्रद्धा—आस्था ही हमारे आदर्श की बाह्य रेखा है। —स्वेट मार्डेन

सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्ध: स एव स:॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

हे भारत! सवकी श्रद्धा अपने स्वभाव का अनुसरण करती है। मनुष्य में कुछ न कुछ श्रद्धा तो होती ही है। जैसी जिसकी श्रद्धा, वैसा वह होता है।

✓ श्रद्धा का मूल तत्त्व है दूसरे का महत्त्व-स्वीकार। —रामचन्द्र शुक्ल

सद्विचार पर वुद्धि रखने का ही नाम श्रद्धा है। यही श्रद्धा मनुष्य को वल देती है, सव तरह से प्रेरणा देती है और उसके जीवन को सार्थक वनाती है। —विनोवा

श्रद्धा हृदय की वस्तु है, जव उससे मस्तिष्क टकराता है तो वह चूर चूर हो जाती है। —अज्ञात

श्रद्धा का अर्थ है आत्म-विश्वास और आत्म-विश्वास का अर्थ है ईश्वर पर विश्वास।
—महात्मा गांधी

श्रद्धा एक ऐसी आनन्दपूर्ण कृतज्ञता है जिसे हम केवल समाज के प्रतिनिधिरूप में प्रकट करते हैं। —रामचन्द्र शुक्ल

श्रम (दे० "परिश्रम")

Labour conquers all things

✓ श्रम सभी पर विजयी होता है। —होमर

श्रम और उद्योग चुम्वक के समान है, जो सव अच्छे अच्छे पदार्थों को पास खींच लाते हैं। —वार्टन

विना श्रम के कोई भी उन्नति नही करता। —सफोक्लीज

A man's best friends are his ten fingers

✓ मनुष्य का सर्वोत्तम मित्र उसकी दस उँगलियाँ है। —रावर्ट कोलियर

No sweat, no sweet

✓ विना परिश्रम के सुख नही मिलता। —कहावत

सच्चा श्रम करनेवाले का चेहरा मनोहर होता है। —डेकर

From labour, health, from health contentment springs

✓श्रम से स्वास्थ्य और स्वास्थ्य से सतोष उत्पन्न होता है। वेट्टी

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथै.।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा ॥ —हितोपदेश

उद्यम करने से ही कार्य सिद्ध होते हैं, केवल इच्छा करने से नही। पशुगण सोते हुए सिंह के मुख मे प्रवेश नही करते।

✓ श्रम ईश्वर का सबसे बड़ा पूजन है। —कार्लाइल

Labour makes us insensible to sorrow.

श्रम से हम अपना शोक भूल जाते हैं। —सिसरो

Labour is life.

श्रम जीवन है। —कार्लाइल

श्रम की पूजा करो। वह ऐसा ईश्वर है जो चतुर्मुख ब्रह्मा और चतुर्भुज विष्णु से भी बढकर शक्तिशाली है। उसकी पूजा करनेवाला त्रिकाल में भी कभी निराश नहीं होता। —अज्ञात

श्री

यत्र योगेश्वर: कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर:।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ —गीता

जहाँ योगेश्वर कृष्ण है, जहाँ धनुर्धारी पार्थ है, वहीं श्री है, विजय है, वैभव है, और अविचल नीति है, ऐसा मेरा अभिप्राय है।

श्रेष्ठ

✓ सर्वश्रेष्ठ मनुष्य वही है जिसने मनरूपी राक्षस को अपने वश में कर लिया है। —मीरा

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्ख शतान्यपि।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारा सहस्रश:॥ —चाणक्य

एक गुणी पुत्र श्रेष्ठ है, सैकडो गुणरहित पुत्र नही। एक ही चन्द्रमा अंधकार को नष्ट कर देता है, सैकड़ो तारे नही।

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन।
कर्मेन्द्रियै: कर्मयोगमसक्त: स विशिष्यते॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

जो मनुष्य इन्द्रियो को मन से नियम में रखकर संगरहित होकर कर्म करनेवाली इन्द्रियो द्वारा कर्मयोग का आरम्भ करता है वह श्रेष्ठ पुरुष है।

वास्तव में वे ही लोग श्रेष्ठ हैं जिनके हृदय में सर्वदा दया और धर्म बसता है, जो अमृत-वाणी बोलते हैं तथा जिनके नेत्र नम्रतावश सदा नीचे रहते हैं। —मलूकदास

महात्मा, गुणहीन साधारण जीवों पर भी दया करते हैं। चन्द्रमा चाण्डाल के घर से अपनी किरणों को हटा नहीं लेता। —हितोपदेश

जो सम्पूर्ण प्राणियो को शान्त रखने का प्रयत्न करता है, सर्वदा सत्य व्यवहार करता है, कोमल स्वभाव होकर सबका सम्मान करता है, सर्वदा शुद्ध भाव मे रहता है वह कुल में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। —विदुर

सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति वह है जो अटल-प्रतिज्ञा के साथ सत्य का अनुसरण करता है, जो आन्तरिक और बाह्य सभी प्रलोभनो का प्रतिरोध करता है, जो भारी से भारी बोझो को खुशी से सहता है, जो तूफानो में शान्त रहता है, धमकियो तथा त्यौरियो में निडर रहता है और सत्य, नेकी तथा ईश्वर पर जिसकी निर्भरता सर्वथा अडिग है।

—चैनिंग

संकट (दे० 'दुःख', 'मुसीबत', 'विपत्ति')

सकट यदि न होते तो इस ससार में महान् व्यक्तियो के चरित्रो को, जो हीरे के समान आज चमक रहे हैं, कौन चमकाता। —अज्ञात

सबसे अधिक सकट का क्षण विजय के साथ आता है। —नेपोलियन

सकट का समय ही मनुष्य की आत्मा को परखता है। —टामस पेन

In great straits, and when hope is small, the boldest counsels are the safest

महान् सकट में और जब कि आशा बहुत कम होती है तब सबसे निडर सम्मति ही सबसे बडी सुरक्षा है। —लिवी

सकट के समय मे बडे मनुष्य थोडे ही होते हैं और बाकी की कोई गिनती नही। छोटे-छोटे टीले जिनकी ऊँचाई खुले मौसम में साफ मालूम पडती है बाढ में डूब जाते हैं, लेकिन सबसे ऊँची पहाड की चोटियाँ पानी की सतह के ऊपर दिखाई पडती है।

—लायड जार्ज

संकल्प

इतिहास, पुराण सभी साक्षी हैं कि मनुष्य के सकल्प के सम्मुख देव, दानव सभी पराजित होते हैं। —एमर्सन

An abiding vow is like a fortress affording protection against dangerous temptation. It cures one of weakness and vacillation

दृढ़ सकल्प एक गढ़ के समान है जोकि भयंकर प्रलोभनो से हमको बचाता है, दुर्बल और डाँवाडोल होने से वह हमारी रक्षा करता है। —महात्मा गांधी

अच्छे काम को करने में धन की आवश्यकता कम पडती है, पर अच्छे हृदय और संकल्प की अधिक। —मूर

संकल्प की शुद्धि और दृढता ने भगवान् तक को घटो कच्चे धागे में बाँधकर नाच नचाया है। —अज्ञात

जब सकल्प दृढ हो जाता है, अध्यवसाय अशिथिल हो जाता है और महामाया के श्रीचरणो मे अखड विश्वास हो जाता है—तब उद्देश्य की सफलता भी निश्चित हो जाती है। —अज्ञात

सकल्प कर लो, सोच समझकर कर लो, किन्तु करने के बाद उसे मत छोड़ो। सत्य सकल्प ही ईश्वर के प्रति सबसे बड़ी निष्ठा है। —अज्ञात

संगति (दे० 'कुसंगति', 'सत्संगति')

असत सग के बास सो, गुन अवगुन ह्वै जात।
दूध पिय कलवार घर, मदिरा सबहिं बुझात॥ —विदुर

अच्छी सगति बुद्धि के अधकार को हरती है, वचनो को सत्य की धार से सीचती है, मान को बढ़ाती है, पाप को दूर करती है, चित्त को प्रसन्न रखती है और चारो ओर यश फैलाकर मनुष्यो को क्या क्या लाभ नही पहुँचाती? —भर्तृहरि

Tell me with whom thou art found and I will tell thee who thou art.

√ मुझे बताइए आपके सगी-साथी कौन है और मैं बता दूंगा कि आप कौन है।—गेटे

बुरे साथी हमें नरक में जाने के लिए निमन्त्रित और प्रलोभित करते है। —फील्डिग

काजर की कोठरी में कैसो हू सयानो जाय
एक लीक काजर की लागि है पै लागि है॥ —कहावत

सत सगत के बास सो, अवगुन हू छिपि जात।
अहिर धाम मदिरा पिवै, दूध जानियै तात॥ —विदुर

सगति सुमति न पावई, परे कुमति के वध।
राखो मेलि कपूर में, हीग न होय सुगन्ध। —विहारी

शठ सुधरहिं सतसगति पाई। पारस परसि कुधातु सुहाई॥ —तुलसी

संगीत

मधुर सगीत आत्मा के ताप को शान्त कर सकता है। —महात्मा गाधी

मनोव्यथा जव असह्य और अपार हो जाती है, जव उसे कही त्राण नही मिलता, जव वह रुदन और क्रन्दन की गोद में भी आश्रय नही पाती, तो वह सगीत के चरणो में जा गिरती है। —प्रेमचन्द

सगीत से क्रोध मिट जाता है। —महात्मा गांधी

सगीत में क्रूर हृदय को भी शान्त करने का जादू है। —जेम्स ग्रम्सटन

सगीत के पीछे-पीछे खुदा चलता है—जिस दिल के दरिया को सगीत की वयार तरगित नही कर देती समझो कि उस दिल से शैतान भी डरता है। —सादी

Music is the universal language of mankind.
सगीत मानव की विश्वव्यापी भाषा है। —लागफेलो

सगीत द्वारा मनुष्य जितनी जल्दी और सुगमता से अपने इष्टदेव में तन्मय हो जाता है वैसा साधन दूसरा नही है। जीवात्मा तथा परब्रह्म की जिस एकता के लिए योगी जन अपने रक्त-मास को सुखा देते हैं, वह सगीत द्वारा सहज में ही प्राप्त हो सकती है। —अज्ञात

सगीत की कसौटी यही है कि जड दीप उससे जल उठे। —डा० राजेन्द्र प्रसाद

सगीत में पशु-पक्षियों को भी वश में करने की शक्ति होती है। —अज्ञात

सगीत टूटे हुए हृदय की औषध है। —ए० हन्ट

ससार मुझसे चित्रो में वात करता है, मेरी आत्मा सगीत में उत्तर देती है। —रवीन्द्र

Music is well said to be the speech of angels
सगीत को फरिश्तो की भाषा ठीक ही कहा है। —कारलाइल

सगीत ही केवल ऐसा इन्द्रियसुख है जिसमें कोई बुराई नहीं होती। —जानसन

Music washes away from the soul the dust of everyday life.

सगीत आत्मा की प्रतिदिन की मलिनता को दूर कर देता है। —आवेर बेच

वेदना के सुरो में ही स्वर्गीय सगीत की सृष्टि होती है। —अज्ञात

हमारे यहाँ भगवान् भी विना तो मुरली या डमरू के पूरे नही समझे गये है, मानव का तो प्रश्न ही क्या है। यह अकारण ही नही है कि विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती के हाथ मे पुस्तक के साथ-साथ वीणा भी वतायी जाती है। —डा० राजेन्द्रप्रसाद

संग्रह

रागासक्ति-वश वस्तुओ का सग्रह करना विश्व का ऋणी होना है, उन्हें दूसरो की सेवा में लगा देना ही उऋण होना है। —अज्ञात

सवै वस्तु सग्रह करै, आवै कोइ दिन काम।
समय परे पै ना मिलै, माटी खर्चे दाम॥ —अज्ञात

सच्चे सस्कृति-सुधार और सभ्यता का लक्षण परिग्रह की वृद्धि नही, वल्कि विचार और इच्छापूर्वक उसकी कमी है। जैसे-जैसे परिग्रह कम करते है वैसे-वैसे सच्चा सुख और सच्चा सन्तोष वढता है। —महात्मा गांधी

जलविन्दुनिपातेन क्रमश पूर्यते घट।
स हेतु. सर्वविद्याना धर्मस्य च धनस्य च॥ —चाणक्य

एक-एक विन्दु से जैसे धीरे-धीरे घड़ा भर जाता है उसी तरह सभी विद्याओं, धर्म और धन का भी थोडा-थोड़ा सचय करने से विशाल सग्रह हो जाता है।

संग्राम

Worse than war is the fear of war.

सग्राम की अपेक्षा सग्राम का भय अधिक निकृष्ट है। —सेनेका

War is death's feast

सग्राम मृत्यु (की प्रसन्नता) के लिए दिये गये भोज के समान है। —कहावत

संग्राम विनाश का विज्ञान है। —एवाट

मन के साथ संग्राम करना ही सवसे वड़ा सग्राम है। —स्वामी शिवानन्द

War makes thieves, and peace hangs them.

सग्राम चोरो को उत्पन्न करता है और शान्ति उन्हें सूली पर चढाती है। —कहावत

संघटन

By uniting we stand, by dividing we fall

संघटन में हमारा अस्तित्व कायम रहता है, विभाजन में हमारा पतन होता है।
—जान डिकिन्सन

अल्पानामपि वस्तूना संहतिः कार्यसाधिका।
तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्बध्यन्ते मत्तदन्तिनः॥ —हितोपदेश

छोटी-छोटी वस्तुओं के संघटन से भी कार्य सिद्ध हो जाता है, जैसे घास की बटी हुई रस्सियों से मतवाले हाथी बाँधे जाते हैं।

Union is strength —संघटन ही शक्ति है। —कहावत

संघे शक्ति कलौ युगे। कलियुग में संघटन में ही शक्ति है। —अज्ञात

संघर्ष

संघर्ष ही जीवन है। —अज्ञात

संघर्ष हमें आगे बढने की प्रेरणा देता है। जो संघर्ष से डरते हैं, उन्हें चाहिए कि वे जगल की राह लें। —अज्ञात

संघर्षहीन जीवन और मृत्यु मे अन्तर केवल इतना है कि हम साँस लेते हैं। —अज्ञात

संत

संत हृदय नवनीत समाना। —तुलसी (मानस-उत्तर)

नहिं शीतल है चन्द्रमा, हिम नहिं शीतल होय।
कबिरा शीतल संतजन, नाम सनेही सोय॥ —कबीर

संत न छोडे संतई, कोटिक मिलै असंत।
मलय भुवगहि बेधिया, सीतलता न तजंत॥ —कबीर

बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं संता। —तुलसी (मानस-सुन्दर)

दुखी और दीन पुरुषों के लिए संत ही परम आश्रय है।
—वेदव्यास (महाभारत, आदिपर्व)

सत कष्ट सहि आपुही, सुखी करै जु समीप।
आप जरै तऊ और को, करै उजेरो दीप॥ —कवि वृन्द

पारस में अरु सत में, वड़ो अतरो जान।
वह लोहा सोना करै, वह कर आपु समान॥ —अज्ञात

सपत्सु महता चित्त भवत्युत्पलकोमलम्।
आपत्सु च महाशैलशिलासघातकर्कशम्॥ —भर्तृहरि

सतो का चित्त समृद्धि के समय कमल से भी कोमल होता है, परन्तु आपत्ति में उनका चित्त पहाड़ के पत्थर से भी कड़ा हो जाता है।

वूंद अघात सहै गिरि कैसे। खल के वचन संत सह जैसे॥
—तुलसी

जो कुठार चन्दन को काटता है, चन्दन उसी कुठार की मूठ में अपना गुण, सुगन्ध भर देता है। —अज्ञात

निज परिताप द्रवइ नवनीता।
पर दुख द्रवहि सत सुपुनीता॥—तुलसी (मानस-उत्तर)

सत विटप सरिता गिरि धरनी।
परहित हेतु सवन्ह कै करनी॥

उमा सत की इहै वड़ाई।
मन्द करत जो करै भलाई॥

हर मजहव मे जितने सत हुए है उन सवका हृदय एक है, आपस मे जो भेद दिखाई देते हैं वे अन्य लोगो ने पैदा किये है, संतो ने नही। —कुरान

सता हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्त करणप्रवृत्तय.। —कालिदास

सन्देहजनक परिस्थितियों में सज्जनो के अन्त.करण की प्रवृत्तियाँ प्रमाण वनती हैं।

संतान

जिस प्रकार हीरे की खान से हीरा और पत्थर की खान से पत्थर निकलता है, उसी प्रकार योग्य माता-पिता ही योग्य सतान उत्पन्न कर सकते हैं। —अज्ञात

सतान आत्मा की प्रतिमूर्ति है। —अज्ञात

दाने तपसि शौर्ये च यस्य न प्रथित यश ।
विद्यायामर्थलाभे च मातुरुच्चार एव स ।। —अज्ञात

दान, तप, शौर्य, विद्या और सम्पदा की दृष्टि से जिनके यश का लोग बखान नही करते वह सतान अपनी माता के मल के समान है।

सतान वह सबसे कठिन परीक्षा है जो ईश्वर ने मनुष्य को परखने के लिए गढी है। —प्रेमचन्द (कायाकल्प)

सतान को विवाहित देखना बुढापे की सबसे बडी अभिलाषा है। —प्रेमचन्द

संतोष

असतोष पर दुःख सतोष. परम सुखम्।
सुखार्थी पुरुषस्तस्मात् सतुष्टः सतत भवेत् ।। —महर्षि गौतम

असतोष ही सबसे बढकर दुःख है और सतोष ही सबसे बडा सुख है; अत सुख चाहनेवाले पुरुष को सदा सतुष्ट रहना चाहिए।

सतोष-सेतु जब टूट जाता है तब इच्छा का बहाव अपरिमित हो जाता है।
—प्रेमचन्द (प्रेमपचीसी)

अपने तुच्छ शारीरिक स्वार्थों को परित्याग करने के उपरान्त जो सतोषसुख होता है वह चक्रवर्ती राजा हो जाने के सुख से भी हजारो गुना अधिक है। —अज्ञात

जैसे हरा चश्मा लगा लेने से सभी वस्तुएँ हरी-हरी ही दीखती है उसी प्रकार तोष धारण कर लेने पर सारा ससार आनन्दरूप ही दिखाई पडता है।
—स्वामी भजनानन्द

गोधन गजधन वाजिधन, और रतन धन खान।
जब आवै सतोष धन, सब धन धूरि समान ।। —कबीर

सन्तोषामृततृप्ताना यत्सुख शान्तचेतनाम्।
न च तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम् ।। —चाणक्य

सतोषरूपी अमृत से जो लोग तृप्त होते है, उनको जो शाति और सुख होता है वह धन के लोभियो को, जो इधर-उधर दौडा करते है, नही प्राप्त होता।

Contentment is natural wealth, luxury is artificial poverty
सतोष स्वाभाविक धन है, विलासिता कृत्रिम दरिद्रता है। —सुकरात

He is well paid that is well satisfied.

वह अच्छा वेतन पाता है जो पूर्ण सन्तुष्ट है। —शेक्सपियर

सतोप से बढकर अन्य कोई लाभ नही। जो मनुष्य इस विशेप सद्गुण से सम्पन्न है वह त्रिलोक मे सब से धनी व्यक्ति है। —स्वामी शिवानन्द

सतोप यद्यपि कड़ुवा वृक्ष है, तथापि इसका फल बड़ा ही मीठा और लाभदायक है। —मौलाना रूमी

Contentment gives a crown where fortune hath denied it

संतोप मुकुट पहनाता है, जहाँ भाग्य उससे वंचित रखता है। —फोर्ड

Contentment is the best food to preserve a sound man, and the best medicine to restore a sick one.

मनुष्य को स्वस्थ रखने के लिए सतोप एक सर्वोत्तम भोज्य पदार्थ है एव रोगी को नीरोग रखने के लिए सर्वोत्तम औपध है। —डब्लू० सीकर

An ounce of contentment is worth a pound of sadness, to serve God with.

ईशसेवा के लिए सतोप की एक रत्ती, शोक के एक तोले के तुल्य है। —फुलर

कोउ विस्राम कि पाव, तात सहज सन्तोप विन।
जल विन चलइ कि नाव, कोटि जतन रचिपचि मरिय ॥ —तुलसी

चाह गई चिन्ता मिटी, मनुवाँ वेपरवाह।
जिनको कछू न चाहिए, सोई साहसाह ॥ —कबीर

Content is more than a kingdom

सतोप साम्राज्य से भी बढकर है। —कहावत

एक हिन्दू के जीवन में सतोप की मात्रा स्वभावत. अधिक होती है। वह सुन्दर परलोक के ख्याल से भूखा रहकर भी सतुष्ट रहने में अपना गौरव समझता है। —अज्ञात

The noblest mind the best contentment has.

सर्वोत्कृष्ट मनुष्य को ही सर्वोत्तम सतोप होता है। —स्पेन्सर

सतोप वह पारस पत्थर है जो जिस वस्तु को छूता है उसे सोना बना देता है। —कहावत

विनु सतोप न काम नसाही। काम अछत सुख सपनेहुँ नाही। —तुलसी

क्रोधो वैवस्वतो राजा तृष्णा वैतरणी नदी।
विद्या कामदुघा धेनु. सतोषो नन्दन वनम्॥ —चाणक्य

क्रोध यमराज है और तृष्णा वैतरणी नदी है, विद्या कामधेनु गाय और सन्तोष देवराज इन्द्र का नन्दनवन है।

शान्तितुल्य तपो नास्ति न सन्तोषात्पर सुखम्।
न तृष्णाऽया' परो व्याधिन च धर्मो दयापर ॥ —चाणक्य

शान्ति के समान दूसरा तप नहीं है, न सन्तोष से परे सुख है, तृष्णा से बढकर दूसरी व्याधि नही है, न दया से अधिक धर्म है। —चाणक्य

दानेन तुल्यो निधिरम्ति नान्यो लोभाच्च नान्यो स्ति पर पृथिव्याम्।
विभूषण शीलसम न चान्यत्सतोषतुल्य धनमस्ति नान्यत्॥
—पचतत्र

दान के समान दूसरी निधि नहीं है, लोभ के समान दूसरा शत्रु नही है, शील के समान दूसरा भूषण नही है और सतोष के समान दूसरा धन नही है।

संदेह

सन्देह पानी का बुलबुला नहीं है जो एक क्षण में भग हो जाता है। सन्देह तो धूमकेतु की रेखा है जो आकाश में एक छोर से दूसरे छोर तक फैली रहती है। और धूमकेतु जानते हो किस बात का प्रतीक है? भय का, आशका का, अमगल का।
—डा० रामकुमार वर्मा

मनुष्य-प्रकृति का यह गुण है कि जब थोडा-सा भी सदेह हो जाता है तो साधारण से भी साधारण घटनाएँ उस सदेह का समर्थन करने लग जाती हैं। —अज्ञात

जब मनुष्य को सदेह अधिक होता है तो बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। —अज्ञात

सन्देह हमारा शत्रु है, वह हमारे हृदय में भय उत्पन्न करता है, जिससे हमें जिस पर विजय प्राप्त करने का पूरा भरोसा होना है, उसी के सामने नत-मस्तक होना पडता है। —शेक्सपियर

Doubt is brother devil to despair
सदेह नैराश्य का भ्राता है। —जोरेली

संधि

उपकर्त्रारिणा संधिर्न मित्रेणापकारिणा।
उपकारापकारौ हि लक्ष्य लक्षणमेतयो.॥ —माघ

उपकारी शत्रु के साथ भी सन्धि कर लेना उचित है, किन्तु अपकारी मित्र के साथ (कभी) नहीं, क्योकि इस उपकार और अपकार को ही मित्र और शत्रु का लक्षण समझना चाहिए।

संन्यास

काम्याना कर्मणा न्यासं सन्यास कवयो विदु.।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

कामना से उत्पन्न हुए कर्मों के त्याग को ज्ञानी संन्यास के नाम से जानते है।

सन्यास स्वार्थ है, सेवा त्याग है।

—प्रेमचन्द

गीता का प्रेरक मत्र यह कहा जा सकता है—"सब धर्मों को तजकर मेरी शरण ले।" यह सच्चा सन्यास है। परन्तु सब धर्मों के त्याग का मतलब सब कर्मों का त्याग नहीं है। परोपकार के कर्मों में भी जो सर्वोत्कृष्ट कर्म हो उन्हें ईश्वर के अर्पण करना और फलेच्छा का त्याग करना, यह सर्वधर्म-त्याग या संन्यास है। —महात्मा गांधी

संन्यासी

सन्यासी के लिए सेवाकार्य छोड़ने की जरूरत नहीं है, अहंकार और आसक्ति छोड़ने की आवश्यकता है।

—विनोबा

कर्म-मात्र का त्याग गीता के सन्यास को भाता ही नहीं। गीता का संन्यासी अति कर्मी होने पर भी अति अकर्मी है।

—महात्मा गांधी

संपत्ति

आपन्नार्तिप्रशमनफला. सम्पदो ह्युत्तमानाम्। —कालिदास

उत्तम पुरुषो की सपत्ति का मुख्य प्रयोजन यही है कि औरों की विपत्ति का नाश हो।

सम्पति भरम गँवाइ के, हाथ रहत कछु नाहि।
ज्यो रहीम ससि रहत है, दिवस अकासहिं माहि॥ —रहीम

बेईमानी से जमा की हुई सम्पत्ति ऐसी है जैसी मृग के लिए कस्तूरी।—अज्ञात

I consider my ability to arouse enthusiasm among the men, ie greatest asset I possess and the way to develop the best that is i a man is by appreciation and encouragement

लोगों में उत्साह भरने की अपनी योग्यता को ही मैं अपनी सबसे बडी सम्पत्ति मझता हूँ और मनुष्य के भीतर जो कुछ सर्वोत्तम है उसका विकास, प्रशंसा एवं ोत्साहन द्वारा ही किया जा सकता है। —चार्ल्स श्वेव

पवित्रता वह सम्पत्ति है जो प्रेम के बाहुल्य से पैदा होती है। —रवीन्द्र

जहाँ सम्पत्ति है वही सुख है, परन्तु सम्पत्ति के भेद से ही सुख का भी भेद है— वी सम्पत्तिवालो को परमात्मसुख, आसुरीवालो को आसुरी सुख और नरक के ीडो को नारकीय सुख। —हनुमानप्रसाद पोद्दार

जहाँ सुमति तहँ सम्पत्ति नाना। —तुलसी

आपत्ति में पडे हुए पुरुषो की पीडा हर लेना ही सत्पुरुषो की सम्पत्ति का सच्चा ल है। सम्पत्तिमान् होकर भी मनुष्य यदि विपत्ति-ग्रस्तो के काम न आया तो उसकी म्पत्ति किस काम की। —कालिदास

सा लक्ष्मीरुपकुरुते यया परेषाम्। भारवि

वही सम्पत्ति सम्पत्ति है जो औरो का उपकार करे।

संभाषण

A good speech is a good thing, but the verdict is the thing

सम्भाषण एक अच्छी वस्तु है, किन्तु मुख्य वस्तु निर्णय है। —डेनियल ओकानल

Great talkers are like leaky vessels, everything runs out of iem

बातूनी लोग छिद्रयुक्त वर्तन के तुल्य हैं जिनमें से सभी वस्तुएँ बह जाती हैं। —सी० सिमन्स

संयम

विद्यार्थी अवस्था में संयम की महान् विद्या सीख लेनी चाहिए। जब आप ंयम की शक्ति का संग्रह कर लेंगे तो एकाग्रता भी, जो जीवन की एक महान शक्ति ;, पा लेंगे। —विनोबा

बलवान् बनने के लिए एक और जरूरी बात है संयम। मैं इन्द्र हूँ, ये इन्द्रिया मेरी शक्तियाँ हैं। —विनोबा

✓ संयमहीन जीवन विपत्तियों का आगार बन जाता है। —अज्ञात

Most powerful is he who has himself in his own power
जो आत्मसंयमी है वही सर्वशक्तिमान् है। —सेनेका

जो अपने ऊपर शासन कर सकते हैं वही दूसरो पर भी करते है।
—हैजलिट

No man is free who cannot command himself.
जो आत्मसंयमी नहीं है वह स्वतंत्र नही है। —पाइथागोरस

संवेदना (दे० 'सहानुभूति')

उन पाषाणवत् हृदयों को धिक्कार है जो दूसरे के दुःख को कोमलता से अपनाकर द्रवीभूत नही हो जाते। —ए० हिल

संशय (दे० 'सन्देह')

संशय बड़े घातक हैं। ये हमारी उत्पादक शक्ति को नष्ट कर देते हैं—हमारी अभिलाषा को पंगु और शक्तिहीन बना देते हैं। —स्वेट मार्डेन

Doubt comes in at the window when inquiry is denied at the door.
जहाँ जाँच-पड़ताल से इनकार कर दिया जाता है, वहाँ संशय गुप्त रास्ते से उपस्थित हो जाता है। —जोवेट

Men was not made to question but adore.
मानव सन्देह करने के लिए नही, वरन् उपासना करने के लिए बनाया गया है।
—यंग

नासमंजसशीलैस्तु सहासीत कथंचन।
सद्वृत्तसन्निकर्षो हि क्षणार्धमपि शस्यते॥ —विष्णुपुराण

संशयशील व्यक्ति के साथ कभी न रहे, सदाचारी पुरुषों का तो आधे क्षण का भी संयोग प्रशंसनीय है।

अज्ञश्चाश्रद्धधानश्च संशयात्मा विनश्यति।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः॥ —भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

जो अज्ञानी, श्रद्धारहित और संशयवान् है, उसका नाश होता है। संशयवान् के लिए न यह लोक है, न परलोक है, उसे कहीं सुख नहीं है।

संसार

यह संसार प्रचंड तूफानों का संसार है, इसको सौन्दर्य-संगीत शान्त किये हुए है।
—रवीन्द्र

यह संसार एक सुन्दर पुस्तक है, परन्तु जो इसे पढ़ नहीं सकता उसके लिए व्यर्थ है। —गोल्डोनी

संसार परिवर्तनशील फेन है जो शान्तिरूपी सागर की सतह पर सदैव तैरता रहता है। —रवीन्द्र

You will never have a quiet world till you knock patriotism out of the human race.

तुम शान्त संसार कभी नहीं पा सकते, जब तक कि मानव-जाति से देश-प्रेम निकाल नहीं फेंकते। —बर्नार्ड शा

Hell is God's justice, heaven is His love, earth, His long suffering

नरक ईश्वर का न्याय है, स्वर्ग उसका प्रेम है, पृथ्वी उसकी दीर्घकालीन यातना है। बारोन वेसेन बर्ग

जब मनुष्य मुस्कराया तब संसार ने उससे प्रेम किया, जब उसने अट्टहास किया तब संसार उससे भयभीत हो गया। —रवीन्द्र

लोकः एव विषयानुरंजनं दुःखगर्भमपि मन्यते सुखम्।
आमिषं बडिशगर्भमप्यहो मोहतो ग्रसति यद्वदण्डजः॥ —अज्ञात

मछली जैसे मांस को ही देखती है, उसके नीचे छिपी वंशी को नहीं, वैसे ही यह संसार विषयों के बाह्य आकर्षण को ही देखता है, विषयों के परिणामरूप अवश्यम्भावी दुःखों को नहीं।

जिस संसार में दैववश प्राप्त अपने शरीर और फल-पुष्पादि अवयवों से बारबार उपकार करनेवाला वृक्ष भी कुठारों से काटा जाता है, ऐसे कृतघ्न संसार से उपकार की क्या आशा है? —अज्ञात

Everything is for the best in this best of all possible worlds.

सभी सम्भव ससारों में यह ससार सर्वोत्तम है और इसमें सभी वस्तुएँ सर्वोत्तम के लिए हैं। —वाल्टेयर

संस्कार

सस्कार का अर्थ सहार नही है। जो क्षेत्र-सस्कारक खेत की घासो के साथ अन्न के पौवो को भी उखाड देना चाहेगा वह सस्कारक नाम का अविकारी नहीं।

—हरिऔध

सस्कारो की दासता सवसे भयकर शत्रु है। —अज्ञात

जन्मना जायते शूद्र. सस्काराद् द्विज उच्यते। —स्मृति

जन्म से मनुष्य शूद्र ही पैदा होता है, किन्तु संस्कार होने से द्विज कहलाता है।

जो संस्कार हृदय मे वद्धमूल हो जाते हैं वे जीवन-पर्यन्त साथ नही छोडते।

—हरिऔव

जैसे कुम्हार द्वारा मिट्टी के वर्तन मे खीची गयी रेखाएँ फिर कभी नही छूटती, उसी प्रकार माता-पिता द्वारा डाले गये संस्कार वच्चो के मन से कभी नही छूटते।—अज्ञात

संस्कृति

सस्कृति की चाहे कोई भी परिभापा क्यो न हो, किन्तु उसे व्यक्ति, समूह अथवा राष्ट्र की सीमाओं में वाँधना मनुष्य की सवसे वड़ी भूल है। —पं० जवाहरलाल नेहरू

कोई भी सस्कृति जीवित नही रह सकती यदि वह अपने को अन्य से पृथक् रखने का प्रयास करे। —महात्मा गांवी

Serenity of spirit, poise of mind, is one of the last lesson of culture and comes from a perfect trust in the all controlling force of universe.

स्वभाव की गम्भीरता, मन की समता, सस्कृति के अतिम पाठो में से एक है और यह समस्त विश्व को वश में करनेवाली शक्ति में पूर्ण विश्वास से उत्पन्न होती है। —मार्डन

जो सस्कृति महान् होती है, वह दूसरो की संस्कृति को भय नही देती, वल्कि उसे साथ लेकर पवित्रता देती है। गंगा महान् क्यो है? दूसरे प्रवाहो को अपने में मिला लेने के कारण ही वह पवित्र रहती है। —साने गुरु

While civilization is the body, culture is the soul; while civilization is the result of knowledge and great painful researches in diverse fields, culture is the result of wisdom.

सभ्यता शरीर है, संस्कृति आत्मा, सभ्यता जानकारी और भिन्न क्षेत्रों में महान् एवं दुःखदायी खोज का परिणाम है; संस्कृति ज्ञान का परिणाम है। —श्रीप्रकाश

Culture is to know the best that has been said and thought in the world.

विश्व के सर्वोत्कृष्ट कथनों और विचारों का ज्ञान ही संस्कृति है।

—मैथ्यू आर्नल्ड

नेकी और ज्ञान का सम्मिश्रण होना चाहिए। मैंने जीवन में पाया है कि केवल नेकी ही बहुत उपयोगी नहीं है। हमें विवेकशील गुण को विकसित करना चाहिए जोकि आध्यात्मिक साहस और चरित्र के साथ आता है।

—महात्मा गांधी

Partial culture runs to the ornate, extreme culture to simplicity.

आंशिक संस्कृति शृंगार की ओर दौड़ती है, अपरिमित संस्कृति सरलता की ओर। —बोवी

सच्चरित्र (दे० 'चरित्र')

सच्चरित्रता ही वह सर्वोत्तम सम्पत्ति है जो कोई भी व्यक्ति आनेवाली सन्तानों के लाभ के लिए दे सकता है। —स्वामी शिवानन्द

चरित्र बुद्धि की अपेक्षा अधिक उच्च है। —एमर्सन

Character is simply a habit long continued

चरित्र केवल एक स्थायी स्वभाव है। —प्लूटार्क

विनीत, दयालु और सच्चरित्र होना धर्म का परम तत्त्व है।

—विलियम पेन

चरित्र का सुधारना ही मनुष्य का परम लक्ष्य होना चाहिए। —डा० ग्रीन

चरित्र को उज्ज्वल और पवित्र रखना चाहिए। —चेस्टरफील्ड

संसार में सच्चरित्र मनुष्य ही उन्नति प्राप्त करते हैं। —चेस्टरफील्ड

When wealth is lost, nothing is lost,
When health is lost, something is lost;
When character is lost, all is lost.

जब धन गया, कुछ भी नहीं गया;
जब स्वास्थ्य गया, कुछ गया ;
जब चरित्र गया, सब कुछ गया। —अज्ञात

महान् चरित्र का निर्माण महान् और उज्ज्वल विचारो से होता है।
—स्वामी शिवानन्द

There is no substitute for beauty of mind and strength of character.

मन के सौन्दर्य और चरित्रबल की समानता करनेवाली कोई दूसरी वस्तु नही।
—जे० एलन

मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता शिक्षा नही, वरन् चरित्र है और यही उसका सबसे बड़ा रक्षक है। —हर्बर्ट स्पेन्सर

चरित्र जब तक उज्ज्वल रहता है तब तक उसे सहेजकर चलने की इच्छा रहती है। जब दुर्भाग्यवश उसमे एक भी छीटा लग जाता है तो हम गन्दे वस्त्र की भाँति उसकी चिंता नही करते। — अज्ञात

Be a man of action and high character.

कर्मशील बनो और उच्च चरित्रवान् मनुष्य बनो। —नेपोलियन

अपने चरित्र को दर्पण के समान सहेजकर रखो जिससे दूसरो को भी उनमें अपना प्रतिबिम्ब देखने की आकांक्षा हो। —अज्ञात

चरित्र एक बार जब गिर जाता है तब मिट्टी के बरतन की भाँति चकनाचूर हो जाता है। —अज्ञात

सचाई

सचाई से जिसका मन भरा है, वह विद्वान् न होने पर भी देशसेवा बहुत कर सकता है। —पं० मोतीलाल नेहरू

सचाई की परख सुख में नही, विपत्ति के समय हुआ करती है। —अज्ञात

सच्चा

This above all, to thine ownself be true
सब से मुख्य बात यह है कि अपने साथ सच्चे बनो। —शेक्सपियर

सच्चिदानन्द

सत्य के साथ ज्ञान, शुद्ध ज्ञान अवश्यम्भावी है। जहाँ सत्य नहीं है, वहाँ शुद्ध ज्ञान की सम्भावना नहीं है। इसीसे ईश्वर के नाम के साथ चित् अर्थात् ज्ञान शब्द की योजना हुई है और जहाँ सत्य ज्ञान है—वहाँ आनन्द ही होगा, शोक होगा ही नहीं। सत्य के शाश्वत होने के कारण आनन्द भी शाश्वत होता है। इसी कारण ईश्वर को हम सच्चि-दानन्द नाम से भी पहचानते हैं। —महात्मा गांधी

सज्जन (दे० 'महापुरुष,' 'महात्मा,' 'महान्,' 'संत,' 'सत्यपुरुष,' 'साधु')

सर्वत्र च दयावन्तः सन्तः करुणवेदिनः। —वेदव्यास

सज्जनों का यह लक्षण है कि वे सदा दया करनेवाले और करुणाशील होते हैं।

कीचड़ से कांचन को लेना, यह तो सज्जनों की रीति है।

—विनोबा

निःशब्दोऽपि प्रदिशसि जलं याचितश्चातकेभ्यः
प्रत्युक्तं हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव ॥ —कालिदास

हे मेघ, बिना गरजे हुए भी तुम चातक को वर्षाजल से तृप्त करते हो, क्योंकि प्रार्थना करनेवालों के मनोरथको पूरा कर देना ही सज्जनों का जवाब होता है।

सज्जन पुरुष बिना कहे ही दूसरों की आशा पूरी कर देते हैं, जैसे सूर्य स्वयं ही घर घर प्रकाश फैला देता है। —अज्ञात

सज्जन मनुष्यों का चित्त किसी के क्रुद्ध होने पर भी नहीं बिगड़ता, जैसे समुद्र का जल फूस की लुकारी से गरम नहीं किया जा सकता। —हितोपदेश

संसार में सज्जन मनुष्य ही स्वतंत्र होते हैं, नीच मनुष्य दास होते हैं।
—प्लूटार्क

दातार संविभक्तारो दीनानुग्रहकारिण ।
सर्वभूतदयावन्तस्ते शिष्टा. शिष्टसम्मता ॥ —वेदव्यास

सज्जनों की सम्मति में वे ही लोग सभ्य पुरुष माने जाते है, जो दानी, अपने आश्रितो के भाग को न्यायपूर्वक अर्पण करनेवाले, दीन जनो पर अनुग्रह करनेवाले और सब प्राणियों के प्रति दयालु होते है।

दर्शनध्यानसंस्पर्शैर्मत्सी कूर्मी च पक्षिणी।
शिशु पालयते नित्यं तथा सज्जनसगति ॥ —चाणक्य

मछली, कछुई और पक्षी ये दर्शन, ध्यान और स्पर्श से जैसे बच्चों (अंडो) को सर्वदा पालते है वैसे ही सज्जनो की सगति है।

स्वाभिमानी होना सत्पुरुष का सच्चा लक्षण है। —अज्ञात

Propriety of manners and consideration for others are the two main characteristics of a gentleman.

व्यवहारो की शुद्धता और दूसरों के प्रति आदर यही सज्जन मनुष्य के दो मुख्य लक्षण है। —डिजरायली

प्रसादसौम्यानि सता सुहृज्जने पतति चक्षूपि न दारुणा. शरा. । —कालिदास

सज्जन अपने मित्रो पर कृपा की दृष्टि डालते है, शरों की वर्षा नही करते।

अद्यापि नोज्झति हर किल कालकूट कूर्मो बिभर्ति धरणी खलु पृष्ठभागे।
अभोनिधिर्वहति दुर्वहवाड़वाग्निमगीकृतं सुकृतिन परिपालयन्ति॥ —अज्ञात

आज तक भगवान् शंकर कालकूट विप का परित्याग नही करते, कच्छपरूप भगवान् विष्णु अपनी पीठ पर पृथ्वी धारण किये ही है और समुद्र भी असह्य वडवानल को धारण कर रहा है। वस्तुत सज्जन लोग अगीकार किये हुए वचन और कर्म का सदा पालन ही करते है।

परिचरितव्या सन्तो यद्यपि कथयन्ति नो सदुपदेशम्।
यास्तेपा स्वैरकथास्ता एव भवन्ति शास्त्राणि॥ —अज्ञात

सज्जनो की उपासना करनी चाहिए ; चाहे वे उपदेश न भी करते हो, क्योंकि जो उनके निजी वार्तालाप है वही सदुपदेश हो जाते है।

सज्जन के साथ यदि कोई अपकार करता है तो वे अपनी सज्जनता को नही त्यागते, जैसे चन्दन के वृक्ष को काटने पर कुल्हाड़ी भी महकने लगती है। —अज्ञात

He makes light of favours while he does them and seems to be receiving when he is conferring

सज्जन दूसरो का उपकार बहुत विनम्रता से करता है और ऐसा प्रतीत होता है कि वह उपकार पा रहा है जब कि वह कर रहा है। —सी० न्यूमैन

त्यजन्ति शूर्पवद्दोषान् गुणान् गृह्णन्ति साधव ।
दोषग्राही गुणत्यागी, चालनीवद्धि दुर्जन ॥ —अज्ञात

सज्जनो का स्वभाव सूप के समान होता है जो दोषरूप कड़्ड आदि को दूर कर देता है और गुणरूप धान्य को अपने पास रख लेता है। दुर्जनो का स्वभाव चलनी के समान होता है जो दोषरूप चोकर आदि अपने पास रख लेती है और गुणरूप आटे आदि को अलग गिरा देती है।

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णास्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभि प्रीणयन्त ।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्य निजहृदि विकसन्त सन्ति सन्त कियन्त ॥
—भर्तृहरि

मन, वचन और शरीर में पुण्यामृत से परिपूर्ण, उपकारो से तीनो लोको को तृप्त करनेवाले और दूसरो के अणु मात्रगुण को पर्वत के बराबर मानकर अपने हृदय में प्रसन्न होनेवाले सज्जन कितने है ? अर्थात् इन गुणो से सम्पन्न सज्जन ससार में इने गिने ही है।

विप्रियमप्याकर्ण्य ब्रूते प्रियमेव सर्वदा सुजन ।
क्षार पिबति पयोधेर्वर्षत्यम्भोधरो मधुरम् ॥ —अज्ञात

जिस प्रकार बादल समुद्र का खारा पानी पीकर भी मीठा जल ही बरसाता है उसी प्रकार सज्जन किसी की कटुवाणी सुनकर भी सदा मधुर वाणी ही बोलता है।

सन्तोऽसत्सु न रमन्ते, हस प्रेतवने न रमते। —कौटिल्य

सज्जन असज्जनो के साथ नहीं रहते, हस श्मशान मे नहीं रहता।

दुर्जन प्राणी मिट्टी के घडे के सदृश अनायास फूट जाते है, और बडी कठिनाई से जोडे जा सकते है, परन्तु सज्जन प्राणी सोने के घट के समान है जो सहज में टूटते नही तथा टूटने पर सरलता से जोडे जा सकते है। —हितोपदेश

टूटे सुजन मनाइए, जौ टूटे सौ बार।
रहिमन फिरि फिरि पोहिए, टूटे मुक्ताहार॥ —रहीम

उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता॥

उदय होते समय सूर्य लाल होता है और अस्त होते समय भी, सम्पत्ति के समय तथा विपत्ति के समय महान् पुरुषों में एकरूपता देखी जाती है (उनमें विकार नही होता)।

आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव। —कालिदास

वादलो के समान सज्जन पुरुप भी दान करने के लिए ही किसी वस्तु को ग्रहण करते हैं।

भला काम करने का स्वभाव ऐसा सावन है जिसको शत्रु छीन नही सकता और चोर चुरा भी नही सकता। —मा० ओरिलियस

Repose and cheerfulness are the badge of the gentleman.
शान्ति और प्रसन्नता सज्जन पुरुप के लक्षण हैं। —एमर्सन

अंजलिस्थानि पुष्पाणि वासयन्ति करद्वयम्।
अहो सुमनसा प्रीतिर्वामदक्षिणयो. समा॥ —अज्ञात

जिस प्रकार अंजलि में रखे हुए पुष्प दोनों हाथों को समान रूप से सुगधित करते हैं, उसी प्रकार सज्जन दोनो के प्रति कृपालु ही रहते हैं।

असज्जन. सज्जनसङ्गिसङ्गात् करोति दु साध्यमपीह लोके।
पुप्पाश्रया शम्भुजटाविरूढा पिपीलिका चुम्वति चन्द्रविम्वम्॥

असज्जन भी सज्जनो की संगति से इस ससार में दुःसाध्य काम कर डालते हैं। फूलों के सहारे चीटी शकर की जटा पर वैठकर चन्द्रमा का चुम्वन लेने पहुँच जाती है। —अज्ञात

केपां न स्यादभिमतफला प्रार्थना ह्युत्तमेपु। —कालिदास

सज्जनो से की हुई प्रार्थना किनकी सफल नही होती?

सज्जन पुरुप कष्टो को कोमल कुसुमों के स्पर्श की भाँति हर्पोत्फुल्ल होकर सहन किया करते हैं। —अज्ञात

याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा। —कालिदास

सज्जन से निष्फल याचना भी अच्छी, नीच से सफल याचना भी अच्छी नहीं।

It is almost a definition of a gentleman to say he is one who r inflicts pain

सज्जन पुरुष की वास्तविक परिभाषा यही है कि वह कभी किसी व्यक्ति को त नहीं करता। — न्यूमैन

सज्जनता

राजकीय ठाट-बाट की अपेक्षा सुजनता की दरिद्रता अधिक मीठी है।

— रस्किन

Gentlemanliness, being another word for intense humanity.

सज्जनता उत्कृष्ट मानवता के लिए दूसरा शब्द है। — रस्किन

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैर्नवाम्बुभिर्भूरि विलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्॥

— कालिदास

फल के आने से वृक्ष झुक जाते हैं, नव वर्षा के समय बादल झुक जाते हैं, सम्पत्ति समय सज्जन नम्र होते हैं—परोपकारियों का स्वभाव ही ऐसा है।

सत्य और न्याय का समर्थन मनुष्य की सज्जनता और सभ्यता का एक अंग है।

— प्रेमचन्द

सतीत्व

राजभक्त को राजा, जौहरी को उत्तम हीरा, प्यासे को शीतल जल और रोगी को संजीवनीरस जैसे प्यारे और आदर के पदार्थ होते हैं, स्त्रियों के लिए सतीत्व उससे कहीं अधिक प्यारी और आदर की वस्तु है। — अज्ञात

Chastity is a wealth that comes from abundance of love

सतीत्व वह सम्पत्ति है जो प्रेम के बाहुल्य से पैदा होती है। — रवीन्द्र

सतीत्व घर की चहारदीवारी में नहीं उपजता। यह ऊपर से लादा नहीं जा सकता। परदे की दीवारें इसकी रक्षा नहीं कर सकतीं। यह अन्तःकरण से उत्पन्न होता है और इसका मूल्य तभी कुछ है, जब इसमें सभी प्रलोभनों पर विजय पाने की क्षमता होती है। — महात्मा गांधी

जैसे बिना जल के मीन और बिना आहार के मनुष्य नहीं रह सकता, वैसे ही बिना सतीत्व और पतिव्रत के धर्म का अंकुर हृदयभूमि में नहीं जम सकता। — अज्ञात

जैसे सोने का खरा-खोटापन अग्नि की ज्वलन्त शिखा में प्रकट होता है, स्त्री का सतीत्व भी वैधव्य की कठोर यातना में पूर्ण रूप से प्रमाणित होता है। —अज्ञात

जैसे अकेले चन्द्रमा से आकाश में शोभा होती है, सहस्रो तारागणो के उदय होते हुए भी विना चन्द्रमा के वैसी शोभा नही होती। इसी प्रकार और सब गुणो के होते हुए भी सतीत्वरूपी रत्न न होने से वे सारे गुण स्त्रियो को वैसी शोभा नही दे सकते। —अज्ञात

सत्कार (दे० "मान")

आवत ही हर्षे नही, नयनन नही सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइए, कचन बरसे मेह॥ —तुलसी

रहिमन रहिला की भली, जो परसै चित लाय।
परसत मन मैला करे, सो मैदा जरि जाय॥ —रहीम

सत्ता

सत्ता कभी लुप्त भले ही हो जाय, किन्तु उसका नाश नही होता। गृह का रूप न रहेगा तो ईंटें रहेंगी जिनके मिलने पर गृह बने थे। वह रूप भी परिवर्तित हुआ तो मिट्टी हुई, राख हुई, परमाणु हुए। उस चेतन के अस्तित्व की सत्ता कही नही जाती, और न उसका चेतनमय स्वभाव उससे भिन्न होता है। —जयशंकर प्रसाद

The highest duty is to respect authority
सत्ता का सम्मान ही सर्वोच्च कर्त्तव्य है। —पोप

Power gradually extirpates from the mind every humane and gentle virtue.
सत्ता धीरे धीरे सभी मानवीय और अच्छे गुणो का नाश कर देती है। —बर्क

सत्पुरुष (दे० "सज्जन")

पुष्प, चन्दन, तगर या चमेली किसी की सुगन्ध वायु के विपरीत कभी नही जाती। किन्तु सन्तो का यश वायु के विपरीत भी फैलता है। सत्पुरुष सभी दिशाओ को अपनी सुगन्ध से वासित कर देते हैं। —भगवान् बुद्ध

सत्पुरुषो की मनोवृत्ति सर्वदा धर्म की ओर ही रहती है। सत्पुरुष ही भूत और भविष्य के आधार है। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

सत्य

सत्यमेव जयते नानृतम्। —मुंडकोपनिषद

सत्य की ही विजय होती है, असत्य की नहीं।

सत्य से बढ़कर धर्म नहीं है। सत्य स्वय परब्रह्म परमात्मा है।
—वेदव्यास (महाभारत, आदिपर्व)

सत्य ही सर्वोत्तम नीति है। —महात्मा गांधी

सत्य अनत रूप में असत्य की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है। —विवेकानन्द

ईश्वर सत्य है और प्रकाश उसकी छाया। —प्लेटो

सत्य एक है, उसकी उपासना करनेवाले उसे अलग अलग नामो से पुकारते हैं।
—विनोबा

सत्य सहस्रो अश्वमेधो से भी श्रेष्ठ है। —वेदव्यास (महाभारत, आदिपर्व)

परमेश्वर सत्य है, यह कहने के वजाय "सत्य ही परमेश्वर है" यह कहना अधिक उपयुक्त है। —महात्मा गांधी

धरमु न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुरान वखाना॥ —तुलसी

Time is precious but "truth" is more precious than time.
समय मूल्यवान् है, परन्तु "सत्य" समय की अपेक्षा अधिक मूल्यवान् है।
—डिजरायली

सत्य मूल सव सुकृत सुहाई। वेद पुराण विदित मुनि भाई॥
—तुलसी (मानस, अयोध्या)

सत्य का सर्वश्रेष्ठ अभिनन्दन यह है कि हम उसको आचरण में लायें।
—एमर्सन

सत्य की कभी हार नही होती। —प्रेमचन्द

My way of joking is to tell the truth Its the funniest joke in the world

सत्य को कह देना ही मेरे मजाक करने का तरीका है। ससार में यह सबसे विचित्र मजाक है। —जार्ज वर्नार्ड शा

सत्य तो अमूर्त है, इसलिए सब लोग अपने को ठीक लगे, ऐसे सत्य की मूर्ति की कल्पना कर ले। —महात्मा गांधी

सत्य की सहायता से ही ऋषिगण देवयान मार्ग से परमात्मा के परम धाम तक पहुँचते हैं। —उपनिषद्

सत्य कभी वृद्ध नही होता। —कहावत

विलास के प्रेमी सत्य का पालन नही करते। —प्रेमचन्द

One of the sublimest things in the world is plain truth

सरल सत्य संसार की सर्वोत्कृष्ट वस्तुओं में से एक है। —बुल्वर

न्याय से बढ़कर कोई रक्षक नही, विचार से बढ़कर कोई राजा नही, पदार्थ से बढकर कोई खड्ग नही और सत्य से बढ़कर कोई सत्य नहीं। —सुकरात

सारे वेदो को पढ़ ले और सारे तीर्थों में स्नान कर ले फिर भी सत्य उनसे बढ़कर है। —वेदव्यास (महाभारत, आदिपर्व)

सत्य ईश्वर की आत्मा है और प्रकाश उसका शरीर है। —पाइथैगोरस

Truth's best ornament is nakedness.

सत्य का सर्वोत्कृष्ट अलंकार नग्नता है। —कहावत

'Tis strange, but true; for truth is always strange, stranger than fiction.

यह अनोखी बात है परन्तु सत्य है कि सत्य सदैव अनोखा होता है, कहानी से भी ज्यादा अनोखा। —बायरन

सत्य हि परमं बलम्। —वेदव्यास (म०)

सत्य ही परम बल है।

जो सत्य जानता है; मन से, वचन से और काया से सत्य का आचरण करता है, वह परमेश्वर को पहचानता है। इससे वह त्रिकालदर्शी हो जाता है। उसे इसी देह में मुक्ति प्राप्त हो जाती है। —महात्मा गांधी

सत्यस्य वचनं श्रेय सत्यादपि हित वदेत्। —वेदव्यास

सत्य बोलना श्रेय का प्रधान साधन है, सत्य के साथ साथ जो हितकर हो वही बात कहे।

Truth is as impossible to be soiled by any outward touch as the sun beam

जिस प्रकार सूर्य की किरणें किसी पदार्थ से अपवित्र नही की जा सकती उसी प्रकार सत्य को भी बाह्य स्पर्श से अपवित्र करना असम्भव है। —मिल्टन

He who seeks truth should be of no country

जो सत्य की खोज में रहता है उसे किसी एक देश का न होना चाहिए।

—वाल्टेयर

सत्य के ऊपर और कोई ईश्वर नही है, सत्य ही सर्वप्रथम खोजने की वस्तु है।

—महात्मा गांधी

यदि तुम भूलो को रोकने के लिए द्वार वद कर दोगे, तो सत्य भी वाहर रह जायगा।

—रवीन्द्र

सत्य से वढ कर ससार में दूसरा धर्म नही है तथा मिथ्या-भाषण से वढकर दूसरा पाप नही है, अतएव सत्य की अर्चना करो, असत्य मत वोलो। —वेदव्यास

मैं सत्य के आदर्श को अहिंसा के सिद्धान्त से अधिक समझता हूँ। सत्य विना अहिंसा का प्रयोग निष्फल है। —महात्मा गांधी

सत्य और तैल सदैव ऊपर रहते हैं। —कहावत

Truth is God's daughter.

सत्य ईशकन्या है। —कहावत

साच वरावर तप नही झूठ वरावर पाप।
जाके हिरदे साच है ता हिरदे गुरु आप॥ —कवीर

सत्य का स्थान हृदय में है, मुँह में नही। —शरत्चन्द्र (दत्ता)

सृष्टि में एकमात्र सत्य की सत्ता है। —महात्मा गाधी

सत्य का स्रोत भूलो से होकर वहता है। —रवीन्द्र

सत्य अविनश्वर ब्रह्म है, सत्य अविनश्वर तप है। —वेदव्यास (महाभारत)

असत्य फूस के ढेर की तरह है। सत्य की एक चिनगारी भी उसे भस्म कर देती है। —हरिभाऊ उपाध्याय

सत्य वचन मनुष्य के परलोक वनाने में परम सहायक होता है। —वाल्मीकि

सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रवि।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥ —चाणक्य

सत्य से पृथ्वी स्थिर है, सत्य से सूर्य तपता है, सत्य ही से वायु बहता है, सब सत्य से ही स्थिर हैं।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयान् मा ब्रूयात् सत्यमप्रियम्॥ —मनुस्मृति

सत्य बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए किन्तु जो अप्रिय लगे ऐसी बात सच्ची हो तो भी न बोलनी चाहिए।

Every violation of truth is a stab at the health of human society.
सत्य का प्रत्येक उल्लंघन मानव समाज के स्वास्थ्य में छुरी भोंकने के समान है।
—एमर्सन

Truths and roses have thorns about them.
सत्य और गुलाब के पुष्प के चारो ओर काँटे होते हैं। —कहावत

सत्य अपने विरुद्ध एक आँधी पैदा कर देता है। और यही आँधी उसके बीजों को दूर दूर तक फैला देती है। —रवीन्द्र

सत्य या ज्ञान पर किसी का मालिकाना अधिकार नहीं है। दुनिया का सम्पूर्ण धर्म, जगत् का सम्पूर्ण सत्य तुम्हारा है। —स्वामी रामतीर्थ

साँचे साप न लागई, साँचे काल न खाय।
साँचे को साँचा मिलै, साँचे माहि समाय॥ —कबीर

सत्य महान् धर्म है। इतर धर्म क्षुद्र हैं और उसी के अंग हैं। वह तप से भी उच्च है, क्योंकि वह दंभ-विहीन है। शुद्ध बुद्धि की आकाशवाणी उसी का अनाहत गान करती है। वह अन्तरात्मा की सत्ता है। उसको दृढ़ कर लेने पर ही अन्य सब धर्म आचरित होते हैं। —जयशंकर प्रसाद

While you live, tell the truth and shame the devil.
जब तक जीवित रहो सत्य बोलो और शैतान को लज्जित करो। —शेक्सपियर

The greatest friend of truth is time; her greatest enemy is prejudice; and her constant companion is humility.

सत्य का सबसे बड़ा मित्र समय है, इसका सबसे बड़ा शत्रु पक्षपात, और इसका अचल साथी नम्रता है। —कोल्टन

ो दूसरो का सहारा ढूंढता है वह सत्य स्वरूप भगवान् की सेवा नही कर सकता।
—स्वामी विवेकानन्द

सत्य वस्तुत: अन्त तक सत्य ही बना रहता है। —शेक्सपियर

सत्य हमारे जीवन का नियम है। —महात्मा गांधी

सत्य से अमरत्व प्राप्त होता है। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

अपने सत्य से अलग जब शत्रु का सत्य देखा जाता है तभी माता वसुन्धरा पर युद्ध के बादल बरसते हैं। —अज्ञात

Truth makes the devil blush.
सत्य शैतान को लज्जित करता है। —कहावत

सत्य गोपनीयता से घृणा करता है। —महात्मा गांधी

सत्य बोलने में ही क्षमा का गुण आता है। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

घटनारूपी वस्त्र, सत्य के लिए, आवश्यकता से अधिक चुस्त जान पडता है। गल्प में वह सुखपूर्वक विचर सकता है। —रवीन्द्र

Truth is immortal, error is mortal
सत्य अमर है, त्रुटि नश्वर। —मेरी बेकर एडी

नास्ति विद्यासम चक्षुर्नास्ति सत्यसम तप ।
नास्ति रागसम दु ख नास्ति त्यागसम सुखम् ॥ —वेदव्यास

विद्या के समान कोई नेत्र नही है, सत्य के समान कोई तप नही है। राग के समान कोई दु ख नही है और न त्याग के समान सुख।

सत्य किरणो की किरण, सूर्यों का सूर्य, चन्द्रमाओ का चन्द्र तथा नक्षत्रो का नक्षत्र है—सत्य सबका सारभूत तत्त्व है। —डिकेन्स

There are three parts in truth first, the inquiry, which is the wooing of it, secondly, the knowledge of it, which is the presence of it, and thirdly, the belief, which is the enjoyment of it

सत्य के तीन भाग हैं—प्रथम, जिज्ञासा जोकि उसकी आराधना है, द्वितीय ज्ञान जोकि उसकी उपस्थिति है और तृतीय विश्वास जोकि उसका उपभोग है।
—बेकन

Beauty is truth, truth beauty
सौन्दर्य ही सत्य है, सत्य ही सौन्दर्य। —कीट्स

सत्येनार्क. प्रतपति सत्ये तिष्ठति मेदिनी।
सत्य चोक्तं परो धर्म. स्वर्ग. सत्ये प्रतिष्ठित ॥ —विश्वामित्र

सत्य से ही सूर्य तप रहा है। सत्य पर ही पृथ्वी टिकी हुई है। सत्य-भाषण सबसे बड़ा धर्म है। सत्य पर ही स्वर्ग प्रतिष्ठित है।

He, who has the truth at his heart, need never fear the want of persuation on his tongue.

जिसके हृदय में सत्य है उसे भयभीत होने की आवश्यकता नही, भले ही उसकी वाणी में लुभाने का अभाव हो। —रस्किन

Truth is like a lighted lamp in that it cannot be hidden away in the darkness because it carries its own light.

सत्य एक जलते हुए दीपक की भांति है जो अन्धकार में छिपाया नहीं जा सकता क्योंकि वह अपना प्रकाश स्वय ले चलता है। —एडवर्ड विल्सन

सांच विना सुमिरन नही, भय विन भक्ति न होय।
पारस में परदा रहै, कचन केहि विधि होय॥ —कवीर

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहित मुखम्।
तत्व पूषन्नपावृणु सत्य-धर्माय दृष्टये॥ —ईशावास्योपनिषद्

सत्य का मुह स्वर्णपात्र से ढंका हुआ है। हे ईश्वर, उस स्वर्णपात्र को तू उठा दे जिससे सत्य धर्म का दर्शन हो सके।

सत्यमार्ग

सुगा ऋतस्य पन्था.। —ऋग्वेद

सत्य का मार्ग सुख से गमन करने योग्य, सरल है।

ऋतस्य पन्था न तरन्ति दुष्कृत.। —ऋग्वेद

सत्य के मार्ग को दुष्कर्मी पार नही कर सकते।

सत्य का, अहिंसा का मार्ग सीधा है, उतना ही संकरा भी है। तलवार की धार पर चलने के समान है। नट लोग जिस रस्सी पर एक निगाह रख कर चल सकते हैं, सत्य और अहिंसा की रस्सी उससे भी पतली है। —महात्मा गांधी

सत्यवादी

सत्यभाषी एक बार जो वचन कह देता है वह नवरूप हो जाता है। सैकडो वर्षों तक उस वचन से मनुष्यो का विष उतरता है, वशीकरण होता रहता है।

—अज्ञात

तनु तिय तनय धामु धन धरनी। सत्य-सध कहु तृन सम बरनी॥ —तुलसी

सच्चा आदमी एक मुलाकात में ही जीवन को बदल सकता है, आत्मा को जगा सकता है और अज्ञात को मिटाकर प्रकाश की ज्योति फैला सकता है। —प्रेमचन्द

भूमि कीर्तिर्यशो लक्ष्मी पुरुष प्रार्थयन्ति हि।
सत्य समनुवर्तन्ते सत्यमेव भजेत्तत॥ —वाल्मीकि

भूमि, कीर्ति, यश और लक्ष्मी—ये सत्यवादी पुरुष को प्राप्त करना चाहते हैं और उसी का अनुसरण करते है, अत सदा सत्य का ही सेवन करना चाहिए।

सत्यवादी तो उसे कहेंगे जिसमें सत्य बोलना विधि-निषेध की सीमा पार कर स्वभाव ही बन चुका है। —अज्ञात

सत्याग्रह

सत्याग्रह स्वय आर्त्त हृदय की एक मूक और अचूक प्रार्थना है।

—महात्मा गाधी

सत्याग्रह तो बल-प्रयोग के सर्वथा विपरीत होता है। हिंसा के सम्पूर्ण त्याग में ही सत्याग्रह की कल्पना की गयी है। —महात्मा गाधी

सत्याग्रह ऐसी तलवार है जिसके सब ओर धार है। उसे काम में लानेवाला और जिस पर वह काम में लायी जाती है, दोनो सुखी होते हैं। खून न बहाकर भी वह बड़ी कारगर होती है। उस पर न तो कभी जग लगता है और न कोई उसे चुरा ही सकता है। —महात्मा गांधी

सत्याग्रही

सत्याग्रही के लिए अविनयी होना तो दूध में जहर पडने के समान है। विनय सत्याग्रह का सबसे कठिन अश है। विनय है विरोधी के प्रति भी मन में आदर रखना, सरल भाव से उसके हित की इच्छा करना, और उसी के अनुसार अपना बर्ताव रखना।

—महात्मा गाधी

गर्व और सत्याग्रही के वीच तो समुद्र लहराता है। सत्याग्रही का वल सख्या में नही, आत्मा में है। दूसरे शब्दो में ईश्वर में है। —महात्मा गांधी

सत्याचरण

सत्याचरण व्रतधारी के लिए कोई युक्ति नही है। वह तो उसके शरीर से लगी हुई वस्तु है, उसका स्वभाव है। —महात्मा गांधी

सत्याचरण में रत होना ही मानवता की सवसे मूल्यवान् सेवा है। —अज्ञात

सत्संग

विनु सतसग विवेक न होई। रामकृपा विनु सुलभ न सोई॥ —तुलसी

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला इक अग।
तुलै न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सतसग॥ —तुलसी

जाहि वड़ाई चाहिए, तजै न उत्तम साथ।
ज्यो पलास, सग पान के, पहुचे राजा हाथ॥ —अज्ञात

सतसगति दुर्लभ ससारा। निमिप दड भरि एकउ वारा॥
—तुलसी (मानस-उत्तर)

कविरा सगत सावु की ज्यो गधी की वास।
जो कछु गधी दे नही तौ भी वास सुवास॥ —कवीर

सठ सुधरहि सतसगति पाई। पारस परसि कुधातु सुहाई॥
—तुलसी (मानस-वाल)

कविरा सगत सावु की हरै और की व्याधि।
सगत वुरी असावु की आठो पहर उपाधि॥ —कवीर

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं मानोन्नतिं दिगति पापमपाकरोति।
चेत प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्ति, सत्संगति कथय किन्न करोति पुसाम॥
—भर्तृहरि

सत्सगति वुद्धि की जड़ता नष्ट करती है, वाणी को सत्य से सींचती है, मान वढ़ाती है, पाप मिटाती है, चित्त को प्रसन्नता देती है, संसार में यश फैलाती है। सत्सगति मनुष्य के लिए क्या नही करती?

निवान सर्वरत्नाना, हेतु कल्याण-सपदाम्।
सर्वस्या उन्नतेर्मूल महता सग उच्यते ॥ —अज्ञात

महान् पुरुपो का सत्सग समस्त उत्कृष्ट अमूल्य पदार्थों का आश्रय, कल्याण मपत्तियो का हेतु और सारी उन्नति का मूल कहा जाता है।

कविरा खाई कोट की, पानी पिवै न कोय।
जाय मिलै जब गग से, सब गगोदक होय ॥ —कबीर

पूर्ण महात्मा और सज्जनो के साथ को ही सत्सग कहते है। सत्सग करे तो लोहे से सोना बन जाय। —योगवाशिष्ठ

तुलयाम लवेनापि, न स्वर्ग नापुनर्भवम्।
भगवत्सगिसगस्य, मर्त्यांना किमुताशिप ॥ —व्यासदेव

यदि भगवान् में आसक्त रहनेवाले लोगो का क्षण भर भी सग प्राप्त हो, तो उनसे स्वर्ग और मोक्ष तक की तुलना ही नही कर सकते, फिर अन्य अभिलपित पदार्थों की तो बात ही क्या है?

काच काञ्चनससर्गाद्धत्ते मारकती द्युतिम्।
तथा सत्सनिवानेन मूर्खो याति प्रवीणताम् ॥ —हितोपदेश

सुवर्ण के सबध से काच भी सुन्दर रत्न की शोभा को प्राप्त करता है, इसी प्रकार मूर्ख भी सज्जन के ससर्ग से चतुर हो जाता है।

गुणा गुणज्ञेपु गुणा भवन्ति ते निर्गुण प्राप्य भवन्ति दोपा।
आस्वाद्यतोया प्रभवन्ति नद्य समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेया ॥
—हितोपदेश

गुण बुद्धिमानो में मिल जाने से गुण ही रहते हैं किन्तु मूर्खों मे मिल जाने से वे ही गुण दोप बन जाते हैं, जैसे मीठे जलवाली नदिया समुद्र में मिल कर खारी बन जाती हैं।

सदाचार

सदाचार-सम्पन्नता ही बड़ी कीर्ति है। —हरिभाऊ उपाध्याय (प्रियदर्शी अशोक)

जैसे चमक के बिना मोती किसी काम का नहीं होता, इसी प्रकार सदाचार के बिना मनुष्य किसी काम का नहीं होता। —अज्ञात

सदाचार जीवन के अभ्यास की अमूल्य वस्तु है। —अज्ञात

चन्दन या तगर, कमल या जूही इन सभी की सुगन्धो से सदाचार की सुगन्ध उत्तम है। —धम्मपद

लोहे का मोरचा उसी से उत्पन्न होकर उसी को खाता है, वैसे ही सदाचार के उल्लंघन करनेवाले मनुष्य के अपने ही कर्म उसे दुर्गति को प्राप्त कराते हैं। —धम्मपद

यस्तु शूद्रो दमे सत्ये धर्मे च सततोत्थित ।
तं ब्राह्मणमहं मन्ये वृत्तेन हि भवेद् द्विज ॥ —वेदव्यास

जो शूद्र दम, सत्य और धर्म में परायण है उसे मैं ब्राह्मण मानता हूं, क्योकि सदाचार से ही द्विज बनता है।

एक सदाचारी मनुष्य बिना जबान हिलाये सैकड़ो मनुष्यो का सुधार कर सकता है। पर जिसका आचरण ठीक नही है उसके लाखो उपदेशो का कुछ फल नही होता। —मौलाना रूमी

न पर पापमादत्ते परेषा पाप-कर्मणाम्।
समयो रक्षितव्यस्तु सन्तश्चारित्र-भूषण.॥ —वाल्मीकि

श्रेष्ठ पुरुष दूसरे पापाचारी प्राणियो के पाप को नही ग्रहण करता, उन्हें अपराधी मान कर उनसे बदला लेना नही चाहता। इस उत्तम सदाचार की सदा रक्षा करनी चाहिए, क्योकि सदाचार ही सत्पुरुषो का भूषण है।

सदाचारी

तगर और चन्दन से जो गन्ध फैलती है वह अल्पमात्र है और जो यह सदाचारियों की गन्ध है वह उत्तम गन्ध देवताओ मे फैलती है। —धम्मपद

शत्रु भी सदाचारी की प्रशसा करते है। —अज्ञात

सदाचारी मूर्ख आचारहीन बुद्धिमान् की अपेक्षा पूज्य होता है। —अज्ञात

सद्गुण

Virtue and happiness are mother and daughter.

सद्गुण और प्रसन्नता मां और बेटी हैं। —कहावत

This is the law of God that virtue only is firm and cannot be shaken by a tempest.

यही दैवी नियम है कि केवल सद्गुण ही अचल है और यह तूफानो के द्वारा विचलित नहीं किया जा सकता। —पाइथॅगोरस

अपने शत्रु में उत्तम बातो को खोजने और उसे अपनाने में ही सद्गुण है।

—महात्मा गाधी

पुष्पो की सुगन्ध वायु के विपरीत नही जाती, किन्तु सद्गुणो की सुगन्ध सभी दिशाओ में व्याप्त हो जाती है। —धम्मपद

Even virtue is more fair when it appears in a beautiful person

सद्गुण में भी चार चाद लग जाते हैं जब वह किसी सुन्दर व्यक्ति मे होता है।

—वर्जिल

Virtue maketh men on the earth famous, in their graves illustrious, in the heavens immortal

सद्गुण पृथ्वी पर मनुष्य को प्रसिद्धि प्रदान करता है, कब्र में प्रख्यात कर देता है और स्वर्ग में अमर बना देता है। —चिलो

सद्गुण का पुरस्कार केवल सद्गुण ही है। —एमर्सन

Virtue is more persecuted by the wicked than encouraged by the good

अच्छे मनुष्यो द्वारा सद्गुण को जितना प्रोत्साहन नही मिला उससे कही अधिक वह दुष्टो द्वारा पीडित किया गया है। —कहावत

सम्मान सद्गुण का पुरस्कार है। —सिसरो

Virtue though momentarily shamed cannot be extinguished

यद्यपि सद्गुण क्षण भर के लिए लज्जित किया जा सकता है, किन्तु उसे मिटाया नही जा सकता। —प्यूबियस साइरस

सद्भावना

सर्वेऽत्र सुखिन सन्तु सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुखभाग्भवेत्॥

इस ससार मे सबके प्रति सद्भावना रखनी चाहिए। यह विचार रखना चाहिए कि सभी सुखी हो, सभी नीरोग हो, सभी कल्याण की प्राप्ति करे और किसी को दुख न हो। —अज्ञात

सन्मार्ग

सन्मार्ग पर चलते हुए अगर लोग बुरा कहें तो यह उससे अच्छा है कि कुमार्ग पर चलते हुए लोग तुम्हारी प्रशसा करें। —सादी

जिस मार्ग पर तुम्हारे पूर्वज चले हो, उस सत्पथ पर चलो। उस सन्मार्ग के यात्री का कभी पतन नही होता। —मनुस्मृति

सफलता

सफलता की रेखाए उन मनुष्यो के कपाल मे अकित है—जिनके हृदय में नवीन आविष्कारों की आधी हरहराया करती है, जो कर्मक्षेत्र में कमर कसकर खड़े होने की ताकत रखते हैं, जिनकी मानसिक शक्तिया तेजस्वी, अटल और प्रतापी होती हैं। —अज्ञात

Success is counted sweetest by those who never succeed

जिन्होने जीवन में कभी सफलता नही पायी है उनके लिए सफलता का मूल्याकन मधुरतम होता है। —इमली डिकन्स

I believe that the true road to pre-eminent success in any line is to make yourself master of that line.

मेरा विश्वास है कि किसी भी व्यवसाय में विशेष सफलता पाने का ठीक मार्ग उस व्यवसाय का अपने को पूर्ण ज्ञाता बना लेना है। —एन्ड्र्यू कारनेगी

सफलता-प्राप्ति का साधन निर्भीकता है। —स्वामी रामतीर्थ

जीवन में सफलता पाना प्रतिभा और अवसर की अपेक्षा एकाग्रता और निरतर प्रयास पर कही अधिक अवलम्बित है। —सी० डब्ल्यू० वेन्डेल

Successful business consists in exclusive attention to the person speaking to you.

जिस व्यक्ति से आप वार्त्तालाप कर रहे हैं उसमें पूर्ण ध्यान देने में ही सफल व्यवसाय (का गुर) निहित है। —इलियट

Success is the realization of the estimate you place upon yourself.

आप अपना जो मूल्य आकते है, सफलता उसी का साकार रूप है। —एलवर्ट हवर्ड

किसी ध्येय की सफलता के लिए मनुष्य की पूर्ण एकाग्रता और समर्पण आवश्यक है। —ब्राउन

Success treads on every right step.

प्रत्येक ठीक कदम पर सफलता चलती है। —एमर्सन

सफलता के लिए साहस सबसे बड़ी वस्तु है। —ब्राउन

सिद्धान्ततः जीवन में वही सब से अधिक सफल व्यक्ति है जो सबसे अधिक जानकार है। —डिजरायली

सफलता का कोई रहस्य नही है। वह केवल अति परिश्रम चाहती है।
—हेनरी सी० ब्रेक

Successful minds work like a gimlet, to a single point
सफल व्यक्ति वर्मी की तरह एक ही केन्द्र पर केन्द्रित रहते हैं। —बोवी

Success is the sole earthly judge of right and wrong
इस पृथ्वी पर केवल सफलता ही अच्छे बुरे का निर्णायक है। —हिटलर

The secret of success is constancy of purpose
सफलता का रहस्य ध्येय की दृढता में है। —डिजरायली

सफाई

Certainly this is a duty not a sin. Cleanliness is next to godliness
वास्तव में यह पाप नही कर्तव्य है। स्वच्छता देवत्व के निकटतम है।
—जान वेजले

Cleanliness of body was ever esteemed to proceed from a due reverence to God, to society, and to our-selves
शारीरिक स्वच्छता का सम्मान सदैव ईश्वर, समाज और अपने प्रति उचित सम्मान से हुआ है। —बेकन

न्हाए धोये क्या भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहै, धोये बास न जाय॥ —कबीर

सबल

दुर्बल मनुष्य, जो सबल और शक्तिशाली पुरुषों का अपमान करता है वह मानो यमराज को अपने पास आने का इशारा करता है। —संत तिरुवल्लुवर

जलती हुई आग में पड़े हुए लोग चाहे भले ही बच जाय, मगर उन लोगों की रक्षा का कोई उपाय नही है जो शक्तिशाली लोगों के प्रति दुर्व्यवहार करते हैं।
—अज्ञात

सवै सहायक सबल के, कोउ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीपहिं देत बुझाय॥ —वृन्द

सभा

Society is no comfort to one not sociable.

जो व्यक्ति मिलनसार नही उसके लिए सभा (समाज) सुखदायक नही है।
—शेक्सपियर

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा, वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।
धर्म: स नो यत्र न सत्यमस्ति, सत्य न तद्यच्छलमभ्युपैति॥

वह सभा सभा नही जहाँ वृद्ध जन न हो, वे वृद्ध वृद्ध नही जो धर्म की बात न कहते हो, वह धर्म धर्म नही जिसमें सत्य न हो और वह सत्य, सत्य नही जो छल-कपट की ओर प्रेरित करे।

सभासद

श्रुत्यध्ययनसम्पन्ना धर्मज्ञा: सत्यवादिन:।
राज्ञा सभासद: कार्या रिपौ मित्रे च ये समा:॥ —अज्ञात

वेद के अध्ययन से सम्पन्न, धर्म को जाननेवाले, सत्य बोलनेवाले तथा मित्र और शत्रु मे सम भाव रखनेवाले, इस तरह के सभासद राजा को रखना चाहिए।

सभ्यता

सभ्यता एकान्तिक वस्तु नही है। उसका अर्थ हर एक जगह एक ही नही होता। पश्चिम की सभ्यता पूर्व की सभ्यता हो सकती है। —महात्मा गांधी

Nations like individuals live or die, but civilization cannot perish.

व्यक्ति की भाँति राष्ट्र भी जीवित रहते है और मरते है, किन्तु सभ्यता का कभी पतन नही होता। —मेजिनी

सभ्यता की वास्तविक परीक्षा देश की जनगणना या नगरो की रूपरेखा अथवा फसल से नही होती, वरन् किस प्रकार के व्यक्ति देश उत्पन्न करता है इनसे होती है। —एमर्सन

Increased means and increased leisure are the two civilizers of man

अधिक साधन और अधिक अवकाश मानव को सभ्य बनानेवाले हैं।

—डिजरायली

A sufficient measure of civilization is the influence of good women

सभ्यता का सही मूल्यांकन अच्छी नारियों का उन पर प्रभाव है —एमर्सन

सभ्यता क्या है? वह तो पूरी राक्षसी है। जो सभ्यता गरीबों के मुंह का कौर, जन-साधारण का जीवन, मुट्ठी में करके उन्हें मरने को लाचार बना दे वह राक्षसी नहीं तो और क्या कहलायेगी? —शरत्चन्द्र (जागरण)

सम-दृष्टि

घरों में पानी के पाइप लगे हैं, क्या वे बारिश की बूंद की योग्यता रखते हैं। बारिश की बूंद छोटी भले ही हो, पर वह सब जगह गिरती है, इसलिए उसकी योग्यता महान् है। —आचार्य विनोबा

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिता समदर्शिन ॥

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

ज्ञानीलोग विद्वान् और विनयी ब्राह्मण में, गाय में, हाथी में और कुत्ते के खानेवाले चाण्डाल में समदृष्टि रखते हैं।

समदृष्टी तब जानिए, सीतल समता होय।
सब जीवन की आत्मा, लखै एक सी सोय ॥ —कबीर

समझ (दे० 'बुद्धि')

God has placed no limit to intellect

ईश्वर ने समझ की कोई सीमा नहीं रखी है। —बेकन

समझ मस्तिष्क की शक्ति है। —सिसरो

Intellect the star light of the brain.

समझ मस्तिष्क का प्रकाश है। —विलिस

The human intellect delights in inventing specious arguments in order to support injustice itself.

अन्याय का समर्थन करने के लिए मानवीय बुद्धि लम्बी-चौड़ी दलील खोजकर प्रसन्न होती है। —महात्मा गांधी

समझदारी

संघर्ष और उथल-पुथल के बिना जीवन बिलकुल नीरस बन कर रह जाता है। इसलिए जीवन में आनेवाली विषमताओं को सह लेना ही समझदारी है।

—संत विनोबा

समता

योगस्थ कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते॥ —गीता

हे धनञ्जय! आसक्ति त्याग कर तथा सिद्धि और असिद्धि में समान बुद्धि वाला होकर तू कर्तव्य कर्मों को कर। समता का ही नाम योग है।

समता ही सिद्धि की कसौटी है। —अज्ञात

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः॥

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

जो शत्रु-मित्र में और मान-अपमान में सम है, तथा सरदी-गरमी और सुख-दुःखादि द्वन्द्वों में सम है और आसक्ति से रहित है वह भक्तिमान् पुरुष मुझको प्रिय है।

पूर्णतया समता आये बिना कोई भी सिद्ध योगी, सिद्ध भक्त या सिद्ध ज्ञानी नहीं समझा जा सकता। —अज्ञात

समय (दे० 'वक्त')

समय बदलने पर लोगों की आँखें भी बदल जाती हैं। —जयशंकर प्रसाद

का बरषा जब कृषी सुखाने। समय चूकि पुनि का पछिताने॥ —तुलसी

समय शुभ जीवन और लक्ष्मी का अक्षय भंडार है। —अज्ञात

समय फिरे रिपु होहिं पिरीते। —तुलसी (मानस-अयोध्या)

समय की पाबन्दी सुशीलता का चिह्न है। —सम्राट लुई

I wasted time and now doth time waste me
मैंने समय को नष्ट किया और अब समय मुझे नष्ट कर रहा है। —शेक्सपियर

✓ समय सत्य का पथ-प्रदर्शक है। —सिसरो

Time is the wealth of change but the clock in its parody makes it mere change and no wealth.

समय परिवर्तन का धन है, परन्तु घड़ी उसका उपहास करती है। उसे केवल परिवर्तन के रूप में दिखाती है, धन के रूप में नहीं। —रवीन्द्र

A stitch in time saves nine.
समय पर थोड़ा-सा प्रयत्न भी आगे की बहुत-सी परेशानियों को बचाता है।
—कहावत

As every thread of gold is valuable so is every moment of time.
✓ सोने का प्रत्येक धागा मूल्यवान् होता है इसी प्रकार समय का प्रत्येक क्षण।
—मेसन

Time and thinking tame the strongest grief.
समय और विचार महान् शोक को भी निस्तेज कर देता है। —कहावत

(बीता हुआ) समय और कहे हुए शब्द कभी वापस नहीं बुलाये जा सकते।
—कहावत

Time is money
✓ समय ही धन है। —कहावत

To choose time is to save time.
समय का उचित उपयोग करना समय को बचाना है। —बेकन

किसी भी विचारशील व्यक्ति के लिए जीवन की क्षणभंगुरता का अन्तिम अर्थ यह नहीं है कि वह उन क्षणों को बर्बाद करे। —रस्किन

समय सब से महान है, परमात्मा से भी। भक्ति आदि साधनों से परमात्मा को तो बुलाया जा सकता है, किन्तु कोटि उपाय करने पर भी बीता हुआ समय नहीं बुलाया जा सकता। —अज्ञात

समरथ

समरथ कहूं नहि दोष गुसाईं। रवि पावक सुर सरि की नाईं॥ —तुलसी

समाचार

News are as welcome as the morning air.

समाचारो का प्रात.कालीन वायु के सदृश स्वागत होता है। —चैपमैन

समाचारपत्र

I fear three hostile newspapers more than hundred thousand bayonets.

मैं लाखों सगीनो की अपेक्षा तीन विरोधी समाचारपत्रो से अधिक डरता हूँ।
—नेपोलियन

समाचारपत्र संसार के दर्पण है। —जेम्स एलिस

In these times we fight for ideas and newspapers are our fortresses.

आजकल हम विचारो के लिए सघर्ष करते हैं और समाचारपत्र हमारी किलेबन्दियाँ हैं। —हेन

समाचारपत्र साधारण जनता के शिक्षक हैं। —बीचर

समाचारपत्र जनता के विश्वविद्यालय हैं। —जे० पार्टन

समाज

अगर हममें शक्कर का गुण है तो हम समाज में ऐसे विलीन हो जायेंगे जैसे समुद्र में नदी या सिन्धु मे बिन्दु। सिन्धु में विलीन होने पर बिन्दु स्वय ही सिन्धु हो जाता है, बिन्दु नही रहता। —आचार्य विनोबा

वही समाज सदा सुखी रह सकता है जिसने नैतिक गुणो को अपने जीवन में आत्मसात् कर लिया है। —रस्किन, विजय पथ

Society exists for the benefit of its members; *not the members* for the benefit of the society.

समाज सदस्यो के लाभ के लिए होता है न कि सदस्य समाज के लाभ के लिए।
—हर्बर्ट स्पेन्सर

वहवो यत्र नेतार सर्वे पडित-मानिन ।
सर्वे महत्त्वमिच्छन्ति तद्वृन्दमवसीदति ॥ —अज्ञात

जहाँ वहुत से नेता है, सभी अपने को पडित माननेवाले अहकारी है और सव अपनी वडाई चाहते हैं वह समाज नष्ट हो जाता है।

Society is composed of two great classes, those who have more dinners than appetite and those who have more appetite than dinners

समाज में दो वडी श्रेणियाँ होती हैं, एक जिनके पास भूख से अधिक भोजन है और दूसरी वह जिनके पास भोजन से अधिक भूख है। —चैम्फर्ट

अच्छा समाज शरीर जैसा है। समाज में जो दुखी हिस्सा है उसकी ओर सवको ध्यान देना उचित है। —आचार्य विनोवा

सवसे अधिक सुखी समाज वह है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति परस्पर हार्दिक सम्मान की भावना रखता है। —गेटे

तुम समाज के साथ ही ऊपर उठ सकते हो और समाज के साथ ही तुम्हें नीचे गिरना होगा। यह तो नितान्त असम्भव है कि कोई व्यक्ति अपूर्ण समाज मे पूर्ण वन सके। क्या हाथ अपने आपको शरीर से पृथक् रख कर वलशाली वन सकता है? कदापि नही। —स्वामी रामतीर्थ

समाजवाद

शोषणमुक्त समाज की रचना करके वर्त्तमान समाज की प्रचलित दासता, विपमता और असहिष्णुता को सदा के लिए दूर करके, समाजवाद, स्वतन्त्रता, समता और भ्रातृत्व की वास्तविक स्थापना करना चाहता है। —आचार्य नरेन्द्रदेव

दो ही स्थानो पर समाजवाद काम करता है। एक तो मधुमक्खियो के छत्ते में और दूसरा चीटियो के विल में। —अज्ञात

समाजवाद मनुष्य को विवशता के क्षेत्र से हटाकर उसे स्वाधीनता के राज्य मे ले जाना चाहता है। —कार्ल मार्क्स

धर्म के वोझ के तेल से मानव दवा पडा है। समाजवाद धर्म की सच्ची मीमांसा कर धर्म की कैद से मनुष्य को नजात दिलाता है और इस तरह मानवता के गौरव को वढाता है। —आचार्य नरेन्द्रदेव (राष्ट्रीय और समाजवाद से)

समाधि

समाधि में ही साक्षात्कार होता है। समाधि के एक क्षण की तुलना में पठन-पाठन और मनन का सहस्र वर्ष भी नहीं ठहरता। —डा० सम्पूर्णानन्द

देहाभिमाने गलिते ज्ञानेन परमात्मन ।
यत्र यत्र मनो याति तत्र तत्र समाधय ॥ — चाणक्य

परब्रह्म के ज्ञान से देह के अभिमान के नष्ट होने पर जहाँ जहाँ मन जाता है तहाँ तहाँ समाधि है।

देश-प्रेम के दीवानो की समाधियो में राग है—एकता, समानता और राष्ट्रीयता का। इन समाधियो से एक ही सी ध्वनि उठती है—'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'। बादलो के बीच दामिनी चमकती है केवल उनके इसी नीरवता से उठते हुए उद्‌गार सुनने को बूदें गिरती हैं, उनके चरणों को मोतियों से धोकर सागर में ज्वार उठा देने को।

— बलभद्र प्रसाद गुप्त

समालोचक

जिसका हृदय सहानुभूति के भाव से परिपूर्ण है उसे ही आलोचना करने का अधिकार है।

—लिंकन

Critics are sentinels in the grand army of letters, stationed at the corners of newspapers and reviews, to challenge every new author.

समालोचक साहित्य के भव्य भवन के प्रहरी होते हैं जो समाचारपत्रो तथा मासिक पत्रिकाओ के स्तभो में नियुक्त होते हैं जो प्रवेश चाहनेवाले प्रत्येक नये लेखक की जाँच-पड़ताल करते हैं।

Critics are the men who have failed in literature and art.
समालोचक वे व्यक्ति हैं जो साहित्य और कला में असफल रहे हैं।

— डिजरायली

The severest critics are always those who have either never attempted, or who have failed in original composition.

सब से कटु आलोचक सदैव वे व्यक्ति रहे है, जिन्होंने कभी लिखने का प्रयास नही किया अथवा वे व्यक्ति जो मौलिक लेख लिखनेमें असफल रहे हैं। — हैजलिट

It is much easier to be critical than to be correct
ठीक ठीक रचना करने की अपेक्षा समालोचक होना ज्यादा आसान है।
—डिजरायली

समालोचना

Silence is sometimes the severest criticism
कभी कभी मौन रह जाना सबसे कटु आलोचना है। —चार्ल्स बक्सटन

अपने कर्त्तव्यपालन में हमें जनता की राय से स्वतंत्र रहना चाहिए।
—महात्मा गांधी

Neither praise or blame is the object of true criticism—Justly to discriminate, firmly to establish, wisely to prescribe, and honestly to award—these are the true aims and duties of criticism

वास्तविक समालोचना का ध्येय प्रशसा या निंदा नही है, ठीक ठीक मूल्याकन करना, दृढता से साबित करना, बुद्धिमानी से स्वीकृत करना और ईमानदारी से पुरस्कृत करना—यही समालोचना का ध्येय और उचित कर्त्तव्य है। —सिम्स

The most noble criticism is that in which the critic is not the antagonist so much as the rival of the author
सबसे अच्छी समालोचना वह है जिसमें समालोचक लेखक का वैरी नही वरन् प्रतिद्वन्द्वी हो। —डिजरायली

समूह

The multitude is always in the wrong.
समूह सदैव गलती पर होता है। —डिलन

It has been very truly said that the mob has many heads, but no brains
यह वहुत ठीक ही कहा गया है कि समूह के अनेक सिर होते हैं लेकिन मस्तिष्क एक भी नही होता। —खारोल

सम्बन्धी

The worst hatred is that of relatives.
सबसे निकृष्ट घृणा अपने सम्बन्धी की होती है। —टेसीटस

सम्वन्वियो का झगड़ा वास्तव में वड़ा भयानक होता है और उनमें सन्वि कराना वड़ा कठिन कार्य है। —यूरोपिडीज

सम्मति

अच्छी सम्मति अमूल्य होती है। —मैजिनी

अच्छी सम्मति स्वीकार करना अपनी योग्यता वढाना ही है। —गेटे

Give every man thine ear, but few thy voice.
सव की वात ध्यान से सुनो परन्तु अपनी सम्मति केवल थोड़े ही मनुष्यो को दो।
—शेक्सपियर

विना पूछे सम्मति मत दो। —जर्मन कहावत

Never advise any one to go to war or to marry.
युद्ध मे जाने की या विवाह करने की सलाह किसी को भी मत दो।
—स्पेनिश कहावत

सम्मति वहुत से लोग लेते हैं, पर केवल वुद्धिमान् ही उससे लाभ उठाते हैं।
—साइरस

सम्मान

प्रख्यात मृतक पुरुपो का सर्वश्रेप्ठ सम्मान हम उनका अनुकरण करके ही करते हैं। —महात्मा गांघी

Honour lies in honest toil.
सम्मान सच्चे परिश्रम में है। —जी० क्लीवलैण्ड

The way to gain a good reputation, is to endeavour to be what you desire to appear.
अच्छा सम्मान पाने का मार्ग यह है कि जो तुम प्रतीत होने की कामना करते हो वैसा वनने का प्रयास करो। —सुकरात

Better to die ten thousand deaths than wound my honour.
मैं अपने सम्मान पर आघात पहुँचने की अपेक्षा दस सहस्र वार मरना अविक अच्छा समझता हू। —एडीसन

जीवन हर मनुष्य को प्रिय है। किन्तु शूरवीर को अपना सम्मान, जीवन से भी अविक मूल्यवान् और प्रिय है। —शेक्सपियर

इस दुनिया में सम्मान वही पाता है जो यथाशक्ति दान देकर दुखियों का दुख हरता है। —अज्ञात

सम्मान की इच्छा करनेवाले को सम्मान नही मिलता, वह मिलता उसे ही है जो उसकी चिन्ता बिना किये ही अपने कर्त्तव्य-पथ पर डटा रहता है। —अज्ञात

सरकार

सरकार का कर्त्तव्य सबकी पूरी रक्षा करना है। —विनोबा

जिस सरकार में औरतो की इज्जत की रखवाली नही होती वह बहुत दिनो तक नही टिकती। —अज्ञात

The aggregate happiness of society which is best promoted by the practice of a virtuous policy, is, or ought to be, the end of all Government

सभी सरकारो का ध्येय समाज का सामूहिक सुख है, या होना चाहिए और इसकी पूर्ति अच्छी नीति के परिपालन से अच्छी तरह की जा सकती है। —वाशिंगटन

That is the most perfect Government under which a wrong to the humblest is an affront to all

वही पूर्ण (आदर्श) सरकार है जिसमें एक तुच्छ व्यक्ति के साथ किया गया अन्याय सभी का अपमान समझा जाता है। —सोलन

सरस

प्राय सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा। —कालिदास

सरस हृदयजन बहुधा मृदुल स्वभाव के होते हैं।

सरस्वती

सरस्वती से श्रेष्ठतर कोई वैद्य नही और उसकी साधना से बढकर कोई दवा नही। —जापान के शाही कला भवन के तोरणद्वार पर अंकित

अपूर्व कोऽपि कोशोऽय, विद्यते तव भारति।
व्ययतो वृद्धिमायाति, क्षयमायाति सचयात्॥

हे सरस्वती देवी, विद्यारूपी यह आपका अपूर्व कोष है जो व्यय करने से तो बढता है और सचय करने से नष्ट होता है। —अज्ञात

सरस्वती देवयन्तो हवन्ते। —ऋग्वेद

देव-पद के अभिलाषी सरस्वती का आवाहन करते हैं।

सर्जन

He is a good surgeon who can amputate a limb, but he is a better surgeon who can save a limb.

वह अच्छा सर्जन है जो किसी अग को काट सकता है परन्तु वह सर्जन उससे भी अच्छा है जो उस अंग को वचा सकता है। —सर ए० कूपर

सर्वश्रेष्ठ

सर्वश्रेष्ठ केवल परमात्मा है। —अज्ञात

सर्वश्रेष्ठ मनुष्य वही है जिसने मनरूपी राक्षस को अपने वग में कर लिया है। —मीरा

The noblest mind the best contentment has

सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति वह है जिसे पूर्ण सतोष है। —एच० स्पेन्सर

सहनशीलता

मनुष्य कटु उक्तियो को किसी प्रकार सहन कर लेता है, परन्तु जव उसके ग्रन्थों और धर्मनेताओ पर आक्रमण होता है तव उसकी सहनशीलता की प्राय समाप्ति हो जाती है। —हरिऔध

जैसी परै सो सहि रहै, कहि रहीम यह देह।
धरती ही पर परत सव, शीत, घाम अरु मेह॥ —रहीम

सहानुभूति (दे० "समवेदना", "हमदर्दी")

किसी का रुपया वापस दिया जा सकता है परन्तु सहानुभूति के दो शब्द वह ऋण है जिसे चुकाना मनुष्य की शक्ति के वाहर है। —अज्ञात

सकट में मनुष्य को कोई हमदर्दी दिखाता है तो चाहे वाह्य सकट से निवृत्ति न भी हो तो भी उसके दिल को तसल्ली हो जाती है। —आचार्य विनोबा

सहानुभूति या दया पाने की क्षुधा प्रत्येक मानव-हृदय में गुप्त रूप में किन्तु मजबूती के साथ छिपी रहती है। —अज्ञात

दुखी मनुष्य जब स्नेह और सहानुभूति का शब्द सुनता है, तब आसुओ की झड़ी लग जाती है। —अज्ञात

सहानुभूति और संवेदना दुखी हृदय को और भी व्याकुल बना देती है।
—अज्ञात

प्रेम के उपरान्त सहानुभूति मानव-हृदय की पवित्रतम भावना है। —बर्क

सहानुभूति सहृदयता की निशानी है। —अज्ञात

सहायता

किसी की कुछ सहायता करना, उधार देने की एक वैज्ञानिक पद्धति है।
—अज्ञात

Light is the task where many share the toil
वह काम हल्का है, जिसमें बहुत से लोग हाथ बँटाते हैं। —होमर

अपनी सहायता स्वय करो तो ईश्वर तुम्हारी सहायता करेगा।
—एच० स्पेन्सर

जब हम अपने पैर की धूल से भी अधिक अपने को नम्र समझते हैं तो ईश्वर हमारी सहायता करता है। केवल दुर्बल और असहायो पर ही दैवी कृपा होती है।
—महात्मा गाधी

ईश्वर उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वय करते हैं। —कहावत

सहारा

तिनके का सहारा पानेवाले की आशाए बहुत लम्बी हो उठती हैं। —अज्ञात

When a person is down in the world, an ounce of help is better than a pound of preaching.
इस ससार में किसी दुखी व्यक्ति के लिए थोडी सी भी सहायता ढेरो उपदेश से कही अधिक अच्छी है। —बुलवर

सान्त्वना

दुखियारो को हमदर्दी के आँसू भी कम प्यारे नही होते। —प्रेमचन्द

The due of compassion is a tear.
अश्रु सान्त्वना का ओसकण है। —बायरन

सात्विक

क्या तुम्हें मालूम है कि सात्विक प्रकृति का मनुष्य कैसे ध्यान करता है ? वह आधी रात को अपने बिस्तर पर मसहरी के अन्दर ध्यान करता है, ताकि और लोग उसे न देख सकें। —रामकृष्ण परमहंस

साथी

तेरा साथी अगर जल्दी करता है तो वह तेरा साथी नही है। —सादी

जब तुम्हें अवसर मिले तो अपने से अधिक अच्छो का साथ करो; यही ठीक और वास्तविक अभिमान है। —चेस्टरफील्ड

When one associates with wise it is but one step from companionship to slavery

जब कोई व्यक्ति किसी बुद्धिमान् का साथ करता है तो यह मित्रता से दासता को ओर केवल एक कदम है। —क्वार्ल्स

No man can be prudent of his time, who is not prudent in the choice of his company

जो व्यक्ति अपने साथियो के चुनाव में विवेकी नही है वह अपने समय का सदुपयोग नही कर सकता। —जर्मी टेलर

जो अन्त तक साथ निभाये ऐसा साथी पत्नी के सिवा दूसरा नही। —प्रेमचन्द

साधक

नाव जल में रहे तो कुछ हर्ज नही परन्तु नाव में जल नही जाना चाहिए। इसी प्रकार साधक चाहे ससार में रहे परन्तु साधक के मन में ससार नही रहना चाहिए। —रामकृष्ण परमहंस

साधक के लिए सबसे बड़ा प्रतिबन्ध कीर्ति की चाह है। —अज्ञात

साधन

अभ्यास की दृष्टि रही तो साधन काम आते हैं। अभ्यास का दृष्टि न रही तो उत्तम साधन भी निकम्मे हो जाते हैं। —विनोबा

पाप कर्म से दूर रहना, निरंतर पुण्य में तत्पर रहना, अच्छी मनोवृत्ति रखना और शुभ आचरण करना—यह सबसे बड़ा कल्याण का साधन है। —वेदव्यास (म० शा०)

उत्तम साध्य के लिए उत्तम साधन भी होना चाहिए। सुगन्ध की प्राप्ति चन्दनादि सुगंधित द्रव्यों से ही सम्भव है। मिट्टी का तेल जलाकर हवन की सुगन्ध नहीं पैदा की जा सकती। —अज्ञात

साधु

कष्ट पड़ने पर भी साधु पुरुष मलिन नहीं होते, जैसे सोने को ज्यों-ज्यों तपाया जाय त्यों-त्यों चमकता है। —अज्ञात

कबिरा संगत साधु की, हरै और की व्याधि।
संगत बुरी असाधु की, आठो पहर उपाधि॥ —कबीर

साधूनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साधवः।
कालेन फलते तीर्थं सद्यः साधुसमागमः॥ —चाणक्य

साधुओं का दर्शन ही पुण्य है इस कारण कि साधु तीर्थरूप हैं, तीर्थ समय से फल देता है पर साधुओं की संगति शीघ्र ही फल देती है।

सब बन तो चंदन नहीं, सूरा का दल नाहिं।
सब समुद्र मोती नहीं, यों साधू जग माहिं॥ —कबीर

सिंहन के लँहड़े नहीं, हंसन की नहिं पाँत।
लालन की नहिं बोरियाँ, साधु न चलें जमात॥ —कबीर

सततं यत्सुखं नित्यं स्वर्गोऽपि नरकोपमम्।
तस्मात्परसुखेनैव साधवः सुखिनः सदा॥ —पद्मपुराण

जहाँ सदा अपने मन को ही सुख मिलता है, वह स्वर्ग भी नरक के समान है। अतः साधु पुरुष सदा दूसरों के सुख से ही सुखी होते हैं।

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने॥ —चाणक्य

प्रत्येक पर्वत पर माणिक्य नहीं होता और प्रत्येक हाथी में मुक्ता नहीं मिलती, सर्वत्र साधु नहीं मिलते और सब वनों में चन्दन नहीं होता।

साध्य

साध्य के लिए साधन होते हैं, साधन के लिए साध्य नही। —विनोबा

साध्य कितने भी पवित्र क्यो न हों, साधन की पवित्रता के बिना उनकी उपलब्धि सम्भव नही। —कमलापति त्रिपाठी (बापू और मानवता)

साम्राज्य

साम्राज्य में एक हठ, घमण्ड और अकड़ होती है जिस पर वह सैंकडो गुलामो का कत्लेआम कर सकता है। —सुभाषचन्द्र बोस

सल्तनत किसी आदमी की जायदाद नही, बल्कि एक ऐसा दरख्त है जिसकी हर शाख और पत्ती एक-सा खूराक पाती है। —प्रेमचन्द

साम्राज्यवाद

साम्राज्यवाद की वृकोदर-वृत्ति की इमारत हिंसा के ही पाये पर रखी जा सकती है। —पतंजलि

सावधान

The cautious seldom err.
सावधान मनुष्य क्वचित् ही गलती करते हैं। —कन्फ्यूशियस

दूसरे की मुसीबत से सावधान रहो जिससे कि दूसरे लोग तुमसे सबक न ले सकें। —सादी

जब बादल दिखलाई पड़ते हैं तो बुद्धिमान् मनुष्य जामा पहन लेते हैं। —शेक्सपियर

दूसरे की मुसीबत से सावधान होना अच्छा है। —प्यूब्लियस साइरस

उस पर विश्वास नही करो जिसने तुम्हें एक बार धोखा दिया है। जिसने तुम्हें एक बार धोखा दिया वह तुम्हें फिर धोखा देगा। —शेक्सपियर

सावधानी

Caution is the eldest child of wisdom
सावधानी, बुद्धिमानी की सबसे बड़ी सन्तान है। —विक्टर ह्यूगो

Of all forms of caution, caution in love is perhaps not fatal to true happiness.

सभी तरह की सावधानी में, प्रेम में सावधानी, कदाचित सच्चे सुख के लिए घातक नही है। —बी० रसल

साहस

सच्चे साहस में न तो अधीरता है और न जल्दबाजी।

—माताजी (अरविन्दाश्रम)

उचित को जानना और उस पर अमल न करना साहस का अभाव है।

—कन्फ्यूशस

Courage is the first of human qualities because it is the quality which guarantees all the others

मानव के सभी गुणो में साहस पहला गुण है क्योकि यह सभी गुणो की जिम्मेदारी लेता है। —चर्चिल

बगैर निराश हुए पराजय को सह लेना पृथ्वी पर साहस की सबसे बडी परीक्षा है।

—आर० जी० इन्गरसोल

अपने दोषो को स्वीकार करना एक उत्कृष्टतम साहस है।

—माताजी (अरविन्दाश्रम)

A great deal of talent is lost to the world for want of a little courage Every day sends to their grave obsure men whose timidity prevented them from making a first effort

थोड़े से साहस के अभाव में काफी प्रतिभा ससार से खो जाती है। प्रत्येक दिन ऐसे अपरिचित व्यक्तियो को कब्र में भेजता है जिनकी कायरता ने उनको प्रथम प्रयास से वचित रखा है —सिडनी स्मिथ

Courage consists not in hazarding without fear but being resolutely minded in a just cause.

बिना भय के, अपने को सकट में डालना साहस नही है वरन् उचित ध्येय में दृढ-निश्चयी होना है। —प्लूटार्क

सकट में साहस होना आधी सफलता प्राप्त कर लेना है। —प्लाउटस

साहसी व्यक्ति विश्वासी भी होता है। —सिसरो

साहसी

साहसी लोग इस बात की खोज नहीं करते कि शत्रु कितने हैं, परन्तु वे तो यह खोजते हैं कि वे कहाँ हैं। —अज्ञात

कोई भी ऐसा व्यक्ति साहसी नहीं हो सकता जो पीड़ा को जीवन की सबसे बड़ी बुराई समझता है। —सिसरो

साहित्य

ज्ञान-राशि के सचित कोष का नाम ही साहित्य है। —महावीरप्रसाद द्विवेदी

सबसे जीवित रचना वह है जिसे पढने से प्रतीत हो कि लेखक ने अन्तर से सब कुछ फूल की तरह प्रस्फुटित किया है। —शरत्चन्द्र (पत्रावली)

जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हममें गति और शक्ति न पैदा हो, हमारा सौन्दर्य-प्रेम न जाग्रत हो, जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयो पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है, वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नही। —प्रेमचन्द्र

साहित्य के अन्तर्गत वह सारा वाङमय लिया जा सकता है जिसमें अर्थ-बोध के अतिरिक्त भावोन्मेष अथवा चमत्कारपूर्ण अनुरजन हो तथा जिसमे ऐसे वाङमय की विचारात्मक समीक्षा या व्याख्या हो। —रामचन्द्र शुक्ल

अधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नही है।
मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है।। —अज्ञात

सच्चे साहित्य का निर्माण तो एकान्त-चिन्तन और एकान्त-साधना में होता है। —अज्ञात

The decline of literature indicates the decline of a nation; the two keep pace in their downward tendency.

साहित्य का पतन राष्ट्र के पतन का द्योतक है; पतन की ओर वे परस्पर एक दूसरे का साथ देते हैं। —गेटे

प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का सचित प्रतिबिम्ब होता है। —रामचन्द्र शुक्ल

साहित्य की सरिता जब जनता के हर्ष-विषाद से तरंगित होती है तभी गगा के तुल्य उसमें सब अवगाहन करते हैं, अन्यथा वह कर्मनाशा के तुल्य त्याज्य है। —अज्ञात

साहित्य-सगीत-कला-विहीन साक्षात्पशु पुच्छ-विषाणहीन ।
तृण न खादन्नपि जीवमानस्तद् भागवेय परम पशूनाम् ॥

—भर्तृहरि

साहित्य, सगीत और कला से रहित पुरुष विना पूँछ और सीग के साक्षात् पशु ही है। वह विना तृण खाये हुए जो जीता है, यह पशुओ का परम सौभाग्य है।

समाज नष्ट हो सकता है, राष्ट्र भी नष्ट हो सकता है, किन्तु साहित्य का नाश कभी नही हो सकता। —अज्ञात

साहित्य का अध्ययन युवको का पालन-पोषण करता है, वृद्धो का मनोरजन करता है, उन्नति का शृगार करता है, विपत्ति को धीरज देता है, घर में प्रमुदित करता है और वाहर विनीत वनाता है। —सिसरो

साहित्य के साधको ने इस अनुपम उद्यान को सदैव अपने हृदय के रस से सीचा है। यही कारण है कि इसका परिमल हमारे मुरझाते हुए हृदय को हरा-भरा कर देता है।

—अज्ञात

राजनीति क्षणभगुर है, चचल है, परन्तु साहित्य चिरस्थायी है, मगलमय है, उसके आधार-भूत मूल्यो की क्षति नही होती। —अनन्त गोपाल शेवडे

साहित्यकार

सच्चा साहित्यकार तो अपनी अन्तरप्रेरणा को छोडकर और किसी देवता की पूजा नही करता। वह तो इस विश्वास से चलता है कि मेरे हृदय में भगवान् का वास है, मैं यदि उसकी अभ्यर्थना करूँगा, आराधना करूँगा, तो उसी की वाणी मेरी जवान या कलम पर उतरेगी। —अज्ञात

साहित्यकार एक दीपक के समान है, जो जलकर केवल दूसरो को ही प्रकाश प्रदान करता है। —अज्ञात

सिद्धान्त

Principle is a passion for truth and right

सिद्धान्त सत्य और न्याय के लिए उत्कण्ठा का नाम है। —हैजलिट

महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त लचीले हो सकते हैं और होने भी चाहिए। —लिंकन

Principles become modified in practice by facts.

वास्तविक तथ्यो के कारण सिद्धान्तो में व्यावहारिक दृष्टि से परिवर्त्तन हो जाता है। —कूपर

सिद्धान्त-विहीन जीवन का कोई मूल्य नही है। —अज्ञात

सिद्धि

विवातु. सर्वलोकस्याभिप्रायोऽप्येष दृश्यते।
यत्कार्य-सिद्धित. पूर्वं कष्टस्वीकरणं मतम्॥ —अज्ञात

समस्त ससार की सृष्टि करनेवाले प्रजापति का अभिप्राय भी यही दीखना है कि किसी भी कार्य की सिद्धि से पहले कष्ट या दुःख उठाना ही चाहिए।

योगाभ्यास आत्मा का विषय है इसलिए सिद्धियाँ शरीर को प्राप्त नही होती वल्कि आत्मा को होती हैं। —स्वामी दयानन्द सरस्वती

विना कर्म किसी ने सिद्धि नही पायी। —भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

सीख (दे० "नसीहत", "शिक्षा")

हमारे जीवन का प्रत्येक अगला दिन पिछले दिन से कुछ ऐसे ढग का हो, जिसमें हमने कुछ सीखा हो। —रवीन्द्र

शिक्षा वाको दीजिए, जाको सीख सोहाय।
सीख न दीजै वाँदरा, आपन हानि कराय॥ —अज्ञात

Every man I meet is my superior in some way In that, I learn of him

जिन जिन व्यक्तियों से मै मिलता हूँ वे किसी न किसी रूप में मुझसे श्रेष्ठ होते हैं, और इस तरह मै उनसे कुछ सीख पाता हूँ। —एमर्सन

विनय राजपुत्रेभ्य पण्डितेभ्य सुभापितम्।
अनृतं द्यूतकारेभ्य स्त्रीभ्य. शिक्षेत्तु कैतवम॥ —चाणक्य

विनयी होना राजपुत्रो से सीखना चाहिए, पण्डितो से सुभापित, जुआ खेलने वालों से झूठ वोलना और प्रपच करना स्त्रियो से सीखना चाहिए।

सीख का कदाचित् ही स्वागत होता है। जिनको इसकी अधिक आवश्यकता है वे ही इसको सवसे कम पसन्द करते हैं। —जानसन

Advice is like snow, the softer it falls the longer it dwells upon, and the deeper it sinks into the mind.

सीख हिम के सदृश है, जब धीरे-धीरे गिरती है तब अधिक देर तक टिकती है और मस्तिष्क में गहराई तक पहुँचती है। —कालरेज

सुकर्म

A good action is never lost, it is a treasure laid up and guarded for the doer's need

सुकर्म कभी नष्ट नही होता, यह निधि कर्ता की आवश्यकता के लिए सुरक्षित रक्खी रहती है। —काल्ड्रेयन

मनुष्य के मर जाने के बाद भी उसके सुकर्म जीवित रहते हैं। —अज्ञात

सुख

यो वै भूमा तत्सुख नाल्पे सुखमस्ति। भूमैव सुख भूमा त्वेव विजिज्ञासितव्य ।
—छान्दोग्य उपनिषद्

जो पूर्ण है वह सुख है, अल्प में सुख नही, पूर्ण ही सुख है, पूर्ण को ही जानना चाहिए।

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं। —तुलसी

दुनिया के सुख केवल निर्जीव शव जैसे हैं। —स्वामी रामतीर्थ

कस्यात्यन्त सुखमुपनत दु खमेकान्ततो वा,
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण। —कालिदास

किसी को सुख अथवा एकमात्र दु ख नही मिलता—दु ख और सुख रथ के पहिये की भाँति कभी ऊपर और कभी नीचे रहा करते हैं।

अर्थागमो नित्यमरोगिता च प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन् ॥ —हितोप०

हे राजा ! नित्य धन का लाभ, आरोग्यता, प्रियतमा और मधुरभाषिणी स्त्री, आज्ञाकारी पुत्र और धन का लाभ करानेवाली विद्या—ये ससार में छ सुख हैं।

सुख ससार की किसी भी वस्तु में नहीं है, इसलिए वह किसी भी बडे से बड़े वैभव द्वारा प्राप्त नही हो सकता। सुख तो मन की एक स्थिति है जो आत्मभावन द्वारा प्राप्त होती है। —अज्ञात

जीवन में सबसे महान् सुख किसी वस्तु को त्याग कर चले जाने में है। सबसे महान् सुख किसी वस्तु की प्राप्ति में नही वरन् उसके त्याग में है।

—चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

यदि मन स्थिति बिगड़ी हुई हो तो दूसरे अवसरो पर सुखकारक प्रतीत होने-वाले पदार्थ भी सुख नहीं दे सकते। —वेद

सच्चा सुख स्वार्थनाश में है और उसे अपने आप के अतिरिक्त अन्य कोई सुखी नही बना सकता। —विवेकानन्द

सच्चा सुख बाहर से नही मिलता, अतर से मिलता है। —महात्मा गांधी

The secret of happiness is renunciation.

सुख का रहस्य त्याग में है। —एण्ड्रू कारनेगी

सुख, जो कुछ तुम त्याग कर सकते हो उस पर आधारित है, जो कुछ तुम पा सकते हो उस पर नही। —महात्मा गांधी

Virtue alone is happiness below.

केवल सद्गुण ही इस पृथ्वी पर सुख है। —शेक्सपियर

राग के समान अग्नि नही है, द्वेष के समान मल नही, स्कन्धों के समान दु ख नही, शान्ति से बढकर सुख नही। —धम्मपद

The happiness of a man in this life does not consist in the absence but in the mastery of his passions.

इस जीवन में मनुष्य का सुख वासनाओ के अभाव में नही है वरन् उन पर शासन करने में है। —टेनीसन

नीरोग होना परम लाभ है, सन्तोष परम धन है, विश्वास सबसे बडा बन्धु है, निर्वाण परम सुख है। —धम्मपद

विषयानुपभुञ्जानै सुख-प्राप्तिधिया नरैं।
सुखस्य कारण स्वान्तम् इत्येतदवधार्यताम्॥ —अज्ञात

मनुष्य सुख-प्राप्ति के विचार से विषयो का उपभोग करते हैं। उनको समझ लेना चाहिए कि वास्तव में सुख का कारण मन ही है।

एक महान् उद्देश्य के लिए प्रयत्न में स्वत ही आनन्द है, सुख है और किसी अंश तक प्राप्ति की मात्रा भी है। —जवाहरलाल नेहरू

No thoroughly occupied man was ever yet very miserable.
जो व्यक्ति अत्यधिक व्यस्त रहता है वह आज तक कभी बहुत दुःखी नहीं हुआ।
——एल० ई० लन्डन

This is the true joy in life the being used for a purpose recognised by yourself as a mighty one, the being thoroughly worn out before you are thrown on the scrap heap; the being a force of nature, instead of a felverishy selfish little clod of ailments and grievances complaning that the world will not devote itself to making you happy.

यही जीवन का सच्चा सुख है—ऐसे उद्देश्य में जिसे तुम स्वयं ही महान् समझते हो, काम आ जाना, इसके पहले कि तुम घूरे पर रद्दी की तरह उठाकर फेंक दिये जाओ, काम करते करते पूर्णरूप से घिस जाना। प्रकृति की एक शक्ति बन जाना कहीं अच्छा है बजाय इसके कि तुम रोग और आपत्तियों की एक ज्वरपीडित, स्वार्थपूरित, क्षुद्र पीडा बने हुए रोते फिरो कि दुनिया तुमको सुखी बनाने की ओर कुछ ध्यान नहीं देती।
——जार्ज बर्नाड शा

विषदिग्धस्य भक्तस्य दन्तस्य चलितस्य च।
अमात्यस्य च दुष्टस्य मूलादुद्धरणं सुखम्॥ ——हितोपदेश

विष मिले हुए भोजन, हिले हुए दाँत और बुरी सलाह देनेवाले मन्त्री का समूल विनाश कर देना ही सुखदायी होता है।

सुख-भोग की लालसा, आत्मसम्मान का सर्वनाश कर देती है।
——प्रेमचन्द (प्रेमपचीसी)

सुखी (दे० "प्रसन्न")

हर्ष के साथ शोक और भय इस प्रकार लगे हुए हैं जिस प्रकार प्रकाश के संग छाया। सच्चा सुखी वही है जिसकी दृष्टि में दोनों समान हैं। ——धम्मपद

जीवन में सुखी वही हो पाता है जिसे शान्ति का मार्ग मिल गया है। ——अज्ञात

लोभमूलानि पापानि व्याधयो रसमूलकाः।
स्नेहमूलानि दुःखानि त्रीणि त्यक्त्वा सुखी भव॥ ——अज्ञात

लोभ के कारण पाप होते हैं, रस के कारण रोग होते हैं और स्नेह के कारण दुःख होते हैं। अतः लोभ, रस और स्नेह का त्याग करके सुखी हो जाओ।

सुखी जीवन

The way to have a happy life is to be busy doing what you like all the time, having no time left to consider whether you are happy or not.

सुखी जीवन व्यतीत करने का उपाय यह है कि मनुष्य तन्मय होकर मनोनुकूल कार्य में अपने को लगा रखे और इस बात को सोचने के लिए भी कुछ समय न दे कि वह सुखी है या नही। जार्ज बर्नार्ड शा

सुदिन

भले दिन मनुष्य के चरित्र पर सदैव के लिए अपना चिह्न छोड़ जाते हैं।
—प्रेमचन्द

सुदिन सबके लिए आते हैं, किन्तु टिकते उसी के पास हैं जो उनको पहचानकर आदर देता है। —अज्ञात

घूरे के भी दिन फिरते हैं। —अज्ञात

सुधार

Reform must come from within, not from without, you can not legislate for virtue.

सुधार आन्तरिक होना चाहिए, बाह्य नही। तुम सद्गुणो के लिए नियम नहीं बना सकते। —गिबन

Reform like charity must begin at home

सुधार दानशीलता की भाँति घर से प्रारम्भ होना चाहिए। —कारलाइल

कोई भी सुधार सम्भव नहीं है जब तक कुछ शिक्षित और धनी व्यक्ति स्वेच्छा से निर्धनता का स्तर नही अपना लेते। —महात्मा गांधी

To reform a man you must begin with his grand-mother.

यदि किसी व्यक्ति का सुधार करना चाहते हो तो उसकी दादी से शुरू करो।
—विक्टर ह्यूगो

Necessity reforms the poor, and satiety the rich.

आवश्यकता निर्धन का सुधार करती है, सन्तुष्टता धनी का। —टेसीटस

जो व्यक्ति अपना सुधार स्वय कर लेता है वह लम्बी-चौड़ी बाते करनेवाले निर्बल देशभक्तो के समूह से कही अधिक जनता का सुधार करता है। —लेवेटर

सुधारक

उपहास और विरोध तो सुधारक के पुरस्कार है। —प्रेमचन्द

सुधारक चाहे कितना भी श्रेष्ठ पक्ति का क्यो न हो, जब तक जनता उसे परख नही लेगी उसकी बात नही सुनेगी। —विनोबा

जो सुधारक अपने सदेश के अस्वीकार होने पर क्रोधित हो जाता है उसे सावधानी, प्रतीक्षा और प्रार्थना सीखने के लिए वन में चला जाना चाहिए। —महात्मा गांधी

सच्चा सुधारक न केवल पाप से घृणा करेगा वरन् उस स्थान को अच्छाइयो से भरने का उत्साहपूर्वक प्रयत्न करेगा। —सी० सिमन्स

सुन्दर

जो अहित करनेवाली चीज है वह थोडी देर के लिए सुन्दर बनाने पर भी असुन्दर है, क्योकि वह अकल्याणकारी है। सुन्दर वही हो सकता है जो कल्याणकारी हो। —भगवतीचरण वर्मा

यदि सुन्दर दिखाई देना है तो तुम्हे भडकीले कपडे नही पहनना चाहिए बल्कि अपने गुणो को बढाना चाहिए। —महात्मा गांधी

किमिव हि मधुराणा मण्डन नाकृतीनाम्। —कालिदास

सुन्दर शरीर पर सभी कुछ शोभा देने लगता है।

सुन्दर स्त्रियाँ गाना और रोना दोनो अच्छी तरह जानती है।

—जयशंकर प्रसाद

मैने चमकीली आँख, सुन्दर रूप, खूबसूरत शक्ल देखी, लेकिन एक भी ऐसी आत्मा न मिली जो मेरी आत्मा से बोलती। —एमर्सन

सुन्दरता (दे० "खूबसूरती", "सौंदर्य")

नेत्रो का सुन्दरता से घना सम्बन्ध है। —प्रेमचन्द

सुन्दरता चलती है तो साथ ही देखनेवाली आंख, सुननेवाले कान और अनुभव करनेवाले हृदय चलते है। —अज्ञात

हाजते मश्शाता नेस्त रूम दिलाराम रा। —सादी

सुन्दरता विना शृंगार के ही मन को मोहती है।

The most beautiful things in the world are the most useless; peacocks and lilies for instance

ससार में सवसे सुन्दर वस्तु सवसे अधिक वेकार होती है, जैसे मोर और कुमुदिनी। —रस्किन

A thing of beauty is a joy forever. Its loveliness increases; it will never pass into nothingness.

सुन्दर वस्तु चिर-आनन्ददायिनी है। उसकी माधुरी नित्य वढ़ती जाती है, उसका कभी ह्रास नही होने पाता। —कीट्स

अच्छे विचार रखना भीतरी सुन्दरता है। —स्वामी रामतीर्थ

Beauty draws us with a single hair.

सुन्दरता एक वाल के द्वारा भी हमको अपनी ओर खीच सकती है। —पोप

क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूप रमणीयताया। —माघ

क्षण प्रति क्षण जो नवीन दिखाई पड़े वही सुन्दरता का उत्कृष्ट नमूना है।

हे सौंदर्य, तू अपने को प्रेम के भीतर ढूँढ़, दर्पण की मिथ्या प्रशसा में नही।

—रवीन्द्र

If virtue accompanies beauty, it is the heart's paradise; if vice be associated with it, it is the soul's purgatory. It is the wise man's bonfire, and the fool's furnace

यदि सुन्दरता के साथ सद्‌गुण है, तो वह हृदय का स्वर्ग है, यदि उसके साथ दुर्गुण है तो वह आत्मा का नरक है। वह वुद्धिमान् की होली और मूर्ख की भट्ठी है।

—क्वार्ल्स

विना सद्‌गुण के सुन्दरता अभिशाप है। —कहावत

Beauty provoketh thieves sooner than gold.

स्वर्ण से भी शीघ्र सुन्दरता चोरों को आकर्षित करती है। —कहावत

What is lovely never dies,
But passes into other loveliness.

जो सुन्दर है उसका कभी ह्रास नही होता, वरन् वह अन्य सुन्दर वस्तुओं में प्रवेश कर जाता है। —टी० वी० एल्ड्रिच

सुपात्र

मुपात्र-दानाच्च भवेद्धनाढ्यो धन-प्रभावेण करोति पुण्यम्।
पुण्य-प्रभावात्सुरलोकवासी पुनर्धनाढ्य पुनरेव योगी॥ —अज्ञात

सुपात्र को दान देने से आदमी धनी होता है, धन के प्रभाव से वह पुण्य प्राप्त करता है और पुण्य के प्रभाव से स्वर्ग मिलता है। उसके वाद जन्म-जन्मान्तर में भी आदमी धनी और भोगी होता है।

सुपुत्र

एकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन साधुना।
आह्लादितं कुलं सर्वं यथा चन्द्रेण शर्वरी॥ —चाणक्य

विद्यायुक्त, भले, एक भी सुपुत्र से सारा कुल ऐसे आनन्दित हो जाता है जैसे चन्द्रमा से रात्रि।

एक ही सुपुत्र के कारण सिंहनी वन की महारानी होती है किन्तु दस नालायक पुत्रो के होते हुए भी गदही भार ढोते ढोते मर जाती है। —अज्ञात

एकेनापि सुवृक्षेण पुष्पितेन सुगन्धिना।
वासितं स्याद् वनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा॥ —चाणक्य

एक भी अच्छे वृक्ष से, जिसमें सुन्दर फूल और गन्ध है, सारा वन इस प्रकार सुवासित हो जाता है जैसे सुपुत्र से कुल।

किं जातैर्बहुभिः पुत्रैः शोकसंतापकारकैः।
वरमेकः कुलालम्बी यत्र विश्राम्यते कुलम्॥ —चाणक्य

शोक-संताप उत्पन्न करनेवाले बहुत पुत्रो से कुल को क्या? सहारा देनेवाला एक ही पुत्र श्रेष्ठ है, जिससे कुल विश्राम पाता है।

एकोऽपि गुणवान्पुत्रो निर्गुणैश्च शतैर्वरः।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारा सहस्रशः॥ —चाणक्य

एक भी गुणी पुत्र श्रेष्ठ है, सैकड़ो गुणरहितो से क्या? एक ही चन्द्रमा अंधकार नष्ट कर देता है, सहस्र तारे नही।

सुप्रसिद्धि

Passion for fame; a passion which is the instinct of all great souls.

प्रसिद्धि की अभिलाषा, वह अभिलाषा है जो प्रत्येक महान् व्यक्ति की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। —बर्क

प्रसिद्धि की तृष्णा यदि महान् व्यक्तियों की आखिरी कमजोरी है तो छोटे मनुष्यों की पहली कमजोरी है। —रस्किन

सुभार्या (दे० "भार्या")

सुभार्या स्वर्ग की सबसे बड़ी विभूति है जो मनुष्य के चरित्र को उज्ज्वल और पूर्ण बना देती है, जो आत्मोन्नति का मूल-मंत्र है। —प्रेमचन्द

मनुष्य की सबसे बड़ी सम्पत्ति सुभार्या है। —बर्टन

सा भार्या या शुचिर्दक्षा सा भार्या या पतिव्रता।
सा भार्या या पतिप्रीता सा भार्या सत्यवादिनी॥ —चाणक्य

वही भार्या है जो पवित्र और चतुर है, वही भार्या है जो पतिव्रता है, वही भार्या है जिस पर पति की प्रीति है, वही भार्या है जो सत्य बोलती है।

सुमति

जहाँ सुमति तहँ संपति नाना।
जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना॥

—तुलसी (मानस-सुन्दर)

सुलभ

सुलभ वस्तु सर्वस्य न यात्यादरणीयताम्।
स्वदारपरिहारेण परदारार्थिनो जना.॥ —अज्ञात

जो वस्तु आसानी से लोगों को मिलती रहती है वे उसका आदर नहीं किया करते। लोग अपनी सुलभ सुन्दर पत्नी को छोड़कर दूसरे की औरतों के पीछे घूमा करते हैं।

सुशीलता

छिन्नोऽपि चन्दनतरुर्न जहाति गन्ध
वृद्धोऽपि वारणपतिर्न जहाति लीलाम्।
यन्त्रार्पितो मधुरता न जहाति चेक्षु
क्षीणोऽपि न त्यजति शीलगुणान्कुलीन ॥ — चाणक्य

काटा हुआ चन्दन का वृक्ष गन्ध को नही छोड देता, बूढा गजपति भी क्रीडा को नही छोड देता, कोल्हू में पेरी हुई ईख मधुरता नही छोड देती, दरिद्र भी कुलीन सुशीलता आदि गुणो को नही छोड़ देता।

सूक्तियाँ

जीवन भर के कितने अनुभवो का अमृत सूक्ति के एक विन्दु में रहता है।

— डा० रामकुमार वर्मा

सूक्तियाँ साहित्य-गगन में देदीप्यमान उज्ज्वल नक्षत्र के समान हैं। इनकी आभा देश और काल की सकुचित सीमा पार करके सर्वदा एकसमान और एकरस रहने वाली है। — रामप्रताप त्रिपाठी

यदि वाङमय को हम हरितिमा-पुज का रूपक दें तो सूक्तियो को हमें सुवासित पुष्प की सज्ञा देनी पडेगी। पुष्प जैसे हमारी घ्राण तथा चाक्षुप शक्तियो को आह्लादित करता है वैसे ही सूक्तियाँ हमारे मन तथा मस्तिष्क को पुलकायमान करती हैं।

— प्रिंसिपल हृदयनारायण सिंह

ज्ञानियो का ज्ञान और युगो के अनुभव सूक्तियो द्वारा सुरक्षित रहते हैं।

— डिजरायली

विधाता की इस मानव-सृष्टि में सूक्तियाँ कल्पतरु के समान हैं। इनकी सुविस्तृत सघन छाया में जीवनपथ की थकान को ही दूर करने की शक्ति नही है प्रत्युत भविष्य की दुर्गम यात्रा को सुखपूर्वक समाप्त करने का इनमें अक्षय तथा दैवी सम्बल भी रहता है। — रामप्रताप त्रिपाठी

Quotation is the highest compliment you can pay to an author.
सूक्तियाँ सर्वोच्च अभिनन्दन हैं जो तुम किसी लेखक को समर्पित कर सकते हो।

— डा० जानसन

सूक्तियों से जीवन की सच्ची परिस्थितियो का मार्मिक अनुभव मिलता है।

—अज्ञात

Next to the originater of a good sentence is the first quoter of it.

किसी सुन्दर वाक्य के निर्माण करनेवाले के वाद उसकी वारी आती है जो उसका सर्वप्रथम प्रयोग करता है। —एमर्सन

सूक्तियो मे आत्म-अनुभूतियाँ भावपूर्ण शव्दो में व्यक्त होती हैं, जिनको वात वात में हम प्रमाणस्वरूप प्रयोग करते हैं। —अज्ञात

प्रत्येक सूक्ति भाषा के विस्तार और उसे चिरस्थायी वनाने में सहयोग देती है।

—डा० जानसन

सूक्तियो में मनीषियों के चिन्तन, अनुभूति, परीक्षण और कल्पना के तत्त्व, सारभूत सत्य निहित होते हैं। उनके द्वारा जीवन-यात्रा में हमें स्फूर्ति, प्रोत्साहन, मानसिक वल प्राप्त होता है। वे जीवन के अधकारपूर्ण क्षणो में प्रकाश-किरण का काम करती हैं। —प्रिंसिपल हृदयनारायण सिंह

सूर्य

सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टे कल्पेत लोकस्य कथ तमिस्रा। —कालिदास

जव सूर्य दीप्तिमान् हो तव लोगो की आँखो के सामने अँधेरा कैसे छा सकता है।

सव जीवधारी उत्पत्ति के लिए सूर्य के ऋणी हैं। —स्वामी रामतीर्थ

सूर्य प्रतिदिन प्रात. आकर हमें उठाता है और कर्त्तव्यपथ का सकेत करता है।

—अज्ञात

सूर्योदय

सूर्योदय में जो नाटक भरा है, सौंदर्य भरा है और जो लीला भरी है वह और कहीं देखने को नही मिल सकती। —महात्मा गांधी

सृष्टि

जगत् की सृष्टि का कारण वुद्धिगम्य नही है, यह तो स्वय आत्मा के अनुभव का विषय है। वुद्धि इस गुत्थी को नही सुलझा सकती। —अरविंद घोष

सृष्टि एक व्यापार है, कार्य है। —जयशंकर प्रसाद

सृष्टि पाप और पुण्य, जड और चेतन दोनो के योग से होती है, केवल पुण्य या केवल चैतन्य से कभी सृष्टि का कारखाना चल नहीं सकता। —अज्ञात

ईश्वर की सृष्टिरूपी अनोखे चमन में जवानी का सुहावना फूल न खिलता तो कवि लोग बैठे-बैठे ऊँघा करते। —अज्ञात

सेनापति

सेनापति वही है जो सिपाही की सेवा को अधिकार की वस्तु न समझ कर श्रद्धा की वस्तु समझता है। —अज्ञात

सेवक

सेवक वही है जो विपत्ति मे साथ रहे, जैसे शरीर की छाया धूप में शरीर के साथ रहती है। —अज्ञात

समदरसी मोहि कह सब कोऊ।
सेवक प्रिय अनन्य गति सोऊ॥

—तुलसी (मानस-किष्किन्धा)

सब तें सेवक-धरम कठोरा। —तुलसी (मानस-अयोध्या)

सब के प्रिय सेवक यह नीती।
मोरे अधिक दास पर प्रीती॥—तुलसी (मानस-उत्तर)

जिसने सेवा को कुत्ते की वृत्ति का कहा उसने ठीक उदाहरण नहीं दिया, क्योंकि कहा तो स्वच्छन्द विचरण करनेवाला कुत्ता और कहा सेवक जिसने अपने जीवन को भी बेच दिया।

प्रणमत्युन्नतिहेतो जीविनहेतोर्विमुञ्चति प्राणान्।
दु खीयति सुखहेतो को मूढ सेवकादन्य॥ —अज्ञात

ऊचा उठने के लिए मालिक के यहा प्रणिपात करता है, जीने के लिए अपने प्राण तक को छोडने को तैयार रहता है, सुख-प्राप्ति के लिए दुःखी रहता है, इसलिए कहा गया है कि सेवक से बढकर और दूसरा कौन मूर्ख हो सकता है।

अपने सेवक से बहुत हिलमिल न जाओ, प्रारम्भ में यह मेल-जोल अच्छा लगता है परन्तु अन्त मे तिरस्कार को जन्म देगा। —फुलर

सेवा

गरीबों की सेवा ही ईश्वर की सेवा है। —सरदार वल्लभभाई पटेल

सेवा धरम कठिन जग जाना। —तुलसी (मानस-अयोध्या)

जिसे मेरी सेवा करनी है वह पीड़ितो की सेवा करे। —गौतम बुद्ध

सेवामार्ग भक्तिमार्ग से भी ऊचा है। —अज्ञात

वीर-पूजा जैसे वीर बन कर ही हो सकती है वैसे ही गरीबो की सेवा गरीब बनकर ही हो सकेगी। —विनोबा

सेवा से शत्रु भी मित्र हो जाता है। —अज्ञात

सेवा मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है। —प्रेमचन्द

सेवा हृदय और आत्मा को पवित्र करती है। सेवा से ज्ञान प्राप्त होता है, और यही जीवन का लक्ष्य है। —स्वामी शिवानन्द

त्याग और सेवा ही भारत का जातीय आदर्श है। इसी भाव को पुन जगा देना चाहिए। बाकी आप ही आप ठीक हो जायगा। —स्वामी विवेकानन्द

लाखो गूगो के हृदय में ईश्वर विराजमान है। मैं उसके सिवा अन्य किसी ईश्वर को नही मानता। . मैं इन लाखो की सेवा द्वारा उस ईश्वर की पूजा करता हूँ। —महात्मा गांधी

बन्धुभाव से की हुई सेवा की अपेक्षा आत्मभाव से की हुई सेवा उत्तम है। —अज्ञात

जो लोग सेवाभाव रखते हैं और स्वार्थ-सिद्धि को जीवन का लक्ष्य नही बनाते उनके परिवार को आड देनेवालो की कमी नही रहती। —प्रेमचन्द

सेवा के लिए पैसे की जरूरत नही होती, जरूरत है अपना सकुचित जीवन छोड़ने की, गरीबो से एकरूप होने की। —विनोबा

धन-सम्पत्ति, शारीरिक सुख और मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा आदि को न चाहते हुए, ममता, आसक्ति और अहकार से रहित होकर मन, वाणी, शरीर और धन के द्वारा सम्पूर्ण प्राणियो के हित मे रत होकर उन्हें सुख पहुचाने की चेष्टा करना सेवा-साधन कहलाता है। —अज्ञात

अपनी और ससार की सर्वोत्तम सेवा इसी में है, तुम सदा पवित्र विचार रखो। —अज्ञात

जहाँ रूप, यौवन, संपत्ति और प्रभुता तथा स्वाभाविक सौजन्य प्रेम का बीज बोने में अकृतकार्य रहते हैं, वहाँ प्राय उपकार का जादू चल जाता है। कोई हृदय ऐसा वज्र और कठोर नहीं हो सकता जो सत्य सेवा से द्रवीभूत न हो जाय।

—प्रेमचन्द

सेवा उसकी करो जिसे सेवा की जरूरत है। जिसे सेवा की जरूरत नहीं उसकी सेवा करना ढोंग है, दम्भ है। —महात्मा गांधी

सेवा करने की योग्यता रखना दंड नहीं, ईश्वर का आशीर्वाद है। —अज्ञात

निष्ठावत और निष्काम सेवा ज्यादा दिन एकाकी नहीं रहने पाती। —विनोबा

उत्तम देश, काल और पात्र के प्राप्त होने पर जो न्यायानुकूल सेवा की जाती है वही सेवा महत्त्वपूर्ण होती है। —अज्ञात

प्रेम करने की योग्यता सब में है, किन्तु सेवा करने की शक्ति किसी को ही मिलती है। —अज्ञात

सेवा में वृत्ति जितनी निरहंकार रहेगी उतनी सेवा की कीमत बढ़ेगी।

—विनोबा

सेवा ही वास्तविक सन्यास है। सन्यासी केवल अपनी मुक्ति का इच्छुक होता है, सेवा-व्रतधारी अपने को परमार्थ की वेदी पर बलि दे देता है। —प्रेमचन्द

फल की सेवा मूल्यवान् है, पुष्प की सेवा मधुर है, परन्तु विनीत भक्तिभाव से छाया करनेवाली पत्तियों की सेवा के सदृश मेरी सेवा हो। —रवीन्द्र

यथा खनन् खनित्रेण भूतले वारि विन्दति।
तथा गुरुगतां विद्यां शुश्रूषुरधिगच्छति॥ —चाणक्य

जैसे कुदारी से खोदकर मनुष्य पाताल के जल को पाता है, वैसे ही गुरुगत विद्या सेवा से प्राप्त होती है।

सैनिक

सैनिक केवल एक यंत्र है जिसकी गति का निर्णय उसके नायक को है। सैनिक जीवन और मृत्यु में कोई अन्तर नहीं समझ सकता। —डा० रामकुमार वर्मा

सैनिक केवल इसलिए जीवित है कि नायक की आज्ञा से मृत्यु प्राप्त कर सके। इससे अधिक सैनिक का कोई अधिकार नहीं है। —वही

सौन्दर्य (दे० "खूबसूरती", "सुन्दरता")

वास्तविक सौन्दर्य हृदय की पवित्रता में है।

—महात्मा गांधी ("आत्मकथा" से)

Beauty is truth, truth beauty.

सौन्दर्य ही सत्य है और सत्य ही सौन्दर्य। —कीट्स

सौन्दर्य, जीवन-सुधा है। मालूम नही क्यों इसका असर इतना प्राणघातक होता है। —प्रेमचन्द (हार की जीत)

Beauty is power, a smile is its sword.

सौन्दर्य शक्ति है और मुस्कान उसकी कृपाण। —चार्ल्स रीड

सौन्दर्य सौन्दर्य को आकर्षित करता है। —ले हन्ट

सौन्दर्य वह चीज है जिसकी परिभाषा नहीं हो सकती, व्याख्या या निरूपण नहीं हो सकता, जो सर्जनात्मिका कला को अमर आनन्द का स्रोत बना देता है, और जो नैतिक अच्छाई से सर्वथा जुदा वस्तु है। —अज्ञात

Truth and goodness and beauty are but different faces of the same all.

सत्य, अच्छाई और सौन्दर्य उसी एक (परमात्मा) के विभिन्न रूप हैं।

—एमर्सन

सौन्दर्य सत्य की मुस्कान है जब वह अपनी ही आकृति एक उत्तम दर्पण में देखता है। —रवीन्द्र

Men move from beautiful things to beautiful ideas, from beautiful ideas to beautiful life; from beautiful life to absolute beauty

मनुष्यों की गति सुन्दर वस्तुओं से सुन्दर मनोभावों की ओर, सुन्दर मनोभावों से सुन्दर जीवन की ओर, सुन्दर जीवन से पूर्ण सौन्दर्य की ओर होती है। —प्लेटो

सौन्दर्य को देखनेवाले में भी अंगत: सौन्दर्य होता है। —बोवी

दुनिया का सारा सौन्दर्य स्वस्थ शरीर में है। —भगवती चरण वर्मा

सौन्दर्य और पवित्रता का संयोग क्वचित् ही होता है। —जुवेनल

ज्ञानी के लिए सत्य है, भावुक हृदय के लिए सौन्दर्य है। —शिलर

When beauty fires the blood, how love exalts the mind

जब सौन्दर्य रक्त में उबाल पैदा करता है तब प्रेम मस्तिष्क को बहुत ऊंचा उठा देता है। —ड्राइडेन

If eyes were made for seeing,
Then beauty is its own excuse for being

यदि आँखें देखने के लिए बनायी गयी हैं, तो सौन्दर्य अपने अस्तित्व के लिए स्वयं बहाना है। —एमर्सन

सौन्दर्य ही सकल विश्व का एकमात्र सत्य है। —अज्ञात

किसी परिचय पत्र की अपेक्षा व्यक्तिगत सौन्दर्य स्वयं एक बड़ी सिफारिश है। —अरस्तू

Beauty is the lover's gift

सौन्दर्य प्रेमी का उपहार है। —फानग्रेव

अच्छाई सौन्दर्य को कितना ऊंचा उठा देती है। —हुसानोर

The best part of beauty is that which no picture can express

सौन्दर्य का सर्वोत्तम भाग वह है जिसको कोई चित्र चित्रित न कर सके। —बेकन

Beauty is often worse than wine, intoxicating both the holder and the beholder

सौन्दर्य प्राय मदिरा से भी अधिक बुरा है क्योंकि यह सौन्दर्यवान् और दर्शक दोनों को मदमत्त बना देती है। —जमीरमन

पुरुष! स्वामी बनकर सौन्दर्य की सराहना कर, सेवक बनकर आत्म-समर्पण न कर। —डा० रामकुमार वर्मा

सौन्दर्य की सर्वव्यापी सत्ता है। —चैनिंग

सौन्दर्य का आदर्श सादगी और शान्ति है। —गेटे

सौभाग्य

सौभाग्य उन्हीं को प्राप्त होता है, जो अपने कर्तव्य-पथ पर अविचल रहते हैं। —प्रेमचन्द

सच्चा सौभाग्य, सच्ची समृद्धि तो आत्मिक-वैभव आत्मिक-प्रसन्नता या आत्मिक ज्ञान ही है। —स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)

सौभाग्य वीर से डरता है और केवल कायर को भयभीत करता है। —सेनेका

A pound of pluck is worth a ton of luck.
रत्तीभर साहस मनो सौभाग्य से अच्छा है। —जे० ए० गारफील्ड

स्कूल

जो मनुष्य एक स्कूल खोलता है वह ससार का एक जेलखाना वन्द कर देता है।
—विक्टर ह्यूगो

स्कूल प्रजातंत्री किलेवन्दी है। —होरेस मैन

स्त्री (दे० 'नारी,' 'भार्या,' 'सुभार्या')

सुयोग्य पत्नी परिवार की शोभा तथा गृह की लक्ष्मी है। —मनु

स्त्रियों की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्भर है।
—अरस्तू

अवला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी।
आचल में है दूव और आखो में पानी॥
—मैथिली शरण गुप्त (यशोधरा)

स्त्री पृथ्वी की भाँति धैर्यवान् है, शाति-सम्पन्न है, सहिष्णु है। —प्रेमचन्द

स्त्रियो की सगति अच्छे स्वभाव की आधार-शिला है। —गेटे

सम्पूर्ण महान् कार्य के प्रारम्भ में किसी स्त्री का हाथ रहा है। —लामार्टिन

Earth's noblest thing, a woman perfected.
साध्वी स्त्री ससार की सर्वोत्तम वस्तु है। —लावेल

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता.। —मनु

जिस घर में स्त्रियो की पूजा होती है उस घर में अवश्यमेव देवता रमते हैं।

"Virtuous wife, where thou dost meet
Both pleasures more refined and sweet;
The fairest garden in her looks
And in her mind the wisest books".

सद्गुणी स्त्री जहा कही भी मिलती है वहां आपको आनन्द मिलता है। उसकी चितवन में वहुत सुन्दर उद्यान है और उसका मन सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी पुस्तक है। —काउले

स्त्री, जगत की एक पवित्र स्वर्गीय ज्योति है। वह पुरुष जाति के लिए जीवन-सुधा है। त्याग उसका स्वभाव, प्रदान उसका धर्म, सहनशीलता उसका व्रत और प्रेम उसका जीवन है। —चतुरसेन शास्त्री

नारी की झाईं परत, अन्धा होत भुजंग।
कबिरा तिनकी कौन गति, नित नारी को संग॥ —कबीर

बिन गृहणी घर भूत के डेरा। —तुलसी

सौन्दर्यवती स्त्री नयनाभिराम होती है, बुद्धिमती स्त्री हृदय को प्रसन्न करती है। एक अनमोल रत्न है तो दूसरी रत्न-राशि। —नैपोलियन

स्त्रियों की मानहानि साक्षात् लक्ष्मी और सरस्वती की मानहानि है। —निराला

जिस घर में सद्गुण सम्पन्ना नारी सुखपूर्वक निवास करती है, उस घर में लक्ष्मी निवास करती है, सैकड़ों देवता भी उस घर को नहीं छोड़ते। —महर्षि गर्ग

A woman is "a necessary evil, a natural temptation, a desirable calamity, a domestic peril, a deadly fascination and a painted ill".

स्त्री एक अनिवार्य आपत्ति, स्वाभाविक मोह, वाञ्छनीय विपदा, घरेलू खतरा, प्राणघातक आकर्षण, बाहर से मीठी और भीतर से विषरस भरे कनक घट के समान है। —सेन्ट क्रिसोस्टम

पुरुष शस्त्र से काम लेता है, स्त्री कौशल से। —प्रेमचन्द

A wife is a gift bestowed upon man to reconcile him to the loss of paradise

स्त्री एक ईश्वरीय उपहार है जिसे स्वर्ग के खो जाने पर ईश्वर ने मनुष्य को उसकी क्षति-पूर्ति के लिए दिया है। —गेटे

स्त्री प्रकृति की सुन्दर भूलों में है। —काउले

स्त्री की चितवन में हमारे कानून की अपेक्षा अधिक बल है और उसके आँसुओं में हमारे तर्क की अपेक्षा अधिक शक्ति है। —सियाइल

स्त्री सब कुछ कर सकती है, मगर अपनी इच्छा के विरुद्ध प्रेम नहीं कर सकती। —सुदर्शन

स्त्री एक मधुर सरिता है, जहाँ मनुष्य अपनी चिन्ताओं और दुःखों से त्राण पाते हैं। —अज्ञात

Men at most differ as heaven and earth, but women, worst and best, as heaven and hell.

पुरुषों में अधिकाधिक स्वर्ग और पृथ्वी का, परन्तु उत्तम और निकृष्ट स्त्री में स्वर्ग और नरक का अन्तर होता है। —टेनीसन

मेरे मत में स्त्री को घर छोड़कर घर की रक्षा के निमित्त कन्धे पर बन्दूक धरने के लिए आह्वान करने अथवा उसके लिए उसे प्रोत्साहित करने में स्त्री और पुरुष दोनों का ही पतन है। —महात्मा गांधी

तुम अजस्र वर्षा सुहाग की, और स्नेह की मधु रजनी।
चिर अतृप्त जीवन यदि था, तो उसमें सन्तोष बनी॥
नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत में बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।

—जयशंकर प्रसाद

स्त्री का हृदय नवनीत-सा स्निग्ध होता है, वह सहज ही पिघल जाता है, उसके हृदय में सदा एक प्रेमसागर लहराता है। फिर भी वह प्रेम की प्यासी रहती है।—अज्ञात

स्त्री, जिस समय तू अपने गृहकार्य में लीन रहती है उस समय तेरे शरीर में ऐसी मधुर रागिनी निकलती है जैसी छोटे-छोटे पत्थरों के टुकड़ों के साथ, पर्वत स्रोत के क्रीड़ा करने से निकलती है। —रवीन्द्र

स्त्री कांटेदार झाड़ी को फूल बनाती है, दरिद्र से दरिद्र मनुष्य के घर को भी सुशील स्त्री स्वर्ग बना देती है। —गोल्डस्मिथ

यह लौकिक रीति पुरुष के अत्याचार का बहुत निर्बल बहाना है कि स्त्री का सद्गुण सच्चरित्रता और आज्ञाकारिता है। —डा० सर्वपल्लीराधाकृष्णन

नारि-विवस नर सकल गोसाईं, नाचहिं नर मर्कट की नाईं॥ —तुलसी

जो पुरुष रोग से पीड़ित हो, विपत्ति में फँसा हुआ हो, उसके लिए भी स्त्री के समान कोई दूसरी औषधि नहीं है। —वेदव्यास (महाभारत, शांति पर्व)

स्त्री को पराजित करना हो तो उसकी प्रशंसा करो। —वृन्दावन लाल वर्मा

A woman is like your shadow, follow her, she flies, fly from her she follows.

स्त्री तुम्हारी छाया के सदृश है, उसका पीछा करो, वह भागेगी, उससे भागो, वह आपका पीछा करेगी। —कैम्फोर्ट

प्यार के खातिर स्त्री सब कुछ करने को तैयार हो जाती है, परन्तु प्रतिकार के लिए उससे भी अधिक भयानक कर्म कर बैठती है। —सुदर्शन

स्त्री का बल और साहस, मान और मर्यादा पति तक है। उसे अपने पति के ही बल और पुरुषत्व का घमड होता है। —प्रेमचन्द

वाहुर्वीर्यबल राज्ञो ब्राह्मणो ब्रह्मविद्‌बली।
रूपयौवनमाधुर्य स्त्रीणा बलमनुत्तमम्॥ —चाणक्य

राजा का बाहुवीर्य बल है, ब्राह्मण, ब्रह्मज्ञानी और वेदपाठी बली होता है, स्त्रियो की सुन्दरता, तरुणता और मधुरता उनका उत्तम बल है।

स्त्री-जाति में हर उम्र में मातृत्व का अश रहता है, और वही अश उनमें सहिष्णुता, क्षमा और स्नेह को प्रेरित करता है, दु ख को कम करने की शक्ति लाता है, और इसी से उनका दिग्विजय इतना सरल हो जाता है।

—क० मा० मुन्शी

There is no worse evil than a bad woman and nothing has ever been produced better than a good one.
एक निकृष्ट स्त्री से बढकर कोई बुराई नही और अच्छी स्त्री की अपेक्षा आजतक कोई अच्छाई उत्पन्न नही हुई। —यूरीपिडीज

वह सेवा को अपना अधिकार समझती है, इसलिए देवी है, वह त्याग करना जानती है, इसलिए साम्राज्ञी है, विश्व उसके वात्सल्यमय आचल मे स्थान पा सकता है इसलिए जगन्माता है। —अज्ञात

पुरुष का स्त्री के समान न कोई बन्धु है, न धर्म-साधन में वैसा कोई सहायक।
—वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

Frailty, thy name is woman
दुर्बलता तेरा ही नाम स्त्री है। —शेक्सपियर

स्त्री प्रकृति की कन्या है। उसकी ओर कोप दृष्टि से कभी मत देखो, उसका हृदय कोमल होता है, उस पर विश्वास करो। —वेदव्यास (महाभारत)

In revenge and in love, woman is more barbarous than man
बदला लेने में और प्रेम में स्त्री पुरुष से अधिक निर्दयी होती है। —नीत्शे

A beautiful and chaste woman is the perfect workmanship of God, the true glory of angels, the rare miracle of earth and sole wonder of the world.

सुन्दर और सच्चरित्र स्त्री ईश्वर की उत्कृष्ट कारीगरी, देवताओ की वास्तविक शोभा, पृथ्वी का अपूर्व चमत्कार तथा ससार का एकमात्र आश्चर्य है।

—हरमीज

स्त्री के हृदय में करुणा अमृत बन कर बहा करती है। —डा० रामकुमार वर्मा

प्रत्येक स्त्री का यह कर्त्तव्य है कि वह जितनी जल्दी सम्भव हो सके विवाह कर ले जब कि पुरुष का यह कर्त्तव्य है कि जहा तक सम्भव हो उससे दूर रहे।

—जार्ज बर्नार्ड शा

काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोह कै धारि।
तिन्ह मह अति दारुन दुखद, मायारूपी नारि॥ —तुलसी

सुशीला रमणी ईश्वर का सबसे उत्तम प्रकाश है, जो इस ससार की शोभा बढ़ा रहा है। —रवीन्द्र

स्त्रिया पूजा करने योग्य, बड़े भाग्यवाली, पुण्यात्मा, गृह का प्रकाश तथा साक्षात् लक्ष्मी होती हैं—इससे स्त्रियो की विशेष रक्षा करनी चाहिए। —विदुर

'Tis beauty that doth oft make women proud, 'tis virtue, that doth make them most admired, 'tis modesty that make them seem divine

सौन्दर्य स्त्रियो को प्राय अभिमानी बनाता है, सद्गुण उनको अति प्रशंसनीय बनाता है और विनय से वे देवतुल्य हो जाती हैं। —शेक्सपियर

आभूषण के बिना पति ही स्त्री का परम आभूषण है, पति से रहित भूषण आदि से स्त्री शोभायमान नही होती। —हितोपदेश

किसी स्त्री के स्त्रीत्व को भंग करने से पूर्व मर जाना ही एक उत्तम कार्य है, किसी स्त्री को पाप कर्म से बचा लेना सबसे बड़ा कार्य है। —महात्मा गांधी

Woman and wine intoxicate the young and old
स्त्री और मदिरा, नवयुवको एव वृद्धो को मदमत्त बना देती हैं। —कहावत

स्त्री प्रेम करती है अथवा घृणा, वह इनके बीच की स्थिति नही जानती।

—साइरस

जिमि स्वतन्त्र भए विगरहि नारी। —तुलसी

भर्तु शुश्रूषया नारी लभते स्वर्गमुत्तमम्।
अपि या निर्नमस्कारा निवृत्ता देवपूजनात्॥ —वाल्मीकि

देवताओ की पूजा और वन्दना से दूर रहने पर भी जो स्त्री अपने स्वामी की सेवा में लगी रहती है, वह उस सेवा के प्रभाव से उत्तम स्वर्गलोक को प्राप्त होती है।

स्त्री क्या है? साक्षात् त्याग की मूर्ति। जब कोई स्त्री किसी काम में जी जान से लग जाती है तो वह पहाड को भी हिला देती है। —महात्मा गांधी

स्त्रियो का जीवन ऐसा होता है कि वे अपने स्वभाव की भयकरता को छिपा सकती है और वाहर से अपनी तीखी वाणी को मधुर भी बना सकती है। —रवीन्द्र

कार्य्येषु मन्त्री, करणेषु दासी, भोज्येषु माता, रमणेषु रम्भा।
धर्मानुकूला, क्षमया धरित्री, भार्य्या च षाड्गुण्यवती च दुर्लभा॥—अज्ञात

कार्य में मन्त्री के समान सलाह देनेवाली, सेवादि में दासी के समान काम करनेवाली, भोजन कराने में माता के समान पथ्य भोजन करानेवाली, शयन के समय रम्भा के समान सुख देनेवाली और धर्म के अनुकूल तथा क्षमादि गुण धारण में पृथ्वी के सदृश ऐसे छ गुणो से युक्त स्त्री दुर्लभ होती है।

All the reasonings of men are not worth one sentiment of women
पुरुष के सारे तर्क स्त्री के एक भाव की तुलना नही कर सकते।

—वालटेयर

'The woman's cause is man's, they rise or sink
Together, dwarfed or godlike, bond or free.'

स्त्री और पुरुष का ध्येय परस्पर एक है, वे साथ ही साथ उन्नति करते है या पतन की ओर जाते है, छोटे या देवतुल्य बनते है, पराधीन या स्वतत्र होते है। —टेनीसन

स्त्री सब कुछ सह सकती है, दारुण से दारुण दु:ख, बडे से बडा सकट। अगर नही सह सकती तो अपने यौवन-काल की उमगो का कुचला जाना। —प्रेमचन्द

स्त्री सहनशक्ति की साक्षात् प्रतिमूर्ति है, धैर्य का अवतार है। —महात्मा गांधी

सन्देह का भार पुरुष ढोता है, स्त्री विश्वास चाहती है। —अज्ञात

स्त्री गालिया सह लेती है, मार भी सह लेती है, पर मैके की निन्दा उनसे नही सही जाती। —सुदर्शन

The test of civilization is the estimate of woman

स्त्री के सम्मान से सभ्यता का परिचय मिलता है। —जी० डब्लू० करटिस

स्त्रियों की कोमलता पुरुषों की काव्य-कल्पना है। उन्हें शारीरिक सामर्थ्य चाहे न हो, पर उनमें वह धैर्य और साहस है जिन पर काल की दुश्चिन्ताओं का जरा भी असर नही होता। —प्रेमचन्द

स्त्री बल को जीत सकती है, परन्तु प्रेम और वह भी पति का प्रेम—इससे संग्राम करने की हिम्मत दुनिया के किसी नारी-हृदय मे न होगी। यहा आकर नारी बेबस हो जाती है। —सुदर्शन

तारे आकाश की कविता है, तो स्त्रिया पृथ्वी की संगीत-माधुरी। —अज्ञात

स्त्री के आँसू

नारी का अश्रुजल अपनी एक-एक बूद में एक एक बाढ लिये रहता है।
—जयशंकर प्रसाद (जन्मेजय का नागयज्ञ)

स्त्री! तूने अपने अथाह अश्रुओं से संसार के हृदय को उसी प्रकार घेर रखा है जिस प्रकार समुद्र पृथ्वी को। —रवीन्द्र

हम स्त्री की लाल आँखें देख सकते हैं, पर उसकी सजल आँखें नही देख सकते।

Beauty's tears are lovelier than her smiles

सुन्दरी के आँसू उसकी मुसकान की अपेक्षा अधिक प्यारे लगते हैं। —कैंपबेल

स्थितप्रज्ञ

स्थितप्रज्ञ के श्लोक गानेवाले को शान्तिपूर्वक काम करने की आदत डालनी ही चाहिए। —महात्मा गांधी

जिस मनुष्य के चित्त में किसी तरह की कामना उठती ही नही और स्वयं आनन्दमय हो जाता है, जिसके चित्त को कड़ी से कड़ी विपत्ति में भी दुख नहीं पहुंचता, जो सुख या अभ्युदय में अपने को परम सुखी नही मानता है, जिसके पास से भय, प्रीति और क्रोध दूर हट गये हैं, वह मनुष्य स्थितप्रज्ञ कहा जाता है। —भगवान् कृष्ण

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्ट स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

जब मनुष्य मन में उठती हुई सभी कामनाओं का त्याग करता है और आत्मा द्वारा ही आत्मा में सन्तुष्ट रहता है तब वह स्थितप्रज्ञ कहलाता है।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥ —गीता

कछुआ जैसे सब ओर से अंग समेट लेता है वैसे ही जब यह पुरुष इन्द्रियों को उनके विषयों से समेट लेता है, तब उसकी बुद्धि स्थिर हुई कही जाती है।

स्नान

न जलाप्लुतदेहस्य स्नानमित्यभिधीयते।
स स्नातो यो दमस्नातः शुचिः शुद्धमनोमलः॥

जल में शरीर को डुबो लेना ही स्नान नहीं कहलाता। जिसने दमरूपी तीर्थ में स्नान किया है—मन-इन्द्रियों को वश में कर रखा है, उसी ने वास्तव में स्नान किया है। जिसने मन का मल धो डाला है, वही शुद्ध है।

स्नेह

स्नेह के कारण ही विषयों की सत्ता का अनुभव होता है और फिर उनमें राग हो जाता है। —वेदव्यास (महाभारत, वनपर्व)

स्नेह एक ऐसा चिकना और परिव्यापक भाव है कि उसमें व्यक्तित्व नहीं रहते। स्नेह अपने स्नेह पात्र को कभी 'याद' नहीं करता क्योंकि वह उसे कभी भूलता नहीं। —अज्ञेय ('शेखर' से)

स्नेह के कारण ही मनुष्य विषयों में फँसता है और अनेकों प्रकार के दुःख भोगने लगता है। —वेदव्यास (महाभारत, वनपर्व)

स्पर्धा

स्पर्धा ही जीवन है। उसमें पीछे रहना जीवन की प्रगति को रोकना है। —निराला

स्मरण, स्मृति

यादें हमारे जीवन को हरा-भरा रखने के लिए, हमारे साथ प्रभु का पक्षपात है। यादें पंख हैं जो उड़ने का पुरुषार्थ देती हैं। —माखनलाल चतुर्वेदी

दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय॥ —कबीर

स्मृति मस्तिष्क का खजांची है। —कहावत

स्मृति वह पुजारिन है जो वर्तमान को समाप्त कर अपना हृदय मृतक भूत की मूर्ति पर अर्पित कर देती है। —रवीन्द्र

सुमिरन सुरत लगाइ के मुख तें कछू न वोल।
वाहर के पट देइ के अतर के पट खोल॥ —कबीर

The true art of memory is the art of attention.
स्मरण की सच्ची कला ध्यान की कला है। —सैमुएल जानसन

स्वकर्म

यत. प्रवृत्तिर्भूताना येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विंदति मानव ॥ —गीता

जिस परमात्मा से सम्पूर्ण प्राणियों की प्रवृत्ति होती है और जिस परमेश्वर से यह सव ससार व्याप्त है उस परमेश्वर को जो कोई स्वकर्म से जपता है वह मोक्ष पाता है।

सहजं कर्म कौन्तेय सदोपमपि न त्यजेत।
सर्वारम्भा हि दोपेण धूमेनाग्निरिवावृता.॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

अपने स्वाभाविक कर्म में कुछ दोप हो तो भी उसे न छोड़ना चाहिए, सव ही कर्म दोपयुक्त है, जैसे अग्नि धुए से व्याप्त है।

स्वच्छता

दरिद्रता धीरतया विराजते
कुवस्त्रता शुभ्रतया विराजते। —चाणक्य

दरिद्रता भी धीरता से शोभित होती है, स्वच्छता से कुवस्त्र भी अच्छा लगता है। स्वच्छता फटे पुराने वस्त्रो में भी सौन्दर्य ला देती है। —अज्ञात

स्वतंत्र

Man is born free, and yet he is everywhere in chains.
मनुष्य जन्म से स्वतन्त्र है, लेकिन वह सब जगह जंजीरों से जकड़ा हुआ है।
—रूसो

परमात्मा अनादि है, स्वतन्त्र और स्वयदर्शी है, अत. मानव-मात्र स्वतन्त्र स्वय-द्रष्टा है और इसीलिए स्वतन्त्रता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है।
—विपिनचन्द्र पाल

स्वतन्त्र वही हो सकता है जो अपना काम आप कर लेता है। —विनोबा

स्वर्ग में दास बनने की अपेक्षा नरक में शासन करना कहीं अच्छा है।
—मिल्टन

No man is free who is not master of himself
वह व्यक्ति स्वतत्र नहीं है जो स्वय अपना स्वामी नहीं है। —इपिक्टेटस

स्वतंत्रता

स्वतत्रता हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। —लोकमान्य तिलक

स्वतत्रता जन्म-सिद्ध हक नहीं, कर्म-सिद्ध हक है। —विनोबा

Liberty is not a personal affair only but a social contract It is an accommodation of interest
स्वतत्रता एक व्यक्तिगत मामला ही नहीं है, बल्कि एक सामाजिक ठेका है। यह स्वार्थों की सुविधा है। —ए० जी० गार्डनर

Eternal vigilance is the price of liberty.
स्वतन्त्रता का मूल्य निरन्तर सावधानी है। —जे० पी० कुरन

Those who deny freedom to others deserve it not for themselves and under a just God cannot long retain it
जो दूसरे को स्वतन्त्रता से वंचित रखते हैं वे स्वय उसके अधिकारी नहीं हैं और न्यायप्रिय ईश्वर के शासन में उसको बहुत दिनों तक नहीं रख सकते। —लिंकन

The tree of liberty grows only when watered by the blood of tyrants
स्वतन्त्रता का वृक्ष केवल अत्याचारियों के रक्त से सींचने पर पनपता है।
—बरेरे

स्वागत स्वतंत्रते, स्वागत, जिन्दगी और आत्मा की अमरता के बाद ईश्वर की सर्वोत्तम देन। —टॉमसन

स्वतंत्रता राष्ट्रों का शाश्वत यौवन है। —अज्ञात

We hold these truths to be self-evident, that all men are created equal, that they are endowed by their creator with certain unalienable rights, that among these are life, liberty, and the pursuit of happiness

हम इन सत्यों को स्वयसिद्ध मानते हैं कि सब मनुष्य समान उत्पन्न हुए हैं, उनके स्रष्टा ने उन्हें कुछ अनपहरणीय अधिकारों से सम्पन्न किया है, और इनमें जीवन, स्वतन्त्रता और सुख-प्राप्ति के प्रयत्न भी हैं। — **अमेरिकन स्वतंत्रता की घोषणा १७७६**

मुझे स्वतन्त्रता दो अथवा मृत्यु। —**पेट्रिक हेनरी**

Liberty too must be limited in order to be possessed.

सुरक्षा के लिए स्वतन्त्रता को भी सीमित होना चाहिए। —**बर्क**

जब स्वतन्त्रता चली जाती है तब जीवन निस्तेज हो जाता है, उसमें कोई उत्साह नहीं रहता। —**एडीसन**

जिस ईश्वर ने हमको जीवन दिया है, उसने उसी समय हमें स्वतन्त्रता भी दी है। —**जेफरसन**

स्वतन्त्रता के विजय-नाद एक दिन में नहीं प्राप्त किये जाते क्योंकि स्वतन्त्रता की देवी बड़ी कठिनाई से सन्तुष्ट और तृप्त होती है। वह भक्तों की कठोर एवं दीर्घकालव्यापी तपस्या चाहती है और परीक्षा लेती है। —**सुरेन्द्रनाथ बनर्जी**

What light is to the eyes, what air is to the lungs, what love is to the heart, liberty is to the soul of man.

नेत्रों के लिए जैसे प्रकाश है, फेफड़ों के लिए जैसे वायु है, हृदय के लिए जैसे प्यार है, वैसे ही प्रकार मनुष्य की आत्मा के लिए स्वतन्त्रता है। — **आर० जी० इन्गरसोल**

स्वदेशप्रेम

जो भरा नहीं है भावों से,
बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं। —**मैथिलीशरण गुप्त**

Breathes there the man with soul so dead
Who never to himself hath said
'This is my own my native land'

क्या कोई मनुष्य ऐसा मृत-चित्त है जिसने कभी अपने मन में ऐसा न कहा हो कि यह मेरा अपना प्यारा देश है। —वाल्टर स्काट

देश-प्रेम के दो शब्दो के सामजस्य में वशीकरण मत्र है, जादू का सम्मिश्रण है। यह वह कसौटी है जिस पर देश-भक्तो की परख होती है। —अज्ञात

देश-प्रेम की सत्ता, जहाँ एक ओर सघर्ष तथा सकट-काल में प्रलयाग्नि का सा काम करती है वहाँ दूसरी ओर इसका स्पर्श हिमानी शिखर-सा शीतल भी है।—अज्ञात

स्वदेशाभिमान

यदि स्वदेशाभिमान सीखना है तो सीखो एक मछली से, जो स्वदेश (पानी) के लिए तडप-तड़प कर जान दे देती है। —सुभाषचन्द्र बोस

जिसको न निज गौरव तथा,
निज देश का अभिमान है।
वह नर नही पशु है निरा,
और मृतक समान है। —मैथिलीशरण गुप्त

स्वदेशी

स्वदेशी का व्रत तो सदा ही पालना है द्वेष या वैर भाव से नहीं, वल्कि अपने प्यारे देश के प्रति कर्त्तव्यवुद्धि से प्रेरित होकर पालना है। —महात्मा गांधी

स्वधर्म

श्रेयान्स्वधर्मो विगुण परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वभावनियत कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्विषम्॥
स्वधर्मे निधन श्रेय परधर्मो भयावह।

परधर्म अति उत्तम हो तो भी उससे अपना निर्गुण धर्म ही अच्छा है, क्योंकि अपने स्वाभाविक धर्म के करने से पाप नही लगता।

अपने धर्म में मर जाना भी कल्याणकारी होता है, किन्तु परधर्म भयावह होता है।
—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

स्वभाव

अन्दर की वस्तु को वाहर की, भाव की वस्तु को भापा की, निज की वस्तु को विश्व की और क्षणिक वस्तु को चिरस्थायी वना देने की आकाक्षा मानव स्वभाव है।

—अज्ञात

मनुष्यो का यह स्वभाव है कि वह दूसरो को अपने से अविक सुखी समझते है और स्वय वैसा ही होना चाहते हैं। —सुकरात

स्वभाव मिलने पर ही मन मिलता है। जैसे दूव दही से ही जमता है कांजी से फट जाता है। —अज्ञात

मनुष्य की सच्ची प्रकृति ईश्वरत्व है। —रामतीर्थ

प्राणीमात्र अपने स्वभाव का अनुसरण करते हैं। —श्रीकृष्ण (गीता)

आत्मा का स्वभाव सुख-दु ख से अछूते रहना है। उस स्वभाव तक मनुष्य को पहुँचना है। —महात्मा गांवी

मानव-स्वभाव निम्न व पतित होने की अपेक्षा उच्च व दिव्य है।

—रस्किन (विजयपथ)

कोटि जतन कोऊ करैं, परैं न प्रकृतिहि वीच।
नल-वल जल ऊँचो चढै, अन्त नीच को नीच॥ —विहारी

रहिमन लाख भली करी, अगुनी अगुन न जाय।
राग सुनत पय पियत हूँ, साँप सहज वरि खाय॥ —रहीम

मनुष्य-स्वभाव आदर्शो और सिद्धान्तो से भी प्रवल है। —अज्ञात

उपभोक्तु न जानाति श्रिय प्राप्यापि मानव.।
आकण्ठजलमग्नोऽपि श्वा लिहत्येव जिह्वया॥ —अज्ञात

गर्दन तक पानी में खड़ा रहकर भी कुत्ता जैसे जीभ से पानी चाटता है वैसे ही प्रभूत सम्पत्ति पाकर भी मनुष्य उसका ढंग से उपभोग करना नही जानता।

न वर्मशास्त्रं पठतीति कारणं न चापि वेदाध्ययनं दुरात्मन.।
स्वभाव एवात्र तयातिरिच्यते यथा प्रकृत्या मवुरं गवा पय.॥ —हितो०

दुरात्मा वेदाध्ययन करता है या वर्मशास्त्र पढता है, यह कोई कारण नही है। स्वभाव ही सर्वोपरि होता है। जैसे गाय का दूव स्वभाव से ही मवुर होता है।

स्त्रियाँ, राजा और लताएँ—इनका प्राय ऐसा स्वभाव होता है कि जो भी बगल में मिलता है उसी से लिपट जाती हैं। —पंचतंत्र

मनुष्य का स्वभाव ही है। तनिक-सा दोष देखते ही, कुछ क्षण पूर्व की सभी बातें भूलते उसे कितनी देर लगती है। —शरत्चन्द्र (श्रीकान्त)

स्वराज्य

यतेमहि स्वराज्ये—हम स्वराज्य के लिए सदा प्रयत्न करें। —ऋग्वेद

स्वराज्य चित्त की वृत्ति मात्र है। ज्यों ही पराधीनता का आतंक दिल से निकल गया, बस स्वराज्य मिल गया। भय ही पराधीनता है, निर्भयता ही स्वराज्य है। —प्रेमचन्द

जैसे माता बच्चे को उठाने के लिए नीचे झुकती है, उसी तरह हमें भी नीचे झुकना चाहिए और नीचे वालों को ऊपर उठाना चाहिए। तभी विषमता मिटेगी और तभी सच्चा स्वराज्य आयेगा। —विनोबा

स्वराज्य गणेशजी की वह मूर्ति है जिसका निर्माण हमें मिट्टी में से करना है। —विनोबा

स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। —लोकमान्य तिलक

Every man, and every body of men on earth, possess the right of self-government

इस भूतल पर प्रत्येक मनुष्य को और मनुष्यों के वर्ग को, स्वशासन का अधिकार है। —टामस जैफर्सन

स्वर्ग

यदि स्वर्ग कोई स्थान है तो प्रेम ही वहाँ जाने का मार्ग है। —टालस्टाय

जहाँ दुःख का लेश भी नहीं है उस स्वर्ग को दुःख-पथ से ही पहुँचने का मार्ग है। —काउपर

दो प्रकार के व्यक्ति संसार में स्वर्ग के ऊपर भी स्थित होते हैं—एक तो जो शक्तिशाली होकर क्षमा करता है और दूसरा जो दरिद्र होकर भी कुछ दान करता है। —वेदव्यास (महाभारत, उद्योगपर्व)

स्वर्ग मनुष्य के जीवन में है। वह ठोस नहीं है, तरल है जो मन्दाकिनी की तरह मानव के प्राणो से कल-कल ध्वनि करता है। वह प्रेम में है, दया में है, सहानुभूति मे है। —अज्ञात

Heaven means to be one with God.
ईश्वर से एकता स्थापित करना ही स्वर्ग है। —कन्फ्यूशस

जो परोपकार में रत है, ईश्वर में जिसको विश्वास है और सत्य का जो अनुसरण करता है उसको भूमडल ही स्वर्ग है। —वेकन

जहाँ हमारी सुन्दर कल्पना आदर्श का नीड़ वन कर विश्राम करती है वही स्वर्ग है। वही विहार का, वही प्रेम करने का स्थल स्वर्ग है और वह इसी लोक मे मिलता है।
—जयशंकर प्रसाद (स्कन्दगुप्त)

The mind in its own place, and in itself can make a heaven of hell, a hell of heaven.
मन अपने भीतर ही स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग वना सकता है।
—मिल्टन

दान, पश्चात्ताप, सन्तोप, सयम, दीनता, सत्य और दया ये स्वर्ग के सात द्वार है।

स्वर्ग और पृथ्वी सव हमारे ही अन्दर है। हम पृथ्वी से तो परिचित है, पर अपने अन्दर के स्वर्ग से विलकुल अपरिचित है। —महात्मा गांधी

सदा प्रसन्न मुखमिष्टवाणी, सुशीलता च स्वजनेपु सख्यम्।
सता प्रसग खलसगत्यागश्चिह्नानि देहे त्रिदिवस्थितानाम्॥ —अज्ञात

सदा प्रसन्न मुख रहना, प्रिय वोलना, सुशीलता, आत्मीय जनो से प्रेम, सज्जनो का सग और नीचो की उपेक्षा—ये स्वर्ग में रहनेवालो के लक्षण है।

यस्य पुत्रो वशीभूतो भार्य्या छन्दानुगामिनी।
विभवे यश्च सन्तुष्टस्तस्य स्वर्गमिहैव हि॥ —वेदव्यास

जिसका पुत्र आज्ञाकारी हो, पत्नी अनुरूप हो, और मन में धन की तृष्णा न हो वह इस जीवन में ही स्वर्ग पा लेता है।

तेरा स्वर्ग तेरी माँ के पैरो तले है। —हजरत मोहम्मद

स्वर्ण

A mask of gold hides all deformities.
सोने का घूंघट सारी कुरूपता को ढक देता है। —डेकर

It is much better to have your gold in the hand than in the heart

सोने को हृदय की अपेक्षा हाथ में रखना कही अच्छा है। —फुलर

Gold is no balm to a wounded spirit

स्वर्ण घायल आत्मा के लिए लेप नही है। —कहावत

अग्निदाहे न मे दुख छेदे न निकषे न वा।
यत्तदेव महद्दुख गुञ्जया सह तोलनम्॥ —अज्ञात

स्वर्ण कहता है—मुझे न तो आग मे तपाने से दुख होता है, न काटने-पीटने से, न कसौटी पर कसने से, मेरे लिए जो महान् दुख का कारण है वह है घुँघची के साथ मुझे तोलना।

पक्षी के पख को स्वर्ण से आभूषित कर दो तो वह आकाश में फिर कभी न उड सकेगा। —रवीन्द्र

स्वाद

स्वाद तो भूख में है। सूखी रोटी भूखे को जितनी स्वादिष्ट लगेगी उतना भर-पेट खाये हुए को लड्डू भी नही लगेगा। —महात्मा गाधी

स्वाधीनता

बँधे बैल मे और छूटे साँड मे वडा अन्तर है। एक रातिव पाकर भी दुर्बल है, दूसरा घास-पात ही खाकर मस्त हो रहा है। स्वाधीनता वडी पोषक वस्तु है।

—प्रेमचन्द ('प्रेम पचीसी')

पराधीनता की विजय से स्वाधीनता की पराजय सहस्रगुना अच्छी है।—अज्ञात

स्वाधीनता ही स्वाधीनता का अत नही है। धर्म, शान्ति, काव्य-आनन्द—यह और भी बड़े है। इनके चरम विकास के लिए स्वाधीनता चाहिए, नही तो उनका मूल्य ही क्या है? —शरत्चन्द्र (अधिकार)

स्वाभिमान

स्वाभिमान एक सात्त्विक सुगन्धित कमल पुष्प है जिसके चारो ओर सद्गुणो के भ्रमर सदैव गुजित रहते हैं। —अज्ञात

स्वामी

स्वामी की आँखें उसके दोनो हाथो की अपेक्षा अधिक काम करती हैं।—अज्ञात

Masters are mostly the greatest servants in the house
स्वामी बहुधा घर के सबसे बड़े सेवक होते हैं। —कहावत

Masters should be sometimes blind and sometimes deaf
स्वामी को कभी-कभी अन्धा और कभी बहरा होना चाहिए। —कहावत

स्वार्थ

सुर नर मुनि सब की यह रीती।
स्वारथ लागि करैं सब प्रीती॥ —तुलसी

स्वार्थ में मनुष्य बावला हो जाता है। —प्रेमचन्द

स्वार्थ की अनुकूलता और प्रतिकूलता से ही मित्र और शत्रु बना करते हैं।
—वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

स्वारथ के सब ही सगे, बिन स्वारथ कोउ नाहिं।
सेवें पक्षी सरस तरु, निरस भये उड़ जाहिं॥ —तुलसी

कौन किसी के साथ निस्वार्थ सलूक करता है। भिक्षा तक तो लोग स्वार्थ ही के लिए देते हैं। —प्रेमचन्द

जेहि ते कछु निज स्वारथ होई।
तेहि पर ममता कर सब कोई॥ —तुलसी (मानस-उत्तर)

अगर मूर्ख, लोभ और मोह के पंजे में फँस जायँ तो वे क्षम्य हैं; परन्तु विद्या और सभ्यता के उपासको की स्वार्थान्धता अत्यन्त लज्जाजनक है। —प्रेमचन्द

स्वार्थी

स्वार्थी मनुष्य ही बलिदान कर सकता है। वह आत्म-समर्पण कर देता है अपने स्वार्थ के लिए, अपने ध्येय के लिए। —अज्ञात

स्वार्थी और कपटी लोग सरल प्रकृति के उद्योगी व्यक्तियो के श्रमफल का अपहरण कर सकते हैं, परन्तु उनमें जो नवनिर्माण करने की शक्ति होती है उसे वे नहीं चुरा सकते। —अज्ञात

स्वावलम्बन

'स्वावलम्बन' आत्मनिर्भर सफलता का अन्तिम साधन है।

—स्वामी विवेकानन्द

स्वास्थ्य

त्रय उपस्तम्भा आहार स्वप्नो ब्रह्मचर्यमिति। —महर्षि चरक

स्वास्थ्यरूपी घर को स्थिर रखने के लिए उसके तीनों पाये—आहार, स्वप्न (निद्रा), ब्रह्मचर्य ठीक-ठीक रखने चाहिए। —अज्ञात

Health lies in labour and there is no royal road to it but through toil

स्वास्थ्य परिश्रम में है और श्रम के अतिरिक्त वहाँ तक पहुँचने का कोई दूसरा राजमार्ग नहीं है। —वेन्डेल फिलिप्स

जल्दी सोना और प्रात उठना मनुष्य को स्वस्थ, धनवान् और बुद्धिमान् बनाता है। —कहावत

Good health and good sense are two of life's greatest blessings

अच्छा स्वास्थ्य एव अच्छी समझ जीवन के दो सर्वोत्तम वरदान हैं।

—पी० साइरस

हँसना

Always laugh when you can, it is a cheap medicine Merriment is a philosophy not well understood It is the sunny side of existence

जब भी सम्भव हो सदा हँसो, यह एक सस्ती दवा है। प्रसन्नता ऐसा दर्शनशास्त्र है जो ठीक से समझा नहीं गया। यह मानव-जीवन का उज्ज्वल भाग है। —बॉयरन

उससे सावधान रहो जो बालक की हँसी से घृणा करता है। —लवेटर

मानव ही केवल एक ऐसा प्राणी है जिसमें हँसने की शक्ति है। —ग्रेवाइल

ठट्ठा मार कर हँसने से मनुष्य का पाचन तीव्र होकर उसका स्वास्थ्य बढ़ता है।

—अज्ञात

Laugh and the world laughs with you,
Weep and you weep alone,
For the sad old earth must borrow its mirth,
But has trouble enough of its own.

हँसो और ससार तुम्हारे साथ हँसेगा, रोओ और तुम्हें अकेले रोना प
दुखी वृद्ध पृथ्वी को प्रसन्नता उधार लेनी है, किन्तु उसके पास अपनी व्यथा
है।

—एला वीलर विल

हँसमुख

To be freeminded and cheerfully disposed at hours of m
and of sleep, and of exercise, is one of the best precepts of
lasting.

भोजन, निद्रा, और व्यायाम में चिन्तारहित तथा हँसमुख स्वभाव दीर्घ
का सर्वोत्तम नियम है।

—

A cheerful look makes a dish a feast.

हँसमुख चेहरे से दिया गया जलपान भी स्वादिष्ट भोजन हो जाता है। —

हँसमुख मनुष्य वह फुहारा है जिसके शीतल छींटे मन को ठंडा करते हैं। —अ

हँसी (दे० 'प्रसन्नता', 'मुसकान')

जब जिन्दगी के कगारो की हरियाली सूख गयी हो, पक्षियो का कलरव
हो गया हो, सूरज के चेहरे पर ग्रहण की छाया गहरी होती जा रही हो, परखे
मित्र और आत्मीय जन काँटो के रास्ते पर मुझे अकेला छोड़ कर चल दिये हो
आसमान की सारी नाराजी मेरी तकदीर पर बरसनेवाली हो, तो हे मेरे प्रभु,
मेरे साथ इतना अनुग्रह करना कि मेरे होठो पर हँसी की एक उजली रेखा खिच जा

—योन नागे

मनुष्य बराबरवालो की हँसी नहीं सह सकता, क्योंकि उनकी हँसी में ई

हँसी छूत की बीमारी है, आपको हँसी आयी नहीं कि दूसरे को जबरदस्ती दाँत निकालने पड़ेंगे, भले ही उसकी दाँत निकालने की इच्छा हो या न हो। —अज्ञात

हमारे भीतर का विषाद और अवसाद हँसी के तेज झोंको से रुई के कतरों की भाँति उड़कर नष्ट हो जाता है। —अज्ञात

हमें हँसी तभी आती है जब हम किसी वस्तु और उसके मनोभाव में अचानक कोई असम्बद्धता अथवा असंगति देख लेते हैं। —शोपेनहार

जब मैं स्वयं पर हँसता हूँ तो मेरा अपना बोझ हलका हो जाता है। —रवीन्द्र

I like the laughter that opens the lips and the heart, that shows at the same time pearls and the soul

मुझे वह हँसी प्रिय है जो ओठो और हृदय को खोल देती है तथा उसी समय आत्मा और दाँतो का दर्शन कराती है। —विक्टर ह्यूगो

हँसी मन की गाँठें बड़ी आसानी से खोल देती है—मेरे मन की ही नहीं, तुम्हारे मन की भी। —महात्मा गांधी

हँसी मानव-जाति को दिये गये सर्वोत्तम दिव्य उपहारो में से एक है। —अज्ञात

हँसी की सुन्दर पृष्ठभूमि पर जवानी के प्रसून खिलते हैं। जवानी को तरोताजा रखने के लिए आप खूब हँसिए। —जार्ज बर्नार्ड शा

यौवन का आनन्द हँसने में है। हँसी ही यौवन का सुन्दर शृंगार है, और जो व्यक्ति यौवन का शृंगार नहीं कर सकता उसके पास वह हर्गिज नहीं ठहर सकता। —फेरीबोर

उल्लास और हँसी का ही नाम जवानी है। —अज्ञात

हँसी प्रकृति की सबसे बड़ी नियामत है। —डा० लक्ष्मणपति शर्मा

No man who has once heartily and wholly laughed can be altogether and irreclaimably depraved

कोई भी व्यक्ति जिसने अच्छी तरह दिल खोल कर एक बार हँसा है, किन्तु ऐसा दुराचारी नहीं हो सकता जिसका पुनः सुधार न हो सके। —कार्लाइल

मुझे विश्वास है कि हर बार जब कोई मनुष्य मुस्कराता है या इससे अधिक हँसता है तो वह अपने जीवन में वृद्धि करता है। —स्टर्न

हँसी हमारे जीवन की सफलता की चाबी है। —अज्ञात

हत्या

For murder, though it have no tongue, will speak with most miraculous organ.

हत्या के जीभ नही होती तो क्या, समय पर वह सिर पर चढ़ कर बोलती है।

—शेक्सपियर

मानव रक्त का प्रवाह संगीत का प्रवाह नही, रस का प्रवाह नही—एक वीभत्स दृश्य है जिसे देखकर आँखें मुंह फेर लेती हैं, हृदय सिर झुका लेता है। —प्रेमचन्द

One murder makes a villain; millions, a hero; numbers sanctify the crime.

एक हत्या से मनुष्य हत्यारा हो जाता है, लाखो की हत्या से वीर; अधिक सख्या पाप को धो देती है। —पोर्टियस

हमदर्दी (दे० 'सहानुभूति')

दुखियारो को हमदर्दी के दो आँसू भी कम प्यारे नही होते। —प्रेमचन्द

हया (दे० 'लज्जा')

पर्दा कपड़े का नही होता, हया दूसरी चीज है। —प्रेमचन्द

तुमको बख्शा है खुदा ने जो हया का जेवर।
मोल उसका नही कारूँ का खजाना हर्गिज॥

—पं० बृजनारायण चकबस्त

हरिनाम

प्रमादादपि सस्पृष्टो, यथानलकणो दहेत्।
तथौष्ठपुट-संस्पृष्टं हरिनाम हरेदघम्॥ —स्कंदपुराण

जैसे आग की चिनगारी भूल से भी छू जाय तो वह जला ही देती है; उसी प्रकार होठों से श्री हरिनाम का स्पर्श होते ही वह समस्त पापो को हर लेता है।

हर्ष

The most profound joy has more of gravity than of gaiety in it.

पूर्ण हर्ष में आनन्द की अपेक्षा गंभीरता अधिक है। —मानटेन

Great joy, especially after a sudden change of circumstances is apt to be silent, and dwells in the heart than on the tongue

अधिक हर्ष, मुख्यत परिस्थिति में एकाएक परिवर्तन होने पर, शात होता है और जिह्वा की अपेक्षा हृदय में निवास करता है। —फील्डिंग

हलवाहा

हल चलानेवाले अपने शरीर का हवन किया करते हैं। खेत उनकी हवनशाला है। उनके हवनकुड की ज्वाला की किरणें चावल के लम्बे और सफेद दानो के रूप में निकलती है। गेहूँ के लाल-लाल दाने इस अग्नि की चिनगारियो की डालियाँ-सी हैं। —पूर्णसिंह

हाथ

कृत्य मे दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहित। —अथर्ववेद

मेरे दाहिने हाथ में कर्म-पुरुषार्थ है और सफलता बाँये हाथ मे रखी हुई है।

हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ। —तुलसी

Wise men never sit and wail their loss, but cheerily seek how to redress their harms

बुद्धिमान् मनुष्य अपनी हानि पर कभी रोते नही, अपितु प्रसन्नतापूर्वक क्षतिपूर्ति का उपाय करते हैं। —शेक्सपियर

My loss may shine yet goodlier than your gain,
When time and God give judgment

जब समय और ईश्वर न्याय करेगा मेरी हानि तुम्हारे लाभ की अपेक्षा कही अधिक चमकेगी। —स्विमबर्न

हार (दे० "पराजय")

निर्लज्ज हारकर भी नही हारता, मरकर भी नही मरता।

—जयशंकर प्रसाद ('स्कन्दगुप्त')

जितनी वार हमारा पतन हो उतनी वार उठने में गौरव है। —महात्मा गाधी

हार मौत से भी बुरी है। —अज्ञात

हार क्या है ? शिक्षा के अतिरिक्त कुछ नही, एक अच्छी स्थिति के लिए केवल पहला कदम है। —वेन्डेल फिलिप

जो महान् उद्देश्य के लिए मरते हैं उनकी कभी हार नही होती। —वायरन

जव अपने मे ही विश्वास नही है और न नेताओ में ही श्रद्धा है, तव हमारी हार अवश्य निश्चित है। —सरदार वल्लभभाई पटेल

हावभाव

स्त्रीणामाद्य प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु। —कालिदास

स्त्रियों का हावभाव प्रेमी के साथ वातचीत का पहला स्वरूप है।

हास्य (दे० 'हँसी')

हमारे हास्य में हमारी विजय-भावना निहित रहती है .जव-जव हमारी श्रेष्ठता स्थापित होती है, तव-तव हमें हँसी आती है। —लेहन्ट

हास्य संसार का सवसे वहुमूल्य उपहार है। —अज्ञात

हास्य की परिभाषा असम्भव है। कुरूपता, अशुद्धता, भ्रष्टता तथा दोषपूर्ण व्यवहार द्वारा ही हास्य प्रकट होता है। —टामस विल्सन

आप अपने सारे दुखो, सारे कटु अनुभवों, सारी उलझनो को हास्य के अथाह सागर में डुवो कर जी का भार हल्का कर सकते हैं। —अज्ञात

आकस्मिक नवीनता हास्य का प्राण है। —टामस हान्स ("लेवायथन" से)

तन और मन के पोषण के लिए हास्य एक वेहतरीन टानिक है। —अज्ञात

हास्य वह मिसरी है, जो उपदेश की कडवी कुनैन को भी इतना मीठा वना देती है कि छोटे-छोटे वच्चो से लेकर वड़े-वडे वुड्ढे तक उसे वडी रुचि से चाट जाते हैं। —अज्ञात

हास्य पाचन शक्ति ठीक करने की वहुत अच्छी दवा है। हास्यरूपी परमौषधि के सेवन से हाज्मा जरूर ठीक हो जाता है। —एक डाक्टर

हिंसा

जहाँ सिर्फ कायरता और हिंसा के वीच किसी एक के चुनाव की वात हो वहाँ मैं हिंसा के पक्ष मे राय दूंगा। —महात्मा गांधी

जो फूट डालती है, भेद बढाती है, वही हिंसा है। —विनोबा

हिंसा पशुता की प्रवृत्ति है मानवता की नही, और मनुष्य पशुता को छोड़ कर मानवता का पूर्ण विकास कर रहा है। —अज्ञात

जिस भाँति भौंरा फूलो की रक्षा करता हुआ मधु को ग्रहण करता है उसी प्रकार मनुष्य को हिंसा न करते हुए अर्थों को ग्रहण करना चाहिए। —विदुर

जो मनुष्य हिंसा नही करता और मास खाने से परहेज करता है, सारा ससार हाथ जोड कर उसका सम्मान करता है। —संत तिरुवल्लुवर

हित

परहित सरिस धर्म नहिं भाई। —तुलसी

हित अनहित पशु पक्षिहु जाना। —तुलसी

कीरति भनिति भूति भल सोई। सुर सरि सम सब कर हित होई॥—तुलसी

जैसे बीज अपना अस्तित्व मिटाकर (पृथ्वी में मिलकर) वृक्ष बनकर एक का अनेक हो जाता है उसी प्रकार से वह प्राणी जो सब प्राणियो के हित मे (सर्व भूत हिते रत) अपने को मिटा देता है वह अनन्त शक्तिमान् हो जाता है। —स्वामी भजनानन्द

यावत्स्वस्थो ह्यय देहो यावन्मृत्युश्च दूरत।
तावदात्महित कुर्यात्प्राणान्ते किं करिष्यति॥ —चाणक्य

जब तक देह नीरोग है और जब तक मृत्यु दूर है, तभी तक ही पुण्यादि करके अपना हित करना उचित है, मृत्यु हो जाने पर कोई क्या करेगा।

हिन्दी

हिन्दी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।
—महर्षि दयानन्द

भारत के विभिन्न प्रदेशो के बीच हिन्दी-प्रचार के द्वारा एकता स्थापित करने वाले सच्चे भारत-बन्धु हैं। —योगिराज अरविन्द

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है। —महात्मा गांधी

देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जानेवाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा-पद की अधिकारिणी है। —सुभाषचन्द्र बोस

मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ, परन्तु मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता। —आचार्य विनोबा भावे

राष्ट्रभाषा के प्रचार को मैं राष्ट्रीयता का अंग मानता हूँ।

—राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद

हिन्दी स्वयं अपनी ताकत से बढ़ेगी। —पं० नेहरू

हिन्दी का प्रचार राष्ट्रीयता का प्रचार है। —राजर्षि टंडन

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। —महात्मा गांधी

हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।

—सुमित्रानन्दन पंत

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न उर को शूल॥

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना नहीं है, वह तो है ही। —कन्हैयालाल मा० मुंशी

हिन्दी सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में महानतम स्थान रखती है। —डा० अमरनाथ झा

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है। —मैथिलीशरण गुप्त

मेरा आग्रहपूर्वक कथन है कि अपनी सारी मानसिक शक्ति हिन्दी भाषा के अध्ययन में लगावें। हम यही समझें कि हमारे प्रथम धर्मों में से एक धर्म यह भी है। —विनोबा

हिन्दू

यूनानियों ने व्याकरण में जो सफलता प्राप्त की, वह संसार भर के सबसे बड़े वैयाकरण पाणिनि के आगे कुछ भी नहीं थी। —प्रो० मैक्समूलर

यूरोप के प्रथम दार्शनिक प्लेटो और पाइथैगोरस दोनों ने दर्शनशास्त्र का ज्ञान भारतीय गुरुओं से प्राप्त किया। —मॉनियर विलियम्स

पाश्चात्य दर्शनशास्त्र के आदि गुरु आर्य ऋषि हैं, इसमे सन्देह नही।

—प्रसिद्ध इतिहासज्ञ लैयब्रिज

हिन्दू चिकित्सक शल्य-क्रिया (शस्त्र-चिकित्सा) में सिद्धहस्त थे। उन्ही से यूनानियो ने भी वैद्यक का ज्ञान प्राप्त किया। —डा० हण्टर

शल्य-चिकित्सा (शस्त्र-चिकित्सा) मे हिन्दुओ ने जो उन्नति की थी, वह उतनी ही आश्चर्यजनक थी जितनी रसायनशास्त्र में की हुई उन्नति। —एलफिस्टन

सारी आर्य जाति ही वैज्ञानिको की जाति थी। —प्रोफेसर मैक्समूलर

बीजगणित और रेखागणित का आविष्कार और ज्योतिष के साथ उनका प्रथम प्रयोग हिन्दुओ के ही द्वारा हुआ था। —मॉनियर विलियम्स

हिमालय का 'हि' और सिन्धु (समुद्र) का इन्दु लेकर "हिन्दू" शब्द बना है। उसी का अपभ्रंश हिन्दू शब्द है। हिमालय से समुद्र तक के स्थान का हिन्दुस्तान और उसमें बसनेवाली जाति का नाम हिन्दू है। —जयदयाल गोयन्दका

हिन्दू लोग धार्मिक, प्रसन्न, न्यायप्रिय, सत्यभक्त, कृतज्ञ और प्रभुभक्ति से युक्त होते हैं। —सैमुएल जॉनसन

जिस (भारतीय) सभ्यता को अपने उच्चवर्ग के लोगो के अत्यन्त विशाल वैभव-विलास पर गर्व था, उसमें ताले-चाभी को लोग जानते ही नही थे। क्या कही पर हिन्दुओ की ईमानदारी के एक जरा से अंश के बराबर भी ईमानदारी की कल्पना की जा सकती है। —मेगस्थनीज

हिन्दुओ के चरित्र की निष्कपटता तथा ईमानदारी उनकी मुख्य पहचान है। वे कभी अनीति युक्त वचन नही बोलते। —श्री क्रिडिल

हिन्दू अनुकूल आचरण करने वाले तथा सबके प्रति दयालु होते हैं। उनका संसार में किसी से भी वैर नही है। —अबुलफजल

ध्यान की प्रणाली को उन्ही लोगो ने जन्म दिया है। उनमें स्वच्छता एवं शुचिता के गुण वर्तमान है। उन लोगो में विवेक है तथा वे वीर हैं। ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद एवं अन्य विद्याओ में हिन्दू लोग आगे बढे हुए हैं। प्रतिमा-निर्माण, चित्रलेखन, वास्तु-कलाओ को उन्होने पूर्णता तक पहुँचा दिया है।

—अल्जहीज

यदि हम पक्षपात रहित होकर भलीभाँति परीक्षा करें, तो हमको स्वीकार करना होगा कि सारे संसार मे साहित्य, धर्म और सभ्यता का प्रसार हिन्दुओं ने किया है।

—श्री डी० ओ० ब्राउन (डेली ट्रिब्यून २०-२-१८८४)

हिन्दू-धर्म

मैंने यूरोप और एशिया के सभी धर्मों का अध्ययन किया है, परन्तु मुझे उन सबमें हिन्दू-धर्म ही सर्वश्रेष्ठ दिखाई देता है।. . .मेरा विश्वास है कि इसके सामने एक दिन समस्त जगत् को सिर झुकाना पड़ेगा। —रोम्यां रोलां

हुस्न (दे० "सुन्दरता", "सौन्दर्य")

हुस्न हो क्या खुदनुमा जब कोई माइल ही न हो।
शमअको जलने से क्या मतलब, जो महफिल ही न हो॥

—डा० इकबाल

हृदय

पहाड़ो में भी हरियाली होती है, पाषाण हृदयो में भी रस रहता है। —प्रेमचन्द

भग्न हृदयो के लिए संसार सूना है। —प्रेमचन्द

If a good face is a letter of recommendation, a good heart is a letter of credit.

यदि सुन्दर मुख सिफारिश पत्र है तो सुन्दर हृदय विश्वास-पत्र।

—बुलवर

मानव-हृदय एक रहस्यमय वस्तु है। —प्रेमचन्द ("वरदान")

हृदय की कोई भाषा नही है; हृदय हृदय से बातचीत करता है।

—महात्मा गांधी

A good heart is worth gold.

सुन्दर हृदय का मूल्य स्वर्ण के सदृश है। —शेक्सपियर

तीर्थानां हृदयं तीर्थं शुचीनां हृदय शुचि.। —वेदव्यास

तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ विशुद्ध हृदय है, पवित्र वस्तुओं में अति पवित्र भी विशुद्ध हृदय ही है।

मनुष्य का हृदय एक अथाह सागर है, जहाँ कमल के फूलो के साथ रक्त की प्यासी जोके भी उत्पन्न होती रहती हैं। —अज्ञात

हाथ हाथ का अनुसरण करते हैं, नेत्र नेत्र पर ठहरते हैं और इस प्रकार हमारे हृदय का कार्य प्रारम्भ होता है। —रवीन्द्र

हृदय की आँख हमारे चर्मचक्षु से भी अधिक प्रबल है। —अज्ञात

Hearts are stronger than swords

हृदय कृपाण से अधिक शक्तिशाली होता है। —वेन्डेल फिलिप

The heart of a wise man should resemble a mirror, which reflects every object without being sullied by any

ज्ञानी पुरुष का हृदय दर्पण के सदृश होना चाहिए जो किसी वस्तु को बिना दूषित किये हुए परावर्तित कर देता है। —कन्फ्यूशस

मनुष्य का हृदय अभिलाषाओ का क्रीडास्थल और कामनाओ का आवास है। —प्रेमचन्द

येषा हृदिस्थो भगवान् मगलायतन हरि ।
नित्योत्सवस्तदा तेषा नित्यश्रीर्नित्यमगलम् ॥ —रामानुजाचार्य

जिनके हृदय में मगलमय भगवान् विष्णु का आवास है उनके यहाँ सर्वदा उत्सव, सर्वदा मगल और सर्वदा लक्ष्मी का निवास रहता है।

हृदयहीन

मनुष्य कितना ही हृदयहीन हो, उसके हृदय के किसी न किसी कोने में पराग की भाँति रस छिपा रहता है। जिस तरह पानी और पत्थर में आग छिपी रहती है उसी तरह मनुष्य के हृदय में भी—चाहे वह कैसा ही क्रूर और कठोर क्यो न हो, उत्कृष्ट और कोमल भाव छिपे रहते हैं। —प्रेमचन्द

केवल बुद्धि की वृद्धि होने से मनुष्य बहुधा हृदयशून्य हो जाता है। दया, प्रेम, शान्ति आदि हृदय के सात्विक गुण हैं। वे बुद्धि के प्रखर तेज से झुलस सकते है। —स्वामी विवेकानन्द

होनहार (दे० 'भावी')

जैसी हो भवितव्यता तैसी मिलै सहाय।
आपु न आवै ताहि पै, ताहि तहाँ लै जाय॥ —तुलसी

विधि का लिखा को मेटन हारा। —तुलसी

होइहि सोइ जो रामरचि राखा। को करि तर्क बढावै साखा॥ —तुलसी

होनहार कितना प्रवल, कितना निष्ठुर और कितना निर्मम है। —प्रेमचन्द

तादृशी जायते वुद्धिर्व्यवसायोऽपि तादृग. ।
महायास्तादृशा एव यादृशी भवितव्यता॥ —चाणक्य

वैसी ही वुद्धि और वैसा ही उपाय होता है और वैसे ही सहायक मिलते हैं जैसा होनहार होता है।

करोतु नाम नीतिज्ञो व्यवसायमितस्तत ।
फल पुनस्तदेवास्य यद्विधेर्मनसि स्थितम॥ —हितोपदेश

नीति जाननेवाले इधर-उधर अपना प्रयास करें, किन्तु फल वही होगा जो विधाता के मन में है।

भवितव्याना द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र
—कालिदास (अभिज्ञान शाकुंतल)

भावी को सर्वत्र द्वार खुला मिलता है।

अनुक्रमणिका

ग्रंथकारों की नामावली

च

फ

भ